

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली



क्रम संख्या 2508
काल नं० (०५) 2 (५४) ५५
खण्ड

सचित्र विशेषांक.

ॐ
दिगंबरजन

वर्ष २३
अंक १-२.

सम्पादक-मूलचन्द किसनदास कापड़िया-सुरत।

वैश्व सं० २४५६,
क्रांतिक-मार्ग०

से
बा
मं
आ
पि
त
हे
ही
जे



प
त्र
दि
ग
म
ष
र
जे
न।

श्रीमान् सिंघई पन्नालालजी जैन परिवार एम० एल० सी०
वर्तमान सभापति, भारत० दि० जैन परिषद्।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।) विशेषांक मूल्य ॥।)

विषय-सूची ।

नं०	विषय	पृष्ठ
१-२	सुमतिनाथ भगवान (पं० परमेश्वरीदासजी); नूतन वर्षाभिनंदन	१-२
३-४	निर्वाण (मूलचंद जैन वत्सल); आशीर्वाद (ब्र० प्रेमसागर)....	२
५-६	नूतन साल सुवारक; नूतन वर्षाभिनंदन (काणीसाकर)	३
७-८	नूतन वर्ष स्वागत; अदभुत महिमा (पं० गुणभद्रजी)	४
९-११	उवोरंगे (पं० रवीन्द्रनाथ); संबोधन, शहीदे वतन	४
१२-१३	चित्र-परिचय; वीर-विनय (ब्र० प्रेमसागर)	५-८
१४-१५	संपादकीय वक्तव्य; जैन समाचार संग्रह	९-१३
१६	सावधान हो जाईये (पं० परमेश्वरीदासजी न्यायतीर्थ)	१७
१७	सिद्धान्त-व्ययन विचार (पं० मिलापचंदजी कटारिया)	२०
18	Samadhi Shatak (Mr., Herbert Warren Jain) ...	25
19	Faith & Truth (Tara band Jain Pandya)... ..	28
20-21	प्रार्थना; Jainism & Science (Ramanlal Shah)	30-31
२२-२३	जैन संबोधन; भगवान महावीर (पं० मूलचंद वत्सल)	३३
२४	अकारण बंधु (धर्मरत्न पं० दीपचंदजी वर्णी)	४३
२५	जैन धर्म और चारित्र (श्रीमान् ब्र० सीतलप्रसादजी)	४९
२६	एक बाल विधवाकी आत्मकथा (पं० क्षेमकरजी न्यायतीर्थ)	५३
२७	पद्या-पद्यावली (प्रेमचंद्रो जैन: काव्यतीर्थ: काशी)	५६
२८	दान चिंतामणि अतिमव्वे (पं० के० भुजबली शास्त्री)	५७
२९-३०	युवको चेतो; भोजनकाल समय (पं० मनोहरलालजी)	५८-५९
३१	वर्तमान शिक्षा प्रणाली (पं० नाथूलालजी शास्त्री इन्दौर)	६२
३२-३३	सूर्यचंद्र, वायु और जल (पं० शिखरचंद्रजी)	६५-६६
३४	स्त्री शिक्षाकी आवश्यकता (कमलावाई परिवार मारोठ)	७०
३५	महिला महत्त्व (पं० भंवरलाल रंगलाल उदयपुर)	७४
३६	जैनधर्म ही सुखका साधन है (पं० ब्रजवासीलालजी मेरठ)	७८
३७-३८	जाति सुधार (लुके डीलालजी); सच्चे वीर (कल्याणकुमार शशि)	८२-८३
३९	नेपालके शिलालेख व जैनधर्म (बा० कामताप्रसादजी जैन)	८४
४०-४१	वन्दे जिनवरम्; गांधी टोपी	

४२	हृदयमें हो सन्मति भगवान् (लक्ष्मीचंद जैन, सागर)	९८
४३	कथं वयं वीरानुयामिनः ? (पं० रवीन्द्रनाथ जैन न्यायतीर्थ)	९९
४४	जैन गृहस्थकी दिन चर्चा (वैद्यविशारद पं० सत्यंघरजी आ०वे०)	१०१
४५-४६	वीर भावना; पत्थर पर पाणी (रमणीकलाल वि०)	१०४-५
४७-४८	आहार तेवो ओडकार; दि० जैन युवक मंडळ (काणीसाकर)	१०७
४९	कन्याओनुं भविष्य (जैन महिलारत्न ललिताब्हेन)	१११
५०-५१	संसार सैनिक; (चुनीलाल वीरचंद गांधी)	११२
५२-५३	बाळनी संभाळ; लोहीनां आंसु के गरीबनी हाय	११५
५४-५५	संगतिनां फल; मोहन-माला (मोहनलाल काणीसाकर)	१२०
५६-५७	आरोग्यना नियमो; बाललग्न प्रतिबंधक कायदो	१२२-२३
५८	जैनोनुं दिग्दर्शन (हीगलाल शाह); कर्मनी विचित्रता	१२५-२६
५९-६०	सुबोध वचनामृत; क्षमा याचना (भीखाभाई शाह)	१२८
६१	दीन हृदयके फफोले (पं० श्रीचंद्र जयपुर)	टाईटल पृष्ठ

चित्र-सूची ।

१—श्री० सि० पन्नालालजी परवार अमरावती.....
२—स्वामी समंतभद्र व राजा शिवकोटी
३—अतिशय क्षेत्र श्री नेमगिरि (जिनूर)
४—वैद्यविद्याविशारद पं० सत्यंघर जैन काव्यतीर्थ आयुर्वेदाचार्य
५—मोहनलाल मथुगदास शाह काणीसाकर (कंपाला, आफ्रिका)

तीर्थकर चित्रावलि ।

२४ तीर्थकरोंके रंगबेरंगी २४ अलग बड़े चित्र कांचमें जडवाकर मंदिरोंमें रखनेयोग्य यह चित्रावलि अवश्य भंगाइए। मूल्य ३) और भी बड़े २ रंगीन चित्र—शिखरजी ॥), शांतिसागरजी ॥), चम्पापुरी (=), पावापुरी (=), गिरनार (=), सोलह स्वप्न ॥), चन्द्रगुप्तके स्वप्न ॥), संसारवृक्ष (=), षट्छेदना स्वरूप (=), सीताजीकी अग्नि परीक्षा ॥), जन्मकल्याणक ॥), आहारदान ॥), भ० पार्श्वनाथ (=) ये चित्र एकर अवश्य भंगाइए। एक आनेवाले ३५ चित्र भी हैं।

“दिगंबर जैन” का उपहार ग्रन्थोंके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य सिर्फ २।)

विशेषांक मूल्य—बारह आने ।

मैनेजर, “दिगंबर जैन” चंदावाड़ी-सुरत. Surat.



श्रीसमन्तभद्रस्वामी व राजा शिवकोटि ।

शिवकोटि नृपने हठ किया, पिण्डो नमनके हेतु जब ।
 कर ही लिया सु समन्तभद्राचार्यने स्वीकार तब ॥
 धर ध्यान देव जिनेन्द्रका, मस्तक तनिक नीचा किया ।
 पिण्डो फटो, चन्द्रप्रभूने "दास" तब दर्शन दिया ॥

॥ श्रीश्रीतारागय नमः ॥

द्विगम्बर जैन

नाना काजभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्यत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वां

घोर सम्बत् २४५६, कार्तिक-मगसिर, विक्रम सम्बत् १६८६.

अङ्क १-२.

सुमतिनाथ भगवान् ।

(रचयिता-पं० परमेष्ठीदासजी जैन, न्यायतीर्थ —सूरत ।)

सुमति दो सुमतिनाथ भगवान् ॥

दम्भ कषाय कलह कुरीतिका, हो जावे अवसान ।

चकनाचूर हमारा होवे, सब झूठा अभिमान ॥

सुमति दो सुमतिनाथ भगवान् ॥ १ ॥

प्राणहीन सम जैनजाति नित, सहती है अपमान ।

अब तो शीघ्र सम्हल जावें हम, हो निजपरका भान ॥

सुमति दो सुमतिनाथ भगवान् ॥ २ ॥

होते नित्य आक्रमण नृतन, कायर हमको जान ।

अब हो जैन समाज साहसी, रग्वे धर्मकी आन ॥

सुमति दो सुमतिनाथ भगवान् ॥ ३ ॥

आपसकी तू तू म मैं तज, तजे मूर्खता मान ।

धम हेतु हम तन मन धनका, करदें हँस कर दान ॥

सुमति दो सुमतिनाथ भगवान् ॥ ४ ॥

अत्याचार क्षार हो जावें, करें प्रयत्न महान ।

नहीं बुराई धर्म देशकी, सुनें हमारे कान ॥

सुमति दो सुमतिनाथ भगवान् ॥ ५ ॥

जगसे प्रेम हमारा होवे, अपने बन्धु समान ।

हिलमिल करके "दास" सभी फिर, गावें जिनगुण गान ॥

सुमति दो सुमतिनाथ भगवान् ॥ ६ ॥

नूतन वर्षाभिन्दन ।

आओ नव वर्ष पधारो ॥ आओ ० ॥
अपने शुभागमनसे सबकी अन्तर्दशा सुधारो ॥ आओ ० ॥

आये हो तो शुभ हो आओ,
सबके हृदय कंज विकशाओ,
कदम कुशासनाओके कारण हृदय हो रहे तग ।
दूर हटा संकोच उन्होका लाओ नूतन रंग ॥

मिटे यह जिससे अन्तर्दाह,
बड़े प्रतिदिन नव नव उत्साह,
इतना करनेको भूतलपर प्यारे वर्ष पधारो ॥ आओ ० ॥

(२)

हृदय अज्ञतासे जकड़े है,
कुहड़ियोंको वे पकड़े है,
हो फिर भला वहापर कैसे उदारताका वास ।
कैसे अन्तर्दाह न हो क्यों बने न दृखके दास ॥
हृदय अज्ञता दूर हटाओ,
रूढ़ि अज्ञता नहीं बढाओ,
कर संसार सुशिक्षाका सामाजिक दशा सुधारो ॥ आओ ० ॥

(३)

फूट राक्षसी नाच रही है,
सबे नाशको याच रही है,
सांस्कृतिक संगठन कहे फिर कैसे होगा आज ।
बिना संगठन बन सकता क्या उन्नत कभी समाज ॥
फूट राक्षसी दूर हटाओ,
हृदय हृदयमें प्रेम बढाओ
हार्दिक कल्मष प्रेम सलिलसे आओ शीघ्र पखारो ॥ आओ ० ॥

(४)

उन्नत तभी सुधर्म बनेगा,
शांति दयामें देश सनेगा ।
सुखमय होकर सभी तभी पालेने पूर्ण स्वराज ।
सुर क्या अहमिन्द्रोसे बढ़कर होगा पुरुष समाज ॥
स्वर्ग लोक नर लोक बनेगा,
दम्भ द्वेष मात्सर्य हनेगा ।
सफल स्वागमन अहो बनाने आओ वर्ष पधारो ॥ आओ ० ॥

निर्वाण ।

(रचयिता-पं० मूलचन्द्रजी जैन 'वत्सल')

निर्वाण ।

हां ! कर्मजालसे मुक्त वीरका श्रेष्ठ आत्मकल्याण ।
आत्म विजयकी पूर्ण सफलता का हां अंतिम दृश्य ॥
मानवीय सर्वोत्कृष्ट सत्ताकी प्राप्ति अदृश्य ।
जीवःत्माका विश्व बंधनोंसे सदैवको त्राण ॥
हां निर्वाण ॥ १ ॥

निर्वाण ।

हां ! कर्मजालसे मुक्त वीरका श्रेष्ठ आत्मकल्याण ।
मनुजो ! देखो ! मानवका परिपूर्ण आत्म उत्थान ॥
हां, मानवका ! तुम मानव हो? सोचो कुछ ला ज्ञान ।
क्या पासकते हो तुम भी ! जग बन्धनसे परित्राण ॥
हां निर्वाण ॥ २ ॥

निर्वाण ।

हां ! कर्मजालसे मुक्त वीरका श्रेष्ठ आत्मकल्याण ।
पासकते हो तुम भी हे मनुजो ! वह मुक्ति महान ॥
कर सकते हो तुम भी हे मनुजो ! वह आत्मोत्थान ।
करो प्रयत्न बने हो तुम क्यों, हा ! ऐसे त्रियमाण ॥
होगा सफल तुम्हारा तब ही दिवस वीर निर्वाण ।
हां निर्वाण ॥ ३ ॥

आशीर्वाद ।

दि-न दिन उन्नति करे, "दिगंबर जैन" हमारा ।
गं-ग सलिल सम बहे, विमल शिक्षाकी धारा ॥
व-ने विश्वका मित्र, कलहसे करे न थारी ।
र-ने नीतिसे प्रीति, भावना यही हमारी ॥
जै-न दिगंबर धर्मको, उन्नति पथपर दे पठा ।
न-ही डरे उपसर्गसे, क्षमा खड्गसे दे हटा ॥
स-दा समयपर ही-मित्रोसे मिलने जावे ।
दा-व धर्मका यही, सुभग सन्देश सुनावे ॥
जी-ता हरदम रहे, जातिको शीघ्र जगावे ।
ता-न एकता भरे, फूटका भूत भगावे ॥
र-त रहकर कर्तव्यपर, "प्रेम" सुधा पीता रहे ।
हे-भगवन् ! संसारमें, जैनधर्म जिता रहे ॥

निवेदक-डॉ० प्रेमसागर--बुढार ।

नूतन साल मुबारक हो.

नूतन आ वर्ष तमो सौने, मुबारक हो मुबारक हो,
तभारा कष्ट सौ टणीने, सदा आनंद भंगण हो.
नडो ना अन्य आपत्ति, उपाधि आधि ने व्याधि,
आपो सुभ शांति सर्वदा, प्रभुनी हो कृपा न्यादि.
साह्य दीन दुःखीने बधने, सशश शृंगी करी लेजे,
साध आधिष अंतरनी, अमर जग शीर्ति भेजवजे.
भुराहो सौ श्रुणो मननी, वधो संतति संपत्ति,
आणी मनना दुरायारो, प्रभुभां राषण्णे प्रीति.
रही संपी सदा नपि, रहे सह कृत्यने करता,
कदी सत्य नीति धर्म न, भूशो श्र आ जता.
हो दीर्घायु असाधमां, सदा शुभ कृत्ये सिद्धि हो,
नूतन आ साल मुबारक हो!

मुबारक नित्य आनंद हो.

रामचंद्र माधवराव मोर-मुरत.

नूतन-वर्षाभिनंदन.

(हरीगीत छंद.)

वृद्धि यजे धन धान्यनी, लडावा भल्लोरा मालुने,
वीर-बीम-डनुमंत सभ, पुत्रो यकी सुभ पामने.
साथी जनी निज देशना, संजाममां धन वापरो,
नूतन जनी आ वर्षमां, आनंदमां हीन गाणजे. १.

आ वर्षमा आनंदयी, हे मित्र मेले मालुने,
धन धान्यने संग्रह करी. सौ संप मांडी यावने.
हांती वली निज हाथी, अंगे धरो पाही तमो,
नूतन जनी आ वर्षमां, आनंदमां हीन गाणजे. २.

कर्तव्य ने अधुरां रहयां छे, आपल्यां गत वर्षनां,
कभर कसीने पूरुं करणे, काम याजे देशनां.
भारत तल्ला उदय विषे, तम वित्त उदाहरीं वापरो,
नूतन जनी आ वर्षमां, आनंदमां हीन गाणजे. ३.

तन मन अने धन वापरी, भारत तल्ला सेवा करी,
तम आह्लाडाने ज्ञान दध, संसारमां पग आहरी.
भांधी सभा गांधीयंही, सौ देशने उद्धारने,
नूतन जनी आ वर्षमां, आनंदमां हीन गाणजे. ४.
भोहनदास मथुरादास शाह काशीसकर, कंधाला.

नूतन वर्ष स्वागत.

(लेखक:-मोतीदास त्री. भादवी-आहरीस.)

कंध वर्षा परे सुभरूप ज-भां,

ननुं वर्षाज तेम जणे सुभमां.

मननी शुं सुराद श्रुणो सरवे,

मम आश परी प्रभु तेज श्रुणो. १

शुभ काम करी जमते हितनां,

वरभाण धरो जयती करमां.

शुभ दान करी धनवान जने,

मम आश परी प्रभु तेज श्रुणो. २

दुःख जय दुरे धर कुसंपथी,

सु संप करो जनवाज सुधी.

सह युद्धि सङ्गने जे अपसज्जे,

मम आश परी प्रभु तेज श्रुणो. ३

जमने विलशा धरमां प्रभटो,

विश्वे सध्यां सुभनां श्रिष्टो.

परभारथ जे प्रतिजिंय पडो,

मम आश परी प्रभु तेज श्रुणो. ४

हिंद ज्योम विषे सुभ ररभी वधो,

पगिताप जधा हरिये दुपज्जे.

सुभति प्रसरो सहु विश्व विषे,

मम आश परी प्रभु तेज श्रुणो. ५

निज देख तल्लो धरो याह मने,

जन हित तमो मनमां धरजे;

दुःखाया जननां मन दुःख हरो,

मम आश परी प्रभु तेज श्रुणो. ६

तन व्याधि उपाधि कदी न नडो,

सुभ संपत्ति संतति बाब भुणो.

शुभ शीर्ति अने निज आय वधो,

मम आश परी प्रभु तेज श्रुणो. ७

अद्भुत-महिमा ।

(पं० गुणभद्रजी जैन-कलोल)

पालक सभीके कोई पालक तुम्हारा नहीं ।
 ज्ञाता हो महीके आपका न कोई ज्ञाता है ॥
 विपुल विभूतियोंका दाता है सदैव तू ही ।
 दीनबन्धु आपका कहीं न कोई दाता है ॥
 गाते अमरेन्द्र भी तुम्हारा ही गुणानुवाद ।
 अनघ कदापि तू न अन्य गुणगाता है ॥
 सादर समस्त विश्वनीय तुझे ध्याते रहें ।
 लेकिन तू कभी भी न प्राणियोंका ध्याता है ॥
 सुधा भरा शान्त उपदेश सुन प्राणिवर्ग ।
 मानों मंत्र मुग्ध ही विलोकते तुम्हारी ओर ॥
 तौभी तृप्त होते नेक लोचन कदापि नहीं ।
 होता कभी तृप्त क्या विलोक चंद्रको चकोर ॥
 हम तो तुम्हारे दीन सेवक हैं दीनबन्धु ।
 रहते हैं प्रस्तुत सदैव निज हाथ जोर ॥
 फूलसा है कोमल तुम्हारा चित्त सर्व प्रति ।
 मेरे प्रति वही चित्त हाथ शिलासा कटोर ॥



“ उवावेंगे । ”

(पं० रवीन्द्रनाथ जैन न्यायतीर्थ ।)

छीन सर्वस्व बने आज ये हमारे प्रभु ।
 बनाकर भिखारी, कहीं तुम्हें हम बनावेंगे ॥
 दंड जेल मार तोप तीर भरु तमंचोंसे ।
 पेरों तले कुचल तुम्हें धूल अब मिलावेंगे ॥
 धूल किन्तु तूल होय छाये जब गगन माहिं ।
 वायुके झकोरोंसे तुम्हें अब उड़ावेंगे ॥
 बिजुलीके पानका अधात कई बार कर ।
 गैरोंसे “ नाथ ” आज भारत बचावेंगे ॥

संबोधन ।

भए तुम कायर, क्यों हे वीर ?
 तुम अपने पुरखोंको देखो, कैसे थे गंभीर,
 कालबलीसे भी लड़नेमें, होते थे न अवीर ॥१॥
 थे रणके ऐसे वो सच्चे, चाहे जाय शरीर,
 पीठ दिखाना किसको कहते, डारत बैरिनु चीर ॥२॥
 बलघारी, व्रतघारी, भारी, ब्रह्मचारी, प्रणवीर,
 ऐसनुके तुम ऐसे उपजे जैसे रूख करीर ॥३॥
 उठो! उठो! क्यों नाम लजाओ, धारो कर समशीर,
 भारतकी ‘प्रिय’ लाज बचाओ, दूर करे सबपीर ॥
 “प्रिय”

शहीदे-बतन ।

नामकर जाते अमर, देश पै मरनेवाले ।
 काम कर जाते हैं वे, जांसे गुजरनेवाले ॥
 जिस्म फानीकी नहीं, करते वो कुछ भी परवा ।
 खेल जाते हैं, अरे जानपै मरनेवाले ॥
 सच्चे होते हैं बड़े, कौलके अपने पूरे ।
 होते वो और हैं, जो कहके मुकरनेवाले ॥
 साफ बतला दिया है, ‘दास’ने करके सबको ।
 ऐसे होते हैं फिदा, देशपै मरनेवाले ॥
 लाजिमी है ‘प्रिये’ तुझको भी सबका कभी लेना ।
 यूं तो होते हैं सभी, पेटके भरनेवाले ॥
 पन्नालाल ‘प्रिय’-वृन्दावन ।

दिगंबर ।

दि-न हो अथवा रात सदा जो ध्यानमग्न ही रहते हैं ।
 गं-ग धारकी भांति आत्मनदमे ही जो नित बहते हैं ॥
 ब-ने जहांतक प्राणि मात्र-हितहेतु भाषना भासे हैं ।
 र-हित द्वेष मद मोह, दिगंबर “दास” वही कहलाते हैं ॥

चित्र-परिचय ।

इस विशेषांकमें प्रकट किये गये चित्रोंका संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है—

(१) श्रीमान् सिंघई पन्नालालजी परवार जैन, रईस-अमरावती (वरार)—आपके नामसे हमारे पाठक अच्छी तरहसे परिचित होंगे । आप परवार समाजके नेता व बड़े दानी व राजमान्य भी हैं । अभी नागपुर प्रांतीय धारा-सभाके लोकनियुक्त सभासद हैं । परवार डिरे-क्टरी आपने (०००) खर्च करके तैयार कराई थी, जिससे परवार समाजका बड़ा उपकार हुआ है । परवार सभाके पांचवें अधिवेशनके आप सभापति थे तथा अभी ही हमारी भारत-वर्षीय दिगंबर जैन परिषदके सप्तम अधिवेशन अंतरीक्षणी (सिरपुर)के आप ही सभापति बनाये गये थे, जिससे वर्तमानमें आप ही सभापति हैं । आशा है कि आपके सभापतित्वमें परिषद इस वर्ष विशेष उन्नति कर सकेगी । आप चिरायु होकर धर्म, समाज व देशकी विशेष २ सेवा करते रहें ।

(२) श्री स्वामी संयंतभद्र और राजा शिव-कोटि—स्वामी समन्तमद्र संभवतः फणिमंडला-न्तर्गत “उरगपुर” के राजकुलमें उत्पन्न हुये थे । आप बहुत समय तक गृहस्थाश्रममें नहीं रहे और दि० मुनिदीक्षा कांची (कांजीवरम) या उसके सन्निकट ग्रहण की थी । इस अवस्थामें स्वामीजीने गहन तपश्चरण और अटूट ज्ञानसंचय

करनेमें समय व्यतीत किया था । जब स्वामीजी “मणुवकहल्ली” ग्राममें बिहार कर रहे थे तब उनको भस्मक नामक महा रोग उत्पन्न होगया और वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया । इसी कारण शास्त्रोक्त मुनिजीवन बिताना उन्हें असंभव होगया और ‘सछेखना’ व्रत अंगीकार कर लेना उचित समझा तथा गुरु महाराजसे आज्ञा मांगी । तपोरत्न गुरु महाराजने इसलिये यह व्रत देना स्वीकार नहीं किया कि स्वामीजीकी अल्पायु नहीं थी । प्रत्युत आदेश किया कि जिस वेषमें जैसे हो, रोगके शांतिका उपाय करो, रोग शान्त होजानेपर प्रायश्चित्त पूर्वक पुनः मुनिधर्म धारण किया जासक्ता है ।

स्वामीजीने हृदयमें जैन धर्मका श्रद्धान रखते हुये भी दिगम्बर वेषका परित्याग कर अपने शरीरको भस्मसे आच्छादित बना लिया ! और वे कांची पहुंच गये, (आराधना कथाकोषमें ब-नारस लिखा है) वहांका राजा शिवकोटि था और उसका ‘भीमलिङ्ग’ नामक शिवालय था । स्वामीजी वहां पहुंचे और राजाको आशीर्वाद दिया और बोले कि ‘राजन् ! मैं तुम्हारे इस नैवेद्यको शिवार्पण करूंगा, राजा प्रसन्न हुये और सवा मनका प्रसाद मंगवाया । स्वामीजी अकेले मंदिरमें रह गये तथा अपनी जठराग्निको शान्त किया, उपरान्त दर्वाजा खोल दिया । संपूर्ण भोजनकी समाप्ति देखकर राजाको आश्चर्य हुआ और प्रतिदिन प्रसन्नतापूर्वक नैवेद्य भेजने लगा । स्वामीजीकी जठराग्नि मिटने लगी और उत्तरोत्तर भोजन अधिक परिमाणमें बचने लगा,

आपने इसे देवप्रसाद बतलाया, मगर राजाको संतोष न हुआ और अगले दिन ब्रह्मात् दरबाना बुलवा दिया गया। समन्तभद्रजीने उपसर्ग आया जान उसकी निवृत्ति पर्यन्त अकमलका परित्याग किया। स्वामीजीकी शिबलिंगके प्रति भक्ति है या नहीं, यह जाननेके हेतु राजाने पिण्डी नमन करनेका आग्रह किया। तब स्वामीजी चतुर्विंशति तीर्थंकरकी स्तुति करनेमें लीन होगये और “चंद्रप्रभं चंद्र मरीचिगौरम्” इत्यादि आठवें तीर्थंकरकी स्तुति करते हुये उस भीमलिंगकी ओर देखा तो किसी दिव्यशक्तिके प्रतापसे चन्द्रप्रभु भगवानकी जाज्वल्यमान प्रतिमा प्रगट होती दिखाई दी !

राजा इस माहात्म्यको देखकर चकित होगया और वह अपने छोटे भाई शिवायन सहित समन्तभद्रके चरणोंमें गिर पड़ा। स्वामीजीने चतुर्विंशति स्तोत्र पूर्णकर राजाको घर्मोपदेश दिया जिसके प्रभावसे वह अपने पुत्र श्रीकंठको राज्य देकर शिवायन सहित दि० जैन मुनि होगया। वही शिवकोटि मुनि उपरांत आचार्य हुये और स्वपर कल्याण किया।

स्वामीजीने भी प्रायश्चित्त पूर्वक पुनः मुनि दीक्षा धारणकी और घोर तपस्या करने लगे। शुभ चन्द्राचार्यने आपको ‘भारतभूषण’ लिखा है। समन्तभद्र भारतके पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिणके प्रायः सभी देशोंमें अप्रतिद्वंदी सिंहकी तरह निर्भयताके साथ वाद करते हुये घूमे थे। आपने गंधहस्ति महाभाष्य, आप्तमीमांसा, युक्त्यनुशासन, स्वयंभूस्तोत्र, रत्नकरण्ड श्रावका-

चार, तत्वानुशासन आदि अनेक ग्रन्थ निर्माण किये हैं।

स्वामी समन्तभद्रके समयमें बहुत विशद है, आपका कब स्वर्गवास हुआ इत्यादि बातें भी अनिश्चितसी हैं। तथापि जैन पट्टावलियोंसे आपका अस्तित्व समय शक संवत् ६० (ई० सन् १३८) प्रगट है। स्वामीजीका विशेष परिचय हम किसी आगामी अंकमें अवश्य प्रगट करेंगे। यह चित्र जो कि बहुत ही भावपूर्ण व आकर्षक है ‘वीर’ के समन्तभद्र अंकसे लिया गया है।

(३) अतिशयक्षेत्र श्री नेमिगिरि-जितूर - इस नूतन परिचित परन्तु अतीव प्राचीन अतिशय क्षेत्रका परिचय हमको श्री जिनसेवी ब्रह्मचारी महावीरप्रसादजी-जितूर द्वारा प्राप्त हुआ है, जो निम्नप्रकार है—

दक्षिण हैदराबाद (निजाम) के परभणी जिलेमें जितूर ग्रामसे २ मील दूरीपर यह नेमिगिरि पर्वत आया हुआ है, जो जमीनसे करीब आध माइल ऊंचा है। ऊपर पहाड़को काटकाट कर बड़ा विशाल भव्य मंदिर बनाया गया है जिसमें अलग २ छह मंदिर बने हुए हैं। मूलनायक श्री नेमिनाथजीकी पद्मासन प्रतिमा ९ फीट ऊंची है, परिक्रमा हो सकती है। पूर्व भागमें श्री शांतिनाथजीकी पद्मासन श्यामवर्ण प्रतिमा ६ फीट ऊंची है—परिक्रमा हो सकती है। पश्चिम भागमें फण सहित श्री पार्श्वनाथकी ७ फुट ऊंची पद्मासन प्रतिमा करीब पाव इंच अंतरीक्ष है। परिक्रमा हो सकती है। इसके उत्तर

भागमें श्री नंदीश्वरकी ४ फीट ऊंची पद्मासन प्रतिमा है। इसके पासमें श्री बालुवालीका मंदिर है। प्रतिमा श्यामवर्ण ९ फीट ऊंची पद्मासन है। इसके बाये पांवमें पारस था सो किसीने निकाल दिया है—चिह्न दिखाई देता है ! फिर रास्तेके पूर्व भागमें श्री आदिनाथस्वामीकी पद्मासन प्रतिमा चार फीट ऊंची है। तथा पासमें ही पंचफमेछीकी प्रतिमा ४ फीट ऊंची है। भीतर जानेका रास्ता ढाई फीट चौड़ा इतना ही ऊंचा था जो सन् १९२३ में खुदवाकर बड़ा किया गया है, जिससे खड़े होकर जा सकते हैं। यह पहाड़ छोटे२ वृक्षोंसे ऐसा आच्छादित है कि अनान पुरुष यह नहीं जान सकते कि यहां कोई भी मंदिर होंगे। जो लोग यहां आकर इन प्राचीन भव्य मंदिरोंका दर्शन करते हैं वे प्रसन्न होकर मुक्तकंठसे स्तुति करते हैं। उत्तर दिशामें जमीनसे एक मील ऊंचेपर शिखरबंद मंदिर है जिसमें प्रतिमा नहीं है परन्तु चरण हैं। यह मंदिर १२ मीलसे दिखता है। कई लोग कहते हैं कि ३००-४०० वर्ष पहले जितूरमें जैन राजा थे या राज्यमान्य श्रेष्ठिवर्य थे। ये नित्य इन मंदिरोंकी पूजा करनेको आते थे जिसके लिये जितूरसे सुरंग खुदवाई गई थी। सुरंगका चिह्न गांवके मंदिरमें मौजूद है। जितूर गांवको जैनीनगर भी कहते थे। अनुमानतः अपभ्रंश नाम जितूर होगया होगा। औरंगजेब बादशाहके जमानेमें गांवके १२ मंदिर धराशायी होगये थे जिनके चिन्ह अभी दिखाई देते हैं। मंदिरके स्थानोंपर खुदवानेसे बड़ी२ प्रतिमा मिलती हैं।

किसी२ का कहना है कि यह जितूर सोमवंशी क्षत्री चारुसेनका बसाया हुआ है जिसकी माहिती कालिका पुराणमें है। तथा जितूरसे ८ मीलपर चारठाना नामक गांवमें भी जैन मंदिरके चिह्न मौजूद हैं। मानसम्भ भी है, खुदवानेपर जैन विम्ब भी मिलते हैं। बोगार जैन सोमवंशी क्षत्री थे उसके एक जैन राजाका किछा १० मीलपर बंधा हुआ था जिसके चिह्न मालूम होते हैं। ऐतिहासकोंको इसकी विशेष खोज करनी चाहिये। वर्तमानमें जितूरमें २० घर जैमियोंके हैं व २ मंदिर हैं। स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचंदजीके भतीजे श्री० सेठ ताराचंद नवलचन्दजी वीर सं० २४४९ ई०सन् १९२३में जितूर पचारे थे तब नेमिगिरिकी बंदना कस्के व निरीक्षण करके कह गये थे कि हम इसका कुछ जीर्णोद्धार कर देंगे (जैनमित्र वर्ष २४ अंक ३२) अतएव सेठ ताराचंदजीको इस बातपर अबश्य लक्ष देना चाहिये। हम आशा करेंगे कि ब० महावीरपसादजी इस अतिशयश्रेष्ठको विशेष प्रसिद्धिमें लानेके लिये पूर्ण उद्योग करते रहेंगे।

(४) श्री आयुर्वेदाचार्य पं० सत्यंधरजी जैन वैद्य, काव्यतीर्थ—छपारा—आपका जन्म परिवार जातिमें सं० १९१६में सनाई (सागर) में हुआ था। पिताका नाम छोटेलाजी था तथा आपका प्रथम नाम चुकीला था। आपको ४ वर्षकी आयुमें पिताका बियोग होगया था। जिससे काकाके पास रहने लगे थे। गरीबीके कारण आपको बहुत तकलीफें उठानी पड़ीं, फिर

सन् १९१४में कारणवश आप सागर पहुंचकर सत्तर्कसुधा० पाठशालामें प्रविष्ट होगये । इस विद्यालयके अधिष्ठाता न्या० पं० गणेशप्रसादजी वर्णी थे । आपकी सत्यवाक्पटुतासे प्रसन्न होकर वर्णीजीने आपका नाम 'सत्यधर' रख लिया । यहां ६ वर्ष तक रहकर काशी व कलकत्ताकी संस्कृत, साहित्य व व्याकरणकी कई परीक्षायें पास कीं। फिर सेठ डालचंदजी सागरकी २०) मासिककी छात्रवृत्ति लेकर वैद्यक पढ़नेको काशी चले गये, वहां १ वर्ष पढ़कर भेलसा फिर सागर आकर विद्यालयमें कार्य करने लगे । साथमें पढ़ते भी रहें व 'आयुर्वेदभूषण'की परीक्षा पास की । फिर विशेष वैद्यक पढ़नेके लिये डालचंदजी सर्राफकी ओरसे आप कानपुरमें वैद्यराज पं० कन्हैयालालजी वैद्यरत्नके पास पहुंचे, वहां दो वर्ष पढ़कर 'आयुर्वेदाचार्य'की परीक्षा पास करली व दो वर्ष तक कानपुर जैन औषधालयका कार्य सुचारुरीत्या किया । कार्य छोड़नेपर वैद्यराजजीने आपको प्रशंसा पत्र दिया था । अभी आप दो वर्षसे छपारामें जानकीबाई धर्मार्थ औषधालयमें तथा पार्श्वनाथ विद्यालयमें उत्तमतया कार्य करते हैं तथा साथमें धन्वंतरी आयुर्वेदिक फार्मसी खोलकर ऊंचे २ रस भस्म वर्गैरह बनाते हैं । स्वभाव भी सरल है । आशा है जैन समाज आपके वैद्यकीय उत्तम ज्ञानका लाभ उठावेगी ।

(५) श्रीयुत मोहनलाल मथुरादास काणी-साकर-कंपाला (आफ्रिका)-आप बीसा मेवाडा जैन जाति व काणीसा (खंभात, गुजरात)के निवासी हैं परन्तु अभी २-३ वर्षसे निजी प्रयत्नसे

आफ्रिकाके कंपाला नगरमें जाकर अच्छे व्यापारी स्थानपर नियुक्त हैं व "दिगम्बर जैन" के गुजराती लेखकोंमेंसे एक उत्तम लेखक हैं । 'जैन संस्कार विधान' नामक पुस्तक भी आपने लिखकर गुजरातीमें प्रकट की है । कुटुम्बको विना कहे ही निज उद्योगसे आफ्रिका चले गये थे परन्तु वहां जाकर सुखी होनेपर आपके कुटुम्बी आपसे प्रसन्न हैं । आप चिरायु होकर विशेष योग्यता प्राप्त करें ।

वीर-विनय ।

(रचयिता-श्री० ब्र० प्रेमसागरजी-बुढार ।)

वो-ध केवल प्राप्तकर, त्रैलोक्य अवलोकन किया ।
लो-कके कुल प्राणियोंको, मोक्षमार्ग बता दिया ॥
म-रना जरा अह जन्म लेना, रोग तीनों हैं बड़े ।
हा-य ! इनके वश हुए, प्राणी भवेदधिमें पड़े ॥
वी-र तुमने उक्त रोगोंकी, दवा बतला दी ।
र-त्न तीनों प्राप्त हों तब, प्राप्त हो शिवकी मही ॥
को-र्ति तीनों लोभमें, भगवन् तुम्हारी छागयी ।
ज्ञ-न जो शरणमें आगेय, उनरी विपत्ति नशा दी ॥
य-ह जानकर आया शरण, मेरी विपत्ति विनाशय ।
हो-ऊं स्वतंत्र न जाओ भ्रमों, ऐसी दया परकाशिये ॥
वे-शक बिना तक्षशीर मुझको, कर्म देते परी हैं ।
वे-ग करदो नष्ट उनहो, तो लहूं भवतरी मैं ॥
ग-ति चारमें मुझको रुलाते, कष्ट देते हैं महान ।
पा-षाणसे भी अति कड़े हैं, रहिम इनमें है कहां ?
प-रमात्मा इनसे बचाओ, मैं विनय करता खड़ा ।
की-जिये भवपारमें, चिरकालसे इसमें पड़ा ॥
क्ष-य करो सब कर्म मेरे, मैं बरूं शिव नारिको ।
य-ह लगी दिल 'प्रेम'के, बस छोड़ूं संसारको ॥

सम्पादकीय-वक्तव्य

आजकल करते २ "दिगम्बर जैन" को प्रकट होते हुये २२ वर्ष बीतगये नूतन वर्षारंभ । और हर्ष है कि आज यह पत्र २३वें वर्षमें पदापिण करता है । गत वर्षोंमें 'दिगम्बर जैन' ने जैन समाजकी कैसी सेवा की है उसको बतानेकी हमें आवश्यकता नहीं है, परन्तु इतना तो हम अवश्य कहेंगे कि १८ वर्ष पहिले "दिगम्बर जैन" ने ही सचित्र विशेषांक प्रकट करनेकी शुरुयात की थी जो आजतक बराबर प्रकट होता चला आरहा है व इसका ही अनुकरण हमारे समाजके कितनेक पत्रोंने किया है, यह जानकर किसको हर्ष न होगा ?

यह सचित्र विशेषांक यद्यपि कारणवशात् कुछ देरीसे प्रगट होरहा है तौभी इसका लेख-संग्रह देखकर पाठकोंको इसकी देरी नहीं खटकेगी । इस अंकमें हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी व संस्कृत ऐसी चार भाषाओंके ६१ लेख व कविताओंका संग्रह पाठकोंको दृष्टिगत होगा । जिनमें "नेपालके शिलालेख व जैनधर्म" नामक ऐतिहासिक नवीन लेखसे तो जैन समाजको कई नई २ बातें मालूम होंगी । हम हरणक पाठकसे आग्रह-पूर्वक निवेदन करेंगे कि वे इधर उधरके पले पलट कर व चित्रादि देखकर ही इस अंकको अलमारीमें रख न दें परन्तु समय निकाल कर इसीके सभी लेख व कविताओंको क्रमशः पढ कर लाभ उठाइये ताकि हमारा परिश्रम सफल हों ।

इस अंकके लिये हमें इतने लेख व कविता-ओंका संग्रह प्राप्त हुआ है कि उन सबको हम स्थानाभावसे प्रकट नहीं कर सके हैं परन्तु वे आगामी अंकोंमें अवश्य प्रकट होते रहेंगे । जिन २ सुज लेखक व कवियोंने इस अंकके लिये अपनी २ कृतियां भेजी हैं उनका हम आभार मानते हैं व आशा करते हैं कि इस प्रकार वे दिगम्बर जैनकी सेवा करते ही रहेंगे । इसवारके चित्रोंके विषयमें हम यह अवश्य कहेंगे अबके सिर्फ पांच चित्र रख सके हैं परन्तु इनमें 'स्वामी समंतभद्र व राजाशिवकोटि' का चित्र व 'नेमगिरि' तीर्थका चित्र पाठकोंको अतीव आकर्षक मालूम होगा । हमारा विचार नये मुनियोंके चित्र प्रकट करनेका था परन्तु वे प्राप्त न हो सकनेसे प्रकट नहीं कर सके हैं । परन्तु आगे प्राप्त होनेपर आगामी अं-कोंमें प्रकट करनेका अवश्य प्रयत्न करेंगे ।

* * *

इस वर्षके ग्राहकोंको "नवरत्न" तथा जैन विवाह विधि (हिंदी उपहारग्रन्थ । भाषामें) ऐसे दो बिलकुल नवीन ग्रन्थ उपहारमें देनेका हमने निश्चित किया है, जो तैयार होने पर सब ग्राहकोंको इन वर्षके मूल्य २।=) की बी० पी० से भेजे जायंगे । मनीओर्डरसे मूल्य भेजनेवाले २।) भेजें ।

* * *

इस वर्ष (वीर सं० २४९६) का जैन तिथि दर्पण श्री १०८ तिथिदर्पण । मुनि श्री शांतिसागरजी छानीके चित्र सहित प्रकट

करके आश्विनके अंकके साथ सब ग्राहकोंको भेजा दिया गया था तथा नये ग्राहकोंको यह तिथि-दर्पण इस अंकके साथ भेजा गया है ।

* * *

हम पुराने पाठकोंसे एक निवेदन अवश्य करोगे कि “दिगम्बर जैन” निवेदन । आपको २।) रुपयेमें सचित्र विशेषांक, ‘ तिथिदर्पण ’

व उपहारग्रन्थादि देकर कितना लाभ पहुंचता है अतः आपका विशेष नहीं तो इतना ही फर्क है कि आप इसकी ग्राहक संख्या बढ़ानेका पूर्ण प्रयत्न करते रहें । यदि प्रत्येक पाठक एक २ ग्राहक बढ़ा देवे तो ग्राहक संख्या दूनी हो सकती है व छठ संख्या भी बढ़ सकेगी । आशा है कि हमारा यह निवेदन खाली नहीं जायगा ।

* * *

जैन समाजको यह बात भलीभांति विदित है कि जब भा० दि० मा. दि. जैन परिषदका जैन महासभा मन-अधिवेशन और उसकी सभा हुई या सफलता । यों कहिये कि उसमें फूटमफूट हुई तब ही कुछ धर्मप्रेमी श्रीमानों और धीमानोंने धर्म एवं समाजमेवाके हेतु परिषदकी स्थापना की थी । उसने आजतक गत ७ वर्षोंमें जो आशा-तीत उन्नति एवं उद्देश्यकी पूर्ति की है वह भी जैन समाजसे छिपी नहीं है । परिषदके अन्य २ स्थानोंपर अधिवेशन होकर जागृति होती रही, उसी प्रकार सप्तम अधिवेशन भी गत कार्तिक शुद्ध १९की अतिशय क्षेत्र श्री अन्तरीक्षनीमें

हुआ था । समापति ये समाज एवं राष्ट्रमान्य धर्मप्रेमी-श्रीमान् सिंघई पन्नालालजी जैन रईस एम० एल० सी० अमरावती । फिर क्या पृछना था ? कार्य इतनी सफलता, शांति एवं उत्साहके साथ हुआ कि वर्णन नहीं किया जासکتा । जन-संख्या भी १९००-२०००के अनुमान होगी । जिसमें श्री० ब्रह्मचारी जिनसागरजी, ब० नेम-चंदजी, ब० सीतलप्रसादजी, ब० महावीरप्रसा-दजी, विद्यावारिधि बैरिष्टर चम्पतरायजी, व्या-ख्यान वाचस्पति पं० देवकीनंदनजी, प्रोफेसर हीरालालजी, बालचंद देवीदासजी चवरे वकील, पं० वृजवासीलालजी, वामनराव बदनोरे वकील आदि उल्लेखनीय सज्जन थे ।

सभापतिजीने जिस निर्भीकता, सत्य एवं धार्मिक भावोंसे युक्त भाषण दिया था वह वास्तवमें अनुकरणीय है । आपने विदेशगमन, शारदा ऐक्ट, अन्तर्जातीय विवाह, स्त्री-शिक्षा प्रचार, अज्ञेनोंको जैन बनाने, प्राचीन जैनों (कलाल, सराक आदि)का उद्धार करने, स्वदेशी प्रचार आदिका युक्तिपूर्वक समर्थन किया था । महामंत्री बाबू रतनलालजी वकीलने परिषदकी गत वर्षकी रिपोर्टमें बतलाया था कि इसके अन्तर्गत परीक्षालयमें बोर्डिंगोंके ९०० विद्यार्थी परीक्षामें बैठे थे । करीब १००) मासिक छात्र-वृत्तियाँ भी दी जाती हैं । प्रकाशन विभागमें ३२ ग्रन्थोंकी १९००० कोपी मौजूद हैं । अनेक पुस्तकें लागत व विनामूल्य ही प्रचार की जाती हैं । गत वर्ष (१०००) की पुस्तकें विकी और २००) की मुफ्त बांटी गई । परिषदके ९०० सभासद हैं । लोगोंकी अतीव उत्कंठा

होनेसे वैरिष्ठर सा०का 'शिक्षा व गृहस्थ धर्म' पर बहुत ही विद्वतापूर्ण भाषण हुआ था ।

परिषदमें १८ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुये थे । जिनमें अन्तर्जातीय विवाह, जैन दीक्षा, जैन सीरीक्ष, स्त्रीशिक्षाप्रचार, इतिहास संशोधन बोर्ड, शारदाऐक्टसमर्थन आदि उल्लेखनीय हैं ।

चालू वर्षके लिये ३५००) का बजट मंजूर किया गया । जिसमें २५००) प्रचारविभाग, ५००) दफ्तर, ३००) परीक्षाविभाग, २५०) घाटा वीर, २५०) मुतफर्रिक खर्चके लिये नियुक्त किये हैं । परिषदको अन्य दानी सज्जनोंने तो सहायता दी ही थी किन्तु सभापति महोदयने भी २५०) प्रदान किये थे । हमें विश्वास है कि ऐसे योग्य सभापतिकी अध्यक्षतामें परिषद इस वर्ष और भी उन्नतिकारक कार्य कर दिखावेगी । इसमें कोई संदेह नहीं कि परिषद थोड़े खर्चमें आशातीत कार्य कर रही है । सच बात तो यह है कि इसके मंत्री बाबू रतनलालजी वर्काल निस्वार्थ सेवक हैं । हमारी हार्दिक इच्छा है कि वह दिन दूनी वृद्धिगत होती हुई जैनधर्म एवं जैनसमाजकी सेवा करती रहे ।

* * *

अधिकांश भारतवासी शारदाऐक्टसे भली-भांति परिचित हो चुके हैं, शारदा ऐक्ट और और वे उसका हार्दिक जैन समाज । समर्थन करते हैं । भले ही कुछ लोग केवल रूढ़ि-भंगके भयसे उसका विरोध करते हों, मगर विवेकी और उच्च जातीय बहुजन इसको हृदयसे चाहते हैं । इसमें कोई संदेह नहीं कि

इसके चालू होनेपर भारतको अनेक लाभ होंगे । जैसे—कि इससे अनमेलविवाह न हो पायेंगे, कारण कि ३-४ वर्षका अंतर तो हर हालतमें रह जावेगा । और वृद्ध विवाहका तो काला मुँह हो ही जावेगा । कारण कि योग्य सुशिक्षित कन्या उस अयोग्य संबंधको स्वयं होने न देगी । इसके अतिरिक्त जैनसमाजमें जो १५ वर्षसे नीचेकी १७०० से भी अधिक संख्याके उपर विधवायें हैं उनमें अब वृद्धि न हो सकेगी । १४ वर्ष तक कन्या योग्य घार्मिक एवं व्यवहारिक शिक्षा संपन्न होसकेगी । फल यह होगा कि शिक्षित एवं सुयोग्य दम्पतिका आनंद-मय जीवन व्यतीत होगा और उनसे योग्य संतान उत्पन्न होगी । इत्यादि अनेक लाभोंको देखते हुये हमारी विचारशील अधिकांश जैन समाज भी इसको हृदयसे चाहती है । किन्तु जो भाई कुछ लोगोंके वहकावे या उल्टी शिक्षासे इसको उचित न समझते हों उन्हें चाहिये कि वे एक बार फिर शान्तिसे विचार करें । अपने धर्मशास्त्र, समाजशास्त्रको देखिये, एक नहीं हजारों उदाहरण यौवनसंपन्न होनेपर विवाह होनेके मिलेंगे । अतः यदि आप धर्मशास्त्रोंपर विश्वास रखते हैं, समाज और देशके हितेषी हैं तो विना किसीके कहे सुने अपनी संतानका योग्य वयमें ही सम्बन्ध करें । हम तो यहांतक कहेंगे कि सगाई भी छोटी अवस्थामें न की जावे, कारण कि इसके होजानेपर भी संतानपर अच्छा असर नहीं पड़ता । हमें आशा है कि हमारा दयाप्रेमी घार्मिक समाज इसका अवश्य

पालन करेगी और जो अज्ञानतासे विरुद्ध प्रवृत्ति करें उनको समाज एवं सरकारी सत्ता द्वारा रोकनेका पृण प्रयत्न करेगा ।

* * *

हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि सेठ वैजनाथजी अग्रवाल दिग०

धर्मचन्द्रका परदेश- जैनके पुत्र धर्मचन्द्रजीको गमन और कठोर लण्डन गमनके कारण प्रायश्चित्त । कलकत्तेकी दिगम्बर जैन

पंचायतसे ब्र० चांदम-

लजी और ब्र० प्यारेलालजी द्वारा कठोर एवं अनुचित दण्ड दिया गया है ! प्रायश्चित्त पूर्ण करनेकी अवधि एक वर्ष है । दंड इसप्रकार दिया गया है—५ उपवास, ५० नीरस एकासन, ६० एकासन, सम्मोदशिखर, गिरनार व सोनागिरजीकी यात्रा, णमोकार मंत्रका जप एक वर्ष तक, अनार्यदेशगमन निषेधक टैकट छपानेके लिये ११), संस्थाओं व जैनगजट, स्याद्वाद केशरी आदि पत्रोंको (!) ५००) दान इत्यादि ।

अब विचारना यह है कि इतना कठोर दण्ड प्राप्त करने योग्य धर्मचंद्रजीने क्या घोर पाप किया था ? क्या परदेशगमन मात्रसे उन्हें इतना दण्ड देना न्यायसंगत कहा जासکتा है ? इस वीसवीं शताब्दीमें परदेशगमनका निषेध करना जैन जातिको व्यापारिक व धार्मिक उन्नतिसे वंचित रखना है । जैन पुराणोंमें परदेशगमन व जहाज यात्राके धर्मात्मा जैनियोंके दृष्टांत भरे पडे हैं । आजकल भी पेरिसमें १०० के गरीब जैन चौहरी यहांके गये हुये व्यापार करते हैं और यहां आते जाते रहते हैं, कौन उनको प्रायश्चित्त

देता हैं ? घोर पापीको भी जो दण्ड देना भारी कहा जासکتा है वह दण्ड निरपराधी धर्मचंद्रजीको देना सर्वथा अनुचित है । हम तो उनसे साग्रह कहेंगे कि वे अदण्डनीय होकर भी इस अनुचित घोर दण्डका कारण पूछें और अनुचित सिद्ध होनेपर इसे कदापि स्वीकार न करें ।

* * *

खेद है कि १० से १४ दिसम्बर तक शिव-हारा (विजयनौर) में होने-शिवहारामें रथयात्रा वाले रथोत्सवको बाबू बंद ! सोहबलाल श्री वास्तव

कलैक्टरने कुछ मुसलमा-

नोंके अनुचित विरोध करनेपर अपनी अन्यायपूर्ण आज्ञासे रोक दिया है ! यद्यपि धार्मिकोत्सवोंका प्रबन्ध करना सरकारका कर्तव्य है तथापि उसको रोक देना कहाँ तक न्याय कहा जासکتा है ? हजारों रुपया खर्च किये जाकर हर प्रकारकी तैयारी होनेपर यकायक धार्मिक कार्य रोक दिये जावें और जैन समाज चुपचाप ठंडी पड़कर अपनी तैयारीके बंधे बंधाये विस्तरोंको फिरसे खोलकर सो जावे यह लज्जाकी बात है ! हमारी कमजोरी, हमारी बेहदशान्ति और अकर्मण्यताका ही यह फल है ? अन्यथा कितने मुसलमानोंके जुलूस रोके गये । किन सिक्खोंके धार्मिकोत्सव रोकनेमें सरकारको सफलता मिली ? कितने आर्यसमाजियोंके उत्सव रोकनेका साहस सरकारकर सकी ? तब फिर हमारे ऊपर ही इस अन्यायके होनेपर क्यों व हमें आन्दोलन करके अपने अधिकारोंकी रक्षा करना चाहिये ? जैन समाजको सचेत होनेकी आ-

वस्त्रका है । केवल प्रस्ताव पास करके सरकारके पास भेज देनेका अब कुछ भी असर नहीं होसा है । इसलिये भारतवर्षीय दि० जैन परिषदका कर्तव्य है कि आवश्यकता हो तो सत्याग्रहकी भी स्कीम समाजके सामने रखे और वह शीघ्र अमलमें लाकर अपने धार्मिक स्वत्वोंकी रक्षा करे तथा शिवहाराका रथ निकलवाये बिना चैन न लेवे ।

१०००)का दान—महेश्वर जि० कुंवरलाल देवचंदजीने अन्त समय १०००) दान किया है । जिसमें २१००) महेश्वरमें पाठशाला खोलनेके लिये हैं ।

गिरनारजी (जूनागढ़)—में मगसिर सुदी ४ को श्रीमंत सेठ पुरनसावजी (सिबनी), लकरोड़ा निवासी सेठ सोमचन्द उग्रचन्दजीकी ओरसे तथा बानू हरप्रसादजी आस, व ब० प्यारेला-लजीकी ओरसे, ऐसी चार बेदी प्रतिष्ठार्थे पहाड़ व तलहटीके मंदिरोंमें धूमधामसे हुई थी तथा पंचमीको रथोत्सव भी निकाला गया था । (अजमेरसे दो रथ मंगाये गये थे ।) इस बीकेपर यहाँपर गुम्मीबाई महिलाश्रम (सिबनी)का वार्षिकोत्सव भी हुआ था जिसमें झांतिबाई, चमेडी-बाई, रतनबाई आदिके मार्मिक व्याख्यान हुए थे तथा पं० परमेष्ठीदासजी न्यायतीर्थ (सुरत)ने पधारकर अच्छा शास्त्रोपदेश दिया था ।

किस्मतकी कुंजी—नामक छोट्टीसी पुरानी पुस्तक इस अंकके साथ भेंटमें भेजी गई है । उसको फाटक संग्रहीत रखके उससे प्रश्नकारोंका जवाब जाहें लाभ उठावें ।

जैनसमाजकालि ।

सोलापुर—में श्री० सेठ हीसचन्द नेमचन्द दोशीने अपनी स्व० पत्नी राजूबाईके स्मारकमें १२०००) देकर एक प्रसूतिगृह बम्बई गवर्नरके हस्तसे अभी खुलवाया है ।

शिवहारा—में सरकार द्वारा रथोत्सव रोके जानेपर स्थानपर विरोध होरहा है ।

सिल्लोडी—के तारनपंथी मंदिर जिसमें शास्त्र ही विराजमान था अब मूर्ति स्थापित कीगई है ।

मोरेना—में माघ वदी ४-९-६को श्रीगोपाल दि० जैन सिद्धान्त विद्यालयका वार्षिकोत्सव होगा । तब वहां शास्त्रिपरिषद् भी करली जन्मे-वाली है तथा आचार्यसंघ भी सोनागिरिसे विहार करते हुए यहां पधारनेवाला है ।

श्री० वैरिष्ठर चम्पतरायजी—नागपुर, मद्रास आदिका भ्रमण कर व वहां जैनधर्मपर व्याख्यान देकर अभी बम्बई (ही० गु० जैन बोर्डिंग, तार-देव) पधारें हैं । यहां १ माह रहकर आगामी फरवरीमें फिर जैनधर्म प्रचारार्थे एक वर्षके लिये विलायत जानेवाले हैं । वहां जैनधर्म प्रचारके कार्यके लिये श्री० जुगमंदिरलाल वैरिष्ठर ट्रस्ट-फण्डसे १९०) मासिककी सहायता एक वर्षके लिये स्वीकार हुई है ।

सब धर्मोंकी सभा—आयामी उष्ण ऋतुमें स्वित्झरलैंडमें असकाना स्थानपर सब धर्मोंकी सभा होनेवाली है । हम वैरिष्ठर चम्पतरायजी सहबसे निवेदन करेंगे कि आप इस मौकेपर वहां अवश्य पधारकर जैनधर्मकी प्रभावना करें ।

चार नये मुनि हुए; आचार्य संघमें ७ मुनिगण—मुनिसंघ पहुंचनेपर सोनागिर सिद्ध-क्षेत्रपर मगसिर सुदी १९को मुनिदीक्षाका बड़ा भारी उत्सव हुआ था। तब आचार्य १०८ श्री शान्तिसागरजीसे चार नये मुनि दीक्षित हुए हैं। (जो पहले ऐलक थे) जिनके नाम—मुनि श्री चंद्रसागरजी, मुनि श्री पायसागरजी, मुनि कुंथु-सागरजी (पार्श्वकीर्ति) और मुनि श्री नमिसागरजी। इससे अब आचार्य संघमें ७ मुनि श्री साथ २ विचरते हैं ! सुदी १४को मुनि बीरसागरजीने केशलौच किया था तथा सुदी १९ को ब्र० प्यारेलालजी झुल्लक हुए। नाम अजितसागरजी रखा गया व दो प्रतिमाधारी रतनचंदजीने ब्रह्मचर्यदीक्षा ली थी। उत्सवमें १२०० आदमी उपस्थित थे। उत्साह अवर्णनीय था।

नागपुर—इतवारिमें सेठ फतेहचंद दीपचंदकी ओरसे नवीन धर्मशाला ता० २३ दिसम्बरसे खुली है। मुहूर्त करनेको संघपति सेठ घासीलालजी बम्बईसे नागपुर पधारे थे।

अनेकांत—नामक ऐतिहासिक अतीव उपयोगी मासिकपत्र समंतभद्राश्रम, करोलबाग—देहलीसे पं० जुगलकिशोरजी मुखत्यारके सम्पादकत्वमें दो माहसे प्रकट होने लगा है, जो इतिहास व साहित्य अन्वेषियोंके लिये अतीव उपयोगी है। वार्षिक मूल्य ४) है।

५००० वर्षके पुराने जैन चिह्न—सिंधुनदीकी घाटी मोहन जोदरोकी खुदाई करनेपर नासा-ब्रह्मि अर्द्धोन्मीकितनेत्र ध्यानमय योगियोंकी मूर्तियां मिली हैं जो जैन ही होसकती हैं।

परिषद्की परीक्षा—हमारे भारतवर्षीय दि० जैन परिषदके परीक्षालयकी परीक्षा इस साल १० फरवरी ३०से होगी। मंत्री—ला० उग्रसेन, जैन हाईस्कूल, बड़ौत (मेरठ) हैं।

सरसेठ हुकमचंदजी—की पार० संस्थाओंके मैनेजर सांवलदासजीका ता० २ नवंबरको कोले-रासे अचानक स्वर्गवास होगया। आप अतीव योग्य व्यक्ति थे।

केशरियाजी हत्याकांड—के शिकार पं० गिर-धारीलालजी न्यायतीर्थके भ्राता पं० माधवचन्द्र न्यायतीर्थ गोरझामरका भी ता० २३ अक्टूबरको स्वर्गवास होगया जिससे सारा कुटुम्ब निराधार हुआ है। इसलिये हत्याकांड कमेटीका फर्म है कि दुःखी मातापिता व विधवाओंकी कुछ न कुछ सहायता करे।

कुडची असाधार—जांच कमीशन गत ता० २४ दिसम्बरको बंबईसे दि० जैन युवक मंड-लकी ओरसे गया था। जिसमें दीपचंदजी सो-लिसिटर, नवरे मंत्री हिंदू महासभा बंबई, जग-मोहनदास (मन्त्री), हरि मोरेश्वर जोशी पूना, अंकले वकील बेलगांव, व बी० बी० पाटील बेलगांव, कुडचीमें उपस्थित हुए थे। वहां सुबह २ घण्टे घूमकर स्थान, मूर्ति आदिकी जांच की तथा दुपहरको ६॥ घण्टे तक वहांके जैनि-योंके इजहार लिये थे। डेप्युटेशनके जानेसे लोगोंको बहुत धैर्य बंधा है व सबने निर्भयतासे बयान लिखाया था। दो स्त्रियोंने भी अपने बयान लिखाये थे। कमीटी रात्रिको वापिस लौटी तब गांववालोंने सबको हारतौरा दिया था।

कमेटीके सभ्य श्री वामन मुकादम इस कार्यमें बड़े प्रयत्नशील हैं तथा वे इस चर्चाको बम्बई धारासभामें लेजानेवाले हैं। इसलिये इस कमेटीकी विस्तृत रिपोर्ट चार भाषाओंमें प्रगट करने आदिके लिये करीब ४००)-९००) की शीघ्र आवश्यकता है। सहायता सेठ माणिकचंद पाना-चन्द, जौहरी बनार, बंबईको भेजनी चाहिये।

श्वे० जैन कान्फरन्स-का तेरहवां अधिवेशन जुनेर (पुना)में रा०सा० रवनी सोनपालके सभापतित्वमें आगामी माघ सुदी ३-४-९ को होगा।

श्रीमती मगनबहिन जे० पी०-की ९०वीं जन्मगांठका उत्सव गत ता० २९ दिसम्बरको बम्बई श्राविकाश्रममें सा०र० प०दरवारीलालजी न्यायतीर्थके सभापतित्वमें हुआ था।

प्राचीन प्रतिमाएँ मिलीं-लाशपुर (बुन्देल-खण्ड)में खुदाई होनेपर ३६ दि० जैन मंदिर व अनेक प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं, जिनमें ३१ अखंडित हैं जो टीकमगढ़ राज्यके कब्जेमें थीं। परन्तु जैनोंके लगातार प्रयत्न करनेपर वे प्रति-माएँ प्राप्त होकर सररुनपुरके दि० जैन मंदिरमें विरानमान की गई हैं। प्रतिमाओंपर 'संवत् ११८६ फागुन सुदी ७ रविवार गहोई वंशीय साहु पद्मलक्षणने प्रतिष्ठा कराई' ऐसा लेख है।

केशरियाजी हत्याकाण्ड-में दण्ड प्राप्त-रोशनलालके पुत्रका विवाह अभी उदयपुरमें हुआ था, तब आमंत्रण करनेपर भी आपके यहां कोई भी दिगम्बरी या श्वेतांबरी जीमने नहीं गये थे, न राजाने आपको हाथी आदि सामान दिया था।

अकलकोट-में सेठ हीराचन्द लक्ष्मीचन्द दि० जैन दशहमड़ेके पुत्रका विवाह सोलापुरमें जेठालाल पीतांबरदास श्रीमाली श्वे० जैनकी पुत्रीसे हुआ है।

लाहौरमें-अभी राष्ट्रीय महासभाका ४४वां अधिवेशन पं० जवाहिरलाल नेहरूके सभापति-त्वमें बड़ी शानके साथ हुआ था। जिसमें भारतमें पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करनेका व धारास-भा बहिष्कारका प्रस्ताव पास हुआ है।

दुःखद वियोग व दान-आरामें श्री० बा० निर्मलकुमारजी जैन रहसके भ्राता बा० चक्रेश्वर-कुमारजी वकीलकी धर्मपत्नी (राजाबहादुर भूपेंद्रनारायणसिंह नशीपुरकी सुपुत्री राजकुमारी निर्मलादेवी)का सिर्फ २१ वर्षकी आयुमें स्वर्ग-वास होगया। अंत समय २१००) दान इस प्रकार किया गया है। १९००) जैन बालाधि-श्राम आरा, ९००) अपाहिजोंको भोजन वस्त्रादि व १००) फुटकर। अंत समयमें श्रीमती पंडिता चंदाबाईजी आदिने विधिपूर्वक समाधिमरण कराया था।

लाभ धाभीने वियोग-भावनगर निवासी उत्साही कार्यकर्ता लाभ अभूतबाल विठ्ठलदास धाभीने आशरे ४० वर्षकी वयें कार्तिक वद ८ ने दिने वियोग था। धाभी भावनगर तेमज शुभरातना दि. नेनेने एक उत्साही कार्यकर्तानी भोट पडी छे. भावनगर, मुम्बई वगैरे स्थले शाक सभाया पशु शक हती.

राकाटुका-भां गडिया पानायंद युक्षाभयंद (वांकातेर) तरइथी मागशर सुद ११ प्वज इंड उत्सव ने तेरहदीय पूजन नवयाना पूर्वक श्रुं हतुं न्यारे आशरे ७००) मंदिशं उपज शक हती ने अ. शतेहसागरश्रुये पधारी उपदेश आप्ये हते.

માંડવી—(સુરત) માં મામજર સુદ ૧૧ વેદી પ્રતિષ્ઠા લ. સુરેન્દ્રકીર્તિજીના હરવે પંચ વસ્ત્રથી થયે હતી. જે વખતે તેરહ દ્વીપ પૂજન પશુ થયું હતું. સુરત, બુહારી, સોજીના વગેરેથી બાહરે ૪૦૦ ભાષા બહેને લાભ લીધો હતો ને ૨૦૦૦) ની ઉપજ મંદિરમાં થયે હતી. શેઠ ઉત્તમચંદ બાહ્યચંદ (૪૨૬) તું સોનાતું ભામંડળ મંદિરમાં અર્પણ કર્યું છે.

બ્યારા—(સુરત) ના અધરા મંદિરનું કાર્ય પુરું કરવા માટે લ. સુરેન્દ્રકીર્તિજીના પ્રયાસથી મુંબાઈથી ૫૦૦) ને સુરતથી ૫૧૦) ની સહાયતાનાં વચન મળ્યાં છે. મોટી મોટી રકમ નીચે મુજબ છે. મુંબાઈ-૨૦૧) માણેકચંદ પાનાચંદ ૫૧) ડાહ્યાભાઈ ધરમચંદ, ૫૧) સોભામચંદ મેધરાજ, ૫૧) મનુભાઈ પ્રેમાનંદ, ૩૫) સંવપતિ શેઠ ધાસીલાલજી, ૨૫) લક્ષ્મણાઈ ચોકસી, ૨૫) શેઠ ચુન્નલાલ હેમચંદ, -સુરત-૨૨૫) તાસવાલા લલચંદ જેલાભાઈ, ૧૫૧) તાસવાલા વેણીલાલ કેશુરદાસ, ૩૫) પરભુદાસ હેમચંદ. ૨૫) ડાહ્યાભાઈ રીખવદાસ, વગેરે. મંદિરનું કાર્ય હવે પૂર્ણ થયે વેદ્યાખ માસમાં પ્રતિષ્ઠા થવાની પૂર્ણ સંભાવના છે.

મહાસિયા—તું વિદ્યાલય ત્યાગી દેવેન્દ્રસાગરજીના જાડોલ ચાલી જવાથી ભાંગી પડ્યું છે તેથી કોઈ ભાઈએ હવે એ વિદ્યાલયને નામે સહાયતા મોકલવી નહિ.

વિજયનગર—શ્રી મોડાસિયા શ્વેતચંદભાઈ મહામંત્રી થયે છે કે હું તા. ૧૭ ડીસેમ્બરે વીંછીવાડા ગયો હતો. ત્યાં પાઠશાળા પર મુનિ જ્ઞાતિસાગરજીનું બોર્ડ ખુલ્લું મુકવાનો મેળાવડો કર્યો હતો. આ પાઠશાળાને ૧૪૦) સામવાડાથી તથા ૬૦) તીર્થક્ષેત્ર કમેટીથી મળે છે. વિદ્યાર્થી ૮૦ છે. વિશેષ મહત્વની જરૂર છે. પ્રામ ૪૬માં ૧૬) મળ્યાં હતાં સુદી ૧૫ ને હિને વિજયનગરના મંદિરની વજ્યેચંદ અમરચંદ ચૌવીસ પૂજા બચાવી જાવું કર્યું હતું.

માંડવી—(ડાંબરપર) માં શેઠ મંદિર બાંધતે દિગંબરી પેતાંબરીમાં થયેડો પદ્મો હતો તે માટે મોડાસિયા શ્વેતચંદભાઈ મહામંત્રીએ પ્રયાસ કરી જવાસમાં ૧૪ ગામનું પંચ બેઠું કરી સંપ કરાવી આપ્યો છે.

અવિકાશ્રમ સોજીના—ના પ્રચાર માટે શ્રીમતી મેનાબહેન ગુજરાતમાં ત્રણ માસથી બમણ કરી રહ્યા છે તેમને નીચે પ્રમાણે રૂ. ૪૧૩૧૧ ની સહાયતા મળી છે.

- | | |
|--------------|-----------------|
| ૩૮) અમદાવાદ | ૧૨૧૧ જંગલ |
| ૨૨૧ સીતલાડા | ૫૮૧૧ કલેલ |
| ૩૧૧૧ ચૌરાણ્ય | ૧૦) પાલડી કાંકળ |
| ૨૪૧૧ લાકરોડા | ૨૨) અસલાલી |
| ૨૩) પેલાપુર | ૨૭) વાંચ |
| ૧૬૧૧ દશીરા | ૧૦) હાથીબજાર |
| ૩૧) અણુવા | ૨૩૧૧ કરમસદ |
| ૧૨૧ દેલવાડ | |
| ૧૬૧ વડાસણ | |
| ૧૬૧ ભાલખ | |

આ ઉપરાંત માંડવી, મહુઆ, સુરત, અંકલેશ્વર વગેરેની સહાયતા આવતે અંકે પ્રગટ થશે.

જૈન વ્રતકથાસંગ્રહ—

જિસમેં રવિવાર, રત્નત્રય, દશલક્ષણ, સોલહકારણ, શુતસ્કંધ, ત્રિલોક તીજ, મુકુટ સતમી, ફલદશમી, ધવળદ્વાદશી, રોહિણીવ્રત, આકાશપંચમી, કોકિલાપંચમી, ચંદનષષ્ટી, નિર્દોષસતમી, નિઃશલ્ય અષ્ટમી, મુર્ગધદશમી, જિનરાત્રિ, મેષમાલા, લલિતવિધાન, મૌન એકાદશી, ગરુડપંચમી, દ્વાદશી, અનંતવ્રત, અષ્ટાવિકા, પુષ્પાંજલિ, નારહસૌ ચૌતીસ આદિ અનેક વ્રતોની કથાએ વિધિ સહિત હૈં । શાસ્ત્રાકાર પૃ૦ ૧૨૦ મૂ૦ ૧) **મયદાન અર્ધનાથકા રંગીન ચિત્ર—દો આને ।**

સિદ્ધક્ષેત્રપૂજાસંગ્રહ ।

સમી સિદ્ધક્ષેત્ર વ આતિશયક્ષેત્રની પૂજાપં મૂ. ૧) **મૈનેજર, વિ૦ જૈન પુસ્તકાલય—સુણા ।**

सावधान हो जाइये !

(लेखक:—पं० परमेश्वरीदासजी जैन, न्यायतीर्थ-सूरत) ।

आज हमारी, हमारे देशकी तथा धर्म और समाजकी परिस्थिति भयानक होगई है । सर्वत्र क्रान्ति कलह और स्वेच्छाचार दृष्टिगोचर हो रहा है । फिर भी हम असावधान हैं, निश्चिन्त हैं, उपेक्षाप्रिय हैं, मानों इस तृप्तानका हम पर कुछ भी असर न होगा, हम उससे सर्वथा बचे रहेंगे, वह हमारा कुछ भी बिगाड़ न कर सकेगा ! मगर याद रहे कि इस असावधानीका ऐसा भयानक परिणाम होगा कि इस मूतल पर हमारा अस्तित्व ही न रहेगा और हम सदाके लिये बिलीन होजावेंगे ।

इतिहास कहता है कि एक समय समस्त भारतमू जैनधर्मकी पवित्र क्षत्रछायामें शान्ति-पूर्वक काल व्यतीत कर रही थी । एक दृमरेसे बन्धुत्वका नाता रखकर आनन्दसे जीवन व्यतीत करते थे । घृणा द्वेष मात्सर्य और अभिमानको त्याग कर सभी सखे जैन थे । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन वर्णोंसे चार भेद होकर भी धर्मका मार्ग एक था । सब ही उस परतितोद्धारक श्री जिनेन्द्रदेवकी उपासना कर अपनी कलुषित आत्माको पवित्र बनाकर कृतकृत्य होजाते थे । जातीय दुरभिमान, धार्मिक दम्भ, और शोथी महत्ताका नाम नहीं था । यही कारण है कि समस्त भूमणल जैनधर्मी होगया था और “जैनधर्म सार्वधर्म है” यह बात साक्षात् प्रमाणित हो गई थी ।

मगर हमारी बेवकूफी या असावधानी अथवा दुर्गग्रह और दंभके कारण आज हम मिट गये हैं । संसारमें तो क्या भारतवर्षमें भी हम नगण्य हैं । मिटते २ हम आज साढ़े ग्यारह लाख ही अवशेष हैं, सो भी वास्तविक जैन तो अंगु-लियोंपर गिनने लायक भी नहीं रहे ! हमारी इस अल्पसंख्यक बची खुची जैनजातिके भीतर घुसकर भी यदि कोई विवेकी देखे तो मालूम होगा कि साढ़े ग्यारह लाखमें भी बागह लाख टुकड़े होगये हैं ! यह सब हमारी ही अदुःख शिंताका फल है । यदि अब भी यही पर स्थिति बनी रही तो विश्वास रखिये कि हम आपसका मारामारमें ही अपना शक्योंको खोहर नाश हो जावेंगे ।

तनिक हृदयपर हाथ रखकर विचार तो की-जिये कि यह सब फूटमफूट हुई क्यों ? और हुई भ तो अबतक क्यों चालू है तथा दिनोंदिन क्यों बढ़ती जा रही है ? यदि निष्पक्षपात दृष्टिसे विचार करेंगे तो आपका अन्तरात्मा यही उत्तर देगा कि हमारा दृठ और व्यर्थाभिमान ही इसका प्रबल कारण है । हमारी समाजमें कुछ ऐसे दुरा-ग्रही मौजूद हैं जो अपना पक्ष होनेसे ही अन्यथा बातको सत्य सिद्ध करनेका दुस्ताइस करते हैं और सत्यको भी अपने मंतव्यके प्रतिकूल होनेसे असत्य उद्घोषित कर पापसे भयभीत नहीं होते ।

एकको दूसरेकी विद्वत्ता असह्य है जबवा अपनेको ही सर्वोच्च समझ कर दुरभिमानमें मत्त होजाते हैं। फल यह होता है कि दूसरा यदि सत्कार्य करे वास्तव मार्ग बतलाये तौ भी उसे नहीं मानते और जो कुछ भी वह कहता है उमको उरटा सिद्ध करनेकी धुनमें मस्त हो जाते हैं, बस, झगड़ा खड़ा होजाता है। यदि सच पूछा जावे तो समाजमें क्षोभ पैदा करने-वाले होते दो चार ही व्यक्ति हैं, मगर वह कुछ व्यक्तियोंकी आग सारे समाजमें घषक उठती है। जब हम आपसकी काट छांटमें ही अपनी शक्तियोंको लगा देते हैं तब हम बाहर सेवा कैसे और कब कर सके हैं? और जब सार्वजनिक कार्योंमें भाग नहीं लेंगे तब फिर हमारा नाम, हमारी सत्ता या हमारी गणना किसप्रकार रहसक्ती है ?

दुर्भाग्यसे हमारी समाज एकसे एक नये टूटे लेकर खड़ी होजाती है। कभी किसीकी कृपा (!) होती है तो कभी किसीकी, कभी कोई अपना यथेच्छ सिद्धान्त सामने रखता है तो कभी कोई वास्तविकताका भी निषेध कर डालता है। बस हम आपसमें ही मर मिटते हैं। यही कारण है कि आजतक समाजमें शांति नहीं हो पाती। कुछ धर्मात्मा व्यक्तियोंने प्रयत्न भी किया था कि हम सब मिल जुलकर अपनी उन्नति करें। अमुक व्यक्ति अपने विचारोंसे कैसा भी क्यों न हो मगर हमारे धार्मिक और उससे सम्बंध रखने-वाले कार्योंमें बाधक न हो। किंतु कुछ कलहप्रिय जनोंको यह बात पसंद न आई और बना बनाया खेल बिगाड़ डाला। अस्तु। “बीती ताहि बिसार

दे, आगेकी सुब लेहु” भी हुआ सो हुआ। अब तो संपूर्ण जैनसमाजको सावधान होनेकी आवश्यकता है।

अब हमारा कर्तव्य है कि किसी प्रकार भी हो, आपसमें सुलह करके उत्थानका मार्ग सोचें। हमारी बची खुची सत्ताको भी सामर्थ्यशाली लोग कुचल देना चाहते हैं, हमारे अवशिष्ट उत्कर्षको न देख सकनेके कारण कुछ अविवेकी अजैन भाई द्वेष करते हैं और व्यर्थ ही हमारे धार्मिक और सामाजिक कार्योंमें अड़ंगा लगाते हैं। हमारे धार्मिक उत्सव तनिक सी घमकीमें रोक दिये जाते हैं और हम प्राणहीनकी तरह अत्याचारोंको सहन करते रहते हैं! तथा हम छिन्नभिन्न होनेके कारण किसीका मुकाबिला नहीं कर सकते, अपनी समाजका गला अन्यायकी फांसीसे नहीं निकाल सकते। हमारे ऊपर आज कैसे २ अत्याचार होरहे हैं यह एक सहृदयी जन ही जान सकता है।

जैनसमाज सावधान! अब प्रमादका समय नहीं है, लोग उन्नतिके मार्गमें तेजीसे दौड़ लगा रहे हैं, ऐसे समयमें यदि तू असावधान रही तो इस दौड़में कुचल जावेगी। इसलिये जमानेके साथ रहकर अपने जीवनकी रक्षाके वास्तविक उपायोंका अवलम्बन कर। इस समय जैनसमाजके बच्चा २ को सावधान होनेकी आवश्यकता है। कुछ स्थितिपालकोंके दुराग्रह एवं कतिपय सुधारकोंके उच्छ्रंखल मार्ग, यह दोनों अपेक्षणीय हैं। वास्तविकताको ग्रहण कर खुले रूपमें उसका प्रचार करना चाहिये। आज जैन संख्या बढ़ानेका तथा आन्तरिक परि-

स्थिति परिलक्षो धनका कबरदस्त प्रश्न हमारे सामने है । यदि यह दोनों हल होजावें तो एकवार फिरसे जैन धर्मकी विमलपताका भारत मंदिर पर फहरा सक्ती है ।

यदि सत्य दृष्टिसे विचार किया जावे तो संख्या वृद्धिका धार्मिक उपाय केवल अजैनोंको जैन धर्ममें दीक्षित करना ही है । इसका जो दुराग्रही निषेध करते हैं वे वास्तविकतासे च्युत हैं और स्वयं पक्षपातकी फांसीमें फंसकर समाजका गला भी फंसाये रखना चाहते हैं । दूसरे प्रश्नका हल होना भी असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है । इसके लिये तो पंडित-बाबू, नवयुवक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, गरीब और श्रीमान सभीको मिलकर या साथ लेकर काम करना होगा । यदि समाज यह स्वीकार करले तो जैन धर्म और जैन समाज क्यों न अपना बिजयी डंका भारतमें बजादे ? वस, है हमारे सावधान होनेकी आवश्यकता, फिरतो संसार आज सत्यका पुजारी है ।

हम थोथी बातोंमें जितनी शक्ति लगाते हैं और समाजमें व्यर्थका क्षोभ उत्पन्न कर देते हैं उतनी शक्ति यदि अपने सुधार, समानोत्थान और धार्मिक उन्नतिमें लगावें तो निःसंदेह जैन-धर्म एवं जैनसमाजकी मान्यता भारतवर्षमें हो जावे । शिक्षितोंका कर्तव्य है कि वे प्रत्येक जिज्ञासुको अपने धार्मिक सिद्धांत बतलावें, भाषण लेख एवं अध्ययन अध्यापन द्वारा दूरदूरोंको जैन सिद्धांतसे परिचित करावें । दूररे लोग जब आपके धार्मिक ज्ञानसे युक्त होजावेंगे तब वे स्वयं अन्यायकारसे निकल कर आपके इस पतित

पावन जैनधर्मको स्वीकार करनेको तैयार होजावेंगे । ऐसी अवस्थामें जो भी मनुष्य जैनधर्म हीकर आत्मकल्याणका इच्छुक हो उसे वे रोक-टोक जैन दीक्षा देकर स्वपर कल्याण करना चाहिये । और जो कदाग्रही पंडिताभास इसका व्यर्थ निषेध करते हैं उनकी परवाह न करें । तथा हमारी छोटी-जातियें जिनमें कन्या लेन देनमें बड़ी-आपत्तियां आती हैं उनमें परस्पर बेटीव्यवहार अर्थात् अन्तर्जातीयविवाह करना प्रारम्भ कर देना चाहिये । क्योंकि यह भी संख्यावृद्धिका एक धार्मिक उपाय है । तथा इससे धर्ममें भी कोई बाधा नहीं आती ।

यदि हम इस विकाश युगमें अपनी सत्ता न जमा सके, अपनी संख्यावृद्धि न कर पाये और कुरूदियोंका काला मुह न किया तो विश्वास रखिये कि हमारी सत्ता इस भारत भू पर रहना असंभव है । आज तो "जिसकी लाठी उसकी भैंस" है । इसलिये अब हमें शीघ्र सावधान होनेकी आवश्यकता है । घनवानोंका कर्तव्य है कि विवाह शालियों एवं मरणभोजमें व्यर्थका व्यय न करके इस परम कल्याणकारी कार्यमें अपनी अटूट सम्पत्तिको प्रदान करके ही जीवन सफल समझें और ऐसे शुभ कार्योंमें बाबू तथा पंडित दोनों सहयोग देकर अपनी शिक्षाको सफल बनावें । जो कुछ हठग्राही जन इसे न मानें उनको दूरदूरीसे हाथ नोडकर स्वयं सावधान होकर मुत्तैदीके साथ काम करें । फिर देखिये कि कौन हमें रोक सकता है और कौन हमारे अधिकारोंमें बाधक होसका है ?



सिद्धान्ताध्ययन विचार ।

(लेखक:—पं० मिलापचन्द्रजी कटारिया जैन-केकड़ी) ।

क्षुधा आदि वाचाओंको भेटनेके लिये जैसे पशुओंके आहार निद्रा भय मैथुन आदि कार्य होते हैं वैसे मनुष्योंके भी होते हैं किंतु जिस ज्ञानकी विशेषता मनुष्य समाजमें है वह पशुओंमें नहीं है इसीसे मनुष्य श्रेष्ठ समझा जाता है । किसाने ठीक ही कहा है कि—'ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः' जिस प्रकार खानसे इनकला हुआ रत्न संस्कारके योगसे बहुमूल्य बान् होजाता है उसी प्रकार मनुष्य भी ज्ञान-संस्कारसे महान् गिना जाता है । अथवा जैसे बारंबार अभिसंस्कारसे सुवर्ण दीप्तिवान् होजाता है उसी तरह बारंबार ज्ञानाभ्याससे मनुष्य भी दीप्तिशाली माना जाता है । यह तो निश्चित है कि—माताके उदरसे निकले बाद अगर मानवको शिक्षा ग्रहणसे बिल्कुल ही रोकदिया जाए तो सचमुच वह पशुसे भी निकृष्ट होसक्ता है । इसी विषयक नीतिका यह श्लोक कितना मर्मस्पर्शी है—

शुनः पुच्छमिव ध्यर्थं जीवितं विद्यया विना ।

न गुह्यगोपने शक्तं न च दंशनिवारणे ॥

इसमें कहा है कि—विद्याविहीन जीवन कुत्तेकी पूँछकी भांति व्यर्थ है जो न तो गुह्यांगको दूँध सकती है और न मक्खियोंको ही उडा सकती है ।

ज्ञानकी इतकी अधिक महिमा होनेके कारण ही शास्त्रकारोंने स्वाध्यायको ' न स्वाध्यायात्परं तपः ' पदसे सभी तपोंमें बढ़कर तप कहा है ।

मूलाचारमें कहा है कि—

वारसविधस्त्रिय तवे सचमंतरवाहिरे कुसलदिट्ठे ।
णवि अत्थि णविय होहदि सस्सायसमं तवो कम्मम् ॥९७०॥
सुई जहा ससुत्ता ण णस्सदिहु पमाद दोसेण ।
एवं ससुत्त पुरिखो ण णस्सदि तह पमाद दोसेण ॥९७१॥
' बहकेराचार्य । '

अर्थ—तीर्थकर गणधरादिकर दिखाये अम्यं-तर बाह्य भेदयुक्त बारह प्रकारके तपमें स्वाध्यायके समान उत्तम अन्य तप न तो है और न होगा ।

जैसे सूक्ष्म भी सुई प्रमाद दोषसे गिरी हुई यदि डोराकर सहित हो तो नष्ट नहीं होती—देखनेसे मिलजाती है, उसी तरह शास्त्रस्वाध्याययुक्त पुरुष भी प्रमाद दोषसे उत्कृष्ट तप रहित हुआ भी संसार रूपी गड्डेमें नहीं पड़ता ।

जो ग्रंथ परमपूज्य केवलीके बचनोंकी परम्परा लिये हों और जिनमें आत्माका परमाराध्य मोक्षकी कारणभूत कथनी हो उससे बढ़कर कौन होसक्ता है ?

वर्तमानके उपलब्ध जैन परमागमकी रचना गौतम गणधर कथित सूत्रके आकारसे हुई है ।

गौतम स्वामीने किस समय किस प्रकार ग्रंथ रचनाकी बह वर्णन उत्तर पुराणमें गुणभद्रसूरिने बड़ेही हृदयग्राही ढंगसे किया है, पाठकोंकी जानकारीके लिये उसे हम यहां देते हैं—

गौतम गणधर अपना जीवन वृत्तांत सुनाते हुये कहते हैं कि—

श्रीवर्धमानमानम्य संयमं प्रतिपन्नवान् ।
तदैव मे समुत्पन्नाः परिणामविशेषतः ॥ ३६८ ॥
ऋद्धयः सप्त सर्वांगानामप्यर्थपदान्यतः ।
भट्टारकोपदेशेन श्रावणे बहुले तिथौ ॥ ३६९ ॥
पदार्थावर्थरूपेण सद्यः पर्याणमन् स्फुटम् ।
पूर्वाह्ने पश्चिमे भागे पूर्वाणामप्यनुक्रमात् ॥ ३७० ॥
इत्यनुशातसर्वांगपूर्वार्थौ धीचतुष्कवान् ।
अंगानां ग्रंथसंदर्भे पूर्वरात्रे व्यधामहम् ॥ ३७१ ॥
पूर्वाणां पश्चिमे भागे ग्रंथकर्ता ततोऽभवम् ।
इति श्रुतद्विभिः पूर्णोऽभूवं गणभृदादिभिः ॥ ३७२ ॥
७४ वां पर्व

अर्थ—श्री वर्द्धमान स्वामीको नमस्कार कर संयम धारण कर लिया । परिणामोंकी विशेष विशुद्धि होनेसे उसी समय मुझे सात ऋद्धियां प्राप्त हुई । तदनंतर श्री वर्द्धमान भट्टारकके उपदेशसे श्रावण कृष्ण प्रतिपदाके दिन सबेरेके समय सब अंगोंके अर्थ और पद शीघ्रही अर्थ रूपसे स्पष्ट जान पड़े और इसी तरह उसी दिनके सामके समय अनुक्रमसे सब पूर्वोंके अर्थ और पदोंका ज्ञान होगया । इस प्रकार मुझे सब अंग और पूर्वोंके अर्थोंका ज्ञान होगया तथा चौथा मनःपर्ययज्ञान भी होगया । तदनंतर मैंने रात्रिके पहिले भागमें अंगोंकी ग्रंथरूपसे रचना की और रात्रिके पिछले भागमें पूर्वोंकी ग्रंथ रचना की इस तरह अंग और पूर्वोंसे

ग्रंथोंकी रचना कर मैं ग्रन्थकर्ता प्रसिद्ध हुआ हूं । इस प्रकार श्रुतज्ञानऋद्धिसे पूर्ण होकर मैं श्री बीरनाथका पहिला गणधर हुआ हूं ।

जिस जैन बाणीका प्रादुर्भाव इतनी महत्ताको लिये हुये हैं उसका प्रचार संसारमें प्रचुरताके साथ होना चाहिये किन्तु इस विषयमें जैन समाज आज जो कुछ भी कर रहा है वह संतोषप्रद नहीं कहा जासक्ता । और तो क्या हम अबतक ग्रन्थ प्रकाशनका प्रबंध भी ऐसा नहीं करपाये जिसे ठीक कह सकें । इसके लिये हमारे पास द्रव्यकी कमी नहीं है क्योंकि जो समाज प्रतिपाल मेला प्रतिष्ठाकी धामधूममें लाखों रुपये लगाती है उसके लिये यह कैसे कहें कि धनकी कमी है ? कमी है सिर्फ ग्रन्थ प्रकाशनमें रुचि होनेकी । सच तो यह है कि धनी लोग इसे महत्त्वका काम ही नहीं समझते हैं इसका भी एक कारण है । पिछले कुछ समयमें जैन समाजकी वाग्डोर प्रायः ऐसे लोगोंके हाथमें थी जो स्वयं मदांष और विवेकशून्य होकर परमगुरुके पदपर आसीन थे और इसी महान् पदपर अपनेको हमेशह कायम रखनेके लिये जनताको ज्ञानहीन बनाये रखना चाहते थे ! इसके लिये लोगोंको उरटी पट्टी पढाई गई कि श्रावकोंको सिद्धांत ग्रंथोंके पढनेका अधिकार नहीं है ! गृहस्थोंका काम तो केवल दान पूजा प्रभावना करना ही है । इसीमें उनका कल्याण है । बस भोले लोग इस भुलावेमें आगये । फल उसका यह हुआ कि जनताकी रुचि पूजा प्रभावनाके काममें ही इतनी अधिक बढ़ी कि आज भी वे

अधमेको न सम्हाल सके । खेद तो यह है कि उक्त प्रकारका स्वार्थमूलक उपदेश ही नहीं दिया गया किंतु उसे संस्कृत प्राकृत भाषामें ग्रंथबद्ध भी कर दिया गया जिससे इस चक्रमें कतिपय विद्वान भी आते रहे । इस तरह यह मिथ्या परम्परा चलपड़ी । आज भी कुछ पंडित कह-लालीवाले ऐसे हैं जो कभी कभी “ श्रावकोंको सिद्धांताध्ययनका अधिकार नहीं है ” इस मिथ्या धारणाको प्रकट किया करते हैं । पं० उदयकालजी कासलीवालने तो ‘ संशयतिमिर-प्रदीप ’ नामक पुस्तकमें इस अमपूर्ण मान्यताकी दिलखोल पुष्टि की है और एक मात्र अवन-तिष्ठा मूल कारण ही श्रावकोंका सिद्धांताध्ययन बताया है । उसमें अध्ययन तो दूर रहा आर्यका और गृहस्थोंके सामने सिद्धांतग्रंथोंका बांचना ही अयोग्य ठहराया गया है ! बल्किहारी है ऐसी समझकी ! आश्चर्य इस बातका है कि जिसका विधान किसी भी आर्षि ग्रंथमें नहीं है उसे कुछ मामूली ग्रंथोंमें देखकर ही ये लोग कैसे प्रमाण कर लेते हैं ? सिद्धांताध्ययनका निषेध हमें तो किसी ऋषि प्रणीत ग्रंथमें लिखा नहीं मिलता बल्कि विधान ही पाया जाता है । नीचे हम ग्रंथोंके कतिपय उद्धरणोंसे यही सिद्ध करते हैं—

भगवज्जिनसेनाचार्य आदिपुराण पर्व ३२में श्रावकोंके लिये क्रियाओंका वर्णन करते हुये कहते हैं कि—

पूजासप्यसक्यया ख्याता क्रियस्य स्यादतः परा ।
पूजोपवाससंपत्त्या श्रुत्वतोऽगार्थसंग्रहम् ॥ ४९ ॥
ततोऽन्या पुन्ययज्ञाख्या क्रिया पुण्यानुबंधिनी ।
कृत्यतः पूर्वविधानामर्थं संप्रहृत्चारिणः ॥ ५० ॥

अर्थ—पूजा और उपवासरूप संपत्तिकी धारणकर ग्यारह अंगोंके अर्थसमूहको सुननेवाले श्रावकोंके पूजाराध्यनाम पांचवी प्रसिद्ध क्रिया होती है ।

तदनंतर अपने साधर्मि पुरुषोंके साथ चौदह पूर्वोंका अर्थ सुननेवाले श्रावकोंके पुण्य बढ़ाने-वाली पुण्ययज्ञ नामकी छठी क्रिया होती है ।

यह तो हुआ श्रावकोंके पढ़ने सुननेका अधिकार । अब आर्यकाओंका अधिकार भी देख लीजिये—मूलाचारके पंचाचाराधिकारमें बट्टेकर-स्वामीने लिखा है कि—

तं पठिदुमसज्जाये णो कप्पदि विरद इत्थिवग्गस्स ।
एतो अण्णो गंथो कप्पदि पठिदुं असज्जाए ॥८१॥

अर्थ—वे चार प्रकारके अंग, पूर्व, प्रभृत, प्राभृत, रूप, सूत्र, कालशुद्धि आदिके बिना संयमियोंको तथा आर्यकाओंको नहीं पढ़ने चाहिये । इनसे अन्य ग्रंथ कालशुद्धि आदिके न होनेपर भी पढ़ने योग्य माने गये हैं । इसमें आर्यकाओंको कालशुद्धि आदिके होते हुये अंग पूर्वादि ग्रंथोंके पढ़नेकी आज्ञा दी गई है । हरि-वंश पुराण १२ वां सर्ग में भी लिखा है कि—

जयकुमार द्वादशांगधारी भगवानका गणघर हुआ और सुलोचना ग्यारह अंगकी धारिका आर्यिका हुई ॥ ९२ ॥

इन उल्लेखोंसे उन लोगोंका भी समाधान होजाता है जो श्रावकोंके लिये प्रचलित सिद्धांत-ग्रंथोंके पढ़ने सुननेका तो अधिकार बताते हैं किंतु गणघरकथित अंग पूर्वादि ग्रंथोंके अध्य-यनका निषेध करते हैं, उन्हें अब अपनी उस मिथ्या धारणाको निकाल देना चाहिये । कहते

हैं कि नेमिचन्द्राचार्यने चामुण्डरायके सामने सूत्रपाठ करना बन्द कर दिया था और पृष्ठनेपर कहा था कि श्रावकोंको सुननेका अधिकार नहीं है इत्यादि कथायें कारुणिक मालूम होती हैं । जहां श्लोक और गाथा तक मिथ्या रच ली जाती हैं वहां ऐसी कथाओंको गढ़ते कितनी देर लगती है ? ऋषि-वाक्योंके सामने ऐसे कथन कदापि प्रमाण नहीं माने जासकते । जिनसिद्धांतग्रन्थोंके वदौलत ही जैनधर्मका गौरव है उनका पठनपाठन बन्द करना भी क्या कभी उचित कहा जासकता है ? यहां तो मूलभूत सम्बन्धदर्शन ही तत्त्वार्थ श्रद्धानसे होता है । मजा तो यह है कि—गोमटसार, लब्धिसार, राजवार्तिक, श्लोकवार्तिक आदि महाग्रन्थोंके रचयिताओंने जब कहीं भी यह नहीं लिखा कि हमारे इस ग्रन्थको श्रावक पुरुष न पढ़ें तब ये दूसरे निषेध करनेवाले कौन होते हैं ? प्रत्युत विद्यानन्दस्वामीने तो अपने अष्टसहस्री ग्रन्थके अन्तमें कहा है कि—मेरे इस ग्रन्थको पढ़नेका अधिकार करुणाणेच्छु भव्योंके लिये नियत है । इससे अध्ययनका मार्ग कितना विशाल होजाता है ? चामुण्डराय कृत चारित्रसार शीलसप्तक प्रकरणके 'स्वाध्यायस्तत्त्वज्ञानस्याध्ययनमध्यापनं स्मरणं च' वाक्यसे स्वाध्यायका लक्षण ही तत्त्वज्ञानका पढ़ना पढ़ाना और चिंतवन करना किया है और जो खासकर ऐसा स्वाध्याय श्रावकोंके षट्कर्ममें प्रतिपादन किया गया है । क्या तत्त्वज्ञानसे सिद्धांत भिन्न है ? यह तो निश्चित है कि—देशनालब्धि देशविरती तो क्या अमती तकके

होती है उसी देशनालब्धिका स्वरूप आचार्य नेमिचन्द्रने लब्धिसारमें यों कहा है—

छद्वणवपयत्नो देसयरस्त्रिपहुदिलाहो जो ।

देसिदपदत्थधारणलाहो वा तदियलन्नी दु ॥ ६ ॥

अर्थ—छहद्वय और नव पदार्थोंका उपदेश करनेवाले आचार्य आदिका लाभ यानी उपदेशका मिलना और उनकर उपदेशे हुये पदार्थोंके धारण करने (याद रखने)की प्राप्ति वह तीसरी देशनालब्धि है ।

ग्रन्थाध्ययनका निषेध करना एक ऐसी निर्मूल और अयुक्त बात है कि जिसकी पुष्टि किसी भी परमागमसे नहीं होती है और तो और, खास समवशरणमें ही भगवानकी दिव्यध्वनिको तिर्यक्तक श्रवण करते हैं । क्या कोई कह सक्ता है कि केवलीकी दिव्यध्वनिमें द्वादश सभाके समस्त सिद्धान्त विषयक उपदेश नहीं होता है ? यदि कहो कि—“सिद्धान्ताध्ययनका अधिकार हो तो भले हो किंतु श्रावकोंको अष्टवाम् ग्रन्थोंके पढ़नेका तो अधिकार नहीं है सो भी ठीक नहीं है । जिनसेनस्वामीने पंद्रहवीं व्रतचर्या क्रियाका वर्णन करते हुये पर्व ३८में कहा है कि—
सूत्रमौपाखिकं चास्य स्यादध्ययं गुरोमुक्त्वात् ।
विनयेन ततोऽन्यथा शक्यमध्ययमगोचरम् ॥ ११८ ॥

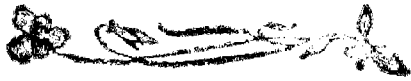
अर्थ—इसे प्रथम ही गुरुमुखसे उपासकाचार पढ़ना चाहिये और फिर विनय पूर्वक अन्य अध्यात्मशास्त्रोंका अभ्यास करना चाहिये ।

कुछ भी हो, किसी ग्रन्थके अध्ययनकी मनाई करना बिल्कुल निःसार है । इसकी अनुपयोगिताका तो खासा प्रमाण यही है कि इस समय इसपर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है । केवल

अंश परम्परा भक्तोंकी कहनेभरकी चीज रह गई है। अगर इस अनिष्ट पूर्ण आज्ञाका पालन किया जाता तो बड़ा ही दुर्भाग्य होता—जैन धर्मकी इस समय जैसी कुछ अवस्था है वह भी नहीं रहती। फिर भी सिद्धांत ग्रन्थोंका जैसा पठन पाठन होना चाहिये वैसा नहीं हो रहा है। प्रत्येक साल इसमें विद्यार्थी पास होजाते हैं किंतु वे खाली पास ही हैं, उससे सन्मार्गका महत्व वे द्योतित नहीं कर सकते। क्यों कि जिस उद्देश्यसे इनका पठन पाठन होना चाहिये वह प्रायः नहीं है। पूर्वकालमें इनका अध्ययन सम्यग्ज्ञानकी प्राप्ति, कषायोंकी मंदता और जैन मार्गका गौरव प्रकट करना इन उद्देश्योंको लेकर होता था अबतो केवल टका पैदा करने और अपना आदर सन्मान होनेके अर्थ इनका पठन होता है। इसके लिये वे जिन ग्रन्थोंके समीचीन अध्ययनके लिये कमसे कम दसपंद्रह वर्ष चाहिये उन्हें पांच चार वर्षहीमें जैसेतैसे पढ़कर प्रमाणपत्र प्राप्त कर लेते हैं और फिर उनका मनन करना भी छोड़ दिया जाता है। फल यह होता है कि पांचसात वर्ष बाद वे ग्रन्थ अपठितसे होजाते हैं। ऐसे कितनेही विद्वान कहला-नेवाले मिलेंगे जो नाम मात्रकी पदवियोंको चिपटाये हुये गर्वोन्मत्त फिरते हैं काम पढ़नेपर सिद्धांत विषयक किसी खास शंकाका समाधान ये नहीं कर सकते। निरंतरके अध्ययन विना उनका प्रमाणपत्र विचारा घरा ही रह जाता है, वह केवल दिखानेभरकी चीज रह जाती है और उससे कुछ अर्थ नहीं निकलता। इस तरहके

प्रमाणपत्रोंसे कुछ लाभ भले ही हो किंतु हानि भी पूरी होती है। इन्हें प्राप्तकर मनुष्य अपनेको ऐसा कृतकृत्य समझने लगता है कि फिर उस विषयमें कुछ भी प्रयत्न नहीं करता है नतीजा जिसका यह होता है कि अंजुलीके जलकी तरह वे शनैः २ सिद्धांत ज्ञानसे खाली होते २ आखिर खोकले रह जाते हैं। सो ठीक ही है 'अनभ्यासे विषं विद्या' होता ही है। जिसकी स्थिति ही निरंतर मनन चिंतवनके ऊपर निर्भर है। उसका प्रमाणपत्र सर्वदाके लिये मानना ही विडंबनापूर्ण है। जहां इन प्रमाणपत्रोंकी खटपट नहीं है वहां बहुत बड़ा लाभ यह है कि मनुष्यको अपनी लियाकत दिखानेको हर समय अपनेको तय्यार रखना पड़ता है। इससे मेरा अभिप्राय परीक्षा देकर प्रमाणपत्र लेनेकी व्यवस्था उठा देनेका नहीं है किंतु दीर्घकाल तक यथेष्ट अध्ययन होना चाहिये यह भाव है। अस्तु;

अन्तमें हम यह लिखकर कि—'किस तरहके ग्रन्थ काल शुद्धि आदि न होनेपर पढ़ने योग्य हैं?' विराम लेते हैं। मूलाचार पंचाचाराधिकारकी गाथा ८२में कहा है कि सम्यग्दर्शनादि चार आराधनाओंका प्रतिपादक ग्रन्थ, सत्रह प्रकारके मरण निरूपक ग्रन्थ, पंच संग्रह ग्रन्थ, स्तोत्र ग्रन्थ, आहारादिके त्यागका उपदेशक ग्रन्थ समायिकादि षडावश्यक प्ररूपक और महापुरुषोंका चरित्र वर्णन करनेवाली धर्मकथा इस तरहके ग्रन्थ विना कालशुद्धि आदिके भी पढ़ने योग्य माने गये हैं। कालशुद्धि आदिका वर्णन इसी पंचाचाराधिकारमें है सो वहांसे देखलें।



भाषीन अतिगुणकृत श्री नंदगिरि - प्रित्तन सभ्यान (निजपदं३)

कर्मिण्य दस-मनाः ।

गणेशाय नमः । नित्यं शिवाय नमः ।

Samadhi-Shataka.

(By :—Mr. Herbert Warren Jain, LONDON.)

Verse 15. "The root of this misery, namely the circle of births and deaths is none other than this false knowledge which identifies the body with the soul. Freeing oneself from this delusion, and not allowing the senses to relate themselves to external objects, one should concentrate himself within (that is to say should try to realise the subjective soul).

I have in my time been considerably troubled by one particular part of the above injunction. Can it be true that we should not allow the senses to relate themselves to external objects ? That we should give up identifying the body with the soul is something we can believe should be done, but what does it mean when it is said that we should not allow the senses to relate themselves to external objects ? Does it mean that we are not to allow ourselves to see and hear the things around us ? Would it not be the same as being blind and deaf ?

In about the early part of the year 1920 I was fortunate enough to be in correspondence with an ascetic, Nemisagar Varnijee, and I took the opportunity of asking him these questions. There may be other people who are similarly troubled, and so I think it may good to make use of the permission he gave me to publish correspondence which came from him, even though it be now more than nine years ago.

He very kindly explained the verse in question to me in a letter dated September the 11th, 1920, which reads as follows :—

"Jain Boarding House, Doddapattana, Mysore."

Dear Sir, I am very glad to read your letter of the 20th of June 1920. I shall try to answer your questions as far as I am able to do so. However, I cannot answer all your questions in a single letter. First I shall try to clear your difficulty as regards the fifteenth stanza of the Samadhi-Sataka.

You have already given the substance of the stanza in your letter. Now your question is ' How knowledge (Matijnana) is possible if we do not allow the senses to receive knowledge from the outer world ? It can be answered thus :—

We may be conscious of a thing even during its absence. For example, a certain lady had an only son. Let us suppose that he is now dead. At some time after his death the mother by accident thinks of her son and mourns for him. She sees her son's exact form. After she has seen him wandering in front of her, often several of his daily doings such as thus walking, thus sitting, thus reading, flash to her mind. But none of these, whether his body, his doings, or his virtues are actually present. Thus we infer that we can have a knowledge of things even when they are absent. This kind of knowledge is called Smrathi 'Jnana or knowledge by recollection or by remembrance.

Let us take another example. Someone in London knows many things about India, either by reading books, or by listening to people who have actually seen India. He can either retain this knowledge in him, or impart it to others. But he has never seen India or anything that he knows about her. This

kind of knowledge is called Shruti Jnana, or knowledge through books or experiences of other people.

Similarly the atom is never visible to our senses; yet we believe in its existence, it becomes an object of our knowledge, but we never see it. This kind of knowledge also is called Shruti Jnana. The knowledge of Akasha is of a similar kind, i. e., though Akasha is formless and unknown to our senses, yet we see that there is such a thing as Akasha. By this we have to infer that things are absolutely unknown to our outer senses are capable of being understood by us.

There are five different kinds of knowledge: Mati Jnana comes through our five outer senses and also through our consciousness which is called an inner sense, Shruti Jnana, though it is derived from Mati Jnana is ultimately dependent upon consciousness, the inner sense. In this respect I give you another example. Let us suppose that someone in London has listened to the description of Bombay given by another person, and keeps it in his memory. After some time this same Londoner gives an account of Bombay to a third person as if this Londoner had actually seen the town. This is because he remembers the description given by the person to whom he had listened. This means that the things he knew before come back to him. This sort of knowledge is called Shruti Jnana.

Now let us turn our attention to the stanza of Samudhi-Sataka. "Misery in this life is due to our misconception of the soul; we think that the body is the soul. We must get rid of this ignorance and think of the soul as it actually is; not once, but over and over again. To do so we must be free from thoughts of the outer world, so long as our outer senses are turned towards the world, the inner sense cannot turn inside.

Therefore, if we want our mind to think only of soul, we should not allow our senses to go in the opposite direction. If the mind is to be free from the outer relation, senses must first be checked."

This is the substance of the stanza. Your doubt is that if the senses are to have no connection with the object in the material world, Matijana cannot exist.

When the mind is absorbed in the contemplation of the soul we lose nothing if the senses are not concerned with the material world. In such a state of contemplation the object of mind is soul. Therefore the objection that thought cannot be apart from an object does not hold good here, because the object of thought is the soul itself.

First we get an idea of soul, either from other people who know it, or by the study of religious books. By constant thinking of the first idea, our knowledge of our soul remains fixed in us. Then if we go to a calm place and sit thinking calmly, soul becomes visible to our knowledge. This process is called 'Manasa Pratyaksha', visible to mind. In the Jain scriptures even this state of knowledge is called Paroksha. (Here we use the words Paroksha and Pratyaksha to mean partial and full. Here partial does not mean that there are some things yet to be known about soul, it only means that we know every detailed account of Atma, but we cannot see him actually as we see material things. This you can very well understand if you take two people one of whom knows the description of New York, while the other has actually seen the town). The eleventh sutra of the Tatvartha Sutra says Adya Paroksham, which means that of the five kinds of knowledge, the first two, Matijana and Shruti Jnana, are Paroksha. Formless things are visible only to Kevala Jnana,

and as the soul is formless it can be seen only by Kevala Jnana, and our knowledge of soul is Paroksha, it is Shruti Jnana, which, as explained above, is Paroksha.

I will give you another instance to show that during the stoppage of sense-connection with the outer world we get a particular kind of knowledge, Shruti Jnana. Let us suppose that a judge has to write a decree on a serious case. He shuts himself up in a room and thinks only of those methods which would help him in this situation. He gets the solution. What kind of knowledge is this? It is purely mental and not of the senses. Thus we infer that knowledge can come from the mind without the outer senses. This knowledge may have for its object either the outer world or the soul. The stanza of the Samadhi-Sataka says that the knowledge mentioned in it must have soul for its object. When this kind of knowledge remains fixed on a certain object for some time, it becomes Dhyana or meditation, which is of three kinds, Subha, Asubha, and Sudha, good, bad and pure.

Asubha Dhyana or bad meditation consists in thinking of evil to others, of false things, of sensual pleasures, of things that bring distress to the mind, and so on. The result of this is that so long as the mind is engaged in this sort of meditation sinful karma atoms enter the soul at every moment without any interval and result in bringing us low birth and misery.

Sudha Dhyana, good meditation, is to think of doing good to others, of the divine virtues of Parmatman, of the pure characteristics of righteous people, of the benefits derived from others, of the means of relieving beings from misery, or of the real nature of a substance. The special characteristic of this meditation is that it must be quite free from liking or disliking. So long as the soul

is engaged in this contemplation, meritorious Karma atoms will be continuously flowing into the soul, the effect of which will be the giving to the meditator in his next birth a beautiful, healthy body, fame, abundance of worldly things, long life, temporal power, boundless wealth, a loving wife and beautiful children, a great retinue of followers, etc.

Suddha dhyana, pure meditation, can be described as contemplation upon the spotless virtues, omniscience, everlasting happiness, of the Siddhas or pure souls who have attained salvation. But here there is a distinction between the meditator and the meditated. There is still a higher sort of meditation which consists in thinking of one's own pure self completely separated from other things. This meditation checks the inflow of all sorts of karma atoms, whether good or bad and destroys the previously gathered piles of karma just like fire destroys a manger. If we continue in this manner...all our Karmas will be destroyed, we shall be freed from worldly suffering and enjoy eternal happiness. Therefore in order to overcome this disease of Karmas which are the cause of endless births and deaths, we must taste this pure meditation. This is the full significance of the fiftenth stanza of Samadhi—Sataka."

The letter is then finished up in the usual way.

My difficulty arose evidently from supposing that just as we should never think that the body is our self or soul, so also we should never allow our senses to relate themselves to external objects, whereas the stanza evidently only means that we should not allow the senses to relate themselves to external objects if we wish to think about the soul, but of course at other times we must do so.

H. Warren.

84 Shelgate Road, LONDON.

Faith and Truth.

(By:—*Tarachandra Jain Pandya, Jabalapatan City.*)

Truth is the nature of soul, and being natural it is, in reality, simple and easy. But the worldly soul has remained so long under the spell of Untruth, and so much ignorant of Truth that when she sets out on the path of Truth, she feels it as if it were strange and difficult to walk on. The pilgrim who treads upon it finds it strewn all over with thorns and drier than even the vast deserts of Sahara with no oases to delight his eyes and comfort his mind. He sees beside it a road looking as comfortable and beautiful as a bed of roses and even skirted by the pleasant gardens filled with the sweet fragrance of their flowers. He must guard against the temptation of leaving his own track, and taking to this seemingly pleasant road. For, if he yields to this temptation, he is ruined. Many are tempted here and as a result lose themselves, and a few who boldly continue in their journey find the heavens threatening, the clouds darkening, the lions roaring, and the oceans over-flooding. Even the Earth under their feet quakes and seems to be slipping away, and everything they touch or feel becomes painful to them. The air becomes poisonous, the friends are turned into foes, and, what the worse, even truth appears to be ugly, fearful, and useless. Amidst such circumstances, the evil thought, the Satan of the allegorical world, soars to their heads and asks them to come to him, to give up their pursuit, and drive with him in his flying car of gold, and thus to save themselves, and with a bewitching

smile he promises to make them the masters of the world with all its treasures. It is only after baffling all these threats and temptations, and proving himself a true gold by being tested on this touchstone that a pilgrim of Truth is able to enter the mansion of Right, and there eat of the viands of the gods, the Perfect, who are attended on by Bliss, Knowledge, Tranquility and Power, and dwell there for ever and ever enjoying the supersensual pleasures of eternal kingdom. The pilgrims must have faith and firm resolution to stand all the obstacles. How can a man persevere in the face of the worst difficulties unless he believes in the existence and excellence of his goal, and in the correctness of his path?

But Faith must not be blind Faith. It must be Right Faith, Faith in Truth, otherwise Satan also will cite the scriptures and claim the reposing of trust in him. Right Faith is founded on a proper knowledge of Truth. How is this knowledge to be gained? The answer to it is easy. Self is the treasury of all knowledge, and Truth is the nature of self. Therefore, it follows that the best way to know the truth is to contemplate on the Self. But in order to contemplate properly, it is essential that the mind must be calm and unprejudiced, i. e. free from the fourfold passions of anger, deceit, pride and avarice. The weaker these passions become, the calmer the mind grows and the fitter it becomes for the task of contemplation and realising Truth. Therefore, suppress your desires.

and passions as much as you can, and whenever possible, lift up your mind from the evils of the noisy world into the purer regions, contemplate on yourself, and diligently seek within yourself to find out answers to such questions as : Who are you ? Whence have you come and where will you go at last ? What is the nature of the world and the substances it contains ? What is the nature of self ? What is the nature of the relation between the soul and the other substances of the world ? What is the present condition of your self, and how can it be made perfect ? A day shall come when light will come from your Self and Truth will be revealed to you.

Besides this, the great masters of proved perfection, who are desireless and therefore impartial, omniscient and therefore infallible, and their lessons as faithfully transmitted by the sincere and unselfish pilgrims of Truth ; and the society of the saints who are free from the worldly desires and whose only business is the realisation of Truth and the perfection of themselves—these also are of immense help in acquiring the knowledge of Truth. The worship, the reverential reflection, of the form of the Perfect Soul whether as conceived by the mind or as methodically represented by the images formed of matter, is also conducive to the cognition of Truth, in as much as it gives an idea of what Perfection is, enables the devotee to withdraw his mind from the mundane objects and concentrate it on the Self, and ultimately leads to the belief that the Self is similar to the Perfect Soul—the Ideal.

◆ The seeker after Truth should study the lessons of the Great Masters and try to comprehend them as far as is possible for his intellect. He need not be afraid if he is not possessed of great intellect. One can travel thousands of miles holding a dim lantern whose range of light does not extend

to more than a foot, because as he advances so the light also continues moving onward. So, the sincere and unprejudiced lover of Truth tries to find out the explanation of a statement or dogma to as much extent as his intellect allows, and when he has found it true to that extent, he takes on trust the rest which is beyond his power of comprehension, so long as it is not proved to be false. He is always fond of reasoning and enquiry, because his heart's desire is to understand Truth thoroughly and correctly. But he reasons and enquires as a humble student of Truth and not as a pedantic debator. He goes on steadily with his travel, and with every forward step that he takes, his mind becomes increasingly illuminated.

The miraculous effect of faith upon mind is evident even in the common affairs of life. It is Right Faith which makes one's knowledge of Truth worthy of being entitled Right Knowledge. How can a man's knowledge be considered right as long as he himself does not believe in it ? His very lack of belief indicates that he has doubts about its soundness.

It should be noted here that though the worship of the idols, the study of the scriptures, the society of the saints etc. are helpful in the realisation of Right Faith as accessories, yet they are not always necessary for it, nor are they the sure signs of it. Right Faith is a peculiar enlightenment of soul which can only be experienced and cannot be described. This state results when the intensity of the passions is destroyed ; and the soul feels an unshakable confidence in its own self-existing, excellent, omniscient and immortal nature, and in its being essentially different and separate from matter with which it has been associated from times without beginning. With the dawn of Right Belief, the power of the passions begins to decline, the soul grows indifferent

to the worldly objects and fixes its interest on itself, its inherent qualities of mercy, equanimity, humility and fearlessness, etc. begin to be manifested, and it is as it were invested with an indomitable will to follow the path of Truth with unflinching zeal, and irresistible vigour, and disperse the clouds of the Karmas that have hemmed it round, so that it grows purer and purer and shines with increasing resplendence, and eventually becomes what it is. The cause of this Right Belief lies in the soul itself. The student of Truth must look to this only source for receiving the light, and all other means that he is recommended to adopt serve only to make him a fit recipient.

Tarachand Pandya.

पार्थना ।

(बसन्ततिलका)

विश्वेश ! सागर समान अपार तेरी ।

संसारमें झलकती महिमा कहाँ ना ॥

देवाधिदेव, अज और अनंत है तू ।

सारा त्रिकाल दिखता तुझमें पड़ासा ॥१॥

आलोकमान नभ जीवन-दान-दाता ।

तू व्याप्त है सब कहीं विमल प्रभासे ॥

श्री साधु-चित्त-खग हैं उड़ते तुझीमें ।

तेरी पड़े जगत पे सुविशाल छाया ॥२॥

देवेश ! जोड़कर हाथ पुकारता मैं ।

तेरी कृपा मधु ही बल जोर मेरा ॥

ना मांगता सुख, कठोर कुदुःख मांगू ।

चाहूँ न भोग भवके, भव नाश चाहूँ ॥३॥

देखूँ न मैं तनिक भी अपने गुणोंको ।

निन्दार्थ देख न सकूँ परदोषको मैं ॥

देखूँ कभी न घन कामिनि देह शोभा ।

अन्ना बना नयनसे इतना सुझे तू ॥४॥

लं देख दोष निजके गुण दूसरोंके ।

सौन्दर्य वा दुख छिपे न कभी हियोंका ॥

आकाश भेदकर सप्त तुझे लखूँ मैं ।

मेरे बना नयनको बलवान ऐसे ॥५॥

निन्दूँ न सज्जन कहूँ यशको न मेरे ।

बोल्ने कठोर कटु शब्द न शत्रुसे भी ॥

भाषूँ न झूठ यदि संपद भी दिलावे ।

ऐसी महेश ! बन जाय जबान गूंगी ॥६॥

कांपे अनौतियुत विक्रम गर्जनासे ।

घर्मोपदेश सुन गूँज बटे सभी भू ॥

सप्रेम सत्य कह मुग्ध करूँ सबोंको ।

ऐसी अमोघ करदे बलवान वाणी ॥७॥

हों थालमें चमकते पकवान सारे ।

सुस्वादवांछित सुगन्धित नेत्रहारी ॥

वे न्याय-अर्जित न हों यदि तो न खावे ।

ऐसी अशक्त रसना बन जाय मेरी ॥८॥

आनन्दसे चख सके मिलजाय जोभी ।

खा शुद्ध, भूख जितना बल पुष्टता दे ॥

मूखी खिला इतरको दुखको न पावे ।

हो शक्तियुक्त रसना सुखकार ऐसी ॥९॥

गोले सहं गरल दारिद-दाहको भी ।

निन्दा सहं खड़ग-चोट कुरोग सारे ॥

भू भाग शीतल, निराश वियोग पीडा ।

तेरी कृपावश सहं इनको खुशीसे ॥१०॥

अन्यायको सह सकूँ पर ना कभी भी ।

आपत्ति देख सच पे चुप ना रहूँ मैं ॥

ना देश-जाति अपमान सहं जरा भी ।

ऐसी बना सहनशक्ति महेश मेरे ॥११॥

मानिन्द भेड़ गुरु सन्मुख हो रहूँ मैं ।

रक्षार्थि शत्रुपर हाथ उठा सकूँ ना ॥

भाषा विहीन पशु हैं उनको न पीड़ू ।

ऐसा मुझे शुभद कायर तू बनादे ॥१२॥

अन्याय देख पर पै सुर भी पछाड़ू ।

साधू स्वकाज कर दूर हजार बाधा ॥

सिंहादि तुच्छ समझू, भयको ड(।।उं ।

ऐसा सुसाहसिक वीर मुझे बनादे ॥१३॥

हो दीनबंधु मलमूत खुशी उठाऊं ।

तेरा सुसेवक बनू, अभिमान ना हो ॥

निस्वार्थ भाव घरके जगको सुसेवू ।

ऐसा सदानत रहूँ इस भांति चाहूँ ॥१४॥

ऐश्वर्य तुच्छ समझू, प्रभुता घिनाऊँ,

सुज्ञान-दीप्त नम दिव्य विचारकेमें-

ऊँचा उड़ू बन सकूँ सम ठीक तेरे ।

चाहूँ महेश बनना इतना बड़ा मैं ॥१५॥

संसारके विषय मैं विष घोर मानूँ ।

जानूँ न भेद अहि माल रिपू सखाका ॥

स्वर्गीय भोग सुख छोड़ भजूँ दुखोंको ।

ऐसा मुझे परम पागल तू बना दे ॥१६॥

कर्तव्य जाय दिख मानस-आरसीमें ।

निन्दा तथा सुयश बन्धनमें पहुँ ना ॥

हो कर्मशील जगमें सुसरोज शोभूँ ।

ऐसा प्रबीण मुझ मानवको बना दे ॥१७॥

सारांश है यह कि पाप करूँ नहीं मैं ।

तृष्णा असत्य इनसे डरता रहूँ मैं ॥

तेरा क्रिोध यमराज समान मानूँ ।

ऐसी प्रभो ! निबलता मुझको सदा दे ॥१८॥

अन्याय पाप पर मैं लड़ जीत पाऊँ ।

खोऊँ न शान्ति, सुख दुःख डिगा सके ना ॥

या ज्ञान जीत मनको भव-जाल तोड़ूँ ।

ऐसा प्रभो ! सबल तू मुझको बना दे ॥१९॥

ताशाबन्द पांड्या जैन, झालरापाटन ।

Jainism & Science.

(By:—Ramniklal Vimalshi Shah, Bombay).

(1) Introduction—Before writing anything on the subject—proper, let me confess to you, my readers, frankly, that I am merely a student of Comparative Study of "Jainism & Science." Whenever I read a book of science, I keep in my mind an idea to compare the striking facts of its contents with those of Jainism—the facts that I have learnt. I do not profess either to be a Pandit or a Literary Scholar. I will try to give here what is worthy to be given.

(2) Main Body—(a) One striking fact that, we, the Jains believe is that the bodies which have got one sense have got soul i. e. have life. Just in this twentieth century, some ten years ago there came out an Indian—one of the greatest scientists of the world to-day—who proved it and showed to the world that it was the fact. As ill luck would have it, he was not a Jain. Of course we are proud of him and we are content with him as he was an Indian. He was Sir Jagdish Chandra Bose. Before this proof was given in scientific terms by our hero—nobody in this world of materialism and memon—worship believed the truth of the statement.

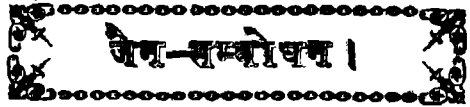
(b) Another striking fact that we, the Jains, believe lies in our Karmic Theory. There seem some auspicious signs for the proof of it. Sir Oliver Lodge in his book on "Modern Scientific Ideas" published in 1928 has very nearly disclosed it. We believe "Karmic Matter to be the minutest particles not visible even though the most powerful microscopes. These particles, if I mistake not, resemble the electrons and protons of Science. Jains believe in Seven Tattvas (सत्त्व) out of which Asrava, Bandha, Samvara, Nirjara & Moksha (मानव, बन्ध, संवर, निर्जरा,

बोध,) take active part in explaining this 'Karmic Theory'. The inflow of karmic particles, their attachment to the soul, their stoppage, their partial and complete outflow—this is the order. After the death of a body, if the balance of particles is zero, then and then only the soul attains liberation (मोक्ष) or otherwise, it has to change its place of residence in any other form or shape according to and owing to (नाम कर्म) Nama Karma. In short we believe that these Karmic particles are responsible for the structure of materials—and the structure takes place owing to the soul's Nama karma. Sir Oliver Lodge has said in his above-named book—in the chapter about 'old atoms of matter' that it is this complicated nature of electrons and protons that is responsible for the Structure of bodies. Dear Readers, what does this sentence show? As I said—it very nearly proves our Jain fact. Of course, it is not acknowledged on all hands and also it is not announced as a Scientific fact by the conference of authorities in Science.

(c) The third striking fact that we, the Jains believe comes in the questions about 'God.' Jains do believe in God. Let no one forget this fact—God as the purest and holiest of all beings—God free from all karmic particles—but not God as a creator of all Jains believe in God as such. Science defends Jainism. Let nobody for a moment think that science does not believe in Religion and Nature. Sir Oliver Lodge has emphasized the fact that the duty of science is not to create but to admire, appreciate and verify what is already created. For answering some very complicated questions, Science has to go to Religion and Nature. Science says that everything is automatically and scientifically created—nobody creates anything. It is merely due to the chemical

actions—each in different manner—between elements that new substances are formed.

Conclusion—So many facts and truisms of Jainism are being proved day by day. And I am sure—after some hundreds of years as Science will advance—there will be a time when the people will know the facts of Jainism as the scientific fact proved by human beings. As ill luck would have it, we have no men in that field. It is because of that, that in spite of having truths with us, nobody is ready to put complete faith in us and our principles. We are rich in money—we are poor in art—really a very miserable contrast. Also shame for us that we do not know how, where and why to spend money. We merely spend it in erecting edifices and temples and not for living beings.



यही है सार दुनियामें, दया करिये, धरम करिये ।
 प्रभुकी बादमें रहकर, सुफल जीवन-जनम करिये ॥
 लगे परमार्थमें तनमन, ये धन, तो श्रेष्ठ है सबसे ।
 सुधारा होय परभवका, यही हरदम करम करिये ॥
 सिखाता है दया करना, तुम्हारा ही, तुम्हें मजहब ।
 यही बहतर, जहांतक हो, नरम दिल हो रहम करिये ॥
 निकालो फूटको दिलसे, बढ़ाओ प्रेम, प्रेमी हो ।
 सभी हिलभिल रहो बाहम, सदाआली हिमम करिये ॥
 तरकी कररही सब जातियां मिलकर, जरा देखो ।
 तुम्ही गाफिल ही, गफलतमें पड़े हो, हाशरम करिये ॥
 उठो फिर देर करनेसे, हाथ तब आयगा 'मिय' क्या ?
 पड़ेगा सिर्फ पछताना, मेरी बातें रकम करिये ॥

'मिथ'

भगवान महावीर ।

(लेखक—**पं० मूलचन्द्रजी जैन वस्त्राल, संपादक आदर्श जैन चरितमाला, बिजनौर ।**)

अवतरण ।

जसे २५२८ वर्ष पहिले इस आ भारतवर्षके बिहार प्रान्तमें कुण्डपुर नामक सुन्दर नगर अत्यन्त प्रसिद्ध था । नाथवंशीय प्रतापशाही महाराजा सिद्धार्थ उसके अधिपति थे । वह अत्यन्त नीतिकुशल सम्राट थे । उनकी महारानीका नाम त्रिशलादेवी था । त्रिशलादेवीने अपने उज्ज्वल गुणोंके समूहसे चन्द्राभाकी किरणोंको जीत लिया था, उसका दर्शन मानवोंके नेत्रोंको सुख और शांति प्रदान करता था । जब वह बोलती थी, तब उसके मुँहसे अमृतकी वर्षा होने लगती थी । वह सौन्दर्य, शीलता और महलोचित समस्त कार्योंकी ज्ञाता उस समयके महिला मण्डलमें एक ही थी ।

उन्होंने अपने उज्ज्वल आदर्शसे भगवान महावीरके जन्म प्रदानसे सारे संसारमें महिलाओंकी पूज्यताको प्रदर्शित किया था । उन्होंने दिखला दिया था, कि जो महिलाएं निरादर और कृष्णाकी पात्र समझी जाती हैं उनके गर्भसे ही विश्वपूज्य महात्मा जन्मलेकर संसारका उद्धार करनेको तत्पर होते हैं ।

महाराजा सिद्धार्थ और त्रिशलादेवीका समय

धर्मसेवनके साथ२ सांसारिक सुखोंके उपभोगमें संतोषपूर्वक व्यतीत होता था ।

सत्यधर्मकी ऋष्टि अनन्तकालसे है । उसका अस्तित्व कभी नष्ट नहीं होता । कालके परिवर्तनके साथ२ यद्यपि उसके प्रचार तथा फलनमें क्षीनाधिक्यता अवश्य होती रहती है, किंतु उसका कभी अन्त नहीं होता ।

जिस समय उसके प्रचारक महात्माओंका अधिक सदभाव होता है, उस समय उसका प्रचार सारे संसारमें उन्नत रूपसे होता है, किंतु जब कभी उसके प्रवर्तक धार्मिक महात्माओंकी कमी होजाती है तब उसका प्रकाश कुछ क्षीण होजाता है ।

चतुर्थ कालके आदिसे भगवान ऋषभदेवसे लेकर भगवान पार्श्वनाथ पर्यन्त २३ तीर्थकरोंका अवतरण होचुका था । उन्होंने अपने २ धर्म प्रचारके समयमें अहिंसामयी जैनधर्मको सारे संसारका राष्ट्र धर्म बना दिया था । उन्होंने अपने अद्भुत त्याग और ज्ञानशक्ति द्वारा सब अहिंसा धर्मकी पत्ताकाको अखिल संसारमें फहरा दिया था । संसार उस शांतिमय जैन धर्मकी शरणमें रहकर अपने आत्मोद्धारके मार्गको प्राप्त कर चुका था । भगवान पार्श्वनाथके तीर्थ-

कालके पश्चात् वैदिक धर्मका प्रकाश बढ़ा । उसने धीरे धीरे पूर्ण हिंसामय प्रभाव भोले संसारी मानवों पर डालना प्रारम्भ किया । संसारी मानव उसके मिथ्याचरणके जालमें जकड़े जाने लगे । धीरे २ मिथ्याचरणोंने एक बड़ा भयंकर रूप धारण कर लिया, भयंकर पशु-हिंसा होने लगी । निर्बल प्राणियोंके सिरपर अत्याचारकी तलवार लटकने लगी । सबल और धनिक समाज अपने बड़े हुए अन्यायोंकी पूर्ति निःशंक होकर करने लगा । क्रियाकांडी, पाखंडी प्रेतगण अपने मूढ मन्त्रके अन्वचलमें मनमाना अनाचार करने लगे । शांतिप्रिय भव्यजन सत्य मार्गका प्रकाश न पाकर अकुलाने लगे । सारे संसारमें घोर कोलाहल होने लगा । ऐसे अवसर पर ही सत्यधर्मका सन्देश लेकर मानवोंको अहिंसा पथपर आरूढ़ कराने वाले, शांतिअमृतका पान कराने वाले भगवान महावीरका अवतरण हुआ । जबसे भगवान गर्भमें आए, तबसे देवांगनाएं माताकी अनेक प्रकार सेवा करने लगीं । महाराजा सिद्धार्थके विशाल आङ्गनमें देवोंद्वारा रत्नवृष्टि होने लगी । एक समयको सारे संसारमें आनंदकी मलय पवन बह उठी । दिशाएं निर्मल होगईं, पक्षीगण मन्द २ स्वरसे कलरव करने लगे । चैत्र शुक्ला त्रयोदशीके दिन शुभ समयमें महादेवी त्रिशलाके उदर कोषरूपी प्राची दिशासे वीर बालसूर्यका जन्म हुआ । भगवानके अद्भुत पुण्य प्रभावसे देवताओंके सिंहासन कंपित हो उठे । स्वर्गलोकमें आश्चर्यजनक मंगलनाद होने लगा । इन्द्रराजने

अपने दिव्य ज्ञान द्वारा भगवान महावीरका जन्म होना ज्ञात किया । वह स्वर्ग लोकसे देवताओंके समूहको लेकर स्वयं शची समेत ऐरावत हाथीपर चढ़कर लीला सहित महाराजा सिद्धार्थके राजप्रासादके सम्मुख उपस्थित हुए । वहां उन्होंने भगवानके जन्मोत्सवके उपलक्षमें बड़ा भारी उत्सव किया । उन्होंने उनका ठाट-बाटसे जन्माभिषेक किया । देवांगनाओंने नयन मनहारी नाच द्वारा, दर्शकोंका हृदय विमुग्ध कर दिया । कुछ समयको कुण्डलपुरने स्वर्गपुरीके स्वरूपको धारण कर लिया । सुरराज बालक महावीरको अपनी गोदमें लेकर उनके अनंत दीप्तिपूर्ण मुखमण्डलका अवलोकन कर किंचित् भी तृप्त नहीं हुए । उन्होंने अपने हजार नेत्रोंद्वारा अनेकवार बालशिशु वर्द्धमानके रूपसुधाका पान किया । पश्चात् माता त्रिशलादेवीकी गोदमें उन्हें सौंप दिया और उन्हें "वर्द्धमान" नामसे सम्बोधित कर जन्मकल्याणके हर्षसे परिपूर्ण होकर स्वर्गको लौट गए ।

महावीरत्व ।

प्रभातका सुन्दर समय था, प्रतापी सूर्यने अपनी स्वर्णमयी किरणों द्वारा पृथ्वीमंडलको स्वर्ण तुल्य बना डाला था । उपवनमें नवीन पुष्प प्रफुल्लित होकर हँस रहे थे । उपवनकी शोभा प्रभातकालीन मंजुलताने द्विगुणित रूपसे वर्द्धित कर दी थी । बालक महावीर इस सुन्दर समयमें समवयस्क बालकों समेत उपवनमें क्रीड़ा करनेके लिये चल दिये । वह बालकोचित क्रीड़ा विनोदमें निमग्न होगए ।

बालक महावीर, महावीर थे । उनके शरीरमें अतुल बल था, उनका पराक्रम अद्वितीय था । समवयस्क बालकोंके साथ क्रीड़ा करते हुए वह नक्षत्रोंके समूहमें चंद्रके समान प्रतीत होते थे । उनका मुँह मंडल अपूर्व तेज और विलक्षण प्रभासे प्रदीप्त होरहा था । इसी समय कपोलोंसे मदधारा बहाता हुआ, मदलोलुप—भ्रमरोंके नादसे अत्यन्त क्रोधयुक्त हुआ, भयंकर चिंघाड़ करता हुआ, मदोन्मत्त, कालके सदृश भयानक एक गजेन्द्र तीव्र गतिसे दौड़ता हुआ क्रीड़ा करते हुए उस बाल-मंडलकी ओर आता हुआ दिखाई पड़ा । उस भयंकर हाथीको अपनी ओर आते हुए देखकर समस्त बालकगण भयपूर्वक यत्र तत्र भागने लगे, किन्तु बालक महावीर निर्भयता पूर्वक अपने स्थानपर खड़े रहे ।

हाथी अपनी सूंडको उठाकर उनके सन्मुख उपस्थित हुआ, बालक महावीरका हृदय किंचित् भी भयभीत नहीं हुआ, किन्तु उन्होंने साहस-पूर्वक हाथीके सम्मुख होकर अपनी दृढ़ मुष्टिकाका उसके ऊपर प्रहार किया और उसे मदरहित कर शीघ्रतासे उसके मस्तक पर आरूढ़ होगये । उनका यह अद्भुत पराक्रम अवलोकन कर समस्त प्रजाजनोंको अत्यन्त आश्चर्य हुआ और वह हाथी जो कि वास्तवमें एक देव था, बालक महावीरकी महान् शक्तिकी परीक्षा करनेके लिए आया था, अपना (हाथीका) मेष बदलकर शीघ्र देवके रूपमें प्रकट होकर बालक महावीरकी महान् शक्तिकी प्रशंसा करने लगा । वह उनके उस अलौकिक बल—सूचक

कार्यसे अत्यन्त मुग्ध हुआ और उन्हें “महावीर” इस नामसे संबोधन कर स्वर्गलोकको चला गया ।

आदर्श गृहस्थ जीवन ।

बालक महावीर काल द्रव्यके परिगमनके साथ साथ सरलतासे पूर्ण बाल्यावस्थाका परित्याग कर युवावस्थाके क्षेत्रमें विचरण करने लगे । क्रमशः वह पूर्णयुवा होगए । उनके सुन्दर शरीरमें प्रभा न समा सकी । वह उनके शरीरसे बाहर निकलने लगी । उस प्रभाके प्रकाशमें उनका स्वर्ण शरीर अत्यन्त चमक उठा । उनके सुडौल और पुष्ट अंगोंपर सुन्दरता नृत्य करने लगी । दर्शकोंके नेत्रकमल उनके अवलोकनसे प्रफुल्लित होने लगे ।

लाख प्रयत्न करनेपर भी कामदेव उनके शरीरमें प्रवेश नहीं कर सका । उनके स्वच्छ अन्तःकरणमें उसे किंचित् भी स्थान प्राप्त नहीं हुआ । उसने अनेकों प्रयत्नों द्वारा उनके हृदयमें विषय बिकार उत्पन्न करनेकी चेष्टा की, किन्तु उसे अत्यन्त निराश होना पड़ा । उन्होंने कामदेवके आक्रमणोंको बुरी तरहसे नष्ट कर दिया । अस्तु, वह उनके स्थानको छोड़कर अन्य देवोंकी शरणमें रहने लगा ।

युवक महावीर मति श्रुत और अवधिज्ञानसे युक्त संपूर्ण विद्याओं और कलाओंसे परिपूर्ण थे । गृहस्थावस्थामें रहते हुए भी वह जलमें कमल सदृश उसके विषय प्रलोभनसे सर्वथा विलग रहते थे । उनके मनमें कभी स्वप्नमें भी भोग-विलास संबंधी लालसाएं उत्पन्न नहीं होती थीं ।

महाराजा सिद्धार्थने कुमारको पूर्ण यौवन-संपन्न निरीक्षण किया । उन्होंने योग्य कन्या-

ओंके साथ पाणिग्रहणका आयोजन किया, किंतु अनेकवार आग्रह करनेपर भी कुमार बर्द्धमान किसी प्रकार पाणिग्रहण करनेके लिये तैयार नहीं हुए। उन्होंने आजन्म पर्यंत ब्रह्मचारी रहनेका प्रण किया। महाराजा सिद्धार्थ उनकी इस दृढ़ प्रतिज्ञाके संमुख अधिक कुछ भी नहीं कह सके। युवक महावीरने कामविकार रहित ३० वर्ष पर्यंत गृहस्थाश्रममें रहकर अपना आदर्श जीवन सुखपूर्वक व्यतीत किया।

वैराग्य ।

प्रभातका समय था। पक्षीगण मधुर स्वरसे मत्तंडके प्रतापका स्वागत कर रहे थे। समस्त दिशाएँ प्रभा पूर्ण होरही थीं। विश्वपाणियोंके हृदयोंमें नवीन उस्ताह और आनंद प्रवाहित होरहा था। युवक महावीर अपने महलके उच्च शिखरपर विराजित हुए प्रभातकालीन दृश्यका अवलोकन कर रहे थे। प्राची दिशामें अरुण मेघमण्डल स्वर्ण लालिमाको लज्जित कर रहा था। महावीर स्वामीके नेत्र उस अरुण मेघमंडलकी शोभापर मुग्ध होगए। वह अनिमेष दृष्टिसे उस ओर बिलोकन करने लगे। उन्हें अवलोकन करते एक क्षण भी नहीं हुआ था, कि वह लालिमा नष्ट होगई और उसके स्थानमें नभमण्डलका शुभ्र पटल बिम्बित होने लगा। भगवान महावीरने इस परिवर्तनका अवलोकन किया और बड़े ध्यानसे अवलोकन किया। इस परिवर्तनसे उनके हृदयमें एक नवीन विचार धारा प्रवाहित हो उठी। वह विचारने लगे— “ओह ! संसारका दृश्य बड़ा ही नश्वर है। यहां

एक क्षण मात्रमें ही कुछका कुछ होजाता है। इस अस्थिर संसारकी समस्त वस्तुएं क्षणभंगुर हैं, नष्टप्राय हैं। संसारिक वैभवके संबन्धमें तो कहा ही क्या जा सकता है, क्योंकि वह तो प्रत्यक्ष ही जड़ है और क्षणिक है; किंतु मानवोंका यह शरीर भी प्रति समय विनाशके सम्मुख उपस्थित होकर इस आत्माका त्वाग कर देता है। ओह ! इस क्षणिक वैभव और इस नश्वर शरीरसे मानवोंका इतना सोह ! इतना स्नेह !! इतनी तल्लीनता !!! क्या इन परिवर्तनशील वस्तुओंकी तीव्र स्नेह मदिराके नशेमें मस्त हुए यह संसारी मानव अपने आत्मकल्याणसे सर्वथा विस्मृत नहीं हो रहे हैं ? क्या इन्हीं नश्वर प्रलोभनोंके जालमें बद्ध हुए वे कर्मोंकी परतंत्रतामें नहीं पड़ रहे हैं ? क्या वे इस मधुर विषय विलास सागरमें निमग्न हुए अपने कर्तव्य-पथसे उन्मुख नहीं हो रहे हैं ? क्या आत्मकल्याणसे विस्मृत मायामरीचिकामें फंसे हुए इन अज्ञानी संसारी मानवोंने स्वार्थ, अन्याय, अत्याचार और कपटाचारको अपना सहमित्र नहीं बना रक्सा है ?

वह किसलिए ? केवल क्षणिक विषय लालसा पूर्तिके लिए ही न ! किंचित् कुत्सित बक्षाना तृप्तिके लिए ही न ! ओह ! इन वृषित कुकृत्योंके लिए इतना कष्टमय व्यापार ! इतनी अशांतिमय रूपनाएं और इस प्रकार तन्मग्नता ! क्या इन्हें यह ज्ञात नहीं है कि विश्वके लिए वह इतनी मारकूट, इतनी प्रपंचना, इतना पाप और अत्याचार कर रहे हैं, वह दो दिनका

क्षणिक चिनोद है। आह ! मैं भी तो अबतक इस संसार चक्रके ऊपर मीठी निद्रामें पड़ा हुआ जीवन व्यतीत कर रहा था। मैं भी अपने जीवनके अमूल्य समयको व्यर्थ नष्ट कर रहा था। मैं अनंत शक्तिशाली आत्मा होते हुए भी इस गृहस्थाश्रमके बंधनमें पड़ा हुआ था। अपने वास्तविक कर्तव्यसे विमुख हो रहा था। मेरा कर्तव्य था आत्मोद्धार, देशोद्धार और विश्वोद्धार। बस, अब नहीं; अब मैं इस क्षणिक संसारकी नश्वरता अबलोकनमें अपना एक क्षण भी नष्ट नहीं करूँगा। अब मैं शीघ्र ही संसारके इन समस्त मायाजालोंको काटकर अविनश्वर सुख सम्पन्न आत्मा बनूँगा। मैं इस संसारका त्याग करूँगा। मैं तपस्वी बनूँगा।” इस प्रकार एक क्षणमात्रमें उनका हृदय वैराग्यसे भूषित होगया। वह बाल ब्रह्मचारी, वह अद्वितीय आत्मविजयी, वह प्रबल बलशाली, मदनविजयी महावीर उसी क्षण समस्त सांसारिक जाल त्यागनेका संकल्प करने लगे।

गृहत्याग ।

महावीरस्वामीके संसार-विरक्त होनेका संवाद स्वर्गनिवासी देवताओंको विदित हुआ। नियमानुसार लौकिक देव भगवानके सम्मुख आए। उन्होंने भगवानकी तीन प्रदक्षिणा देकर नमस्कार करते हुए, उनके इस शुभकृत्यकी अत्यंत प्रशंसा की। वह विनम्रपूर्ण शब्दोंमें कहने लगे—
“प्रभो ! आपने जो दीक्षा ग्रहण करनेका विचार किया है वह अखन्त प्रशंसनीय है। यह बर्मोद्धारका कार्य आपके अविरिक्त और

कौन कर सकता है ? धन्य है आपकी इस वैराग्य वृत्तिको !” इसप्रकार शिष्ट वचनों द्वारा भगवानके वैराग्यको दृढ़ कर वह अपने स्थानको चले गए। पश्चात् इन्द्रने चतुर्विध देव तथा इंद्राणी समेत उपस्थित होकर भगवानका अभिषेक अपूर्व उत्साह सहित किया।

महाराजा सिद्धार्थ तथा समस्त गृहजनोंको अब ज्ञात होगया कि कुमार महावीर शीघ्र ही इस गृहस्थाश्रमका त्याग कर दिगम्बरी दीक्षा लेलेने वाले हैं। उनका हृदय पुत्र वियोगके भीषण दुःखसे व्याप्त होने लगा। समस्त गृहजनोंके मनमें विषादकी तीव्र तरंगे उमड़ने लगीं। माता त्रिशलादेवीका हृदय पुत्रवियोगके इस दुःसह दुःखको संभाल न सका, वह फूटकर रोने लगी। त्नेहकी घारा प्रबल वेगसे लहराने लगी। उन्होंने रोते रोते क्षीण स्वरमें कहा—
पुत्र ! तुम यह क्या कर रहे हो ? इतने बड़े राज्य वैभवका इस प्रकार क्यों त्याग कर रहे हो ? ओह ! तुम्हारा यह सुकुमार शरीर, जिसने कभी सूर्य किरणोंके आतापका अबलोकन नहीं किया, वह तपश्चरणा जैसी तीव्र आंचके सम्मुख कैसे स्थिर रह सकेगा ? आह ! बेटा तु घोर कष्टमय क्षुधा तृषाकी तीव्र वेदनाको कैसे सहन कर सकेगा ? पुत्र ! इस प्रकार हमारे आनंदको अनायास नष्ट कर इस दुःसह दुःखमय वियोगका कार्य मत करो।

मोहमग्ना माताको इस प्रकार विलाप करते हुए विलोक कर सौषर्म इंद्रने सान्त्वना देते हुए कहा—माताजी ! आपका पुत्र त्रैलोक्य स्वामी

है । इन सिंहके समान निर्भय महावीरको किस बातका भय ? ये अनंत बल संपन्न चरम शरीरी हैं । इनके शरीरको कोई भी वस्तु कष्ट नहीं दे सकती । पूज्या जननी ! संसारमें परिभ्रमण करते हुए अनंतकाल पर्यंत इस आत्माने असहनीय कष्टोंको सहन किया है । अब यह उन संसार जनित समस्त दुःखजालोंको नष्ट कर अविनश्वर सुखका अनुभव करेंगे और इस कष्टमय संसारसे इन अज्ञानी संसारी मानवोंका उद्धार करेंगे । यह समय दुःख अथवा शोक करनेका नहीं है, किन्तु अत्यन्त हर्षका है । बन्दनीय माता ! आपको मोहजालमें पड़कर इसप्रकार खेद करना उचित नहीं । सौधर्मन्द्रके इसप्रकार बोधपूर्ण वचनोंको श्रवण कर माताका मोहजाल भग्न होगया ।

पश्चात् इन्द्र, देव आदि भगवानको देवताओं-द्वारा निर्मित विचित्र पालकीमें बिठाकर जय-जयकार करते हुए पूर्व दिशाकी ओर नंदनवनको ले गए । वहांपर चंदनके वृक्षके नीचे सुन्दर फटिक शिलापर इन्द्राणीने विविध रत्नोंके चूर्णसे स्वस्तिक निर्माण कर पुष्पमालादिसे सुन्दर मण्डप बना रक्खा था । भगवान पालकीसे उतरकर उसी मंडपमें विराजमान होगए ।

भगवान महावीरने समस्त रत्नजडित भूषणोंको, हीरोंसे चमकते हुए मुकुटको जीर्ण तृण सदृश अकिंचन समझकर त्याग दिया । अपनी सुकुमार, किंतु बलशाली भुजाओं द्वारा समस्त केशोंको उखाड़कर “ॐ नमः सिद्धेभ्यः” कहते हुए षंघ महाव्रत और २८ मूल गुणोंको धारण

किया । वह आत्म-ध्यानमें मग्न होगए । समस्त देव तथा मनुष्यादिक उनकी स्तुति वंदना कर अपने अपने स्थानको लौट गए ।

आत्म-दृढता ।

भगवान महावीर तीव्र तपश्चरणमें मग्न थे, सुमेरु शिखर सदृश निश्चल निश्चेष्ट और निर्भय तपश्चरणकी प्रभासे उद्दीप्त उनका शरीर दर्शनीय था । उन्होंने निराहार रहकर छह मास पर्यन्त तीव्र तपश्चरण किया । तपश्चरणके प्रभावसे उन्हें प्राणियोंके हृदयके समस्त विचारोंको जानने वाला मनःपर्यय नामक ज्ञान प्राप्त हुआ । पश्चात् वह भ्रमण करते हुए दशपुर नगरमें आए । वहांके कुल नामक राजाने उन्हें आहार-दान दिया, जिससे उसके यहां देवोंद्वारा पंचाश्रयं किए गए ।

भगवान महावीर आहार लेकर पुनः ध्यानस्थ होगए । उन्होंने तीव्र तपश्चरण किए, जिसके प्रभावसे उन्हें अष्ट प्रकारकी ऋद्धिएं और अनेक सिद्धिएं अनायास ही प्राप्त हुईं ।

अनेक स्थानोंपर भ्रमण करते हुए एक दिन भगवान महावीर उज्जयिनी नगरीके स्मशानमें आकर पश्चासनसे ध्यानमें स्थित हुए । अनायास ही भ्रमण करते हुए स्थाणु नामक रुद्रने उन्हें देखा । पूर्व संस्कारके प्रबल प्रकोपके कारण उन्हें अवलोकन कर उसके हृदयमें दारुण द्वेषकी दाह दहकने लगी । वह उनकी इस प्रकार शांत सरल और निष्कंपताको सहन नहीं कर सका । उसने पूर्वजन्म कृत वैरका स्मरण कर भगवानके उपर अनेक प्रकारके

असहनीय उपसर्ग किए । उसने विद्याके प्रभावसे अपना विकराल वेष धारण किया, वह कभी दीर्घ तथा भयानक स्वरूप धारण करता था, कभी रोता था, कभी हंसता था, कभी गाता था और कभी अपने बड़े २ दांत निकालकर मुंहसे भयंकर अग्निज्वाला निकालता हुआ भयंकर चिंघाड़ करता था, किन्तु भगवान महावीर अपने ध्यानमें स्थिर रहे । तीक्ष्ण और विकराल दाढ़ोंसे प्रलयकाल जैसे चिंघाड़ते हुए सिंह और व्याघ्र हुंकारने लगे, किन्तु वह निर्भय रहे । अपनी कराल और चपल निहाओंसे आकाश मण्डलको विषमय बनाने वाले पन्नग समूह फुंकारने लगे, किन्तु वे निश्चल थे । पश्चात् वह नवीन, अनन्त यौवनसे मदोन्मत्त, अनेक तरुणी कामनियोंके मधुर लीला विलास और कमनीय कटाक्षोंसे कामदेवके साम्राज्यकी रचना करने लगा, किन्तु वह अटल था । इसप्रकार वह उनके ऊपर अनेक उपसर्गोंका पहाड़ ढाने लगा, किन्तु भगवानके वज्र हृदयकी टकरसे वह समस्त उपसर्ग चूर २ होगए ।

रुद्र ज्यों २ नवीन आपत्तिएं उनके सम्मुख खड़ी करने लगा, त्यों २ उनके हृदयमें दृढ़ता और आत्म तन्मयता बढ़ती गई । अन्तमें दृढ़ आत्मशक्तिकी विजय हुई । दुरितात्मा रुद्र उनकी इस आत्ममग्नता पर अत्यन्त आश्चर्यान्वित हुआ । उसे अपने कुत्सित कृत्योंपर घृणा हुई । वह उनका अनेकप्रकारसे गुणगायन करता हुआ अपने पापोंका प्रायश्चित्त करने लगा ।

भगवानने भिन्न २ वनोंमें भ्रमण करते हुए

१२ वर्ष पर्यन्त घोर तपश्चरण किए । वह आत्मध्यानमें स्थिर रहते हुए कर्मोंकी सत्ताको नष्ट करने लगे ।

सर्वज्ञता--प्राप्ति ।

भगवान महावीरने ध्यानमें निश्चल रहते हुए अपनी आयुके ४२ वर्ष समाप्त कर दिए थे । आज उन्होंने जूंभिला ग्रामके निकटस्थ शाल वृक्षके नीचे विशाल शिलापर स्थित होकर कर्मोंको सम्पूर्णतः नष्ट करनेका संकल्प किया । उन्होंने परम शुद्धध्यान धारण किया । ध्यानकी तीव्र अग्निमें उन्होंने प्रबल पराक्रमी मोहकर्मको नष्ट कर डाला और मोहके नष्ट होते ही वैशाख शुद्धा दशमीके दिवस त्रैलोक्यके पदार्थोंको स्पष्ट प्रदर्शित करनेवाले सर्वज्ञ पदको प्राप्त किया । वह केवलज्ञान द्वारा तीन लोककी वस्तुओंको स्पष्ट देखने और जानने लगे । सर्वज्ञताके साथ साथ उन्होंने अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य और अनन्त सुखको प्राप्त किया ।

आत्म विजयी भगवान महावीरके अलौकिक केवलज्ञान साम्राज्यका महा महोत्सव मनानेके लिए स्वर्गाधिपति इन्द्रने समस्त देवताओं संयुक्त मानव लोकको प्रस्थान किया । भगवानके केवलज्ञानकी महान महिमा प्रदर्शित करनेके लिए उन्होंने अपने कोषाधिपति कुबेरको त्रैलोक्य मनोहारी समवशरण रचना करनेकी आज्ञा दी । कुबेरने सुन्दर बारह सभाओंसे सुशोभित मानवोंके नेत्रोंमें आश्चर्य हर्ष और आनन्दकी सृष्टि करने वाले समवशरणकी रचना की; उसके मध्यमें उज्वल रत्न-सिंहासन निर्मित किया ।

रत्न-सिंहासनपर विराजमान भगवानकी चतुर्मुख दिव्यमूर्ति मानवोंके नेत्रोंको हर्षित करने लगी ।

इन्द्रने उपस्थित होकर अपूर्व भक्ति और विनय संयुक्त भगवानकी १००८ नामों द्वारा स्तुति की। पश्चात् वह भगवानके दिव्य उपदेश श्रवण करनेकी इच्छासे यथेच्छ स्थान पर बैठ मग्न। सुर, असुर, नरसमूह भगवानके उपदेश-मृत पानके लिए उत्कंठित हो उठा, किन्तु अधिक समय व्यतीत होचुकनेपर भी उनकी दिव्यध्वनि प्रकट नहीं हुई ।

इस घटनासे देवराजको अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उन्होंने शीघ्र ही दिव्यध्वनि प्रकट न होनेके कारण पर विचार किया। उन्हें उसी समय ज्ञात होगया कि भगवानकी दिव्यध्वनिका विवेचन करने वाले किसी गणधरके उपस्थित न होनेसे ही भगवानकी वाणी अभीतक प्रकट नहीं हुई। अस्तु, वह गणधर होनेवाले चार वेद और अष्टादश पुराणादिक समस्त शास्त्रोंके ज्ञाताके गौतमको लानेके लिए चल दिए।

देवराज एक वृद्ध ब्राह्मणका वेश धारण कर विप्रराज गौतमकी सभामें उपस्थित हुए और उन्होंने निम्न प्रकार निवेदन किया “द्विजराज! मैं भगवान महावीरका शिष्य हूँ। उन्होंने मुझे एक श्लोक बतलाया था, किन्तु उसके पश्चात् वह शीघ्रतः ध्यानस्थ होगए एवं उस श्लोकका अर्थ उन्होंने मुझे नहीं बतलाया। आप विद्वान हैं, इससे मैं आपके समीप आया हूँ, किन्तु संभवतः आप उसका अर्थ नहीं बतला सकोगे।”

गौतमने गंभीरता पूर्वक उत्तर दिया—औह !

तु उस महावीर स्वामीका शिष्य है जो अपनेको सर्वज्ञ नामसे प्रगट करता है। उसके श्लोकका अर्थ बतलानेमें क्या विशेषता है। अच्छा कह ? वह कौनसा श्लोक है ?

वृद्ध ब्राह्मणने कहा—महाराज ? तब क्या वास्तवमें आप मेरे श्लोकका अर्थ बतला देंगे और यदि आप न बतला सकेंगे तो आपको अपनी शिष्य मंडली सहित मेरे गुरुका शिष्य होना पड़ेगा।

द्विजराज गौतमने इसे स्वीकार करते हुए कहा— अपना श्लोक मेरे सम्मुख शीघ्रतः प्रकट करो ? वृद्ध ब्राह्मणने “त्रैकाल्यं द्रव्य षट्कं” आदि पूर्ण श्लोकको गौतमके सम्मुख कहकर उनसे उनका अर्थ बतलानेके लिए कहा।

श्लोक श्रवण कर गौतम विचार सागरमें पड़ गए। बहुत विचार करनेपर भी वह उस श्लोकके अर्थका कुछ भी निर्णय नहीं कर सके। तब वह विचारने लगे कि यदि मैं श्लोकका विपरीत अर्थ बनाकर कह दूंगा तो महावीर-स्वामीके सम्मुख मेरी पोल खुल जायगी। यदि इस ब्राह्मणके सम्मुख विवाद करता हूँ और कदाचित् इसके साथ विवादमें पराजित होगया तो मेरी बड़ी हंसी और अपमान होगा। अस्तु मेरा कर्तव्य है कि इसके गुरु महावीर स्वामीके सम्मुख जाऊँ, वह महान व्यक्ति हैं यदि उनके सम्मुख विवाद करता हुआ, पराजित भी हो जाऊँगा तो भी मेरा अपमान न होगा इसप्रकार विचार करते हुए उन्होंने कहा—“ब्राह्मण तेरे इस क्षुद्र श्लोकका अर्थ तेरे गुरुके सम्मुख ही

होगा, जिससे उन्हें भी मेरी विद्वता प्रकट हो जाए ” देवराज यह तो चाहते ही थे । वह विपराज गौतमको उनके ज्येष्ठ भ्राता वायुमूर्ति और अभिमूर्ति नामक प्रसिद्ध विद्वान और १०० शिष्योंको अपने साथ लेकर समवसरणकी ओर चक दिए ।

समवसरणके समीप जाते हुए गौतमने कुछ दूरसे ही द्वार पर स्थित हुए उच्च मानस्तम्भका अवलोकन किया । उसे देखते ही उनका समस्त मिथ्या अभिमान नष्ट होगया । पश्चात् उन्होंने संसारकी महान महिमाको अतिनेवाले अपूर्व अभावयुक्त समवसरणको देखा और समवसरणमें विश्रुत देव और मानवोंके समूहसे सेवित दिव्यकथावहित त्रेलोकेश्वर भगवान महावीरके दीप्तमान मुखमण्डलका अवलोकन किया । उनका हृदय भगवानकी भक्ति और विनयसे परिपूर्ण होगया । उनके हृदयके समस्त मिथ्या विचार नष्ट होगये । उन्होंने गद्गद कण्ठ होकर भगवानको तीन प्रदक्षिणा देते हुए साष्टांग नमस्कार किया । पश्चात् उन्होंने भगवानसे प्रार्थना करते हुए जीवादिक तत्त्वोंके स्वरूप जाननेकी इच्छा प्रकट की । भगवानने अपनी दिव्यशक्ति द्वारा जीवादिक तत्त्वों तथा मोक्षके स्वरूपका वर्णन किया । अकाट्य युक्तियों द्वारा विस्तारपूर्वक तत्त्वार्थका वर्णन श्रवण करते ही द्विजराज गौतमका हृदय सम्बन्धानसे परिपूर्ण होगया । उन्होंने अपने समस्त शिष्यों तथा भार्गवों समेत भगवानके सम्मुख जैनेश्वरी दीक्षा ली । उसी समय उन्हें अवधिज्ञान और मनःपर्यवसान होगया

और वे भगवानके सर्व प्रथम गणधर हुए । भगवानने महान् मिथ्यास्वी ब्राह्मणको जैनधर्मका परम उपासक बना दिया ।

उपदेशामृत ।

भगवान महावीरस्वामीने अपनी दिव्यशक्ति द्वारा मानवोंको धर्मका वास्तविक स्वरूप बतलाते हुए उन्हें सत्यार्थ मोक्षमार्गपर लगाया । उन्होंने अपने दिव्य उपदेशों द्वारा प्रगट किया था कि यह जीव अनन्त ज्ञान और अनन्तदर्शन स्वरूप है । इसमें त्रैलोक्यके पदार्थोंके ज्ञानमैकी शक्ति है । यह अविनाशी और अक्षय सुख साम्राज्यका स्वामी है । इसका स्वरूप संसारके समस्त पदार्थोंका जानना और देखना है, किंतु यह अनन्तकाकसे शरीर और इससे सम्बंधित सांसारिक अजीव (पुद्गल) द्रव्योंके संसर्गमें निवास करता हुआ इन पुद्गल पदार्थोंको ही अपना स्वरूप समझ रहा है । किंतु यह समस्त पदार्थ उसके स्वरूपसे सर्वथा विरुद्ध हैं । विरुद्ध पदार्थोंमें आश्रय करना कर यह अनन्तकाकसे मोह मग्न होरहा है । सांसारिक वैभव, वनिता, पुत्र तथा शरीरकी क्रियाओंको अज्ञानसे अपना मानता हुआ, उनके किये अनेक प्रकारके राग-द्वेषादि तथा कषायके भाव कर रहा है, तथा अनेक हिंसादिक पापोंका सदैवसे सेवन कर रहा है । जिससे ज्ञानावर्णादिक आठ कर्मोंका इसके निरन्तर आश्रय (आना) होता रहता है । और कषाय भावोंकी अत्यन्त तीव्रताके कारण उन जाते हुए कर्मोंका आश्रयसे बन्धन होजाता है । वह कर्म (बंध)से इसकी ज्ञान, दर्शन तथा आश्रय

शक्तिको नष्ट कर मिथ्यात्वके चक्रमें फंसाकर इसे शुभ, अशुभ गतियोंमें परिभ्रमण करा रहे हैं। यह उनके बन्धनमें इस प्रकार बद्ध हो रहा है कि इसे अपने शुद्ध स्वरूपका किंचित् भी ज्ञान नहीं हो पाता है।

किन्तु यही जीव जब अपने श्रद्धान ज्ञान और आचरणको ठीक करता है और यह पुद्गलादिक अन्य द्रव्योंसे अलग अपने शुद्धात्मा पर विश्वास करता है तथा व्रत नियम और दशकक्षण आदि कर्मोंको धारण करता है और १२ प्रकारके तपश्चरणोंको करता है तब इसके कर्मोंके आनेका संवरण (संवर) होता है। पश्चात् जब यह आत्मध्यानमें पूर्ण मग्न होजाता है तब इसके पूर्व कर्मोंकी निर्जरा अथवा उनका नाश होने लगता है और यह सर्व कर्मोंको नाशकर अनन्त सुखके स्थान मोक्षको प्राप्त करता है।

उन्होंने गृहस्थधर्म तथा मुनिधर्मका वर्णन करते हुए गृहस्थोंके लिये १२ व्रत और मुनियोंके लिए १२ प्रकारके चारित्रिका वर्णन किया था। जिसमें उन्होंने अहिंसाको सर्व श्रेष्ठ बतलाया था। उनका उपदेश श्रवण कर बड़े २ मिथ्यातियोंने सत्यधर्मको धारण किया था। हिसक व्यक्तियोंने हिंसावृत्ति छोड़ अहिंसादि व्रतोंको धारण किया था और सारे संसारमें अहिंसाधर्मकी तुंदुमि बजने लगी थी। पाल्ण्डी और बड़े २ दिग्गज बादी लोग उनकी स्याद्वादमई निर्दोष ध्याख्या-नशक्तिके सम्मुख परास्त होकर उनकी शरणमें आए थे। इसप्रकार भगवान महावीरस्वामीने

अनेक वर्षों पर्यंत सारे आर्यक्षेत्रमें भ्रमण कर मोक्षमार्गका उपदेश देते हुए सत्त्वपथ प्रदर्शित किया था।

राजगृहीके तत्कालीन राजा भ्रेणिक (विस्वसार) ने अनेक प्रश्न भगवान महावीरसे करके मनुष्योंकी शंकाओंको दूर कराया था। उस समय सारा आर्य-खण्ड जैनधर्मका उपासक बन गया था।

निर्वाण-प्राप्ति ।

अनेक देशोंमें विहार करते हुए भगवान महावीरने अपनी आयुके बहत्तर वर्ष समाप्त कर दिए थे। उनकी आयुका केवल २ मासही काळ शेष रह गये थे। उपदेश देते हुए वह विहार प्रांतके समीप पावापुर नामक स्थान पर पधारे। पावापुरके वनमें एक सुन्दर सरोवर था। उसके बीचमें एक मनोहर उच्च टापू था। उस स्थान पर आसीन होकर उन्होंने अपनी मन, बचन, कायकी समस्त प्रवृत्तियोंको रोककर समस्त कर्मोंको नष्टकर कार्तिक कृष्णा अमावस्याके सुन्दर प्रभातकालमें निर्वाण पदको प्राप्त किया। उनका आत्मा इस भौतिक शरीरको छोड़कर अनन्त सुखके स्थान लोकके अन्तिम भाग मोक्ष स्थानमें स्थित हो गया। वहां वह अनन्त काळ तक अविदश्वर अक्षय अविचक आत्मसौख्यका उपभोग करेंगे।

भगवानको मोक्ष प्राप्ति हुई जानकर इन्द्र तथा देवताओंने पुनः उपस्थित होकर उनका बड़े उत्साहसे निर्वाण महोत्सव मनाया। वे भगवान महावीर हमारे हृदयोंमें साहस, शक्ति और अविचक धर्मभक्ति जागृत करें। “वत्सक”

अकारणबंधु ।

(मित्र-संवाद)

लेखक:-धर्मरत्न पंडित दीपचंदजी वर्णी ।

पाठकोंको विदित होगा, कि सिधई टेकचंद्रके पड़ौसमें एक बयोवृद्ध सजनन मनीरामजी रहते हैं, वृद्ध होनेके कारण सभी लोग इन्हें दादा कहते हैं और वास्तवमें ये हैं भी दादा, क्योंकि अक्षरणको शरण देना, दुखियोंकी सहायता करना, दुराचारों और दुराचारियोंके मार्गका अवरोध करना, सद्गुण और सद्गुणियोंको उत्तेजन देना मात्र यही इनका एक कर्तव्य है । घरके खाते पीते होनेसे कोई भी आदमी इनका विरोधी नहीं है, लोगोपर इनका खाशा दवान है, दवान क्या ए नगरनिवासियोंके सच्चे विश्वासपात्र हो रहे हैं, इसीसे नगरके सभी छोटे बड़े इनके पास आकर अपनी गुप्तसे गुप्त वार्ताएँ कह जाते हैं, और ये भी उसकी बातको गोप रखकर उत्तम सम्मति दे दिया करते हैं, उसके दुख मोचनका उपाय बता देते हैं । हां एक बात अवश्य है कि दुराचारियोंका या तो इनके यहां प्रवेश नहीं होता, या उनके निकट जानेसे वे फिर दुराचारी नहीं रहते ।

आज दीवालीका पवित्र दिन है, इस दिन परम पूज्य श्री अंतिम तीर्थंकर श्री १००८ वर्द्धमानस्वामीने शेष अघाति कर्मोंको नाश करके अनुपम अविनाशी परमानन्दपद (मोक्ष) प्राप्त

किया था, और उनके प्रधानशिष्य श्री १००८ गौतम गणवरने जीवके अनादि शत्रु मोहादि घाति या कर्मोंको नाश करके श्रेयज्ञान प्राप्त किया था, और जो बहुत शीघ्र अपने गुरुवर्यके निकट शिवपुरीमें आकर उन्हींके समान स्वाधीन व अनुपम अविनाशी परमानन्दके पदके भोक्ता होगए । यही कारण है कि संसारमें यह पर्व सर्वमान्य होगया । केवल जैन जैन (हिन्दू-मात्र) ही नहीं सुभलमान भी इस पवित्र पर्वको किसी रूामें मानते हैं, इसका कारण भी यही है कि महावीरप्रभुने नीव मात्रके हितका उपाय संसारको बताया था, तब क्यों न संसार उनका गुणगान करे ?

इसी पवित्र पर्वोत्सवको मनानेके लिये सरकारी न्यायालय व स्कूल कालेज आदि भी बंद होनेसे कर्मचारी व विद्यार्थीगण अपने २ स्थानोंको आये हुए हैं ।

उन्हीं आगन्तुकोंमें पाठकोंके चिर परिचित सिधई टेकचन्द्रनीके ज्येष्ठ पुत्र (जिनकी अब-स्था इस समय लगभग १२ वर्षके है और जो एम० ए० के साथ २ एल० एल० बी० का अभ्यास इलाहाबाद यूनिवर्सिटीमें कर रहे हैं) भी आये हुए हैं, परन्तु आप शरीरसे

अस्वस्थ हैं। न उबर है और न कोई ऐसी बीमारी है, कि जिसका उपाय शीघ्र होसके; किन्तु आपका चेहरा फीका होगया है, मूख नहीं लगती, और यदि तोका दो तोका कुछ खाते भी हैं, तो दृष्टा दस्त होजाता है, सुस्ती बनी रहती है, किसी काममें जी नहीं लगता, चिन्त चिन्ताओंसे व्याकुल रहता है। इत्यादि अवस्था देखकर टेकचन्द्रके होश उड़ गये, उन्होंने घबराकर १ पत्र अपने अनन्य मित्र जयचन्द्रजीको लिख दिया, वे उसे पातेही वहां आगए। और भी लोग (सम्बन्धी) यह खबर पाकर आने लगे, सभी आकर अपनी-२ डेढ़ चांबळकी खिचड़ी पकाने लगे। कोई बोका देहरादून छेजाओ, कोई राहुकी राह देने लगा, कोई किसी हकीम वैद्य व डोक्टर आदिकी राह देने लगा। वैद्य डोक्टर आये भी परन्तु वे रोगकी जांच न कर सके। टेकचन्द्रजी बड़े चक्करमें पड़ गये, हजार मुंह हजार बातें, किस १ की सुने और क्या करें ?

उनकी खबराहट देखकर जयचन्द्रने उन्हें धैर्य दिया और कहा कि चिन्ताकी बात नहीं है, रोग साध्य है, अभी बहुत नहीं बढ़ा है, मैं इसका निदान शीघ्रही करूंगा, ऐसा कहकर वे मनीराम दादाकी बैठकमें गये और अवसर पाकर सब बात कहदी।

मनीराम समझ गये, और बोले चिन्ता जैसी बात नहीं है। सबैरेका मूका छामको भी घर जा जावे तो मूका नहीं समझना। मैं बूढ़ा होगया हूं, चला नहीं जाता, इसीसे वहां नहीं पहुंचा, यहीं घरके चैत्यालयमें दर्शन करके

स्वाभ्यास कर लेता हूं,। टेकचन्द्रने बीमारीकी बात कही थी तब मैंने उसे अपने पास कानेको कहा था। परन्तु सुनते हैं कि यह बड़का मेरे पास जानेमें छमस्ता है, इसीसे मुझे कुछ शक होगया है।

जय०—दादा! मैं आया और उसकी खबर पूछी, सो वह बोका तो सही परन्तु साभूने नजर नहीं मिलाता, और न बातका स्पष्ट उत्तरही देता है।

मनी० बेटा जब टिकका (टेकचंद) ने उसकी सगाई नगीदवाले नानकचन्द्रकी मन्हीं नितियासे की थी, तभी मैंने उसे रोका था कि थोड़ी उमरमें सगाई भी कर देना बाळक बाळिकाओंके लिये बहुत जोखमभरा हुआ करता है, तुम ऐसा न करो। सो टिकका तो राजी होगया परन्तु उसकी कुछ न चली, और रानीबहू (टेक० की मां) के आग्रहसे वह कार्य होगया। हां यह बात अवश्य है कि टेकचन्द्रने प्रतिज्ञा की थी कि मैं इसका लग्न १० वर्षसे पहिले नहीं करूंगा, और इसका उसने पालन भी किया है। गत वर्ष ही उसका लग्न हुआ है, जिसका कि अभी दुरागमन भी नहीं हुआ।

जय०—दादा! जब मितुन बीस वर्षका होगया, तब लग्न हुआ, और फिर भी दुरागमन नहीं हुआ, तब एक अथान होनहार बाळककी ऐसी दृष्टा क्यों होगई ?

मनी०—बेटा! तुम उसे जकेलेमें मेरे पास भेजना, और यदि तुमको सुनना हो, तो तुम, बैठकके पीछेबाली कोठरीमें पहिलेसे जा बैठना,

परंतु स्मरण रहे कि जो कुछ सुनो उसे सिवाय टेकबंदके और किसीसे न कहना, और टेक-चंद्रसे भी किसीसे भी न कहनेकी प्रतिज्ञा करा लेना। क्योंकि जो कोई हमारे ऊपर विश्वास रखकर अपना हृदय हमें सौंप दे, तो हमारा भी वह कर्तव्य है कि उसकी शरीरको हम श्वर उधर न होने दें। अच्छा बेटा अब जाओ मैं सामाजिक करूंगा ११॥ बज गये हैं ।

जेचन्द्रने लगभग २ बजे मिट्टनको किसीप्रकार मनीरामके यहाँ भेज दिया और आप भी संकेतानुसार गुप्त जा बैठे ।

मिट्टन०—दादाजी प्रणाम !

मनी०—बेटा मिट्टन ! खुश रहो, आओ बेटा मेरे पास आजाओ ।

मिट्टन०—(कुछ दूर बैठकर) यहीं चरणोंके पास ठीक हूँ ।

मनी०—पास आओ बेटा हृदयसे लगा लूँ, बहुत दिनमें देखा है ।

मिट्टन० जब पास आगया तब मनीरामने उसके मस्तकपर हाथ रखकर पुनः आशीर्वाद दिया, मुख चूमा, और कुशकवृत्त पूछनेके बाद बोले— कि बेटा शरीर बहुत दुर्बल होगया है चेहरा फीका २ दिखता है, सो क्या ज्वर आता रहा ? मि०—(नीचा मस्तक करके) नहीं तो ।

म०—परीक्षाकी चिंता ऐसी ही होजाती है, बेटा एम० ए० और एल० एल० बी० दो दो परीक्षाओंकी महिन्त करना खेद नहीं है । मेरे काक ! तुमसे एक साथ दो न होसकें तो एक ही एक करो, कोई मस्की बोदे ही है । मगवानकी

दयासे अपने पास सब कुछ है, कोई नौकरीके वक्रीकात तो करना नहीं है । विद्या सीखना है, और उसके सहारे अपनी, अपनी समाज और अपने देशकी रक्षा करना अभीष्ट है सो शरीर अच्छा रहेगा, तोही सब कुछ कर सकेंगे ।

मि०—सो तो आपकी दयासे कर सक्ता हूँ, और बहुतसे ढड़के करते ही हैं उसकी तो कोई चिंता नहीं है ।

मनी०—तब फिर तुम्हें फिर ही क्या है ? बेटा वेफिकरीसे खूब खाओ पहिनो, दण्ड पेको और पदो और यदि इस समय जी न लगे तो कुछ दिनकी छुट्टी लेको, और चलकर गांव पर रहो, वहाँ पवित्र जीवन कुछ दिन बिताना मैं भी जठाईमें वही रहूंगा ।

मि०की आंखोंमें पानी आगया, गला भर आया, वह आगे बातें न बना सका, मनी० ने उसकी दृष्टा देखकर मस्तक पर हाथ रखकर पुचकार कर पुछा, बेटा रोते क्यों हो ? (मनी-रामका भी गला भर आया) बस दोनों क्षणिक स्तब्धसे रह गये । इस प्रेमाकर्षणको देखकर मि० अपने को न छिपा सका और फूट २ कर रोने लगा । मनीने भी चार आंसू बहादिये पश्चात् अपनेको सम्हाल कर फिर बोले—बेटा बबराओ नहीं, जो बात हो मुझसे बेकिहाज होकर कह दो, शंकाका कोई कारण नहीं है । मुझसे जो बनेगा तुम्हारी मलाईके लिये ठठा न रखूंगा ।

मि०—दादा ! मैं पतित होगया हूँ तुमको मुँह दिखाने योग्य नहीं रहा ।

म०—बेटा! कहोर अब तुम पतित नहीं रहे, किन्तु अब पावन होने लगे हो, भूल सभीसे प्रायः होजाती है। परन्तु जो अपनी भूल देख लेता है, मान लेता है और छोड़ना चाहता है, वह सुधर भी जाता है, सो अब तुम सुधर गये समझो, अच्छा संक्षिप्तमें अपना वृत्तान्त कह बताओ।

मि०—मैं जब कालेजमें दाखिल हुआ, तबतक मुझे कोई विकार न था, मेरा आत्मा पवित्र था, आपकी व पिताजीकी संगति रहती थी, और कभीर जय० काकाके अमृतमई उपदेश मिलते रहते थे। परन्तु कालेजमें पहुंचने पर संगतिका बदलाव हुआ, उपदेशका अभाव हुआ। वहां एक दिन घूमने जा रहा था कि अचानक मेरी दृष्टि पुस्तक विक्रेताकी दुकानपर रखी हुई "ढोका मारू" पुस्तकपर पड़ी। मैंने उसे खरीदली, उसे पढ़ते ही मेरे भवोंमें फेर पड़ गया और चिंतासी रहने लगी। मेरी अवस्था ठीक ढोका मारू जैसी होगई, मित्रोंने मेरे विचारोंका समर्थन किया। मैं अपने विवाहके दिन गिनने लगा। आपकी नतबहूकी देखनेकी आकांक्षा बढ़ गई। परन्तु जब वह दिन दूर पाया तो उन कुमित्रोंकी संगतिने मुझे और ही मार्ग बसा दिया। बस मेरा पैसा खाने पहिरने, व परोपकारसे बचकर कुतबाली बाजारकी मंजिलोंपर जाने लगा, कारणवश वहां न पहुंचा तो हाथसेही आत्मघात करलिया (!) दुर्भाग्यसे एक लखनवी लड़का जो देखनेमें सुन्दर व पुष्ट शरीर था मेरी कोठरीके पास फर्स्ट इयरमें दाखिल हुआ, वह प्रेम दिखाने लगा, और

अंतमें उसने मुझे अपना प्रेमी बना लिखा, बस मैं वे सुघ होगया। मेरा जीवन सर्वस्व चला जाने लगा, मुझे हिताहितका कोई भान न रहा। अन्तमें यह व्यवस्था हुई कि अब स्पष्टमें बुरे विचार बढ जाते हैं, और सर्वस्व खो बैठता हूं। गत वर्ष लग्नके समय मुझे बड़ी चिंता होती थी, सब खुश होने और मैं एकान्तमें भाग्यको रोता कि क्यों किसी निरपराधिनीके जीवनको खो रहा हूं। परन्तु भय और लज्जासे कुछ न कह सका, आप मेरे पूज्य हैं। बस यही मेरी जीवन कहानी है, यही रोग है।

मनी०—(मस्तक पर हाथ धरके) बेटा! शांत होओ घैयं रखो तुम्हारा कल्याण होगा, अभी रोग असाध्य नहीं हुआ है। मेरे साथ चलो मैं शीघ्रही तुम्हें आराम कर दूंगा। अच्छा अब तुम जाओ, कल २ बजे आना, तब बात करेंगे, जाओ ध्यातू करो, अब मैं भी थोड़ासा दुष पी करके सामायिक करूंगा, जाओ खुश रहो, चिंतन न करो, हां बेटा जाओ।

जय०—दादा! आपका अनुभव ठीक निकला, वास्तवमें छोटी उमरमें लग्न कर देना, तो बालक बालिकाओंका तत्काल घात करदेना है ही परन्तु उनकी बाल्यकालमें सगाई कर देना भी कम हत्या नहीं है। आज मेरा भ्रम मिट गया। क्योंकि जबसे उन बालक बालिकाओंकी सगाई होजाती है, तभीसे अपने आपको पति—पत्नी मानने लग जाते हैं, प्रत्यक्ष व परोक्ष एक दूसरेको देखनेकी इच्छा बढ़ जाती है। परस्पर समाचार पानेके इच्छुक रहने लगते हैं और कहीं जीवनभरा होगया तो धरमा जाते हैं। एक-

तमें मिकने और बातचीत करनेकी इच्छा बढ़ जाती है । वे पति-पत्नियोंके संमिलनकी बातें बढ़ी रुचिसे सुनने लगते हैं । गाली-गलोज आदि अपशब्दोंका अर्थ लगते और उनकी कल्पना मूर्तिबां भी बनाने लगते हैं । कभी १ अबोध क्षिशुबयमें बालक-बालिकाएं अपने पति पत्नीकी कल्पना अन्य साथी बालक-बालिकाओंमें कर लेते हैं और फिर ऐसे ही खेलखेलने लगते हैं । यदि कुछ बढ़े हुए लज्जा व शय हो गया तो छिपकर ऐसे ही कार्य करने लगते हैं । पढ़े लिखे हुए तब गुप्त पत्र लिखना, भेजना उत्तर मंगाना, अवसर मागना आदि कार्य होने लगते हैं और उपन्यास व किस्से कहानीकी किताबें पढ़ना, लोगोंका हास्य, मजाक, गाली बकना, खोटे गीतों व प्रेम कथाओंका सुनना, रग्रादि अवसरोंपर जाना, वहांके लीलाभय भ्रंगार विनोद देखना, उनमें भाग लेना आदि बातें तो अग्नि-कुण्डमें आहुति डालती हैं । वस इसीसे उनके बालक व बालिकाओंमें असमयमेंही जवानीके चिन्ह फूट पड़ते हैं—वे विचारे भोले यात्री यात्राके आरम्भमेंही लुट जाते हैं और काल आये बिनाही कालके गालोंमें चले जाते हैं । दादा आम मेरे ये विचार बहुत दृढ़ होगए ।

मनी०—अच्छा जाओ फिर आना, आशीर्वाद चिरायु होहु ।

दूसरे दिन २ बजे मिट्टनकाक फिर दादाके बहां आया और दादाने उसे निःसंकोच होकर एक समयवयस्क मित्रके समान सब बातें समझाई और भविष्यमें पुनः ऐसी भूल न करेगा, ऐसी

पतिज्ञा भी दिखाई । पश्चात् वे उसे अपने साथ ग्रामपर लेगये, वहांके शुद्ध वातावरमें उसे कितने ही दिनोंमें मिट्टनकाकके समस्त रोग बिना ही दवाके कूच कर गये । अब वह निरोग होकर पुनः कालेजमें पढ़नेको चला गया ।

अब मिट्टनकाक वास्तविक मिट्टन होगया है, वे ही कुमित्र जिन्होंने एक दिन उसे मार्ग-च्युत कर दिया था, आज उसीके द्वारा सुधार रहे हैं, वह अब एक आदर्श पुरुष बन गया है । एक दिन अचानक उसे अपनी पूर्व स्थितिकी स्मृति आगई उससे वह पश्चात्तापकी आहें भरने लगा, इतनेमें और कई मित्र आगए उन्होंने उससे सब बातें पूछी और अब मनीराम दादाके द्वारा उसके सुधारकी बात सुनी तो सबके मुँहसे सहसा निकल पड़ा—“मनीराम दादा तुम दुस्त्रियोंके अकारण बन्धु” हो, तुमने एक मिट्टनहीको नहीं किन्तु अनेक होनहार भारतीय बालकोंके जीवनमें अमूल्य परिवर्तन कर दिया है । सबने मिलकर एक तोसायटी कायमकी और उसका उद्देश रक्खा “नवयुवक सुधार ।”

नोट—सज्जनो ! गवर्नमेन्टने शारदाविक पास करदिया है और उससे १४ व १८ वर्ष तकके बालक बालिकाका रग्न होना अनेक अंशोंमें बंद भी होजायगा, जिसके लिये १४ वर्षसे कमकी कोई विषया नवीन न बन सकेगी । यह तो अच्छा हुआ, परन्तु वरकन्याकी सगाई होना तो कोई बन्द नहीं किया गया है । और सफ़ीरने कोई गाने व परस्पर कुशब्द बोलने, कुहास्य करने, नाटक देखने, उपन्यास

यदने, मेळोटेळोमें जाकर परस्पर स्त्री पुरुषोंको चक्राधुमी करनेकी मनाईके लिये तो कोई कायदा नहीं बनाया है ? न बनाया ही जासक्ता है । इन बातोंके लिये तो समाज तथा माता पितादि गुरुजन ही चाहें तो अपने वंश परंपरा सुधारने व संतानके हितके लिये अपने २ कायदे व नियम आप ही बनाकर उनके आश्रित भावी संतानको जीवनदान देसक्ते हैं । वे चाहें तो उनकी सगाई भी १४-१८ तो क्या १८-२५ वर्षकी उमरमें करके तत्काल ही व्याह कर सकते हैं । वे स्वयं सदाचारी बनकर अपनी सन्तानको सदाचारी बना सकते हैं । वे अपने उपदेशों व आचरणोंसे बाळकोंके संस्कार वाक्य-कालसे ही ऐसे बना सकते हैं कि जिससे उनपर दूसरा रंग ही न चढ़े और वे भीष्म पितामह या भीम जैसे ब्रह्मचारी बन सकें । युधिष्ठिर व राम जैसे सत्यवादी न्यायी बने, अर्जुन जैसे धनुर्धर योद्धा बने, स्वामी समंतभद्र जैसे वादी विद्वान बने, घन्यकुमार जैसे पुण्य-शाली श्रीमान बने, अभयकुमार जैसे न्यायी दयालु बने, कन्याएं भी पुनः सीता और द्रौपदीका समय उपस्थित कर दें ।

आज आप अपनी सन्तानपर अनाज्ञाकारी, कायर, निर्बल, शौकीन, भ्रष्टाचारी, धर्मभ्रष्ट, आदि अनेकों दोषारोपण करते हो । परन्तु क्या कभी भी आपने अपने भी अकर्तव्योंपर ध्यान दिया है कि तुमने उनको पैदा करके क्या पितृ व मातृ धर्मपाठन किया है ? क्या अच्छा खिला देने, अच्छे वस्त्रामुषण पहिरा देने, बालबचपमें

सगाई विवाह कर देने और अनमाया स्वेच्छा-चारी बना देने मात्रमें ही तुम्हारा धर्म है ?

तुम कितने संयमी हो ? क्या तुम बाळकोंके निकट सोते हुए या खेलते हुए उनके सन्मुख स्व स्त्री संगमसे बचे हुए हो ? क्या तुम उनके सन्मुख कभी किसी स्त्री पुरुषसे अनुचित हंसी मजाक नहीं करते ? क्या तुम स्वयं अपनी पत्नी व बाळकों सहित वा अकेले मित्रों सहित नाटक प्रहसन देखने नहीं जाते ? क्या तुम कभी उनके साम्हने काम कथाएं नहीं करते, न अपशब्द बोलते हो ? क्या आप कभी उनको ब्रह्मचर्यके गुणों और आदर्श चरितोंकी कथाएं भी सुनाते हो ? क्या तुम अपने शीलवान होनेका प्रमाण देसक्ते हो ? क्या तुम वाक्यविवाहके सचे विरोधी हो, और स्वयं भी प्रतिज्ञाबद्ध हो कि ३५ या ४० वर्षकी बचपे बाद यदि मेरी पत्नीका बियोग निःसंतान होनेपर भी होनाबना तो मैं अपना लग्न न करूंगा ? यदि हो तो ऐसे अनर्धकारी विवाहोंमें कन्याधिक्रयके विवाहोंमें क्यों शामिल होते हो ? और अपने छोटे छोटे होनहार कुमार ब्रह्मचारी विद्यार्थी बाळक बालिकाओंको विवाहोंमें क्यों लिवा जाते हो ? सज्जनो ! जरा सोचो और सम्हको ! तुम्हारे ही पापोंका फल संतान भोग रही है, बहुत पुत्र पुत्रियोंके माता पिता बननेकी अपेक्षा सुयोग्य बड़े ही संतान पैदा करके उनकी रक्षा करो, जिससे पुनः धर्म देख और समाजका उत्थान हो तथा भारतसे आरत हट कर वह सुखी बने ।



दिगम्बर जैन

सचित्र विशेषांक ।

वीर सं० २४६६.



श्री० आयुर्वेदाचार्य आयुर्वेदभूषण-
पं० ससंधरजी जैन काव्यतीर्थ, धन्वंतरी आयुर्वेदिक फार्मसी-छपारा ।

(वैद्यकशास्त्रके अद्वितीय नवीन विद्वान्) ।

“ जैनविजय ” प्रेस-सूरत ।

जैन धर्म और चारित्र ।

(लेखक—श्रीमान् ब्रह्मचारी श्रीतलमसादजी ।)

वास्तवमें हरएक मानवकी उन्नति व अवनति चारित्रसे होती है । चारित्र हरएकको करना ही पड़ता है चाहे वह कुचारित्र हो चाहे वह सुचारित्र हो । मन व मन कायका वर्तन ही चारित्र है । जो मिथ्या श्रद्धानी, बहिरात्मा व अज्ञानी है उसका सर्वकालीन सर्व चारित्र कुचारित्र है चाहे वह मुनिव्रत पाले, श्रावकव्रत पाले, बहुत तप करे व कषायोंको जीते । परन्तु सम्पूकृष्टछो, अंतरात्मा व ज्ञानीका सर्वकालीन चारित्र सुचारित्र है चाहे वह भोजन पान करे, विषयभोग करे व तप साधन करे या गद्दी व मुनिवर्म पाले ।

श्री अमृतचंद्र आचार्यने समयसार कलशमें कहा है:—

ज्ञानिनो ज्ञाननिर्वृताः सर्वे भावा भवन्ति हि ।
सर्वेष्वज्ञाननिर्वृताः भवन्त्यज्ञानिनस्तु ते ॥ २२-३ ॥

भावार्थ—ज्ञानीके सर्व भाव ज्ञानसे बने हुए होते हैं जब कि अज्ञानीके सर्व भाव अज्ञानसे बने हुए होते हैं । सम्पूज्यानी स्वाधीनताका रूपासक है जर कि मिथ्याज्ञानी पराधीनताका । सम्पूज्यानी बधेष्ट मार्गके पूर्व या सामने आरहा है तब मिथ्याज्ञानी बधेष्ट मार्गसे विरुद्ध पश्चि-सको जा रहा है । सम्पूज्यानी वस्तुस्वरूपको यथार्थ ज्ञानता है; मिथ्याज्ञानी अयथार्थ ज्ञानता है । रज्जुमें सर्पका ज्ञान करनेवाला मिथ्या ज्ञानी है । रज्जुमें

रज्जुका ज्ञान रखनेवाला सम्पूज्यानी है ।

यह संसारी जीव अशुद्ध है; क्योंकि शरीर सहित है सिद्ध परमात्मा शुद्ध है; क्योंकि शरीर रहित है । वास्तवमें हरएक आत्माका स्वरूप एक समान है कोई अंतर नहीं है । हरएक आत्मा अमूर्तीक है व गुण पर्यायवान है अर्थात् ज्ञान दर्शन, सुख वीर्य, सम्यक्त व चारित्र गुणोंका धारी है तथा एकरूप कूटस्थ न रहकर परिणमन करनेवाला अर्थात् कार्य करनेवाला है । इसीसे यह प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है कि आत्माके ज्ञानरूप भावोंमें बदला हुआ करता है । यदि बदलनेकी शक्ति न होती तो ऐसा नहीं होसका था ।

हरएक आत्मामें ज्ञान, शान्ति, आनंद ये तीन गुण ऐसे हैं जिनको हमें समझ लेना चाहिये—

(१) ज्ञान उसे कहते हैं जो सर्व जाननेयोग्य पदार्थोंको जान सके । ज्ञानसे बाहर कोई बात अज्ञानरूप नहीं रह सकती है । शुद्ध आत्मा इसीसे सर्व पदार्थोंको एक काल जानते रहते हैं । संसारी जीव कम जानते हैं; क्योंकि ज्ञानाधारण नाम कर्मका मैक संसारी जीवोंमें लग रहा है । कथापि शक्ति सर्वज्ञानकी हरएक संसारी आत्मामें भी है । जितना जितना अज्ञानका परदा दृष्टता जाता है उतना उतना ज्ञानका स्वरूप झलकता

जाता है। यह तो हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि विद्यार्थियोंका ज्ञान बढ़ता है। यह बढ़ना कैसे हुआ? क्या शिक्षकगण अपना ज्ञान काटकर विद्यार्थियोंको देते हैं? ऐसा होता तो शिक्षकोंका ज्ञान घटता जाता। इससे मालूम होता है कि न तो शिक्षक अपना ज्ञान देते हैं न विद्यार्थी शिक्षकोंसे ज्ञान लेते हैं। होता यही है कि शिक्षकोंके समझानेसे व पुस्तकोंके पढ़नेसे आत्मबल जब पुरुषार्थ करता है तब अज्ञानका परदा हटता है और ज्ञान स्वयं विकसित हो जाता है। इससे सिद्ध है कि हरएक आत्मामें पूर्ण ज्ञान है। इसी तरह हरएक संसारी या सिद्ध आत्माका स्वभाव शांतिमय है। क्रोध, मान, माया, लोभरूप होना स्वभाव नहीं है। ये अशुद्ध भाव संसारी जीवोंमें होते हैं; क्योंकि उनके साथ चारित्र्य मोह नाम कर्मका संयोग है। पानीमें मिट्टी मिले रहनेसे जैसे पानी गंदका दिखता है वैसे क्रोधादिका मेल आत्माके भावोंमें मिले रहनेसे आत्मा क्रोधादिरूप दिखता है। इसलिये आत्माका स्वभाव क्रोधादि नहीं हो सक्ता, क्योंकि इनसे ज्ञानमें विकार होता है—वे ज्ञानको बिगाड़ते हैं। एक बड़ा ज्ञानी मानव भी क्रोधके वशीभूत हो उचित अनुचित बोलने व करने लगता है। लोभके वशीभूत हो नीतिको उल्लंघन कर लेनदेन कर लेता है। मानके आधीन हो निर्बलकोंको सताता है। मायाचार करके अपने सरक स्वभावको व सरक शुद्ध ज्ञानको मैला कर ढाकता है। इसके विरुद्ध शांतभाव ज्ञानको बढ़ाता है। सूक्ष्म तत्त्वविचार व गम्भीर पुस्तकोंसे ज्ञानका लाभ तब ही होता

है जब मन शांत होता है। इससे सिद्ध है कि हरएक संसारी या सिद्ध आत्माका स्वभाव शांतिरूप है।

तीसरे आनन्द भी हरएक आत्माका स्वभाव है। हम इस सच्चे आनन्दका स्वाद नहीं पारहे हैं, क्योंकि हमारे आनन्दके ऊपर अज्ञान व मोहका परदा पड़ रहा है। तौमी जब कभी हम किसी स्वार्थको न रखकर दूसरोंके हितार्थ अपना कुछ मोह व लोभ त्यागते हैं, दूसरोंको दान देते हैं, व उनका भला करते हैं तब हमको भीतरसे एक दर्प मालूम होता है यही सच्चे सुखका झरकाव है। यह सुख इंद्रियोंके विषयभोगसे होनेवाले कार्पनिक व क्षणिक व अतृप्तिकारी सुखसे विकृष्ट है। यह स्वाधीन है जब कि इंद्रिय सुख पराधीन है। जैसे अग्नि ईंधनोंसे कभी तृप्त नहीं होती है वैसे तृष्णाकी दाह इंद्रियसुख भोगसे कभी तृप्त नहीं होती है उल्टी बढ़ती जाती है। हम तरह तरह हरएक आत्मा स्वभावसे समान हैं। रागद्वेष, मोहमाव कर्मोंके द्वारा उत्पन्न होनेवाले विकार हैं। मेरे शुद्ध आत्मस्वभावसे भिन्न यह सब कर्मका मैल है—शरीर है व शरीरके साथी अन्य चेतन व अचेतन पदार्थ हैं, उनको आत्माका और रागादि व शरीरादिका भेद नहीं मालूम है। जो अपने आत्माके शुद्ध स्वभावको नहीं पहचानता है, जो इंद्रियोंकी चाहकी दाहमें जलता रहता है, जो इस जीवनको ही सब कुछ मानता है, जो स्त्री पुत्र घनादिमें लवलीन रहता है, जिसे आत्म-तत्त्वकी बात नहीं सुझाती है वही अज्ञानी बहिरात्मा मिथ्यादृष्टी है। परन्तु जो आत्माको

जनात्मसे भिन्न पहचानता है, जिसको आत्मिक सुखकी रुचि होती है, जो पराधीन जीवनसे स्वाधीन जीवनको श्रेष्ठ समझता है, जो आत्मिक सुखशांतिका प्रेमी है, वही अंतरात्मा सम्यग्दृष्टी ज्ञानी है। ज्ञानीका बक्ष्य आत्माकी और अज्ञानीका बक्ष्य शरीरकी ओर रहता है। ज्ञानी स्वोन्मुखी है अज्ञानी परोन्मुखी है। ज्ञानी भोजनपान कुटुम्ब पाकन एक आवश्यक कर्तव्य मान करता है तन्मय नहीं होता है, अज्ञानी उन्हींमें तन्मय होजाता है। अज्ञानी पुण्यके लोभसे धर्म साधन करता है ज्ञानी परिणामोंको शुद्धि व आत्मचित्तनके लिये धर्मका साधन करता है। ज्ञानी आत्मरसिक है। अज्ञानी विषयभोग रसिक है।

इसलिये हरएक जैनी कहकानेवालेको सच्चा जैनी बनना चाहिये। अर्थात् उसको श्री जिनेन्द्र कथित जीव अजीव तत्त्वको पहचानना चाहिये, उसे शुद्ध परमात्मा वीतराग भगवानको ही पूजना चाहिये जो सर्व दोषोंसे रहित हैं। उसे परिग्रह भारम्भरहित साधुको ही नमन करना चाहिये जो सुखशांतिके साधक हैं। उसे इस पवित्र जिन धर्मपर ही श्रद्धा लानी चाहिये जो आत्महितका बीज है व वस्तु स्वरूपको यथार्थ बतानेवाला है। एक जैनीको ज्ञानकी वृद्धिके लिये व आत्माका मनन करनेके लिये नीचे लिखे छः कर्तव्योंको यथासम्भव पाकना चाहिये।

(१) जहां सुमीता हो वहां नित्य श्री जिनेन्द्रका उनकी ध्यानमय मूर्तिके द्वारा पूजन व दर्शन करना चाहिये। यदि कहीं ऐसे स्थान पर हो व ऐसे कार्यसे आजीविका हो कि दर्शन

मिलना कठिन हो तो परोक्ष ही ध्यान करके नमस्कार कर लेना व स्तुति पढ़ लेना चाहिये।

(२) नित्य श्री जिनवःणीका पठन किसी भी समय कुछ देर कर लेना चाहिये।

(३) नित्य प्रातः व सन्ध्या कुछ देर एकान्तमें बैठकर अपने आत्माका मनन करना चाहिये। वैराग्यमई भावको माना चाहिये अर्थात् सामायिक करना चाहिये।

(४) नित्य प्रातःकाळ १४ घण्टेके लिये नियम संयमके अम्यासके हेतु धारना चाहिये।

नं० १ व ४ के कार्यके सम्पादनके लिये दि० जैन पुस्तकालय—मूरतसे सामायिकपाठ व नियमपोथी -)॥ व -)में मंगा लेना चाहिये।

(५) सत्संगति रखनेके लिये कुछ देर ज्ञानी धर्मात्माओंकी व शास्त्र सभाकी संगति करनी चाहिये।

(६) नित्य कुछ दान देकर फिर भोजन करना चाहिये। जो धन कमाया जावे इसमेंसे कमसेकम १०वां भाग निकाक कर दान व धर्ममें लगाना चाहिये।

हरएक जैनीको इन छः बातोंको करते हुए श्री समन्तमद्राचार्यने जो ८ मूलगुण बताए हैं उनपर चलना चाहिये। इन ८ मूलगुणोंसे हरएक मानवका आचरण उत्तम होजाता है वह जगतको सतानेवाला नहीं रहता है—(१) मांसकी ढली खाना नहीं, (२) मदिरा पीना नहीं, (३) मधु खाना नहीं, (४) जान बूझकर वृथा पशु पक्षी आदिको मारना नहीं-दयाभाव रखना, (५) असत्य बोलना नहीं-झूठको महा पाप समझना, (६) चोरी करना नहीं, (७) अपनी

विवाहित स्त्रीमें संतोष रखना, (८) आजन्म किसी जायदादका प्रमाण बांध लेना, उतनी पूरी होनेपर संतोष करना-नया आरम्भ नहीं करना ।

जो कोई मानव ऊपर लिखित चारित्र्य पाल सकेगा वही जैनी है चाहे जैनकुलमें पैदा हो या अन्यमें । आजकल जैन लोगोंने इन ८ मूल-गुणोंको बिल्कुल भुला दिया है । हां मांस, शराबसे बच रहे हैं व कुछ हिंसासे भी परन्तु भ्रूण, चोरी, कुशीलके त्यागका ध्यान नहीं है न तृष्णा ही परिमित है । इन बातोंके सिवाय और चारित्र्यको पीछे पालनेके लिये छोड़कर हर-एकको इनसे ही अपनी उच्चता मानना चाहिये ।

एक ज्ञानी सम्यग्दृष्टी कुटुम्बमें रहता हुआ इन ८ बातोंको व ६ नित्य कर्तव्योंको पालता हुआ आदर्श गृहस्थ बनकर चारित्र्यवान होसक्ता है । ऐसा ज्ञानी स्त्री पुत्रादिकी रक्षा करता है इसलिये नहीं कि ये स्त्री पुत्रादि हैं परन्तु इसलिये कि ये जीव हैं इनका हमारा सम्बंध हुआ है इससे इनका हित करना उचित है । यदि कोई मर जाता है ज्ञानीको शोक नहीं होता, यदि कोई जन्मता है तो ज्ञानीको हर्ष नहीं होता । ज्ञानी जन्ममें कमलवत् धरमें रहता है । भीतरसे आत्मरसका स्वाद लेता है ।

इंद्रियकी चाहकी पीड़ा न सह सकनेके कारण न्यायपूर्वक अल्पभोग भोगता है तथापि भोग भोगना जीवनका उद्देश्य नहीं समझता है । आत्मसुख भोगना व अपने जीवनसे अन्य जीवोंको परोपकार करना ही अपना ध्येय मानता है । ऐसा ज्ञानी गृहस्थ ऊपर लिखित स्थूल

चारित्र्य पालता हुआ हरमकारकी लौकिक उत्पत्ति कर सकता है, वह शास्त्रविद्या सीखकर देवदेवता कर सकता है । दुष्टोंका दमन कर सकता है । व्यापारार्थ व अन्य उचित कार्यवश देश पर्यटन यात्रा कर सकता है । उसको कहीं भी कोई कठिनता नहीं पड़ सकती है । उसके मात्र मांस व मदिराके लेनेका त्याग है । इसका हरमकारसे बचाव रखना चाहिये ।

एक जैन गृहस्थ आठ मूलगुण स्थूलपने पालता हुआ लोकमें यशस्वी, न्यायवान, सदाचारी, सत्यवादी, कार्यकुशल रह सकता है व सम्पत्त भावके प्रभावसे आत्मिक उन्नति भी करता रहता है । ज्ञानीके लिये यह जगत क्रीडामूमि है या एक नाटक गृह है । अज्ञानीके लिये महान दुःख व आकुलताका घर है ।

इस जैनधर्मको पशु तक धारण कर सके हैं मानवोंकी तो बात ही क्या है ? म्लेच्छदेशके लोग आर्यखंडमें आकर मुनिपद भी धार सके हैं । वर्णव्यवस्था मात्र लौकिक संगठन है । जेनी होनेपर चार माह्योंको अधिकार है कि वे उसकी योग्यताके अनुसार उसका वर्ण चार-मेंसे कोई स्थापित कर दें और फिर उसके साथ एक वर्णवाला समान बर्ताव करे । जहां वर्ण-व्यवस्था नहीं है वहां हरएकको अधिकार है कि वह जैसा उचित समझे वैसा परस्पर व्यवहार करे ।

इस जैनधर्मको जगतठग्यापी बनाना व हर-एकको पालने देना यही तीर्थंकरोंकी आज्ञा है । वही प्रभावना अंग है ।

एक बालविधवाकी आत्मकथा ।

(लेखक-श्री० प० क्षेमकर जैन, म्यायतीर्थ-बंडवा)

आकाशमण्डल मेवाच्छन्न था । अंधकारने अपनी विस्तृत चादरसे संसारको इसप्रकार ढक रखा था जैसे पापीके हृदयको दुर्वासनाएं । उसी समय एक नवोद्गा बालविधवा अपने घरसे निकलकर यमुनाकी गोदमें अपने दैव दुर्विपाकसे समुत्पन्न सामाजिक कुरीतियों और अत्याचारोंसे वृद्धिगत दुःख दावाग्निको सदाके लिये शांत करनेको इष्ट पथावलम्बन कर धीरे-धीरे जाने लगी । कुछ समयमें शांतिप्रदायिनी यमुनाके तटपर पहुंच इष्टदेवका स्मरण करके चिंतित भावसे खड़ी होकर कहने लगी, कि देवि ! यद्यपि हमारा धर्म हमको आत्मघात करनेके लिये मना करता है, लेकिन अब जीवनके दुःख अस्त होगये हैं, धैर्य धारण करनेकी शक्ति लुप्त होगई है, इसीलिये मुझे अपने अंक्रमे स्वीकार कर शांति दो । सम्प्रति मेरी जैसी अनेक दुखिनी अबका प्रचलित रूढ़ियों एवं पुरुषोंके अत्याचारोंको सहन करती हुई सुखके लिये आपमें ही शांति हुई है । जिसको कोई शरण नहीं उसको तुम्हीं शरण हो ।

यमुनाके तटपर एक ब्रह्मचर्याश्रम था । जिसमें भारतीय नवशिक्षुओंको शास्त्रानुसार ब्रह्मचर्य शिक्षाके साथ २ देव, जाति, धर्मके उत्थान करनेकी भी शिक्षा दी जाती थी । जब कि कार्तिक कृष्णा ३० का दिन समस्त भारती-

योंका परम प्रिय दीपमालिकाका पर्व आनिवाका था उसके आठ दिन पहिले ही पर्वकी उत्पत्ति आदिके विषयमें उपदेश होता रहता था ।

उपदेश श्रवण कर एक साहसी नवयुवक श्रोताने अपने मनमें प्रतिज्ञा करली कि मैं समस्त प्राणियोंकी रक्षा करता हुआ विधवाओंकी रक्षा तन, मन, धनसे करूंगा । इसी आशयसे वह यमुनाके किनारे शांतिस्थलमें जाकर बैठा और विचार रहा था कि सामाजिक खोटे धन्धनों एवं रूढ़ियोंके जन्मदाता तथा पाक बननेसे संतप्त अनेक विधवा यहां ही शरण लेती हैं । इतनेमें ही पानीमें बड़े जोरसे धमाका हुआ । आवाजके साथ ही वह भी उसी स्थलपर कूद पड़ा और कुछ कालोपरांत उस नाकाको बाहर निकाल कर थोड़ी दूर स्थित गाड़ीपर बिठाकर अपने घरकी ओर रवाना हुआ । गाड़ी जाकर एक भव्य महलके नीचे ठहर गई । जिसके चारों ओर मनोहर उपवन था ।

यह एक विशाल और दिग्भ्रम महल है उसके समीपके उपवनमें जुही, चंपा, चमेली, गुलाब, मोगरा आदि विविध प्रकारके फूल फूले थे । जिससेसे मंद समीर उनकी सुगंधको लेता हुआ महलके निवासियोंको आनन्द और सुगंध अर्पण करता था । महलके एक सुसज्जित कमरेमें जाकर सुन्दरीको सान्त्वना देते हुए युवकने

प्रश्न किया कि—बहिन ! किस कठोर दुःखसे आपको आत्मघात करनेकी आवश्यकता हुई ? सुन्दरीने अपनी कथा इस प्रकारसे प्रारम्भ की । मैं रामपुर निवासी कपूरचंदकी इकलौती पुत्री हूँ । मेरा नाम रामभरोसी है । मेरी माता ९ सालकी अवस्थामें मुझे छोड़कर चक बसी । मेरे पितापर मेरे काकनपाकनका भार आपड़ा । मेरे पिताकी परिस्थिति दीन थी और जो कुछ था वह भी मातारामकी तेरई (नुक्ते)में लग चुका था ।

मेरी अवस्था १४ वर्षकी होनेपर पिताको मेरी शादीकी चिन्ता लगी । उसी समय अनेक वृद्धोंके दलाक रूपयोंकी थैलियां लेकर कौओंकी तरह मेरे पितापर गिरने लगे । लेकिन मेरे पिताकी मेरेपर असीम प्रीति होनेके कारण मेरा विवाह किसी वृद्धसे रुपया लेकर न किया गया । बादमें ककरापुरके रईस काका जमनाप्रसादजीके आग्रहसे उनके मध्यम पुत्र.....के साथ मेरी सगाई होगई । इसमें क्या रहस्य एवं भेद था वह मैं और मेरे पिता बिककुल न समझ सके । लेकिन मेरे पिताको इस बातसे शांति तो जरूर हुई कि एक अच्छे घरके लड़केसे बेटीका संबंध होनेसे वह जिन्दगी सुखसे बितायगी । और मुझे भी आश्रय मिलेगा ।

इसके बादमें मेरा पाणिग्रहण हुआ । विवाहकी सामग्री मेरी ससुरालसे आजानेके कारण हमारे पिताको कोई कष्ट न उठाना पड़ा । विवाहके अनन्तर मैं ससुराल गई । मेरे हृदयमें हर्ष द्विगुणित होरहा था । सौभाग्य रात्रिको हम आरामगृहमें पहुंचाये गये । मेरे वारम्बार वार्तालाप करनेपर भी पतिदेवसे कुछ भी पर्युत्तर नहीं

मिला । अन्तमें निराश मनसे सो गई । ४-८ रोज ऐसा ही हुआ । कुछ कालके बाद अपनी सहेलियोंसे मुझे पतिकी मधुपमेहकी बीमारीका हाल मालूम हुआ । क्योंकि वह बचपनसे ही कुमार्गगामी थे । यह बात मुझे मालूम होनेपर मेरी कुछ आशा और उछास, निराशा और दिक्गरीमें परिणत हो गया । अन्तमें मेरा सौभाग्य भी दो वर्षके भीतर ही दुर्भाग्य रूपमें बादलोंकी छायाके समान उड़ गया । इसके पहिले ही मेरे पिताका स्वर्गवास प्लेगके कारण हो चुका था । फिर क्या था मेरी सासू आदिने कहना शुरू कर दिया, कि 'हत्यारी चांढाकनी अपने घरको पहिले ही खाकर आई थी, जबसे तू आई तबसे ही मेरा लड़का बीमार होगया था, उसके बदले तू न मर गई गंड' इत्यादि अनेक आक्षेप मेरे ऊपर होने लगे । गोबर आदि नीच कार्योंका भार भी मुझे सौंपा गया । कार्यको ठीक करने पर भी अब मुझे पहरनेको पर्याप्त कपडे एवं भोजनको पूर्ण अन्न भी दुर्लभ जान पड़ने लगा । फिर भी मैं अपने देवको दोष देती हुई सती अंजना, मनोरमा, सीता आदिको स्मरण करती हुई सब सहन करती रही ।

कुछ कालके बाद मेरे देवरकी सगाई होकर उसी वर्ष विवाहका निश्चय हुआ । विवाहके दिन निकट होनेसे अनेक प्रकारके कांचों एवं रेशमी वस्त्रोंसे सुमज्जित मंडप बनाया गया । जिसमें प्रवेश करनेसे एक भी अनेकरूपमें मालूम होते थे । उसमें करीब २ हजार रुपया व्यय किया गया । जबकि बधुको चढ़ानेके लिये रेशमी वस्त्र और सुवर्णके जेवर समस्त नगरकी स्त्रियोंके

देखनेके लिये मंडपमें लाये गये उसी समय मैंने भी कपड़ोंको पसार कर देखना चाहा था कि मेरी सामुने 'अरीरांड दुष्टवांडाळनी पतिमक्षणी' आदि अनेक शब्दबाणोंसे मेरे हृदयको चीरते हुए कहा कि तूने शुभ मांगलिक द्रव्यको स्पर्श कर ही किया । समस्त कार्य समाप्त होनेपर सामुनीने अपने हाथों पेरों और झाडुओंसे मेरा और भी सत्कार किया । फिर क्या था—मेरा हृदय भर चुका था । मैं यमुनाके अंशमें सोकर अपनी जीवन नैय्याको पार करनेका निश्चय करके समय पाकर निकल पड़ी । पश्चात् जो कुछ हुआ वह आपसे छिपा नहीं है ।

रमेशचंद्र बाबू सच्चे सुधाकर, देश और जातिके धर्मप्रेमी एक अच्छे रईस व्यक्ति थे । उनकी गुणयुक्ता धर्मपत्नीने अपने स्वर्गवासके समय १ कास्र रुपया इमलिये निकाला था कि उससे एक जैन विषवाश्रम खोला जाय । जिसमें अनाथ विषवायें अपने शीलकी रक्षा करती हुई विद्याध्ययन करके स्वपरोपकारमें लीन हों । वस, रमेशचंद्रबाबूने रामभरोसीको भी उसी जैन विषवाश्रममें प्रविष्ट करके सब प्रकारसे उसका प्रबंध कर दिया । बड़ भी निश्चित होकर विद्याध्ययन करने लगी और क्षयोपशमके ठीक होनेसे आश्रमके कोर्सको ९ वर्षमें समाप्त कर लिया । पश्चात् आश्रमाश्रित महिला संरक्षणी समा-का मंत्रिचक्रवर्त बाबू रमेशजी सम्मतिसे रामभरोसी-को सौंपा गया । नन्दगांवमें गजरथप्रतिष्ठा होने-वाली थी बहांपर महिला संरक्षणी समाका उत्सव मनाया गया जिसमें करीब ९००० स्त्रियां मिल

नगरोसे एकत्रित हुईं । समाकी रिपोर्ट एवं अन्य २-४ विदुषियोंके भाषण समाजसुधार, मनुष्य कर्तव्य, आदिपर होजानेके बाद रामभरोसीदेवीने इस प्रकार अपना भाषण प्रारम्भ किया—

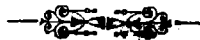
पवित्र पूज्य भगिनियो ! आपसे इस अज्ञ बालिकाकी एक छोटीसी अर्जी है जिसको स्वी-कृत करनेकी कृपा करेंगी । सुन्न बहिनो ! "स्त्री संसारका आमूषण है ।" यह प्रत्येक जानता है "स्त्री घरकी लक्ष्मी है" यह सब कोई समझता है "स्त्री संसारकी उत्पत्तिकर्त्री है ।" यह हरएक मानता है, फिर भी ऐसी उच्च एवं पूज्य स्त्री जातिको पुरुष जातिने नीचसे नीच एवं दीन समझ लिया है । इससे मैं पुरुषोंपर आक्षेप नहीं करती कि वह निर्दय और क्रूर हैं मगर मेरे माइयोंने ऐसा समझ रक्खा है कि स्त्री पुरुषकी सिर्फ दासी ही है, इसी सबबसे उसको न विद्या पढ़ाई जाती है न वह गृह-कार्यमें सुन्न बनाई जाती है । फिर हम आर्य महिलाएं किसप्रकार उन्नति पासकती हैं ? इस जमानेको समझकर प्रत्येक महिलाको शिक्षित गृहकार्य निपुण एवं अपने पेरोंपर खड़े होना चाहिये तभी हम गृहस्थ जीवनको स्वर्गीय जीवन बना सकती हैं, देखके उपकारार्थ मर सकती हैं । इस विषयको समाप्त कर अपनी आत्मकथा सुनाना भी आरम्भ किया । फिर उत्सव समाप्तिके बाद उसकी सामु जो कि वहां आई हुई थी रामभरोसीके चरणोंको अश्रुमलसे प्रक्षालन करती हुई चरणोंपर गिर पड़ी और क्षमा मांगने लगी देवीने तुरंत उठकर समझाया कि शोकमत करो "वह मेरा ही देव दुर्विपाक था"।

पद्मा-पद्यावली ।

(१०-जैन सा०शास्त्रो प्रेमचन्द्रो जैनः काव्यतीर्थः ।)

पद्मस्थितेऽपि चपले स्थितिर्वजितासि ।
 षष्ठे विचारयसि साधुगुणाञ्च कापि ॥
 लोके तथापि महिमा तव वर्ण्यतेऽत्र ।
 चित्रीयते मनसि चित्रमियं हि वार्त्ता ॥१॥
 संदानितापि बहुलं दृढबन्धनेन ।
 लोके प्रयासि शतशो, हि विनाशभावम् ॥
 प्राप्तसि मोहनकलां सहवासदोषात् ।
 क्षीराब्धिमध्येगतकूरमहाविषस्य ॥ २ ॥
 नैष्ठुर्येकं गतवती दृढकौस्तुभान्नु ।
 रागाङ्गतासि सकलं किमु पारिजातात् ॥
 प्राप्तासि चन्द्रशकलात् किमु वक्ररूपम् ।
 संसर्गजाः निरवशेषगुणा हि दोषाः ॥३॥
 धर्माद्विमोचयसि पापमयं करोषि ।
 नानाकुक्षीलरचनाञ्च तनोसि पापे !
 आत्रादिविग्रहवती त्वमविग्रहापि ।
 श्वेतःसु प्रापयसि नैकविकारभावान् ॥४॥
 न रूपं त्रैदग्ध्यं न चिरपरिचयं नावगणनाम् ।
 सुशीलं कौलीनं गणयसि न कार्यं कुशलतां ॥
 न धर्मं नाचारं न निजकुलकीर्तिं विधुजतां ।
 अहो नाना नाट्यं प्रकटयसि ह्य क्षीरजसुते ॥५॥

अरे! चित्रं लोके भ्रमसि निखिलेऽद्यापि रभसा ।
 सुधामूतेस्समयभ्रमितशिवर्युत्पन्नगुणतः ॥
 सरोजस्थिसा नु मृदुलचरणे कष्टकवलात् ।
 पदं धत्से स्थैर्यात् कचिदपि न पीडानुभवनात् ॥
 मुजनमशुभमूलं निन्दितं हा वितर्क्य ।
 खजसि कुटिलमूले ! शूरवीरं कुक्षीले ॥
 विटनटजकुशीलान् वर्द्धयित्वातिकालम् ।
 रहसि विविधशास्त्रज्ञानपारङ्गतानाम् ॥ ७ ॥
 कुमुदपतिसभायां लभ्यमानापि लोके ।
 कलुषयति सुचितं चित्रविद्युत्प्रभेयम् ॥
 प्रगटयति हि दीप्तीमात्मकीयां यथैव ।
 वमति जनकदम्बाः ध्वान्तकीर्तिं तथैव ॥८॥
 सततविततरागा पद्मनाभेऽपि वेक्ष्या ।
 ब्रह्मिजनितरागान्येन लोकान्तरेण ॥
 जङ्गजनपरिणीया प्रेयसी चक्रिणोऽपि ।
 विकटकटुकपाका भायते सोदरापि ॥९॥
 तथा सत्यपि लोके लभसि निखिले नावगणनाम् ।
 विचित्रं नास्त्यत्र यदसि भुवने सर्वफलदा ।
 किमाश्चर्यं पूज्या भवति बहवा कार्यब्रह्मतः ॥
 तथैवासि भोग्या समरसमुधापानरसिकैः ॥१०॥



दानचिन्तामणि-अस्तिमन्वे ।

(अथक-ओ० पं० के० भुजबलो शास्त्री-द्वारा) ।

वैगी मण्डलके कम्बेनाडंतर्गत पुंगनूर नामक ग्रामके रहनेवाले कौटिल्यगोत्रोत्पन्न नागमर्य नामक जैन ब्राह्मणके मल्लप्प पुत्रमर्य नामक दो पुत्र थे ।

वे ही पीछे चालुक्य-नरेश तैलपदेवके सेनापति हुए । इनमेंसे पुत्रमर्य तो अपने देरी गोविन्दरके साथ उड़कर कावेरी नदीके तीरमें मारा गया । मल्लप्प तैलपदेवके मरणोपरान्त ई० स० ९९७से १००८ में आहमल्लके राजा होनेपर मुख्याधिकारी हुआ । राजनीतिज्ञ, अप्रतिमल्ल मल्लप्पकी धर्मपत्नीका नाम अप्पकम्बे था । उन्हें गुंडमर्य, एकमर्य, पोलमर्य, आहबमल्ल, वल्ल नामक पांच पुत्ररत्न तथा अस्तिमन्वे गुंडमन्वे नामक दो पुत्रीरत्न प्राप्त हुये । उक्त दोनों पुत्रियोंका विवाह चालुक्य चक्रवर्तिके महामन्त्री वल्लपके पुत्र नागदेवके साथ हुआ । नागदेव बाल्यकालसेही बड़ा पराक्रमी और साहसी था । अतः चालुक्य नरेश आहबमल्लने प्रसन्न होकर उन्हें अपना मुख्य सेनापति बनाया । यह नागदेव अनेक युद्धोंमें असीम पराक्रम दिखलाकर विजयी हुआ और अन्तमें रणरंगमें मारा गया । विदित होता है कि उन्हें "ओटरमल्ल" की उपाधि भी रही । इनकी छोटी स्त्री अस्तिमन्वेकी सगी बहन गुंडमन्वे तो पतिके साथ सती होगी (!) पर अस्ति-

मन्वे अपने पुत्र अण्णगदेवकी रक्षा करती हुई असिचाराव्रत धारण कर व्रतनियमोंमें अपना समय व्यतीत करने लगी । यही स्त्री-रत्न हमारी चरित्र नायिका हैं ।

जैनधर्ममें इनको अट्ट श्रद्धा थी । आपने सुवर्णमय तथा रत्नजड़ित डेढ़ हजार प्रतिमाओं निर्माण कराकर स्थापित की और कई काल रुपयोंका दान किया । इस अगणित दानसे ही यह दानचिन्तामणि कहलाती हैं । अजितपुराणकी प्रशस्तिसे ज्ञात होता है कि इसी स्त्री-रत्नकी प्रेरणासे कविरत्न, कविचक्रवर्ती, कविकुमरांकुक्ष, उभय-भाषाकवि आदि अनेक उपाधिवारी राजमान्य कवि अजितसेनाचार्यजीका शिष्य, सुप्रसिद्ध जैन मंत्री चातुण्डरायका कृपापात्र रत्न ने अजितपुराणकी रचना की थी इसमें कविने अजित तीर्थकरका चरित्र बारह आश्रसोंमें वर्णन किया है । यह ग्रन्थ है । इसे पुराणतिकर और काव्यरत्न भी कहते हैं । यह ग्रन्थ ई० सन् ९९३ में रचा गया था । इस ग्रन्थके विषयमें रत्नका कहना है कि जिस प्रकार आदि पुराणके कारण आदिपंच "ब्राह्मण-वंशध्वज" कहलाया था उसी प्रकार इस ग्रन्थ (अजितपुराण)से मैं-रत्न "वैश्यध्वज" कहलाया अजितपुराणमें कविने अस्तिमन्वेकी बड़ी प्रशंसा की है । रत्न अस्तिमन्वेको वीरमार्त्तण्ड चाउण्ड-

रायसे कम नहीं मानता था। खास करके दानमें तो चावुण्डरायसे भी अत्तिमब्बेको कविने उन्नतासन दिया था। यह रत्नके अजितपुराणसे पाठकोंको स्वयं विदित हो जायगा। श्रावक षष्ठीके पाठनमें रेवतीके साथ सौनन्यमें सीताके साथ शीलमें देवकीके साथ दान गुणमें सुलोचनाके साथ कविने अत्तिमब्बेको तुलना की है। कविने इतनेमें ही सन्तुष्ट न होकर अगे अत्तिमब्बेको जिनपद्भक्ता, जगत्रपधन्दिना, दान गुणैकाम्बुधि आदि अनेकानेक विशेषणोंके द्वारा तीर्थकरकी जननी बतलाया है। कविचक्रवर्तीका कथन है जिनजननी और अत्तिमब्बेमें इतना ही अन्तर है कि जिनजननीने जिनेश्वरको अपने गर्भमें धारण किया था पर अत्तिमब्बेने उन्हे अपने मनमें। उनकी असीम श्रद्धाको प्रदर्शित करनेवाली एक घटनाका उल्लेख कविने इस प्रकार किया है।

एकबार जिनभक्ता अत्तिमब्बे गोमटेश्वरके दर्शनार्थ श्रवणवेल्गोल गई थी। वहां उनके जिनेश्वरके निःशब्द पहुंचतेही शुभसूचक अकालमें वृष्टि हुई। कवि इस अकालवृष्टिका हेतु अत्तिमब्बेकी सच्ची भक्तिको ही बतलाते हैं। अत्तिमब्बेके पिता मरुत्तप्य और चाचा पुन्नमय्यने अपने गुरु जिनचन्द्रदेवके प्रति परोक्ष विनय प्रगट करनेके लिये कलङ्क कविरत्नत्रयोंमें अन्यतम और कविचक्रवर्ती, उभयकविचक्रवर्ती, सर्वदेवकवीन्द्र, सौनन्यकुन्दाङ्कर आदि उपाधिधारी राजमान्य कवि पोन्नसे शान्तिनाथ पुराणकी रचना करवाई थी। यह शान्तिपुराण

चम्पूरूप कार्य है। इसमें बारह आश्वास हैं। इसकी कविता बहुत सुन्दर है। अत्तिमब्बेने अपने पिताके प्रति परोक्ष भक्ति प्रकट करनेके लियेही इसकी एक हजार प्रतियां लिखवाकर वितरण करवाई थी। इतिहासवेत्ताओंका अनुमान है कि उस समय उक्त शान्तिनाथ पुराण नष्ट हो रहा था या पाठकोंको सुलभतासे नहीं मिलता रहा। इसीलिये दानचिन्तामणिको ऐसा करना पडा। जो कुछ हो, यहां भुङ्गे इससे केवल अत्तिमब्बेके दानचिन्तामणि उपनामकी सार्थकता बतलाना है। कविचक्रवर्ती रत्न चावुण्डराय तथा अत्तिमब्बेको बहुत कुछ मानता था। खास करके कविने अपने लडकेका चावुण्डराय और लडकीका अत्तिमब्बे नाम रक्खा था। इससे उल्लिखित बात और भी स्पष्ट हो जाती है। इस अत्तिमब्बेकी संक्षिप्त जीवनीसे आधुनिक स्त्री-समाजको अवश्य लाभ उठाना चाहिये। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि महापुरुषोंकी जीवन घटनासे हम लोगोंका जीवन अवश्य सुवर जाता है।

युवको चेतो !

युवको उठो पड़े क्यों, सोते अपने पर-पसार।
लखो धर्मकी दशा हुई, क्या अपने नयन उधार॥
कुड़ची और बयानाका तो, देखो अत्याचार।
कायर कैसे बने ? बीरता दिखलाओ इस वार॥
श्री पूज्य अकलंक तथा, निकलंक देवसे बन जाओ।
तथा हकीकत राय सरीखे, वीर भावको भर लाओ॥
रखो आत्म विश्वास, आत्मबल युवको ! अपना प्रकटाओ।
करो धर्मसे "प्रेम" धर्मके लिए सैकड़ों शर खाओ॥
निवेदक-ब्र० प्रेमसागर-बुढार ।

भोजनका समय ।

(लेखक—श्रीमान् पं० मनोहरलालजी जैन, वैद्य-शिवपुरकलां) ।

खाली पेटमें जब रक्त अधिकतासे एकत्र होने लगता है और पेटकी-ग्रन्थियों (गाँठें) फूलने लगती हैं तब शरीरके स्नायुओंमें एक प्रकारकी विकलता उत्पन्न होने लगती है उसीका नाम मूल हैं, जिसकी प्रत्येक प्राणीमें स्वाभाविक इच्छा होती है, और जो हमको भोजनका ठीक समय बतला देती है। भोजनकी सूचना मिलना कि भोजन तैयार है यह वास्तवमें भोजनका समय नहीं, किन्तु जब जठराग्नि खूब प्रदीप्त होकर “कब भोजन मिले” ऐसी प्रबल इच्छा ही ठीक भोजनका समय है। बहुतसे अज्ञानी नित्यका कार्य समझ भोजनके किये ही जीते हैं, चाहे क्षुधा हो या न हो खानेसे मउकब, यह उनकी महान गलती है। क्षुधाके अभावमें भोजन करना नाना रोगोंका आह्वानन करना है। भोजन करना जरूरी कार्य अवश्य है परन्तु उसी समय जब कि जठराग्नि किये हुये भोजनको अच्छी तरह पाचन कर चुकी हो। जैसे अग्निकी छोटीसी चिनगारीके ऊपर उसकी शक्ति प्रमाण ईंधन दिया जाय तो वह क्रमशः बड़े-बड़े कार्योंको भी बोड़े ही समयमें भस्म करनेकी शक्ति पैदा कर लेती है। यदि बीचमें ही उस छोटीसी चिनगारीपर एकदम काष्ठादिकोंका भार रत्न दिया

जाय तो वह वहींपर दबकर समाप्त होजायगी। उसी प्रकार जठराग्निको अपने पूर्वान्नकी पाचन क्रिया समाप्त किये बिना ही पुनः पाचनका कार्य दे दिया जायगा तो वह उस कार्यको पूरा न कर सकेगी प्रत्युत दूसरे अन्नके भारसे पाचन थंज कमजोर होजायगे और अन्न पेटमें पड़ार सड़ेगा। जिसका परिणाम मंदाग्नि, अजीर्ण, अतिसार, ग्रहणी, क्रमि, दन्तादि रोग उत्पन्न होजाता है।

अतएव यदि अपने स्वास्थ्यकी अच्छा रखकर संसारमें कुछ कार्य कर दिखना है तो भोजन-लोलुपी मत बनो, जीनेके वास्ते यथासमय मित भोजन करो। जो मूर्ख खानेको ही जीते हैं और पशुओंकी तरह अंतसंत अप्रमाण रीत्या खाया करते हैं वे अकालमें ही डालके प्राप्त बनकर अपने अनुपम अरुम्य नररत्नको नष्ट कर बैठते हैं जैसा कि आयुर्वेदमें लिखा है—

अनात्मवन्तः पशुवद्भुजते येऽप्रमाणतः ।

रोगानीकस्य ते मूलमजीर्णं प्राणुवन्ति हि ॥

(भावप्रकाश)

जिन मनुष्योंकी इंद्रियां अपने आधीन नहीं हैं वे पशुके समान अप्रमाण भोजन करते हैं उनके विसूचिका (हैजा) अजीर्णादि असाध्य रोग होजाते हैं।

बहुतसे लोग भोजनको जाते ही नाक मुंह सुकड़ते और बड़े बेचेन होते हैं। आलीपर बैठते ही नाना चटपटी स्वादिष्ट चीजोंपर मन दौड़ाते हुये बड़े ही कष्टसे जरा२ आस मूलमें रत्नकर पेटकी पूर्ति कर लेते हैं। वस्तुतः हम इसको सच्ची मूल नहीं कह सकते क्योंकि सच्ची मूलमें कष्ट और अज्ञाति कभी नहीं होती। सच्ची मूलमें भोजन स्वादिष्ट और प्रिय मात्स्य होता है, मिर्च मसाठे आदि चटपटी चीजोंकी आवश्यकता नहीं पड़ती। भोजनका वास्तविक समय वही है कि जब सच्ची मूल उत्पन्न हो। आयुर्वेदमें भोजनका समय निम्न प्रकार बतलाया गया है—

“प्रसृष्टे विष्मूत्रे हृदि सुविमले दोषे स्वपथने ।
निशुद्धे चोद्गारे क्षुद्रुपगमने वातेऽनुसरति ॥
तथाग्नाहुरीप्ते विशदकरणे देहे च सुलघौ ।
प्रयुञ्जीताहारं विधिनियमितः काकः स हि मतः ॥
(वाग्भटे)”

अर्थ—जब मूत्रका उत्सर्ग हुआ हो, मन प्रसन्न हो, वात, पित्त, कफ, इन तीनों दोषोंकी स्थिति यथोचित हो, शुद्ध उद्गार (उकार) आती हो, मूल लगी हों, अठराभि प्रदीप्त हो, समस्त इंद्रियायें विशुद्ध हों और देह हल्की हो, तब भोजन करना चाहिये क्योंकि भोजनका वास्तविक समय इन्हीं लक्षणोंसे प्रगट होता है।

जिस प्रकार बिना मूल खाना हानिकारक है उसी प्रकार मूल लगनेपर न खाना अथवा समय टाककर खाना भी हानिकारक है। क्षुधा-प्रदीप्त होनेपर भोजन न किया जाय तो वह अपने शारीरिक मांस मेदादि धातुओंको दहन

करने लगती है, और शरीरमें निर्विकला ग्लानि-अरुचि आदि कार्य उत्पन्न होने लगते हैं। इस-लिये सच्ची मूल लगनेपर “अतं विहाय भोक्तव्यम्” इस नीतिका पकड़ ही अनुसरण करना चाहिये।

देखा जाय तो एक समयका किया हुआ भोजन ६ घंटेमें पच जाता है। बाद ६ घंटोंके बीचमें न खानेसे समयपर अच्छी कड़ी मूल लगेगी। बहुतसे लोग दिनभर कुछ न कुछ खाना ही करते हैं जिससे उनके भोजनका कोई समय नियत नहीं रहता। निवत समयपर किया हुआ साधारण सूक्ष्म भोजन भी लाभप्रद है, किन्तु अनियत समयपर किया पौष्टिक भोजन भी लाभ-दायक नहीं, प्रत्युत दुस्तदाई बतलाया गया है। निरोगी और दीर्घजीवी बनना है तो भोजन शुद्ध ज्ञातिपूर्वक प्रसन्न चित्त होकर खूब चकारकर खाना चाहिये। जितना अच्छा शुद्ध भोजन करोगे उतना ही उसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। मनमें नाना शुद्ध विचारोंकी उत्पत्ति होगी और रस भाग भी अच्छा बनकर शरीरको सुन्दर और पुष्ट बनावगा। ये बात जगतप्रसिद्ध है कि “जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन—जैसा पीवे पानी वैसी बोले बानी” बाजारके अशुद्ध कई दिनोंके बने भोजन मत करो इससे स्वास्थ्य खराब होजाता है। बाजारके नाना रंगीन चट-कीले पदार्थोंको देखकर जिह्वाकम्पटी मत बनो। कुछ परिश्रम करके शुद्ध और ताजा भोजन करना सीखो इससे स्वास्थ्यको लाभ और पैसोंकी बचत दोनों काय सिद्ध होते हैं।

उपवास करलेना अच्छा परन्तु कई दिनोंका वासा सड़ा गला भोजन करना अच्छा नहीं। भोजन सर्वैव ताजा शुद्ध और प्रकृतिके अनुकूल करना चाहिये। बहुतसे अनभिज्ञ मनुष्य भोजनके बाद ही यत्र तत्र शीघ्रतासे चक फिर कर परिश्रमके कार्यमें लग जाते हैं लेकिन भोजनके बाद शारीरिक परिश्रम मूककर नहीं करना चाहिये। आयुर्वेदमें भोजन बाद ही परिश्रम करना मृत्युका कारण बतकाया गया है। अतः भोजनोत्तर क्रमशः शनैः शनैः सौ कदम चलो जैसे कि कह। हैं—

भुक्त्वा शतपदं गच्छेद्द्वामपाश्वेन संविद्येत् ।
शब्दरूपरसस्पर्शगंधाश्च मनसः प्रियान् ॥
भुक्तवानुपसेवेत् तेनामं खाद्यु तिष्ठति । (सुश्रुते)

भोजन करके धीरे-धीरे सौ कदम चले, फिर वाहं करबट करके छयन करे, और जो अपने मनको प्रिय अन्नरूप रस स्पर्श सुगंध हैं उनका सेवन करे। ऐसा करनेसे अन्न मछे प्रकार पच जाता है।

मनुष्योंको बहुतसे विपरीत आचरण भी स्वास्थ्यको अधिक नुकसान पहुंचाते हैं, जैसे प्यासके समय पानी न पीकर भोजन कर लेना ऐसा करनेसे गुल्म, वायगोला, शूलादि रोग उत्पन्न होजाते हैं। इसी प्रकार क्षुषा लगनेपर पानी पी लेनेसे जलोदरादि रोग उत्पन्न होजाते हैं।

महाचीराष्टक (सार्थ)

तीसरीबार छपगया। मृ० -)।
धैनेजर—दि० जैन पुस्तकालय—मुरत।

मकरध्वज वा चन्द्रोदय रस ।

यास्यम औषध जगतमें और न दूजी कोष। अनुपानके फेरले सकल रोग क्षय होय ॥१॥ वैद्योंमें विख्यात है जानत है संसार। ऐसा उत्तम औषधि मिले न वारम्बार ॥२॥

इसके बटकर वैद्यक शास्त्रमें कोई औषधि नहीं है। ऐसा कोई भी रोग नहीं जिसपर यह औषधि अपना पूरा २ प्रभाव जुड़े २ अनुपानोंसे न करे। वैद्योंसे पूछिये मृत्युसमय भी २ मात्रा देनेसे १ घंटे बात करा सकी है। नपुंसकता निर्वकताकी तो एक ही मात्रा दवा है। हर-एक प्राणीको यह औषधि घरमें रखनी चाहिये मूल्य केबक २४) तोका स्वर्च ॥=)

धैनेजर, जैन कल्पतरु औषधालय,

फरुखनगर—पंजाब।

नव कोठोंमें सिद्ध वीसा यंत्र ।

यह यंत्र नौ कोठोंका बडी कठिनता तथा खोजसे मिला है। इसके पास रखनेसे समामें सन्मान, राजद्वारमें विजय, अनुदमन, रोग नाश, वशीकरण, मृत प्रेत बाधा न करे, व्यापारमें काम और नाना प्रकारके फायदे मन्द है। यह यंत्र पर्वतपर एक महात्माजीसे उनका आराधन कर आज्ञानुसार लिया गया है। इसमें न तो कहीं शून्य है और न मूक अक्षर। दूसरीबार आया है इसको हम चांदीके यंत्रमें देते हैं न्योछावर १।=)

ज्योतिषरामभवन फरुखनगर, पंजाब।

वर्तमान-शिक्षाप्रणाली ।

(लेखक:—श्री० पं० नाथूलालजी शास्त्री "वज्र" इन्दौर) ।

जब हम प्राचीन भारतके आदर्शको अर्थात्चीन भारतसे तुलना करते हैं तो हमें हमारी दीनता और दीनताका मुख्य कारण यही प्रतीत होता है कि हमने ही आळसी और अकर्मण्य होकर अपने हाथों देशको तबाह और बरबाद किया है । भारतवर्षकी वर्तमान परिस्थिति कैसी शोचनीय होरही है, बेकारोंकी संख्या बढ़ती जा रही है, गरीब हाहाकार कर रहे हैं, कहीं अन्न नहीं तो कहीं जल नहीं । ऐसी विकट और भयानक अवस्थामें जब कि देश सब तरह दुखी होरहा है, दिनदूनी घनिकोंकी विकासिता बढ़ती जा रही है । समाज और धर्म दिनदूना रसातलको पहुंच रहा है; क्या किया जाय ? इसकी खोज निकालना असम्भव नहीं पर टेढ़ीखीर अवश्य है ।

हमारी शिक्षाप्रणालीने हमें और भी फेशने-विक्त (विकासी) बना दिया है कि हम अब कहीं क्लार्क या शिक्षकके सिवाय कोई कार्य नहीं कर सकते । न हम अपना सामान अपने आप स्टेशन ले जा सकते हैं, न मामूली रोजगारसे अपनी गुजर कर सकते हैं, न पुस्तकें बेच सकते हैं और न दुकान ही पर तराजू बांट लेकर बाटा दाल या नमक बेच सकते हैं । क्यों कि हमने समझ रखा है कि कहीं हमारे

बी० ए० या शास्त्री पदमें बट्टा न लगे, हमारी फेशनमें घंवा न लग जावे इसलिये इन कार्योंसे हम शरमाते हैं । हमें नहीं मालूम कि स्वावलम्बन और साहस भी कोई आत्मगुण है और अमेरिका आदिका अनुकरण इस विषयमें करना भी हमें अनुचित नहीं है । सिर्फ पढ़ाना या क्लासमें हमें हमारी शिक्षाका उपयोग कर देना पड़ता है । किन्तु इतना होनेपर भी अब पढ़ानेको स्कूल नहीं; क्लासोंको दफ्तर नहीं । कहीं २५ या ३० दर्योंके स्थानके लिये आवश्यकता निकलने पर सैकड़ों नहीं हजारोंकी संख्यामें प्रार्थना पत्र आते हैं; वे भी दीनता सूचक । इन सबका मुरूप कारण हमारी आधुनिक किसी भी शिक्षाका ठीक नहीं होना है । अब हम कहें कि हमने अकर्मण्यता और आळस्य पूर्वक सुखकी नींद ली; इसीलिये आज यह दशा होरही है तो इससे क्या काम होगा ? "गई सुगई अब राख रहीको " की नीतिके अनुसार अब तो उसका प्रतीकार करना ही आवश्यक है । इस क्रांति युगमें हमें स्वावलम्बी, साहसी और निर्भीक होना चाहिये; यूरोप और अमेरिकाने जो विज्ञानमें उन्नति की है, जब हम अपने शास्त्र उठाकर देखते हैं तो हमें अपने शास्त्रोंमें उन सबकी यथार्थ स्थिति मालूम होजाती है और वे सब

वैज्ञानिक आविष्कार जैन धर्मके अविरुद्ध ही प्रतीत होते हैं; जो हमारे आचार्योंने हजारों वर्ष पहिले लिखे हैं ।

नवयुवको ! तुम ही देश और समाजके आचारस्तम्भ हो । तुम्हारे ऊपर ही समाजका भविष्य निर्भर है । इसलिये तुमसे ही कहना योग्य है कि दृढ़ संकल्प द्वारा महापुरुषोंके जीवनचरित्रको आदर्श रखते हुये आत्मसी और अकर्मण्य मत बनो । स्वावलम्बन और सदाचार पूर्वक जीवन होना चाहिये, यह समझते हुये कर्तव्य पथपर आरूढ़ हो जाओ । अवश्य समुत्थान होगा ।

जब हम संस्कृत शिक्षा की ओर दृष्टि डालते हैं तो हम देखते हैं कि अधिकांश विद्यालयों और पाठशालाओंमें पुस्तकें और शिक्षाशैली ऐसी निकम्बी है कि विद्यार्थी व्यवहारसे अनभिज्ञ और केवल रटू निकलते हैं, उनमें आत्मशक्तिका अभाव रहता है । न वे काश्चेरीकी पुस्तकें पढ़ते हैं न संपादकके समाचार पत्र ही देखते हैं । और यदि पुस्तकें देखते भी हैं तो निकम्मे उपन्यासोंमें अपना अमूल्य समय बर्बाद करते हैं । विद्यालयों और पाठशालाओंके कोर्समें ऐसी पुस्तकें होनी चाहिये कि जिनसे भविष्यमें काम होसके । पुस्तकोंके पढ़नेके साथ साथ टेकरिंग (कपड़े सीना), वैद्यक, शार्टईड, महाग्रन्थी, टाइपराइटिंग, इंजिनियरिंग, ड्रइंग और फोटोग्राफरीकी शिक्षा भी देना आवश्यक है । व्याख्यानशिक्षा और हारमोनियम द्वारा धार्मिक गायन सिखाकर जैन सिद्धांतका प्रचार आम तौरपर सरलतया होसकता है ।

विद्यार्थियोंको उनकी असुक्त कार्यकी ओर विशेष प्रवृत्ति देखकर उधर ही झुकाना चाहिये और प्रोत्साहित करते रहना आवश्यक है । किन्तु वर्तमान शिक्षाकार्योंमें किसी भी प्रकृतिके छात्र आवें उन सबको एक ही कक्षीर पर चढाया जाता है । फिर अन्तमें उन्नति हो तो कैसे हो ?

विद्यार्थी अपने पठनक्रमके अतिरिक्त अन्य परीक्षा देना चाहते हैं तो उन्हें रोक दिया जाता है और इन्हीं कारणोंसे विद्यार्थीकी थथेच्छ बुद्धिका स्फुाण नहीं होपाता है । शिक्षाके साथर आचरणपर ध्यान नहीं दिया जाता, न व्यायाम ही पर कुछ गौर किया जाता है, इसलिये कमक्षेत्रमें अवतीर्ण होनेपर वे चिड़चिड़े, दुर्बल और क्षयग्रस्त दृष्टिगोचर होते हैं । उनका जनतापर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता, न वे किसीके आदर्श बन सकते हैं । मैं सत्य लिख रहा हूं कि अधिकांश संस्कृतवाले अपनी कोर्सकी पुस्तकोंको पढ़कर पास तो होजाते हैं, लेकिन समाजमें शास्त्रपढ़ना, उपदेश देना और बातचीत करना तब उन्हें नहीं आता और वे अनेक उपाधि धारी धीमान् कड़का कर यूनिवर्सिटी और विद्यालयोंको बदनाम कराते हैं । यही हालत अंगरेजी शिक्षा प्रणालीकी है । वे तो धार्मिकज्ञान प्राप्त करना अपने कर्तव्यके बाहर समझते हैं तथा व्यवहारमें भी चतुराई प्राप्त नहीं होपाती इसलिये वे भी अपमानित होते हैं । अतः -

विद्यार्थियो ! शिक्षा तुम्हारी योग्य होना चाहिये । निज धर्म और स्वदेशका भी ज्ञान होना चाहिये ॥

जब पुस्तकोंका घोटना अब पास होना ध्येय है ।
आज्ञा करें कैसे कहो तुमसे हमारा ध्येय है—

हमारी इसी अनुचित शिक्षा प्रणालीके कारण
विद्यार्थी अपना भविष्य । जीवन सम्बन्धी
निश्चित ध्येय नहीं बना पाते हैं और बकात
उन्हें नौकरी खोजनी पड़ती है ।

योग कहा करते हैं कि दीन और अनाथ
विद्यार्थी द्रव्यभावके कारण नौकरीके सिवाय
और क्या कर सकते हैं ? किन्तु मैं
सज्जनोंसे निवेदन करूंगा कि उन्हें हमारे
आदर्श नेताओंके अवलंब उदाहरण सामने
रखते हुये मालूम करना चाहिये कि ये प्रारम्भ-
कालमें निर्धन थे, किन्तु उनके द्विगुणित उत्साह,
अथक परिश्रम, कार्यक्षमता और कर्मवीरताने
आज उन्हें संसारका शिरोमूषण बना दिया ।
विद्यार्थियोंको इनका आदर्श रखते हुये अपने
निश्चितध्येयकी ओर अग्रसर होना चाहिये ।
अपने कार्यको पूर्ण किये बिना उसमें अनुत्सा-
हको प्रदर्शित करना और प्रतिकूलता देखकर
निरुत्साही होना निरी कायरता है । किसीने
कहा है कि—

जीवनचरित महापुरुषोंके हमें नसीहत करते हैं ।
हम भी उनसे अपना जीवन स्वच्छ साफ कर सकते हैं ॥
हमें चाहिये हम भी अपने बना जाय यह चिह्नलक्षाम ।
इस जमीनकी रेतोंपर जो कभी किसीके आवे काम ॥

किसी तरह खोटे उपन्यासोंमें समय न खोकर
बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक पुस्तकोंमें ही
सतत परिश्रम करना चाहिये, चारित्र्य सुधार-
नेका यह सरल उपाय है । जो बाह्यभावस्थामें
आचरण पर ध्यान नहीं देते वे बी० ए० या

एम्० ए० पास होने पर भी समाज और लोकमें
प्रसिद्ध नहीं पाते, उनपर लोगोंकी श्रद्धा नहीं
रहती और वे जुरी तरह समाजोत्थ होजाते हैं ।
क्योंकि इस मूढकर्ममें आत्मशक्ति, सद्गति,
सस्वंगति और शिष्टाचार आदि गुणोंके द्वारा
ही अनेक नररत्न अपनी दिगंतव्यापिनी प्रकृत
वचककीर्तिकौमुदीका प्रसार कर गये हैं ।
क्या हम मनुष्य नहीं ? हममें वह बल नहीं
कि हम भी वैसे बन सकें ? हां ! है, प्रत्येक
आदमीमें महावीर और अकलंक होनेकी शक्ति
है; इसलिये आचरण पक्का और सच्चा होना
अत्यंत आवश्यक है । संसारमें वह व्यक्ति
पूजनीय नहीं होसका जिसके पास अनुकूल
सम्पत्ति है, वह पूजनीय नहीं जो राक्ष्या-
सनपर आरूढ़ है, वह भी पूजनीय नहीं हो
सका जिसके पास वैज्ञानिक भण्डार है ।
पूजनीय वही होसका है जो स्वावलम्बी है,
सदाचारी है ।

जब तक किसीका आचरण पक्का न हो सच्चा न हो ।
तब तक महत्तर कार्यमें वह किस तरह कच्चा न हो ॥

इसलिये छात्रालयोंमें इसपर ध्यान देते हुये
अपने मार्गपर आरूढ़ रहना चाहिये ।

हममें अकलंक और समंतमद्र होनेका बल
मौजूद है किन्तु चाहिये उनके गुणोंका अनुकरण,
चाहिये अपूर्व साहस तथा अकलंक जैसी
आत्मानमें धर्म और देशको फिरसे समुज्वल कर
सकेंगी ।

ब्रह्मचर्यपूर्वक पक्कीस वर्षकी अवस्था तक
विद्याध्ययन कर उपर्युक्त नियमानुसार पूर्ण
योग्यता संपादन करलेना आवश्यक है ।

संस्कृतका छास्त्री कक्षा तकका ज्ञान, बोलने और लिखने तथा अनुवाद कर सकें वहां तक अंग्रेजी, हिन्दी साहित्यमें उत्तमा परीक्षा, उत्तम व्याख्यान जो परिमार्जित और सज्जीबनोत्पादक भाषामें सुसज्जित हों, इसके साथ साथ धार्मिक और देश सम्बन्धी भजन और मूगोल, राजनीति विषयक ज्ञान प्राप्त करते हुये व्यावहारिक ज्ञान और व्यायामसे हृष्टपुष्ट शरीरका होना आवश्यकिय है। इतने ज्ञानके संपादन कर लेने पर देश और जैनधर्मके उद्धार करनेमें सफलता प्राप्त होसकती है।

जहां उपर्युक्त शिक्षा दीजाबेगी वहीसे महाकवि रवीन्द्रनाथ टागौर जैसे संसारके महामान्य पुरुष तैयार होकर जननी जन्मभूमिका उद्धार करते हुये देश तथा विदेशमें जैनधर्मको विश्वधर्म बनानेमें कृतकृत्य होसकेंगे।

शिक्षा तुम्हारी योग्य हो त्यादादमें अनुगम हो।
गुरुकी विनय अथ भक्ति हो मधु मांसका भी त्याग हो ॥
साम्राज्य हो जब एकताका साक्षी हो देशमें।
तब जानलो जिनधर्मका उद्धार होगा देशमें ॥

निःस्वार्थ होकर अस्थिचर्मावशिष्ट नरोंकी फर्कट्टीमें जाकर क्षुवा और पिपासासे आकुलितोंकी तृप्त कर सकें तभी सच्ची सेवा समझिये।

इसलिये संसारमें यदि जन्म चारण क्रिया है तो अपना जीना तब ही सार्थक है जब धर्म और जन्मभूमिके उद्धारार्थ पाणोंका बलिदान करनेमें भी न हिचकें।

नवयुवको ! सर्वसाधारण ऐसे उच्च उद्देशको पालन कर सके उसी प्रकार लिख रहा हूं। तुम नौकरोंका ध्येय मत रखो, आत्मबल और परि-

श्रमके साथ स्वतन्त्रधी बनो। पुगतों वेचो, खादी वेचो, टेकरिंगका कार्य करो और साधारण कार्य करनेमें मत शरणाओ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसे अल्प संख्यामें भी युवक परिश्रम करेंगे तो अकलंक ज्ञान फिसे उच्च शिखरपर आरूढ़ होगा। यह कलियुग नहीं है किन्तु करयुग है। उद्योगी शरके देखलो।

धारे युवको ! अरु सी चेतो, उठो और जिनधर्मकी ध्वजा अखिल विश्वमें फहराते हुये परम पुनीत अस्तको पैसाका पैसा बनादो।

मूसरचंद ।

(सन्स्था-भूति)

जिन द्वार दरिद्र पुकार करें,
दुखिया अति दीन खडे तरसैं।
धनवीर धनादिक ऐसनको,
नहिं देत कभी अपने करसैं ॥ १ ॥
पुनि पाप प्रवृत्त रहैं दिन रैन,
न स्वार्थे नहीं धरकों खरचैं।
अरु लोक विषे नहिं नाम कियो,
व कियो निज नाम पशू नरसैं ॥ २ ॥
नहिं भोग सुभोग कियो कबहू,
धरती धन गाढ़ मदा तरसैं।
पशु पुच्छ विधीन फरैं मगमें,
निज पैट भरैं मित ही खासैं ॥ ३ ॥
लख लाल गुलाल सु खाल उन्हें,
धन देष सदा मनमें हरषैं।
“वे मूसरचंद सु मूसरधार-
धरधर ऊतर सैं धरसैं” ॥ ४ ॥
परमेहोवास शैव, न्यायतीर्थ-हूरत ।

वायु और जल ।

(लेखक-पं० शिखरचंद्र जैन वैद्य-फर्रुखनगर ।)

ज्ञान दिवाकर धूपगुण विद्याकिरण प्रकाश ।
कुमति विनाशी सुमति देा जियालाल मम तात ॥

यह सब कोई जानता है कि ग्रीष्मऋतुमें जब बहुतसा ताप होता है तो स्वास बड़ी कठिनतासे लिया जाता है व रुकने लग जाता है । परन्तु इसका कारण यह है कि जिस पदार्थमें ताप लगता है उसके परमाणु अलग २ होजाते हैं इसलिये जब सूर्यका ताप वायुपर लगेगा तो इसके भी परमाणु अवश्य अलग २ होजायेंगे । तो अब जनना चाहिये कि जो जिसका स्वभाव होता है यदि वह उसके विरुद्ध करे तो वह अवश्य दण्ड पाता है । जो शरीरकी प्रकृतिसे विरुद्ध करेगा अवश्य दण्ड पावेगा । इसलिये हम सदा जितनी वायुसे स्वास लेते हैं यदि वह उससे घट जाय तो अवश्य हमें हानि पहुंचेगी । इस कारण ग्रीष्ममें सूर्यके तापसे वायुके पतली होजानेसे अर्थात् उसके परमाणु अलग होजानेके कारण हमको हानि पहुंचती है । अर्थात् हमारा श्वस रुक जाता है । पृथ्वीके ऊपर ४५ मील तक वायुने हमको घेर रक्खा है । इस वायु मण्डलके बीच ही प्राणी तथा वनस्पति बढ़ते हैं, इसके विना आग जल नहीं सकती, जल वह नहीं सक्ता, दीपक थिर नहीं रहता । यदि वायुमें दुर्गन्ध मिली हो तो मन

अप्रसन्न होजाता है और उस दुर्गन्ध वायुके सेवनमें कठिनता होती है, इसी तरह सुगंधित वायुके सेवनसे मन अत्यन्त प्रसन्न भी होजाता है, इसलिये निर्मल वायु सेवन करना उत्तम है । जैसे सूर्यकी ताप लगनेसे वायुके परमाणु फट जाते हैं । शीतकालमें हिमके मिलनेसे बड़ी परमाणु कठिन और बर्षाऋतुमें मलीन होजाते हैं । वायुका यह स्वभाव है कि जिस वस्तुसे टकराकर चरती है उसकी सुगंध व दुर्गन्धको शीघ्र ग्रहण कर लेती है और जब पहली वस्तुसे आगे बढ़ दूसरी वस्तुसे टकरानी है तो उसका गुण ग्रहण करती है और जब कुछ दूर जाकर खुले मैदानमें पहुंचती है तब बिलकुल साफ होजाती है । इसलिये वायु ऊपरकी उत्तम होती है और पूर्व विद्वानोंने बड़े परिश्रम और खोजनेपर यह निश्चय किया है कि जैसी वायु पृथ्वीसे चार कोश अर्थात् १ योजन ऊंचेपर है यदि ऐसी वायु पृथ्वीपर बनी रहे तो किसी प्रकारका रोग न हो । क्योंकि ऊपर वह वायु अत्यन्त निर्मल रहती है जब वह नीचे उतरती है तो इसमें वृक्ष, फल, फूल, वनस्पतिके परमाणु मिलकर इसको मलीन कर देते हैं । इसलिये बाग, वन, पर्वतसे टकराई हुई वायु भी निर्मल नहीं है । इसको केवल ग्रीष्म

ऋतुमें हमलिये ग्रहण किया है कि वृक्षोंके टकरानेसे वायुमें उष्णता नहीं रहती है परंतु रात्रिके समय वृक्षोंमें एक प्रकारका विष उत्पन्न होता है और वह वायुमें मिककर हानिकरता है । हमलिये रात्रिके समय तो किसी भी मोसमकी वायु उत्तम नहीं है । वायुके ऋतुवार गुण दोष फिर किसी समय पाठकोंको दिखावेंगे अब कुछ जलका वर्णन लिखते हैं ।

जल ।

आकाशका जल चार प्रकारका होता है । जिसमें १-घाराजल, २-कारक (ओला) का पानी, ३-तुषार जैसे नदी व समुद्रमें भाफ उठती है उससे उत्पन्न तुषार जल, ४-हेम यानी पाछेका जल । यह ही चार प्रकारका जल पृथ्वीपर गिरनेसे एक तो कुआं, दूसरा सर पहाडके नीचेका और गहरी जमीनमें जो वर्षाका जल भरजाता है उसे सारस कहते हैं और तीसरा चोड्या अर्थात् गढे पृथ्वीमें आपमें हो पत्थरोंसे पूर्ण कटा झाडी आदिसे ढका हो नीलवर्ण जल सहित हो उसे चौड्या कहते हैं । चौथा निश्रंर अर्थात् झरनेका जल पांचवी नदी उठ्ठा तडाग अर्थात् ताकावका जल सातवां बावडीका आठवां जो गहरी जमीनको फोडकर मोटी घारा जलकी गिरे उसे औड्रिक कहते हैं । इन्हीं स्थानोंके मेदसे यही जल आठ प्रकारका कहा गया है । अब जलके गुण कहते हैं ।

जिसमें फैन न उठताहो, सुखे हुए तृण पत्तोंसे रहित और स्याही जिसमें न हो नर्मल हो और सूर्य चन्द्रमाकी किरणे रात्रि दिन जिसमें

पड़ती हों और नित्य जिसका जल निकलता हो ऐसे कुएँका जल शैतकालमें थोड़ा गर्म करने पर ग्रीष्मऋतुमें ताजा निकालकर स्नान करनेमें लाभ देता है । परन्तु ऐसे जलको काममें लानेसे पहले जलको दुदरे कपड़ेमें छानकर साफ करले । सूर्य उदयसे पहले या अस्त होनेसे पीछे अथवा भोजन करनेके पीछे स्नान कदापि नहीं करना चाहिये । स्नान हमेशा सूर्योदयपर ही श्रेष्ठ है । अब हम इसी जलके पीनेके जो गुण हैं भोजनके साथ लिखेंगे प्रथम स्नानके ही विशेष गुण दिखाते हैं ।

नियत समय पर स्नान करनेसे शरीर चुस्त रहता है, सुस्ती पास नहीं फटकती गठिया रोगमें स्नान करना बड़ा लाभकारी है । यह शरीरके जोड़ोंकी गांठोंको साफ करता है खुनकी आदि शरीरके जोड़ोंकी गांठोंको साफ करता है खुनकी आदि शारीरिक बह्य रोग नित्य स्नान करनेवालेके नहीं होते । इसलिये प्राणी मात्रको सूर्योदय पर नित्य स्नान करना अत्यन्त लाभकारी जानना चाहिये । अनेक मनुष्य ऐसा करते हैं कि सोकर उठते ही स्नान करने लगते हैं उस समय उनकी आंखोंमें नींद समाई हुई होती है और शरीरके सम्पूर्ण रोम के छिद्र खुले होते हैं सो तुरत जलके पड़नेसे उजरको उत्पन्न करते हैं, इसलिये स्नान करनेसे पहले निद्रा या आराम्य त्याग दिया करें । अनेक मनुष्य नदीका जल कुएँसे उत्तम समझ उसीमें स्नान करना भला समझने हैं । जिन जलमें देशान्तरसे प्रवाहमें मिश्रित हुए उत्तम मधुम

जषन्त्य वस्तुओंका अंश मिला है उस नदीका ऐसा बड़ा विना छाने अत्यन्त हानिकारक है। बहुत मनुष्य उमरका सेवन कदापि नहीं करते। कबक अविषकी बोग ही नदी आदिको तीर्थ मान उसकेमें कूद २ अपवित्र करके अपनी भी हानि ही करते हैं। स्नानके भाजनोंके विषयमें बुद्धिमानोंकी एक सम्मति नहीं है किसीने तम्र और किसीने पीतक कहा हैं परंतु और घातुओंको बुझ कहनेमें किसीने भी इन्कार नहीं किया है, परंतु हमारे विचारमें तो सर्व घातुओंके वर्तनमें अधिक समय तक पानी रखा रहनेसे खराब होनाका है। इसलिये ताजा पानी छाणकर गरमकर फेर छणकर स्नान करे। इसके बराबर उत्तम वस्तु और नहीं है। इसलिये बुद्धिमानोंकी इसके अशुक्ल ही बरताव करना उचित है जिससे किसी प्रकारका रोग न हो।

स्नान करनेके प्रबन्धमें जिस जलको उत्तम वर्णन किया है उस कुएँका जल शीतल पीनेसे वात पित्त कफ और तृण दाह सूच्छा घूपनी अजीरण वमन अन्वके ल पचनेके कारण हृदयका भारी होना इत्यादि इन दोषको नाश करता है। और यही जल वायुमें निकल नष्टकर और वातव्याधि और गलेके रोगोंमें और पपलीके शूलमें वमन (है) और विरेचन कर्म हुवा हो और फेटके अक्षरोंमें विद्रवोंमें (अर्थात् स्वचा रुधिर मांस मेदाका विगड आदि दोष धीरे २ ऊंचा और पीडा सहित गोल अथवा चोडी सूजन उत्पन्न करते हैं उनको विद्रवी कहते हैं) इन सब रोगोंमें शीतल जल

न पीवे यानी उष्ण जल पीवे। एक खंड हीन जल जैसे १ सेरका तीन पाव रहे ऐसे २ खन्ड हीन ३ खन्ड हीन वात पित्त कफसे उत्पन्न ज्वरमें क्रमसे पिये। येही तप्त जल रात्रिमें पीनेसे श्लेष्माको विशेष नाश करता है। जो जल श्रेष्ठ रखा हुवा दिनको सूर्यकी किरणोंसे तपे और रात्रिको चंद्र किरणसे शीतल हुवा हो उस जलको 'आरेद' कहते हैं। वह जल अमृतके तुल्य और वायु पित्त कफ तीनों दोषोंको नाश करता है। इस जलमें अमृत और विष दोनों गुण हैं थोड़ा २ पीनेसे और एक ही बार अधिक पीनेसे अमृत तथा विष सदृश होता है। ऐसे ही जो मनुष्य प्रमाण करके नित्य जल पीते हैं अथवा भोजन समय नहीं उसके पीछे पीते हैं सो उत्तम सुख भोगते हैं यह जल सब रोगोंको दूर करने वाला है। कुएँका जल कफनाशक व श्रेष्ठ अत्यन्त लघु क्षारसहित और दीपन है। ताकावका जल पाकमें कडुआ मीठा कसैला वायुबद्धक और भारी है। बाबड़ीका जल पित्तकारक है परन्तु वायुनाशक और सुक्षार है। झरनेका जल षटु यानी कफनाशक लघु अग्नि दीपक गुणोंमें कोष्ठ और लेखन अर्थात् मेदा आदिके छोकरनेवाला है। आग्निद जल पित्तघ्न अविदाही अर्थात् दाहका नहीं पैदा करनेवाला अग्निदीपक जलोंमें कोष्ठ और लघु (हलका) है। चौघ्र जल दोष रहित अग्निवर्धक है, सारस जल मधुर है, नदीका जल लघु लेखन कफ नाशक रूक्ष और पाकमें कटु है और जो जल जना- र्तव अर्थात् विना ऋतुका जैसे पूस आदि चार

मास वर्षाका जल अनार्तव कहाता है सो जल स्नान और पीनेमें सर्वत्र निहित है । और जो जल नवीन अर्थात् वर्षाका है वह भी उत्तम नहीं है क्योंकि वर्षाऋतुमें आकाशचारी सर्पोंके फुफ्फुससे विषवायु जलमें मिककर उसको बिगाडती हैं और यही जल पृथ्वीपर पडकर जिस जलाशयमें मिकता है उसको विषरूप कर देता है । यही कारण है कि वर्षाऋतुमें मोसमी रोगादि विकार उत्पन्न होते हैं ।

जो नदियां शीघ्र बहने वाली और जिनमेंसे जल अत्यन्त हलका हो वह सेवने योग्य है, अन्य नदियोंका जल कभी मला कभी बुरा होता रहता है और जो नदियां बीभी बहनेवाली हैं वह सदैव निन्दीय हैं । वर्षाऋतुका जल यद्यपि हलका और निर्मल होता है परंतु विषयुक्त होनेसे सेवने योग्य नहीं हैं । आश्विन मासमें जो जल आकाशसे वर्षे उसको पृथ्वीपर न पडने दे ऊपर रोक ले उसको वैद्योंने गंग जलके समान कहा है । वह जल सम्पूर्ण जलोंमें उत्कृष्ट अमृत समान गुण करनेवाला है, आयुको वृद्धि करता है, सब रोगोंका नाशक है, वरदायक, रुचिकारक स्वादमें मीठा पथ्य और लघु है और अन्तःकरणके अन्वकार अर्थात् अज्ञानताको दूर करके बुद्धि बढ़ाना है, त्रिदोष नाशक है । वर्षाऋतुमें ऊपर लिया (रोक) हुआ शरदकालमें सब जल हेमन्तमें सर्व जल गुणकारी और निर्मल होजाते हैं । हेमन्तऋतुमें किसीने टाकाव जल भी लिखा है, शीघ्र और बसंतऋतुमें कुण्डका

या झरनेका जलसेवन करनेसे सुख होता है । गंगा नदीका जल वर्षाऋतुमें बिगड़ जाता है, शेष अच्छा रहता है ! अनेक रोगोंको नष्ट करता है, हलका मीठा भी है । जो जल पाले (हिम)से उत्पन्न होता है वह पाछेका जल वांतोंको ठिठराता है, दूषित है, उसे कदापि नहीं बरतना चाहिये ।

जो मनुष्य भोजनसे पहले अर्थात् निरन्तर जल पीते हैं वह जल सब धातुको सुखाता है जो भोजनके बीचमें जल पीते हैं उनको भी हानि करता है । भोजनके मध्य जलका न पीना आरोग्यताका कारण है । जो मनुष्य जलका अधिक सेवन करते हैं उनका शरीर शिथिल बलहीन होजाता है, पेट फूलकर बुरे दंगका होजाता है । पूर्वोक्त कथनानुसार यह बात स्पष्ट है कि वर्षाऋतुमें जल बिगड़ जाता है इसलिये उसको साफ करके काममें लाना चाहिये । अब हम जलके गुण व स्नान करनेके गुण कित्त चुके इस समय पाठकोंको यह और बताना चाहते हैं कि स्नान किये पीछे क्या करना उचित है ।

स्नान करके शीघ्र ही नर्म और उज्वल वस्त्रसे शरीरको साफ करे फिर मौन सहित एक स्थान पर एक वस्त्र ओढकर बैठे और इष्टदेवका स्मरण कर सच्चे चित्त (मन) से यह नियम ले कि आज मैं सम्पूर्ण दिनमें कोई अयोग्य अनुचित कार्य न करूँगा, किसी जीवको वृथा कष्ट न दूँगा, अपनी आजीविकामें उद्यम और यथाशक्ति हीन मनुष्योंपर दयाभाव रखूँगा । इसप्रकार स्मरण तथा प्रार्थना करनेमें कमसे कम आधी

बड़ी आवश्यकता लगावें, क्योंकि आधी बड़ीका विश्राम रक्तको शुद्ध करता है, शरीरमें निर्मल वायुका गमनाममन होता है सम्पूर्ण इन्द्रियां निर्मल और पवित्र होती हैं, किसी प्रकारका कष्ट उत्पन्न नहीं होता और दिनभर यह जीव अपने नियमका ध्यान रखे तो यह जीव अशुभ कर्मोंके बंधनसे बचता है। जो मनुष्य इसके प्रतिकूल चलते हैं वह नानाप्रकारके कष्ट सहते हैं स्नान किये पश्चात् विश्राम न लेकर मार्ग चलनेसे शरीरके सम्पूर्ण जोड़ोंमें अशुद्ध और मलिन वायु प्रवेश करती है, जिससे बहुधा हड्डीफूटन शून्य गठिया आदि रोग उत्पन्न होते हैं। स्नान करके अन्य प्रकारका परिश्रम करना भी बुरा है। सो रहनेसे शरीर प्रमादी उन्मत्त होजाता है, स्नान करके मैथुन करनेसे बलहीन होजाता है और स्नान समयकी गीली धोती या अन्य कोई गीला वस्त्र शरीरपर लपेटनेसे दाद, खुजली सीप इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं। शिरके बाल अधिक समय तक गीले रहनेसे मस्तक निर्बल होजाता है। जैसा शरीरके लिये स्नान आवश्यक है वैसा ही स्नान किये पीछे बोझ विश्राम भी आवश्यक समझना चाहिये। मनुष्य मात्रको उचित है निम्नलिखित सात समय मौन धारण करें। भोजन १ वमन २ स्नान ३ मैथुन ४ मल त्याग ५ मूत्र त्याग ६ ध्यान ७ इन सात समय मौन रखनेसे शरीरकी रक्षा बहुत होती है तथा कई रोग ऐसे समयके बोलनेसे होते हैं अब आगे किसी समय हम ऋतुओंका वर्णन विस्तृत रूपसे पाठकोंकी सेवामें उपस्थित करेंगे।

स्त्रीशिक्षाकी * *

* * आवश्यकता ।

[ले०—कमलाबाई परिवार मारोठ (मारवाड)]

हे अनन्त गुणधारक देव! पहले हमारा यह महिला समाज क्या ज्ञानमें, क्या कर्तव्यनिष्ठामें, क्या धर्मकर्ममें सभी बातोंमें संसारका आदर्श गिना जाता था। अपने त्याग गुणसे देवोंके द्वारा भी पूज्य था। वही आज अपने कर्तव्य मार्गसे भ्रष्ट होकर अबका नामसे पुकारा जाता है। वास्तवमें अपना सब बल खोकर वह अबका बन भी गया है। हे पतितोद्धारक देव! क्या हम अबकाओंको सदैवके लिये इसी अवस्थामें रखेंगे या उद्धार करेंगे? प्रभु! हमारा इस कष्टमय एवं दुःखद अज्ञान जीवनसे उद्धार कर अपने पतितपावन नामको सार्थक कीजिये। हे नाथ! आपके निकट एक मात्र यही प्रार्थना है कि हममें वह बल प्रदान कीजिये जिससे हम अपने मार्गके संकटोंसे न घबड़ाकर बराबर अपनी, अपने धर्मकी, देशकी तथा समाजकी उन्नति करती जाय।

पूज्य माताओं तथा प्यारी बहिनो!

प्राचीन तथा वर्तमान विद्वानोंके विचारांशोंसे यह बात भलीभांति निश्चित होचुकी है कि स्त्री समाजके विना शिक्षित हुए कोई भी जाति या देश उन्नत नहीं होसकता। इस बातके साक्षी हमारे जैन शास्त्र हैं। आप लोग मूली न होंगी कि हमारे परमपूज्य गुणादि पुरुष

मगवान् ऋषभदेवने इमी उद्देश (आदर्श) को दुनियाँके सामने रखनेके लिये सर्व प्रथम अपनी ब्रह्मा, सुन्दरी नामकी पुत्रियोंको पढ़ाया था । यूरोपका प्रसिद्ध बादशाह नेपोलियन बोनापार्ट जिसके नामसे यूरोपखण्ड कांपता था उसने एक दफे एक स्त्रीसे पूछा था कि मुझे बतलाओ अच्छे वीर एवं विद्वान सदाचरणी महान पुरुष देशमें कैसे बनाय जाय ? उस स्त्रीने उत्तर दिया था कि स्त्रियोंको इसी प्रकारकी शिक्षासे शिक्षित कर दीजिये । और बात है भी ठीक, क्योंकि देश व समाजकी उन्नति तथा अवनति उसकी भावी सन्ततिपर निर्भर है । यदि सन्तान उन्नत होगी तो वह देश तथा समाज उन्नति करेगा ही करेगा । कारण देश तथा समाज कोई अन्य वस्तु नहीं है । केवल उन्हींका (सन्तानोंका) ही समूह देश तथा समाजके नामसे पुकारा जाता है ।

सन्तानकी उन्नति पूर्णरूपसे माताके आधीन है । सन्तानका जितना अधिक सम्बंध मातासे है उतना और किसीसे नहीं होता है । यदि माता शिक्षिता और धर्मपरायणा होती है तो बालक भी उसीके अनुरूप होता है । परन्तु वर्तमान माताओंको अज्ञानाचार चारों ओरसे घेरे हुए है । मिष्टपात्र और व्यर्थ विचारोंने उनके मनोमें स्थान पा रक्खा है । १०० स्त्रियोंमें शायद ही एक स्त्री धर्मसे परिचित है ।

यदि आप कहें कि सब प्रायः मंदिर जाती हैं, प्रतिदिन दर्शन पूजन करती हैं, स्त्र श सुनती हैं, तीर्थयात्राओंमें अपने संबंधियोंसे रो गाकर एवं अनुरोध कर जाती हैं, बड़े बड़े व्रत पाकती

हैं और अनेक वस्तुएं त्याग करती हैं, इसपर भी तु उनको धर्मशून्य बतलाती है । किन्तु माताओ ! हम लोग सब निसन्देह इन सब कामोंको करती हैं पर हृदयपर हाथ रख सोचकर सच तो कहिये कि वास्तविक श्रद्धान और ज्ञानसे इन कार्योंको क्या आप वा हम करती हैं ? यदि नहीं तो यह सब दिखावेके लिये करना नहीं है तो क्या है ? हम सब मथुरामें गईं तो मथुराबाई और काशीमें गईं तो काशीबाई हैं । हममें अज्ञान एवं मिष्टपात्र कूट कर भरा हुआ है । पीर पैगम्बरोंका पूजन हमारा प्रधान कर्तव्य होरहा है । इसी प्रकार हममें धर्मसम्बंधी तथा नैतिकशिक्षाके न होनेसे हमारे बालक धार्मिक शिक्षासे शून्य एवं नैतिक शिक्षा शून्य होजाते हैं । तथा कई माताएं अपनी शिशु सन्तानको कुमार्गकी तरफ झुकती देखकर दर्प मानती हैं तथा उनको और उत्साहित करती हैं । जैसे पाठशाळाको न मेजना, मां बापको गाली दिखवाना, उनकी मूछें उखड़वाना, गोदमें लेकर अपने गालपर थपपड़ लगवाना । यदि बालक किसीकी चीज़ छीन लाया अथवा मारपीट गाली गलौम कर आया तो उसको उसका दोष न समझा प्रसन्नता जाहिर करना आदि । इसका वह दुष्परिणाम निकलता है कि वे बालक बड़े होनेपर असम्भ, अशिक्षित, निर्लज्ज और चोर होकर देशके लिये रुजनाके कारण होते हैं ।

यूरोपके बड़ेसे बड़े सभवेताओंका कथन है कि बालकोंकी शिक्षा माताओंके द्वारा होती है

इसी लिये उनको प्रथम अध्यापक कहना चाहिये । बालकोंके कोमल हृदयोंपर जैसा माताके आचरण और उपदेशका असर होता है वैसा बड़े १ अनुभवी चतुर अध्यापकोंके उपदेशका भी नहीं होता । जितना बालक दो वर्षमें स्कूलमें सीखता है उतना माता यदि चाहे तो आठ दिनमें सिखा सकती है । अतएव बालकोंके निष्पाप और पवित्र हृदयोंपर शुरूसे जिस प्रकारका मातृ अंकित कर्म दिया जायगा वह जागेके लिये सदैव बढ़ता चला जायगा तथा बड़े होनेपर वह विचार दृढ़ होजायगा । और उसका उनके मनसे निकलना असम्भव होजायगा । अतएव उनकी सम्हालके लिये समयपर बालकपनमें उनके मनोपर उत्तम १ विचार अंकित करनेके लिये माताका सुशिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है ।

यदि सूक्ष्मदृष्टिसे विचार किया जाय तो मातृम पदता है कि लड़केसे लड़कीकी शिक्षा अधिकतर आवश्यक है । क्योंकि संतान पालनकी यथेष्ट जिम्मेवारी वास्तवमें मातापर ही है और इसका समर्थन महापुराणकार भगवान् जिनसेनाचार्य सरीखे पूज्य दिगम्बराचार्योंने भी किया है । भगवान् ऋषभदेव तो इसके मार्ग प्रदर्शक ही थे । वह बड़े २ वेशों और सिद्धान्तवेत्ताओंका मत है कि जिस समयसे बालक गर्भमें आता है उसी समयसे माताका प्रभाव बालक पर पड़ने लगता है । और ९, ६ वर्ष तक उसीके संरक्षणमें बालक रहता है । इसीलिये विद्वानोंने कहा है कि जिस समयसे बालक गर्भमें आता है उसी समयसे गर्भिणीको सुशील स्त्रीपुरुषोंके मनोहर

चरित्र और कथायें पढ़नेको देकर उसके चित्तको प्रसन्न करना चाहिये, जिससे उनके गुणोंका गर्भ पर उत्तम प्रभाव पड़े ।

जन्मसे लेकर ९ वर्षका होने तक बालकोंके निष्पाप पवित्र मनपर धर्म और नीतिके चित्र खींचनेवाली चित्रकारिणी माता बड़ी विदुषी और पंडिता होनी चाहिये, जिससे बालक भी बड़ा पंडित और विद्वान् बन सके । भारतमें जितने नररत्न हुए हैं जबवा विदेशोंमें जो महान् पुरुष पैदा हुए हैं, उन सबके ऊपर प्रथम माताका ही प्रभाव पड़ा था । अमेरिका प्रजातंत्र राज्यके समापति एडमिया साहिबने अपनी पुस्तकमें एक जगह लिखा है कि जब तक इस पृथ्वीपर जितने नररत्न पैदा हुए हैं उनका मुख्य कारण उनकी सुशीला और शिक्षिता मातायें ही थीं । क्योंकि कहा है कि जैसा बीज होता है वैसा अंकुरा पैदा हुआ करता है । तथा जैसा सूत होगा वैसा ही कपड़ा बनेगा इसी प्रकार जैसी माता होगी वैसी ही उसकी संतान होगी । कहावत प्रसिद्ध है कि—“ जैसे जाके बाप मसारी, वैसे बाके लड़का । जैसे जाके नही नाले वैसे बाके भरका । ”

इसलिये यदि माता शिक्षित नैतिक सदाचरण सहित धार्मिक भावनासे युक्त स्वदेशाभिमान युक्त होगी तो उसके लड़के भी वैसे ही सर्वगुण सम्पन्न होंगे । वे धर्म देश जातिपर अपनी जान भी कुर्बान कर देंगे । इसके लिये आपको दूर न जाना होगा । भारतके हृदयसम्राट् मातःस्मरणीय दुःखितोद्धारक महात्मा गांधी ही हैं । यदि उनकी पूज्य मातृश्री इन गुणोंकरयुक्त न

होती तो अपनेको कभी इस प्रकारका आदर्श महान् पुरुष देखने सुननेको नहीं मिलता । दूसरा उदाहरण शौकतअली महम्मदअलीकी पूज्य माता बी अम्मा थी जिनके ये वचन सुवर्णाक्षरोंमें लिखने लायक हैं कि “बेटा ! तुम दोनोंको देशके लिये कुर्बान करते मुझे जो हर्ष होता है वह अवर्णनीय है, देशके साथ दगाकर मुझे मुंह मत दिखलाना ” । ये वीरोत्साहवर्षक वाक्य किसनी ऐसी मातायें हैं जिनके मुखसे सुननेको मिलते हैं सिवाय इसके कि “ बेटा अमुक जगह मत जाना, वहां मृत है । ”

प्यारी बहिनो ! ऊपर मैंने यह बतलानेकी कोशिश की है कि स्त्री शिक्षाकी आवश्यकता क्यों है, पर इसके साथ ही सम्बंध रखनेवाले शिक्षा सम्बंधी प्रश्नको भी कुछ न कुछ हल करना अत्यन्त आवश्यक है । आजकलकी शिक्षासे स्त्रीसमाजने वह भारी मूँछें करदी हैं जिससे देश जातिकी परिस्थितिके जानकार हमारे हितैषी पूर्वजगण हमारी शिक्षा सम्बंधी उन्नतिके बाधक हो गये हैं ।

माताओ ! इसमें कोई सन्देह नहीं कि अपने धर्म, देश, समाज तथा अपनी उन्नतिके लिये, अपने गार्हस्थ्य जीवनको सुखमय बनानेके लिये सन्तानको सुशिक्षित बनानेके लिये हमें शिक्षित होना आवश्यक है । विना शिक्षाके पाये हमारा संसार शान्त और सुखमय नहीं बनसक्ता पर साथ ही यह प्रश्न होता है “शिक्षा होनी कैसी चाहिये ? ” इस समय हमारी शिक्षाके कर्त्तव्यता समाजके नेतागण हैं, वे दो शक्तियोंमें विभक्त

हैं । एक शक्ति तो हमारी शिक्षा दीक्षाको यूरो-पके सांचेमें ढालना चाहती है । वह हमको पुरुषोंके समान स्वतंत्र बनानेमें मस्त है । वे चाहते हैं कि हमारे किसी भी काममें पुरुष रोकटोक न कर सकें, हम अपनी पुरानी नीति रिवाज पड़दा वगैरह छोड़कर पुरुषोंके साथ हाथमें हाथ मिलाये बाजारोंमें घूमती फिरें । हमारी वेशभूषामें नई सम्यता हो, नई चमक दमक हो, हम दूसरोंके साथ हंसी मजाक कर सकें, हम डिगिरियां प्राप्त करें, आफिसमें नौकरी करें, घरगिरस्तीका काम हमें नहीं करना पड़े, चूछेसे सिर नहीं मारना पड़े, सन्तान पालन नहीं करना पड़े । उनकी इच्छा हमें विकासियोंमें पूर्ण रीतिसे पागनेकी है । और असम्य भारतको सम्य यूरो-पके ढांचेमें ढालनेकी है ।

दूसरी शक्ति इसके विरुद्ध है । वह चाहती है भारतका महिलासमाज शिक्षित तो हो पर वह बना रहे भारतीय ही । विदेशी होनेमें भारतकी बरबादी है—गौरव नहीं है । अपनायन भुका देनेसे कोई गौरवशाकी नहीं हो सकता । वह स्त्री शिक्षाके विरुद्ध नहीं पर भारतीयता गमा देनेके विरुद्ध है । वह चाहती है कि हमारा महिला समाज घरगिरस्तीके सब काम करे, जो सदाचार स्वास्थ्य और वार्मिक दृष्टिसे उपयोगी हैं । वही अपनी सन्तानका पालन करे, वह लोक कानको छोड़ निर्लेज्ज न बनें, हमें जरूरत नहीं कि वह भड़कीली सम्यताके मोहमें फंस देशको फेशनके रोगसे तवाह करदे, हमारे पूर्वजों और धर्मशास्त्रोंको पवित्र मर्यादाका भार-

तसे नाम उठादे । वह नहीं चाहती कि हमारी कुलदेवियां बाजारोंमें बेशर्म घूमनी फिरें, आफिसोंमें नौकरी करें । वह कहती है कि प्राचीन कालसे स्त्रीशिक्षाका उद्देश्य धार्मिक वासनाओंका बीज बोकर उसे देश, जातिके उपकारार्थ समर्थ बनानेका है । यदि उनकी शिक्षाका उद्देश्य विदेशों सरीखा प्रायः विलासप्रियताको लिये हुए होता, उसमें धार्मिक संस्कारकी गन्ध न होती तो यवनोंके समयमें आई विपत्तियोंके समय वे अपने धर्मकी रक्षा कदापि नहीं कर सकतीं । हजारों पापियोंको अपने आत्मचरसे रसातलका रास्ता नहीं बतातीं । पर नहीं, उनमें उनके रोम रोममें धार्मिक भाव भरे थे । उससे उन्होंने पापियोंका गर्व नष्ट किया और अपने धर्मकी रक्षा की, और भारतका मुख उज्वल किया । इसी लिये भारत ही क्या पर यूरोप भी उन देवियोंके गुणोपर मुग्ध है । और वे आज भी समाजमें भारतीय रमणिके नामसे पुकरी जाती हैं । हमी लिये हमारी कुल महि-
लायें भारतीयता ही को अपनावें और अपने पवित्र गुणोंद्वारा भवी मन्तानकी आदर्श बन-
कर भारतको और अधिक गौरवशाली बनावें । हमसे मेरी सम्झने दूररी शक्तिके विचार ही बह्याणकारी हैं । बहिनो ! भारतका भागीयतामें ही बह्यण है । आज्ञा है आप लोग इन विचारोंसे सहमत होंगी तथा हम तरफ बह्य देकर इस काममें अपनी बहिनोंका हाथ बटवेंगी इसीमें अपनी जातिका तथा अपना बह्यण है ।



महिला-महत्त्व ।

(ले०-रंगलाल भंवरलाल जैन-उदयपुर)

सज्जनो ! इस कोनेसे उस कोनेतक पूर्वसे पश्चिम और उत्तरसे दक्षिण तक चहुंभोरसे यह निनाद कर्णगोचर हो रहा है कि उन्नति करो । इसप्रकार कहना जितना सरल है उतना ही कार्यरूपमें परिणत करना कठिन एवं टेढ़ी खीर है । इस प्रश्नको हल करनेके पहले हमको इस बातपर ध्यान देना होगा कि इन आवाजोंके उठनेका क्या कारण है । क्या वास्तवमें समाज उन्नति पथसे विपरीत अवनति मार्गपर है या नहीं ? उत्तरमें निःसंकोच कहना होगा कि अवनति ही नहीं परन्तु मरणोन्मुख दशा हो रही है; और इसका प्रधान कारण स्त्री समाजका अरना कर्तव्यच्युत होना है । अशिक्षाका साम्राज्य जो दृष्टिपथ हो रहा है उसका उल्लेख करना अग्नी ही ज्ञांघ उवाड़ना है । दुर्भाग्यसे स्त्री समाजके चित्तको हतोत्साही एवं मूर्ख रखनेकी चेष्टा करनेवाले व्यक्तियोंकी भी भरमार है । सौभाग्यसे स्त्री समाजको सुपथ एवं कर्तव्यनिष्ठ बनानेका पथन करनेव ले कोई विगले व्यक्ति मिल भी जायें तो रूढ़ियोंके फीर चट जहरी विगोष करनेको अपनी र कम्बी चौड़ी वक्तृता शुरू कर देते हैं, जिससे स्त्री समाजमें कर्तव्य-परायणता एवं समाजसेवाके भाव ज गृत भी हों तो वह रुक जाते हैं ।

हमारे विचारसे तो स्त्रियोंको भी उतनी ही अधिकार हैं जितने कि पुरुषोंको। हां स्त्री शक्तिकी अपेक्षायोग्य संहनन न होनेसे मोक्ष नहीं जासकती पर आर्यिका वृत्रघारण कर स्वर्गकी अधिधारिणी तो बन सकती है। (फिर भी संहनन आजके जमानेमें तो दोनोंके समान ही हैं) मैनासुन्दरीने जिनेन्द्रभगवानकी अभिषेक पूर्वक पूजा की और गंधोदकसे अपने प्राणप्यारे कोटिभट राजा श्रीपालका कोड़ दूर कर निरोग किया था। स्त्रियोंके लिये पूजन करनेका विधान कई शास्त्रोंमें मिलता है और पूजन प्रक्षालपूर्वक ही होती है, कहीं भी शास्त्रोंमें यह उल्लेख नहीं मिलता कि बिन अभिषेकके पूजन की जाती है। इसलिये जो भाई स्त्रियोंके पूजन प्रक्षाल करनेका निषेध करते हैं वे स्त्रियोंके धार्मिकसत्त्वोंको छीननेकी चेष्टा करते हैं। अष्टसमानके मुख्य दो अंग हैं—पुरुष और स्त्री। यद्यपि इसमें सन्देह नहीं कि सन्तान पैदा करनेमें पुरुष बहुत कुछ अपेक्षा रखता है पर स्त्रीका जितना सन्तानके बुद्धिरत्न एवं अंगोपांग पर असर पड़ता है उतना पुरुषका नहीं। इसलिये स्त्री समानका बहुत कुछ महत्व होना चाहिये। संस्कृत काव्योंको आद्योपान्त पढ़ा जाय तो स्पष्ट विदित होजाता है कि षडे २ कालीदास, भारवी, दण्डी आदि कवियोंने अपनी कृतियोंका महत्व स्त्रियोंके गुणदोष वर्णनके बहानेसे ही प्रकट किया है। ये कविगण अनैन है इसलिये शायद जैन समान इस कथनको उपेक्षाकी दृष्टिसे देखेगा, उसके समक्ष कुछ जैन आचार्योंके नाम प्रकट करते हैं जैसे—जबसेन, गुणभद्र, सिद्धसेन,

द्विवाकर, बादाभिदिह, हरिश्चंद्र, सोमदेव आदिकी कृतियों भी स्त्रियोंके महत्व प्रकट करनेमें कम नहीं हैं। रानी प्रियधारिणीको राजदरबारमें जानेपर राजा सिद्धार्थने बैठनेके लिये आवा आसन दिया। देखिये उत्तरपुगण।

राजगृहीके राजा सत्यन्वरने विजयाको राजदरबारमें बैठनेके लिये आवा आसन दिया जिसने जीवंधर जैसे मोक्षगामी सत्पुरुषको पैदा किया। देखो अत्रचूडामणी कर्म प्रथम। मानतुंग स्वामीने भगवान आदिनाथके बहानेसे किसप्रकार उनके माताके महत्वको प्रकट किया है। देखो आदिनाथ स्तोत्र काव्य २१। राजा राजचंद्रजीने किसप्रकार सीताजीका सम्मान किया। इसी प्रकार सती मैना, अंजना, द्रौपदी, राजुरु आदि स्मणियोंकी जीवनियों हमको स्पष्ट बतला रही हैं कि उन्होंने अपने गुणोंसे अपनेको ही उन्नत नहीं किया प्रत्युत सारे भारतको मुकुटायमान बना दिया। इस पुण्य भारत बरातकपर पतिसेवा, पितृसेवा, दाम्पत्यसेवा, भोजन पाक जन, शील, सहनशीलता, कार्यदक्षता, मितव्ययिता, गृहप्रबंध, शास्त्रार्थ आदिमें एकसे एक बढ़कर नारियें अवतीर्ण हुई हैं। इस भारतवर्षमें कई ऐसी लकनाएं पैदा हुईं जिनका आदर्श गुणानुवाद अब भी स्तवनगोचर होरहा है। उसमेंसे कुछ उदाहरण हम आपके समक्ष प्रकट करनेका प्रयत्न करते हैं। सत्यभामा शास्त्र में साक्षात् सरस्वती ही थी। देखो प्रद्युम्नचरित्र पर्व २ श्लोक ९९। रुक्मणीने श्रीकृष्णको शिशुगलके युद्धावसर पर रथ हांक कर सारथीपनेका काम दिया।

रानी कैकयिका राजा दशरथको संकटके समय रथ हांककर मदद देना सुप्रसिद्ध ही है। इन उदाहरणोंको पाठकगण कदाचित् पौराणिक धर्म-शास्त्रका ढकोसला समझेंगे इसलिये कुछ अर्वाचीन समयके उदाहरण देवेना ठीक समझते हैं। महारानी पद्मावतीने पातिव्रत धर्मकी रक्षार्थ प्रचण्ड अग्निमें प्रवेश किया, पर जीतेजी अला-उद्दीनको अपनी नजरके नीचे न आने दिया। झांसीकी रानी लक्ष्मीबाईने किस प्रकार अपने बुद्धिबलद्वारा राज्य प्रबंध रखा और वीरतासे युद्ध किया। इधर महाराणी अहल्याबाईने स्वदेश रक्षार्थ कितनी बडाइयां कड़ी और अपने शासनकालकी राज्य प्रबंधकी शैलीको चहुं ओर फैलाया। प्रसिद्ध इतिहासकार पंडित गौरीशंकरजी ओझाने राजपूतानेके इतिहासमें लिखा है कि राजपूतानेमें महिलाओंका अधिक सम्कार रहा है और वे ही वीर माताएं, वीर पत्निएं कहलानेका गौरव रख सकती हैं। देखो History of Rajputana, Part first Pages 76. दि० जैन धर्मके अनुयायी सम्राट चंद्रगुप्त मौर्यके शासन कालमें स्त्रियोंका पूरा विश्वास रहता था, उसके दरबारमें रहनेवाले एक यूनानी दूत मॅगास्थिनासनेउसके शासनकालका उल्लेख करते हुए Early History of India में लिखा है कि जब राजा महलके बाहिर जाता तो बहुतसी स्त्रियां उसके शरीरके निकटतम रहती थी और उसके घेरेके बाहर शस्त्र भाला लिये पुरुष रहते थे। वीरवर दाहिर देशपत्तिकी रानी काङ्गीकी वीर-ताका उल्लेख करते हुए फिरिस्ता लिखता है

कि जब जब सेनापति मुहम्मद बिन कासिमने युद्धमें सिबके राजा दाहिरको मारकर उसकी राजधानीपर अधिकार कर लिया और दाहिरका एक पुत्र विना युद्ध किये भाग निकला। इस-समय उसकी माता काङ्गी कई हजार राजपुत सेना साथ ले पहले मुहम्मद कासिमसे सरे मैदान लड़ी। देखो ब्रिग फिरिस्ता जि० ४ पृ० ४०९।

चौहान राजाने जब चंदेलके राजा परमर्दि देवपर चढ़ाई की तो उसके विषयमें यह कहा जाता है कि इस समय उक्त राजाके सामन्त आरहा व ऊदल वहां उपस्थित नहीं थे। वे किसी बातपर स्वामीकी अपसन्नताके कारण कलौजके राजा जयचंदके पास जा रहे थे। पृथ्वी-राजकी सेनासे अपनी हानि होती देखकर चंदेल राजाकी रानीने आरहा व ऊदलको बुलानेके लिये दूत भेजे। परन्तु उन्होंने अपने स्वामी द्वारा किये हुए अपमानका स्मरण कर जानेसे इन्कार किया। उस समय उन वीरोंकी माताने जो शब्द अपने पुत्रोंको कहे थे उसे सुनकर पाठकगण सहसा अनुमान कर सकते हैं कि वे अपने प्राणोंसे प्यारे पतिदेव एवं पुत्रोंको युद्ध-क्षेत्रमें भेजती थीं। उसने आरहा व ऊदलको सम्बोधन कर कहा है कि—हाय विधाता ! तूने मुझे वांछ ही क्यों न रखा ? क्षत्रिय कुलकी मर्यादा उल्लंघन करनेवाले कुपुत्रोंके होनेसे तो वांछ रहना कई दर्जे श्रेष्ठ है। धिक्कार है उन क्षत्रीपुत्रोंको, जिनका स्वामी संकटमें पड़ा हो और आपसुलकी नींद सोवे। जो राजपुत मरने मारनेसे डरकर संकटके समय स्वामीकी सहा-यताके लिये अपना शिर देनेको तत्पर नहीं

होता वह असलका बीज नहीं है । हाय ! तूने इस वंशकी सन कीर्ति डूबो दी ।

महाराणा रायमलके पाटवीपुत्र पृथ्वीराजकी पत्नी तारादेवीका पतिके साथ टोड़े जाकर पठानोंके साथ युद्धमें स्वामीकी सहायता करना सुपसिद्ध ही है ।

मारबाड़ राजा जसवंतसिंहजी जब औरङ्गजे-बसे हार उज्जैनके रणक्षेत्रसे भाग अपनी राजधानी जोधपुरको लौट रहे थे उस समय उनकी पटरानीने गढ़के द्वार बंद करवाकर राजाको भीतर बैठनेसे रोक दिया था देखो—*Tod Rajasthan book 2 Page 724.*

रायसेनका राजा सलहदी पुरविया (नम्बर) जब सुकतान बहादुर शाह गुजरातीसे परास्त हो मुसलमान होगया और तोर्पोकी मारसे २ बुर्ने उड़ गई, उस समय सलहदीने सुकतान बहादुर शाहसे कहा है कि आप मेरे बालबच्चे और स्त्रीको न सतावें, मैं गढ़में जाकर कड़ाई बंद करवा दूंगा । सुकतानने एक सिपाई साथ लेकर गढ़पर भेजा । उसकी रानी दुर्गावती (जो राणा सांगाकी पुत्री थी) ने अपने स्वामीको देखते ही धिक्कारना प्रारम्भ किया और कहा कि इतनी निर्केतव्रताके बजाय तो मर जाना श्रेष्ठ है ! मैं अपने प्राण त्यागती हूँ यदि तूमें राजपुत्रत्वका स्वाभिमान है तो मेरा वैर शत्रुसे लेना । इस प्रकारके वाक्य राजाको बज्रपातके समान मालूम हुए और तत्काल १०० राजपूत जवानोंको साथ ले शत्रुसे जाभिड़ा और इधर राणी दुर्गावतीने ७०० वीर पत्नियों एवं दो बालकोंको लिये प्रचण्ड अग्निमें प्रवेश किया ! देखो *Brig firista*

book 4 Pages. 122.

द्वारे सज्जनों ! इस प्रकार कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहां हर एक व्यक्तिके चितमें यह भाव जाग्रत होसकते हैं कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।'

चर्मनिष्ठ सज्जनों ! उक्त परिस्थिति और आधुनिक समयपर तुलनात्मक विचार प्रकट किये जायें तो कहना होगा कि पूज्यताके बजाय पैरोसे टुकराई जानेका दृश्य नजर आरहा है । पहले तो हमारे मात पिता ही पुत्र पुत्रीके पावनमें अन्तर ढाल देते हैं । बात २ पर हमारी माताएं पुत्रीको यह कहकर सुनाया करती हैं कि तू क्या निहाळ करेगी ? आदि वाक्यपहारों द्वारा कन्याके खिलते हुए हृदयकमलको मुरझा ढालती हैं । यहांतक कि पुत्रको सबसे अच्छी चीज देती हैं और पुत्रीको सूखी बाती रोटी ! छोटा माई बड़ी बहिनके शिरमें मारदे तो कुछ नहीं कहती और यदि इसके उपलक्षमें बड़ी बहिन छोटे भाईको मारदे तो हमारी माताएं बहुत बुरी तरह बिगड़ने लगजाती हैं । इससे कन्याके हृदयमें कैसे भाव पैदा होसकते हैं सो इस प्रश्नको हम पाठकोंके विचारार्थ यहांही छोड़ते हैं । हमें आश्चर्य इस बातका है कि क्या हम इसको माता पिताका सन्तानके प्रति अनुराग कहें किंवा स्वार्थ ! जिस माताके उदरमें पुत्र ९ माह रहता है उतनीही पुत्री, जितना प्रेम पुत्र प्रदर्शित करता है उससे बढ़कर पुत्री । यह रूपाळ करना असत्य है कि पुत्र हमारा नाम चलावेगा और पुत्री दूसरेकी घरकी अधिकारिणी होगी । परन्तु उनको विचारना चाहिये कि विना कन्याके कोई वंश चक

सकता है ? प्राण जाते भी वे पितृभक्ति मातृभक्तिसे क्युत नहीं होती । इसलिये पुत्रोंसे तो पुत्री भी कई दर्जे श्रेष्ठ है । ऐसी हालतमें हमारे माता पिताका सन्तान पालनमें पक्षपात करना मूर्खता है । उनका कर्तव्य है कि समान रीतिसे पालन पोषण करें एवं शिक्षामें भी समान वर्ताव करें ।

शिक्षाके प्रतापसे विनय, विनयसे पात्रता और पात्रतासे धन, धर्मकी प्राप्तिसे स्वर्ग दिखता है, कलह दूर भगती हैं, लक्ष्मी और सरस्वतीकी झूट कृपा रहती है । एक कविका कहना है कि “जहां सुमति तहां सम्पति नाना, जहां कुमति तहां विपति निदाना” इस वाक्यसे यह और भी स्पष्ट होजाता है कि एकता और दाम्पत्य प्रेमके लिये स्त्रियोंको पढ़ाना अनिम ही नहीं प्रत्युत अनिवार्य है । भगवान ऋषभदेवने सबसे प्रथम अपनी ब्राह्मी और सुन्दरी नामकी कन्याको पढ़ाया इसलिये लड़कियोंको पढ़ाना कोई नवीन बात भी नहीं है । इस बातपर यह प्रश्न उठ सकता है कि पढ़ाना तो कौन २ विषय, और पाठनशैली कैसी होनी चाहिये । धर्माचरणके लिये गृहस्थधर्म, लिपि ज्ञान, वैद्यक, शिल्पकला एवं कुछ गणित पढ़ाना आवश्यक है । जिससे सब कार्यं सम्हाल सके ।

इसलिये अथ प्यारी बहिनो ! उठो आप अपने स्वारामभिमानको पुनरुज्जीवित करो । शिक्षाके प्रचारमें अग्रगामिनी बनो और अपने जीवनको आदर्श समझो । आरको अपना जीवन “कार्येषु मन्त्री कारणेषु दासी, मोक्षेषु माता रमणेषु रम्भा” के माफिक बनाना चाहिये, फिर देखिये इस देशका अस्थान कैसे नहीं होता ।

जैनधर्म ही * * * सुखका साधन है ।

(लेखक—श्री० पं० वृजवासीलालजी जैन,
प्रकाशक—“वीर,” मेरठ) ।

आज संसारमें जीवतत्वके विषयमें बहुत कुछ मतभेद है । सबसे बुरा रिवाज हमारे देशके विद्वानों तथा सामान्य पुरुषोंमें यह पड़ गया है कि जिस सिद्धांतको पाश्चात्य लोग स्वीकार करलें वह सत्य है, शेष असत्य हैं । ऐसा होनेका कारण ये बताया जाता है कि वे लोग किसी बातको अन्धविश्वाससे नहीं मानते किन्तु उसे प्रत्यक्ष कर देख लेते हैं । परन्तु बग कारण भी ठीक प्रतीत नहीं होता क्योंकि वैज्ञानिक नियम भी बहुतसे बदलते जा रहे हैं । जिनके लिये किसी समयमें ये घोषणा की गई थी कि ये नियम अंतिम हैं अर्थात् इनमें अब तब्दीली कभी नहीं होगी वे ही नियम कुछ समयके बाद और विद्वानोंने पकट दिये और संसार अब उन्हें ही मान रहा है । जैसे परमाणुके विषयमें प्रथम जो मत था अब उसके विरुद्ध किन्हीं विद्वानोंने यह घोषणा की है कि प्रथम जितना परमाणु माना जाता था उसमें भी असंरूपत विद्युत्करण हैं और मध्यममें बहुत बड़ा विद्युत् केंद्र है । इत्यादि बहुतसे नियम बदलते रहते हैं इसलिये उनके सिद्धांत ही सत्य है यह कैसे विश्वास किया जावे ?

पाश्चात्य विद्वानोंने तीन प्रकारके विकास माने हैं—पौद्गलिक विकास १, जीवन विकास २,

मानसिक विकाश ३, पौद्गलिक विकाशमें उन्होंने यह बतलाया है कि पुद्गलका स्वभाव परिवर्तनशील वा गतिमान् है । उसमें गति होनेके कारण गति होते २ सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्रादि दृष्टिमय जगत् स्वयं बन गया । ये वृश्चना फ्रान्सके विद्वान् लाप्लासने की थी और यह कहा था कि इस जगत्का मूल उपादान कारण एक द्रव्य था जिसका नाम नेबुला (Nebula) बतलाया था और उसमें परिवर्तन होते २ यह सब जगत् बन गया । परन्तु उन्होंने यह नहीं बतलाया कि जिस कालमें आपने इसे नेबुला रूपमें माना है क्या उससे प्रथम समय नहीं था ? या इसमें परिवर्तन शक्ति नहीं थी ? यदि थी तो वह कौनसी अवस्थाका परिवर्तित रूप था और उससे प्रथम क्या था ? ये प्रश्न निरंतर होता ही चला जायगा जिसका परिहार वे कुछ नहीं कर सकें । इस विषयमें निर्दोष सत्य सिद्धान्त यही है जो भगवान् जिनेन्द्रदेवने प्रतिपादन किया है अर्थात् पुद्गलकी पर्यायें दो प्रकारकी हैं—अनादि अनन्त, और सादि सान्त । सूर्य चंद्र गृह नक्षत्रादिककी पर्यायें अनादि अनन्त हैं । इतर पदार्थोंकी पर्यायें सादि सान्त हैं ।

जीवन विकाशमें बहुतसे विद्वानोंके बहुतसे मत हैं परन्तु इन सबमें विशेष आदर प्राप्त मि० डार्विनको है जिन्होंने ये सिद्ध करनेकी चेष्टा की है कि सबसे प्रथम एक शरीरमें जीवन उत्पन्न हुआ उसके बाद बहुतसी योनियां बन गईं और विकाश होते २ अंतिम विकाश

मनुष्य शरीर है । वर्तमानमें बहुतसे पञ्चात्य विद्वान् संशोधित रूपमें इस सिद्धान्तको स्वीकार करते हैं । मि० डार्विन भी विकाशवादी हैं । लेकिन जब मि० डार्विनके सिद्धान्तों पर विचार किया जाता है कि जिन समय प्रारम्भमें जीवन उत्पन्न हुआ उस समय जिस काल रसके योगसे जीवनशक्ति उत्पन्न हुई उससे पूर्व समयमें वो शक्ति थी या नहीं ? यदि नहीं थी तब आई कहाँसे, यदि थी तब प्रथम जीवन क्यों नहीं था ? यदि यह कहा जावे कि रस तो था परन्तु उस रसमें जो चार तत्व हैं—१ कार्बन, २ हाइड्रोजन, ३ ओक्सिजन, ४ नाइट्रोजन इन चारोंकी जितने १ अंशकी आवश्यकता है उतने २ अंशमें नहीं मिली इसलिये जीवन नहीं उत्पन्न हुआ । तब प्रथम बात तो यह है कि जिन मि० इक्सेलने इस रसका प्रयोग-शास्त्रमें प्रयोग करके इन चार तत्वोंका अनुमान किया है वे इनको निर्जीव मानते हैं । दूसरी बात यह है कि मि० डार्विनके अनुमानसे पूर्व कभी योग्य अंशोंमें मिला ही नहीं, इसका क्या पमाण ? यदि उसी समय मिला तो क्यों और किसने मिलाया ?

तदनन्तर उनका जो यह मत है कि प्रथम सूक्ष्म कीटाणु हुये फिर कुछ बड़े मनुष्य हुये फिर सांप हुये फिर रीढ़वाले पशु हुये फिर बन्दर हुये फिर मनुष्य हुये ! यहाँपर प्रथम तो यह विकाशक्रम ही ठीक नहीं बनता क्योंकि विकाशक्रम शरीरकी लंबाई चौड़ाईसे है या दृढ़तासे है या ज्ञानसे है ? कोई भी क्रम नहीं

बनता और मानवी विकास हुये तो बहुत समय होचुका । अमेरिकामें खुदाईके समय जो ३॥ फीटकी मनुष्यकी खोपड़ी निकली थी, जिसको मूगभंके शास्त्रवेत्ताओंने दस हजार वर्षकी निश्चित की थी और संभवतः उससे प्रथम भी मनुष्य होंगे । फिर इतने दिनोंके विकासके बाद और कुछ नया विकास क्यों नहीं हुआ ? ये जितना जीवन संबंधी विकास बाद है समस्त भ्रममूढक है किन्तु भगवान् जिनेन्द्र द्वारा प्रतिपादित यही सिद्धान्त सत्य है कि ये जीव अनादि कालसे कर्मोंके बलमें पड़ा हुआ चार जाति सम्बन्धी चौरासी काल योनियोंमें जन्म मरण करता रहता है। जिसमें ये कोई क्रम नहीं है कि इस शरीरके बाद वह शरीर धारण करना पड़ेगा किन्तु अब जैसे कर्म करता है तब वैसा शरीर धारण करता है ।

मनोविकाशके संबंधमें मि० हर्वर्ट स्पेन्सर आदि विद्वानोंने ये विचार प्रकट किये हैं कि जिसप्रकार मि० डार्विनने जीवन विकासका क्रम माना है उसी प्रकार मनोविकाश वा ज्ञानका विकास होता जाता है, जिसका क्रम यह बतलाते हैं कि पशुओंसे ज्यादा ज्ञान असम्य अंगली मनुष्योंमें था और वह विकास होते २ आजकालके मनुष्योंमें और भी ज्यादा है । परन्तु ये नियम भी भ्रममूढक है । क्योंकि प्रथम ये क्रम ही नहीं बनता कि पशुओंसे सब ही मनुष्योंमें ज्ञान विशेष होता है क्योंकि समाचार पत्रोंसे पाठकोंको ज्ञात होगा कि जर्मन युद्धके समय कबूतरोंने कितने बुद्धिमानीके कार्य किये थे । एकवार हिन्दी बंगवासीमें निकला कि अमेरिकामें एक घोड़ा ऐसा है जिसके

सामने संख्या कितनी देनेसे वह पैरोसे जोड़ लगा देता है । कुत्ता बंदरोंकी भी बहुतसी क्रियायें ऐसी हैं जिनको सामान्य मनुष्य नहीं कर सका । ये क्रमविकाश मनुष्योंमें भी ठीक सुच-टित नहीं होता । क्योंकि ये विकासक्रमसे होता ही आता तो पितासे पुत्र विशेष ज्ञाता होता और विकासक्रम यह स्वाभाविक है तब इतने स्कूल कॉलेज इत्यादि बनानेकी कौन आवश्यकता है ? जितने मनुष्य हैं सब ही समान ज्ञानी होने चाहिये, ऐसे मनुष्य क्यों हैं जिनको पढ़ानेके लिये बहुत प्रयत्न करनेपर भी वे पढ़ नहीं सके ? वर्तमान संसारमें अज्ञानी होना ही नहीं चाहिये परन्तु बहुतसे महामुढ मनुष्य उपस्थित हैं इत्यादि । इस सिद्धान्तमें भी भगवान् जिनेन्द्र-देवद्वारा प्रतिपादित यही सिद्धान्त सत्य है कि इस जीवका स्वभाव ज्ञान है परन्तु इस ज्ञान गुणको आवरणित करनेवाले ज्ञानावरणीय कर्म हैं, जिनका क्षयोपशम होता रहता है उतनाही ज्ञान विकसित होता रहता है और जितना ज्ञानावरणीय कर्मका उदय होता है उतनाही ज्ञान आवृत होनाता है अर्थात् ज्ञानके विकास तथा हासमें कोई क्रम कारण नहीं है किन्तु ज्ञानावरणीय कर्म है ।

विकासवादका सिद्धान्त ही भ्रममूढक है क्योंकि प्रत्यक्ष वाचित है । एक ही पदार्थमें विकासके बाद पतन होजाता है । इस विषयमें भी भगवान् जिनेन्द्रदेव द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त सत्य है कि समस्त पदार्थोंमें षट्गुणी हानि वृद्धि होती रहती है, न सदा हानिही होती है न सदा वृद्धि ही होती रहती है । अस्तु !

मेरे लिखनेका यह अभिप्राय नहीं कि पाश्चात्य विद्वानोंके मत मानना ही नहीं चाहिये किन्तु मेरा अभिप्राय यह है कि जैसे इतिहासवेत्ताकी सम्मति गणितशास्त्रके सिद्धान्तोंमें मान्य नहीं हो सकती, इसीप्रकार पाश्चात्य विद्वान् केवल पौद्गलिक पदार्थोंको ही अपनी रसायनशास्त्राओंमें प्रयोग करके उसकी शक्तियोंको परिज्ञान कर रहे हैं इसलिये पौद्गलिक पदार्थोंके विषयमें उनकी सम्मति हमको मान्य है । परन्तु जीवतत्त्व जो पुद्गलसे सर्वथा भिन्न पदार्थ है उसके विषयमें उनकी सम्मति हमको माननेकी आवश्यकता नहीं है । जीवतत्त्वके विषयमें भारतीय सिद्धांतोंमें भी कुछ मतभेद है । न्याय सांख्य वेदांत मीमांसा योंप वैशेषिक दर्शनकारोंने तथा वेदोंने जीवतत्त्वका स्वतंत्र लक्षण कहीं भी नहीं किया, एक परमात्माकी सत्ता ही स्वीकार की है । केवल वैशेषिक दर्शनकारोंने आत्मा एक द्रव्य माना है परन्तु उसका लक्षण निर्देश कुछ नहीं किया, केवल जीवित शरीरकी होनेवाली क्रियाओंको उसके चिह्न बतलाये हैं । इन्हीं दर्शनकारोंने उस परमात्मशक्तिको ईश्वर ब्रह्म पुरुष आदि कई नामोंसे कहा है । और उसे मायासे प्रकृतिसे वासनासे कर्माक्षयसे संबंधित अवस्थामें जीव कहकर और शुद्ध अवस्थामें ईश्वर वा ब्रह्म कहा है । जब इन सिद्धान्तकारोंने जीवतत्त्वका कुछ लक्षण निर्देश ही नहीं किया तब उसपर विचार ही क्या होसکتा है ?

कुछ विद्वानोंका मत है कि ईश्वरका लक्षण सत्त्विक आनन्द है और जीवका लक्षण रुतचित्त

है । सत्का अर्थ है सत्ता वा अस्तित्व । चित्तका अर्थ है चैतन्य अर्थात् जीव नित्य और चेतनावान् है । इस लक्षणमें जीवमें आनन्द गुणका अभाव बतलाया गया है । जिस पदार्थमें जो शक्ति होती है वह ही व्यक्त होसکتी है, जो शक्ति नहीं होती वह व्यक्त भी नहीं होसکتी; इसीलिये जीवका मोक्षादिके लिये प्रयत्न करना व्यर्थ है । यहांपर वे विद्वान यह कह देते हैं कि जीव मोक्षावस्थामें परमात्माका विशेष सन्निधिकरण होनेके कारण परमात्माके आनन्दगुणका उपयोग करता है । परन्तु उनका यह कथन दार्शनिक विचारवालोंके मनुस्य हास्यास्पद है क्योंकि किसी द्रव्यका गुण किसी द्रव्यमें नहीं जाता । यदि ऐसा होने लगे तो द्रव्य शांकर्य दोष जानाता है, जिसका परिहार किसी प्रकार भी नहीं होसکتा । और न किसी पदार्थका कोई लक्षण ही निश्चित होसکتा है । जिस गुणकी मुख्यतासे जान किसी पदार्थका लक्षण किया जाता है वह वही गुण दूसरे पदार्थमें चला जाता है ।

यदि विशेष सन्निधानसे ही किसी द्रव्यका गुण किसी द्रव्यमें चला जाता है तो नई पुद्गलका विशेष सन्निधान होनेसे इसका जडत्व धर्म भी जीवमें जासکتा है । इत्यादि अनेक दोष उपस्थित होते हैं । सुख गुणका ज्ञानके साथ अविनाभावी संबंध है । चार्वाकादि मतवालोंने जो स्वतन्त्र जीवतत्त्वके होनेका निषेध किया है उसपर विशेष विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है । जीवके नित्य स्वतन्त्र होनेके वर्तमानमें बहुतसे प्रत्यक्ष

प्रमाण हैं । कई समाचारपत्रोंमें यह सचाचार छपते रहते हैं कि अमुक शहरमें किसी २ बाककने अपने पूर्वजन्मके वृत्तान्त बहे और सर्वथा सत्य निकले । इसप्रकार प्रत्यक्ष प्रमाण होनेपर अनुमान प्रमाणकी आवश्यकता ही नहीं रहती । पृथिव्यादि जिन पंचतत्त्वोंके संयोगसे चेतनाशक्तिकी उत्पत्ति कही जाती है वह किसी प्रकारसे भी सिद्ध ही नहीं होती । जब चार्वाकोंका ये सिद्धान्त है जो गुण है, वह ही द्रव्योंसे स्वयं संबंधित होकर पदार्थ बनजाते हैं, पदार्थोंका कर्ता कोई नहीं, पदार्थ स्वयं बन जाते हैं, तब चेतना गुण भी जिस द्रव्यसे संबंधित होजाता है वह ही जीव माया स्वतन्त्र पदार्थ है ।

इसप्रकार जीवसंबंधी जैनदर्शनेतर विद्वानोंके विचारोंपर विचार करनेसे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि किसी भी विद्वानने जीवतत्त्वके स्वरूपको यथार्थ प्रतिपादन नहीं किया अतएव यह स्वयं सिद्ध है कि भगवन् जिनेन्द्रदेवके द्वारा प्रतिपादित ज्ञान दर्शन सुख प्रत्यक्त चारित्र्य वीर्यादि अनन्त-गुणोंका अखंड पण्ड बनादिनिघन चेतना पुन है यही वास्तविक जीवतत्त्वका स्वरूप है इसी प्रकार तमाम सत्यार्थ तत्त्वोंके प्रतिपादन करनेसे जैनधर्म ही सुलका कारण है ।

पवित्र व स्वदेशी—

काश्मीरी केशर—

तैयार है । मूल्य भी कम १॥५) फो तोला ।

विछाद्यती अपवित्र केशरका वर्तमान कर्के यही उत्तम स्वदेशी काश्मीरी केशर ही मंगाइये ।

मैनेजर, दिगम्बर जैन पुस्तकालय—सुरत ।

जाति सुधार ।

कीजे जाति सुधार सुधीजन, कीजे जाति सुधार;

कुमति रूढ़ियोंने आ घेरा,
निज कर्तव्योंसे मुंह फेरा ।

इससे आज भटकते फिरते, दीन हुये हर द्वार ॥

बालविवाह खुशीसे करते,
जरा न शंका है मन धरते ।

अह करते अनमेल शादियां, बड़े सरदार ॥

नित बूढ़ोंका व्याह रचाते,
कन्या विक्रयको अपनाते ।

बिन रोके इन कुरीतियोंके, नहीं होगा उद्धार ॥

आपसमें जो लिडा हुआ है,
योग विजातिय पडा हुआ है ।

आर्ष प्रणीत बचनपर फिर तुम, क्यों करते तकरार

नित प्रति झगड़े नये हैं होते,
टांग पसारे तुम हो सोते ।

कुड़ची जैसे जुलम देखकर, क्यों न करते विचार

सभा सम्मेलन हो नित करते,
नये २ प्रस्ताव सुधरते ।

फिर भी दिखाता भियवर, कोई जाति सुधार ॥

बन्धु हपारे भूखों मरते,
विद्या बिन जहं तहं वे फिरते ।

दे करके सदज्ञानामृतको, कीजे ज्ञान प्रचार ॥

धर्म अहिंसा परमो धर्माः,
फैलादो घर २ यह मर्मा ।

फहरावे पुन औरपताका, ग्राम देश प्रति द्वार ॥

हिलामेल करके हृदय मिलाओ,
द्वेष भावको दूर भगावो ।

करके पूरा जाति संगठन, कीजे 'देव' सुधार ॥

बाबू छंकोडोलाल जैन—गोदोटारिया ।

सञ्जे वरि ।

(रचयिता-पं० कल्याणकुमार जैन " वृशि ", रामपुर ।)

(१)

प्राण यदि जावें भले पर धर्मका क्यों ओत हो ?

भाव हार्दिक हैं यही जिनधर्मका उद्योत हो ॥

इसलिये मेरी न तुम हे बन्धुवर ! चिन्ता करो ।

जैन धर्म प्रकाश हित निज प्राणकी रक्षा करो ॥

(२)

होगये सहसा विकल अकलंकजी इस बातसे ।

तुरत यों कहने लगे कम्पित गिरा लघु भ्रातसे ॥

लोचनोंके सामने क्या बन्धु मरने दूं तुझे ?

हाय ! क्या बनकर निठुर तन साग करने दूं तुझे ॥

(३)

अन्य जगकी वस्तुएँ तो प्राप्त होसकती सभी ।

क्या सहोदर भ्रात भी फिर विश्वमें मिलता कमी ?

पुत्र मित्र कलत्र इनका निस्य मिलना सिद्ध है ।

भ्रात मिलता है न फिर यह बात लोक प्रसिद्ध है ॥

(४)

तर्क सुन अकलङ्कका निकलङ्क मौन खड़े रहे ।

फिर तुरन्त विचार कर मृदु वैन यों सादर कहे ॥

धन्य है जगमें वही जो धर्म खो सकता नहीं ।

धर्मसे बढ़कर परम प्रिय भ्रात होसकता नहीं ॥

(५)

जन्म लेकर कौन जगतीर्ष नहीं मरता कहो ?

किन्तु अबसरका मरण सौभाग्यसे मिलता अहो ॥

धर्म पक्ष समक्ष मत प्रिय बन्धुमें ममता धरो ।

हो भला जिनधर्मका, हे भ्रात कार्य वही करो ॥

नेपालके शिलालेख और जैनधर्म ।

(लेखक—बाबू कामताप्रसाद जैन, सम्पादक—“बोर”, अलीगंज ।)

जैनशास्त्रोंमें कहा गया है कि भगवान महा-वीरने कैवल्यपद प्राप्त करके समग्र भारत और उसके आसपासके देशोंमें पवित्र धर्मका प्रचार किया था । और फिर उसी धर्मका प्रचार जैन-चार्योंने यूनान आदि दूरस्थ देशोंमें जाकर कर दिया था । जैनियोंकी इस मान्यताके प्रमाणमें आधुनिक खोजद्वारा प्राप्त उल्लेख मौजूद हैं । यह स्पष्ट है कि कैसिया और रूमानियामें एक समय जैनधर्मका अस्तित्व था । नॉर्वे और स्वेडेनमें भी अहिंसा धर्मका झंडा फहरा चुका है । ओकसियाना, बरुस और समरकंदमें भी जैनधर्मका प्रकाश फैल चुका है । जेरूसलमके एक द्वारका नाम ही इस धर्मकी स्मृतिको आज भी बतला रहा है । नेपालके हिमालय तटके सीमाप्रान्तमें एक जैन मुनिका पवित्र मंदिर मौजूद है । यूनानके अथेत्स नगरमें आज भी एक जैन श्रमणकी समाधि जैनधर्मके प्रभावको प्रकट कर रही है । * सीलोन (बङ्का) में भी भगवान महावीरका धर्म प्रचलित हुआ था, यह बात स्वयं बौद्ध ग्रंथोंसे प्रकट है । वहकि

प्रसिद्ध नगर अनुहदपुरमें एक ‘निरग्रन्थ-श्रमणोंका मंदिर बतलाया गया है x । सारांसतः यदि जैनसमाज स्वयं अपने विद्वानोंद्वारा और अधिक खोज इस विषयकी करावे तो सारे संसारमें जैनधर्मकी व्यापकताके चिह्न अवश्य ही प्राप्त होजावें । इस लेख द्वारा आप यह देखेंगे कि जैनधर्म संभवतः नेपालका राजधर्म भी रह चुका है ।

‘इन्डियन एन्टीक्वेरी’ भाग ९ पृष्ठ १९१—१९४ पर पं० भगवानलाल इन्द्रजी और डॉ० जी० बुल्हर साहबने कतिपय शिलालेख प्रकट किये हैं, जो उनको नेपालसे मिले थे और उनका अनुवाद भी दिया है । इन महोदयोंने अपने विवेचनमें इन शिलालेखोंका कोई संबंध जैनधर्म अथवा किसी अन्य धर्मसे प्रगट नहीं किया है, किन्तु इनकी जाकृति और ‘परम भट्टारक’ आदि शब्दोंने हमें इनका विशेष अध्ययन करनेके लिए जाकृषित किया । वस्तुतः हमें इन शिलालेखोंका संबंध, जिनको हम नीचे जैन विद्वानोंके अवलोकनार्थ उपस्थित करते हैं, जैनधर्मसे स्पष्ट नजर पड़ता है ।

पहिले ही नेपालाधिपति राजा मानदेवका शिलालेख संवत् ३८६ का दिया गया है ।

१—गोल्डिन्सन साहबकी रिपोर्ट । २—भगवान महावीर पृष्ठ ६ । ३—मेजर जनरल फरलॉनाकी “शाट्टे स्टडीज” पृष्ठ ६० । ४—पूर्व पृष्ठ ३३ । ५—पूर्व पृष्ठ २८ । * बंबईप्रान्तके प्राचीन जैन स्मारक पृष्ठ २१३ ।

इसमें जैनधर्मका संबंध कुछ भी नहीं है। यह स्पष्ट है कि राजा शिवभक्त था। यही हाल दूसरे शिकाहेल सं० ४१३ का है। किंतु तीसरा शिकाहेल जो राजा वसंतसेनका सं० ४१५ का है, उसमें अवश्य ही जैनधर्मका संबंध हो तो आश्चर्य नहीं है। बतलाया गया है कि यह शिकाहेल छे फीट ऊंचे एक पत्थर पर उकेरा हुआ है, जिसके सिरेपर चक्र और दो छल्ल अंकित हैं। यह पत्थर लगन्टोक काट-मांडूके निकट लुगळदेवीके मंदिरके पास पड़ा हुआ है। वर्षात आदिके कारण जलर जस्पष्ट होगए हैं। कुल २३ लाइन हैं। भाषा संस्कृत है। यह इसप्रकार पढ़ी गई हैं:—

- (१) ॐ स्वस्ति मानगृहात्य (रमदे) बतवपम-
 (२) डारक महाराज श्री पादानुष्वासः श्रुतन-
 (३) (यदवा) दानदाक्षिणपुण्यप्रतापविद-
 सितसि—
 (४) लकीर्तिमहाराज महाराज श्रीवसंत—
 (५) सेनः (कुसली) स्वधिकरणेषु धर्म—
 (६) स्वाम (व) जेकाश्चकुस
 (७) विदितमस्तु जो मवा
 (८) लिङ्ग
 (९) कूषेर
 (१०) रजाय
 (११) डारक—
 (१२) सप्येतेवान्त्र—
 (१३) दिकार्येषु सद्धि
 (१४) मवापि तेषां—
 (१५) (मो) चित्त
 (१६)

- (१७) त्पादोपनीविभिरि
 (१८) यश्रेमामाज्ञामुद्धं (ध)
 (१९) दा तस्याहं ददं मर्मा....
 (२०) इति समाज्ञापना संवत् ४३५ (अश्व)
 (२१) युजि शुक्र दिवा १ दूतकः सर्वदण्डना
 (२२) यक महाप्रतिहाररविगुप्त इति
 (२३) ब्राह्मणिकि च महीक्षीके वषवहरतीति ।

इसका भाव यह है कि मानगृहसे भट्टारक महाराज पद धारी परम (Great) वसन्तसेन जो परम देव वपमहाराकके चरणोंका ध्यान करते हैं, वह आज्ञा देते हैं। आज्ञा क्या थी, वह लुप्त होगई है। भाव ही अपरभागमें राजाके गुणोंकी प्रशंसा है। अन्तिम भागका अर्थ है कि यह आज्ञा संवत् ४३५ के आश्वयुज मासकी शुक्लपक्ष प्रतिपदाको अंकित हुई। दूतक सर्व-दण्डनायक महाप्रतिहार रविगुप्त थे, जो ब्राह्मण महीक्षिकमें कार्य कर रहे थे। इसमें जिन परम देव वपमहाराकका उल्लेख है, उनके विषयमें पंडितजी या डॉ० सा० फुटनोट द्वारा अनभिज्ञता प्रकट करते हैं; यथा:—

“ I am unable to say who this Bappa Bhattaraka was But I think, that it is a general title used by chief priests; for the Valabhi Kings and those of Vengi (Journal Bo. Br. R. A.S. XI.355) also declare their devotion to the feet of this Bappa Bhattarka. Acharyas or chief priests frequently bear the same titles as crowned kings.”

अतएव इस विवेचनसे इस शिलालेखपर कुछ विशेष प्रकाश नहीं पड़ता है; किन्तु हमें इसका संबंध जैनधर्मसे होना बहुत संभवित दिखता है। पहिले ही जो इसपर शङ्ख और चक्रके चिह्न हैं वे जैनधर्ममें विशेष स्थान रखते हैं। शङ्ख २२ वें तीर्थङ्कर भगवान नेमिनाथका चिह्न है और चक्र "धर्मचक्र" है, जो तीर्थङ्कर भगवानके समवशरणमें होता है। इन चिह्नोंको देखते हुए यह उचित जंचता है कि इस शिलालेखका संबंध नेपालमें स्थित किसी उस जैन मंदिरसे हो, जिसके मूकनाथक भगवान नेमनाथ हों। इस अनुमानका समर्थन राजा वसन्तसेनकी 'भट्टारक' उपाधि और परमदेव वप्प भट्टारकके उल्लेखोंसे होता है। भट्टारक जैन साधुओंका वाचक खास शब्द है। जैन मंदिरोंके अनेक लेख व शास्त्र इसके साक्षी हैं। तथापि चालुक्य वंशके उन राजाओंकी यह उपाधि रही है, जो जैन धर्मानुयायी थी। राष्ट्रकूट वंशके परम जैनी राजा अमोघवर्षकी भी यह उपाधि थी। सम्राट् कुमारपाल जब जैनी हुये तो उनके विहदोंमें परम "परम भट्टारक" भी लिखा जाने लगा ('समस्तराभावलिविराजितमहाराजाधिराज परमभट्टारक परमेश्वर....श्री कुमारपालदेव कल्याण विजयराज्ये') इस प्रकार वल्लभीके राजा शीलादित्यको श्वेताम्बर शास्त्र जैन धर्मानुयायी प्रगट करते हैं और उनके विरुद्धोंमें भी एक विरुद्ध 'परमभट्टारक' है। उदयपुरके राजाओंमें जैत्रसिंहके पुत्र तेजसिंह 'परमभट्टारक' उपाधिको धारण किये हुये मिलते

हैं और इन्होंने जैनोंके लिये कई कर्म किये तथा इनकी पत्नी जयतल्लदेवी जैनधर्मानुयायी थी; जिन्होंने चित्तौड़में 'श्यामपार्श्वनाथ' का मंदिर बनाया था। ऐसे ही और भी कई राजाओंका विरुद्ध 'परमभट्टारक' मिलता है और उनका जैन सम्पर्क भी स्पष्ट है। इस दशमें यह कहा जासکتा है कि राजाओंका 'भट्टारक' विरुद्ध उनके जैन सम्पर्कका द्योतक है।

उक्त लेखके वप्प भट्टारक यदि जैन साधु हों तो आश्चर्य नहीं। "बृहद् जैन शब्दार्णव" (पृ० ७४) में है कि एक वप्पदेव नामक जैन साधु थे, जिन्होंने 'प्रथम श्रुतस्कंधके ५ खंडों' पर 'व्याख्या प्रज्ञप्ति' नामक टीका लिखी थी। होसکتा है कि इन्हीं वप्पदेवका उल्लेख 'वप्प भट्टारक' रूपमें हुआ हो। किन्तु इसके लिये पुष्ट प्रमाणोंकी जरूरत है। उधर उदयपुर राजावंशके संस्थापक भी एक 'वप्प' नामक व्यक्ति कहे जाते हैं। चित्तौड़के लेखमें इनके उल्लेखमें एक चरण यह भी है—

"वप्पाख्यो वीतरागश्रवणयुगधुपासीत (सीष्ट) हारीतराशेः।" इसमें 'वीतराग' शब्द दृष्टव्य है; जो जैनधर्ममें विशेष रूढ़ है। नेपाळका राजवंश मेवाड़के राजाकुलसे संबंधित कहा जाता है। होसکتा है कि राजावंशके मूळपुरुष वप्प ही जैन साधु होकर वप्पदेव भट्टारक हुये हों। इस विषयमें एक गवेषणापूर्ण खोज होनेकी जरूरत है। तो भी उक्त शिलालेखका जैन सम्बन्ध साक्ष्यकोटिमें आता है और इव अपेक्षा किळहाळ वप्पभट्टारकको जैन मान लेनेमें कोई आपत्ति नहीं है।

जैन शिवालेखोंका प्रारम्भ 'ॐ, स्वस्ति, श्री' शब्दोंसे होता है और उक्त एवं अन्य शिवालेखोंमें वही क्रम पाया जाता है। डॉ० ग्लासे-नॉप्टने अपनी पुस्तक 'इर जैनिज्मस' में यही लिखा है (पृ० १३५-१३६) इसलिये नेपा-लका इन शिवालेखोंका जैन संबंध स्वीकार कर लेना बेजान नहीं है। संभव है कि राजा वसंतसेन जैनधर्ममत्त हों।

अगाड़ी चौथा शिवालेख सं० ५३६ का अस्पष्ट है। उसमें किसीको एक ग्राम दान देनेका उल्लेख है। पांचवां शिवालेख राजा शिव-देवका है, जिनकी भी उपाधि 'भट्टारक' और "लिच्छविकुलकेतु" आदि हैं। शायद उन राजाका भी जैनधर्मसे अनुकरण हो तो अनुचित नहीं; क्योंकि भट्टारक उपाधि उन राजाओंको ही प्रायः मिलती है कि जिनका अथवा जिनके पूर्वजोंका सम्बन्ध जैनधर्मसे रहा हो; जैसे राष्ट्र-कूट चालुक्य राजवंश। यहां यह राजा लिच्छविकुलके बताये गये हैं और लिच्छवि-कुलसे भगवान महावीरका वनिष्ट सम्बंध था। राजा चेटक भगवानके मातुल थे। तथापि इस कुलमें भगवानके पहलेसे जैनधर्मकी गाढ मान्यता थी, यह प्रगट ही है। इस दशममें राजा शिव-देवका 'भट्टारक' उपाधि धारण करना, जो जैन संबंधकी द्योतक है, उचित ही प्रतीत होता है। इस शिवालेख द्वारा यह राजा एक ग्रामके निवासियोंको कुछ अधिकार सामन्त अंशुवर्मन्की सिकारशसे देते हैं।

छटा शिवालेख इन्ही अंशुवर्मन्का श्रीहर्ष

सं० १४का बतलाया गया, परन्तु यह लेख स्पष्ट नहीं है। यह शिवालेख काटमान्डूसे ४ मील दक्षिण दिशामें स्थित बुङ्गमती ग्रामके निकट मढ़े हुये पाषाणपर अंकित है। इसके सिरे पर दो हिरनोंके बीचमें चक्रका चिह्न है। इस पाषाणको हर बारह वर्षके उपरान्त 'भवलोकने-श्वर' की रथयात्राके समय यहांके निवासी निका-रते हैं। इसकी भी लिखावट उपरोक्त दो शिवालेखोंके समान है और यह इसप्रकार है—

- (१) स्वस्ति कैलासकूटभवनान्नागवत्पशुपति भ-
ट्टारक पादा—
- (२) नुगृहीतो वधपादानुष्यातः श्रीमहासामन्तां-
शुवर्मा कुशली—
- (३) बुगायूमीया (म) निवासेपगता (न) कुट्ट-
त्विनो यथा प्रधानअंकुश—
- (४) लामाभ्य (समा) ज्ञापयति विदितम्भवतु
भवताअंकुशकूटसू—
- (५) करणा नां मत्स्थानाञ्चा वा वनेन
परितुष्टैरस्वामि—
- (६) भे प्रसादः (क) तो युष्माभिरप्ये—
- (७) यदा च पुनर्धर्मसङ्गराणि—
- (८) (त)वा राजकुलं स्वप्रविचार—
- (९) प्रसादोस्मत्प्र—
- (१०) विलंबचान्प्रथा—
- (११) नो नियतम्पुष्कला मर्यादा व—
- (१२) मिः पूर्वराजकृतप्रसादा—
- (१३) दूतकश्चात्र महासर्वा—
- (१४) एकविक्र संवत् ३४ ज्येष्ठ शुक्ल दशम्यम्
इसमें महासामन्त अंशुवर्मन्के कैलासकूट

महकसे बुगायूवी ग्रामके निवासियोंको यह आज्ञा देनेका उल्लेख है कि वे मुर्गी, सूअर, और मच्छी आदि पशुओंकी प्राणरक्षा पर हर्षित होंगे । शेषभाव उठ गया है । दूतक विक्रमसेन हैं । इन महासामन्तको पशुपति भट्टारकके पादा-नुग्रहीत और वप्पदेवके चरणोंके ध्याता प्रगट किया गया है । पशुपति भट्टारकका नामोल्लेख पहले नहीं आया है । इससे ऐसा मान्य होता है कि वप्पदेव भट्टारक दक्षिण-पश्चिम भारतके देशोंमें धर्म प्रचार करते हुये यहां पहुंचे होंगे, क्योंकि वल्लभी और वेन्गीके राजागण भी इन्हीं वप्पदेवकी आराधना करते मिलते हैं । यहां पहुंचकर जब मानदेवके वंशमें उन्होंने जैन धर्मके प्रतिभक्ति उत्पन्न करदी होगी जैसे कि पूर्वोक्त विवेचनसे प्रगट है, तब उन्होंने अपने गुरु अथवा सहयोगी भट्टारक पशुपतिको भी बुला लिया होगा । अगाड़ी एक शिकालेखमें उपरान्त एक भट्टारकका उल्लेख 'पशुपत वंश-परम्परा' रूपमें जो हुआ है, उससे यही प्रति-भाषित होता है कि यह पशुपति भट्टारक वप्प-देवके गुरु हैं अथवा इन्होंने नेपालके पट्टपर पशुपति भट्टारकको ही आसीन किया था । इसके अतिरिक्त यह भी संभव है कि यहां पशुपतसे भाव श्री तीर्थंकर भगवानका हो क्योंकि वप्प भट्टारकका यहां आना स्पष्ट है । इसलिये उन्होंने अपने तीर्थंकर भगवानसे ही पट्ट चलाया होगा । पशुपतिका अर्थ श्री पार्श्वाम्युदवकी टीकामें जिनेन्द्र भगवान किया है; वधाः—“पशुपतेः पशुन् मन्दबुद्धिन् पाति रक्षाति इति पशुपतिः ।

तस्य हितोपदेशुः भिनेश्वरस्येस्वर्गः । कर्महतः पशुपति नामेति नाकण्ठनीयम् । 'सर्वज्ञः बुध-तोमिनः पशुपतिः' इति बहुकमुपलम्भात् । ” इस ग्रंथसे यह भी प्रकट होता है कि यहां नेपालमें उस समय जैन मंदिर मौजूद थे । (देखो पृ० १४८) हाकमें एक अस्पृश्यारी पशुपत काठमांडूके मंदिरमें भगवान पार्श्वनाथकी मूर्तिके दर्शन कर आये बतलाते हैं ।

हां, आजकल 'पशुपत' नामक एक संप्रदाय विशेषका अस्तित्व मिलता है और वह शैव धर्मकी ही एक शाखा कही जाती है । किन्तु उसकी उत्पत्ति किस तरह हुई, यह प्रकट नहीं । इन शिकालेखोंके समयमें शैवधर्म और उसमें बड़ा अंतर था, यह स्पष्ट है । अतः हो सक्ता है कि मूळमें उसका विकास जैनधर्मसे हुआ हो ! नेपालके इतिहाससे ऐसा ही भास होता है । जोहो, इस सबसे यह विस्फुल्ल संभवित है कि यह भट्टारकगण जैन थे और बसन्तसेव, अंशुवर्म्मन, आदि राजाओंको उन्होंने जैन धर्मका प्रेमी बनाया था । तथा नेपालमें जैन मंदिर थे और वहां जिनेन्द्र भगवान पशुपति नामसे प्रख्यात थे । इस शिकालेखके हिरण और चक्र जैन चिह्न हैं । हिरण शान्तिनाथ स्वामीका चिह्न है और चक्र धर्मचक्र है । तथापि इसमें अहिंसाकी प्रधानताको व्यक्त करनेवाली पशुओंका रक्षा करनेकी आज्ञा है, सो भी जैनधर्मके मूळ भावकी द्योतक है । इस तरह इसका जैनधर्मसे संबंध स्पष्ट प्रकट होता है । तथापि सातवां शिकालेख जो इन्हीं क्षामंतका

दिवा गया है, उससे यह स्पष्ट होजाता है कि इन्होंने अपने पूर्वज मानदेवादिके धर्मके अतिरिक्त दूसरे धर्मको अवश्य ही स्वीकार किया था । तथापि विधर्मकी मान्यता स्वीकार करनेपर भी उन्होंने अपने पूर्वजों द्वारा निर्मापित 'शिव-लिंगों' की रक्षा करनेकी आज्ञा प्रगट की है । जैसे कि इस शिकाहेखसे प्रगट है । इसपरसे ज्ञायक यह कहा जावे कि इस दृष्टामें उनका जैनधर्म प्रेमी होना अक्षय्य है । परन्तु यह आपत्ति कुछ मूल्य नहीं रखती, जब हम जानते हैं कि सिद्धराज, कुमारपाल आदि जैसे प्रख्यात जैन राजाओंके भी ऐसे ही उल्लेख मिलते हैं । जैन श्रावक तेजपाल, वस्तुपालके विषयमें ज्ञात है कि उन्होंने जैन होते हुये भी महादेवका मंदिर बनवाया था । सचमुच राज्यवंशोंमें जो पूर्वजोंका धर्म होता था उसके प्रतिसे एकदम कटुभाव प्रारण नहीं कर लिये जाते थे, ऐसा ही प्रतीत होता है । अतएव अंशुवर्मन् जो निम्न लेखमें अपने पूर्वजोंकी किर्तियोंकी रक्षाका प्रबंध कराता है तो कोई अनोखी बात नहीं है । शिकाहेख इसतरह पढ़ा गया है:-

(१) ॐ स्वस्ति कैलासकूटभवनादनिशि निष्ठि चानेकशा-

- (१) स्वार्थविमर्शावसादितासदर्शनतया धर्मोचिका-
- (२) रस्त्रितिकारणमेवोत्सवमनतिष्ठयम्मन्थमा-
- (३) नो भगवत्पशुपतिभट्टारकपादानुगृहीतो वप्प-
- (४) पादानुष्वातः श्र्यंशुवर्मा कुशली पश्चिमाधिक-
- (५) रणवृत्तिभुजो वर्तमानान्भविष्यत्तश्च यथार्ह-
- (७) शुकमाभाष्य समाज्ञापयति विदितम्ब-

- (८) तु भवताम्पशुपती भगवाञ्छूरभोगेश्वरोस्मद्-
- (९) गिन्या श्री भोगवर्मजनन्या भोगदेव्या स्वभर्तुं राज-
- (१०) पुत्रशूरसेनस्य पुण्योपचयाय प्रतिष्ठापितो-
- (११) मश्र तद्दुहित्रास्मद्भागिनेया भाग्यदेव्या प्रतिष्ठा-
- (१२) पितो कडितमहेश्वरो यश्चैतत्पूर्वजैः प्र-
तिष्ठापि-
- (१३) तो दक्षिणेश्वरस्तेषामयः श्लाकापाञ्चालिके-
भ्यः प्रतिपा-
- (१४) कनावातिसृष्टानामस्माभिः पश्चिमाधि-
करणस्याप-
- (१५) वेशेन प्रसादः कृतो यदा च पाञ्चालिकानां
यत्किञ्चन
- (१६) कार्यमेतद्गतसुत्पस्यते यथाकालं वा निष-
मितं व-
- (१७) स्तु परिहापयिष्यति तदा स्वयमेव राज-
भिरन्तरा-
- (१८) सनेन विचारः करणीयो यस्त्वेतामाज्ञा-
मतिक्रम्यान्वथा-
- (१९) प्रवर्तिष्यते तं वयममर्षयिष्यामो मावि-
भिरपि मूय-
- (२०) तिभिधर्मगुरुतया पूर्वैरानकृतप्रसादानु-
वर्तिभि-
- (२१) रेव भवितव्यमिति स्वयमाज्ञा दूतकश्चात्र
युवरा-
- (२२) जोदयदेवः संवत् ३९ वैशाखशुक्लदिवा
दशम्यां
इसमें भी सामन्त अंशुवर्मको 'पशुपति

- महारकपाद नुगृहीतो' और 'वप्पपादानुध्यातः' प्रकट किया है; तथापि कहा गया है कि उन्होंने शास्त्रार्थोंके मन्थनसे अपनी अस्मद मान्यताओंको नष्ट कर दिया है। उपरान्त अपने पूर्वजों द्वारा प्रतिष्ठित तीन शिवलिङ्गोंकी व्यवस्थाकी आज्ञा दी गई है। आठवां शिलालेख कुछ महस्वका नहीं है। उसमें सामान्यतः कोई स्थान बना-नेका उल्लेख है। नौवां शिलालेख जिष्णुगुप्तका श्री हर्ष सं० ४८ का है। यह ललितपुरनमें एक मंदिरके पास पड़ा हुआ है। इसप्रकार है:—
- (१) ॐ स्वस्ति.....महारक महाराज—
 (२) श्री ध्रुवदेवभ्य....पजाहितैषी निरवद्यवृत्तः
 (३) पुण्यान्वयादागतराज्यसम्पत्समस्तपौ (राश्रि)
 तशासनो यस्स कैलासकूटभ—
 (४) वनाद्भगवत्पशुपतिमहारकपादानुगृहीतो
 वप्पपादानुध्यातः श्री जिष्णुगुप्तः
 (५) (कु) इली धम्बुगांगुलमूळवाटिकाग्रामेषु
 निवासमुपगतान्कुटुम्बिनः कुशळ—
 (६) (मा) भाष्य समाज्ञापयति विदितमस्तु भव-
 तांमहारकमहाराजाधिराजश्रयंशु—
 (७) वर्मपदेर्युष्मदीयग्रामाणामुपकाराय योसौ
 तिरुयक आनीतोभूत्प्र—
 (८) तिसंस्काराभावद्विनष्टमुद्गीक्ष्य सामन्तचन्द्र-
 वर्मविज्ञप्तेरस्माभिस्तस्यै—
 (९) व प्रमादीकृतस्तेन चास्मदनुज्ञातेन युष्म-
 द्ग्रामाणामेवोपकाराय
 (१०) (प्र) तिसंस्कृतोस्य चोपकारस्य पारम्पर्या-
 विच्छेदेन चिरतरकाळोद्दहना—
 (११) य युष्माकं वाटिका अपि प्रमादीकृतास्त-
 देताभ्यो यथाकालम्पिण्ड—

- (१२) कमुपसंहृत्य भवद्भिरेव तिरुमकप्रतिसंस्कारः
 करणीय एतद्ग्राम—
 (१३) त्रयत्पतिरेकेण चान्वग्रामनिवासिनाल
 केषांचिन्नेतुं न्यतेस्य च
 (१४) प्रसादस्य चिरस्थितये शिलापट्टकशासन-
 मिदन्दत्तमेववेदिभिर्न
 (१५) कैश्रिदयम्प्रसादोन्मथा करणीयो यस्स्येता-
 माज्ञामतिक्रम्यान्यथातृतिरुम—
 (१६) (क) न (ये) तस्यावश्यपन्दण्डः पातमित-
 व्यो भविष्मद्भिरपि मूर्पतिभिः पूर्वर—
 (१७) (न) कृतप्रसादानुवर्तिभिरेव भवितव्य-
 मिति अपि चात्र वाटिकानामुद्देशः
 (१८) (शंभु) ग्रामस्य दक्षिणोद्देशे पूर्वेण रामवि-
 मा २ तिरुमकस्य पश्चिमप्रदेशे मा १
 (१९)....कुलं पूर्वेण मा ४ मूळवाटिकाग्रामस्यो-
 त्तरतः अशिकोपदेशे मा ८
 (२०)....प्रदेशे मा १ गाङ्गुलग्रामं पश्चिमेन
 कडम्पिण्डप्रदेशे मा ४ कङ्कलंप्रदेशे
 (२१) मा ४ स्वयमाज्ञा संवत् ४८ कार्तिक शुक्ल
 २ दूतको युवराज श्री जिष्णुगुप्तः
 इसमें जिष्णुगुप्त राजाको भी पशुपति महारक
 और वप्पदेवका उपासक बतलाया गया है। तथा
 यह भी प्रकट है कि यह राजा भी अंशुवर्माके
 समान ही लिच्छवि कुलोत्पन्न महाराज ध्रुवदेव-
 के सामन्त थे। इन ध्रुवदेवकी उपाधि महारक
 महाराज भी थी। उपरान्त धम्बुगाङ्गुल और
 मूळवाटिकाके ग्रामवासियोंके लाभके लिए अंशु-
 वर्मा द्वारा बनाई हुई नहर जो खराब होगई,
 उसको ठीक कराने तथा हमेशा वह ठीक रहे ऐसी
 व्यवस्था इसमें की गई है। इसमें दूतक युवराज

श्री जिष्णुगुप्त हैं। शिकालेखके सिरेपर मछली-का चित्र है; सो इसका भी सम्बन्ध जैनधर्मसे है; क्योंकि मछली भगवान् अरहनाथका चिह्न है। इससे भी इस बातका समर्थन होता है कि बप्प महारक जैन थे और उनके भक्त राजा जिष्णुगुप्त थे। अस्तु; अगाड़ी १०वां शिकालेख भी इसी ढंग और भावका इन्हीं जिष्णुगुप्तका है। इसमें चक्र और कमलके चिह्न हैं, जिनका सामअस्य पद्मनाथ तीर्थंकरके चिह्नसे बैठ जाता है। डा० सा०ने इनको विष्णु और रक्ष्मीका चिह्न बतलाया है। लेखका पूर्वभाग इस प्रकार है—

(१) ॐ देवा....यावस्थितो....त्मा पीरस्त्ववस-

(२) तिम्लुख....ङ्गेराविम् एतन्वान्पत्रिग्रहःस्त्वयि परवश-

(३) न्दनीयो....लेवंः स्वकरमपहरन्त्य [द्वि] जा सेश्वरा (श्रीः)

(४) स्वस्ति मानगृ (डा)....दितचित्तसन्तति- लिच्छविकुलकेतुभट्टारक-

(५) राज श्री ध्रुवदेवपुरस्सरे सकलजननिषद्रवो- पायसंविषानार्पित (मा)-

(६) नसः कैलासकूटभवनार्द्धगवक्षुपतिभट्टार- कपादानुग्रहीतो बप्प-

(७) पादानुष्वातः श्री जिष्णुगुप्तः कुशली दक्षिणकोलीग्रामे गीटापाम्बालिका-

(८) इत्यादि ।

भारहवां शिकालेख भी इन्हीं जिष्णुगुप्तका है और उसमें मुण्डशृङ्खलिक साधुओंको खेत दान देनेका उल्लेख है। शिकालेख बहुत अस्पष्ट है और पूरा पढ़ा भी नहीं गया है। संभव है कि

इसका मूल भाव कुछ और हो। 'मुण्डशृङ्खलिक' शब्दसे 'मुण्ड श्रावक' हो तो आश्चर्य नहीं। बुद्धघोषके कथनसे प्रमाणित है कि लगभग इसी समय उदासीन जैन श्रावक 'मुण्ड श्रावक' के नामसे विख्यात थे। किन्तु शिकालेखको अच्छी तरह पढ़े बिना कुछ नहीं कहा जासکتा। अस्तु, जो हो; १२ वां शिकालेख शिवदेवका श्री हर्ष संवत् ११९ का है। प्रारंभमें एक बैलका चिन्ह है, जिसका सम्बन्ध ऋषभदेवसे भी बैठ जाता है, जिनका चिन्ह बैल था और जिन्होंने कैलाश परसे मुक्तिकाभ किया था। शिकालेख इस प्रकार है:—

(१) ॐ स्वस्ति श्रीमत्कैलासकूटभवनतः रक्ष्मी- क्तास्त्वनकरपपादपो

(२) भगवत्पशुपतिभट्टारकपादानुगृहीतो बप्प- पादानुष्वातः परमभट्टार-

(३) कमहारानाधिराज श्री शिवदेवः कुशली । वैद्यग्रामके प्रधानाग्रेसरान्सकल-

(४) निवासिकुटुम्बिनो यथाकुशलमभिषाय समाज्ञापयति विदितमस्तु भव-

(५) तां यथायं ग्रामः शरीरकोट्टपर्यादो (पयुक्त) श्राहभट्टानामप्रावेश्येनाचन्द्रार्का-

(६) वनिकालिको मृमिच्छिद्रन्यायेनाग्रहारतया मातापित्रोरामनश्च विपुरुषु-

(७) ण्योपचमहेतोरस्माभिः स्वकारितश्रीशिवदेवे- श्चं भट्टारकनिमित्तीकृत्य-

(८) तद्देवकुलखण्डस्फुटितसंस्कारकारणाय वंशपाशुपताचार्येभ्यः प्रति-

(९) पादितस्तद्देवमवगतार्थैर्भवद्भिः समुचितदेवभागभोगकरहिरण्यदि-

- (१०) सर्वप्रतयायानेषामुपय(च्छ)द्भिरेनानुपाशयमा-
नेरकुतोभयेः स्वक-
- (११) मीनुविधायिभिरितिकर्तव्यताव्यापारेषु च
सर्वेष्वमीषामाज्ञाश्रवणविधे-
- (१२) यैर्भूत्वा सुखमत्र स्वातव्यं सीमा चास्य
पूर्वेण वृहन्मार्गो दक्षिणपूर्वतश्च-
- (१३) शिवी प्रणाळी तामेव चानुसृत्य स्वल्पः
पंथा दक्षिणतश्च तेङ्ग पश्चिमे-
- (१४) नापि तेङ्ग उत्तरस्यामपि त्रिशिमण्डाति-
कमकः उत्तरपूर्वतश्चापि सहस्र-
- (१५) मण्डकमूमिस्ततो आवत्स एव वृहन्मार्ग
इत्येवं सीमान्तभूतेस्मिन्नग्र-
- (१६) हारे भोटविष्टिहेतोः प्रतिवर्षं भारिकजनाः
पञ्च ५ व्यवसायिभिर्ग्र-
- (१७) हीतव्याः ये त्वेतामाज्ञाव्यतिक्रम्यान्पथा
कुयुः कारयेयुर्वा तेषामभिर्भृक्षण-
- (१८) क्षमन्ते ये चास्मदूर्ध्वंमूभुजो भ (विष्यं-
ति तेषु प) रस्वहितापेक्षया पूर्वराज-
- (१९) कृतोयं धर्मसेतुरिति तद (वगत्य)....
....रवा.... संरक्षणी-
- (२०) यस्तथा चोक्तं पूर्वदत्तां द्विजातिभ्यो
यस्माद्रक्ष युविष्टि (२ मही महीम-)
- (२१) तां श्रेष्ठदानच्छ्रेयोनुपाकरणं ॥ पष्ठिं वर्षं
सहस्राणि स्वर्गं मो (दति मू-)
- (२२) मिदः आक्षेपता चानुमन्ता च ताव्येव
नरके वसेत् ॥ इति स्वयमा-
- (२३) ज्ञा दूतकश्चात्र राजपुत्रजयदेवः सं० ११९
काःपुनश्चुद्धिदिवादस्यमाम् ।
इसमें परम भट्टारक महाराजाधिराज शिवदेवकी

आज्ञा अंकित है । यह शिवदेव भी “पशुपति
भट्टारक ‘पादानुगृहीतो और वप्पपादानुष्वातः”
प्रकट किये गये हैं । आज्ञा वैद्यक ग्रामके निवा-
सियोंके प्रति है कि उनका ग्राम ‘अग्रहार’
रूपमें वंछपाशुपताचार्यके श्री शिवदेवेश्वर भट्टा-
रकको मंदिरके जीर्णोद्धारके लिए दे दिया गया
है । इसलिये ग्रामकी माळगुजारी आदि आचा-
र्यको ही देना चाहिये । फिर ग्रामकी चौहद्दी
दी गई है । दूतक युवराज जयदेव हैं । अतएव
इससे स्पष्ट है कि पशुपति भट्टारक ही यहां
मुख्य थे । उन्हींके वंछमें इन राजाके समयमें
शिवदेवेश्वर भट्टारक पदासीन थे । इस अवस्थामें
राजा शिवदेव भी जैनधर्म प्रेमी थे, ऐसा माळम
होता है ।

तेरहवां शिकालेस इन्हीं शिवदेवका श्रीहर्ष
सं० १४३ का है । यह ‘पशुपति’के मंदिरके
दक्षिण द्वारपर लगा हुआ है । यह ध्यानमें रहे
कि पशुपति भट्टारककी मानता नेपालमें अधिक
होगई थी और उनके नामका मंदिर भी यहां
मौजूद है । इस मंदिरके विषयमें अधिक परिचय
प्राप्त नहीं है । नेपालमें भ्रमण करके यदि कोई
जैन विद्वान् इस विषयपर अधिक प्रकाश डाले
तो यहां जैन धर्मके अस्तित्वका विशेष हाक
माळम हो । यह शिकालेस बहुत अस्पष्ट है
किन्तु यह स्पष्ट है कि यह शिवदेव विहारको
दानमें दिये गये एक ग्रामका उल्लेख करता है ।
हा० सा० इस विहारको नौडोंका बतलाते हैं-
किस अपेक्षासे, यह कुछ बतलाया नहीं है ।
परन्तु ऊपर हम देख चुके हैं कि शिवदेव भट्टा-

रक पशुपति भट्टारकके वंशमें ये, जो जैन साधु ही प्रतीत होते थे। इस कारण उनका स्थापित किया हुआ संघ बौद्ध नहीं होसका। "आर्य संघ"के रूपमें जैन संघका भी उल्लेख होसका है। खंडगिरि उदयगिरिके जैन शिलालेखमें जैन संघका उल्लेख 'आर्यसंघ' रूपमें ही हुआ है। फिर जैन शास्त्रोंमें 'आर्य' शब्दका व्यवहार अपने साधुओंके लिए हुआ मिलता है। (देसो वृ० जे० श० शब्द अङ्क) तथापि इस शिलालेखके प्रारम्भमें भी दो शंखोंके बीचमें एक चक्र मालूम होता है; जिनका सम्बन्ध जैनधर्मसे है यह हम पहिले ही देख चुके हैं। इस दशामें इस शिलालेखका सम्बन्ध भी जैनधर्मसे होना संभवित है। 'विहार' शब्दके कारण शायद इसे बौद्धोंका ख्याल किया गया; किन्तु उक्त बातोंको देखते हुए इसे एकदम बौद्धोंका कह देना हम उचित नहीं समझते। तिसपर यह बात भी नहीं है कि 'विहार' शब्दका प्रयोग जैनियों द्वारा न हुआ हो और उन्होंने 'विहार' न बनाये हों। श्रीमान् ब० शीतलपसादजीने जो 'वंशई प्रान्तके जैनस्मारकों'का संग्रह प्रकट किया है उनमें कई जैन विहारोंका उल्लेख है। पृष्ठ ११० पर "कार्मिकविहार" "भूगणकविहार" और "शोलिकाविहार" का नामोल्लेख है। यह जैनियोंके विहार हैं। इसलिए नेपालमें भी "जैनविहार" होना निककुल संभव है। शिलालेख इस प्रकार पढ़ा गया है:-

- (१)....मद्राधि (५)शुपतिभट्टारकपादानु-
 (१) गृहीतो वपपा(दनुघ्यातः)....परममाहेश्वर-
 परमभट्टा-

- (३) रकमहाराजाविरा (न श्रीशिवदेवः कुशकी)
 -अतग्रामे प्रधानपुरस्तरा-
 (४) न्सर्वकुटुंबिनः कुशक (माभाष्य)....गुप्त-
 बभु....षयि-
 (५) ग्रामो भगवत्पशुपतौ सु-रितसु....न सर्वे
 विना
 (६) मनुरोषार्थ
 (७) -हपरः वि
 (८) छिरहितो
 (९) मयच
 (१०) पञ्चापराषकारिणां....राजकुळानाम्....
 कल्पत्रादि सर्व-य-
 (११) स्यार्यसंघस्य....शिवदेवविहारचतुर्दिगार्व-
 भिक्षुसंघायास्मा-
 (१२) मिरतिसृष्टः सीमा चास्य पूर्वोत्तरेण श्रेष्ठि-
 नुस्मू-श्रीगुप्तमण्यमाळी तस्याः किञ्चित्पू-
 (१३) वैष्णवृहदाख्या दक्षिणमनुसृत्य (वृह)द्वा-
 मिप्यूर्वदक्षिणेन (वे) छयित्वा.....म-
 (१४) मार्गस्तदक्षिणमनुसृत्य सरळवन (ग्राम-
 मार्ग) स्त....सृत्य....
 (१५) लिक्क्षेत्रपश्चिमकोणादक्षिण (पश्चिम)म-
 नुसृत्य-श्री विदरिक्विहारस्य सन्धौ-
 (१६) मरियक्षेत्रपश्चिमालया दक्षिणङ्क (स्वा)....
 ळ्कम्भूदक्षिणेश्वराम्बतीर्षक्षेत्राणां संधिः-
 (१७) दक्षिणकोणात्किञ्चित्पश्चिमङ्कस्वामि-
 त्सम्भूमे-
 (१८) दक्षिणमनुसृत्य तत्पूर्वदक्षिणालयाः पश्चि-
 मङ्कस्वामि किञ्चिदुत्तरञ्च ततः पश्चिम-
 (१९) मनुसृत्य च बिळ्मूदक्षिणपश्चिमकोणाह-
 क्षिणङ्कस्वा कोर्षिग्रामकनोष्ठिकक्षेत्रम्-

- (१०) दक्षिणकोणात्किञ्चिदश्विमङ्गत्वा ह्युपिगां-
ञ्चालिकक्षेत्रम्....स्या दक्षिणमनुसृत्य—
- (११)राभूमेरुत्तरपूर्वकोणे ह्युपिग्रामी बृह-
त्पथस्तत्प (श्विममनु) सृत्य ह्युपि—
- (१२)....स्त....रोधोनुसृत्य मेकणि—(स्ति)
कमकस्तदग्राम....मधिरुह—
- (१३) ...कसारेणोत्तरपश्चिममनुसृत्य—नी....
- (१४)(श्व) दक्षेत्रं पूर्वदक्षिणारुपाः पश्चिम-
ङ्गत्वालोपि....तक्षेत्रततः—
- (१५)स्तस्योत्तरञ्च बृहदारामस्य पूर्वमुखे
महापथः....ङ्गत्वा बृह—
- (१६)कोणादधोवतीर्य वनपर्यंतमुपावाय....
तस्त....ध्वजतीर्थ....गम्द....र्थ—
- (१७) स्तस्त्रोतनुसारेण
- (१८)दारामानुसारेण श्रेष्ठि....किन्वा
- (१९) महारो यदि कदाचिदार्यसंघस्य
शि.... र्यस....
- (२०) तदा प....मा वारणीयमापणकराधि
कमा.... एवा—
- (२१) र्यधि....स्येवमवगतार्थैरस्मत्पादोपजीवि-
भिरन्यैर्वावस्पसा (दोन्य) था न
- (२२)....माञ्चमृच्छङ्घान्यथा कुर्यात्कारयेद्वा....
स्सुतराज्ज मर्षणीयो
- (२३) ये भूमिपाकास्तैरप्युभयलोकनिल्लय
सुस्वार्थिभिः पूर्व—
- (२४) राजविहितो विशिष्टः प्रसाद इति प्रयत्न
तस्तस्यैकपरिवाकनीय एव यतो
- (२५) धर्मशास्त्रवचनम्बहुमिर्वस्तुत्वा दत्ता राज-
भिस्तस्यैवविभिः यस्य यस्य अथा भूमि—
- (२६) स्तस्य तस्य तदा फलमिति । स्वयमाज्ञा
दूतकश्चात्र भट्टारक श्री शिवदेवः ।
- (२७) संवत् १(४)३ ज्येष्ठ शुक्ल दिवा त्रयो-
दश्याम् ।
- इसमें जो मीमाओंका विवरण है उससे यह
ज्ञात होता है कि आसपास अन्य विहार और
आराम भी थे । इस कारण भी जनप्रसिद्धिके
अनुसार जैन संघका स्थान विहार कहलाता था ।
सारांशतः इस विषयमें जैन विद्वानोंको अध्ययन
करके प्रकाश प्रकट करना चाहिये । विशेष अध्य-
यनसे संभवतः इस ओर कुछ अधिक विवरण इन
शिकालेखोंके विषयमें ज्ञात हो । उपरान्त जो
शिकालेख हैं उनमें स्पष्टतः शिवभक्ति अथवा
विष्णुभक्तिका दिग्दर्शन है और इससे स्पष्ट है कि
बीचमें जो जैनधर्मके प्रति इस राज्यवंशके किन्हीं
राजाओंका प्रेम होगया था, वह बप्पदेवके उप-
रान्त कुछ काल बाद प्रायः जाता रहा और यह
राज्यवंश अपने पहले पूर्वजोंके धर्मका अनुयायी
होगया । इसके साथ ही इस बीचके कालमें भी
शैवधर्मके प्रति इन राजाओंके भाव बिल्कुल फिरे
नहीं थे, यह उक्त विवरणसे ज्ञात है । उपरान्तके
शिकालेखोंमें एकाध स्थानपर पशुपति आचा-
र्यका भी स्मरण कर लिया गया है । इस प्रकार
इन शिकालेखोंसे नेपालके उक्त राज्यवंशोंमें
जैनधर्मका अस्तित्व प्रतिभाषित होता है ।
नेपालमें जैनधर्मका आविष्कृत विशेष होना संभ-
वित भी है, क्योंकि आवस्ती प्रारम्भसे ही जैन
धर्मका मुख्य केन्द्र रही है । अस्तु इन शिका-
लेखोंपर अधिक प्रकाश पड़ना आवश्यक है ।

इस भिक्खुओंके अतिरिक्त नेपालके प्राचीन इतिहाससे भी वहांपर जैनधर्मके प्रचलित होनेके किंचित् दर्शन होते हैं। यहां त्रेतायुगके अंतमें राजा सुधन्वाका राज्य होना लिखा है। यह राजा जनकपुर सीताके स्वयंवरमें गया सो वहां मरवा डाला गया। इस पौराणिक वातामें कुछ तथ्य यदि है तो वह स्पष्ट प्रकट नहीं है; परंतु यह तो विदित ही है कि हिन्दू पुराणोंमें सुधन्वा राजाको जैनी बताया गया है। इससे यह स्पष्ट है कि अवश्य ही नेपालमें जैन धर्मका अस्तित्व एक समय रहा था। जैन उत्तरपुराणमें जनकराजाको पशुयज्ञ करते बतलाया है। अतएव उपरोक्त प्रकार जो जनकपुरमें राजा सुधन्वाका मारा जाना बताया गया है, वह उसके जैनीपनका ही द्योतक है। अगाड़ी नेपालके इस पौराणिक इतिहासमें बनारससे एक काश्यप नामके बुद्धका आकर उपदेश देना लिखा है।^१

भगवान पार्श्वनाथका जन्म और केवलज्ञान प्राप्तिका स्थान बनारस ही है और उनका गोत्र काश्यप था; तथापि वे बुद्ध सर्वज्ञ तीर्थंकर भी थे, यह प्रगत है। इसलिये संभवतः काश्यप बुद्ध जो नेपालमें आये थे वह भगवान पार्श्वनाथजी ही थे। इसके अतिरिक्त नेपालके इतिहासमें राक्षस और वानरवंशी लोगोंको पशुसमान मुखाकृतिवाले नहीं बतलाया है, उनको प्रगत मनुष्य लिखा है^२। इससे भी वहां जैन प्रभाव प्रगत होता है। क्योंकि जैन शास्त्रोंमें ही राक्षस और वानरवंशी लोगोंको विद्याघर

मनुष्य लिखा है^३। वहींके इतिहासमें एक विरपाक्ष व्यक्तिको पाशुपतकी पूजा करते लिखा है वहां उसने सूर्यको पकड़ लिया कि जबतक मैं लान लूं तबतक यह डूब न जाय। क्योंकि बौद्ध (१) रात्रिको खाते नहीं^४। यहांपर बौद्धसे मत-रुचि जैनका ही है, क्योंकि बौद्ध लोगोंको रात्रिभोजन त्यागका नियम नहीं है। डा० राइट सा० भी यही कहते हैं कि नेपालमें बौद्धमार्गी रातको खाते हैं^५। अतः यहांपर जो जैनोंका उल्लेख बौद्धरूपमें किया गया है यह इसीलिये कि पहले ब्राह्मण विद्वान जैन और बौद्धकी समान कोटिमें गणना करते थे^६। अतएव इससे नेपालमें जैनधर्मका अस्तित्व थिककुल स्पष्ट प्रमाणित होजाता है। अगाड़ी जो यहांके इतिहासमें लिखा है कि—शंकराचार्य जब यहां आये तब चारों वर्ण बौद्धमार्गी थे, जिनमें कुछ विहारमें भिक्षु रूपमें रहते थे, कुछ श्रावकरूपमें रहते थे, कुछ तांत्रिक थे—कुछ आचार्य थे—कुछ गृहस्थ थे^७। सो इससे भी जैनधर्मका अस्तित्व प्रकट होता है। ऋषिक शब्द जैनियोंके लिये व्यवहृत होता है। बौद्धोंके यहां भी यह शब्द व्यवहारमें आता है; परन्तु भिक्षुओंके लिये। और यहांपर बौद्ध भिक्षुओंका उल्लेख 'भिक्षु' रूपमें किया ही जाचुछा है। इसलिये श्रावक शब्द फिर दुबारा उनके लिए व्यवहृत नहीं होसकता। यह नेपालवासी जैनियोंका ही द्योतक

१-राइट हिस्ट्री ऑफ नेपाल पृ० ८३। २-धर्म० पृ० ८४। ३-पूर्व० पृ० १५८ और १७४।

१-जैन पद्मपुराण पृ० ५४०। २-राइट, हिस्ट्री आफ नेपाल पृ० ९२। ३-पूर्व० फुटनोट। ४-ऐतिहासिक रिसर्चिंग भाग ३ पृ० १९२। ५-राइट, हिस्ट्री० पृ० ११८-११९।

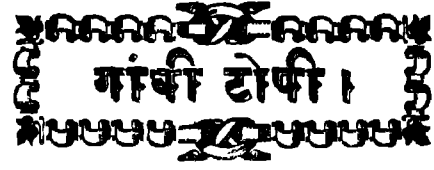
है। शंकराचार्यने वहां पहुंचकर महा उपद्रव किया और शैव धर्मका सिक्का जमा दिया। इसी समयसे जैनधर्मका लोप बहां होचला होगा। पशुपतिका मौजूदा मंदिर प्राचीन नहीं है—बल्कि नवीन बना हुआ है। इसलिये उससे उसका जैन संबन्ध प्रमाणित नहीं होसकता। इस तरह नेपालमें जैनधर्मका प्रचार एक समय रहा प्रमाणित है। नेपालसे जो ग्रंथ केम्ब्रिज यूनिवर्सिटीमें गये उनमें निम्न जैन प्रतीत होता है:—

(१) स्वयंभूचेत्यभट्टारकोदेश, (२) अष्टमी पर्व विधान कथा, (३) अमरकण्ठक, (४) धन-जय निषण्ट, (५) सिद्धांतदीपिका, (६) सिद्धांतसार, (७) तत्त्व संग्रह और (८) कुरुकुट्टकल्प। किसी विद्वानको इन ग्रंथों कावत देखकर हाक प्रगट करना चाहिये। इत्यन्तम्।

वन्दे जिनवरम् ।

जोछिये मिठकर सभी जन शब्द वंदे जिनवरम् ।
एक क्षण भी भूलिये मत शब्द वन्दे जिनवरम् ॥
दुःख दुर्गातिको मिटाकर, स्वर्ग सुख देता यही ।
इसलिये जपते रहो नित, शब्द वंदे जिनवरम् ॥
पाप अमीसे हृदय, जिसका जला करता है रोज ।
शांति करनेको उसे, है नीर वंदे जिनवरम् ॥
मोह शत्रूसे छिड़ा है, युद्ध चेतन भूपका ।
विजयी बनानेके लिये है, शस्त्र वंदे जिनवरम् ॥
सब तरहका दुःख हरता, और करता सुःखका ।
दिल लगा भजते रहो तुम, शब्द वंदे जिनवरम् ॥
बोते, उठते, बैठते चलते व करते काम कुछ ।
पहिले जिह्वापर बुलाओ, शब्द वंदे जिनवरम् ॥
सर्वसाधक मंत्र यह विश्वास इसपर लाइये ।
“प्रेम” क्षण भर भी न भूलो, शब्द वंदे जिनवरम् ॥

ॐ प्रेमसागर-बुद्धार ।



अहमदाबादके मिठ मजूरो और मालिकोंमें अगड़ा होगया। मजूरोने हड़ताल की। जनसूया बहिन उनकी अगुजा बनी। वहां जनसूया बहिन नेत्री हों, वहां गांधीजी कैसे न होंगे ?

उड़ाई करीब महीने भर तक चली। गांधीजी रोज मजदूरोंके पास जाते और उन्हें सिखावन देते। गरीब मजदूरोंको पेट भर खानेको भी नहीं मिळता था, फिर भी वे उस्ताहसे गांधीजी का उपदेश सुनते थे और हड़ताल पर अड़े थे।

जैसे जैसे दिन बीतते गये गांधीजी मजदूरोंमें और मजदूर गांधीजीने तदाकार होते गये। जो मेदसा देख पड़ता था वह गांधीजीको खटकने लगा। आपने सोचा इन मजदूरोंको पहननेके लिए कपड़ोंकी कमी और मैं इतने कपड़े पहनुं ? मेरी इस कम्बी पगड़ीकी दस टोपियां बन सकती हैं और दस आदमियोंके सिर ढक सकते हैं । ”

तबसे गांधीजीने पगड़ी उतारकर सफेद टोपी पहनना शुरू किया। घोती छोटी की। कम्बे अंगरखेको फजूक समझ कर निकाल डाला। इस तरह मजदूरोंके साथ जब एकरूप होगए, तब कहीं गांधीजीकी सत्याग्रही आत्माको सन्तोष हुआ।

जब गांधीजीने सफेद टोपी पहनना शुरू किया तो लोग अचंभेमें आ गये।

“सफेद टोपी ? अजी, कहीं टोपी भी सफेद हुई है ? काल हो, नीली हो, पीली हो, काली हो । लेकिन सफेद भी कहीं टोपी होती है ?”

“अजी, देखो तो सही, गांधीजी सफेद टोपी पहने हैं !” यों कहकर लोग हंसते । कोई कहता, “यह टोपी तो मथुरा वृन्दावनके चोबेजीकी टोपी है ।”

लेकिन लोगोंकी हंसीसे गांधीजी कब डिग-नेवाले हैं ? लोगोंकी आंखोंमें सफेद टोपी भले ही खटकती हो, बुरी मालूम होती हो, लेकिन खादीका दुरुपयोग होना तो बचता है ।

कोई कहता, “आप खादीकी टोपी भले ही पहनें, हमें इन्कार नहीं, मगर रंगकर पहनें तो अस्वी मैली न हो ।”

सच पुछा जाय तो जैसे सफेद टोपी मैली होती है, वैसे ही काली भी । लेकिन कालेमें काला भिन्न जाता है, जिससे भेद दीखता नहीं ।

गांधीजी कहते—भेद छिपानेके लिए रंगना ! इससे तो यही अच्छा है कि थोड़ी मेहनत करके टोपी साफ कर लिया करें; टोपी रोज र साफ हो । मैली होने ही क्यों दें ?

सफेद टोपी दम्बी आयु लेकर बन्नी थी । उसके अनक ये अटल सत्याग्रही स्वयं गांधीजी, फिर कोई कितना ही विरोध क्यों न करे वह कैसे मरती ।

वह नहीं मरी । उल्टी दिन दिन फूलती फूलती गई ।

धीरे धीरे हंसनेवाले चुप होगये । सब कोई सफेद टोपी पसंद करने लगे । सब किसीको

वह जंच गई । गरीबोंने सस्ती देखकर चारण की । चिकनेपोशोंने यह सोचकर पहनी कि रोज रोज धोकर साफ तो रख सकते हैं ।

कवि और कलाकार भी सफेद टोपी पहनने लगे और उसकी प्रशंसा करने लगे । कहते, “सच्ची सुन्दरता तो इसीमें है, काली टोपियोंमें क्या बरा है ?”

स्वयंसबकोंकी तो यह राष्ट्रीय वर्दी बन गयी । लड़के सफेद टोपी पहननेमें बड़प्पन समझने लगे, क्योंकि उसे पहननेसे भारतमाताके सिपाहीसे लगते हैं !

इस तरह होते होते खादीकी सफेद टोपीका नाम पड़ गया “ गांधी टोपी !”

(२)

सेठ—मुनीमजी, अबसे आप गांधी टोपी पहनकर न आवें !

मुनीम—आप तो ऐमा हुकम करते हैं जिसकी तामील करना मुश्किल है ।

सेठ—सो आप जानों ! लेकिन हमारे यहां गांधी टोपी नहीं चल सकती ।

मुनीम—लेकिन मैंने खादीके कपड़े पहननेका जो व्रत ले रखा है, उसे कैसे छोड़ूं ?

सेठ—आपको खादी पहननेसे मना कौन करता है, हम तो यह कहते हैं कि उसे काली रंगवा लो, झगड़ा मिटा ।

मुनीम—अगर मुझे सफेद ही पसन्द हो ? इसमें आप रुझाएट क्यों डालते हैं ?

सेठ—जीदरी करनी हो तो जैसा कहते हैं कीजिए । सफेद टोपीमें आप स्वयंसेबकसे मालूम

पकते हैं । अगर कोई यह जान ले कि हमने स्वयंसेवक रखा है तो हमें भारी नुकसान पहुंचे ।

मुनीम—सेठ साहब, मेरी समझमें नहीं आता, कि आप क्या कहते हैं । मैं आपकी नौकरी ईमानदारीसे बजाते हुए अगर स्फेद टोपी पहनता हूं, तो इसमें आपको नुकसान कैसे होता है ।

सेठ—देखिये, मुनीमजी, माथापच्ची न कीजिये । यह गांधी टोपी है और हमारे यहां गांधी टोपी देखकर लोगोंको हमपर शक हो सकता है ।

मुनीम—हममें शककी क्या बात है ? गांधीजी तो हमारे देशके सबसे महान और सबसे पवित्र पुरुष हैं ।

सेठ—होगे, मगर कलसे आप गांधी टोपी निकालकर ही नौकरीपर आवें ।

मुनीम—टोपी तो नहीं निकाल सकता ।

सेठ—तो आप नौकरीसे बरी हैं ।

मुनीम—जैसी आपकी मर्जी ।

सेठ—देखो, पीछे पछताएं न । इस अपशकुनी टोपीके लिए नौकरी खो रहे हो ।

मुनीम—सेठजी, आपकी सलाहके लिये कृतज्ञ रहूंगा । लेकिन मैं पेटके लिये देशका और गांधीजीका अपमान सहन नहीं कर सकता । अय ! जय !

देशभक्त मुनीमने नौकरीपर बात मारदी, गांधी टोपी नहीं उतारी ।

वैसे तो गांधी टोपीकी कीमत सिर्फ तीन चार आने ही है, मगर राष्ट्रीय दृष्टिसे वह अनमोल है ।

इसके कई कारण हैं—

पहला—यह कि इस टोपीकी चाल गांधीजीने चलाई ।

दूसरा—यह कि वह पवित्र स्वादीकी बनती है ।

तीसरा—यह कि वह हमेशा बगुलेके परकी भांति सफेद रखी जासकती है ।

चौथा—यह कि वह हलकी और सस्ती है ।

छठा—यह कि वह हमारी राष्ट्रीय बर्तनी है ।

सातवां—यह कि उसका नाम “गांधी टोपी” अमर होचुका है ।

और सबसे बड़ा कारण यह है कि उसके लिए अनेक देशभक्तोंने कष्ट सहे हैं ।

ऐसी अनमोल गांधी टोपी पहननेमें किसे अभिमान न होगा ? “मतवाला” ।

हृदयमें हो सन्मति भगवान ।

बोर प्रभूके चरणों नमकर,

जिन शासनको चित्तमें धरकर ।

गुरु आज्ञासे प्रेरित होकर,

करू जाति उत्थान ॥ हृदयमें ॥

निर्भय हो सन्मार्ग दिखावें,

कुटिल कुरीति निकाल भगवें ।

सच्चो सबमें प्रीति बढ़ावें,

धर्म हित दे दें जीवनदान ॥ हृदयमें ॥

प्राणि मात्रके मित्र बने हम,

दुःखी जनोंके दुःख हरे हम ।

गुणी जनोंमें प्रीत करे हम,

चह उन्नति सोपान ॥ हृदयमें ॥

गुरुजनोंमें भक्ति-भाव हो,

जैन धर्ममें पूर्ण चाव हो ।

स्थितात्मसे दूर भाव हो,

प्रगटे ज्ञान महान ॥ हृदयमें ॥

लक्ष्मीचन्द्र-सागर विद्यालय ।

कथं वयं वीरानुयायिनः ?

(लेखकः—पं० रवीन्द्रनाथो जैनः न्यायतार्थः ।)

लोके यः कश्चित् कस्यचिदप्यनुयायी स तं गुणवन्तं बुद्धवानुकरोत्येव, हीनगुणवन्तं कोऽपि नेच्छति ।

ते च गुणा द्विविधाः, सामान्याः विशेषाश्चेति । न खलु सामान्यगुणेन संहितः सन् विशेषत्वाभावेः कोऽपि स्तूयतेऽनुयायी भवति कश्चिज्जनस्तस्य वा, किन्तु विशिष्टगुणत्वेनैव संपूज्यते । समारिजनाः किमर्थमेषामनुयायिनः किञ्च विशिष्टत्वं तेषु इत्यस्योपरि विचार्यते किञ्चित् । समारेऽस्मिन् सर्वे सुखमिच्छन्ति दुःखं हि विम्पन्ति वा । उक्तं चापि—

“ जे त्रिभुवनमें जीव अनन्त,

सुख चाहें दुखजें भयवन्त ।”

सर्वे जनाः कृष्णादिकं किङ्करीवृत्तिं किमर्थं कुर्वन्ति ? सुखार्थमेव, स च सुखः आत्मन्याहादपरिणतिरूप एव । यद्यप्यधुना दृश्यते हि ईप्सितार्थावाप्तौ सुखं भवति, किन्तु समाधिस्थानां योगिमहोदयानां किमपि बाह्यवस्तु नोपलभ्यते, तथापि आत्मन्याह्लादो जायते । अत एवोक्तं पुरातनमहर्षिमहोदयैः—‘मनोरतिं सौख्यमुदाहरन्ति ।’

तत्र वास्तवं सुखं मुक्तौ एव, यत्र नास्ति कश्चिदाकुलता । उक्तं चापि—

भातमको दित है सुख वो सुख आकुलता विन कहिये ।
आकुलता शिव भादि न ताते सिनमग लागयो करिये ॥

आत्मनः मोक्षे सर्वकर्ममलकलङ्कवियुक्ता शुद्ध-स्वात्मस्वरूपलीनावस्था भवति तत्र आत्मनः स्वाधीनता वर्तते ।

एतदर्थमेव सर्वेषां बौद्धशेनादीनां प्रयासः किन्तु बहुविवादस्त्र वर्तते, तेषु कतमः श्रेयानिति विचार्यतेऽत्र । सांख्याः—“ तदा दृष्टः स्वरूपेऽऽस्थानं मोक्षः ” चैतन्ये पुरुषस्य स्वरूपं तच्च ज्ञेयकारिण्डेदृश्या-ङ्गुयं” इति कथयन्ति । किन्तु ज्ञानस्य ज्ञापकत्वमेव एव तदमेव कथं ज्ञानं संभवति ? यथा घटं परिच्छिन्दत ज्ञानं घटज्ञानं भवति तथापि तस्य परिणतिः घटाकारेण परिणमति न रसरूपादिरूपेण । यदा हि विशेषपरिणतेरप्यभावस्तदा कथं मोक्षस्य घटना संभवति । वैशेषिकास्तु बुद्धिसुखदुखेच्छाद्वेषप्रयत्नवर्षापरिष्कारानामत्यन्तस्ये पुरुषस्य मोक्षः” इत्यभिदधन्ति । परञ्च यदा आत्मनः विशेषगुणानामभावः तदा विशेषद्रव्यस्याप्यभावः स्यात् । यतो नहि गुणपर्यायवियुक्तं द्रव्यं भवति ।

बौद्धस्तु पदीपनिर्वाणकरूपमात्मनिर्वाणं मन्यते ।

दिशं न काञ्चित् विदिशं न काञ्चित्,

नैवावन्ति गच्छति नान्तरिक्षम् ।

नीयो श्रयात् शान्तिमुपैति यथाहि,

तथैव जीवो निर्वाणमश्नुते ॥

अतः तत्रात्मनोत्यन्ताभावात् कस्य मोक्षव्य-
वस्था क्रियते ? अपि च बौद्धानां मते पदार्थानां
क्षणिकत्वात् कथं सुखेन सम्बंधः भवेत् ? अपि च
बौद्धानाम् मते नार्थक्रिया वस्तुनः वर्तते । तदुक्तं-
सन्तानेषु निरन्वयक्षणाकचित्तानामसत्त्वेव चेत् ।
तत्त्वाहेतुफलात्मनां स्वपरसंकल्पेन बुद्धः स्वयं ॥
सर्वार्थं व्यवतिष्ठते करुणया मिथ्याविकल्पात्मकः ।
स्यान्नित्यत्ववदेव तत्र समये नार्थक्रिया वस्तुनः ॥
(श्री अकलंकदेवः)

अपरेऽपि जीवस्य स्वसत्ताविनाशस्य परमात्म-
स्वरूपे लीनं कथयन्ति । केचित् तस्य परब्रह्म-
पदाभातिं न स्वीकुर्वन्ति । केचित् जीवस्य सुख
दुःखव्यवस्था परमात्माधीना कथयन्ति । इत्यत्र
सर्वत्र जीवस्य परं स्वातन्त्र्याभावात् न मोक्षोप-
देशः श्रेयान् ।

जैनानां मते तु—“निरवशेषनिराकृतकर्ममल-
कलंकस्याशरीरस्यात्मनोऽनन्तज्ञानादिगुणमव्यावा-
चमुखमात्यन्तिकमवस्थान्तरं मोक्षः ।”

तत्रात्मनः स्वातन्त्र्यं वर्तते, प्रथक् सत्तापि
कर्ममलवियुक्तास्ति । आत्मनो विशेषगुणाः ज्ञान-
दर्शनमुखवीर्यादयोऽपि राजन्ते तत्र । अतः
तत्रैव मोक्षव्यवस्था श्रेयसी नान्यत्र । परं चार्हत-
मतेऽपि मोक्षोपदेशः बहुभिः तीर्थकरैरुपदिष्टः ।
किन्तु वयं “वीरानुयायिनः, इति पदेन कथं
व्यवहियन्ते ?

“अस्माकमन्त्योपदेष्टा धर्मस्य वीरः, तदुपदे-
शानुसारेणैवाचार्यैः व्याख्यानं क्रियते, अस्माभि-
श्च परिपाह्यते इति साधारणगुणव्याख्यानं”
विशेषव्याख्यानं तु वीरोऽन्तर्बहिरुभयत्राऽपि

वीरत्वेन युक्तः । तथैवान्यत्रासीं वृत्तिमभ्युपगम्य
विशेषेण ईर्ष्यां जानातीति वीरः सर्वज्ञ इत्यर्थः ।
व्यवहारे तु वीरः शूरवीरः । व्यवहारे स कथं
वीरः ? इति विचार्यते—

वीरात्प्राक्त्रयोविंशतिः तीर्थकरा अन्येऽपि सम-
भूवन् । तेषु समये च कीदृशः जना आसन् ?
ऋषभमहावीरजिनौ मुक्त्वा शेषजिनानां समये
पूर्वतीर्थकरोपदिष्टधर्मं संकम्नाः पुरुषा आसन् ।
यद्यपि अजितादिजिनैः पूर्वं धर्मप्रकाशीकृतः, किन्तु
द्वाविंशतिजिनानां समये बहुमतानां प्रादुर्भावो
नासीत् । जैनशास्त्रेषु अन्यधर्मशास्त्रेषु इतिहासे-
वोक्तं यत्त बहूनां धर्मोणां त्रिसहस्रधर्मपूर्वं प्रादु-
र्भाव आसीत् । अतः तत्र तीर्थकरैः सुगमरीत्या
धर्मोपदेशः प्रवृत्तः । आदिजिनपूर्वकाले तु
यद्यपि न धर्ममतयः जना आसन् तथापि तत्राक्
भोगभूमिप्रवृत्तिरासीत् । कर्मभूमिप्रारम्भ एव
आदिजिनो बभूव, तत्समये सूर्यचंद्रादिकं दृष्ट्वा
यदा जनाः मयं प्राप्ताः आसंस्तदा तेषां कुल-
करेण तीर्थकरादिसत्पुरुषैः यत्कथितं तत्सर्वमान्यं
कृतं । यतश्चैते मन्दकाषायिनः भोगभूमिजाश्च,
तेषां शुभलेश्याः बभूवुस्तस्मात्सुगमेन ते धर्मं
आधाताः ।

किन्तु वीरजिनसमयात्प्राक् जनाः तीर्थकाषायि-
नः कर्मभूमिजा अशुभलेश्यावंतश्च आसन् तस्मा-
द्धर्मोपदेशमनपेक्ष्य विपरीतमार्गो गृहीतस्तैः ।
यतश्च नेमिप्रभुनिर्वाणानंतरम् धरणीतलेस्मिन्
ब्रह्मदत्तचक्रवर्ती बभूव येन च षट्सहस्रहमहाराज्यं
भुक्तं । स च मांसादिसेवी आसीदतस्तेन स्वस्वा-
नबलेन सर्वे तदराज्यवासिनः दुश्चारित्र्याः धर्म-

भृष्टाश्च कृताः । स च मृत्वा इवञ्च जगाम ।
सा च हिंसा श्री पार्श्वजिनेन स्वधर्मोपदेशामृ-
तेन विनिवारिता तथापि नन्दवच्छक्तिवच्छपभृ-
तयः बानप्रस्थाः सन्यासिनः तीव्रमानवशंगताः
सन्तः आजीवकमतोपदेशं ददुः ।

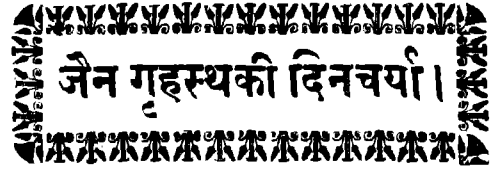
ततश्च सात्यकिनामा एकादशमः रुद्रः महा-
देशारूयया भुवि प्रसिद्धिभगात्, तेन च स्व-
विद्याभिः दुर्धर्मप्रसारः कृतः । ततश्च बौद्धपुरण-
कस्तपमकस्त्रलिगोशाकाजितकेशादयः बहवः धर्म-
प्रवर्तकमन्याः सम्प्रभूवुः । तैश्च जनानां धर्मा-
तपूरितहृदयं कषायकलुषितं कृतं ।

जीवानां न कोऽपि शरणमृतस्तदासीत् यस्य
शरणं ते जग्मुः । “ ब्रह्मणे ब्राह्मणमारुमेत ”
इत्येवंपकारेण नरमेधयज्ञप्रवृत्तिरासीत् । ये गोहिं-
सानिषेधकः त एव गोमेधयज्ञकर्तार आसन् ।
कथनस्याभिप्रायोऽयं यत्तदा बहुकषायकलुषित-
चित्ताः जना आसन् । तदैव जगद्धितैषी महावीर-
प्रभुः प्रादुर्भूत्वा हिंसां च हर्त्वा हितोपदेशं चकार ।

महानुभाव !

अज्ञः सुखमारारुध्यः, सुखतरमारुध्य भवति विशेषज्ञः ।
मूढमतिदुर्विदग्धः, ब्रह्मापि तं नरं न रंजयति ॥

इति केनापि सत्यमुक्तं । किन्तु महावीरसमये
जनाः मूढमतयः दुर्विदग्धा आसन् । एवं मृतान
यदा ब्रह्मापि न रंजयितुं शक्तस्तथापि वीरप्रभुणा
मोक्षमार्गरेताः कृतास्ते । अत एव वीरमहावीरा-
तिबीरादि नाम लेभे । यदि बयं वीरसिद्धांत-
प्रसारं कृत्वा जनमात्रहितैषिणः स्याम तदा
“ बयं वीरानुषायिनः । ” इति ।



(लेखक-वैद्यविद्याविशारद पं० सत्यधरजी जैन,
आयुर्वेदाचार्य-छपारा ।)

पाठको ! आज इस लेखद्वारा मैं उस नियमको,
उस क्रियाको, उस आचरणको, उस कर्तव्यको,
आप लोगोंके साम्हने उपस्थित कर रहा हूं जो
कि हमारा मुख्य कर्तव्य है, तथा जिसके पालन
करनेसे हमको ऐच्छिक सुख (मोक्षसुख) की
प्राप्ति होसक्ती है । चतुर्थकाकमे उन्हीं कर्तव्योंका
पालन नियमसे होता था इसी लिये उस समय
इसी भरतक्षेत्रसे आसंख्याते जीव मोक्षको आते थे ।
तथा उसी क्रियासे अभाव होनानेका यह कटुक
फल है जिसके कि इस पंचमकाकमें हम लोग
मोक्ष नहीं जासक्ते । उसी नियमको हमारे परम
पूज्य पंडितप्रवर आशावरजीने सागरधर्मोपदे-
शषष्ठाध्यायमें अच्छी तरह विवेचन किया है ।
उसके आधारपर मैं भी कुछ नियमोंका वर्णन
करता हूं ।

सबसे प्रथम प्रति मनुष्यका कर्तव्य है, कि
वह प्रातःकाल ब्राह्मणमुहूर्तमें अर्थात् ४ बजे
सुबह शयन त्याग करे तथा शयन त्याग करते
हुए भी महामंत्र (णमोकार) का जाप करे तथा
प्रभाती स्तुति भजन बगैरह पढ़े जिससे चित्तकी
प्रसन्नता हो तथा उसी समयमें इस बातका
चितवन करना चाहिये कि—

मैं कौन हूं, किस कुलमें पैदा हुआ हूं, मेरा
जन्म क्या है, मेरी जाति कौन है, मेरा वर्ण

कौनसा है, यह जीव संपारमें अनादि कालसे क्यों भटक रहा है, उस भटकनेका मुख्य क्या कारण है, तथा संसारसे निकलनेका भी क्या उपाय है? वास्तवमें जीवोंका कल्याण करनेवाला कौनसा धर्म है। मैं किंप धर्मका आश्रय करूँ जिसके द्वारा मेरा कल्याण होजाय और अपने अभीष्ट स्थानको प्राप्त करलूँ? यह मनुष्य पर्याय मैंने कितनी कठिणतासे प्राप्त की है। यही एक मनुष्य पर्याय मोक्षको देनेवाली है, यह श्रावककी पर्याय ही कैसी उत्तम है तथा जैन-धर्मका शरण, शरीरकी आरोग्यता, धर्मात्मा माता पिता भाइयोंका मिलना, धर्मपरायणा स्त्रीका मिलना, आज्ञाकारी धर्मतत्पर पुत्रका प्राप्त होना, विद्वानोंका समागम, संपत्ति विभूतिका मिलना तथा मान प्रतिष्ठाका मिलना इत्यादि जितनी भी शुभ सामग्री है वह किस तरह प्राप्त हुई है? तथा इसके विपरीत अवस्था हो तब भी उसका इस प्रकार विचार करे जैसे दुष्ट मातापिताओंका मिलना (यहांपर दुष्ट माता पिताओंसे उन माता पिताओंका तात्पर्य है जो कि अपने बच्चोंमें झूठा मोह करते हुए व्यर्थका लाड़-प्यार करते हैं। किन्तु उनकी हितकारी शिक्षाओंपर ध्यान नहीं देते हैं।) दुष्ट कल्हकारिणी स्त्रीका प्राप्त होना, तथा दुष्ट, आज्ञा भंग करनेवाला कुमार्गी पुत्रका मिलना, दुष्ट भाइयोंका मिलना, संपत्तिका नहीं मिलना, जैनधर्मका सुखाम नहीं मिलना, जिन भगवानकी पूजा नहीं करना, शास्त्र स्वाध्याय नहीं करना, शरीरकी दुर्गुणता, स्वास्थ्यका अभाव नहीं रहना, इत्यादि संपारमें दुःख

देनेवाली अशुभ सामग्रीका मिलना किंप कारणसे प्राप्त हुआ है?

इस प्रकार चाहे शुभ सामग्री प्राप्त हो चाहे अशुभ सामग्री प्राप्त हो, उन दोनों अवस्थाओंका चिंतवन करते हुए दोनोंके कारणको विचार करे तथा दोनों अवस्थामें समान बुद्धि रखता हुआ अपने कर्तव्यका पालन करे।

इस प्रकार वर्तमान दशाका पूर्ण चिंतवन करके दीर्घशंका-शौचादिसे निवृत्त होकर स्नान वगैरह करके घरके एकान्त पवित्र स्थानमें अष्ट द्रव्यसे भगवानकी पूजन करे (यहांपर पंडित आशाधरजीने मंदिर जानेके प्रथम ही जो यह पूजन करनेका उपदेश बतलाया है, मेरे खयालसे पहिले श्रावकके पत्येक गृहमें मंदिर रहने थे, इसलिये पहिले ही यहांपर पूजन करनेका विधान बतलाया है।) फिर शांतिपाठ वगैरह करके यथाविधि पूजाको समाप्त कर उस एक दिन सम्बंधी समस्त व्रत वगैरहका निश्चय करना कि आज मुझे कौनसा व्रत रखना है, एकासन करना है या उपवास करना है, या २ बार ही भोजन करना है तथा आज १० हरी खाऊँगा या ९ हरी खाऊँगा या बिरुकुक ही नहीं खाऊँगा तथा रसोंका त्याग करना कि आज १ रसका त्याग या २ रसका त्याग, इत्यादि। तथा मैं आज कितने पदार्थोंका उपभोग करूँगा, कितने कपड़े पहिनुँगा, कितने बर्तनोंसे काम लूँगा, मैं आज कितनी दूर जाऊँगा। इस प्रकार वह उस दिनका पूर्ण विचार करके भोगोपभोगके पदार्थोंका निश्चय करले। कारण

कि वह जितनी बस्तुएं अपने उपयोगके लिये रख लेता है तथा जितने आरंभ परिग्रहके रखनेका नियम कर लेता है वह उतने ही पापका भागी होता है अधिकका नहीं। इसलिये प्रत्येक गृहस्थका यह आवश्यकीय कर्तव्य है कि वह प्रातःकाल उस नियमको अवश्य ही करे।

उसके पश्चात् जो गृहस्थ अपनी शक्तिके अनुसार अपने ही हाथसे शुद्ध पासुक सामग्रीको लेकर मार्गमें स्तोत्रादिका पाठ करता हुआ हर्षामितिसे गमन कर जिनालयको भगवानकी पूजन करनेके लिये जाता है वह गृहस्थ पवित्र वर्मात्मा है।

यहांपर आचार्य उस गृहस्थकी प्रशंसा करते हैं—

यथा विभवमादाय जिनाद्यत्वेनसाधनम् ।

व्रजन्क्रौड्कुटिको देशसंयतः संयतायते ॥ ६ ॥

अर्थात्—जो गृहस्थ श्रावक अपनी शक्तिके अनुसार पूजनकी सामग्री लेकर भगवानकी पूजनके लिये जाता है वह श्रावक मुनिके सदृश जान पड़ता है।

इस प्रकार श्री मंदिरजीको जाता हुआ श्रावक बड़े हर्ष तथा उत्साहके साथ तथा गाजे बाजेके साथ जब मंदिरजीके दरवाजे पर पहुंचे तब “निःसही निःसही” ऐसे शब्दका उच्चारण करता हुआ मंदिरजीमें प्रवेश करे। और प्रवेश करके शुद्ध पानीसे अपने पग धोकर फिर समबशरणमें जाकर प्रत्येक वेदीके बाईं बाजू तरफ खड़ा होकर स्तोत्रादिका पाठ करता हुआ ३ प्रदक्षिणा देवे। भगवानकी पूजन, शास्त्रकी पूजन तथा निर्ग्रन्थ गुरु हों तो उनकी पूजन यदि न हों तो परोक्ष पूजा करे, शास्त्रोंका स्वाध्याय करे तथा श्रावकोंको धर्मका

उपदेश देवे तथा जितना भी समय मंदिरमें दे सके उतने समय तक रहे तथा इस बातको ध्यानमें अवश्य ही रखे कि जितने ही समय तक मंदिरजीमें रहे उतने समय तक बार्मिक चरचाके अतिरिक्त घर संबंधी चरचा नहीं करे। हंसीमनाक कौतूहल बगैरह न करे। ऐसा करनेसे कषायोंकी तीव्रता होती है तथा वर्मानुरागमें हानि होती है तथा जो चौंरासी आसादना दोष बरकाये हैं यथाशक्ति उनका भी त्याग करे। इत्यादि विधिपूर्वक प्रातःकालीन पूजनकी विधि समाप्त करके अपने घर आकर यथाशक्ति उत्तम पात्र मध्यम पात्र जघन्य पात्र या कुपात्रको भी आहारदान देवे, बाद आप आहार करे। (उत्तम पात्र महा व्रतचारी भावलिंगी मुनि, मध्यम पात्र देशव्रती श्रावक, जघन्य पात्र अविरत सम्पदष्टी श्रावक तथा कुपात्र सम्पददर्शन रहित द्रव्यलिंगीमुनि तथा श्रावक)। यदि काल दोष वश कोई पात्र न भी प्राप्त हो तो विद्यार्थी बगैरहको भोजन करावे जबबा समयपर कोई भी प्राप्त न हो तो अपने द्रव्यमेंसे थोड़ासा भाग निकालकर अलग कर देवे। बाद भोजनके आप अर्थोपार्जनके निमित्त बाजार या दुकानपर जावे और न्यायपूर्वक द्रव्योपार्जन करे और करीब ३ बजे फिर बाजारका कार्य छोड़कर मंदिरजी जाकर प्रातःकालके समान ही पूजन करे और दूसरी बेकामें यदि कोई मुनि आते हों तो उनको आहार देवे। बाद फिर सायंकालीन भोजन करे (शामका भोजन प्रत्येक गृहस्थको सुर्धास्तके १ घंटे पहिले अवश्य कर लेना चाहिये क्योंकि इसके

बादका भोजन रात्रिभोजनमें शामिल है ।) इस प्रकार दिनका कार्य समाप्त होनेपर रात्रिमें भी मंदिरजीमें जाकर भगवानके समक्ष अपने दिन-भरके किये हुए अच्छे बुरे कर्मोंकी आलोचना करे अर्थात् आलोचना पाठ पढ़े और किये हुए अनुचित कार्योंका पश्चात्ताप करे तथा शास्त्र स्वाध्याय करे बाद घर आकर क्षयन करे । रातमें यथाशक्ति जहांतक होसके ब्रह्मचर्यव्रतका परिपालन करे । यदि न कर सके तो स्वदार संतोष तो करे ही । यदि वह स्वदारसंतोष न करके परस्त्री गमन या वेश्यागमन करता है तो संसारमें उस सरीखा पापी दूसरा जीव नहीं है । सदगृहस्थ महामंत्रका उच्चारण करता हुआ सो जाय । तथा यदि कभी बीचमें निद्रा भंग होजाय तो वह वैराग्यभावनाका ही चितवन करे । क्योंकि जो प्राणी संसारसे सदैव भयभीत रहता है तथा संसारकी असारताका सदैव चितवन किया करता है वह कभी न कभी अवश्य ही मोक्षको पालेता है । जिसा कहा है—

निद्राच्छेदे पुनश्चित्तं निर्वेदनैव भावयेत् ।

सम्यग्भावितनिर्वेदः सद्यो निर्वाति चेतनः ॥

अर्थात्—प्राणियोंको चाहिये कि सदैव संसारकी असारता चितवन करें । यहां तक कि निद्रा-वस्थामें निद्रा भंग होनेपर भी चितवन करें क्योंकि वैराग्यभावका चितवन करनेवाला जीव अवश्य ही शीघ्र मोक्षपदको पाता है । इस प्रकार गमन करता हुआ करीब ४ बजे उसी ब्राह्मणवृहत्तमें निद्राका त्याग करे और फिर उसी प्रकार अपनी दिनचर्या बनावे जिस तरह कि पहिले बर्णन कर चुके हैं ।

इस प्रकार मैं छास्त्रोंक दिनचर्याका बर्णन करके पाठकोंसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि यदि वास्तवमें हमको अपना कल्याण करना है तथा हमें मनुष्य पर्यायको सार्थक करना है तो हमको इस मनुष्य पर्यायकी १ घड़ी भी व्यर्थ न खोकर अपना कल्याण करना चाहिये तथा अपने कल्याण करनेके साथ यदि सच्ची भावनासे समाजका उत्थान करना चाहते हैं तो करें अन्यथा बर्मविरुद्ध उपायोंसे यदि हम समाजका उत्थान करना चाहेंगे तो कभी भी न कर सकेंगे ।



वीर-भावना ।

वीर प्रभु वारिधि दयाके,

धीर वीर गंभीर थे ।

कर्म रिपुके जीतनेको,

महाभट सम वीर थे ॥१॥

हे प्रभो ! करुणा दिस्वाके,

मार्गको दशोद्दये ।

संसारमें भूले हुआको,

धर्म पर अब लाइये ॥२॥

सच्चे अहिंसा धर्मका,

डंका बजाया आपने ।

भूले हुए जगप्राणियोंको,

मग बताया आपने ॥३॥

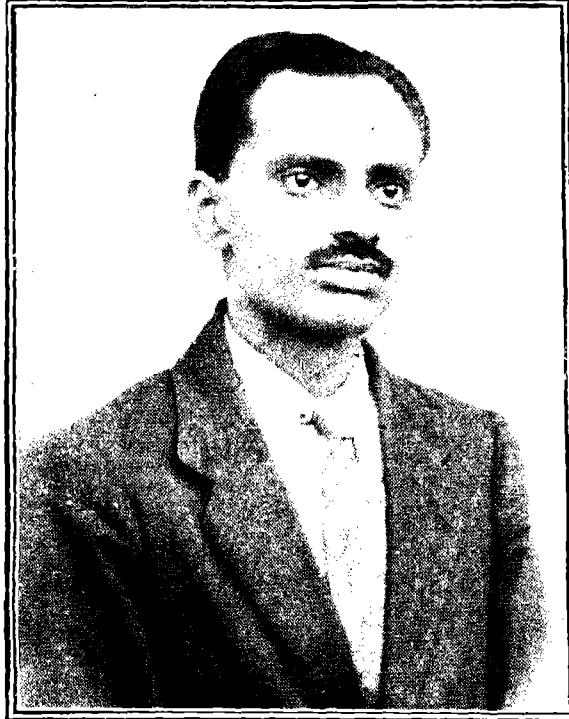
माइयों शिक्षा उसी अब,

वीरकी धारण करो ।

पाषाणे " आनन्द " को,

यदि धर्मपर चकते रहो ॥४॥

निवेदक—आनन्द ।



श्रीयुत मोहनलाल मथुरादास शाह काणीसाकर.

हाल मुकाम-कंपाला (युगान्डा, इस्ट आफ्रिका)

स्वपुरुषार्थी आफ्रिकामां योग्य स्थान प्राप्त करनार अने

“ दिगम्बर जैन ” ना जाणीता लेखक.

“पत्थर पर पाणी.”

(लेखक:-शाहू रमणीकलाल विमलशरीदास.)

शेडाज दिवस पडेलां म्हारे पुनामां अेक भिन्न साथे सामाजिक सुधारके विषे वात बघ. वातमां ने वातमां त्हेणे म्हने कळुं-“रमणीक-लास, त्हाभारी किंमत थी ? त्हाभाइं कळुं बोडो केम माने ? त्हाभारो अवाज्य अेटलो अघो सत्ता-धारी (Authoritative) केम कडी अकाय ? त्हाभे अघो के ज्हेरमां युवक भंडणी ज्हेरीयात छे-ज्हेरमां धरडा भाखुसोनी मनोदशा सारी नथी. गुलाभी छे-पखु तेथी क्हा के कोणु सुधरी गया ? कोणु त्यां ज्भ भंडण रथापी नांज्युं ? ज्हेर-वाणा शुं आगण धाया ? त्हाभारा श्पटो पाणी-मांज गयाने ? क्खम नकाभीज धसीने ? परीक्षानो वपत नकाभो जोयोजने ?” हुं तो आ सवालो सांभणी टोका बघ गया. म्हारा ज्वा-अनी राह ज्मेया वगर अेक पळी अेक सवाल त्हेना म्होमांथी छटवां मांडतांज शुं ज्वाय ह्येो ते म्हने सज्युं नदि. म्हें त्हेनुं अ्हुं सांभणी लीधुं. त्यार आद धांमे रहोनेज कडी नांज्युं के “भाभ, आनुं नामज पत्थर पर पाणी.” हवे टंडा अवानो वारो त्हेना आव्यो. आटली अघी भाषाईडने ज्वाय इक्त अेक लीटी-अने ते पखु पांजज श्पटोनी-मां आवशे, त्हेनी त्हेने स्वप्ने पखु अयर न इता. म्हारी पास त्हेणे समज्युती (Explanation) मागी. म्हें रहमज्युं “भाभ पत्थर पर पाणी पडे कडी ते पीगज्यो सांभज्यो छे ? ज्मे के प्रयोगो याले छे छतां हज तो नथी सांभज्यो. नदि पीगणवानुं कारण त्हेनी संपूर्ण ज्जुता. अत्यारे दिगंअर जैन समाजमां अेटली अंधी ज्जुता अथवा तो निश्चितनात्मक बुद्धि आवी ज्भ छे के ज्मे त्हेना जेजं उपर आपण्णे

गमे तेठळुं जैतन्य इपी कंडु, गरम के योडपुं पाणी रेडीये तोअे ते भौंजभ पीगणे नदि.”

म्हारे ज्वाय त्हेने गमे तेवो लाज्यो होय त्हेनी म्हने परवा न इती. हुं तो अरी वात क्हेतो इतो. म्हने कंभ पखु वधारे पूज्या विना ते म्हारी इममांथी छडी यालवा मांज्या. म्हें पखु ‘साडेअज’ कडी त्हेनुं विसर्जन क्युं.

हवे वांयके ! यालो त्हाभारो साथे वात कंडं. त्हाभोज क्हा के दिगंअर जैन समाजमां हाव लेखकेनी किंमत थी ? त्हाभनुं लेखक तरीकेनुं वजन शुं ? त्हाभनो व्यक्तिगत प्रभाव गमे तेवो होय, ‘दिगंअर जैन’ पत्रमां मुज्यवे अेराखु-वाणा अल्लुभाभ रायचंद. मुंभाभवाणा सुनीलास वीरचंद, आकरोअवाणा भोलीलास त्रीकभदास तथा प्रांतीजवाणा ज्वराज गुलाअचंद विगेरेना लेपो आवे, गमे तेनुं साइं जोटुं अणे-पखु त्हाभेज क्हा के समाजने त्हाभनी थी पडी छे ? त्हाभना केटकेटला श्पटो समाजे अमलमां भूक्या ? त्हाभनां लेखमां क्खो मुज्य केटला सुधारा यया ? ज्वा-अमां भीस्टर जोरेो ज्हेदी आवे छे. आ शुं अतावे छे ? दिगंअर जैन समाजनी ज्जुता नदि ? निश्चितता नदि ? मुडदाअपखुं नदि ? कोणु ना कडी शके तेम छे ? हुं तो नथी ज्मेतो के कोभ ना क्दि शके. तेअो कयां क्हे छे के बोडो त्हाभनुं कळुं माने ? तेअो तो क्हे छे के बोडो ज्भ अइं होय ते क्हे. अइं ज्मेरातुं त्हाभनी ज्जु बुद्धिनी ज्जु दृष्टिथी नदि पखु रहज आगण धपती तेजस्वी अोजन् धानी विवेक बुद्धिथी (By the real sence of discrimination) तेअो अमुक आपत क्हे अने ज्मे ते जोटी लागे तो बोडो क्हेता केम नथी ? अइं कळुं तो अे बोडोने जोटी लागतीज नथी. ज्मे जोटी लागे तो ज्वाय न आपे ? ज्वाय न आपे अेटके ज्मेम रहमजवानुं नदि के त्हाभने वपत नथी-तेअो अेवी रीते लपवानी लपमां पडवा मागता नथी. तेअोने वपत तो भणे छे. अडु अडु तो आप्या दिव-समां तेअो यौद क्लाक काम करता इशे, आडीना

દશ કલાકમાંથી અડધો કલાક માળી જે બવાય આપવો હોય તો ગમે તે માણસ આપી શકે છે છતાં તેઓ બવાય ન આપે ત્હેનું કારણ એજ કે ત્હેમને તે સુધારકોની લખેલી દરેક ખાખત માન્ય છે. અંગ્રેજીમાં પણ “Silence is half consent.” ગુજરાતીમાં પણ ત્હેનોજ તર્જુઓ “સુઘતાથી અર્થ અનુમોદનજ વ્યક્ત થાય.” લેખકો તો એમ માની લે-પછી લોકોને ત્હેમની ખાખતો માન્ય હોવા છતાં તે પ્રમાણે ન વર્તે ત્હેનું કારણ તે તો સમજી શકે કે લોકોના જીવનમાં હજી ચૈતન્ય નથી પ્રગટ્યું.

વાંચકો! ત્હેજ કહો કે આપણે શું કર્યું? આપણે કષ્ટ દિશામાં આગળ વધ્યા? મ્હને ખાતરી છે કે ત્હેમને કંઈક કહેવાનું મન થશે-સાથે સાથે મ્હને ખાતરીજ છે કે ત્હેમને કંઈ કહીજ નહિ શકે. શું કહો? આપણે આગળ વધ્યા હોઈએ તો ને? આપણે રાજ્યદારી ક્ષેત્રમાં શું ભાગ લીધો? આપણે શહેર સુધારણ ખાતાઓમાં પણ શું કર્યું? આપણે આપણી પોતાની માતૃભાષાના સાહિત્ય ક્ષેત્રમાં કેટલા ધધ્યા? હિંદતા સામાજિક ક્ષેત્રમાં દિગંબરોએ શું કર્યું? અરે ત્હેમના પોતાનાજ ક્ષેત્રમાં શું કર્યું? આપણે ભાગ શેમાં લીધો? કહું? જે ન લાગે તો-મોટું ન લાવો તો-ત્રેતાંબરો સાથે લલવામાં શા માટે? દહેરાંઓ માટે. આપણે પૈસા પણ ત્હેમાંજ ખર્ચ્યા, અક્ષય પણ ત્હેમાંજ વાપરી, આગળ પણ ત્હેમાંજ પડ્યા અને દુનીયાયે પણ દિગંબરોને તેથીજ જાણ્યા-ખીજી કોઈ રીતે નહિ.

ભાષકો? આનો અર્થ એમ ન કરતા કે હું આપણી પોતાનીજ વિરુદ્ધમાં છું. મ્હને દિગંબર ધર્મના તરફે ધણાજ ગમે છે. હું પોતે પણ ચુન્ત દિગંબર છું. છતાં આ તો જે પ્રમાણેની આપણી સ્થિતિ છે તે પ્રમાણેજ હું તો ત્હેમારી આગળ ચૂકું છું. મોટું ન લગાડતા, મ્હારા પર ગુસ્સે ન થતા! હું તો જે જોઉં છું તેજ કહું છું. શ્રેતાંબરો પણ આથી એમ ન રહમળે કે હું

ત્હેમની તરફેણમાં છું. ત્હેમને તેમ રહમળવાની હું સાર ના કહું છું, વાંચકો! ત્હેમે પૂછીશો કે ત્યારે શું ધર્મસ્થાનો બંધા દેવાં? લલવું નહિ? હું ત્હેમને નમ્રતાથી બવાય આપીશ કે હું જે વિષય હમણાં નહિ ચર્ચું. એ કોઈ ખીજી વખતે. અહિંઆ તો શકત આપણે જે કર્યું છે તેજ કહું છું.

આપણો મનોદક્ષા-કેવી?—ગુલામી. બિલકુલ સ્વતંત્રજ નહિ. સ્વતંત્રતાના વાતાવરણમાં રહીએ છતાંયે સ્વતંત્ર નહિ. કારણ? આપણે સાંકળેથી બંધાયા છીએ કઈ ખબર છે? કહું? રૂઠોઓની. ભાષકો, યુવકો, મ્હેનો, શુદ્ધ પુરુષો, વડીલો-સર્વેને હું આમંત્રું છું. પોકાર કરીને કહું છું કે તે સાંકળોને તોડો-તોડો, દોડીને બહાર નીકળી પડો. આવો-જીવો, દુનીયા કેવી કુચ્છ કરી રહી છે? આપણો નંબર ક્યાં આવી શકે?—સ્થિર આગળ વધવાની નહિ. આપણામાં આગળ વધવાની ધગશજ ક્યાં છે? જેટલાને ધગશ છે તેટલા આગળ વધવાનો પ્રયત્ન કરે છે. મુંબઈમાં દિ. જૈન યુવક મંડળ સ્થપાયું, મુંબઈમાં ગૃહિણીપુરા સેવા મંડળ સ્થપાયું-તે આ ધગશ ઇતિને લીધેજ. હું હમણાં તે મંડળો યે નહિ ચર્ચું. ત્હેની અર્થા માટે ખાસ જીવુંજ લખાણ સમય આવે જોઈશું. આપણી મનોદક્ષા-કેવી? અનન્ય ભક્તિ-આધિની સેવા. મ્હને એક બનાવ યાદ આવે છે. જહેરનાં લોકોએ આજથી થોડાં વર્ષો પહેલાં એક ભામટાને પુજી નાંખ્યો હતો-બાપજી ગણીને પગ ધોયા હતા. શરીરે પવન નાંખ્યો હતો, પગ દાખ્યા હતા. ભામટાએ મૌન વ્રત લીધું હતું-દોંગજ હતો-પણ તે વખતે કેમ ખબર પડે? જહેરના અંધશ્રદ્ધાળુ ભકતોએ ત્હેને રૂપીયા પણ આપ્યા હતા. તે લુચ્ચો ખીજી દિવસે સવારે કોઈ જાણે નહિ તેમ ત્રણ કે ચાર વાગે થોડાપર બેસી પલાયન કરી ગયો હતો.

આપણી મનોદક્ષા-કેવી? ન્હાનો છોકરો જે સાફ કામ કરતો હોય તો ઉદ્ધત કહેવાની-મ્હેટો

માણસ સાઈ કામ કરતો હોય તો દોડાણો કહેવાની-ટૂંક પુરૂષ જે સાઈ કામ કરતો હોય તો 'સાઈ યુદ્ધિ નાહી' તેમ કહેવાની. આરી મનોદ-શામાં અંધુઓ ? ઉત્તતિ અશક્ય નથી લાગતી ? લાગેજ. પણ અંધુઓ, તેમ ધારવાની ઉતાવળ ન કરતા. આપણામાં ઉત્તતિની પુરેપુરી શક્યતા છે. ક્યારે ? આપણા સમાજના લોકો રહેજ યુદ્ધિ વાપરી સંપના તવેને રહમતે ત્યારે-અવસ્થા શકિત થીમે ત્યારે-સંગઠનનો ઉપયોગ જાણે અને આવી અધમ, નીચ મનોદશા છોડી દે ત્યારે. હું અહુ આજ્ઞાવાદી છું. આવી સ્થિતિમાં પણ ઉત્તતિ તો હું જોઈ રહ્યો છું. મનોદશા છોડાવવાનો રસ્તો કહું ?-લેખકોએ લેખ લખવાનો અમતરો ચાલુ રાખવો, રચનાત્મક કાર્યકર્તાઓએ પોતાનાં કાર્યો ચાલુ રાખવાં-યુવકોએ પોતાની ધમશ વૃત્તિને બહાર નીકળવાનો રસ્તો આપવો-મંડળો સ્થાપવા અને ખંત અને ઉત્સાહથી કાર્યે વળગવું-કેળવણી માટે થોડા પબ્લિકાં લેવાં-આ તોમજ પુરૂષ બન્નેની આટલું ન થાય તો અંધુઓ ! તદમેજ કહો કે પરિણામમાં પત્થર પર પાણી કે નહિ ?

આહાર તેવો ઓડકાર.

શ્લોક.

યદમ મક્ષ્યતે નિત્યં, તાદશી જાયતે ધિયા ॥
દીપો મક્ષતિ યદ્ ધ્વાનંતં, કજ્જલં ચ પ્રસૂયતે ॥

અર્થ—માણસ જેવું બક્ષણ કરે છે, યુદ્ધિ પણ તેવીજ હોય છે. જુઓ ? દીવો અધાર પાય છે તો ઠાજલ (મેંશ) ને ઉત્પન્ન કરે છે.

માટેજ—ઋષિયો અને યાનીયો કહે છે કે શુદ્ધ અને સાત્વીક ભોજન કરો, અબક્ષ વસ્તુને કદીપણ અહુજ ન કરો. પાપી લોકે ના ધનું (યાને) નીચ લોકોના ધરતું બનાજ, પાણી, કે કમાણી પણ યુદ્ધિમાં બગાડો કરે છે એ પ્રત્યક્ષ સિદ્ધ છે લોકમાં પણ કહેવાય છે કે:—

- ૧-જેવું સ્વાય અક્ષ, તેવું થાય મન;
- ૨-જેવું વીચે પાણી, તેવી બોલે વાણી.

દિગંબર જૈન યુવક મંડલ.

(મિહનલાલ મથુરાદાસ શાહ, કંપાલા -યુગાંડા)

ગત ભાદ્રપદ માસના દિગંબર જૈન માસિકમાં પાના ૩૬૭ પર દિગંબર જૈન યુવક મંડળ મુંબઈના ઉદ્દેશ્ય અને નિયમો છપાયા છે. વાંચી ધણીજ ખુશી ઉપજે છે કે મારી મેવાડા કોમનાં પેટા મંડળો મરણ પામ્યા પછી, આજે યુજ્જરાતના અવસ્થાને ગણાતા મુંબઈ શહેરમાં ઉપરના મંડળની સ્થાપના થાય છે.

થોડાં વર્ષ ઉપર સોશ્વના સભામાં વીસા મેવાડા દિગંબર જૈન યુવક મંડળ સ્થપાયું હતું, જેના પ્રેસીડેન્ટ સાહેબ આધુનિક કેળવણી વધ પ્રોંદ થએલ સોશીસીટર સાહેબ હતા. તેમજ સેક્રેટરી સાહેબ પણ જાણીતા બી. એ. એલ. એલ. બી. હતા.

આવા વિદ્વાન કાર્યકર્તાઓના આશ્રય નીચે સ્થાપન થએલ સંસ્થા મૃત્યુ પામે એ મેવાડા કોમના યુવકોને શરમાવનારું નહિ તો બીજું શું ગણાય ?

વળી તેજ અરસામાં વડોદરા જેવા સુધારામાં આગળ વધેલા શહેરમાં એક દિગંબર જૈન યુવક મંડળ સ્થપાયું હતું, જેણે કેટલીક પત્રિકાઓ કાઢીને તેમજ એકાદ શ્રીમંતના સરવસમાં ભાગ લેવાની મનાઈ કરીને પોતાનું નામ કાંઈક આગળ આણેલું તે મંડળ પણ હાલ સુરતાગરને કાંઈ વિખરાઈ મરું હોય તેમ જણાય છે.

તેવીજ રીતે આપણા યુજ્જરાત પ્રાંતમાં દિગંબર જૈન ધર્મને પ્રાંતિકમાં આજુબાર દાવરી સર્ગસ્થ શેડ માણુકચંદ્રએ સ્થાપન કરેલ શ્રી મુંબઈ દિ. જૈન પ્રાંતિક સમા પણ હાલ આપણા યુજ્જરાતીઓને સારા નાચ્યે મઠી પડી હોય તેમ જણાય છે.

ઉપરની ત્રણ સંસ્થાઓનું વર્ણન કરી હું તેઓના હિંદુ ખતાવવા માગતો નથી, પણ આપણે ગુજરાતીઓ આરંભે શુરા જેવા દેખાઇએ છીએ, તેમ આ મંડળનું ન થાય, તેટલાજ માટે મારે આપને ઉદ્દેશીને એ સ્પષ્ટો લખવાની જરૂર પડી છે.

હું ધારું છું કે-આશ્રેય શિવાય સુધારો નથી, એ સિદ્ધાંત આપને માન્ય હશેજ. જે મારાથી કાંઇક વધારે લખાઇ જાય તો ક્ષમા પ્રદાન કરવા વિનંતી છે.

આપના મંડળના પ્રેસીડેન્ટ કોણ છે, તે જે કે-હું જાણતો નથી, પણ સેક્રેટરી સાહેબને હું નામથી ઓળખું છું, તે બાહોશ અને ખંતથી કામ કરે તેરા છે, તો તેને સ્થાનીક બાઇઓ વન-મન-વનથી મદદ કરી પગલર કરશે એમ આશા છે.

યુવક મંડળ બધારે સમાજમાં દિગમ્બર જૈન પ્રાંતિક સભા કરતાં પણ વધુ માન મેળવે ત્યારેજ તેના કાર્યવાહકોની ચાતુર્યતા ગણાય.

યુવાનોનાં યુવાન કાર્યોમાં વૃદ્ધો આડા આવે છે, તેમને સમજવી પોતાના વિચારના કરવા, તેજ આધુનીક યુવાની વિદ્યાનું ભુષણ છે.

માનનીય સેક્રેટરી સાહેબે, જે બધા કાર્ય-કર્તાનાં નામ બહાર પાડ્યાં હોત તો બહાર ગામના યુવકોને સભ્ય બનવા વધુ આકર્ષણ થાત.

મંડળના ઉદ્દેશ્ય સારા છે. પણ નિયમો ધણાજ ઓછા હોઇ તેમા સુધારા વધારાની જરૂર છે.

૧—પંદર વર્ષની ઉમરનો પુરુષ કરતાં વીસ વર્ષની ઉમરનો પુરુષ મંડળમાં દાખલ થઇ શકે. તેજ યુવક ગણાય. આપણે એક બાજુ અઢાર વર્ષની ઉમરમાં લગ્ન કરનારને બાળ લગ્ન માનીએ છીએ, તે વખતે પંદર વર્ષની ઉમર બહુજ નાની ગણાય. વળી પાંત્રીસ વર્ષ સુધીની ઉમરનો પુરુષ યુવક ગણાય. તે પણ ઉમેરવું જોઇએ, માનનીય સભ્ય અને કાર્યવાહક સભ્ય એથી મોટી ઉમરનો હોય તો પણ બાધ લેવો નહિ.

૨—આ મંડળના સભ્યે સ્વદેશીને ઉત્તેજન આપવું, એ એકજ નિયમ બહુ સંકુચિત ગણાય, પણ તેથી વધારે કડક અને વધારે નિયમ રાખી આદર્શ યુવક થાય તેમ હોવું જોઇએ, ને તોજ સમાજ પર છાપ પડે, બાકી જ્યાંસુધી મંડળના સભ્ય સામાજિક સડામાંથી નિર્જાત ન થાય, ત્યાંસુધી તે સમાજ સુધારી શકેજ નહિ.

૩—સહાયક સભ્ય અને સામાન્ય સભ્ય નહિ પણ માનનીય સભ્ય અને સાધારણ સભ્ય હોવા જોઇએ.

માનનીય સભ્યની ફી હોવી જોઇએ નહિ, પણ તે જે ખુશી થઇ કોઇ રકમ મંડળને ભેટ કરે તો તે સ્વિકારવી જોઇએ.

મારી સુચનાઓને અમલ કરવો જન મંડળના કાર્ય-કર્તાઓને ઠીક લાગે તો હું જણાવવાની રજા લઉં છું કે મંડળના દરેક સભ્યે નાંચિની પ્રતિજ્ઞાઓ લેવી જોઇએ, અર્થાત મંડળના છાપેલા નિયમ ફોર્મ પર દરેક સભાસદે સહી કરી તે પ્રમાણે વર્તવું જોઇએ, તોજ મંડળ કાંઇક આદર્શ બને. સભાસદ ઓછા થાય, એ પ્રશ્ન ઉદ્દશે પણ જે દક્ષિણ સભાસદ નોંચેની પ્રતિજ્ઞા લીધેલા થઇ કાર્યની શરૂઆત કરે તો હું નથી ધારતો કે બાળ સભાસદ આપો આપ થયા સિવાય રહે.

દુનિયા ઝુકતી હે, મગર ઝુકાનેવાલા ચાહીએ, એ ભુલી જવું જોઇતું નથી. આજના યુવાનોના હૃદયમાં સમાજના સડા દૂર કરવા ધગજ છે, લાગણી છે, પણ તેમને ઉત્તેજન આપનાર સિવાય તેઓ ધુંધવાઇને બેસી રહે છે. આપતું મંડળ જન નીચેની પ્રતિજ્ઞાઓ લઇ કાર્યની શરૂઆત કરે તો આપણા સમાજને સુધરતાં જરા પણ વાર લાગે નહિ.

પ્રતિજ્ઞાઓ.

૨—હું મરણ નિમિત્તનો કોઇપણ ન્યાતવરો કરીશ નહિ, તેમજ તેવા વરામાં જમવા બધજ નહિ.

૨—હું વર વિક્રમ તેમજ કન્યા વિક્રમને

હૃદય પૂર્વકે ધિકારું છું; જેથી મારાં સંતાનોને હું તે સિવાયજ વરાવીશ.

૩—હું કાંઈ માંકણુ કરીશ નહિ, તેમજ મારા ઘેર કરાવરાવીશ નહિ.

૪—હું પંદર વર્ષથી ઝોછી ઉમરની કન્યા અને અઠાર વર્ષથી ઝોછી ઉમરના છોકરાને પરણાવીશ નહિ, તેમજ તેવાં લગ્નોમાં ભાગ પણ લઇશ નહિ.

૫—હું હવેથી પરદેશી કાપડ પહેરીશ નહિ. તેમજ મારા કુટુંબીઓ માટે ખરીદીશ નહિ.

૬—શીમંતના શરમ ભરેલા પ્રસંગે હું કોઈને ત્યાં જઈશ નહિ, તેમજ મારે ઘેર શીમંત વિધિ શાસ્ત્ર આજ્ઞા પ્રમાણેજ કરાવીશ.

૭—રોટી વહેવાર ત્યાં બેટી વહેવારની પ્રથાને હું અંતઃકરણપૂર્વકે માનનારો છું. ને હું તેવાં લગ્નોમાં બનતી મદદ કરીશ, પણ તે લગ્ન કન્યા વિક્રય-આળ લગ્ન-રૂઢ લગ્ન-વર વિક્રયથી રહિત હશે તેજ.

૮—હું મને ચાલીસ વર્ષ થયા પછી લગ્ન કરીશ નહિ. તેમજ તેવાં લગ્નમાં ભાગ પણ લઇશ નહિ.

૯—અસ્વચ્છતા અને અભક્ષતાના કારણુ સિવાય હું જમવામાં પકિત બેદ માનતો નથી.

૧૦—નાત-ગતમાં તડ-પેટાતડ હું માનતો નહો.

૧૧—જન ધર્મ એ ઋષિ પ્રણિત ધર્મ હોય, તેમાં પહેલા મત, મતાંતર, મચ્છ, સંધ, આત્રા-યને હું માનતો નથી. ને હું મારી બનતી મહે-નતે તે ભાગલા દૂર કરી જન ધર્મ એ જ નીચે સમગ્ર સંધને લાવવા કોશીલ કરીશ.

૧૨—તમાકુ, ચાહ, દારૂ, ગાંજો. ભાંગ, અપીણુ, ઇત્યાદિ કેશી ચીજતું હું સેવન કરીશ નહિ. બધું નહિ બની શકે તો દારૂ, ગાંજો, અપી-ણુનો અવસ્ય ત્યાગ કરીશ.

૧૩—માંસ બક્ષણુ એ જન શાસ્ત્ર અને દરેક શાસ્ત્રમાં નિષેધ છે, છતાં હું પ્રતિજ્ઞા કરું

છું કે હું માંસ બક્ષણુ કરીશ નહિ, તેમજ તેના વ્યસનીઓને ઉપદેશ આપી સુધારીશ.

૧૪—મનુષ્ય માત્રને હું સમાન માતું છું. તેથી હું અંત નીચના બેદ હું તોડી નાંખવા બનતું કરીશ.

૧૫—અહિંસા ધર્મનો પ્રચાર કરવો એ મારી મુખ્ય ધરણ છે.

૧૬—ચોરી અને વિશ્વાસઘાત એ મહાન પાપ છે, એ હું સારી રીતે સમજું છું.

૧૭—ક્રિયા સિવાયના ઉપવાસ નકામો છે. એમ હું માતું છું, તેથી હું પોતે જ્યાં સુધી આચારમાં સુધરીશ નહિ, ત્યાં સુધી લાંબણુ ખેંચીશ નહિ. તેમજ બીજાઓને પણ આચારનું પાલન કરવા બલામણુ કરીશ.

૧૮—લગ્નમાં દારૂખાતું ફોડવું. તે અહિંસા-વ્યવત ધારીને શોભે નહિ, એમ હું માતું છું. તેથી મારાં બાળકોના લગ્નમાં દારૂખાતું ફોડીશ નહિ.

૧૯—માઆપને ઘેર તેમજ ધસુરને ઘેર રહી, ચાત્રુ સમયમાં વિધવાઓ જે અનર્થ ઉપજાવે છે. વિધવ સેવન દ્વારા જે અનીતિ આદરે છે. ગર્ભ-પાતથી જે બાળહત્યાઓ કરે છે, તેથી હું ધણો દિલગીર છું. જેથી હું મારી સર્વ શક્તિઓનો ઉપયોગ વિધવાઓને સુધારવા તેઓને શ્રાવિકાશ્રમ કે વિધવાશ્રમ જેવી સંસ્થાઓમાં મોકલાવી ઉચ્ચ ચારિત્રવાન બનાવી, તેઓને જન ધર્મના ઉચ્ચ વ્રત ધારી ઉત્તમ આજ્ઞાકા બનાવવાના કામમાં વાપરીશ.

૨૦—આવક શબ્દ જે તણુ ઉત્તમ વ્યંજનાથી બનેલો છે, તે હું સાર્થક કરીશ. અર્થાત્ શ્રદ્ધા વિવેક અને ક્રિયા ચારિત્રમાં ઉતારી જગતને આવક શબ્દનું રહસ્ય સમજાવીશ.

૨૧—બ્રહ્મચર્ય એજ શરીર સાચવનાર શરમ છે, જેથી હું મારાથી બનતી મહેનતે બ્રહ્મચર્ય પાળવા કોશીલ કરીશ.

૨૨—વેસ્થા સેવન એ માદક ચીજના સેવન જેવું એક વ્યસન છે. તેમજ વેસ્થા એ એક રોગથી ભરેલું. દુર્ગંધ યુક્ત સ્ત્રી પાત્ર છે, તેનો સહવાસ કરનાર રોગ, અને અપજ્વશનો મોગ થયે પનથી પાયખાલ શય, મરણાંતે દુર્ગંતિમા

જમ પટે છે, જેથી હું મરણ્યોતે પણ વેરયા ધરે જમણ નહિ.

૨૩—શાસ્ત્રાગ્રા મુજબ સ્વીકારેલી પત્નિ સિવાય બધાં સ્ત્રી પાત્ર. મારે બહેન તુલ્ય છે. જેથી હું સ્વપ્ને પણ પરસ્ત્રીની ઇચ્છા કરીશ નહિ.

૨૪—મારો વ્યવહાર હું સત્ય અને ધર્મનાં શરમાન મુજબ ચલાવીશ.

૨૫—હું કન્યાવિક્રયવાળા લગ્નમાં તથા ખુલ્લા જમણમાં ભાગ લઉંશ નહીં.

ધ્યારા સલામતો.

આપ જે મંડળમાં દાખલ થતા પહેલાં ઉપરની પ્રતિજ્ઞાઓ પર સહી કરી પછીજ સભાસદ ફોર્મ પર સહી કરો. તેો વધુ આનંદનીય છે.

સાંપ્રત કાળે દરેક સમાજ સુધારાને પગલે પગલાં માંડી રહ્યા છે, તેવા ટાઇમ તમારું આ પગલું પ્રથમનીય છે.

ત્રીસમી સદી વણી અર્થાત પેટા તડોને નાશ કરનારી છે. ત્રીસમી સદી યુવકોની છે. ત્રીસમી સદી રૂઢોને સંન્યાસ શ્રેવાની છે તેો આપણે યુવકોએ એકમત થઈ આપણી શરૂને અદા કરવી જોઈએ,

ઉપરની પ્રતિજ્ઞાઓ લીધેલા યુવકો એકમત થઈ ધારે તેો થોડાજ ટાઇમમાં સમાજને ઉદ્ધાર કરી શકે.

શ્રાવકના પુત્રે શ્રાવકની ક્રિયા જાણવીજ જોઈએ, જેને જેન શાસ્ત્રો શીખવાંજ જોઈએ, એ સિદ્ધાંત અનાધિ નિધન છે, છતાં ચાલુ કાળે આપણા કેટલાય બંધુઓ જેન શબ્દનો પુરો અર્થજ જાણતા નથી, તેો શાસ્ત્રોનો ભાવાર્થ તેો જાણેજ ક્યાંથી ?

આપણી એ અજ્ઞાનતા દૂર કરવા માટે ગુજરાતમાં એક જેન વિશ્વ વિદ્યાલયની જરૂર છે, તે કામ યુવક મંડળે ઉપાડી લેવાની જરૂર છે.

વિદ્યાલય ગુજરાતના પ્રાચીન તીર્થ પાવાગઢ જેવા સ્થળે સ્થાપન કરી તેમાં ધાર્મિક અને રાજકીય કેળવણી આપવા ઉપરાંત સંસાર વ્યવહારની કેળવણી આપવાની પણ સંગવડ કરવી જોઈએ.

આપણે વિદ્યાલય ખોલવાનો ઉદ્દેશ્ય એ ન હોવો જોઈએ કે વિદ્યાલયમાંથી ઉત્તીર્ણ થએલા શોશર પાઠશાળાની નોકરીમાં જોડાય.

વિદ્યાલય સ્થાપવાનો ઉદ્દેશ્ય એ હોવો જોઈએ કે વિદ્યાર્થી ધાર્મિક કેળવણી સાથે સામાજિક કેળવણી લેવા ઉપરાંત રાજકીય કેળવણી લઈ વ્યવહાર ધર્મ કુશળ થઈ દેશાવર કે દેશમાં રહી સ્વતંત્ર ધર્મો કરી ચારિત્ર પૂર્વક ગૃહસ્થ ધર્મ પાળી શકે, અને શુદ્ધ વસ્થામાં સંન્યસ્ત લઈ આત્મ કલ્યાણ કરી શકે ? આપણાં ઉત્તર તરફનાં કહેવાતાં વિદ્યાલયો સાંપ્રતકાળે પંડિતો ઉપજવવાનું કાર્ય કરી રહ્યા છે, જે પંડિતો વિદ્યાલયમાંથી નિર્ગત થયા પછી આપણીજ સામે પોતાના ઘાનનો ઉપયોગ કરી આપણા સમાજનું અલપાત કરી નાંખે છે, તેમ આપણા વિદ્યાલયમાંથી ન થાય, તેને માટે આપણે વિદ્યાલયમાં સામાજિક, વ્યાપારિક અને ઔદ્યોગિક કેળવણી પણ આપવાની વ્યવસ્થા કરવી જોઈએ.

સમાજનાં નાણાંથી સાધન સંપત્તિ થએલા તેઓએ આપણી ભારતવર્ષીય દિવ જેન મહા સભાને જે સભાતળે પહોંચાડી છે, તેની યાદ આણતાં આપણાથી તેઓ તરફ તિરસ્કાર બતાવ્યા સિવાય રહેવાતું નથી. તેમનાજ પ્રતાપથી આપણા સમાજના પંડિતપક્ષ અને બાલુપક્ષ એમ બે પક્ષ પડી ગયા છે, તે પ્રભુ જાણે ક્યારે એકત્ર થશે. આપણા ગુજરાત પ્રાંતમાં તેવો વખત ન આવે તેને માટે આપણે યુવાનોએજ કટોબદ્ધ થવાની જરૂર છે.

યુવક મંડળોએ ગામવાર સ્થાપન થઈ તાલુકા કે સંભાવાર સંગઠન કરી વિભાગીય ગૃહત મંડળમાં જોડાઈ જેન ધર્મ અને જેન સમાજમાં જગતના મનુષ્ય માત્રને જોડાવા આમંત્રણ કરવું જોઈએ, અર્થાત જેન સમાજ એજ એક સમાજ અને એજ એક ધર્મ એમ સર્વેનો કરવા તન-મન-વનથી પ્રયાસ કરવો જોઈએ.

એકજ ધર્મ પાળતી જાતિઓ એકજ ગણાય, અર્થાત ધર્મદારા જાતિનું સંધકૃત કરી વીર પિતાના પુત્રો એકજ વાડામાં જોડાશે ત્યારેજ જગતમાં જેન ધર્મનો ઝંડો ફરકશે.

પ્રભુ તે દિન જલ્દી લાવે, તેજ ઇચ્છાપૂર્વક વિરમું છું. ઝૂં અર્થાત:

કન્યાઓનું મવિષ્ય.

લે:-જૈન મહાસારન લલિતાખંડેન-મુંબઈ.

કન્યા એટલે કુમારીકા એ કુમારીકાજ ભવિષ્યમાં ભગ્ન સંબંધથી જોડાય છે, એટલે સ્ત્રી-પણ્યને પ્રાપ્ત થાય છે, અરે ભવિષ્યમાં સંતાનની માતા બને છે.

કન્યાને નાનપણમાં જો સારી કેળવણી આપી હોય તો તે ગૃહને શોભાવનાર નિવડે છે અને સારી કેળવણી ન આપી હોય તો તે એક ક્ષણગારરૂપ બીજાને પીડા આપનાર નિવડે છે. માટે માતા પિતાની શરૂઆત કે કન્યાઓને નાનપણથીજ સારી કેળવણી આપવી. કરકસરથી કામ કરનાર સ્ત્રીની ગણના ઉત્તમ સ્ત્રીઓમાં થાય છે, તે બાળક વધુ ખર્ચાળ બને તે ઉપર માતા પિતાએ ધ્યાન આપવું અને તેમને વૃથા ખર્ચ કરતાં સમજણ આપીને અટકાવવું જોઈએ. દલકી સ્ત્રીઓ સુખમાંથી દલકાવચન બોલે અને ઉત્તમ સ્ત્રીઓ ઉત્તમ વાણી વડે એ સમજણ આળકને આપવા કરતાં ઉત્તમ વાણી વદનારની સંગતિમાં રાખવાં જોઈ ભવિષ્યમાં આળક ઉત્તમ વાણીને બોલનાર નિવડે. વળી કન્યાના માબાપ જો સંબંધન હોય તો તે કન્યાને એવો બોધ આપે કે જેવો માતા પિતા પ્રત્યે પૂજ્યભાવ તેવોજ સાસુ સસરા પ્રત્યે રાખવો જોઈએ. વળી કોઈને કલંક કે ખોટું આળ ન ચઠાવવું જોઈએ કેમકે આત્મા સર્વેનો સમાન છે. જો કોઈ આપણા પર ખોટું કલંક લગાડે છે તો આપણને ઘણું દુઃખ લાગે છે. તેમજ બીજાને પણ પોતાના પર આવી પડેલા આળથી દુઃખ થાય છે. કન્યાઓને નાનપણથીજ સવારમાં વહેલાં ઉઠવાની ટેવ પાડવી અને ઉઠીને તરત પ્રભુ સ્મરણ કરતાં શીખવાડવું. તથા માતા પિતા વડીલોને નમસ્કાર

કરતાં પણ શીખવવું. વળી ઘરની વ્યવસ્થા ઠીક શીખવાડવી જોઈએ. ઘરની તમામ ચીજો ચોખ્ખી-સ્વચ્છ અને નિયમિત સ્થાને મુકવાની ટેવ હોવી જોઈએ. જો કન્યાને ખાલી બહુતર શીખવવામાં આવે અને ગૃહવ્યવસ્થાની કેળવણી ન આપવામાં આવે તો તે કન્યા ગૃહિણી થયા બાદ પોતાના ઘરને શોભાવી શકતી નથી તેમજ ગૃહવ્યવસ્થા ઠીક ન હોવાને લીધે ઘરની હવા પણ સારી રહેતી નથી, આ કારણથી અનેક રોગો ઘરના આખા કુટુંબને પીડે છે. વળી કન્યા દરેક સાથે હળીમળીને આવે એમ શિક્ષણ આપવું જોઈએ. હળીમળી ચાલનાર કન્યા ભવિષ્યમાં કુટુંબમાં સંપીને રહે છે. સંપીને રહેનારમાં દ્રેષરૂપી દુર્ગુણ દાખલ થતો નથી. વળી કન્યાને દરેક કાર્ય વિચાર વિવેક પૂર્વક કરવાની ટેવ પાડવી જોઈએ. ઉતાવળથી અવિચારી કામ કરનારને પાછળથી પરતાવું પડે છે. વળી કન્યાઓને નાનપણથી કપડાં તથા શરીરને સ્વચ્છ રાખતાં શીખવું જોઈએ. આળકોના માત પિતાએ આળકોના સાંભળતાં કે દેખતાં એવી યાતો અને કામ ન કરવાં કે જેથી આળકોના મન પર ખરાબ છાપ પડે. વાણી હંમેશા સત્ય અને મીઠી બોલવી. પર નિંદા કરવી નહિ અન્ય પુરૂષ કામદેવ જેવો હોય તો પણ તેનાપર ક્રોધિ કરવી નહી. પોતાનો પતિ કાણો કુખડો ગમે તેવો હોય પણ તેને દેવરૂપ માનવો એ સ્ત્રીનો ધર્મ છે. સંકટો સહીને પણ શીલની રક્ષા કરવી એ પવિત્ર સ્ત્રીઓની શરૂઆત છે. દુઃખની વખતે ગમંરાષ્ટ્ર જઈ હાથ વોચ ન કરવી પણ ધીરજથી સંકટ નિવારણનો માર્ગ શોધવો વિગેરે સારી કેળવણી કન્યાઓને આપવી કે જેથી ભવિષ્યની કન્યા એટલે ગૃહિણી ધર્મને પાળનાર સ્ત્રી યોગ્ય નિવડે. વળી નાનપણથી ભયતું જૂત ન લાગવા દેવું જોઈએ. ભયથી માણસ અસત્ય બોલે છે. ભયથી માણસ ન કરવા લામક પાપ કરે છે. વળી હું નિર્મલ છું એવી ભાવના મનમાં ન આવવી જોઈએ, પણ એવી ભાવના હોવી જોઈએ કે હું સર્વ શક્તિ-

માન અનંતગ્ન દર્શન સુખ વીર્યનો ધણી છું.
જો હું ધારું તો અળખાની સળગા શકું છું.
દક્ષા મનની નળગાઠ જવી જોઈએ. કેટલીક
સ્ત્રીઓને કંઈ કામ કરવાને કહીએ તો તેમના
મુખમાંથી એમજ નિકળે છે કે અમારાથી નથી
શવું અમને આવડતું નથી, એ એમની મનની
નળગાઠ દેખાડે છે. તહિ, પહેલો તમે એ મનની
નળગાઠ છોડો. તમે જો કળા શીખવા ચાહો તેમાં
પુરતું મન આપો અને ખંતથી કામ કરો તો
જરૂર તે કામ સિદ્ધ થશે. મનની નળગાઠ વાળાજ
નાસીપાસ થાય છે. કાળા માથાનો માનવી જો
ધારે તે કરી શકે-માત્ર પુરુષાર્થ કરવો જોઈએ.
જ્ઞાનદ્વારા પુરુષાર્થ કરવાથી આત્મા અનંત કરોતો
નાશ કરે છે. અને અક્ષય અનંત સુખને પ્રાપ્ત
કરે છે. વ્યવહારમાં પુરુષાર્થ દ્વારાજે જો ન પકડી
શકાય એવા વિજળી તેને પણ જ્ઞાન દ્વારાજે
પુરુષે પકડીને એ દ્વારાજે ખતોએ ઉત્તમ પ્રકાશ
અધાને આપે છે. વીજળીના પંખાઓ ગરમીની
આકુળતાને દૂર કરે છે. ઇલેક્ટ્રીની ગાડીઓ લાખો
માણસોને ઉપાડીને દોરે છે. આ બધું માણસોનુંજ
કર્તવ્ય છે. આપણે પણ માણસોજ છીએ માટે
આપણે પણ જો ધારીએ તે કરી શકીએ. અંતમાં
મારું એજ કહેવું છે કે કન્યાઓને સારી કેળવણી
આપવી અને સારા સમાજમાં ઉછેરવી જેથી તે
ભવિષ્યમાં સારી ગૃહિણી થાય.

ન્યાય પ્રદીપ ।

પં૦ દરવારીલાલજી ન્યાયતીર્થ કૃત બિલકુલ નવોન
ગ્રન્થ । વિના ગુરુકે ન્યાયશાસ્ત્રકા અન્નજ્ઞા જ્ઞાન પ્રાપ્ત
કરારનેવાલી અપૂર્વ પુસ્તક । મૂલ્ય ૧)

ચતુર્વિંશતિ સંધાન (ત્રિચિત્ર શાસ્ત્ર) ।

इसमें एक ही श्लोककं २४ अर्थ निकालकर उससे २४
तीर्थकारोंकी स्तुति करके फिर उसी श्लोकका २५ वां
अर्थ निकालकर समुदायात्मक स्तुति की है । संस्कृत व
हिन्दी अर्थ सहित । जैन साहित्यमें ऐसा अनुपम ग्रन्थ
आजतक प्रकट नहीं हुआ है । पृ० १५२ मू० ॥)

पैमेजर-दि० जैन पुस्तकालय-मूरत ।

સંસારનો સૈનિક.

(વિષયક:-ચુનીલાલ વીરચંદ ગાંધી, મુંબઈ.)

યુવાન એ નવ સંષ્ટિનો સર્જનહાર છે. યુવક
અને યુવતિ એ સંસાર રથનાં બે ચક્રો છે, સુખ
કુખનાં સહોદર છે. આ પતિઓના સામે થનારાં
ને શહેનારાં એ સૈનીકો છે. જતા સર્પને રમકકુ
સમજી પકડવાની-નીડરતા ભરી રમત રમનાર
ખાળક-યુવક અને છે. એજ યુવક તે આવતી
કાલની આશા છે. એજ યુવતિ કાલની ઊંધા છે.
યુવકોની જુવાખદારી વધતી જાય છે. આજે
ખારતવું ગૌરવ યુવકોની વીરતા પર આધારવત
છે. યુવક સંગઠનની ભેરીઓ ચોખેર ગર્જના કરી
રહી છે. “યુજી લીગ ને યુવક મંડળો” ની
રચાપના થતી રહી છે.

આજના યુવકને યુવતિને શીરે અનેક પ્રકારની
જવાખદારી છે.

સમગ્ર ખારતના દિગ્ગ્વર જૈન સમાજના
યુવકોનું એક સંગઠન થવાની અનીવાર્ય જરૂર છે.
અને ગામે ગામ યુવક સંઘની રચાપના થવાની
ખાસ જરૂર છે.

જુની રૂઢીઓનાં અંધન તોડવાને ભગીરથ
પ્રયત્નો કરવા-તમે શું કરશો ? વિધર્મીઓની
શું ડાશાહીથી બચવા તમારું બળ કેવી રીતે કેળવશો ?
માય કાંકલા અને બીરતાથી વિમુખ થવા તમે
શું કરશો ?

વીર બંધુઓ-યુવક સંગઠન માટે મંડળોની
રચાપના કરો.

શારીરિક બળ માટે વ્યાયામશાળાઓ રચો,
કસરતથી તમારાં શરીર સુંદર ને સુદૃઢ બનાવો,
વીર વીરાંગનાના પાઠ ભણો, નીડર અને, મરણનો
એકજ દીવસ નીર્માણ છે, એ યરાચર સમજી
તમારા મંદિરોનું રક્ષણ કરો. તમારાં માતા અને



બહેનોની આબરૂ સાચવવા ચુંડા નહિ પરંતુ વીર બનો. વહેમ, પ્રમાદ અને જડવાદમાંથી બચો. તમે નિર્બળ છો, એ ભાવનાને તોલાંબલિ આપો. ક્ષાવર અને હૃદયપુષ્ટ મનુષ્યના હાથમાં તક્ષવર હીમત વિના નકામી છે. કારણ કે બળ છે છતાં હિંમત નથી. આત્મબળ જેનું સર્વોપરી છે, તેની સામે ફેની આયુધો હારે છે. એકલા બળથી વિજય નથી પરંતુ સાથે કળાની ખાસ જરૂર છે.

સાચો વીર ધા ઝીલી શકે છે. ધા ઝીલી શકે છે એજ ધા કરી શકે છે. પીઠ પાછળના ધા અને નીંદા એ તો ચોખ્ખી ભીરૂતા છે. જે વીરને મરતાં આવડે છે તેનેજ જીવતાં આવડે છે.

યુવકો. પ્રમાણીક માર્ગે કુચ કરવા તમારી જીવન નૌકા હાંકો, એમ શાસ્ત્રો કહે છે. માતા પિતા ને વડીલોની આમન્યા સાચવી સ્વતંત્રપણે આગળ આવો. સ્વતંત્ર બનવા આકાશ પાતાળ એક કરો. સ્વચ્છંદી કદી ન બનશો. જેઓને ઘેર રિહી-સિદ્ધિ લાડી વાડી ને માડી છે, જેને ખીજના દુઃખોની દરકાર નથી, અન્યનાં આંસુડાંની જેને કીંમત નથી, તેમ એકલપેટાની જીવન પ્રથા સામે ખેડો બળવો જગાડવા તૈયાર થાઓ.

મુંબાઇનું શ્રી દિ. જૈન યુવક મંડળ તમોને જોડાવા અપીલ કરે છે. તમોને તમારા ગામમાં ને શહેરમાં યુવક મંડળ સ્થાપવાને વિનવે છે.

તમો મંડળ દ્વારા સંગઠન કરો તો તમારા પર અનિવાર્ય ફરજ છે.

લગ્નો, મરણો, ને વાહ વાહના શુભધ્વનિ પોકરાવવાના દલાવા નીચે જે અયોગ્ય અને ખીજ જરૂરી ચર્ચા થતા હોય તે બંધ કરાવવાને તમારે સાચા સૈનીક થવું પડશે.

સમાજમાં જડ ધાલી ખેડેલી અયોગ્ય રૂઢીઓને ઊખેડવા ધર્મને નામે ધર્મીય બની સમાજમાં અધડા ઊપરિથત ન કરતા દોઢ ડાહ્યાઓને વિવેકથી સમજાવવા, શરજનું બાન કરાવવા સૈનીક થવું પડશે.

હર એક મનુષ્યમાં ત્રણ પ્રકારના જનનમાંથી એક પ્રકારનું જનન હોવું જોઈએ-

ધાર્મિક-સામાજિક-ને રાષ્ટ્રીય. આજે ધર્મીયતા ધારી ખેડેલો એવો એક વર્ગ છે કે તે જીવના જોરેજ આપખુદી ચલાવે છે. નબળો ધણી બેરીપર ચૂરો એ કહેવતે તેનું બળ કુંડુંબ, સમાજ ને આપસ આપસમાં ચાલે છે. ને તેથી કલેશની આગ સળગાવતાજ રહે છે

દેવના ગુણુની ચર્ચા કોઇ સમાજ બંધુ સારી અપેક્ષાએ કરે, મુનિ, ને બ્રહ્મચારીઓની પ્રથા અયોગ્ય ને ક્રિયા રહિત દેખાતાં ચર્ચા કરે તો આ નામના ધર્મીઓની ઊડાપોહ કરી-તેને સખત શિક્ષા કરવા-દોડા દોડ કરે છે. પરંતુ જે વિધર્મી ચુંડાઓના હ.ચે પોતાનું. પોતાના ધર્મનું, પોતાના દેવનું અને માતા બહેનોનું અપમાન થતું હોય ત્યાં ત્યાં બગાસા ખાતા નીરાંતે નીંદા લે છે.

મંદિરો દુટે ચુંડાઓ સમાજ-બાળાઓને ઊઠાવી બચ, તેઓનાં શીયળ હુટે. ભર બજારે સતાવે નદી કીનારે પાણી ભરવા જતી પનીહારીઓને કાંકરા મારે, છતાં મારા આ ધર્મવીરો આંખ પશુ ઉંચી ન કરે. જીમ પશુ ન હાલે, ને તે સમયે બિચારાને આપડાવાણીયા બગાને... આજે જેઓ ધર્મને નામે મરવા તૈયાર છે. આજે જેઓ સમાજ અને ધર્મને માટે કંઈ પશુ કરવા તૈયાર હોય તેઓને સમયનું માન બધું આમ ત્રણ છે કે કુડચી જવા તૈયાર થાય અને પોતાનું નામ શ્રી. દિ. જૈન યુવક મંડળને મોકલાવી આપે.

ધર્મની મોટી મોટી વાતો કરી જાણે છે. પરંતુ ધર્મરક્ષા કરવામાં જ્યાં લગારે તૈયારી ન હોય. ત્યાં ધર્મની હરતી રહેશે કે કેમ તે શંકા છે?

એક વર્ગ એવો છે કે દેવ દર્શનની મહત્તા ન સમજે છતાં જે આચરણ હોય તે ગાડરીય. પ્રવાહ પ્રમાણેજ-એટલે આ વર્ગ રૂઢી પૂજક છે. જીના રીવાજે એટલે આપના કુરામાં કુખી મરવું એ મોક્ષ છે. એવું મનજનરે વર્ગ ને આ છે. દશકાળ ભાવનાને અનુસરીને જે કોઈ નાહી પરિક્ષક હીતની દલીલ રૂઢી પૂજકો સન્મુખ કરે

તો-ને તે દક્ષીણ તેઓને પ્રતિકુળ હોય તો તે દક્ષીણ રણુ કરનારને તેઓ નારતીક ને પાપી માને છે. સુધારા રૂપી રક્ષસને પોષનારા સમજે છે. પુર્વજ્નેની પાકેડી પ્રધાને લુટનારો લુટારો સમજે છે.

આ વર્ગ વાયુ" નહિ કરે પરંતુ હાયુ" તો નરર કરવાનો-જે પ્રગતિ યુવાનો આજ કરવાના છે, તેને આ વર્ગ અંધન રૂપ છે. એ અંધ કાર્યો છે, તે ધીરે ધીરે ટુટોજ જાય છે છતાં તેના પાયા પ્રાચીન હોવાથી ટકી રહ્યા છે. આ વર્ગને યુવકો ચેતવણી આપે છે કે તે કીસ્લાનાં પડેલાં અને પડતાં અયોગ્ય વિપક્ષવકારી બદી રૂપી આક્રોશો ને પુરી દેવામાં અફલ ને વીરતાનો ઝિપ-યોગ કરે, દરેકનું હિતાહિત સમજે, લાભને નુક-શાંનનો સરવાળો કરતાં શીખે ને નશાનું સરવાળું કાઢી જીએ તો-પ્રાચીન પદ્ધતિને સૌ કોઈ પુજવા તૈયાર થાય. આજે એ પ્રાચીન પ્રધાને સ્વાર્થી જનોએ અતિશયોક્તિ મય બનાવી દૂષિત કરી છે ને તેના તેઓ પૂજક છે, એટલે એ પ્રધાનો નાશ કર્યેજ છુટકો છે.

જે પ્રથા નીચે સમાજનું પતન થતુ જાય છે, પાપાચાર વધતા જાય છે, પૈસા ઘટતા જાય છે, સમાજ બીખારી બનતો જાય છે, વીર્ય બીન થતો જાય છે, ભુખે મરે છે, છતાં એ કેમ બને છે, તે જોવાની દરકાર નથી રહી પૂજકોને ? પોતાના વેપારમાં નુકશાની થતી હોય ? નફા ન હોય ? ખર્ચ પુરું થતું ન હોય ત્યાં ત્યાં નીતી ધર્મને અભરાઈએ મુકી જેઓ લેવાનાં ને દેવાનાં કોટલાં જીદોજ રાખે છે, સત્યતાને સ્થળે અસત્યતા વાપરે છે, પરંતુ સમાજનું પતન થાય છે, તેમાંથી બચાવના રસ્તા શોધવા એને ધર્મનો નાશ કહે છે. અને તેની જરૂીમુદ્રી શોધવા બવી. અગર કોઈ બતાવે તો શાન્તિથી સાંભળવું વિચારવું પડે ત્યાં પ્રતિજ્ઞાનું ધાણી થાય છે,

ત્રીજો વર્ગ પરિવર્તન ઇચ્છે છે. કોઈપણ કાર-ણસર પુન્ય ઘટતું હોય ને પાપ વધતું હોય તો તે અટકાવવા માંગે છે જે છરી રક્ષણ કરવા

રાખી હોય, છરી રાખવાનું કારણ સત્ય હોય છતાં જે તેનાથી આપણુંજ ગળું કપાતું હોય, આપણું પતન થતું હોય તો-તે છરીનો ત્યાગ કરવો, અગર તે છરી વિનાશ કરતાં કેમ બની રહે છે, તે કારણો તપાસી દૂર કરવાં.

આજે જે પ્રથાથી માનવ જાત બેહાલ બની જતી હોય, જે પ્રથાથી પાપ પોષાતાં હોય, જે પ્રથાથી બાળાઓ વીધવા વધુ પ્રમાણમાં થતી હોય, જે પ્રથાથી યુવકને યુવતિના સંસાર ખારા ઝેર જોવા બનતા હોય, જે પ્રથાથી અયોગ્ય વય અને ગુણનાં કન્યાંકાં થતાં હોય, ટુટતા દીલનાં જે લગ્ન હોય તેવી તેવી અધર્મિત નીરસ પ્રથાઓનો નાશ કરવા માટે તેમજ અયોગ્ય ખર્ચાંઓને અંધ કરવા, આ વર્ગ ખાસ પરિવર્તન ઇચ્છે છે. તેવી જીલમી પ્રથાઓનો સામે શાન્ત અવરોધ કરવાને ઇચ્છે છે. આજનો સૈનિક દીલનો સાચો યુવક આ વર્ગની આગેવાની લે તો જલદી તેનો અંત આવી જાય.

આજે આપણી દરેકની વચ્ચે ચાર પ્રકારનું કાર્ય હાજર છે-

જેઓ ધર્મને પ્રાણ સમજતા હોય, જેઓ મોટાં મોટાં (પણુ સાવ પોકળ) લેકચરો કરતા-શાસ્ત્રાર્થ નીપુણ હોય, તેવા પંડિત સમુદ્ધ અને સાચા જૈન અંધુઓએ-કુડચી-ધર્મ ને સમાજ રક્ષાને માટે સત્યાગ્રહ કરવા તૈયાર થવું જેમજે ને ત્યારેજ સમ્યાદની ખબર પડે. જેમ બને તેમ તમારું નામ શ્રી દિ. જૈન યુવક મંડળને લખી મોકલો.

જેઓ જીના રીવાજમાંજ શ્રેય માને છે, જેઓ રહીના યુલામ બનીજ રહેવા માંગે છે, તેઓ ધર્મ ને સમાજનું પતન થતું અટકાવે-કેળવણીનો અભાવ ને સાધનની ખામીઓ પુરી કરે-રીધવાઓનું પ્રમાણ ઘટે તેવા રસ્તા શોધે, તેમની આજીવીકા અને ચારિત્ર સચવાય તેવા આશ્રમો રચે-તેમનું રક્ષણ કરે. ધર્મ પરિચારીકાઓ બનાવે-ત્યાગ મૂર્તિની મદત્તા સમજાવે, કલેશ ઝઘડા ને આર્થીક

ખીભારીના ઉપાયો યોજે, સંગઠન કરે-અરસ પરસ મદદ કરતા થાય તે માટે સહકારી એક ઉધાડે.

જે પરિવર્તન ઇચ્છે છે-તેઓ પ્રમાણીક પરંતુ તેજ વિચારના વૃદ્ધો ને યુવકો સાથે ભળે, વિચારોને છણે-ને ઠરાવો કરે. યુથલીંગો રચે-સમાજ સામે રૂઢીઓની ખાતર સત્યાગ્રહ કરે.

બદ્ધ પરિશુભી જીવોને માટે સારામાં સારો એજ માર્ગ છે કે-કુટુંબની રક્ષા કરે ને સમાજ ઉન્નતિના માર્ગમાં ખનતો ફાળો આપે.

યુવક અને યુવતિઓ વિચાર કરે-અને આવતી વિટંબનાઓને નિડરતાથી ને કાર્યદક્ષતાથી વંટાવી પાર બિતારે તો તેવા સૈનિકોની જીતજ છે.

યુવક સૈનિક બિલાહનાં પુર વહીવડાવે,
યુવક સૈનિક સહયુજીશાળી ખનવા પ્રયત્ન કરે.
યુવક સૈનિક સેવા એજ એનું ધ્યેય રાજ્ય,
યુવક સૈનિક ગાશીલ ન અને.

વિશ્વની આવતી પ્રવળ આફતો એ પાપનો ભોગવટો સમજી તે પુરો કરે, સદન કરે પરંતુ તેના મનસ્વીપણા નીચે આરંભેલા કાર્યને સંવા ભાવે ને નિસ્વાર્થપણે કર્યજ જાય તો ગરર તે વિજયવંત નીવડે છે.



વાળની સંભાળ.

ત્વચાના ઉપલા પડના વાળ વધારો છે-એથી શરીરની શોભા ઉપરોત તેનું રક્ષણ પણ થાય છે, પણ વન વાળને યોગ્ય પ્રમાણમાં ચિકાસ ન મળે તો તે બડ થઈ ખરી પડે છે. વાળ ધોવા સાણુ વાપરવાથી તે સુકા થઈ પડી જાય છે તેથી વાળ ધોયા પછી કોઈપણ તેલ ખુબ યોગી યોગીને વાળે લગાડવું અને વાળ યોળવા. વાળ યોળવાથી તેના મૂળની ચામડીને ધસારો લાગે છે તેથી તેમાં બિણ્ણતા આવી રૂધિરાભિસરણુ વધારે થાય છે એમ થવાથી તેને બેઠવું પોપણ તથા બેજ મળી તે સારી પેડે વધી શકે છે. તથા તેમાંના કચરો વધી બધ માથાની ત્વચાનાં દર્દ થતાં નથી. છોકરીઓના વાળની શેર ઝુંથો તે પીઠ પર છુટી રાખવી તથા વાળ તાણીને ખાંધવા બેઠએ. નહી.

‘વિધાર્થી આરોગ્ય ઉપરથી.’



(લેખક:-રામચંદ્ર માધવરાવ મોરે-મુરત.)

‘આ જગતના વહેવારમાં, છે હાય યુરી ગરીબની; કદિ હાય! ખાલી નય ના, સવ સ્વ હાય! એ સામિતી.’

સંધ્યાનો સમય છે. શ્રી સુર્યનારાયણ પોતાના શાંત કિરણો પ્રસારતાં અસ્તાચળે ગમન કરી રહ્યા છે, પક્ષિઓ જ્યાં ત્યાં ઉડી ફીલફીલાટ કરતાં રક્તવટામાં છુપાઈ રહ્યા છે. સરિતાનું નિર્ભય જળ શાંત રીતે વહી રહ્યું હતું. અસ્ત થતા સુર્યનાં ઝાંખા કિરણ જળ ઉપર પથરાઈ જળે શ્વેત ચાદર પાથરે હોય એવો ખાસ થતો હતો. કંઈક માણસો પવનની હાંફમાં આમતેમ ફરી ફુદરતની આ રમણીયતા બેઠ આનંદ માની રહ્યા હતા.

આ સમયે એક તરણુ ખાલિકા સરિતા તટ પર કંઈક વસ્ત્ર ધોઈ રહી હતી. ફુદરતી આ રમણીયતા તરફ ત્હેની બિલકુલ લક્ષ ન હતું. કોઈ-કોઈ વખત આમ તેમ ચંકાર દર્શિએ બેઠ પોતાના કાર્યે મંડી જતી, કારણ આ સ્થળે બીજું કોઈ પણ ન હોવાથી, વળી અંધકાર ધીમે ધીમે વધતો જતો હોવાથી પોતાનું કામ પુરું કરવામાં લીન હતી. એવામાં પાસેજ સ્મિત હાસ્ય કરતા પોતાની તરફ એકી ટસે બેઠ રહેલા એક યુવક પર અચાનક દ્રષ્ટિ પડી.

‘આ હુજ આમ અચાનક અહિં ક્યાંથી ? ખાલિકાએ ત્હેની તરફ કોંઈત દ્રષ્ટિ કરી, મનમાં એટલુંજ બોલી ત્યાંજ કપિત થઈ ઉભી.’

‘સુશીતા, આમ ગભરાય છે શા માટે ? હું તું કોઈ મોટા વાક કે રાક્ષસ છું. ? યુવકે હાસ્ય કરતાં કહ્યું.’

‘ચુપ ઓ નનપશચ ! ત્હારે અહિં મ્હારી પાછળ આવવાનું શું કારણ ? ને ત્હારું બહુ રહેવો હોય તો ત્હારું ડહાપણ એટલેથીજ અંધ કરો મ્હારી સાથે એક પણ શબ્દ બોલ્યા સિવાય અહિંથી ચાલ્યો જ, નહિ તો હમણા હલ્લો મચાવા લોકોને અહિં ભેગા કરીશ, કાંતો સરિતામાં કુદી પડી મ્હારું જીવન આહિંજ પૂર્ણ કરીશ. તે બાલિકાએ સાહસથી કહ્યું.

‘નહિ નહિ, સુશીલા, ત્હારા નામ પ્રમાણે સુશીલ સદ્ગુણી થઇ ત્હારા મુખમાંથી આવતો શબ્દો કેમ નાકળે છે ? શું તું મને છેક તુરુછ અને નીચ સમજે છે ? હું ત્હારા સર્વના હિતને માટેજ કહું છું અને તે વિષેજ યોગ્ય બે શબ્દો ને મ્હારે કહેવાના છે તે કહેવા માટેજ આજે આમ અહિં આવ્યો છું. ત્હમ્હારી આવી ગરીબ દયાજનક સ્થિતિ જોઇ ખરેખર મને બહુજ દયા ઉપજે છે. તું મ્હારું કહ્યું માનીશ તો ત્હારા પિતા પાસે નીકળવું સર્વ હોજી માફ છે. વળી ને ચાહો તે આપી આખા કુટુંબને સુખી કરીશ. સુશીલા, મ્હારે ત્યાં શી વાતનું દુઃખ છે ? ને કાલે ત્હમ્હારા ઘર પર પણ કબજો કરીશ તો તમે ક્યાં બટકશો ? એક તો ભુખમરાથી દીવશ વ્યતિત કરી રહ્યા છો તેમાં વળી આમ રખડતા ત્હમ્હારી શી દશા થશે ? માટેજ કહું છું કે આવો અવસર ન યુમાવતા ત્હારા પિતાને એ વિષે સમજાવ. મ્હારું કહ્યું માનશે તો સુખી થશે, નહિ તો આશીએ મહા ખુરી દશા થશે.’

‘ચુપ ઓ પાપી ! બિચ્કાર છે ત્હને અને ત્હારી દ્રવ્યને,’ ત્હારા જેવા કુર ઘાતકોને આધીન રહેવા કરતાં બીજા માંગી પ્રભુ ઇચ્છાધિને રહેવું એજ શ્રેષ્ઠ છે. ઓ નીચ ! ત્હારો આ હમ્હારા પ્રત્યે દયાનો ભાવ નહિ પરંતુ દયાને નામે મિથ્યા-ડંબર બતાવી હમ્હારું સર્વસ્વ હસ્ત કરી અંતે આ નીચ મહત્વાકાંક્ષી બતાવી રહ્યો છે. ખરેખર ત્હારા પિતાના નામને કલંક લગાડનાર દુષ્ટ કુલાંગાર જનરથો છે. હાય ! ઓ દુષ્ટ નરાધમ !

તું હમ્હારા જેવા કંઈક દીન અનાથ ગરીબોને કાળા ઘોળા કરી રંજાડવામાં સંતોષ માની રહ્યો છે; પણ જલ્પને કે ગરીબની હાયાનું પરિણામ જરૂર બોગવવું પડશે. શ્રીમંતાઇને! તોર આ જ્ઞાની દુન્યામાં કોઇનો રહ્યો નથી અને રહેશે નહિ. દ્રવ્યના મોહમાં અંધ થઇ ગરીબને તું તુરુછ સમજતો હશે પરંતુ સજ્જનો, સચ્ચાઇ અને બલાઇના વર્તનનેજ, ગરીબી ને અમ્હારી સમજી તેજ ખરા માનવી ગણાય છે. કોષાવેશમાં તે બાલિકા આટલું બોલી યુવક તરફ તિરસ્કારની દ્રષ્ટિએ નિહાળતી ત્યાંથી સપાટામાં અદ્રશ્ય થઇ યુવક પણ ચકિત થઇ જતો જ રહ્યો.

‘ઓહો ! જેને ખાવાનાં શંકાં અરે હમ્હારેજ આશરે જીવી રહ્યા છતાં આટલી બધી ઉદ્ધતાઇ ! આજદીન સુધી ફરલા ઉપકારનો આ બદલો ! જેકું છું હવે ગર્વ કેટલા દીવસ ટકે છે. મ્હારા અપમાનનો બદલો હવે જરૂર લઇશ હવે મને કોણ અટકાવી શકનાર છે ? આમ મનમાં વિચારી નિસ્તેજ વદને તે યુવક પણ ત્યાંથી ચાલ્યો ગયો.

(૨)

પ્રજાતનો સમય થઇ ચુક્યો હતો. ગરીબ-દાસ પોતાના જુના પુરાણ મઠનનાં ઝોટલા ઉપર નિંદ્રામાંથી જાગત થઇ કપાળે બે હાથ દઇ ઉદાસ વૃત્તિએ કંઈક વિચારી રહ્યો છે, એવામાં ધરમાંથી ભૂખથી પીડાતા તેમના નાનાં બાળકોનો કશ્ચાજનક રડતો અવાજ આવતાં તેઓ તરત સમજી ગયા અને અંદર જઇ તેઓને છાના રાખતા પોતાની સ્ત્રી (મનોરમા) ને પૂછ્યું-કેમ, ધરમાં કાંઈ પણ ખાવાનું છે કે ?

‘ના, માયું હલાવી માનવૃત્તિએ મનોર-માએ કહ્યું.’

‘ધર વેચાણના જે રૂપિયા મળ્યા હતા તે શું પુરા થયા ? ગરીબદાસે હતાજ થઇ પુછ્યું.’

‘એ રૂપિયા તે કેટલા હતા જે હજી સુધી ચાલી શકે ? આજ ત્રણ ચાર માસ એનાથીજ જેમ તેમ નિર્વાહ થયો, હવે આ મજૂરીમાં જે

કંઈ મળે છે તે પરજ ચાલે છે. ગઈ કાલે શુશી-
લાને પણ કંઈ ન મળ્યું, જે લાઠડાંને ભારે
વેચવા લઈ ગઈ હતી તે પણ પાછો લાવી હતી.
મનોરમાએ નમ્રતાપૂર્વક કહ્યું.”

“હાય ! હવે હું પણ શું કરું ? બીજા માંગ-
તાંએ પત્તા નથી. પાસે પણ હવે કંઈ રહ્યું નથી.
દુબ્બટ દુબ્બટ નદારે પણ પિતાના મરણ પછી ધીમે
ધીમે દુઃખ દેવા માડ્યું છે. એક દીવસે આપણી
સુશીલા વિષે માંગણી કરતાં મેં તેના દુરાચારી
વર્તન માટે ચોકખી ના પાડી હતી. વળી આપણી
પાસે નીકળતા જે થોડા પૈસા હતા તેના પણ
એકના ચાર ગણા બતાવી માંગી રહ્યો છે તેને
ક્યાંથી લાવી આપવા ? હાય ! પ્રભુ હવે આ
જન્મજામીંથી મુક્ત કરે તો સારું. આવી રીતે
કુટુંબનું જીવન કેમ કેટલા દીવસ નમશે ? આટલું
કહી ગરીબદાસે દુઃખિત હૃદયે એક ઉંડો નિઃશ્વાસો
નાંખ્યો. પતિની સામે નિહાળતી મનોરમા પણ
ત્યાંજ હભી આંખમાંથી આંસુ સારતી પોતાની
પુત્રી સુશીલાને ઘેલાવવા લાગી. તરતજ એક નવ
યુવાન બાલિકા આંખો યોગતી ત્યાં આવી ઉભી.”

“કેમ સુશીલા, આજે હજી સુધી કેમ મુઠ
રહી ? કંઈ તપ્પીયત સારી નથી શું ? સુશીલાનું
નિરતેજ વદન જ્યેષ્ઠ માતાએ પૂછ્યું. જા, દુબ્બ-
ટ નમામને ત્યાં જઈ થોડું અનાજ લઈ આવ.
બાલુ બૂખથી રડી રહ્યો છે અને આજે ખાવા
માટે જરાયે કંઈ પણ નથી માટે મોટું ધોષ
જલ્દી જઈ આવ.”

“ના એ નીચ પાપીને ત્યાં જઈ જતાંએ પગ
નહિ મૂકીશ. ભલે બીજા માંગીયું પરંતુ એવા
ચંડાળની કપટી વાસનામાં દબાઈ જીવન કલંકિત
કરવું તેના કરતાં ભલે મરવું એ સારું છે.
સુશીલાએ માતાના શબ્દો સાંભળતાંજ આંખમાં
આંસુ લાવી કહ્યું.”

“એ માણસે આપણને ઘણીજ સહાય કરી
છે અને આજે તું એના પ્રયે આમ આટલો તિર-
સ્કાર કેમ કરે છે ? મનોરમાએ આશ્ચર્યતાથી પૂછ્યું.”

“એ નીચની ખોટા ડોલરૂપી સહાયતામાં છુપી
આકાંક્ષા હવે જણાય છે અને હજી જણાશે. કાલે
એ દુબ્બટ મારી પાસે એક નિર્લજ્જ માંગણી કરી.
મેં તે પાપીને ઘિકારી કાઢતા તેણે આપણને સખત
ધમકી આપી હતી. સુશીલાએ તે વાત સ્પષ્ટ
કહી દીધી.”

આ વાત સાંભળતાંજ ગરીબદાસે એક ઉંડો
નિઃશ્વાસો નાંખી કંઈ ઘેલાવવા જાય છે એવામાં જે
અપરિચિત યુવકો ત્યાં ધસી આવ્યા અને ગરીબ-
દાસને પકડી લઈ જવા લાગ્યા. ગરીબદાસ આ
દ્રશ્ય જોતાંજ સમજી ગયા કે પૈસા દુબ્બટનુંજ આ
કારસ્તાન છે. હાય ! મહારા ઉપર નાહક દેવાનો
ભાર મૂરી જે વાતનો ઇન્કાર કર્યો હતો તેનોજ
આ બદલો લીધો છે. સુશીલા તથા તેની માતા
આ દ્રશ્ય જોઈ આક્રંન કરી રહ્યા હતા. વળી
તેના બાઈઓ પણ પિતાને પકડી જતાં જોઈ
તેઓ પિતાને વળગી પડ્યા, સીપાઈઓ તેને ખેંચી
રહ્યા હતા. ખરેખર આ હૃદયદ્રાવક દ્રશ્ય એક
પાપાણને પણ પીગળાવે એવું હતું.

(૩)

સ્વપ્નપુરમાં ધર્મદાસ નામે એક મોટા જાગી-
રદાર હતા. તેમના નામ પ્રમાણે ખરેખર તેઓ
ધર્મનાજ અવતાર હતા. આ અસાર સંસારને
સ્વપ્નવત્ માની પોતાની અખુટ મીલકતમાંથી
કંઈક પરમાર્થનાં કાર્યો કરી દુઃખીઓની આશિષ
મેળવી હતી. તેમની ઉદાર વૃત્તિએ બિચારા ગરી-
બદાસને પણ બહુ સારી મદદ કરી હતી. ગરીબ-
દાસ પાસે માત્ર રહેવાને ઘર અને સાધારણ જમીન
હતી. જે ઉપર પોતાના કુટુંબનું પોષણ કરતા
હતા. સમય જતાં તેમની સ્થિતિ બહુ ખરાબ
આવતી ગઈ. આખરે જમીન અને ઘર માત્ર એટ-
લુંજ પોતાની પાસે હતું તે પણ ધર્મદાસને
વેચી તે ઉપર કુટુંબનું જીવન કંઈક સમય નીભાવ્યું.
ધર્મદાસે તેની સારી કીમત આપી, તેજ ઘર
તથા જમીન નિઃસ્વાર્થ હોમને પાછી આપી હતી,
પરંતુ ગરીબના નશીબ ગરીબજ.

ગરીબદાસ નામ પ્રમાણેજ ગરીબ, શાંત અને મર્યાદા હતા. પોતાની આવી દયાદ્ર સ્થિતિ છતાં જો કહેશો નીતિમય જીવન દેવ ઇન્દ્રધિને દુઃખનું જીવન સતોષથી ચુબ્ધરતા, લોકોની બનતી મહેનત મજુરી કરી ભૂખ્યા તરસ્યા દિવસ વ્યતીત કરતા. ધર્મદાસે પોતાના જીવન પર્યંત તેમને આવા સત્પાત્ર જાણીનેજ સર્વ મદદ કરી પરંતુ ગરીબદાસને તેમના સદાના આભારમાં મર્યા સમાન લાગતું છતાં શું ? કેા નાઇલાજ.

“દુન્યામાં સર્વ દુઃખનું મૂળ માત્ર એક ગરીબીજ હોય છે. ગરીબીજ પ્રાણી માત્રને હીનપદે પહોંચાડી માનવ જીવનની સર્વ આકાંક્ષા અને અમૂલ્ય જીવન નષ્ટ કરાવે છે; પરંતુ ગરીબી અને અમીરીમાં સૌ સૌના કર્માનુસારજ મળે છે. અમીરીમાં અંધ થઇ અને ગરીબીથી કંટાળી અવિચારીપણથી જે જન કોઈ પણ અવગંધયે ન જતાં પોતાની સ્થિતિ અનુસાર સહન શક્તિ, સહવર્તન અને સતોષથી પ્રસંગને માન આપી દીવસ વ્યતીત કરે છે તેહુંજ માનવી જીવન સફળ છે. અને ભવિષ્યમાં પ્રભુ પણ તેને સદા સહાય થાય છે.”

દુર્ભનદાસ એ ધર્મદાસને મોટા પુત્ર હતો. તેના નામ પ્રમાણેજ તેના કર્મ હતા. મહા નિર્દયી મહાંધ, વ્યસની અને વ્યભિચારી હતો. કુટીલ અને દુષ્ટ મિત્રો સાથે ખસ મોજમજામાં રહી કોઇને પણ ગણુકારતો ન હતો. તેના આરા દુરાચારોથીજ વૃદ્ધાવરણએ પોતાના પિતાને અને નાના ભાઇને દગાથી મારી નાંખી કંઇક લોકોને સતાવી પોતે આનંદ માનતો. પરેપર તેના પિતા ધર્મદાસને કલંક લગાડનાર એ કુલાંગાર પાપી હતો.

બિચારા ગરીબદાસને દુઃખદ સ્થિતિએ પોતાની નીચ વાસનાનો તિરસ્કાર થતાં છેવટે હેણા નિમિત્તે આજે મિચારાના બાળ બચ્ચાને ટળવળતા મહા ક્રેમમાં ખેસાડનાર એજ નીચ પાપી હતો.

(૪)

શરદ્દરતુનો સમય હતો. આકાશ વડીમાં ધન-ધોર ઘેરાઇ જતું તો વડીમાં સ્વચ્છ થતું, કંદી કંદી વિજળીના ચમકાર થઇ ઘોર ગર્જના કરતો વરસાદ વૃટ્ટી પડતો. દૂર જંગલમાં જંગલી જના-વરો તથા ગામના કુતરાઓ અપશુકન સુચક ધ્વનિ કરી મહા ભયાનકતા ઉપજવતા હતાં. આ વખતે સુશીલા પોતાની માતાનું માથું બંને હાથે ધ્યાવતી ખાટલાની નીચે ઝોકાં ખાતી ખેડી હતી. ઘણા લાંબા સમયની માંદગીથી મનોરમાનું શરીર સુકાઇને લાકડાં જેવું થયું હતું. વળી આજે તાવનો સખ્ત જોર હોવાથી શરીર ધગધગી રહ્યું હતું; ખેહોશીમાં કંદી કંદી શવે તેવો બકવાટ કરતો, તો કંદી ઉડા નિઃશાસા નાંખી હાથ પગ જોરથી પછાડતી હતી. સુશીલાની પાસે બાળું કોઇ પણ માણસ ન હતું-માત્ર તેનો નાના ભાઇ કાટયા વૃદ્ધા ગોદડામાં લપેટાઇ એક બાળુ સુષ્ટ રહ્યો હતો. પાસેજ મંદ મંદ દીવા ઝગમગી રહ્યો હતો.

“મા, મા, સુશીલાએ ધીમા અવાજે માતાને જગાડવા માંડી. જવાબ કંઇ નહિ મળતાં સુશીલા થોડી વાર ચુપ રહી. કંઇક સમય જતાં પોતેજ પાસું ગદલતા મનોરમાએ સુમ પાડી, સુશીલા ..

“કેમ મા, સુશીલાએ ઝગમગને જવાબ આપ્યો.”

“રાત્રિ કેટલી થઇ હશે ?”

“મધ્ય રાત્રિનો સમય થયો હશે.”

“શું ? તું હજુ સુધી સુષ્ટ તથી ગઇ ?” “ના મા.”

“જ તું સુષ્ટજ, મને હવે જરા ઠીક છે. કંઇક સમય ત્યાં શાંતિ છવાઇ. સુશીલા પણ ત્યાંજ ઉદાસ ચિત્ત ખેસી રહી હતી.”

“તું હજુએ સુષ્ટ તથી ગઇ ?” પુત્ર જાગ્રત થઇ પુછ્યું.

“હા સુતું છું, કહી સુશીલાએ ત્યાંજ ખાટલા સાથે માથું ઠેકવું, પરંતુ તરતજ તેની મા ઝળકી ઉડતા તેની પાસે ગઇ અને પુછ્યું.”

“કેમ શું છે મા ?”

“કંઈ નહિ સુશીલા, આ વખતે તારા પિતા હોમ તો કેવું સાઈં.....સુશીલા રડી પડી લેતું હૃદય બરામ આંબું.”

“સુશીલા રડ નહિ, તને ખબર છે કે તારા પિતા ક્યારે આવશે ?”

“હવે તેઓ થોડા વખતમાં આવશેજ. ધીરજ આપતાં સુશીલાએ કહ્યું.”

“શું ? આવશેજ ? વ્હુકું ન ખોસ, દુષ્ટ દુર્જન-નદાસે હાય ! કેદમાં.....”

“તે નરપિશ્ચાયનું નામ ન લ્યો. તે દુષ્ટેજ આપણને આજે આ સ્થિતિએ પહોંચાડી લોહીના આંસુ વહાવ્યા છે.”

“હા હું પણ તેજ કહું છું, પણ મદારા વ્હાલા રત્નો, મદારી પાછળ ત્હમારું શું થશે.....?”

“આજે આમ કેમ ખોલે છે મા ? શું આમ હમને દુઃખમાં મૂકી આ જ્ઞાની દુન્યા તજી તું એકલી ચાલી જઈશ ?” સુશીલાએ ગળગળીત કહે કહ્યું.

“વાઈં, હવે એક વાર મદારા વ્હાલા પુત્રાનું દર્શન કરાવ.”

મા, નાનો આપુ તો સુષ્ટ ગયો છે.

અને મનહર મનોરમાએ આશ્ચર્યતાથી પુછ્યું.

“શું તું સ્વપ્ન જ્ઞેષ્ટ રહી છે ! પિતાજીના ગયા આઠ ચાર દીવશમાંજ આપણને મકી પરલોક ચાલ્યો ગયો છે. આ વાક્ય સાંભળતાંજ મનોરમાની આંખમાંથી આંસુ નીકળી પડયા, કંઈ રૂંધાઈ ગયો. તે એકદમ ઠીવતા જેવી બની પથારીમાંથી ઉભી થવા જાય છે; એવામાં આરણ્ય પર આવજ થઈ અને આરણ્યું જ્ઞેરથી ખુલી ગયાં ભયભીત દૃષ્ટિએ અનેની આંખો તે તરફ લાગી; સુશીલાએ એક ચીશ પાડી ત્યાંજ ઢળી પડી. લેતી માતાએ પથુ કંપિત હૃદયે એક ઉંડો શ્વાસ મૂકી. એ નરપિશ્ચાય લોહીના આંસુ વહાવનાર દુષ્ટ દૂર થા...પ્રજુ ત્હારું બલું નહિ કરે...એટલુંજ રૂંધાતા કંઈ ખોલી પોતાની આંખ સદાને માટે બંધ કરી જમીન પર પછડાઈ પડી. કેમ

હવેજ ખબર પકરી, એમ કહેતો દુષ્ટ દુર્જનદાસ શ્મિતહાસ્ય કરતો ત્યાં ઉભો દ્રષ્ટિએ પડ્યો હતો.

x x x x

ઉપલી ઘટનાને આજે કંઈક સમય વીતી ગયો છે, ગરીબદાસ આજે તે સ્થિતિમાં નથી. લેમના છેવટના જીવનમાં ધજોજ પરિવર્તન થયો હતો. સુશીલાના પણ લગ્ન થઈ લેલું જીવન પણ હવે પહેલાનું નહતું. સુદૈવની કૃપાથી આજે તેઓ આનંદમાં દીવસ વ્યતિત કરી સર્વ વાતે સુખી છે.

પરંતુ દુર્જનદાસનું આજે ત્યાં નામ નિશ્ચાન પણ નથી. લોહો કહે છે કે વર્ષાકાળમાં મેષ ગર્જનાથી વિજ તૂટી પડતાં આખા કુટુંબની દુર્દશા થઈ, સર્વસ્વનો નાશ થવા પામ્યો હતો.

અહા ! હાય ! ગરીબની હાય !!



મંગતિનાં ફઝ.

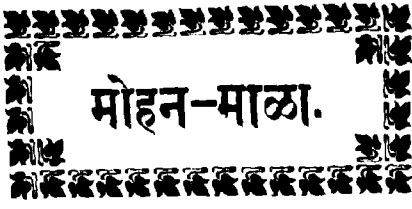
ધર્માત્મા અંધુઓ ? જો તમારે સુખી થવું હોય, જો તમારે મજબૂત આંધવી હોય, અને જો તમારે પુન્યની પ્રાપ્તિ કરવી હોય તો સન્નજન, ધર્માત્મા, સદાચારી, ફેલ અને શુભીયક્ષની સન્નગતિ કરો.

વહત, છાકટા જેવા, ચઢાઉ, ઉડાઉ, મદના ભરેલા, લુચ્ચા, લશંગા, લોખી, વ્યભિચારી, કોડ-લીવર ઝાઝલ (માછલીનું તેલ) જેવા અભક્ષ ભક્ષ કરનારા, ધર્મની અને ધર્માત્માઓની ઠૂંકા મરકરી કરનારા, અતીતિ અને અન્યાયમાં પાછી પાની નદિ કરનારા, વગેરે અનેક એવા દુર્ચ્છી હોય, એવાઓની કદીપથુ સંગતિ કરશો નહી. સંગતિના કળ જરૂર લાગ્યા વિના રહેશે નહી. જુઓ ?

શબંની સંગતથી સહે, બલાજનો કુંપ બાર;

માંકળના મેળાપથી, ખાય ખાટલો માર.

માટેજ—સત્સંગતિ એજ પરસમીજી છે.



મોહન-માઝા.

૧. જ્ઞાન રૂપી રત્નને મેળવીને બ્રહ્મચર્ય રૂપી વ્રત અગિકાર કરી દયાને ધારણુ કરો.
૨. આત્મ જ્ઞાન રૂપી સરોવરમાં રનાન કરીને પાપ રૂપી મેલ ધોષ નાંખો.
૩. શરીર રૂપી કુંડમાં ધ્યાન રૂપી અમ્મિ મળવાનીને દુષ્ટ કર્મોની આહુતિ આપી ભસ્મ કરો ?
૪. ઠપાય રૂપી દુષ્ટ પશુને પૂર્ણાહુતિ પ્રસંગે આહુતિ આપી સ્વાર્થ સાધનની દુષ્ટ જીવસાને ભસ્મ કરો.
૫. એવી રીતે આત્મ યજ્ઞમાં દુષ્ટ કર્મોને યાજી આત્માને નિર્ભજ બનાવો.
૬. મનાવે ધર્મ હિંસાને,
માનો મૃદ મનુષ્ય તે.
નહિ તે પામશે સુકિત,
નર્ક માંહી તે પડે.
૭. ચઢાવા દેવને અર્થે,
યા અમ્મિ વૃત કરણે,
ફરે જે ક્ષાત જીવોને,
જગ્ને જન તે દુર્ગતિ.
૮. બધાના ધર્મ આચરણમાં,
છે ચાર સાર સમાન તે.
અહિંસા સત્ય ધારીને,
ચોરી મૈથુન વર્જવાં.
૯. કરેલાં કર્મ શુભાશુભ,
ભોગવવાંજ પડે ખરે.
પુરાણે ક્ષીણુ જે કર્મો,
કલ્પ કોટી ન સાંપડે.
૧૦. અહિંસાતણા કપદેશને, જે ધર્મમાં પ્રથમે ધર્યો,
નિશ્ચય થકી તે જ્ઞાનજો, છે ધર્મ સર્વે શ્રેષ્ઠ તે.

- હિંસા થકી પોઠાય છે, જીવ-જન તેનો જન્ય છે,
શરમાન મોહન સાંભળો, હે ધર્મ કેમ ગણાય તે :
૧૧. દયા વિણુ ડહાપણુ નહિ, ડહાપણુ વિણુ નહિ ધર્મ,
ડહાપણુ ધર્મ દયા વિણુ, છે એને શિર શર્મ.
 ૧૨. નહિ કાંઈ નીતિની રીતો, વળી નહિ ધર્મ કે સુત્રો,
નહિ આચારની પ્રીતો, ગણી દ્યો જ્ઞાનના સુતો.
 ૧૩. ધર્યો જે જનમ ભારતમાં ધરો દિલ દાઝ ભારતની,
નહિ કે કાળમાં સુકો, દિલેથી દાઝ ભારતની.
 ૧૪. હરો જે કર્મ માંહી તે, ન કોથી મિથ્યા શાવ,
લાખની પાષ બનીને, પાષ લાખો પામશે.
 ૧૫. સાહિત્ય-સંખીત-કળા વિનાનો,
પશુ પ્રમાણે પુંછડા વિનાનો
ખાએ ન ખડ તોપણુ તેય જીવે,
તે ભાગ્યવંતો પશુ તો પિછાણો.
 ૧૬. નથી વિદ્યા અને દાન, જ્ઞાન-તપ-ગુણ જે કને,
વૃથા જનમી આ સંસારે, ધરા ભાર નાહક ધર્યો.
 ૧૭. ધણા જનમ્યા અને જનમે, પામ્યા નાશ ખરા ખરે,
કરી જે દેશની સેવા, ધન્ય જીવ્યો તે ખરે.
 ૧૮. દાન-ભોગ અને નારિત, ધનતણુ છે ગતિ,
કરે નહિ દાન ને ભોગ, જગ્ને છે તૃતીયા ભણી.
 ૧૯. મનુષ્યોના શરીર મધ્યે, બાળસજ મહા રિપુ.
નથી બંધુ સમા લેલોગ, ઉલોગી ન કદા દુઃખી.
 ૨૦. કાર્ય છે કર્મના આધીન, બુદ્ધિ કર્મ પ્રમાણુની,
અહો હે સુમ પુરુષોત્તમ, કરો કર્મ વિચારીને.
 ૨૧. થએલું દૈવ્યથી નિર્માણુ, મળશે હાલજ કે પછી,
કરમનાં અંધનો આગળ, મહેનત શાય વિજ્ઞાતમાં.
 ૨૨. રૂપાળાં ઈંધણુથી ન્યમ, વધેલી અગ્નિ જવાળા છે,
કરો નહિ સંગ વેશ્યાનો, નહારાં તેનાં નખરાં છે.
 ૨૩. નથી ન્યાં કામ પ્રવેશ્યો, હશે જ્ઞાન વિવેકના,
પ્રવેશ્યો કામ જ્યાં જ્યાં છે, નાશી દૂર કુલીનતા.
 ૨૪. કર્યાં આરંભ જે કાર્યો, સ્ત્રીઓએ અતિ પ્રેમથી,
નહિ કોથી ઉલ્લંઘ્યાએ, બ્રહ્મા પણુ સમર્થ નથી.
 ૨૫. સારા કુળમાં જનમેલો પુરુષ પણુ
ખરાખ સોગતથી નહારો અને છે.



૨૬—વૈર, વૈરવાનલ, વ્યાધિ, વાહ, વ્યસન, એ પાંચ પ્રકાર વૃદ્ધિ થવાથી અનર્થ ઉત્પન્ન કરે છે.

૨૭—કૃતસ સ્વામીની સેવા, ઉત્તમ સ્ત્રીથી લગ્ન, અને નિર્લોભી પુરુષથી મિત્રતા કરનાર કોઈ દિવસ દુઃખી થતો નથી.

૨૮—મિત્રતા સરખા સ્વભાવવાળાનીજ શોભે છે.

૨૯—સાપના દર પાસે રહેવું તેમજ શત્રુની પાસે રહેવું સારું છે, પણ ધર્મહીન મૂર્ખ અને લોભી પાપી મિત્ર સાથે રહેવું સારું નથી.

૩૦—પંડિતની સાથે રહેવાથી મરણ થાય તો પણ લાભદાયક છે, પણ મૂર્ખ મિત્ર સાથે રહી રાજ્ય કરવું પણ દુઃખદાયક નિવડે છે.

૩૧—દુઃખના સમયમાં ધીરજ રાખી કર્તાવ્ય-બ્રહ્મ થવું નહિ, એજ ઉત્તમ મનુષ્યનો ધર્મ છે.

૩૨—સતિ સ્ત્રીને પતિ એજ પરમેશ્વર છે.

૩૩—દુષ્ટ પુરુષને પડતીના સમયમાં અવ-ગીજ ખુદિ સુઝે છે.

૩૪—વીરપુત્ર જન્મશીજ વીર જેવા થતા જોઈએ.

૩૫—સંસારમાં તેનેજ ધન્ય છે કે જેના ગૃહે સદ્ગુણી પુત્રોના નિવાસ છે.

૩૬—હૃદયમાં જે વિચારો યુદ્ધ કરતા હોય, તે સુખ દ્વારા બહાર આવે છે.

૩૭—સંસાર-સમુદ્ર સુખરૂપે પાર કરવા માટે પ્રથમ પુરુષોએજ સુશીલ અને સત્યવાન બનવું જોઈએ.

૩૮—દુનિયા દોરંગી છે. તે ગમે તેમ બોલે તેથી સુધારકોએ હિંમત હારવી યોગ્ય નથી.

૩૯—ચોરી કરનાર મનુષ્ય પોતાનો ગુન્હો મરણાંતે કલુલ કરતો નથી.

૪૦—વ્યભિચારી સ્ત્રીઓ છેતરવાના ધણા પ્રયત્નો બજાવે છે.

૪૧—દુઃખ વખતે દૂર હડનાર મિત્રો, મિત્ર નહિ પણ કૂતરા છે.

મિત્રતાને નહિ સમજનાર,

મિત્ર નહિ પણ વ્યંતરા છે.

૪૨—ગુલામગીરી દુષ્ટ કર્મ કરવા કરવાની નથી, પણ સ્વામીના લાભમાં ધર્મપૂર્વક જીવન ગાળી ઉદર પોષણ કરવા કરવાની છે.

૪૩—ધિકાર છે તે નોકરીને, જેની કદર થતી નથી. ધિકાર છે તે નોકરીને જેથી નીતિ રહેતી નથી.

૪૪—જીવ્યું બલું તે નારતું, જે સ્વામી સુખી થતો; જીવ્યું બલું તે નારતું. જે ધર્મ પથે ચાલતી.

૪૫—અનીતિથી મળતું સુખ દુષ્ટનેજ સુખારક હો.

૪૬—સતી સ્ત્રીઓ પતિ સિવાય કોઈની દરકાર કરતીજ નથી.

૪૭—શિયળનું તત્વ ત્રિલોકે ખિરાળે, શિયળ સાચું સાધન છે.

સાચી સતિને સાધનભૂત તો, સાચું મંગળમય શીયળ છે.

૪૮—જેંસ પાસે ભાગવત વાંચવાથી હાયદો નથી.

૪૯—ઉદ્દેગ કર્યે સર્વે કાર્યે સિદ્ધ થાય છે.

૫૦—ખંત ધરીને કાર્ય જે કરશે, મહેનતનું જળ મેળવશે, પ્રૈયં રૂપ સદ્ગુણ ધરવાથી, મિત્ર કાર્ય સફળ થશે.

૫૧—જેને અનેક જાતની ઉપાધિઓ હોય તેનું એકે કામ ફળીભૂત થતું નથી.

૫૨—જે વક્ષ રોગવાળું છે તેનાં જળ પણ રોગવાળાંજ આવે છે.

૫૩—કરણી તેવી પાર ઉતરણી.

૫૪—શરીરનાં સુખો ઉપરથી મમત્વ છોડવો તે વૈરાગ્ય છે.

૫૫—જે જ્ઞાતિમાં વર કન્યા વચ્ચે ચાર વર્ષનું અંતર રાખવામાં આવતું નથી તે જ્ઞાતિ જલદી નાશ પામે છે.

૫૬—આ સમય કહેવાનો નથી પણ કરી બતાવા કારણે, કરી બતાવો કામ રૂડાં, આવી ધરથી બારણે.

૫૭—શ્રાવક તેનું નામ, જગે જે સત્ય અનુસરતા, શ્રાવક તેનું નામ, દિલથી હિંસા ત્યજતા;

શ્રાવક તેનું નામ, ચોરી નહિ સુદ્ધ કરતા, શ્રાવક તેનું નામ, પરસ્ત્રી દૂરથી ત્યજતા.

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ કાશ્મીરકર.

કન્પાલા—(યુગાન્ડા, ઇસ્ટ આફ્રિકા)

આરોગ્યના નિયમો.

(લેખક:-મોતીલાલ ત્રી. માલવી, બાકરોલ)

૧-જે આત્માના બંધ મોક્ષની વાતો કરીએ છીએ તે બંધ મોક્ષ તન મનનેજ અવલંબીને છે.

૨-તન મનને નિત્ય સંબંધ હોવાથી પરસ્પરના આશ્રય વિના તેમની ઉન્નતિ અશક્ય છે.

૩-શરીર શુદ્ધિ નિરોગીપણું અને મન શુદ્ધિ-સદ્વર્તન એ બે આત્મ ઉન્નતિનાં પહેલાં પગથાંયાં છે.

૪-લક્ષમાં રાખો કે તન મનની શુદ્ધિ કે અશુદ્ધિ પર પોષણના પદાર્થો મોટો કાબુ ધરાવે છે.

૫-શરીર, મન, અને આત્માની, અનુક્રમે ઉન્નતિ માટે શુદ્ધ અને સાદા ભોજનનીજ જરૂર છે.

૬-દરદો એ શારીરિક ગુન્હાની શિક્ષા છે અને શરીરના ગુન્હાની શિક્ષા શરીરનેજ થવી જોઈએ.

૭-જેમ સામાજિક ગુન્હાઓ માટે ફટકા, દંડ, કેદ, પાંસી છે, તેમ શરીરના ગુન્હા માટે દરદ, ટાંકટરની શી, પથારી, અને અકાળ મૃત્યુ છે.

૮-જેવા ગુણુ દોષનું આપણું સ્થુળ શરીર ધારશે, તેવાજ ગુણુ દોષનું સૂક્ષ્મ શરીર-મન ધારશે.

૯-આપણો ભૂલો માટે કુદરત રોગ મોકલે, માટે તે ધૈર્યથી સહીને પ્રથમ ભૂલો સુધારવી.

૧૦-લખી રાખો કે આપણાં દરદો આપણે કે આપણાં માયાપોએ કરેલી ભૂલનાંજ કડવાં ફળ છે.

૧૧-આપણાં શારીરિક અને માનસિક દરદો તથા વિકારોનેાં પણ આપણાં બાલકોને વારસો મળવાનો છે.

૧૨-રોગી અને દુશચારી માયાપો નિરોગી અને સદાચારી બાલકોને જન્મ આપવા લાયક નથી.

૧૩-વસ્ત્રાભૂષણથી મદેલા રોગી બાળકો કાઢવાનાં પુતલાં કરતાં ક્ષેષ પણ વધારે ઉપયોગી નથી.

૧૪-"બ્રહ્મચર્ય" એ શરીરરૂપી ભવ્ય ઇમારતનો પાયો છે. "બાળ લગ્ન" એ ભવ્ય ઇમારતને જમીનદાસ્ત કરનાર છે.

૧૫-પંચકેશ રાખવા, દાદી રાખવી, યા મુંડન કરાવવું, એ "બ્રહ્મચર્ય" નથી, "વીર્યનું" રક્ષણ કરવું તેનુંજ નામ "બ્રહ્મચર્ય" છે.

૧૬-વીર્ય સંબંધી આવક જવકનો હિસાબ નહિ રાખનારો વહેલું વહેલું "દેવાણું" કુકે છે.

૧૭-આપણા બધા આચારો આડંબર માટે નહિ પણ આરોગ્ય માટેજ પળાતા હોવા જોઈએ.

૧૮-ઇન્દ્રિયોને પહેલી અને જડ થયેલી કુટેવો છુટતી નથી માટે તેનાથી તમે ચેતતા રહેજો.

૧૯-માદ રાખો કે દરદો કરતાં પણ ઊંટ વૈધોની દવાઓ શરીરની વધારે ચાયમાલી કરે છે.

૨૦-શરીરમાં થતા ફેરફારો જોવાને આપણને આંખો અને ચામડી રૂપી દર્ષણો આપ્યાં છે ?

૨૧-મળમૂત્રાદિ વેગોને વારંવાર અટકાવવાથી અનેક દરદો થાય છે તે વાત તમારા જાણવામાં હશે.

૨૨-શરીરની ગટરોને નિત્ય નિત્ય સ્વચ્છ રાખવી એ તન્દુરસ્તી પ્રાપ્ત કરવાની પહેલી ચાવી છે.

૨૩-તમારા રસોડામાં લખી રાખો કે-માપીને તથા ચાવીને ખાવું તે તન્દુરસ્તીની ખીજ ચાવી છે.

૨૪-વળી ખીજું લખી રાખો કે સાદો અને સાત્વિક ખોરાક એ આરોગ્યતાની ત્રીજી ચાવી છે.

૨૫-નિત્ય જાપ કરો કે શુદ્ધ હવા, શુદ્ધ પાણી, અજવાણું, અને સ્વચ્છતા, એજ આપણા જીવન છે.

૨૬-ભોજનના બાણા પર ગડસાયડસી કરનારા યુજીક્ષિતો પોતાને હાથેજ પોતાનું ખુન કરનારા છે.

૨૭-આંધું ખાવાથી જટલો ફાયદો થાય છે, તેના કરતાં અકરાંતીયું ખાનારને સેંકડો ધણું નુકસાન થાય છે.

૨૮-જમવાનો ઘંટ વાગે એ જમવાનો ખરો સમય નથી, ક્ષુધાનો ઘંટ વાગે તેજ ખરો સમય છે.

૨૯-માથાપર ખેસતા પહેલાં તમે તમારા પેટની પહેલાં સલાહ લેજો, જીભની સલાહ કદિ લેતા નહિ.

૩૦-લખી રાખો કે આપણાં ધણાં ખરાં દરદો

આપણી બગડેલી હોઝરીમાંથીજ જન્મ પામે છે.

૩૧-માદ રાખો કે વીર્ય અને મગજ સંબંધી ધણાક વિકારો બગડેલી પાચનક્રિયાને આભારી છે.

૩૨-તમારી નોટમાં નેંધી રાખો કે-જે ધન્દિય ગુન્હો કરે છે તે ધન્દિનેજ કુદરત શિક્ષા કરે છે.

૩૩-નોટ કરો કે જાડુ જોળીએ યુમાવેલી જીવાની પાછી લાવશે, એ જીવાન મળના હવાઈ કિલ્લા છે.

૩૪-શરીરનો આખો સંચો એક ચુલાને આધીન છે, માટે તે ચુલાને-હોઝરીનેજ નિયમિત ગોઠવો.

૩૫-તમે ન જાણતા હો તો જાણો કે બગડેલા દાંત પણ તમારી પાચનક્રિયાને બગાડી નાંખે છે.

૩૬-મેં કપર ઓઠોને સુવું અને ધોસું એર પીવું એ બે બરાબર છે.

૩૭-દરરોજ વ્યાયામ કરો.

૩૮-ઉત્તેજક યાને માદક પ્રદાયોનો ત્યાગ કરો.

૩૯-ઓઠામાં ઓઠા વીસ વર્ષ પર્વત લગ્ન-બંધનમાં ન પડો.

૪૦-નિંદ્રા શાંત અને ગાઢ રો.

૪૧-સ્વચ્છ અને ખુલ્લી હવામાં તથા પુરા સૂર્યપ્રકાશમાં હમેશાં રહો.

૪૨-દરરોજ સવારમાં મળસકે ચાર વાગે ઉઠી શ્વેચ ક્રિયા, દંતધાવન ક્રિયા, અને સ્નાન ક્રિયા; અને પ્રાતઃસંધ્યા (સ્વાધ્યાય) થી પરવારી દરરોજ ઓઠામાં ઓઠા ૧ માઇલ પગે ચાલીને સ્વચ્છ અને ખુલ્લી હવાનો લાલ લો.

૪૩-તમારું વર્તન નિયમિત, સરળ, શાંત, પવિત્ર અને આદર્શ રાખો.

૪૪-હંમેશાં સત્ય બોલો અને ધર્મનું આચરણ કરો.

૪૫-હંમેશાં મન શુદ્ધ, શાંત, સંયમી, અને સુપ્રસન્ન રાખો.

વાઝલગ્ન-પ્રતિબંધક કાયદો.

(શારદા બિલ)

(લે:-માતીલાલ ત્રી. માલવી-બાકરોલ)

અજમેર નિવાસી રાયસાહેબ હરવિલાસ શારદા તરફથી વડી ધારાસભામાં બાળલગ્ન-પ્રતિબંધક કાયદાનો જે ખરડો રજુ થયેલો, તે વડી ધારાસભા અને લેજિસ્લેટીવ એસેમ્બલીએ પસાર કર્યા પછી કાઉન્સિલ આદિ રટેટે પણ મંજૂર કર્યો, ત્યારપછી વાઈસરોયે પણ તેને સંમતિ આપી છે. એટલે હવે એ ખરડાએ રીતસર કાયદાનું રૂપ લીધું છે. એ કાયદો: બ્રિટીશ હિન્દુસ્તાનમાં સન ૧૯૩૦ ની પહેલી એપ્રિલથી અમલમાં આવશે. આ કાયદાની અગત્યની કલમો જૈન સમાજની જાણ માટે નીચે પ્રમાણે વિગતવાર જણાવવામાં આવે છે.

૧-કલમ ૧. (ક) આ કાયદાને સન ૧૯૨૮ નો 'બાળ લગ્ન-પ્રતિબંધક કાયદો' કહેવામાં આવશે (લ) આ કાયદાનો અમલ બ્રિટીશ બલુચીસ્તાન અને સંચાલ પરગણા સહિત સમસ્ત બ્રિટીશ હિન્દમાં થશે.

૨-કલમ ૨. (ક) આ કાયદા માટે ૧૮ વર્ષની અંદરનો છોકરો અને ૧૪ વર્ષની અંદરની છોકરી 'બાળ' ગણાશે, (લ) જે લગ્નમાં વર અથવા વધુમાંથી કોઈ બાળ હોય તે લગ્નને 'બાળ લગ્ન' ગણવામાં આવશે. (ગ) અઢાર વર્ષની અંદરના છોકરા છોકરીને સગીર ગણવામાં આવશે.

૩-કલમ ૩. જે પુરૂષ ૧૮ વર્ષની ઉપરનો અને ૨૧ વર્ષની અંદરનો હશે, અને બાળલગ્ન કરશે તો તેને રૂ. ૧૦૦૦ દંડ સુધીની સજા થઈ શકશે.

૪-કલમ ૪. જે પુરૂષ ૨૧ વર્ષ ઉપરનો હશે, અને બાળ લગ્ન કરશે તો, તેને એક માસની સાદી સજા યા રૂ. ૧૦૦૦ ના દંડ સુધીની સજા યા બંને સજા થઈ શકશે.

૫-કલમ ૫. જે કોઈ બાળ લગ્ન કરશે, કરાવશે, મા કરવાની આજ્ઞા આપશે, તો તેને



એક માસની સાદી સળ યા રૂ. ૧૦૦૦)ના દંડ સુધીની સળ યાતો બંને સળ થઇ શકશે.

૬—કલમ ૬. કોઇ સગીર બાળલગ્ન કરશે, તો તે જેના રક્ષણમાં હશે—પછી તે તેના માત પિતા હોય કે વાલી હોય કે કાનુની બચવા ગેરકાનુની રીતે સંરક્ષક બન્યા હોય—તેને તેવા લગ્ન થવા દીધા બદલ અથવા તેવા લગ્ન રોકવામાં અસાવધાની બતાવ્યા બદલ એક માસની સાદી કેદ યા રૂ. ૧૦૦૦ ના દંડ સુધીની સળ યા બંને સળ થઇ શકશે.

૭—કલમ ૭. આ કાયદા અનુસાર, પ્રેસીડન્સી માજિસ્ટ્રેટ અથવા જિલ્લા માજિસ્ટ્રેટ સિવાય કોઇ બીજી અદાલત મુકદ્દમા ચલાવી શકશે નહિ.

૮—કલમ ૮. જે લગ્ન સંબંધમાં આ કાયદા પ્રમાણે અપરાધ થયો હોય, તે લગ્નની તિથીથી એક વર્ષની અંદર ફરિયાદ ન કરવામાં આવે તો કોઇ અદાલત કામ ચલાવી શકશે નહિ.

નોટ:—માજી વાઇસરાય લૉર્ડ વિલિયમ બેન્ટિન્કે તે અરસાના અંગાળાના આગેવાન દેશનેતા અને સુધારક—રાજા રામમોહનરાયની સહાયતાથી સ્ત્રી થવાનો ચાલ અંધ કર્યો, તે વખતે કેટલાક જુના વિચારનાને તે રિવાજ પસંદ પડ્યો નહોતો પરંતુ દિવસે દિવસે લોકોને તેના ફાયદા જણાવાથી તે રિવાજ પછીથી અનુકુળ લાગ્યો, તેવીજ રીતે આ કાયદો શરૂઆતમાં તો કેટલોક મુશ્કેલ જણાશે, પરંતુ દિવસે દિવસે તેના ફાયદા જણાતા જશે ત્યારે તે લોકોને વધુ સુલભ થઇ પડશેજ.

નામદાર ગાયકવાડ સરકાર અને મહીસુર રાજ્ય તરફથી “બાળલગ્ન પ્રતિબંધક કાયદો” કેટલાક વખતથી બહાર પડેલો છે, તેને આ કાયદાથી કેટલીક પુષ્ટિ મળશે અને ભવિષ્યમાં હિંદના બીજા દેશી રાજ્ય રજવાડા પણ તેનું વહેલું કે મોડું અનુકરણ કરશે, જેથી ભવિષ્યમાં આ કાયદાનો સર્વત્રપણે અમલ થવાને વાર લાગશે નહિ એમ પૂર્ણ સંભાવના છે.

જૈનોનું દિગ્દર્શન.

(લે:—હીશલાલ પુરુષોત્તમદાસ શાહ, મુંબઇ.)

જગતમાં જૈન દુનિયા—જગત જ્યારે પ્રગતિને પથે વધું છે, ત્યારે આપણો જૈન સમાજ ઘાટ નિદ્રાને વશ થઇને સૂતો છે. આ નિદ્રા એ બાળકોની પરિશ્રમ પછીની નિદ્રોપ નિદ્રા નથી, પણ પાકટ વયે પહોંચેલા વિકૃત મનુષ્યની ચિરસ્થાયી નિદ્રા છે. આ નિદ્રા આપણા સમાજને શાપ રૂપ છે જે આ નિદ્રા એ બાળકની નિદ્રોપ નિદ્રા હોત તો જૈન સમાજ ક્યારેનોય. બાળકની ચૈતન્યમય અવસ્થાને પ્રાપ્ત કરી શક્યો હોત. પરંતુ—આપણા સમાજની તે પરિસ્થિતિ નથી. એટલેજ આપણો જૈન સમાજ અવનતિના ઉડાણમાં દીવસે દીવસે કુચ કદમ કરી રહ્યો છે. ઉડાણમાં પડેલો આ સમાજ પોતાના મથાઈ સ્વરૂપને ભૂલી ગયો છે અને નિજ સ્વરૂપને ભૂલી જઇ પર-વિષયક વસ્તુઓને પોતાની માની દીવસે દીવસે તેમાં લુપ્ત થતો જઇ પોતે ઊંડી દુઃખ-ગર્તામાં ઉતરતો જાય છે, અને એ પરિસ્થિતિને પોતાની ખરી પરિસ્થિતિ માની તેમાંજ રચ્યો પડ્યો રહે છે. જ્યારે જગતભરના બીજા સમાજો પોતાના કુરિવાજો આદિ સડારૂપી આંમળાઓનો ત્યાગ કરી પ્રગતિને પથે ધપી રહ્યા છે, અને ખાડામાં પડેલો મનુષ્ય જે આશ્ચર્યતાથી હવાયાન ખેડતા મનુષ્યને જોઇ રહે છે, તે પ્રમાણે જૈન સમાજ વિસ્થુરિત નયને જગતની કુચકદમ જોઇ રહ્યો છે. અને કેટલાક લામણી પ્રાધાન્ય માણસો સમાજની આ પરિસ્થિતિ ઉપર ઉંઠાં ઉંઠાં અમુક સારે છે.

જૈનોને તેમની સ્થિતિનું લાન—જેમ ખાડામાં પડેલો મનુષ્ય જગતના પડપરનું પ્રકૃતિ સૌંદર્ય જોવા માટે ખાડામાંથી બહાર નીકળવાના પ્રયત્નો કરે છે, તેમ આપણી સમાજના કેટલાક

ઉધરતા યુવાનો જગતનું સ્વતંત્રતામય વાતાવરણ-
રૂપી સૌંદર્ય પીવા કુદાકુદ કરી રહ્યા છે. આ કુદા
કુદીએ અવનતિની ખીણમાં આરામથી ઉત્તતા
કેટલાક માણસોને જગાડી મૂક્યા છે. આ પ્રમાણે
યુવાનોની મદદથી આપણા સમાજમાં ધીમે ધીમે
જગૃતિ થવા માંડી છે. પૃથ્વી સૂર્યની આજુબાજુ
ભ્રમણ કરે છે. પૃથ્વીની યન્ને બાજુ એક પછી
એક પ્રકાશમય અને અંધકારમય થતી જાય છે.
આમાંની એક બાજુ તે જૈન સમાજ અને ખીણ
બાજુ યાકી રહેલું જગત. હું પ્રથમ કહી ગયો
તેમ જગત પ્રગતિને પંથે પહોં છે, તેથી આપણી
સરખામણીમાં તેની પ્રકાશમય બાજુ આવે છે. આ
ઉપરથી વિશ્વ નિષ્કમ પ્રમાણે જૈન સમાજને અંધ-
કારમય બાજુ આવે. પૃથ્વીના ધરવાથી અંધકાર-
મય બાજુમાં ધીમે ધીમે ઉષા પ્રગટ થઈ
આખરે મધ્યાહ્ન તપે છે. જૈન સમાજની
પણ તેમ ઉષા પ્રગટી છે. અને ભવિષ્યમાં
જૈન સમાજનો સૂર્ય પ્રખર તપશે. જેમ પૃથ્વી
ઉપરની ઉષા સૂર્યનાં બાહકિરણોને આભારી છે,
તેમ જૈન સમાજની હાલની પ્રગટેલી ઉષા આપણા
ઉધરતા નવયુવાનોનેજ આભારી હોઈ શકે.

જૈનોએ કરવાં જોઈતાં કાર્યો—હજી તો
આર વાગ્યા છે. ભાગ્યેજ કોઈ માણસ શૈય
ક્રિયા માટે જાય છે. જૈન સમાજમાં પણ તેજ
દેખા છે. ઉષા પ્રગટયાં છતાં જૈન સમાજે
નહિ જેવું શૈય કાર્ય કરવાની પ્રવૃત્તિ આદરી છે.
સમાજક કાર્ય કરવાનું તો હજી જૈન સમાજે
આરંભ્યું નથી. આર્થિક પરિસ્થિતિ સુધારવા જોઈતા
વિદ્યાભ્યાસ તરફ કંઈક કંઈક ધ્યાન અપાવવું
શરૂ થયું છે. જે કે તે સંગીન તો નથીજ, છતાં
જે થયું છે તેથી વધુ થવાની સંભાવના રહ્યાં
કરે છે. અને ધાર્મિક બાબતોમાં તો જૈન સમાજ
અવળાં પગલાં માંડી રહ્યો છે. ધર્મોન્નતિ કરવાને
બદલે માંહો માંહે કલેશ અને વેરનાં બીજ વવાઈ
રહ્યાં છે. શ્વેતાશ્વરોમાં અંધશ્રદ્ધાજી બડેતો તરફથી
ઉત્તેજિત થતી બાહ્યદીક્ષા અને તેના વીરોધીઓ

દીક્ષા પ્રવૃત્તિના નામે આમ શ્વેતાશ્વર સમાજનાં
મૂળ ઉખડી રહ્યાં છે. દિગમ્બર સમાજને પણ
સાથે સાથે પંડિત પાર્ટી અને બાબુપાર્ટીના કલે-
શથી ઘણુંજ સહન કરવું પડ્યું છે. અને હજી
વેળાસર ઉપાયો યોજવામાં ન આવે તો ઉપરના
સમાજનો નાશ નિર્માયો છે. તદુપરાંત પેટા
વિભાગોમાં પણ જેવા કે-નૃસિંહપુરા, હુમડ, અને
મેવાડા શાંતિઓમાં અગેવાનોના ખોટા મતવોને
અને હઠામહોને લીધે કુસંપો અને તડોએ ધર
ધાલ્યું છે. જે કે યુરકોની પ્રવૃત્તિને લીધે એક
પરિણામ હુમડ શાંતિના એકત્રિતપણામાં આવેલું
છે. આનો ધડો નરસિંહપુરા અને મેવાડા આદિ
શાંતિઓએ લેવા જેવો છે. યુવાનોની ધરજ છે કે;
આ દિશા તરફ તેઓ ધ્યાન દોડાવે; અને સમાજ
એકત્રિત કરવા પોતાનો સંપૂર્ણ ફાળો આપે,
તેમજ સામાજિક પ્રગતિમાં કુરિવાજો જેવા કે;
કન્યાવિક્રય, બાળલગ્ન તથા વૃદ્ધ લગ્ન તથા
સીમંતાદિ ન્યાતોના ગેરવ્યાજબી ખર્ચાઓ સમાજનું
સત્યાનાશ વાળી રહ્યા છે, તેમજ આરમાદિના
ખર્ચો પણ ગેરવ્યાજબી હોઈ, તે લોહીના લાડુ
અટકાવવાની યુવાનોની પહેલી ફરજ છે.

જૈન યુવાનોને હાકલ—જૈન યુવાન ! તું
જો યુવાન હો, તારામાં યુવાનીની બાવના હોય
તો તારા માટે સમાજમાં ક્ષેત્ર ઘણું છે. તું
નવયુગની બાવના ઝીલવા તત્પર બન; અને તારા
સમાજને ઉન્નતિના માર્ગે લઈ જવા પ્રયત્ન કર.
અલગત એક હાથે કોઈપણ દીવસ તાલી પડતી
નથી, છતાં સંગઠન એ એક એવી વસ્તુ છે કે;
જેની સામે ખીણું કોઈપણ બળ ટકી શકતું નથી.
તો યુવાન બંધુઓ ! તમે જ્યાં હો ત્યાં તમારી
સંગઠન શક્તિ વધારો, યુવક મંડળો સ્થાપો, અને
તમારા સમગ્ર બળથી સમાજની જર્જરિત થઈ
જયેલી ઇમારત તોડી નાખી સંપૂર્ણ મજબુત.
અને વિશ્વાળ ઇમારત ઉભી કરો. સમાજના સડા-
કુરીવાજો દૂર કરી સમાજમાં સહબાવના તથા સંપ
વધારી સમાજને ઉન્નતિના રસ્તે દોરી જાવ. યુવાન

એ હાલના જમાનાનો યુવાની છે. અને દરેક— સમાજ આલ્યારે પોતાના યુવાનેનું દોરું દોરવાય છે. અને પ્રગતિને પથે પડી તેનાં સ્ત્રીમંડ કળો ખાય છે. યુવાન ! તું કર્તવ્ય વિમૂઢ બનીશ નહીં, વડીલાઈના ઝોઠા નીચે દમ્બાઈ જઈશ નહીં, જ્યાં તારો આત્મા અન્યાય સામે બળવો પોકારી ઉઠવો જોઈએ, તે ટાઇમે વડીલોની ખોટી શરમ તને કર્તવ્ય-વિમુખ ના બનાવે તે યાદ રાખ-મચ્છુ છું કે આપણા જૈન સમાજના યુવાનો પોતાનું કર્તવ્ય સંભાળી લઇ સમાજને ઉન્નતિને પથે લઇ જશે.

કર્મની વિચિત્રતા.

(લેખક:—પન્નાલાલ ડાહ્યાભાઈ ઝવેરી-સુરત)

કર્મ તારી કળા ન્યારી હુબરો નાચ નાચાવે છે, ધડીમા તું હસાવે ને, ધડીમાં તું રડાવે છે.

હે કર્મ ! તારી ! વિચિત્રતા આશ્ચર્ય ઉપજાવે એવી છે. શ્રીમંતોની શ્રીમંતાઈ તોડાવનાર, અહં-કારીઓના ગર્વને ઉતારનાર, રાગને રંક બનાવનાર, મહત્ સુખમાં વિદ્ધ નાંખનાર, સત્યવાદીઓના સત્યને તોડાવનાર, યાનીઓના યાનને અજ્ઞાન બનાવનાર, હે કર્મ ! તારી કળા અજબ છે !

કર્મ એટલે રાગ દેષાદિક પરિણામોના નિમિત્તથી કર્મણુ વર્ગણુ રૂપ જે પુદ્ગલ રક્ષણ જીવની સાથે બંધને પ્રાપ્ત થાય છે તેને કર્મ કહે છે.

આખો સંસાર આ કર્મની વિચિત્રતા ઉપર રચાયો છે. કર્મ એ મહાન વૃક્ષ છે અને તેની આઠ મોટી ડાળાઓ છે (૧) યાનાવરણી (૨) દર્શનાવરણી (૩) વેદનીય (૪) મોહનીય (૫) આયુ (૬) નામ (૭) ગોત્ર (૮) અન્તરાય અને આ આઠની દરેક નાની નાની શાખાઓ છે તેને પ્રકૃતિ કહે છે. તે નીચે પ્રમાણે છે. (૧) પાંચ છે (૨) નવ છે (૩) બે છે (૪) અઠ્ઠાવીસ છે (૫) ચાર છે (૬) ત્રણ છે (૭) બે છે અને (૮) પાંચ છે.

જેવી રીતે લોહચુંબક એની પાસે પડેલા લોખંડને આકર્ષે છે તેવીજ રીતે આ કર્મો આત્માને આકર્ષે છે અને તેથીજ કરીને આપણો આત્મા આ કર્મોરૂપી જળમાં સપડાઇ જાય છે.

જેવી રીતે અદાલતમાં ન્યાયાધીશ ન્યાય સરખો આપે છે (બલે પછી રાજ હોય કે રંક) તેવીજ રીતે આ કર્મોરૂપી જળમાં ન્યાય સરખો મળે છે. આ કર્મોની શીલસે:શીમાં કોઇપણ બચી શકતું નથી. રાગએ જેવું કૃત્ય કર્યું હોય તેવા તેને કર્મોનો ઉદય થાય છે અને ગરીબે જેવું કૃત્ય કર્યું હોય તેવો તેને કર્મોનો ઉદય થાય છે. હવે જે આપણે કોઇપણ કૃત્ય એકાન્તમાં કરીએ તો તેનું પણ પ્રજા મળે છે કારણ કે પુદ્ગલ પરમાણુઓ દરેક ડેકાણે હોય છે, એમ સાયન્સ પણ સાબીત કરે છે. આપણો આત્મા તેજ સ્વરૂપ છે અને ચારે તરફથી કર્મોથી ઘેરાયલો છે.

હવે કર્મ એ તો મૂર્તિક છે અને આત્મા અમૂર્તિક છે તો મૂર્તિક ચીજ અમૂર્તિક ચીજ ઉપર કેવી રીતે અસર કરી શકે ? ધારો કે એક મનુષ્યે દારૂ પીધો પછી તે પાગલ જેવો બની જાય છે આમાં શરાણ એ મૂર્તિક છે અને મનુષ્યનો આત્મા અમૂર્તિક છે તો જેવી રીતે દારૂ મનુષ્ય ઉપર અસર કરે છે તેવીજ રીતે આ મૂર્તિક કર્મો અમૂર્તિક આત્મા ઉપર અસર કરે એમાં કંઈ નવાઈ જેવું નથી, મારે હું બંધુઓ ! આપણે જેમ બને તેમ કર્મોનો ઉદય એાછો થાય તેમ કરવાને પ્રયત્ન કરતા રહેવું જોઈએ.

હવે આપણે જેમ બને તેમ આપણું આન્તરિક હૃદય શુદ્ધ રાખવું જોઈએ અને તેને ખાસ કરીને મુજબ પુત બનાવવાની જરૂરીઆત છે, અને આન્તરિક હૃદય શુદ્ધ રાખવાથી આપણા પરિણામો શુદ્ધ થાય છે અને જ્યાં પરિણામો શુદ્ધ હોય ત્યાં કર્મોનો ઉદય એાછો હોય છે. ધારો કે બે મિત્રો દરવા નીકળ્યા. હવે તેમાંના એકે કહ્યું કે ભાઈ, મારે તો મંદિરે જવું છે અને બીજાએ કહ્યું કે મારે તો વેસ્થાને ત્યાં જવું છે. હવે બન્ને જણ પોત પોતાને

કેકાણે પહોંચી ગયા. તેમાં મંદિરમાં આવેલા મિત્ર વિચાર કર્યો કે મારો મિત્ર વેશ્યાને ત્યાં કેવી મોજ કરતો હશે ? હું તેની સાથે ગયો હોત તો કેવું સાઈ થાત ? અહિંયા એ મંદિરમાં છે છતાં એના પરિણામો અશુદ્ધ થાય છે. અને બીજા મિત્ર કે જે વેશ્યાને ત્યાં છે તેણે પોતાના મનમાં વિચાર કર્યો કે જો મેં મંદિરમાં જઈને પ્રભુ પ્રાર્થના કરી હોત તો કેવું સાઈ થાત ? આ માણસ વેશ્યાને ત્યાં છે છતાં તેના પરિણામો શુદ્ધ થાય છે.

આપણે દાંભિક દેખાવ બતાવવો ન જોઈએ (લોકોને દેખાડવાને માટે ન કરવું જોઈએ) માટે જેમ અને તેમ આંતરિક હૃદય શુદ્ધ રાખવાને પ્રયત્ન કરવો જોઈએ અને પાપોથી દૂર રહેવાને પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. પાપ એ જેરી સાપ છે.

આપણો આત્મા કર્મ રૂપી જ્વલમાં સડી રહ્યો છે. આત્મા કર્મોથી લપટાયેલો હોય ખરો ? ધારો કે એક વિદ્યાર્થી પરીક્ષા આપી આવ્યો અને પછી તેને કેટલી શીકર થાય છે કે હું પાસ થઈશ કે નાપાસ થઈશ. અને ઘણે અંશે એમ બોલે છે કે ભાગ્યમાં જે પ્રમાણે નિર્માણ થયું હોય તે પ્રમાણે બન્યા સિવાય રહેતું નથી “યદ્ માત્રી તદ્ મવિવ્યતિ” હવે ન્યારે છોકરાનું પરિણામ બહાર પડે છે અને ન્યારે તે પાસ થાય છે ત્યારે તેને કેટલો બધો આનંદ થાય છે અને કદાચ નાપાસ થાય છે ત્યારે કેટલી બધી દીલગીરી થાય છે ? જે કદાચ છોકરો પાસ થયો હોય તો આગલા બવમાં એને સારાં કર્મો કર્યાં હશે તેથી તે પાસ થયો. અને યુરા કર્મો કર્યાં હોય તો તેનું પરિણામ યુરું આવે છે. આવી રીતે આપણો આત્મા કર્મો રૂપી જાળમાં લપટાયેલો છે, માટે જેમ અને તેમ આપણે સત કર્મો કરવાં જોઈએ.

હવે જેવી રીતે કર્મો આવે છે તેવીજ રીતે તેને કાઢવાનાં આપની પાસે સાધનો છે અને તે સાત તત્ત્વનું ચિંતન છે (૧) જીવ (૨) અજીવ (૩) આશ્રવ (૪) બંધ (૫) સંવર (૬) નિર્જરા (૭) મોક્ષ હવે આ સાત તત્ત્વો કેમ રાખ્યા છે ! આ

કેમ નહિ રાખ્યા ? ધારો કે એક માનવે બહુસતમાં ખરાબ કામ કર્યું અને સરકાર (Government) ને ખબર પડી, ત્યારે તેને પોલીસો ઘેર લેવાને આવ્યા. તેવીજ રીતે પોલીસ રૂપી કર્મો આપના આત્માની પાસે આવે છે. એટલે કર્મોનું આવવું એ આશ્રવ છે. હવે તેને (પેલા માણસને) પોલીસો કેદમાં લઈ જઈને બેસાડે છે તેવીજ રીતે આ કર્મો આપણના આત્માને ઘેરી લે છે. આત્માનું કર્મોરૂપી જાળથી ઘેરાવું તેને બંધ કહે છે. હવે પેલો માણસ કે જ્વલમાં બેઠો છે તેને અમુક વખત છોડવાને માટે જામીનો જોઈએ, છે તેવીજ રીતે આપના આત્માને કર્મોરૂપી જાળમાંથી છોડવાને જામીનો જોઈએ છે, તે વ્રત ઉપવાસ વીગેરે કે નથી કર્મો આવતા અટકે એટલે કર્મોનું અટકવું તેને સંવર કહે છે. હવે સરકાર તરફથી કેશ ચાલે તો તેને માટે વકીલો જોઈએ કે નથી પેલો માણસ છુટી શકે તેવીજ રીતે આપણા આત્માને છોડવાને માટે વકીલો જોઈએ, અને તે વકીલો છે સવિપાક નિર્જરા અને અવિપાક નિર્જરા છે એટલે કર્મોનું ધીરે ધીરે જવું તેને નિર્જરા કહે છે. હવે કેશ લડવાથી પેલો માણસ કદાચ છુટી જાય છે તેવીજ રીતે આ કર્મોનો જેવો તદન ક્ષય થાય છે કે તરતજ આ આત્મા મોક્ષપદ પ્રાપ્ત કરે છે, તો આ પ્રમાણે સાત તત્ત્વોનું સ્વરૂપ છે.

માટે હે બંધુઓ ! આ કર્મો રૂપી જાળમાંથી છુટવાને આ સાત તત્ત્વો (ઉપર કહ્યા તે) વગર પૈસાના તૈયાર છે અને તેનો જેમ અને તેમ ઉપયોગ જરૂર કરવો જોઈએ. માટે જેમ અને તેમ કર્મોનો ઉદ્ય એણો થાય તેમ કરવાને પ્રયત્ન કરવો જોઈએ કે નથી પરબવમાં આપણે સુખ અને શાન્તિને પ્રાપ્ત થઈએ.

આ માટે હે જીવ ! તું ખુદ તારા આત્માને ઝાળખ અને આ કર્મરૂપી શત્રુઓની બેડોબોને તોડીને તું મોક્ષે જવાનો પ્રયત્ન કર !



‘સુબોધ વચનામૃત.’

સુખ દુઃખ લેજે માનવી, છે લેવું તુજ હાથ;
 નથી ખીલના હાથમાં, શાદ રાખજે વાત,
 સદ કરણી, સદ્ગુણથી, મળશે સર્વ સુખ;
 ખદ કરણી, દુર્ગુણથી, દારૂ મળશે દુઃખ.

x x x
 સભાનની સોખત યદી, સુખ સંપત્ત સૌ થાય;
 દુર્ભાનની સોખત યદી, બુદ્ધિ ખગડી નય.

લુચ્ચાને લુચ્ચો ઠહી, કોઈ ન કહેશે બાધ;
 માફી પડશે માંખની, ઉલટી તેને ઘેર જઇ.

x x x
 તારે આખર શું થશે, અને વળી ક્યાં જઈશ;
 ધણું કમાયો હાથથી, સાથે શું તું લઈશ.

x x x
 નિંદા સ્તુતિ નવ ગણો, હાઈ રાખી હામ;
 સર્વતું શુભ ચાહીને, કર તું તારું કામ.

x x x
 મુરખ જાણે મુજ વિના, ચાલે નહિ વ્યવહાર;
 ગયા મહાવીર આદિબ્રિનંદ, પણ ચાલે સંસાર.

x + x
 સંજત ખીચારી શું કરે, જેવું હૃદય કઠોર;
 નવનેભ પાણી ચઢે, પથ્થર ન બીજે કોર.

x x x
 મુરખ જીવ જતા લગી, મૂકે નહિ છંછેડ;
 મંજોરો મુકે નહિ, ખચકું તૂટે કેડ.

x x x
 ફિરે નગારા કાળકા, ફાણુ ભર જાના નહી;
 કોઈ આજ અરે કલકા, ધડી પલકકી માંહી.
 ધડી પલકકી માંહી, સમજ લે મનવા મેશ;
 ધરા રહે ધનમાલ. જંગલમે હોમા ડેરા.
 કહત હે દીન દરવેશ, જગતમે જત મઝરા;
 ફાણુ ભર જાના નહિ, કાળકા ફિરે નગારા.

કાયાની શી માયા કાયા, વાદળની હાયા જેવી;
 રેતીના રચાયા પાયા, એવી કાચી કાયા છે.
 દહન થતા દેખાય, રંક અને રાણી ભયા;
 માયા મુઠી મુવેલા ગણાયામાં ગણાયા છે.
 ધન માટે ધાયાને કમાયા ન કમાયા કંઈ;
 બંધને બંધાયા કાળ જાળમાં ઝલાયા છે.
 ગુરૂ ચેલો ભાવ્યા, પણ રિયર ન ચેલાયા ભાઈ;
 અહીં સૌ સમાયા, એવી દેવ કેરી માયા છે

રતિલાલ કેશવલાલ શાહ-વડોદરા.



“ક્ષમા યાચના.”

કૃપાળુ સૃષ્ટિના દેવા, સદા તારી કરે સેવા;
 હું માગું મહેરના મેવા, મટાડો કર્મનાં દેવાં.-૧

વિભુ છે એક તું સાચો, જગતનો ઠાઠ છે કાચો;
 છતાં હું અન્યમાં રાચ્યો, નહિ તારો સુપંથ જાચ્યો.-૨

કીધાં અધ્યાગ મેં પાપો, પ્રભુ તેની ક્ષમા આપો;
 મતિ સન્માર્ગમાં રચાપો, સમાવો શોક સંતાપો.-૩

ન ધાયો પૂણ્ય પાઠોમાં, ભરાયો ઠાઠપાઠોમાં;
 રમાયો રંગ રાગોમાં, યુધાયો કર્મ કાઠોમાં.-૪

મતિ મેં પાપમાં રચાપી, નથી મારા સમો પાપી;
 અભય માફી મને આપી, કરો આ રંક નિષ્પાપી.-૫

વિસાયા ધર્મના ધારા, વહાવી પાપની ધારા;
 ક્ષમા એ પાપની પ્યારા, આપો રનેહથી સારા.-૬

નહારો ને (હું) બન્યો પાપી, હૃદય તેની નહિ રાખી;
 પ્રભુ તેને નહિ બાપી, ક્ષમા આપોને સુભાગી.-૭

જપું હું આપના જાપો, સુમુદ્ધિ એહવી આપો;
 મિટે સરવે પરિતાપો, અનેરી સન્મતિ આપો.-૮

ન હું ધન ધામને માગું, ન તારા પ્રેમને ત્યાગું;
 સદા સુપંથમાં જાગું, પ્રભુ હું એ સદા માગું.-૯

અધમાધમ બલે થાવે, તથાપિ (તે) આશ્રયે આવે;
 દિલાસો (તે) તુમથી પાવે, બીખાભાઈ પ્રીતથી આવે.-૧૦

લીખાભાઈ શાહ વાંચકર.

यह पुस्तक "त्रीवैकटेश्वर समाचार" भरतमित्र, हिन्दीबंगवासी, अवध समाचार, भारतजीवन, भारतभ्राता, आदि विभिन्न समाचार पत्रों के ग्राहकोंको बिना मूल्य केवल एक आना डाक महसूल पेसगी लेकर ही जावेगी, बरंग मंगानेपर नहीं भेजेगी ॥

किस्मत को कुंजी

अर्थात्

प्रश्नमाला

जिसको

भारतीय गवर्नमेन्ट से धन्यवाद पाए हुए
जेनधर्मीयोत्कारक जलविज्ञान राज्य
मान्य ज्योतिषरत्न दिवाकर महामान्य
श्रीपण्डित जेनौजीयालालजी चौधरी
रईस न्यौनिस्त्रिपल कमिश्नर कसबः
फर्रुखनगर जिला गुरगाँवः ने
बहुश्रम द्वारा बनाया ॥

सन्वत् १९५८ बैशाखीय

इसका रचनाधिकार स्वाधीन रक्खा गया है

आफिशिएल मिशिन प्रिंटेड प्रेस मेरठ में छपा

प्रथम बार १-०००]

[मूल्य १]

इस पुस्तक को एक कापी का मूल्य चार आने दो के दाम मात आने, पाच के साठ वारा आने, दस का सवा रुपया, पचास के दारु रुपये, पचासके चाररुपये, सौ के छरीदार को केवल सवा कः रुपये में ही जावगी, परंतु महसूल डाक चर सरत में खरीदारको दिना दोगा, बी. पी. सं. ५ पुस्तक ही जावगी

हमारी मारफत शहर देहली का हर किस्म का सामान बड़ी आडत पर किफायत के साथ ग्राहकों को मांग आने पर रवाना होता है, परंतु ऐसे सामानके वास्ते कौमतकी चौथाई रकम पेसगी भेजनी होती है, या किसी हमारे जानकार को सिफ़ारिस, कमीशन इसरुपये पर ५ आने ५ पर १/० कपर १/० सेकड़ा

बम्बई, कलकत्ता, लखनऊ, लाहौर, कानपुर, आगरा, मेरठ, मथुरा, आदिक स्थानोंकी छपी हुई बड़ी बड़ी पुस्तकें अगर कीई ग्राहक हमारी मारफत मंगावेगा तो हम किफायतके साथ भेज सकते हैं लेकिन खरीदार को योग्यता चाहिये ॥

॥ भूमिका ॥

आज कल इस जन्तु में जिधर दृष्टि उठा कर देखा जाता है सम्पूर्ण प्राणियों को दुखी और क्षेय युक्त देखने में आता है, और यद्यपि यह जन्तु दुःख से भरा हुआ है। और एक दुःख में अनेक दुःख उत्पन्न होते रहते हैं। परन्तु कोई अज्ञानी जीव दुःख को ही सुख मानले, अथवा विपत्ति के समय धैर्य धार संतोष द्वारा उसकी सहायता कर ले यह पृथक् बात है। परन्तु जिस को सच्चा और यथार्थ सुख कष्ट सकते हैं। हमारे खयाल में उस सुख का तो इस वर्तमान कलिकाल में जहां तक देखा जाता है सर्वथा अभावही है। और दुःख भी नाना प्रकार के होते हैं, किन्तु सब से प्रबल दुःख आजीविका की न्यूनता वा उसके सर्वथा न मिलने का ही है ॥

जिस को देखो यही कहता है। हाय ! क्या करें खर्च अधिक, आमदनी कुछ भी नहीं। क्या कभी ऐसा भी समय था ? कि एक की कमाई में दस प्राणियों का बालन पालन होता था। आज ऐसा समय है कि यदि कृपणता न की जाय तो दस की कमाई एक को भी थोड़ी होती है। जहां कहीं एक दुखी और अनेक सुखी हों उसकी सहायता कोई भी कर सकता है ? परन्तु जहां सर्व प्रकार दुःखही दुःख हो वहां कौन किसी की सहायता करे। अपनाही गुजारा कठिन हो जाता है, फिर सोचना चाहिये, जो कोई दुखिया अपना दुःख कहां भी चाहे तो किस्से कहे ? और किस के आगे रोवे ? कहां जाकर परियाद करे ? हा कष्ट ! महा कष्ट !

भूतकाल (जमानेगुञ्जिभूता) में बड़े बड़े विद्वान् ज्योतिषी और महात्मा लोग होते थे जो दुखिया प्राणियों का दुःख दूर करने के उत्तम और सुगम उपाय बतला दिया करते थे। इस समय प्रथम तो कोई पंडित ज्योतिषी महात्मा अथवा कोई विद्वान् मिलता ही नहीं। और यदि कोई मिले भी तो प्रथम भेट पूजा लिये बिना मुख से भी न बोले, फिर खयाल करने का स्थान है कि जो प्राणी खुद ही भूखा (तंग) है वह ज्योतिषी महात्मा की भेट कहां से लावे, और यदि किसी ने निज पेट पट्टी बांध कुछ देना चाहा तो वह पंडित जी के मन नहीं मानता। तात्पर्य यही निकाला की बेचारे निर्धन प्रज्ञ करने वाले की सर्वथा आमत अथवा मिट्टी खराब है ॥

यह हम खूब जानते हैं कि आजकल जैसे जैसे देश में निर्धनता और निरक्षरता बढ़ती जाती है वैसे ही ज्योतिषी विद्या की कद्र भी दिनोदिन घटती ही जाती है बल्कि आजकल के लिखे पढ़े प्राणी इस को घृणा दृष्टि से देखते हैं। परन्तु उनको ऐसा पक्षपात वा वचन नष्ट न चाहिये, प्रतिकूलता भी हो तो सम्प्राण हीनी चाहिये, देखो आजकल के नवश्रीक्षित प्राणी जब अपनी पदार्थ विद्या की चमत्कारी बातें, अथवा मेस्मेरेज्म के अनेक अलौकिक हाल किसी बूढ़ पुस्तक के सन्मुख वर्णन करते हैं तो वह उनको झूठ समझ हंसने लगता है। भावार्थ किसी गैवार का भाई दूसरे देश में गया है। और उक्त गैवार तार (टेलीग्राफ) के गुण नहीं जानता है

उससे कोई बह कहै कि हम तेरे भाई को खबर १० मिनट में देना सक्ते हैं और इस कथन को उक्त मैदा पर अपने मन में बिल्कुल भूठ समझे तो क्या उसका विचार ठीक है ? और क्या उसके भूठ समझने से तार (टिखीग्राफ) का गुण मिट्या हो सकता है ? और क्या वे अपने मन में यह नहीं विचारते होंगे कि हाथ कैसे मुख से पाका पड़ा है । वास्तव में एक विचार रखने वाला प्राणी अपने से भिन्न विचार रखने वाले को भूठ (गध) और अपने आप को जानकार छुयाळ करता रहता है । और यदि उसको समझाने या सीधे मार्ग पर चलाने का यत्न भी किया जाय तो बद्धधा निष्फल ही होता है । क्योंकि उसकी हट धर्मी और बचन पक्ष के कारण वक्ता का वचन चाहे कंसाही सत्य वा सप्रमाण क्यों न हो उसके ध्यान में निर्बल और मिट्या ही भासता है और हटग्राही प्राणी सत्यवादी वक्ता के वचनों का भी हास्य युक्त तथा क्रूरता भरे शब्दों द्वारा प्रबल निरादर करता है । यदि न्याय दृष्टि से देखा जावे तो यह दोनों ही भूल में भूलते दिखाई देते हैं । क्योंकि दृष्टि की रचना विचित्र है । उक्त में ऐसा कौन है जो बल पूर्वक कह देवे कि कौन सच्चा और कौन भूठा है । परंतु विशेष भूल में वही प्राणी है जो किसी नवीन बात को सुनकर बिना विचारे ही उसको सत्य वा भूठ कहने लग जावे ॥

यह निश्चय है कि संसारी जीव सर्वज्ञ नहीं हैं । इस लिये उनको यह अधिकार नहीं है कि किसी की हाँसी करें, और यह भी दृष्टि की रचना से प्रतिकूल है कि सर्व प्राणियों के विचार और मत एक ही जायें, विद्वानों की भी इस संसार में कुछ न्यूनता नहीं है, परंतु सर्व कार्यों में सब विद्वानों की भी एक मत नहीं होती । इस लिये किसी कार्य को बिल्कुल सत्य ठहरा देने के लिये भी हमारे पास कोई हृद प्रमाण नहीं है, और यहां कसरतराय (बहुसम्मति) का होना भी कुछ कार्यकारी नहीं होता । यथार्थ तो यही है कि प्रत्येक प्राणी की बात ध्यान पूर्वक सुनी जाव । और प्रत्येक पुस्तक आद्योपान्ति पढ़ ली जाय और कोई नवीन विषय श्रवण मात्र ही हृदय में धर लिया जाय । फिर निज चित्त की वृत्ति के अनुसार उस में से सारांश निकाल लेना उचित है । परंतु उस सारांशद्वारा अपना ही मन राजी हो जाय इतना ही बहुरत है । उसके द्वारा किसी दूसरे का मस्तक खपाने अथवा उपहास्य करने में कोई चतुराई अथवा बीरता नहीं है ॥

उक्त भाषा पर मुझ को इस पुस्तक के लिखने का साहस हुआ । और वह विषय भी मुझकी अधिक प्रिय और रुचिकारक है । और आजकल इसकी संसार में भी अधिक आवश्यकता है । क्योंकि प्रत्येक प्राणी को सूर्योदय से सायंकाल तक सड़कीं प्रसन्न मन ही मन में उत्पन्न हुआ करते हैं जिनकी उद्योगिणी के पास जाकर पूछना तो क्या मुख से निकालना भी बद्धधा ठीक नहीं होता । परंतु उसके उत्तर पाने की इच्छा सर्वकाल बनी रहती है । इसका वही उपाय हो सकता है कि हम एक ऐसी पुस्तक सरल भाषा देवनागरी में रचें जिसकी द्वारा प्रत्येक प्राणी बिना किसी की सहायता के अपने अग्रिम प्रसन्न का यथार्थ उत्तर प्राप्त करे । और जिस प्रकार कोई प्राणी समाजिकी कुली द्वारा

रत्नों की तालाबन्द पेट्टी का ताला खोलकर रत्न निकाल लेता है। पाठक इस पुस्तक द्वारा अपनी किस्मत (भाग) का ताला खोलकर सत्य परीक्षा कर सकेंगे। इस लिये यह अत्यन्त लाभकारी पुस्तक लिखी और नाम इसका "किस्मत की कुंजी" रक्खा गया है ॥

“ किस्मत की कुंजी ”

इसके देखने के समय निम्न लिखित नियमों का अवश्य पालन करना होगा ॥

- (१) एक दिन में एकही प्रश्न किया जायगा। यदि विशेष आवश्यकता हो तो किसी दूसरे प्राणी से अपने लिये प्रश्न करा सकते हो परंतु ३ वार से अधिक फिर भी नहीं चाहिये ॥
- (२) वैशाख और आषाढ में शुक्र के दिन वा कृद्द तिथि को। ज्येष्ठ, फाल्गुण में बुध के दिन वा चौथ तिथि को। आसाढ़, अश्विनि में अष्टमी तिथि वा अनिश्चर के दिन। भाद्रपद, मार्गशिर्ष में मंगलवार वा दशमी तिथि के दिन। कार्तिक, माघ में बृहस्पतिवार वा द्वादशी तिथि के दिन। पौष, चैत्र में चंद्रवार और दूज तिथि के दिन कोई प्रश्न किसी प्रकार का भी नहीं करना चाहिये। यह योग्य सर्वथा त्याज्य है, भावार्थ वैशाख के महीने में जब शुक्र का दिन हो वह भी त्यागना और जिस दिन तिथि कृद्द हो वह भी त्यागनी। इसी प्रकार ऊपर लिखे सब महीनों में जानलेना
- (३) मन में दगावाजी रख कर अथवा कुतूहल (दिलगो) से कोई प्रश्न नहीं करना चाहिये बल्कि प्रश्नके समय शुद्ध मनसे प्रथमही ईश्वर का स्मरण करना चाहिये ॥
- (४) प्रश्न करने वाले की गोद में कोई बालक न बैठा हो। और प्रश्न करने वाला खुद भी किसी की गोद में बैठा हुआ न हो। यदि इसके प्रतिकूल हुआ तो कुछ भी फल न होगा ॥
- (५) सूर्य के उदय और अस्त के समय कोई भी प्रश्न नहीं करना चाहिये ॥
- (६) रजस्वलास्त्री और उपद्रव (गर्मी) रोगसे पीड़ित प्राणियोंको प्रश्न नहीं करना चाहिये
- (७) प्रश्न करनेसे पहिले पुस्तकपर लवंग, इलायची अथवा कोई फूल चढ़ाना चाहिये ॥

प्रश्न देखने की रीति इस प्रकार है ॥

इस पुस्तक में सब ३० प्रश्न हैं उनके देखने की यह रीति है कि प्रश्न कर्ता जिस विषय का प्रश्न किया चाहै उसी विषय के चक्र के नव घरों में से किसी एक घरपर उंगली धरे फिर उसी संख्या के सन्मुख फल चक्र में फल देख लेवे यथार्थ मिलेगा। जैसे किसी को प्रश्न करना है कि मेरा सुकृद्दमा क्या होगा ? उसको चाहिये चक्र संख्या ६ पर किसी स्थान पर उंगली धरे और जहां उंगली धरे उस अंक का फल तालाघ करे जो फल होनहार है फल मिलेगा। भावार्थ उसने ५० के अंक पर उंगली धरी उसका फल यह है कि इस भागड़े में खर्च अधिक पड़ेगा। इत्यादि ॥

॥ दोहा ॥

वस सर ग्रह शशि ऽब्द शुभ, माधव खेत तुषार ॥

शुभ युत पुष्प विचार के, रचा भाग फल सार ॥१॥

वैशाख सुदी ७ शुभ १८५८ फरवरी नगर] [ज्योतिषरत्न जीवाशाला]

श्रीमान् जीवालाल बितविनोद उत्तम और सत्य प्रकाशनी ॥

(१) धर्म प्रश्न			(२) रोजगार प्र.			(३) संतान प्रश्न			(४) विवाह प्र.			(५) नष्ट वस्तु प्र.		
१	२	३	१०	११	१२	१९	२०	२१	२८	२९	३०	३७	३८	३९
४	५	६	१३	१४	१५	२२	२३	२४	३१	३२	३३	४०	४१	४२
७	८	९	१६	१७	१८	२५	२६	२७	३४	३५	३६	४३	४४	४५
(६) मुकदमा प्र.			(७) रोगमुक्त प्र.			(८) नफा टोटा			(९) मित्रमिलाप			(१०) विदेशी प्र.		
४६	४७	४८	५५	५६	५७	६४	६५	६६	७३	७४	७५	८२	८३	८४
४९	५०	५१	५८	५९	६०	६७	६८	६९	७६	७७	७८	८५	८६	८७
५२	५३	५४	६१	६२	६३	७०	७१	७२	७९	८०	८१	८८	८९	९०
(११) देखाटन प्र.			(१२) परीक्षा प्र.			(१३) गर्भमें क्या है			(१४) यत्रुनाथ			(१५) पशु लेनेका		
९१	९२	९३	१००	१०१	१०२	१०९	११०	१११	११८	११९	१२०	१२७	१२८	१२९
९४	९५	९६	१०३	१०४	१०५	११२	११३	११४	१२१	१२२	१२३	१३०	१३१	१३२
९७	९८	९९	१०६	१०७	१०८	११५	११६	११७	१२४	१२५	१२६	१३३	१३४	१३५
(१६) गुप्तमेद प्र.			(१७) नौकरी प्र.			(१८) मकानबना			(१९) बागलगाना			(२०) मंदिरबनाना		
१३६	१३७	१३८	१४५	१४६	१४७	१५४	१५५	१५६	१६३	१६४	१६५	१७२	१७३	१७४
१३९	१४०	१४१	१४८	१४९	१५०	१५७	१५८	१५९	१६६	१६७	१६८	१७५	१७६	१७७
१४२	१४३	१४४	१५१	१५२	१५३	१६०	१६१	१६२	१६९	१७०	१७१	१७८	१७९	१८०
२१ पुत्रगोदलेना			(२२) वर्षा प्रश्न			(२३) राजदर्शन			(२४) नाजलेना			(२५) विद्यारंग		
१८१	१८२	१८३	१९०	१९१	१९२	१९९	२००	२०१	२०८	२०९	२१०	२१७	२१८	२१९
१८४	१८५	१८६	१९३	१९४	१९५	२०२	२०३	२०४	२११	२१२	२१३	२२०	२२१	२२२
१८७	१८८	१८९	१९६	१९७	१९८	२०५	२०६	२०७	२१४	२१५	२१६	२२३	२२४	२२५
(२६) समयकाल			(२७) कर्ज लेना			(२८) खिती करना			(२९) मंत्रसिद्धि			(३०) कुस्तीलड़ना		
२२६	२२७	२२८	२३५	२३६	२३७	२४४	२४५	२४६	२५३	२५४	२५५	२६२	२६३	२६४
२२९	२३०	२३१	२३८	२३९	२४०	२४७	२४८	२४९	२५६	२५७	२५८	२६५	२६६	२६७
२३२	२३३	२३४	२४१	२४२	२४३	२५०	२५१	२५२	२५९	२६०	२६१	२६८	२६९	२७०

(१) धर्म प्राप्ति विषय प्रश्नों का फल ।	(२) रोजगार सम्बन्धी प्रश्नों का फल ।
<p>(१) धर्म में रुचि थोड़ी हो जायगी ॥ (२) धर्म में सदाकाल अधिक रुचि रहेगी (३) धर्म करके हुए शरीर में रोग पैदा होंगे (४) धर्म करने से जन्तु में कीर्ति होगी (५) धर्म कार्य में आकुलता उपजेगी ॥ (६) धर्म कार्य में पड़ने से विशेष खर्च होगा (७) धर्म के मार्ग में प्राणांत कष्ट भय होगा (८) धर्म त्याग अधर्म में मेल होयगा ॥ (९) धर्म करने से नाना प्रकार सुख होगा</p>	<p>(१०) रोजगार धीमे चक्का होनेवाला है (११) विशेष परिश्रम करने से रोजगार होगा (१२) तुमको शराब के व्यापार में लाभ है (१३) जव, मिट्टी, कोयला, इनमें लाभ होय (१४) इस व्यापार में अधिक हानि है मत कर (१५) तेरे कार्य में कोई शत्रु विघ्न करे है (१६) अभी तेरे रोजगार में बिलम्ब है । (१७) तेरे ऊपर क्रूर ग्रह है कुछ दिन चुप हो (१८) जो विचार है सो नहीं होगा सही है</p>
(३) संतान (घोलाद) का प्रश्न फल ।	(४) विवाह यादी का प्रश्न फल ।
<p>(१९) तेरी स्त्री को पीड़ा है, उसका यत्न कर (२०) प्रथम कन्या होयगी निश्चय जान (२१) पुत्र होयगा परंतु विशेष न जीवेगा (२२) अभी संतान पैदा होने में बिलम्ब है (२३) उत्तम गुणवाला पुत्र पैदा होयगा (२४) तुम्हारे घोलाद का अभाव नैखि है (२५) घोलाद होयगी परंतु सब कुलपा (२६) पिछली उमर में संतान का सुख है (२७) तेरे इष्टदेव की रूपा होगी तबही</p>	<p>(२८) विवाह एक वर्ष अग्रतः भयेंगे (२९) स्त्री कुलपा कलह कारिणी मिलेगी (३०) विवाह होना अति कठिन है । (३१) विवाह तेरा अवश्य ही होयगा । (३२) तेरा विवाह सप्रम मंगल रोक है (३३) नष्ट ग्रह टलने से कार्य सिद्ध होगा (३४) कुछ खर्च करने से ही विवाह होगा (३५) विवाह में अभी थोड़ा सा बिलम्ब है (३६) तुमको स्त्री गुणरूपवाली मिलेगी</p>
(५) नष्ट (चोरी गई) वस्तु ज्ञान प्र० फल ।	(६) अदालत मुकद्दमा प्रश्न फल ।
<p>(३७) यह वस्तु धीमे मिलेगी चोर स्त्री है (३८) कुछ खर्च करने पर माल मिलेगा । (३९) पता पूरा लगेगा पर माल न मिले (४०) इस माल का पता नहीं चोर पकड़े (४१) किसीकी मदद से माल मिलेगा । (४२) चोरने तेरा माल दूसरेकी इदिया (४३) माल का आधा भाग नष्ट होगया । (४४) माल नहीं मिलेगा आधा छोड़ दो (४५) चोर बाकक है माल मिल जायगा</p>	<p>(४६) अभी मुकद्दमा बिलम्ब से होगा । (४७) इस मुकद्दमा में तेरी ही जीत होगी (४८) यह हाकिम ठीक न्याय न करेगा (४९) हे प्रश्नकर्ता आशेषानी न्याय होगा (५०) भला होगा खर्च अधिक पड़ेगा । (५१) इस कार्य में अधिक बाध होयगा । (५२) खबरदार हो तुम्हारी हार होगी (५३) आपस ही में सफाई हो जायगी । (५४) पंचायत मिलकर फेरला करेगी ।</p>

(७) रोगीआराम कबतकहोगा प्र. फल ।		(८) माल में नफा होगा या मुकदमान ।	
(५५) यह रोग अधिक दिन बना रहैगा	(६४) इसमाल में उत्तम प्रकार लाभहै	(६४) इसमाल में कुकनफा नहीं होगा	(६५) यह कामतुमने घाटीका किया है
(५६) क्रूरग्रह लगाहै उसका उपायकरो	(६५) यह खबरदार माल में चौकीकाभयहै	(६६) तुम्हारासाभी दगावाक्रीकरेगा	(६६) तुमको मालमें सवायालाभ होगा
(५७) यह रोगदेवकीपकरहुवा दिखताहै	(६७) तुम्हारासाभी दगावाक्रीकरेगा	(६७) तुमको मालमें सवायालाभ होगा	(६७) यहमालकुछदिन रुककरबिकेगा
(५८) भय मतकरो शीघ्र आराम होगा ।	(६८) तुम्हारासाभी दगावाक्रीकरेगा	(६८) तुमको मालमें सवायालाभ होगा	(६८) जिसभावबिकेबेचो रोकनाबुराहै
(५९) रोगीकाअस्थानबदलदेना चाहिये	(६९) तुम्हारासाभी दगावाक्रीकरेगा	(६९) तुमको मालमें सवायालाभ होगा	(६९) मालमें खूब गहरा नफा मिलेगा
(६०) रोगी बदपरहेजी करताहै रोकदो	(७०) तुम्हारासाभी दगावाक्रीकरेगा	(७०) तुमको मालमें सवायालाभ होगा	
(६१) कुछ चिंतामतकरो ९ दिन भारी हैं	(७१) तुम्हारासाभी दगावाक्रीकरेगा	(७१) तुमको मालमें सवायालाभ होगा	
(६२) आरामतोहीजायगा खर्चअधिकहै	(७२) तुम्हारासाभी दगावाक्रीकरेगा	(७२) तुमको मालमें सवायालाभ होगा	
(६३) होनहार में किसीका बयानहीचले	(७३) तुम्हारासाभी दगावाक्रीकरेगा	(७३) तुमको मालमें सवायालाभ होगा	
(९) मित्र मिलेगा या नहीं प्रश्न फल ।		(१०) प्रदेशी यागमन प्रश्न फल ।	
(७३) मित्र शिघ्रही मिलनेवाला जानो ।	(८२) प्रदेशी शीघ्रही आया देखोगे ।	(८२) विचाराबीमारीसे लाचारपड़ाहै	(८३) स्थानसेचलपड़ा मार्गमेंआरहाहै
(७४) यह मित्र कपटी विश्वासघाती है ।	(८३) विचाराबीमारीसे लाचारपड़ाहै	(८४) स्थानसेचलपड़ा मार्गमेंआरहाहै	(८४) प्रदेशी दूर देशांतरमें विचरताहै
(७५) यह मित्र कुछ बिलम्बसे मिलेगा ।	(८४) स्थानसेचलपड़ा मार्गमेंआरहाहै	(८५) प्रदेशी दूर देशांतरमें विचरताहै	(८५) प्रदेशीमार्गचलते ठगाया गया है
(७६) इस मित्र का विश्वास मतकरना ।	(८५) प्रदेशी दूर देशांतरमें विचरताहै	(८६) प्रदेशीमार्गचलते ठगाया गया है	(८६) अभी उसकेमनमें छोटनेकी नहीं
(७७) यह मित्र बड़ा सज्जन और प्रेमीहै	(८६) प्रदेशीमार्गचलते ठगाया गया है	(८७) अभी उसकेमनमें छोटनेकी नहीं	(८७) प्रदेशी प्रदेशही में प्रसन्नरहताहै
(७८) तुम्हारे मित्रके शरीर में पीडा है	(८७) अभी उसकेमनमें छोटनेकी नहीं	(८८) प्रदेशी प्रदेशही में प्रसन्नरहताहै	(८८) विचाराखुर्चसेतंगहै क्योंकरआवे
(७९) मित्र विश्वास योग्यहै शीघ्रमिलेगा	(८८) प्रदेशी प्रदेशही में प्रसन्नरहताहै	(८९) विचाराखुर्चसेतंगहै क्योंकरआवे	(८९) पराधीन प्राणीघरका नवाहरका
(८०) यह प्राणी खुदगर्जशौर मतलबीहै	(८९) विचाराखुर्चसेतंगहै क्योंकरआवे	(९०) पराधीन प्राणीघरका नवाहरका	
(८१) तुम्हारामित्रदूसरेसेमिलावटरखताहै	(९०) पराधीन प्राणीघरका नवाहरका		
(११) देशाटन (सफर) करना प्र. फल ।		(१२) विद्या की परीक्षा का प्र. फल ।	
(९१) प्रदेशगमन मत करै कुछ लाभनहीं	(१००) परीक्षामें उत्तीरण होनाकठिनहै	(१००) परीक्षामें उत्तीरण होनाकठिनहै	(१०१) विद्यामें अधूराहै उत्तीरणकेसेही
(९२) इस देशाटन में हानिलाभवरावरहै	(१०१) विद्यामें अधूराहै उत्तीरणकेसेही	(१०१) विद्यामें अधूराहै उत्तीरणकेसेही	(१०२) तुम पास होजाओगे निश्चय है ।
(९३) भूलकरभी मत जाओ हानिहोगी	(१०२) तुम पास होजाओगे निश्चय है ।	(१०२) तुम पास होजाओगे निश्चय है ।	(१०३) कुछ साधारण लाभ होयगा ।
(९४) शुभदिन जाओ विशेष लाभ होगा	(१०३) कुछ साधारण लाभ होयगा ।	(१०३) कुछ साधारण लाभ होयगा ।	(१०४) द्रव्य खर्चकरोगीतोउत्तमफल ही
(९५) इस देशाटन में कोईनवीनबातहोय	(१०४) द्रव्य खर्चकरोगीतोउत्तमफल ही	(१०४) द्रव्य खर्चकरोगीतोउत्तमफल ही	(१०५) उत्तीरणहोजाओगीपर कष्टहोगा
(९६) अकुनविचार गमनकरो लाभहोगा	(१०५) उत्तीरणहोजाओगीपर कष्टहोगा	(१०५) उत्तीरणहोजाओगीपर कष्टहोगा	(१०६) तुम पास होगे तारौफके साथ में
(९७) यह सफर करोगे तो बीमारीहोगी	(१०६) तुम पास होगे तारौफके साथ में	(१०६) तुम पास होगे तारौफके साथ में	(१०७) विद्यातो पूरी परंतु पास न होगी
(९८) इसयात्रामें तुम्हारासाथी भला है	(१०७) विद्यातो पूरी परंतु पास न होगी	(१०७) विद्यातो पूरी परंतु पास न होगी	(१०८) कुछ बिलम्ब से पास होजायगा ।
(९९) देशाटन सफल परंतु खर्च विशेषहै	(१०८) कुछ बिलम्ब से पास होजायगा ।	(१०८) कुछ बिलम्ब से पास होजायगा ।	

(१३) गर्भवती पुत्र जनैगी वा पुत्री ।	(१४) शत्रू दमन होयगा वा नहीं ।
<p>(१०९) इसगर्भके पूराहोनेकी आशानहीं (११०) इस गर्भ में कन्या उत्पन्न होगी (१११) इसगर्भ में शुभ लक्षणवालापुत्रहै (११२) यहगर्भवतीस्त्री मरीकन्याजनैगी (११३) यह गर्भ अधूरा जाता दीखताहै (११४) इस गर्भमें बालक जनाना बसेहै (११५) संतोष करो पुत्र उत्पन्न होगा । (११६) इस गर्भ में दो कन्या दिखती हैं (११७) गर्भमें एक कन्याएक पुत्रयुगलहै</p>	<p>(११८) तुम्हाराशत्रूदुष्टहैदमनहीनानहीं (११९) शत्रूसे तुम्हारीनिश्चयजितहोगी (१२०) तुम्हारीशत्रू दाराविशेषहानिहै (१२१) किसीमित्रकीसहायतासेभलाहो (१२२) शत्रू निबलहोगया क्योंडरतेहै (१२३) विश्वासमतकरना घात करेगा । (१२४) राजाकीसहायतासेसर्वभय मिटेगा (१२५) दुश्मनकेसाथतुम्हारीसुलहहोवेगी (१२६) शत्रूके कारण द्रव्य नाश होगा</p>
(१५) पशु पालने में हानि लाभ प्र. फ. ।	(१६) मनमें गुप्त चिंता हो उसका प्र. फ.
<p>(१२७) तुमको पशुपालने में परमलाभहै (१२८) इस चतुष्पद से हानिलाभ समहै (१२९) यहपशुमतखरीदो भला न होगा (१३०) मनमें विचारा है सो ठीकनहींहै (१३१) तेरा मनोर्थ सर्वथा सिद्ध होयगा (१३२) आजकल पशुलेना देना बुरा है (१३३) पशु संग्रह मत करे पशुतावेगा । (१३४) तेरा विचार बिलम्ब से फलैगा । (१३५) लेना देनाठीकनहीं हानिलाभसम</p>	<p>(१३६) तेरी मनोकामना सफल होगी । (१३७) तेराकार्यसिद्ध होनेमें बिलम्बहै (१३८) इसकार्यमेंक्योंपड़ताहै खराबहै (१३९) तू दूसरे का विश्वास मत करे । (१४०) क्यातू दुखीहै डरैमतभलाहोगा (१४१) मन की विद्या मनही में रहैगी । (१४२) तुमको दुष्टजीव से पाला पड़ाहै (१४३) तुम्हारीचिंता दूरकरके मिटेगी (१४४) भय सत्य है यत्नकर भला होगा</p>
(१७) नौकरी मिलेगी या नहीं प्र. फ. ।	(१८) मकान बनाने में हानि लाभ प्र. फ.
<p>(१४५) नौकरी अवश्य मिलेगी निश्चय । (१४६) बिलम्ब अधिक है धीरज धर । (१४७) यह कार्य नहीं होगा सचेतरही (१४८) कुछ खर्च किये कार्य सिद्ध होगा (१४९) यहाँ क्या धराहै दूसराफिकरकर (१५०) तेरे कार्यमें शत्रू विघ्न करता है । (१५१) किसकी सहायता से भला होगा (१५२) इस विचार में अनेक विघ्न होंगे । (१५३) इससमयका प्रसन्न कार्यकारीनहीं</p>	<p>(१५४) मकान बनाओ सुख मिलेगा । (१५५) अधिक दिनों में पूरा होयगा । (१५६) इस कार्य में लाभ नहीं मतकरो (१५७) द्रव्यका खर्च विशेष होयगा । (१५८) इस कार्य में शत्रू उपद्रव करेगा (१५९) मकान निर्बल खराब बनेगा । (१६०) इसधरतीसेकुछगुड़ा धनमिलेगा (१६१) इस मकानपर सदा भगड़े रहेंगे (१६२) पृथ्वीका भाग पृथ्वी में रहेगा</p>

(१८) बागलगाका शुभ या शुभ प्र. फ. ।		(२०) मन्दिर बनाना शुभ या शुभ प्र०	
(१६३)	बाग लगाघो विशेष लाभ होगा	(१७२)	मन्दिर बनाघीकीति लाभ होगा
(१६४)	तुम्हारा बाग अधिक दिनों में फलेंगा	(१७३)	तुम्हारा मन्दिर तेरे में फलेंगा ।
(१६५)	बाग मत लगाघो लाभ नहीं होय	(१७४)	मत बनाघो निर्बाह कठिन होगा
(१६६)	बाग में द्रव्य विशेष खर्च होयगा	(१७५)	मन्दिर में लागत अधिक लगेगी
(१६७)	बाग में बनकर अधिक विघ्न करेगी	(१७६)	मन्दिर पर बज्रपात भय होयगा
(१६८)	बाग का स्थिर रहना कठिन है ।	(१७७)	मन्दिर निर्बल खराब बनेगा ।
(१६९)	यह कार्य उत्तम फलदाई होगा	(१७८)	यह विचार तुम्हारा उत्तम है ।
(१७०)	बागलगाघीगीतीसदा भगङ्गे होगी	(१७९)	मन्दिर बनना महा कठिन है ।
(१७१)	मनोकामना सफल हुई समझो ।	(१८०)	इस कार्यका करना ही व्यर्थ है
(२१) पुत्र गोद लेना चाहता हूँ प्र. फ. ।		(२२) वर्षा होयगी या नहीं प्र. फ. ।	
(१८१)	पुत्र अवश्य गोद लीजेनाम होयगा	(१८०)	वर्षाघीघ्र होने वाली है ऐसा जान
(१८२)	यह लड़का वफादारी नहीं करेगा	(१८१)	वर्षा होने में अभी विलम्ब होगा
(१८३)	यह कार्य कुछ खर्च किये सिद्ध होय	(१८२)	कुछ नाममात्र की वर्षा होगी ।
(१८४)	पराधि पूत किसका घर बसावेगी ।	(१८३)	ऐसी वर्षा से क्या कार्य सरता है
(१८५)	परमात्मा कुशल करे कामठी कहै	(१८४)	वर्षा होयगी कुछ काम न आवेगी
(१८६)	पुत्र गोद लेतेही तो खबरदार रहना	(१८५)	ऐसी वर्षा होयगी अनेक घर गिरेगी
(१८७)	इस बालक को तुमसे मुहब्बत नहीं	(१८६)	वर्षाकी अवकुक आशा नहीं है
(१८८)	मातासे पुत्रीकी सदा अनवन रहेगी	(१८७)	लृष्टि की अवस्था दृष्ट हो गई है
(१८९)	यह कार्य तुमको सुखदाई नहीगा	(१८८)	गर्जना विजली सबकेवल नीर नहीं
(२३) राजाके दर्शन में लाभ हानि प्र. फ० ।		(२४) नाज लेने देने के प्रश्न का फल ।	
(१९९)	यह विचार छोड़ दो कुछ लाभ नहीं	(२०८)	नाजमें अच्छा भारी लाभ होगा
(२००)	राजाके दर्शनमें द्रव्य की हानि है	(२०९)	नफाटोटा दोनों समान रहेंगी ।
(२०१)	राजाके दर्शनसे मनोर्थ पूर्ण होगा	(२१०)	इस कार्यमें घाटा होगा मत करो
(२०२)	राजाका दर्शन विलम्बमें होयगा	(२११)	अन्नके बौझने का भय होयगा ।
(२०३)	लाभ हानि आचाहता है वैरी रोकता है	(२१२)	फिरीकी साझी करोगी हानि होगी
(२०४)	राजा के दर्शनमें कोई लाभ नहीं है	(२१३)	कुछ दिन पड़ा रहेगा जब बिकेगा
(२०५)	राजा आदर करेगा जन्तुमें नाम होगा	(२१४)	अन्न में तुम्हारे सवाये होंगे ।
(२०६)	इस भगङ्गे में मत पड़ी पश्चाताप होगा	(२१५)	बेचना चाहिये लेना ठीक नहीं ।
(२०७)	राजाके दर्शन खाली सफल होगा ।	(२१६)	इस समयका प्रश्न सफल है ।

(२५) विद्यारम्भ फलदाई होगा या नहीं	(२६) इस वर्ष सुकाल होगा या दुर्मिच्छ
(२१७) तैराविद्यारम्भसर्वप्रकारसफलहोगा	(२२६) यहपरमउत्तम सर्वथासुखकारी
(२१८) बुद्धिनिर्बलहैसफलताहीनीकठिनहै	(२२७) एक दशा सुकाल सर्वत्र अकाल
(२१९) विद्याके पढ़नेमें विशेषश्रमकराओ	(२२८) कहींदुर्मिच्छ और कहींसुर्मिच्छ।
(२२०) तुमकोविद्यासेविशेषलाभनहींहोगा	(२२९) यहवर्षप्रजाकोमानन्दकारीहोगी
(२२१) विद्याद्वारातुम्हारीमनोकामनाफलेगी	(२३०) इसवर्ष पूर्वदशामें अकराहोगा
(२२२) तुमकोविद्याहीपरमधनकीदाताहै	(२३१) दक्षिणकी प्रजाकोप्रबलकष्टहोय
(२२३) तुम्हारेनाममात्र विद्याकायोगहै	(२३२) पश्चिमके निवासी पीड़ित होंय
(२२४) आगेपढ़नापीछेभूलनाअच्छीबुद्धिहै	(२३३) उत्तरदशाउत्तरदेवैऔरसबकुशल
(२२५) तुमको विद्यासे कुछ लाभनहींहै	(२३४) यहवर्ष सर्वप्रकार शुभ जानना
(२७) कर्क कालेनेदिनेका प्रश्न और उत्तर।	(२८) खितीकरने में हानिलाभ प्र० फ०।
(२३५) कर्क कालेनादिनादीनोंकामठीकहै	(२४४) खितीकरो अधिक लाभहोगा।
(२३६) जैसाप्रेमभावअवहैअगैरहीरहैगा	(२४५) खबरदार अनाशुद्धि भयहोगा।
(२३७) इसकार्यका अंतप्रणामअच्छानहीं	(२४६) एकप्रकारका कीड़ा विघ्नकरेगा
(२३८) लेकरदिनामुश्किलहोजाताहै,क्यों?	(२४७) मनोकामना सफल होजायगी।
(२३९) दियाओखोया लियाओकमाया।	(२४८) खितीमेंजितनीमेहनतउतनासुख
(२४०) इसकार्यमेंहानिलाभबराबरजानो	(२४९) खितीकर सावधानरहनाभलाहै
(२४१) लेनदेनमेंकोईहजंनहींबेधककरो	(२५०) इसखितीमें ओलिकाभय होगा।
(२४२) अंतसमयअदालतकामुखदेखोगे।	(२५१) पवनके वेगकर अनेक कष्ट हों।
(२४३) लेनाएक न दिनादोहानिलाभसम	(२५२) खितीमतकर महान हानिहोगी
(२९) मंत्र सिद्ध कछुं होगा या नहीं।	(३०) कुशती लड़नेमें जीतहोयगीयानहीं
(२५३) इसकार्यमें महानउपद्रव होयगा	(२६२) अपनेद्रष्टदेवका ध्यानकरजोतेगा
(२५४) मनचलायमान होजायगा जरूर	(२६३) खबरदार शत्रुकी प्रबलता है।
(२५५) इसअचिचारकीमनमें स्थानमत दे।	(२६४) क्यों लड़ता है धौधल मचेगी।
(२५६) गुरुकी सहायतासे कार्य सिद्धहो	(२६५) लड़ाई भगड़े मचानाठीकनहीं
(२५७) आरम्भ क्रिये पीछे सफर करेगा।	(२६६) सावधानहीकर लड़ तू जीतगा
(२५८) देवसिद्धिका समयनहीं चुपकाहो	(२६७) क्योंधवराताहै काम सिद्धहोगा
(२५९) तैराकाम बिलम्ब पाय सिद्धहोगा	(२६८) तेरे कार्य में शत्रु विघ्न करेंगे।
(२६०) तू प्रसन्न मतहो फटकार लगेगी।	(२६९) हमसब्य कहतेहैं तू हारजायगा
(२६१) क्या मंत्रसिद्ध करना बालबेष्टा है	(२७०) विजय ! विजय !! विजय !!!

हमारे द.पत्र का दस्तूर ।

- (१) इस सूचीपत्र में लिखा हुआ सामान न बंद दाम लेकर बेचा जाता है उधर का कुछ काम नहीं है ।
- (२) बिद्दीग्राहकों को चाहिये, हमारे सामान का मूल्य हाकमहसूल सहित इन्डो, मनिपाईर-दारा जैसे उनको फ्रायदाहो भेजाकर, परंतु नोट-वा-टिकट रजिस्टरी चिट्ठी में ग्रानी चाहिये, और एकपैसा रूपया कमीशन का पृथक् देना होगा, विनारजिस्टरी कराधिजी नोटवा टिकट भेजने पर गुम होंगी तो उसके हम उत्तरदाता नहीं हैं ।
- (३) जिन लोगों को हम विश्वासपात्र समझते हैं उनके पास सामान वेल्थ्यूपेडल भी भेज दिया करते हैं, परंतु जो नवीन ग्राहक हमारा सामान वी.पी. मंगाना चाहें चौथाई दाम प्रेथगी भेजने पर या हमारे किसी जानकार की सहा से पत्र लिख मंगा सकते हैं, और एकबार भरोसा होने पर फिर वही विश्वास पात्र हो जायेंगे ।
- (४) अपना पता, ठीकाणा, डाकखाने का नाम, ठीक २ स्पष्ट और साफ अक्षरों में लिखा करो जिसमें हमको सामान भेजते समय किसी प्रकार की रूकावट न हो, और रेल पारसलदारा चाहे तो स्टेशन का नाम साफ लिखो ।
- (५) बिकाइया सामान उलटा नहीं फिरेगा, लेकिन हमारे कर्मचारियों की भूल से कुछ बदलबदल होगी वा हिसाबमें भूल रह जायगी उसके हम जिम्मेवार हैं ।
- (६) आठ आने से कम का माल वी.पी. न होगा, थोड़ा लेनेवाला प्रेथगी दाम भेजे ।
- (७) बेरंग पत्र किसी का भी नहीं लिया जायगा, यदि किसी चिट्ठी का उत्तर लेना चाहे या कुछ पूछना चाहे तो आधआने का टिकट या जवाबी कार्ड भेजो ।
- (८) किसी महाशयको यह अधिकार न होगा कि हमसे वी.पी. द्वारा सामान मंगा कर फिर लौटावे, यदि कोई ऐसा करेगा तो उससे वी.पी. की पूरी लागत और दश रूपये पृथक् चरजे के अदाखतदारा वसूल किये जावेंगे ।
- (९) ईश्वर की कृपा से काम इतना बढ़ गया है कि जो चिट्ठी हमारे पास आती है उनको नम्बरवार तामील करें (सामान भेजें) तो आज की आई चिट्ठी का दशवें दिन नम्बर आवे, परंतु जिस चिट्ठी पर अधिक जखरी लिखा होता है उसका सामान शीघ्र भी भावार्थ अगले दिन ही भेज देते हैं, यदि किसी महाशय की चिट्ठीको १५ दिन से अधिक ही जावें और सामान नहीं पहुंचे तो जानना चाहिये चिट्ठी नहीं पहुंची गुम हो गई ।
- (१०) जो महाशय सामान मंगाने के लिये पत्र भेख चुके हैं और पीछे से उनको उस माल की जखरत न रहे तो अपने पत्र के २ दिन पीछे तक केवल तार द्वारा हमको रोक सकते हैं नहीं तो सामान्य अवश्य लेना होगा ।
- (११) पत्र व्यवहार तथा मूल्य इत्यादि नीचे लिखी पते पर करना चाहिये ।

इस सूचीपत्र पर पंडित जीवाशंकर जी—फर्कसनगर, जिला, गुरगांव: ।

सर्वोपयोगी नवीन लाभकारी पुस्तक ।

दयानन्द छलकपट दर्पण ।

इस पुस्तकमें यह वर्णन है कि स्वामीदयानन्द सरस्वती कौन था ? किस नगर कुल गोत्र में उसका जन्म हुआ ? जन्मदिन से लेकर मरण समय तक उसका चलन व्यवहार कैसा रहा ? उसने अपने जीवन में क्या क्या किया ? कितने ग्रंथ पुस्तक रचे ? और वह किस धर्मका विश्वासी था ? उसने जो कुछ किया और अपने ग्रंथों में लिखा वह सत्य है अथवा असत्य ? इत्यादि अनेक विषय देखने लायक लिखे गये हैं, इस पुस्तकके पूर्वार्द्ध भागमें स्वामीजीके जन्मसे लेकर दूसरे "सत्यार्थप्रकाश" के लिखे जाने के समय तकके कर्तव्यों का तथा उनकी मिथ्या बातोंका और स्वामी जी रचित उस समय तकके सम्पूर्ण पुस्तकों और पुराने "सत्यार्थप्रकाश" का, और उत्तरार्द्ध भागमें नवीन "सत्यार्थप्रकाश" का खंडन और उत्तर ऐसे उत्तम रूप से लिखा गया है कि जिसको कोई अस्वीकार नहीं कर सकता । और पुस्तक पढ़नी आरम्भ कियेपर बिना पूरी कियेमन नहीं मानता । एकदृष्टार पुस्तक रूपकर हाथों हाथ बिक गई जक्त में इसकी जैसी प्रशंसा हुई उसका सारांश दूसरी बारके छापेमें भूमिका से प्रथम ही देखने में आवेगा । छापा सुन्दर बम्बई टाइप, कागज़ चिकना विलायती कपड़े की जिल्द, यह पुस्तक दयानन्दियोंके उत्तर में अपने ढंगकी एक ही चीज है । सैकड़ों ग्राहक तो रूपने से प्रथमही ही गये थे, और अब भी हाथों हाथ चली जा रही हैं, मूल्य डाक मचसूर सहित सवा दो रुपये २।

आरोग्यामृत प्रवाहवैदक ।

इस पुस्तक में सबेरे से उठकर प्रातःकालमें करनेके कार्यों की सूचना, साधारण उपदेश, स्नानके लिये जल और उसका समय तथा स्थान, और घटऋतु के जुड़े जुड़े खानपान, अंग्रेज़ी यूनानी ऋतु विभाग, स्वास्थ्यरक्षा साधन के नियम तथा उपाय, विनाविचारे कार्यसिद्धान्त, देहभेद, समयपरिवर्तन पदार्थ सम्बन्धी सरल और सत्योपदेश, भोजन का समय और उसके उत्तम पदार्थों के गुण दोष, प्रत्येक ऋतुमें उत्पन्न होनेवाले रोगोंका वर्णन और उपाय, ऋतुओं की प्रकृति और दोषोंके संचय होनेका हेतु, शरीररक्षाके द्यनियम, वायु, पित्त, कफ, इन तीनोंका विस्तार पूर्वक अध्ययन और सैकड़ों रोगोंकी परिचित औषधी, और शरीरपुष्ट करने के उत्तम उपाय इत्यादि अनेक विषय इसमें भरे गये हैं, यदि सम्पूर्ण विषयों का वर्णन करें तो एक पुस्तक जुदा बन जाय इसलिये इतना ही बज्जत है, सत्यतो यह है कि इस पुस्तकके सदाकाल पास रख पढ़ने से नाना प्रकार के रोगों की पहचान और इलाज करना

आजाय, और इसके लिखागुसार बर्ताव किया जाय तो हम बल पूर्वक कहते हैं कि प्रथम तो कोई रोग उत्पन्न ही न हो, और जो हो भी जाय तो शीघ्र आराम होता है। छापा सुन्दर टाइप जिह्द सहित मूल्य ॥१/ घाने।

जैनसुधाविन्दु ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रथमवार के रचे "सत्यायप्रकाश" के हाद्य समुल्लास में जो कुछ जैन धर्म के नाम से संबोक्त लेख लिखा था उसका विस्तार पूर्वक खंडन इस पुस्तक में लिखागया है, पुस्तक सर्वोपयोगी होने पर भी जैन्थों के विशेष काम की है छापा टाइप मूल्य महसूल सहित ॥॥

कोशविन्दु देवनागरी भाषा के २००० दोहजारशब्दोंकाकोश मूल्य ॥॥

- (१) हिन्दीबरतानियां, रसिक कवित्त /
- (२) सर्बबिषहर, वैदक चिकित्सा //
- (३) उर्दूमुअलम, पढ़नेकी कल मू. //
- (४) औषधिसार, यूनानौदलाज मू. //
- (५) मिथ्याप्रचार, उपदेशी कथा //
- (६) मूषकस्तोत्र, हंसी का खजाना /
- (७) दयानन्दहृदय, धर्म विषय ॥
- (८) धर्मसंताप, दयानन्द खंडन ॥
- (९) दयानन्दमतदर्पण, पुनः मूल्य ॥
- (१०) दयानन्द की बुद्धि, पुनः मूल्य ॥
- (११) भजनमनातन, उत्तम वस्तु मू. ॥
- (१२) सत्यामृत, भूठ की बुराई मू. ॥
- (१३) योगाचार, यह ज्योतिष विद्या का उत्तम संग्रह जिसके द्वारा सुकाल, दुकाल, मन्दा, तीजमालम ही जाता है मूल्य /
- (१४) चक्षुरक्षक, इसमें आंखोंकीशक्ति स्थिररखनेके अनेकउपाय, च-यमां लगाने की रीति और दवाई, सुमां, अंजन लिखे हैं //
- (१५) योगमहोदधि, वैदकविद्याकेप्रसिद्ध प्राचीन चकंशुश्रुत, भावप्रका-य सारंगधर चादि का मथन

दोहा, चौपाईमें किया है मू. ॥

जैनधर्म ग्रन्थ ।

- (१) रत्नकरंडश्रावकाचार, मूल्य ५)
- (२) मोक्षमार्गप्रकाश, मूल्य ३)
- (३) आत्मानुशासन, मूल्य ३)
- (४) पार्श्वपुराण, भाषा मूल्य ११/
- (५) समयसारनाटक, कवित्त मू. ॥//
- (६) भूधरजैनसतक, भाषा मूल्य ॥
- (७) पूजनवृन्दावनकृत, भाषा मूल्य ॥//
- (८) पूजननितनियम, सटीक मूल्य ॥
- (९) द्रव्यसंग्रहगाथा, टीका से मू. १)
- (१०) सुन्दरप्रकरण, भाषा मूल्य १/
- (११) चर्चाचन्द्रोदय, ३ भाग मूल्य १)
- (१२) स्वप्ने का ख्याल, नाटक मूल्य //
- (१३) मूलतत्त्वार्थसूत्र, दाम //
- (१४) जैनवद्रीमूलवद्री, यात्रासमाचार //
- (१५) जैनभजनरतनाकर, बड़ा मू. १/)
- (१६) निशभोजनकथा, मोल /॥
- (१७) दर्शनस्तोत्र, चौपाई छन्द /॥
- (१८) भक्तामरभाषा, मूल्य /)
- (१९) चारपाठसंग्रह, भाषा मू. /)
- (२०) भक्तामरयुगम, मूल भाषा /)
- (२१) भक्तामरसंस्कृत मूल पाठ ॥॥
- (२२) पंचमंगलभाषा, रूपचन्द कृत ॥॥

- | | |
|--------------------------------|--------------------------------|
| (२३) बिषापहारभाषा, उत्तम पाठ) | (२४) बारामासा गज़ल लावनी,) |
| (२५) दशआरतीभाषा, पृथक् मू.) | (२६) शिषरमहातम, चौपाई बन्ध) |
| (२७) एकीभावस्तोत्र, भाषा मोल) | (२८) जैनशाखोद्धार, भाषा मोल) |
| (२९) प्रातः स्मरणमंगल, पाठ) | (३०) निर्वाणकांड, भाषा मूल) |
| (३१) बैरागभावना, भाषा छन्द) | (३२) जैन बालकौं का गुटका मू.) |

और अनेक प्रकार की पुस्तक जैनधर्म सम्बन्धी हमारे पास मिलती हैं डाक खर्च ऊपर लिखी कीमत से जुदा लगीगा जो रुपये पीछे चार आना समझो ।

देशीममीरा और नाना प्रकारके प्रसिद्ध सुरमे

देशीममीरे का सुरमा नं. १ आजकल ममीरेके सुरमेकी संसार में इतनी धूम है कि सौदागरलोग उसको दशरुपयेतोला तक बेचते हैं, परंतु यह हमारा देशीममीरेका सुरमा ऐसा उत्तम है कि जिसके सेवन करनेसे फूला, जाला, टलका, ललाई आदि अनेक रोग नष्ट होकर आंखें निर्मल साफ़ होजाती हैं, किसी तरहका दुकसान नहीं करता तथा परहेज़ भी नहीं चाहता । यह हमारे गुरु महाराजका प्रसाद है जिसको दते हैं वहीतारीफ़ करता है, प्रसंसापत्रोंके ढेरजगे हुए हैं, मूल्य केवल चारआनातोला ।

सुरमा नं० २—जो अमीरलोगफूलेका इलाजऐसीदवासे किया चाहते हैं जोलगे थोड़ी और आरामकरे उनकेलिये इससेबढ़कर कोईदवाक्याहीगी मू. एकरुपयातोला

बदियासुरमा नं० ३—बहुधा अमीरलोगहमारेनम्बर १ के सुरमेको घटियासमझ केहाथ नहीं लगाते इसलिये कुछ सुरमादेशीममीरा और अनेकगुणकारी दवामिला करगुलाबकेअर्क में मोतियोंकेसाथ ४०दिनघुटाया है, बड़ाहीउत्तम है दाम१तोला१)

अंजन नं० ४ बहुधाविद्यार्थी, दर्जी, वामेंवारलोगोंकीदृष्टिमें अधिकअयमके कारणनिर्बल ताहोजाती है, रात्रिकोकुछनहींसूभताउनकेलिये यहपीलाअंजनलाभकारी है ॥ तो०

श्रीतलसुरमा नं० ५ सुरमालगानेवालेफिरीवालोंसेलेकरबहुधाकच्चासुरमालगाते हैं जोहानिकारक होता है, वेलोगसस्ता खरीदनाही भलासमझते हैं, इसलियेहमारा सुरमानम्बर ५ जो केवल एकआना तोला बिकता है सबसे उत्तम और गुणकारी है ।

नम्बर ६ यहसफ़ेदसुरमानयेमोतियाबिन्दकेपानीकीरीकता है, दाम४आनातोला

नम्बर ७ आसमानीरंगकागरीबलोगोंकेफूलाकाटनेकीदवा, दामचारआना तोला

नम्बर ८ यह सफ़ेद बदियासुरमा मोतियाबिन्दका इलाज अमीरोंके लियेपरम लाभकारी नजलिके जलको इसप्रकार रीकता है जैसे नदीका पुल दाम १) २० तोला

नयनामृतअंजन नं० ९—वैदक, डाक्टरों, यूनानी, सबका यही मत है कि आंख के जितनेरोग हैं, कुछदिनसेवनकरनेसे यहशौघआरामकरता है मूल्यएकरुपयातोला

बिद्यालचन्द्र नं० १०—यह अलम्य सुरमासूत्रकी खरलमें गुलाबकेधन्धिया अर्क में मोती ममीरासर्वरस वगैरा ४० दवाई डालकर तैयार होती है और यहअमीरोंका जीवनप्राण है ४९ दिन बराबर घोंटाजाता है दाम दशरुपये तोला श्रीश्रीमें भरादिते है

बालरक्षा हफ्तगौहर बक्स ।

बहुधा देखने और सुनने में आता है कि छोटी अवस्था के अनेक बालक रोग, मसाला, खांसी, पसली, लहक, दस्त, सूकिया, ज्वर, नेत्र पीड़ा, गलगंठ आदि में फंसकर मर जाते हैं और रोग के समय मूढ़ विश्वासघाती खुदगर्ज लोग जो स्थानेक चलाते हैं, रोगी बालकों के मातापिता और विशेषकर स्त्रियों से कहते हैं, तुम्हारे बालक को भूत लगा भूत पटा है नज़र है, हमारी भेट लाओ, यत्न करेंगे, आशीर्वाद देंगे मंत्र पढ़ेंगे, यंत्र देंगे आराम होगा इत्यादिक बातें बनाकर बिचारे गुरीबों को खूब लूटते हैं, और बालक को आराम नहीं होता, क्योंकि वे लोग रोग का असली भेद नहीं जानते, हमने जन्तु की भलाई के लिये एक "बालरक्षा हफ्तगौहर" बक्स बनाया, इस में निम्न लिखित उत्तम सात पदार्थ हैं ।

बिजली का बड़ा कड़ान नं० १—बिजली के जल में बुझाकर लोहे से बनाया जाता है, इसको जिस स्त्री के वामपग में डालो उसकी औलाद निरोग पुष्ट और सुन्दर उत्पन्न होय
बिजली का छोटा कड़ान नं० २—इसको पुत्र के दाहिने, कन्या के वामपग में डालने से नज़र, भूतपटा, मसाला, भूत, प्रेत, पसली, खांसी, लहक, खास, दस्त आदिक सम्पूर्ण रोग नष्ट होते हैं, और बिजली के गुण आजकल के लिखे पढ़ों से क्विपे हुए नहीं हैं ।

बिजली की जुगनी नं. ३—यह जुगनी खूब सरत बनात की बनती है पिछली तरफ एक बिजली का कूला और अगली तरफ नकली सीने की फुल्ली लगाई जाती है इसको बालक स्त्री दोनों ही गले में पहन सकते हैं, इसके पहनने से, दस्त, सुस्ती, दिल धड़क दर्द, जीमत लाना, भय, हड़फूटन इत्यादि सर्व प्रकार के वायुरोग कम हो जात कनष्ट होते हैं

बीस (२०) का यंत्र नं. ४ यह बस्तु घर में रखी रहै और जब कभी बालक व स्त्री को किसी प्रकार का भय हो उसके गले में डालो परम लाभकारी है, इसको चांदी सीने में मंडालो
बिजली का कूला नं० ५ बहुधा गर्भवती, व रजस्वला स्त्रियों को सोते समय खोटी सपना दिखलाई दिया करते हैं उनके यह कूला वामे हाथ की उंगली में रखना चाहिये ।

बिजली की राख नं० ६ यह राख बिजली का कीट है, बालकों के दांत निकलते समय ज्वर, खांसी, दस्त, गलगंठ, आंख दूखना, निर्वलता इत्यादि अनेक रोग उत्पन्न होते हैं इस राख को शहद के साथ उसके मसूड़ों पर मलने से सुगमता पूरवक दांत निकलते हैं

मसाला की गोली नं. ७—यह गोली सूकिया मसाला और पसली (डब्बा) के रोग में परम लाभकारी है ग्रहस्थों के घर में हर समय बनी रहनी चाहिये एक बक्स में ७ गोली दते हैं

(नोट) ऊपर लिखे सातों रत्न कौड़ियों के मोल मिलते हैं तरकीब का कूपाङ्ग या परचा साथ होता है, एक सुन्दर काट के बक्स में दिया जाता है, यदि चंद्र ज्योति का बनाया हुआ होता तो और पथे की भी सस्ता था हमको इस कार्य में पूरा घाटा हुआ है परन्तु हम सवाल चबकस बेचने का प्रण कर चुके हैं, अब तक (७३) हजार विकचुके हैं, पूरे होने पर यह रत्न मिलाने काठिन होगी, इसी खयाल से अनेक लोगों ने दसदस पांचपांच इकट्टे भी खरीदे हैं मोल केवल कूपाङ्ग महसूल पारसल आदि घाना, रेलहारा मंगाने में पांचघाने में दस भावाथ घर बैठे सड़ि घाठ घाने में मिलेगा । यही बक्स अभी रोंके लिये बढ़िया भी बनाये गये हैं, उन का मोल पांच रुपया है इस में चान्दी सीने का भी काम होता है ।

घड़ी, घंटे, टाइमपीस, ऐनक, फोनोग्राफ

रेलवेरेग्यूलैटर—एक दफे चाबी देनेसे ३० घंटे चलती है खुला मुंह सिरे पर चाबी गारंटी ३ साल मोल ५) रुपये ।

पंचरत्नदनामीवाच—यह घड़ी अमेरिका के उसीप्रसिद्ध कारीगर एन्सोनियां की बनाई हुई है जिसका बनाया हुआ, 'B' टाइमपीस नामी है, इसी घड़ीकी सौदागरलोग नौ ८) रुपयेसे कम नहीं बेचते हमकमदामों पर इसलियेदेंतेहैं कि माल इकट्टा सीधाबिलायतसे थोकघाताहै इसके साथमें एक विद्याका रूमाल, एकतोला घीतलसुरमें की पुड़िया, एकटिकिया साबुन, एक कुतुबनुमा, एकचैन, यह पांचरत्न सुफत दनाम मिलते हैं गारंटी पांचसाल, इस अरसेमें त्रिगड़जाय विनादाम ठीककरै, मोल ५) रुपये ।



तमाशाघड़ी—यह बालकोंके मनकी प्रसन्नकरनेवाली घड़ी अभी नई बनीहै इसमें जुदे जुदे तमाशेहैं, किसीमें लोहार छड़ताहै, किसीमें जुलाहा बुनताहै किसीमें औरकुछ होरहाहै, १२ घंटेकी चाबी खुलाकेश लीवर गारंटी एकसालदाम ३) रुपये यह साधारणघड़ियोंकी सूची दीगईहैं बढ़ियां कीमतकी घड़ियांजिनमें रत्न जड़े हैं हरएककिस्मकी सौनेचांदीकी लीवर जनेवा मौजूदहैं । औरसर्वप्रकारकी घड़ीघंटे टाइमपीस, ऐनक, फोनोग्राफ वगैरालाखों रुपयेकासामान देहलीकीदुकानपर मौजूद रखाजाताहै बड़ीफहरिस्तदेखनाहोतो एकघानेकाटिककटभेजकरमंगाली चौथाई दाम चाहे बिना, वी. पी. न होगी ।

विद्या का रूमाल—यह रंगविरंगी रूमालहैं जोबढ़िया नैनसुखपर हमनेनवीन तयारकरायेहैं जिनपरज्ञान, वैराग, रसमृंगारके अनेक दोहेरूपे हैं दामदो ॥ आने

पिल्हूनाशी गिलास—जक्तमें तापतिल्लीभी ऐसालुरारोगहै जिसकेहीनेसेथरीर पिंजर होजाताहै, हमनेयह अपूर्व गिलास इसीरोगके दमन करनेको एक गुणकारी लकड़ की जड़ का रसायण द्वारा बनाया है इसमें जलपीने से रोग जाता है मोल १) ।

कर्णतेल—इस के सेवन से कान के अनेक रोगनष्ट होतेहैं एक शीशी का दाम १) ।

पवित्र दंत मंजन—इससे दातों का हिलना दर्द चीस सब आराम दाम १) तोला

हिग्वाष्टकचूर्ण—दाम दो आना तोला ।

लवणभास्करचूर्ण—दाम एकघाना तोला

नमक सुलैमानी—दाम एक आना तो ।

बृहद्दिमाष्टक चूरण—दामदोआनातो ।

यह अति पवित्र चूरण अजीरण रोग दूर करने को जादू समान है, इन में सब सामान शुद्ध पवित्र उत्तम डाला गया है थोड़ा लेनेपर शीशीका दाम जुदा होगा

प्रदरनाशीचूरण—जिसस्त्रीके नवीन प्रदररोग (पांवजारौ) होजाय उसको यह चूरण बड़ा लाभकारीहै, तीन खुराकमें आरामहोताहै ७ पुड़िया का मोल १) आना

नेनामतजल—आंखों की कलाई, रड़क, सोजन वगैरा की बद्धत जल्द आराम करताहै यदि आंखों में डालो तबभी गुणकरता है दाम एक तोला ॥ आना

मृगीकाष्ठ—यह घृत बड़ी कठिनता से बनाया जाता है, इसके इन्दी पर लगाने से सम्पूर्ण ही नशोंकी कमजोरी, कड़पनकी कुषाओंके कारण पुरुषत्वकी निर्बलता आदिक जितने विकार हैं सब एक बारही में नष्ट होते हैं, दुनियां में इसकी बराबरी करने वाला कोईतिला अथवा इलाजनहीं, हम २० वर्षसे इसको उपयोगमें लाते हैं असंख्य रोगी इस से अच्छे हुए किसी प्रकारका उपाड़ नहीं करता ३ मासेका मोल ॥) बाराघाने

धातपुष्टकीगोलियां—यह मस्तक, रौठ, रग, मासकी बख्खान करती हैं, ह्यालदिल याद भूलना, स्त्रीणता, हाथ पैरोंका कांपना, भोजनमें अस्थि २० प्रकारके प्रमेह इन सब को जड़मूल से नष्ट करके शरीरको त्रांतिमय करती हैं, दाम १४ गोली १) रुपये की.

मूत्रकृच्छ्र—(सोजाक) यह रोग विशेषपुराना होजानेसे मूत्रधारा पतलीपड़जाती है तब बून्दबून्द होकर फिरता है, और अंतमें एकबारही बन्दहोकर मौतका दर्शनकरा देता है, इसके कारण, बद् प्रमेह, गठिया आदिक रोगइसके साथही लगीरहते हैं प्रथम ही इस रोगसे मूत्रमें जलन होवेसे जब बन्द होती है तो मूत्रमें चिणक और रुकावट होती है, पीतश्वेत मिश्रितरंगकी धातुका भरना कपड़ोंकी खुराबकरता है, कभी गर्म वस्तु के सेवनसे पीप अधिक बहने लगती है तब रोगी विशेष दुखी होजाता है इस रोग को हमारा तेल दावेके साथ दूर करता है, यह दो तेल जुदे जुदे होते हैं एक शीशी में ६ मासाहोता है दोनों प्रकार का मिश्रित एक तोला की शीशी का मू. १।)

नयासीक्काक—इसके लिये उत्तम चूरण दिया जाता है, सात दिनके सेवन करने से यह रोग बिल्कुलनष्ट होजाता है दिनमें दोबारखानेकी १४ पुड़ियाके दाम ॥) आना

दमेकीदवाई—जब हम देखते हैं कि हमारी दवा सैकड़ोंकी आरामकरती है फिर यह क्योंकर मानें कि “दमादमेके साथ जाता है” हमारी अनमोल दवा संसार भरमें प्रसिद्ध है और शीतकाल में बल पूर्वक गुण करती है ६ मासे की शीशी का मोल १)

खांसीकी अनमोल दवा—यह अनेक बद्धमूल्य दवा फूंक कर राख बनाई गई है जो लोग खांसीके लाखों यत्नकर निराश होगये हों वे एक बार इसका अवश्य सेवन करें देखो क्या चमत्कार दिखलाती है दाम एक तोला राख का एक रुपया १)

गठिया का चूरण—नवीन गठिया रोग इस चूरण के सात दिन तक दिन में २ बार सेवन करने से तत्काल आराम होता है १४ पुड़ियों का मोल आठ आना ॥)

दस्तावरगोली—जिसके उद्दरमूल वा कठक की चिकावत ही रात्रि को सोते समय ही गोली खाकर सोवे दूसरे दिन प्रातःकाल एक दस्त बाफ़ खुलकर होजायगा, और पेटमें गरमीवा मरीड़ा कुछ न होगी, और स्नान ध्यान नित नियमपूजा पाठमें भी किसी प्रकारकी रोक न होगी, दाम २० गोलियों का १ बक्ख दश आना

बुखारकी गोली—उबर, जूड़ी इकतरा तेइया, चौथैया, बल पूर्वक दूर करने में यह गोलियां बड़ी प्रसिद्ध हैं २० वर्ष से बराबर चलती हैं दाम २) रुपये की १००

बवाशौरखूनी—इस रोगके लिये हमने एक प्रकार की राख बनाई है इसके तीन चार बार सेवन मात्रही आराम की आशा हो जाती है दाम एकआना पुड़िया

कैशरीतिला-यहतिलाबालकपनमेंकिथेइएदोषोंसे उत्पन्नहई नपुंसकता,यिथिलता, वक्रता,निर्बलता,वीर्यवाहिनै,नशोंकामाराजाना,याकीमलहोजाना, मनकाकहींनल-गना,इत्यादि सबविकारोंको दूरकरकेपुरुषत्वको उत्पन्नकरताहै, एकविशेषगुणइसमें औरभीयहहै कियदि एकतीलातिलामेंदधतीलामीठातेलमिलाकरचाहे जिसप्रकारकेदूध परमलोथीघ्नारामहोगा, हाथपांवकीऐंठन, कमरकीयिथिलता, वायुगठिया, बद्ध, सबएक सप्ताहकेसेवनसेसमूलनष्टहीतेहैं, इसकीबड़े बड़े डाक्टरोंनेपरीक्षाकरीहै(मूल्य३)६००तो०

योगराजगुग्गल—यह कोड़, बवासीर, संग्रहणी, प्रमेह, वातरक्त, नाफका दर्द, भगन्दर, उदावर्त, (दस्तसाफनहोना) क्षयरोग, वायुगोलान्त्रगी, छातीका जकड़ना, मन्दाग्नि, खांसीस्वास, त्रिदोषजनितविकार, आमबात(गठिया)इनकोदूरकरताहै औरपुरुषोंकेवीर्य विकारऔरस्त्रियोंकेअनेकरजदोषदूरकरबन्धाकोपुत्रदेताहै मूल्यद्वःआना।॥) तोला

स्वापसली और मसाण रोगकी गोली—संसारो असंख्य बालक मसाणरोग तथा पसलीके फड़कनेसे मरते हुए देखनेमें आतेहैं, इसका बड़ाभारी कारण तो यही है कि बालचिकित्साका अभाव हुआ जाता है, हमारे देशके वैद्यहकीमडाक्टरबौमार के मुखसे अनेक प्रज्ञ पृष्ठे बिना पूरे तौरसे किसीभी रोगका निदान नहीं करते और छोटे बालकों को अपना दुख बतला देनेकी बुद्धि वा समर्थ नहीं इसलिये छोटेबड़े नवीन चिकित्सक यही कह दिया करते हैं कि बच्चोंका इलाज स्त्रियां तथा दाईंठोक जानतीहैं, आश्चर्य की बात दाईं विचारी क्या जानें हमने बाल चिकित्सा के अनेक प्रमाणिक ग्रंथों का मथन कर उक्त रोगके वास्ते गोली बनाई हैं जो गुण दिखलाने में जाइका असर रखतीहैं यह सबके घरमें सदाकालरहनी चाहिये म० २॥)की १००

(नोट) आजकलके लोग भूठ अधिक बोलने लगेहैं, बिनापरीक्षा किथेही बिज्ञा पन छपादेतेहैं, अधिकृत ग्रंथोंके दिखे पढ़े बिना ही दो चार पैसों की भाषा पुस्तक ले धन्वन्तरीके गुरु होने का दावा करते हैं, भूठे सबै खुशामन्दियों से दो चार सा-टींफ्रिकेट लिखालेना और बात है, हम उसी दवाको उत्तम कहसकते हैं जिस को बड़े बड़े वैद्य हकीम डाक्टरोंने अच्छा बतलाया हो, और हम नाम के साथ परी-क्षोतीरण, सनदयापतः, कविराज, बद्यराज, राजवैद्य, इत्यादिक अक्षरों का योगभी अच्छा नहीं समझते, हमारी औषधियों का गुण बरतने परही पूरा र मालूम होगा और बरतनेको तरकीबका छपाइया परचा प्रत्येक दवाके साथ भेजाजाताहै, इनके सिवाय और सर्व प्रकार की दवा, शरबत, खमीरा, मोदक चूरस, चटनी, तैलादि मांग आने पर बनाकर भेज सकते हैं, जो कीमत ऊपर लिखी गई वह और डाक खर्च और बारदाना भी ग्राहकों के पिर होगा, हमारी सचाई काम पढ़ने ही से मालूम होगी पत्रव्यवहार नौचे लिखे पते से करना चाहिये ॥

ज्योतिशरत्न पंडित जीयलाल चौधरी

फर्रुखनगर जिला गुरगाँव: ग्राम-दरीका देहली-

બન કરવાનો ઉત્તમોત્તમ ઉપાયો જાણવા માટે અને જે વડે હજારો મનુષ્યો ધંધે વળા પેસાદાર થાય તેવું પુસ્તક

ધનવાન

અને પેસાદાર થવાના ઉપાયો (ચોથી આજ્ઞી)

આ પુસ્તક આજેજ મળાવે. તમે અને તે ધંધા કરતા હશો તો પણ તે તમારા ધંધાને વધારવા મદદ કરશે, તમે ધંધા શો કરશો તેની મુશ્વેષ્ટમા હશે તે વખતે તમને આ પુસ્તક હજારો ઉચાંગે પ્રત્યક્ષ બતાવી દે તમને પેસાદાર બનવાના માર્ગે વાળશે તેમાં ૧૩ ભાગ નામે પ્રમાણે છે.

ભાગ ૧ શો-ધનવર્તુ મહત્વ ૨૦ પ્રકરણ છે. ભાગ ૨ જે-જેમાં ૩૦ પ્રકરણ છે. જેથી ધનવાન થવાને કેવી યોગ્યતા પ્રાપ્ત કરવી તે છે-ભાગ ૩ - ધંધામાં શોધ અને કયા ધંધાથી ધનવાન થવાય છે, તે. ભાગ ૪ થે.-જુદા જુદા પ્રકારની નોકરી કેવી રીતે પ્રાપ્ત કરવી, ભાગ ૫ મો વેપાર, ધનવાન થઇ શકાય તેવા અનેક જાતના વેપારો. ભાગ ૬ ઠો ખેતી-જમીનનો કસ થી રીતે વધારવા, ખાતર કયા પ્રકારનું કઈ જમીનમા કેટલું નાખવું વગેરે ઉપરાંત વરસાદ પાણીની વગેરે થી રીતે પુષ્ટ પાડવી. જુદા જુદા જાતના અનાજ તથા મરી મનાલા વિગેરેનું વાવેતર કયારે કેવી રીતે કરવું કે જેની પેદાશ દર વરસ કરતાં દસ કે વીસ વધી વધી શકે વગેરે. ભાગ ૭ મો-ખાજ પદાર્થો. ભાગ ૮ મો-માતી, હીરા, માણિક વગેરેની સૈપ્ય માહિતી.

ભાગ ૯-મો-જુનર ઉદ્યાગ-તેમા તમામ પ્રકારના રંગ બનાવવાની રીત. સફેદ, લાલ, કીરમજી, હીલો, પીળા, બ્લુ વિગેરે રંગો રસાયનિક રીત બનાવવાની કળા. હાથી કાવ, રેશમી કપડા, ઉનના, સુવરનાં વિગેરે કપડાંનું જુદા જુદા રંગ ચઢાવવાની વિદ્યા. કામળી બનાવવાના ઉદ્યાગ-જેમા છાપવાના, લખવાના કામળો, જાડા વખતા, પાલીસ પેપર. કાચના ઉદ્યાગ--જુદી જુદી જાતના કાચ બનાવવાના પ્રયોગો. આમડાનો ઉદ્યાગ, આમડાને શુદ્ધ કરવાની, પકવવાની, તેના પર જુદા જુદા રંગ ચઢાવવાની રીત. સાજુ બનાવવા-ઉસમાથી સાજુ બનાવવો, ચરખીનો, કાકમના તેલનો, કાપરેલનો, એરડીવાનો, ડાળીવાનો, રાજનો, સાજુ-બનાવવાની રીત, શાજુબાંત બનાવવાની ક્રિયા અને તેની બનાવટ. ફોટોગ્રાફર બનાવવાના ધંધા, કેમેરા વિગેરેનો સમજણ, ફેકસ મેગવા ફોટો પાડવાની રીત, કાચના દવાથી ધંધાની રીત, સીમેન્ટ બનાવવાની રીત. વારનિક-દરેક પ્રકારના વારનિક બનાવવાની બનાવટો, લાખ બનાવવાની ક્રિયાઓ, શાહી-જુદી જુદી જાતની બનાવટ અનેક પ્રકારના બટનો બનાવવાની બનાવટો, દાવાતળીઓ દરેક જાતની બનાવવાની ક્રિયાઓ, સોનું અને રૂપું રેખા વિગેરે ઘાતુઓ ઘોષ પેલીશ કરવી, તેના ઉપર અક્ષરો કોતરવાની રીત. તાતુ ઉપર વીજળીના મદદ વડે ગાંધિટ ચઢાવવો, વીજળીની એટરી બનાવવાની, યુનાબજળ, એરજ વોટર વગેરે અનેક બનાવટો. સોડા, હીમોનિક, સોડા વોટર, હેમોનિક વોટર, ટોનિક વોટર, જાંબર બનાવવાની રીત. તેનો પાવર બનાવવાની રીત, જુદી જુદી જાતના બ્લેસ્ટ બનાવવાની રીત, છી કપ્પી બનાવવા; સુમવી, કરતુરી, મનાથી વગેરે તથા ચાર હજાર હજારના પ્રયોગો.

ભાગ ૧૦ મો-વિવિધ પ્રકારના એસેન્સ અને અર્ક બનાવવાની રીતો, પેટંકે દવાઓ-જેવી કાર્બોનેટ ઓફ એમોનીયા, કાર્બોનેટ સોડા લાઇમ, ઓક્સાઇડ ઓફ આયર્ન, નાઇટ્રેટ ઓફ આયર્ન, કલોરાઇડ ઓફ ગોલ્ડ, લાઇમગ્યુસ, ખાડો સરકો, પોટાસ બનાવવો, માઉટ પાઉસ, બ્લોસ્ટર, કોલોઇડાયેન કોલોરો મીક્ચર, હાઇરનો મજમ. કલોરોફોર્મ કિનાઇનનાં મેળીઓ, ફાઇટરલ પીલ્સ, આયર્ન પીલ્સ, કમ્પાઉન્ડ આયર્ન મીક્ચર, સીરવ ઓફ કાઇપાફોસ્ફાઇટ ઓફ લાઇમ, નાઇટ્રેટ ઓફ પોટાસ, કરી ઇઝ આયર્ન

ભાગ ૧૧ મો-આયુર્વેદિય દવાઓ-જેમા તમામ પ્રકારના કયાથી, યુષ્ણી, ગુટિકાઓ, યુગળ, આલવ, અવશેહ, અરિષ્ટ, અરમે, રસા ન માત્રાઓની બનાવટોના સમાવેશ થાય છે, ઉપરાંત દરેક જાતના હીરા વિગેરે બનાવવા.

ભાગ ૧૨-મો- ધનપ્રાપ્તિના આધ્યાત્મિક ઉપાયો, જેમા ધનવાન થઇ શકે છે; ધનવાન થવા માટે કાનો આશ્રય ગ્રંથ કરવો, ધનવાન થવાના કેટલાક ઉપાયો, ધનવાન થવાનાર નાનાં નાનાં ક્રિયા, ભાગ ૧૩ મો-જમા અનેક ગરીબમાથી વધવાન થયેલા પુસ્તકોના અંગ ચારેકનો સમાવેશ કર્યો છે તે વાચી ધનવાન થવા કષ્ટનારે થી નવ. યોગ્ય અનેક વાગા જાણી વડે રી.

આમાંનાં કશું પ્રયોગો તો ખાત નવાન અને હજારો રૂપિયા ખર્ચ્યા વીની ન શકાય તેવા ગુપ્ત ઉપાયો તે પણ જાણશ કયા છે કીમત માત્ર રૂ ૧૦) પો. રૂ ૦૫૫ હાલ ગરવના રૂ. ૮-૦ મ મળે. પાન ૮૦૦

જેઠાલાલ દેવરા કરે દેવે જ્ઞાન્યોદય ઓફીસ, અમદાવાદ અને કાલકાદેવી-મુ. ખાઈ,

જાણી કરવા જતાં દરેક યાત્રાળુએ તેમજ મુસાફરોએ પ્રવાસમાં સાથે રાખવા હાથક પુસ્તક.

હિંદુસ્તાનની તીર્થયાત્રા

કિંવા

યાત્રાળુઓ તથા મુસાફરોનો જોમોથો (ખીલ ખાશતિ-સમિત)

આ પુસ્તકની અંદર હિંદુ, જૈનો, બુદ્ધ અને મુસલમાનોનાં તમામ જાતનાં ધામોનું સંપૂર્ણ વર્ણન, દરેક સ્થળે જવાના માર્ગ, દરેક સ્થળનાં જાતનાં સ્થાન, તેનું કારિત્ય માહાત્મ્ય, જેવા હાથક સ્થળો કાશી, મથુરા, હરદ્વાર, જગન્નાથપુરી, સેતલ્લંકુરામેશ્વર, દ્વારકાં વિગેરે ૧૫૦ ધામોની સંપૂર્ણ હકિકત છે.

આ પુસ્તક મુંબાઈ સરકારના ઠેળવણી ખાતાએ યાત્રાળુઓ અને હાથકોરીઓ માટે મંજૂર કર્યું છે. તેમ આ પુસ્તક પઠોદરા રાજ્યની હાથકોરીઓમાટે મંજૂર થયું છે.

મુંબાઈ હાઈકોર્ટના જજ જી. આ. કૃષ્ણલાલ મોહનલાલ ઝવેરી એમ. એ, એલ. એલ. બી. હાથે છે. હિંદુસ્તાનની તીર્થયાત્રાનું પુસ્તક દરેક રીતે ઉપયોગી થાય એવું છે. વાંચતાં પશ્ચોળ રસ પડે છે. જરૂરી ખબર બધીજ જોમાંથી મળી આવે છે. વળી ચિત્રોને હાથે જોની શોભા વધી છે. ને જોમાં નકશો હોવાથી જોની અંદર ધણી જ ધણી જોખે. મુજરાતમાં અત્યાર મુખી તીર્થયાત્રાનાં જે પુસ્તકો મહાર પડ્યાં છે. તેમાં તમારૂં પુસ્તક પહેલી પંક્તિમાં ચૂકવા હાથક છે.

હિંદુસ્તાનની તીર્થયાત્રામાં આવેલા વિષયો.

જેની અંદર આણ, અંબાલ, અલ્મોરા, પુષ્કરતીર્થ, સિંધ, કરાંચી, હીંગળાજમાતા, ઉદેપુર, જોધપુર, બિકાનેર, જેસલમીર, શ્રીનાથદ્વારા, કાંઠરોલી, ઉજ્જન, ઝોંકારેશ્વર, ઇંદોર, મથુરાં, આગ્રા, દીલી, હરદ્વાર, લાહોર, અમૃતસર, પંજાબ, બદ્રિકેદ્વારનાથ, શ્રીનગર-કારમીર, લખનૌ, અયોધ્યા, કાશી, ગયાલ, સમેતશિખર, વૈજનાથ મહાદેવ; કલકત્તા, જગન્નાથપુરી, મદ્રાસ, શ્રીસેતલ્લંકુરામેશ્વર, શ્રીરંગલ; શિવકાંચી, વિષ્ણુકાંચી, સાક્ષીગોપાળ, કોચન, હુબલી, નાચક, વંચક, પૂના, મુંબાઈ, ચાણોદ, શુકલતીર્થ, ડાકોર, દ્વારકાં, પ્રભાસપાટણ, ગીરનાર પર્વત, પાલીતાણા, વિગેરે યાત્રાનાં સ્થળોનું વર્ણન, ત્યાં શું શું યાત્રા કરવાનું ધામ છે, શું જેવા હાથક જ્યાંજો છે, વેપારની કષ્ટ કષ્ટ યીજો ત્યાં થાય છે, ત્યાં ઉતરવાની શી બવરથા છે, ગાડી ક્યાં બદલાય છે વિગેરે જાત્રાળુઓને ઉપયોગી સંપૂર્ણ માહિતીને આ પુસ્તકમાં સમાવેલ છે.

જેમાં-કાશી, જગન્નાથપુરા, બદ્રીનાથ, કેદારેશ્વર, શ્રી સેતલ્લંકુરામેશ્વર અને દ્વારકાં જે ચારે ધામની યાત્રા, કાશી, કાંચી, (શિવકાંચી અને વિષ્ણુકાંચી) અર્વાતકા, [ઉજ્જન] અયોધ્યા, મથુરાં માયા. (હરદ્વાર) અને દ્વારકાં એ સાતપુરી; ત્ર્યંબકેશ્વર; પુષ્કરેશ્વર; ઝોંકારેશ્વર; મહાકાળેશ્વર, સોમનાથ, કેદારેશ્વર, વિશ્વેશ્વર, વૈજનાથ, નાગેશ, મલ્લિકાર્જુન, રામેશ્વર અને બીમાશ્વર એ ૧૨ જ્યોતિર્લિંગો, શંકરાચાર્યોના ચાર મઠો, શ્રીવેન્કટેશ્વરનાં યાત્રાનાં સ્થળો, કેશરીયાલ, પાલીતાણા, સમેતશિખર, શૈત્રુંજય, ગીરનાર, પાલીતાણા વિગેરે જૈનોનાં યાત્રાનાં સ્થળો તેમજ અલ્મોરા વિગેરે સ્થળનાં મુસલમાનોનાં યાત્રાનાં અને પારસીઓનાં ઉદવાણા વિગેરે સ્થળોનું વર્ણન છે.

પાકે પુઠું, ચિત્રો, ઝોંઝ કાગળો પાન ૮૦૦ કિમત રૂ ૭-૦ પશુ હાલ તરત મંગાવી બેનારને માત રૂ. ૫-૦માંજ અપારો.

સત્તર વર્ષનું બુનું
જાણીદ ઉત્તમ
માસીક

ભાગ્યોદય

દરમહિને નિયમીત
માસીક
પ્રગટ થાય છે.

શરીર, મન અને આત્માની ઉન્નતિ કરાવનાર ધાર્મિક તેમ જ વિષયો ચર્ચાનું ઉપયોગી માસિક જાણેજ પ્રાહક થવું. લગભગ રૂ. ૪). મેટનું પુસ્તક મરત મને છે, નમુનાની નકલ મરત.

જેમલાલ દેવશંકર દવે, તંત્રી; ભાગ્યોદય, ખાડીયા-અમદાવાદ અને મહાબાદેવી-મુંબાઈ

૨. ૧૦૦ મહાત્મ્ય વ પદો તે પુસ્તક ૨. ૧૫) ને મહત્તે હાલમાં માત્ર ૨. ૧૨) માં મળશે.

કાયદાનો શિક્ષક

અને

ફોજદાર રેવન્યુ અને દિવાની કાયદાઓનું જીવ. (ચિલી આવૃત્તિ)

મંગલો. આ પુસ્તક વિદ્યાનોમાં, અમલદારોમાં અને જનસમાજમાં એટલું બધું લોકપ્રિય થયું પડ્યું છે કે તેની માહાજ વખતમાં ત્રણ આવૃત્તિ બપો ગઈ છે. કોર્ટ કમિટીનું કામ કરનારા વકીલો, કોર્ટ સાથે વાર-વાર કામ પડતું હોય તેવા માણસો તે તેને હાથેમાં પોતાની પાસે રાખે છે. કારણ કે તેમાં ફોજદારી, દિવાની અને સુલકી તમામ કાયદાઓનો સમાવેશ કરેલો છે.

ફોજદારી કાયદા

ક્રિમીનલ પ્રોસીજર કોડ—
પુરેપુરો અગત્યની ટીક સાથે
ડીડીયન પીનલ કોડ
પુરેપુરો અગત્યની ટીક સાથે
દીક્ષીટ પોલીસ એક્ટ—
૬૫૫ એક્ટ
વીલેજ પોલીસ એક્ટ
રેલવેનો એક્ટ
બાર થનારા પદાર્થોનો એક્ટ
વત માનપત્રોનો એક્ટ
હાનકારક મંડળોનો એક્ટ
જુગારનો એક્ટ
દટાકાનો એક્ટ, હેરી જીજીસોનો
કાટલાં તથા ભરતનાં માપનો

દથીબારનો કાયદો
કારીગર ને મજુરનો કાયદો
કામવેતો કાયદો
વેપારની અલખાજીનીકાનીનો કાયદો
પ્રેસ એક્ટ
તમાકુનો એક્ટ
ભસ્કરની કુચથી થતા મુકદ્દાનો કા.
વેલકીય ડીઝીઓનો કાયદો
સેનીટરી એક્ટ
છાપવાના પ્રેસોનો ને વર્તમાનપત્રોનો કા.
ખીડાનો કાયદો
વારનો એક્ટ
ચોરનો એક્ટ
બધીજીનો એક્ટ
આખકારી એક્ટ

મ્યુનિસીપાલ એક્ટ
પુરાવાનો કાયદો
માંડાપણાનો એક્ટ
કારખાનાનો એક્ટ
ધોડોહની સરતોનો કાયદો
બંગલી પક્ષીના શીકારનો એક્ટ
દિવાજીઓનો એક્ટ
વીમા કંપનીનો કાયદો
વેલોનો એક્ટ
ગુન્હા કરનારી જીતોનો એક્ટ
ચેટ તથા નમુનાનો એક્ટ
હીફુસ્તાનના રક્ષણનો એક્ટ
કોપીરાઇટનો કાયદો
કંપનીનો એક્ટ

દિવાની કોર્ટના કાયદાઓ, સીવિલ પ્રોસીજર કોડ (પુરેપુરો) યોટરનો એક્ટ.

મુદતનો કાયદો
હીફુલો
મુસલમાની સરેહ
કોર્ટીનો એક્ટ
સ્ટામ્પડ્યુટીનો કાયદો
કરાનો કાયદો
રજીસ્ટ્રેશન એક્ટ
ફાન્સકર કોર્સ પ્રોપર્ટી એક્ટ
ટેલ્ કાબ
ઇલમેન્ટનો એક્ટ, ફરટ એક્ટ
સગીરના વાલી નીમવાનો એક્ટ
વારસાનું સર્ટીફિકેટ લેવાનો એક્ટ
લકડું વેપવાના પુનર્લખનો કા.

પારસીઓના લખનો કાયદો
પ્રોવેટ તથા વલીવટની સનકનો
નાહારીનો કાયદો
મુસલમાનોને વકી કરવાનો કા.
રેવન્યુ અને સુલકી કાયદાઓ
લેન્ડ રેવન્યુકોડ
(પુરેપુરો અગત્યની નોટ સાથે)
લેન્ડ રેવન્યુકોડની રૂબો
મામલતદારની કોર્ટનો એક્ટ
નરવાનો કાયદો
વાલુકદારોનો કાયદો
તોમ ખીરાજનો કાયદો
લખાવીનો કાયદો

લોકલ કંબો કાયદો
ઇનકમટેક્સ એક્ટ
મતાદારોનો એક્ટ
સુતરાઈ માલકુપર જકાતનો કા.
જળમાર્ગની કરકમની ડ્યુટીનો એક્ટ
બંગલનો કાયદો
ધર્મિજન એક્ટ
સાતવા કાલવાનો એક્ટ

ફરતાવેલોના નમુના
ફોજદારી કોર્ટમાં કરવાની અરજી
ઓના ને દિવાની કોર્ટમાં કરવાના
દાવા રેવન્યુકોર્ટમાં કરવાની અરજી
ઓના નમુના અને તેના જવાબો,

વડોદરા રાજ્યના વરીજ કોર્ટના-હાઈકોર્ટ જજ સાહેબ; હાલ નાયબ દિવાન સાહેબ

પે. શ. આ. જાવાહરભાઈ હાથીભાઈ દેસાઈ બા. એ. એલ. એલ. બી. લખે છે કે—
રા. રા. નેટાલાલ રેવન્યુકર દ્વે કૃત " કાયદાનો શિક્ષક " આ પુસ્તક દરેક માણસને કાયદાની સાધારણ રીતે અવજારપયોગી માહિતી મળવાનું એક સાધન પુરું પાડે એવું છે, અને તેથી તે દરેક જણ પોતાના ઘરમાં રાખવા જેવું છે, એજવ પુસ્તકમાં દિવાની, ફોજદારી તથા સુલકી સંબંધી તમામ માહિતી મળે એવું સુલકી ભાષામાં આ એકવ પુસ્તક છે. ડી. ૨. ૧૫-૦ પાન ૧૨૦૦ ઉપરાંત.
આવા સેંકડો અભિપ્રાયો મળ્યા છે. હાલ વરતમાં મંગાવી લેનારને માત્ર ૨. ૧૨-૦-૦માં જ ખપાશે.

પુસ્તક મળવાનું ઠેકાણું— લાગ્યોદય કોમર્સીસ, અમદાવાદ અને સુબાઈ.

ધર્મિષ્ઠ આપુરુષોએ અવશ્ય વાંચી મનન કરવા શૈલ્ય અનેક ધર્મનાં શુભ રહસ્યોને દર્શાવનાર

સ્વધર્મનિષ્ઠ દેવીજીવન

અને

ધર્મનિષ્ઠ મહાન પુરૂષોનાં જીવનવૃત્ત.

આ પુસ્તક દરેક ધર્મિષ્ઠ આ પુરૂષે વાંચી મનન કરવા શૈલ્ય છે. તેમાં વેદ, ઢાજ, પુરાણ અનેક ધાર્મિક મંથોના આધારે ધર્મનાં મૂળતત્ત્વો, સનાતન ધર્મનું સ્વરૂપ, વર્ણશ્રમ ધર્મનું રહસ્ય, જૈન, હિંદુ, જુદ, ખ્રિસ્તી, મુસલમાન અને પારસીઓના ધર્મનાં રહસ્યો વિગેરે સવ ધર્મનાં રહસ્યોનો સમાવેશ છે.

આ પુસ્તકમાં અત્યાર સુધીમાં ચૈત્ર ગયેલા ઇશ્વરના ૨૪ અવતારોનાં જીવનચરિત્રો, અત્યાર સુધીમાં ચૈત્ર ગયેલા ૧૫૦ ધર્મ સંસ્થાપકોનાં વિસ્તૃત જીવનચરિત્રો, મહાપુરૂષો, શૈલ્યો તત્ત્વો, દેવીપુરૂષો, બકતો અને મહાત્માઓનાં જીવનચરિત્રોનો સમાવેશ કર્યો છે. આ પુસ્તક વાંચવાથી મનુષ્ય ધર્મિષ્ઠ બને છે. ધર્મ સંસ્થાપક મહાપુરૂષોનાં જીવનચરિત્રો વાંચી પવિત્ર જીવન ગાળે છે. અનેક ધર્મના રહસ્યોને સમજે છે.

તેમ ધર્મ સંસ્થાપક ૧૫૦ મહાપુરૂષોનાં જીવનચરિત્રોનો નવ ભાગ અને ૯૦ પ્રકરણમાં સમાવેશ છે. દરેક ધર્મિષ્ઠ આ પુસ્તકનું મનન કરવું જોઈએ. ક્રીમત રૂ ૧-૦ પોષ્ટલ ૦-૮-૦

આ પુસ્તકનું પાક પુસ્તક, એન્ડીક કાગળ, પાન ૮૫૦ હાલ તરત મંગાવી લેનારને રૂ. ૪-૦માં મળશે.

હાલમાં મંગાવી લેનાર અમારા ગ્રાહકોને રૂ. ૫-૦ ને બદલે રૂ. ૪-૦ માં મળશે.

જુત ભવિષ્ય અને વંતમાન કાળની વાત જાણવી હોય, તમારા નસીબમાં શું લખ્યું છે તે જાણવું હોય, તમારું પ્રારબ્ધ શાથી ખીલે તે જાણવું હોય, તમારી જીંદગીનું ભવિષ્ય જાણવું હોય તે

ભવિષ્યવેત્તા.

અને ભવિષ્ય જાણવાની વિદ્યા. [ચોથો આવૃત્તિ.]

(ન્યોતિષ, સામુદ્રિક, રમણ સ્વનેદ્ય વિગેરે વિદ્યાઓથી ભરપૂર પુસ્તક)

હાલમાં જેથી આજીવન બદલાર પડી છે તે મંગાવો, આ પુસ્તક ઉપરથી તમે જાતે તમારું તેમજ પારકાનું ભવિષ્ય જોતાં શીખી શકશો.

સાધારણ ગુજરાતી બજેટો માણસ પણ આ પુસ્તક ઉપરથી ભાવખની વાત કહી શકે છે. કારણ કે આ પુસ્તકમાં ન્યોતિષશાસ્ત્રની, જન્મકાર, જન્મોત્તરી, વર્ષકળ, પ્રકાળ બનાવવાની વિદ્યા અને જન્મોત્તરી જાણવાની રહેલી ણા વિસ્તારથી આપલી છે, તે ઉપરાંત તેમાં સામુદ્રિકશાસ્ત્ર કે જેમાં હાથની રેખાઓ જોઈ ભવિષ્ય કહેવાની સંપૂર્ણ વિદ્યા, નખ, તલ, ગસા, હસ્તકાર જેમ ભવિષ્ય કરેવું, મુખ જોઈ જીંદગીનું ભવિષ્ય કહેવું, સ્વપ્નેદ્યશાસ્ત્ર, સ્વપ્ન અને તારી જોઈ ભવિષ્ય કરેવું, વર્ષનાં ચિન્હ જોઈ વરસાદ વરસશે કે કેમ, સુકાગ, દુકાળ પડશે કે નહિ, અનાજ, રૂ, ચાંદી વિગેરેના ભાવ ક્યારે વધશે, ક્યારે ઘટશે, તે મુખલક્ષણ શાસ્ત્ર વિગેરે ભવિષ્ય જોવાની રીત પાકું સોનેરી પુસ્તક જેમ કાગળ પાન ૭૦૦ ઉપર ક્રી. રૂ. ૫] સંસારનું ખરું મુખ મેળવવા, મહાસ્થાનમનો ખરા જ્ઞાન મેળવવા આ ઉપરથી

સ્ત્રીજિતાશિક્ષક

અને અન્ડકાન્તાની આત્મકથા-(સચિત્ર ખીજી આવૃત્તિ)

આ પુસ્તક દરેક ગૃહસ્થ આ પુરૂષે વાંચી મનન કરવા શૈલ્ય છે, તેમાં સ્ત્રીઓના ધર્મ શું છે, તેની પતિ પ્રત્યે શું કરવું છે ગૃહસ્થાશ્રમને શી રીતે શોભાવવો વિગેરે ઉત્તમ વિષયો છે. ઉપરાંત ૧૫૦ ઉપરાંત સતી પવિત્ર સતીઓનાં જીવન ચરિત્રોનો સમાવેશ છે, તે વાંચી આદર્શ સતીઓએ જેવું જીવન ગાળ્યું હોય છે, તેવું જીવન ગાળતાં તે શીખે છે.

બાળકોને કેમ ઉંચેરવાં, કેવી રીતે કેવવાં વિગેરે જ્ઞાન મેળવી ભવિષ્યમાં મહાન બાળકો બનાવે છે અને ઉત્તમ ગૃહિણીપદને દીપાવે છે, પુસ્તકની ક્રીમત રૂ ૪-૦ હાલ તરતમાં માત્ર રૂ ૩-૦ માં અપાશે.

પુસ્તક મળવાનું ઠેકાણું-ભગવૈદ્ય ઓફીસ, અમદાવાદ અને હાલખાદેવી-મુંબાઇ.

હાલમાં મંગાલી લેનાર કાલકે પાલે ૩ ૮) ને બદલે માત્ર ૩ ૫) માંજ મળશે.
આજેજા મંગાવવા પત્ર લખો! અમૂલ્ય પુસ્તક!! બહાર પહચું છે!!!

ધનપ્રાપ્તિના માર્ગો

કિંવા હુન્નર ઉદ્યોગ વ્યાપાર શિક્ષક

આ પુસ્તક હાલમાં તેવાર છે. તેમાં ધનપાનમાં નહિ આવેલા એવા હુન્નરોના ઘેર બની શકે તેવી ખાતીવાળા હજારો પ્રયોગો છે, અનેક પ્રકારના ઉદ્યોગો કરવાની માહિતી, વેપારી થવાની કળા, વેપારીઓએ જાણવાના અને ક્ષીખવાના અમૂલ્ય વિષયો, ખેડૂતો, બનીનદારોએ જાણવાના ખેતી, બગીચા, પશુઓ, બનીન, ખાતર વગેરે સર્વથી અનેક ખેતીવાડીના બાલપ્રદ પ્રયોગોનો સંગ્રહ છે. (કિંમત રૂ. ૫)

જેમાં હિંદમાં બનતી વેપારની બજારો ક્યાં ક્યાં બને છે, ફરીયાદોની, ગાંધીજીના બરની વસ્તુઓ ક્યાં ક્યાં પાકે છે, તેના વેચનારા અને ખરીદનારા કોણ કોણ વેપારીઓ છે. ભાવ, તોલ, વિગેરે હકીકત કલકતા, મુંબાઈ, લાહેર, મલખાર, મદ્રાસ, નાગપુર, કર્ચી, રંગુન વિગેરે હિંદના મુખ્ય મુખ્ય શહેરો અને બંદરોના મુખ્ય મુખ્ય વસ્તુઓના વેપારીઓનાં નામ, ધંધા, આક્રમ, બર્મની અમેરીકા, જાપાન, ઇંગ્લંડ, વિગેરે પરદેશોના વેપારીઓનાં નામો, પરદેશમાંથી આપણા દેશમાં ખપતો આપારના બરનો માલ ધરીઆણો, કામનો સામાન, લોખંડી ચત્રા, તેલ, સાબુ, ફરનીચર, કામળો, કાપડ, રેશમી કાપડ, કાપડના કકડા વિગેરે અનેક માલ વેચનારા ચુંટી કાઢેલા ખાસ બધાબધ વેપારીઓ અને ફેક્ટરીઓનાં નામો, આપણા દેશની મીસો, ત્રોટા વેપારીઓ, જીનો, ફેક્ટરીઓ, કારખાનાં વિગેરેની માહિતી અને તેનાં કીરનામો:—

આ પુસ્તકના ભાગ ૧૫૩. ૧૭૦ માં નીચે પ્રમાણે આજે હજારો વિષયો આપવામાં આવ્યા છે

- ભાગ ૧ હો:—ધનપ્રાપ્તિના માર્ગો: જેમાં ધનપાન થવાના ઉપાયો, વેપાર ઉદ્યોગ.
- ભાગ ૨ જી—મનુષ્યની ઉન્નાત કરાવનાર આગે: આગળ વધું એ મનુષ્ય માત્રની ફરજ.
- ભાગ ૩ જો ક્યા ધંધા લાભપ્રદ છે. ઉન્પાદક ધંધા, વિભ્યની વરમાળ
- ભાગ ૪ થો—વેપારમાં બાલ મેગવવાના ઉપાયો ઉત્તમ વેપારી થવાની કળા.
- ભાગ ૫ મો—હિંદમાં બનીજી પદાર્થોની કોષખોળ. હિંદમાં બનીબની વેદાક.
- ભાગ ૬ ઠો:—હિંદના રસાયણિક ઉદ્યોગો: પ્રા. ૪૪ હિંદુસ્તાનના રસાયણિક ધંધા,
- ભાગ ૭ મો—હુન્નર ઉદ્યોગના પ્રયોગો:દેશમાં હુન્નર ઉદ્યોગ વધારવાની જરૂર. હિંદમાં રંગ બનાવવાનો હુન્નર, અત્તર, તેલ, હેરઓષ્ઠ બનાવવાં, કાલનવોટર બનાવવું, લાઇમવોટર વિગેરે હુન્નરોના હજારો પ્રયોગો.
- ભાગ ૮ દેશી અને વિદેશી દવાઓની બનાવટ—દવાઓ, મલમોની બનાવટો, ખીચમનની ગોળો. નાંદાનાકનો ઉપાય, પોપીન પાહિર, ઈંગ્રીજ પેટન્ટ દવાઓ, પીકપીસ્ટ, સારસાપરીલા.
- ભાગ ૯ ખેતીવાડી-ખેતીમાંથી પેલા કમાવા, ખેતીવાડીની મજળતા, શાક.
- ભાગ ૧૦ મો હલાખી પ્રયોગોનાં જીવન ચરિત્રો ઉદ્યોગી પુસ્તો ઉત્સાહથી સર્વ સિદ્ધ કરે છે.
- ભાગ ૧૧ મો વેપારીઓએ જાણવાની ગુપ્ત વાતો. છુપી મસલતો-હિંદમાં જુદા જુદા ભાગોમાં નીપ-બની વેપારની બજારો, તેના વેપારીઓ, વેપારીઓ વેચનાર અને ખરીદનારોનાં નામ.
- ભાગ ૧૨ પોસ્ટ, રેલ્વે, ઐક, ઇન્કમટેક્ષની માહિતી, ફેબ્રુદારી મુદતના કાપડા, વારસાની માહિતી,
- ભાગ ૧૩ જુદા જુદા પ્રદેશના વેપારીઓ, દેવડ દેવડ કરનાર, ઝેરીસોવાળા, કમીજન એન્ડો, સીલ્વરના તીબેરીયોના, લાદીના, દવાના જુદોના, સોમિંદના, સાબુ, રેશમ, ચતવરના વેપારીઓનાં નામ.
- ભાગ ૧૪ મીલા, જીનો, ફેક્ટરીઓ કારખાનાંની લગત સાથેની હકીકત.
- ભાગ ૧૫ પુરોષ, અમરીકા, જાપાનના બધાબધ માલ પુરો પાડનાર વેપારીઓની ડીરેક્ટરી.

આ પ્રમાણે લગભગ ૧૫ ભાગમાં ૧૭૦ પ્રકરણમાં ૮૫૦ પાનમાં હજારો વિષયોનો આ પુસ્તકમાં સમાવેશ છે. દરેક વપારીને આ પુસ્તક દેશ પરદેશની વપારની બનાવટ, માહિતી અને વેપારીઓનાં નામ પુર્ણ પાડશે, હુન્નરો ક્ષીખનારને ઘેર બની શકે તેવા હુન્નરો, ક્ષીખવાડશે, બનીનદારોને ધણું ઉપયોગી થકપડશે. પુસ્તકની કિંમત રૂ. ૮) છે પણ ૮૫૦ પાકુ પુકુ. હવે શોડીબ નક્કો કીલીક છે. ખપી બવા આવી છે.

હાલ તરતમાં મંગાલી લેનારને માત્ર રૂ. ૫-૦ માંજ આપવામાં આવશે.

અવસ્થાપક: ભાગ્યોદય કોપીસ, ખાડીયા-અમદાવાદ અને મુંબાઈ.

ત્રિકાળદર્શક દર્પણ અને પ્રેતાવાહન વિદ્યા.

અથવા ચમત્કારિક ગુપ્ત વિદ્યાઓનો ભંડાર સચિત્ર (ત્રીજી આવૃત્તિ.)

આ પુસ્તકની પહેલી આવૃત્તિ માત્ર છ માસમાંજ બધી ગદ્ય તેની બીજી આવૃત્તિ પણ તરતમાં બધી ગદ્ય તેથી ત્રીજી આવૃત્તિ પણ સુધારાત્વકાર સાથે બહાર પાડી છે. આ પુસ્તકની અંદર યોગવિદ્યા; મેસ્મે-રીઝમ, હીપ્નોટીઝમ, ત્રિકાળદર્શક દર્પણ અને વાવવાની વિદ્યા; રતીશાસ્ત્ર, ઠોકશાસ્ત્ર; કામશાસ્ત્ર; મંત્રવિદ્યા, તંત્રવિદ્યા; યંત્રવિદ્યા; જ્ઞાનવિદ્યા; જ્ઞાપચાર શાસ્ત્ર, રંગરસાયનવિદ્યા; થોટ રીડીંગ, સુવચ્છ સિદ્ધિ વિગેરે. ૧ ચમત્કારિક વિદ્યાઓનો સંગ્રહ છે. તેની અંદર આવેલા વિષયો ૧૯ ભાગમાં ૧૨૩ પ્રકરણોમાં નીચે પ્રમાણે છે

જેની અંદર પ્રા. ૧ પ્રવેશ: ભાગ ૧ માં મેસ્મેરીઝમ હીપ્નોટીઝમ વિદ્યા; માર્બન કરી હીપ્નો-ટીઝમનો પ્રયોગ શી રીતે કરવો; ત્રિકાળજ્ઞાન શી રીતે મેળવવું; અન્યને શી રીતે વશ કરવું ભા. ૨ યોગ-વિદ્યા; જેમાં રાજ્યોગ, હર્યોગ; હચ્ચરબળિ; યમ, નીચમ; આસન; પ્રાણચાર: પ્રત્યાહાર; ધારણા ધ્યાન; સમાધિ પ્રાપ્ત કરવી; અષ્ટસિદ્ધિ મેળવવાની કળા; સુદાઓ વિગેરેનું વચ્ચન; અને તેની સિદ્ધિ. ૩ ત્રિકાળ દર્શક દર્પણ અને ત્રિકાળદર્શી આપના અને વાવવાની વિદ્યા-દર્પણ અને વાવવાની રીતી ત્રણત્રિકાળની વાત શી રીતે જાણવી; ત્રિકાળદર્શી વાંટી બનાવવી; હજરત બરવાની વિદ્યા; ભા. ૪ પ્રેતાવાહન વિદ્યા-પ્રેતાને આવાહન કરી તેની સાથે વાતચીત કરવાની વિદ્યા. ભા. ૫ પ્લાન્ડેટ બનાવવું અને ચલાવવું અને તે દ્વારા પુણેલા પ્રેતાના જવાબ મેળવવા. ભા. ૬ વશીકરણ વિદ્યા, ભા. ૭ ઠોકશાસ્ત્ર અને રતીશાસ્ત્ર પ્રહાયર્થ; વીર્યપતન; શરીરરક્ષણ; ઓપુરુષના ભેદ; ઓઝોની પદ્ધતી. ચીવણી; હસ્તીની; શ્વપીની; ગર્ભ રહેવાના ઉપાય; ગર્ભવંતી સ્ત્રી અને સુવારોગની દવા, ભાગ ૮ કામશાસ્ત્ર-સ્ત્રીઓની પુખ્તરુતીનું ખર્ચ રહસ્ય.

ભાગ ૯ મંત્રવિદ્યા-વશીકરણનો; લક્ષ્મપ્રાપ્તિનો; આજરહાનો; આદાશીશીનો; મહાલક્ષ્મીની સિદ્ધિનો ધંધો મળે તે ધન વધે તેનો વેપારમાં ધન મળે તે ધન વધે તેનો; વિદ્યા વધવાનો; ઉદ્યોગ ધંધો મળે તેનો; વનવાસી દેવીનો; લક્ષ્મનાં દર્શનનાં; ધનનું રહેણું કાર્ય સિદ્ધ થવાનો, ચોરા પકડવાનો; મંગળનો, પતિ વશ કરવાનો; મુંઠ વાળવાનો; ગણપતી પ્રસન્ન થાય તેનો; પુલ મંતરનું, રાંઝણવાણનો, બટુકનો વિ. મંત્રો.

ભાગ ૧૦ યંત્રવિદ્યા-જેમાં કથનિવારક; વશીકરણ; આકર્ષણ, સુખપ્રસવનો એકનીસો યંત્ર-વીસો યંત્ર; કાર્યસિદ્ધિનો યંત્ર; આજરક્ષક; પીશાય જવાનો; અખુટ બંડારનો; વેપારમાં લાભ થવાનો, સર્વકાર્ય સિદ્ધ થવાનો, આદાશીશીનો, માન મેળવવાનો, અન્ન વધુ પાકવાનો; તાવનો મનની ઇચ્છા સિદ્ધ થવાને, નજર ન લાગવાનો, ગાય દુષ્ટ દેવા દે તેનો, પતી વશ કરવાનો, વાચાસિદ્ધિનો; સાપ આવે નહિં તેનો પુરુષ વશ કરવાનો; થોડાને વશ કરવાનો, રાદ્ધિસિદ્ધિનો; યુદ્ધવર્ધક, વંધ્યાને પુત્ર થવાનો; વિધન જવાનો યંત્રો.

ભાગ ૧૧ તંત્રવિદ્યા-મંદ્રજાળ-જેમાં વશીકરણ તંત્ર; ગર્ભપાત ન થાય તેનો. લાલ પુલ ધોણું થાય, વીંછી બનાવવા, લીચુ ઉછાળવું: ભાગ ૧૨ જ્ઞાનુષ પ્રયોગો નદીમાં દુષ્ણી દ્વારા ચલાવવો, દીવાસળી વગર દીવા કરવા. કંકરનો રૂપિયો કરવો; ઝાડે મુંઠ મારવી; ગળામાં છરી ધોંચવી; દેવતા ઉપર ચાલવું; સાપ કાઢવો; પાવડીઓ ઉપર ચાલવું; લીંચુ કાપી લોહી કાઢવું; પૈસો ચોટાડવો, શાલીઆમ મળવા વિગેરે તંત્રો.

ભાગ ૧૩ ચમત્કારિક ગુપ્ત વિદ્યા-જ્ઞાનુષ સાથુ બનાવવો; પાણીનું દુષ્ક કરવું; પાણી જમાવો દેવું. લોહું ગાળવું; રથ સાથે સૂચી જેવો, પુલોના રંગ બદલવા. દેવતા પકડવો; ભુત દેખાય; મરેલા માણસોને જીવો, દેવદેવીનાં દર્શન કરવાં, ભૂત કહાડવું; પારાનો ગ્લાસ અને ગોળી બનાવવો, ધરમાંથી સાપ ઉઠરે નવ્ય તેવા પ્રયોગો.

ભાગ ૧૪ દવા વગરનો ઠાકટર-હિપ્નોટીઝમથી દવા વગર ધણું દરદો મટાડવા-સંધીવા; લકવો; આંખ, માથું ને પેટનો દુ:ખાવો, બંધકાશ, અજીરણ, નજીઓ; આંતરડાનાં દરદો; હીસ્ટીરીઆ વીગેરે મટાડવાં.

ભાગ ૧૫ હજારો વ્યાધિની માત્ર એકજ દવા-માત્ર પાણીથી અનેક દરદો મટાડવાની વિદ્યા.

ભાગ ૧૬ કોમીપથી-રંગ રસાયનવિદ્યા-માત્ર રંગીન શીશીના પાણીથી અનેક રોગ મટાડવા.

ભાગ ૧૭-માનસવિદ્યા-થોટરીડીંગ, પારકાના મનની વાત જાણવાની કળા, સંકલ્પસીદ્ધિ મેળવવી,

ભાગ ૧૮-સુવચ્છસિદ્ધિ કિંવા કીમીયાજરોતી ગુપ્ત વિદ્યા-સોનું અને ચાંદી બનાવવાના અનેક પ્રયોગ. પરી માંધવો. પારાની ભસ્મ બનાવવી, મંધકનું તેલ બનાવવું, પારાની ગોળાઓ વિગેરે શાસ્ત્રીય પ્રયોગો.

ભાગ ૧૯-નિષ્ફળ ન બનાવા ધન મેળવો આપનાર અનેક પ્રયોગોનો સંગ્રહ.

આ પુસ્તકમાં ઉપર પ્રમાણે વિષયો છે તે જોવાથી અને વાંચવાથીજ તેની કૌમત સમજાશે, આમાંથી કાંઈ એકદલ પ્રયોગ સિદ્ધ કરવાથી હજારો રૂપિયાનો ફાયદો થઈ શકે તેમ છે, પાન ૫૦૦ પાકું પુસ્તું કી ૩. ૫)

વ્યવસ્થાપક ભાગ્યોદય, અમદાવાદ, અને નં. ૩૮૯, કાલખાદેવી-મુખાધ નં.-૨

શ્રી ચમત્કૃતિ જ્ઞાનદર્શક વિદ્યા

કિંવા આકર્ષક ગુપ્ત સિદ્ધિદાયક જ્ઞાનનો ભંડાર [સચિત્ર]

આ પુસ્તકની અંદર ભાગ ૨૧ માં અને પ્રકરણ ૧૦૦ માં નીચે પ્રમાણે વિષયો મોત્રા સાથે છે.

ભાગ ૧ ભા-યોગવિદ્યા-જેમાં સ્હેલાઇથી યોગ સાધી શકાય તેવી સંપૂર્ણ યુક્તિઓ, કળાઓનો સમાવેશ છે. યોગના પારણાને સમાધી સિદ્ધ કરી અષ્ટ સિદ્ધિઓ મેળવવાની ગુપ્ત વિદ્યા ખતાવેલી છે.

ભાગ ૨ ભા-બ્રહ્મયોગ વિદ્યા-જેમાં આત્મભજન પ્રાપ્ત કરી બ્રહ્મવિદ્યાના બળે અંતરની ગુપ્ત સિદ્ધિઓને પ્રકટ કરવાની સ્હેલી કળાનો સમાવેશ છે. અલ્પમાદિ બધાંસાદ્ધિઓની પ્રાપ્તિની કળા.

ભાગ ૩ ભા-આકર્ષક ગુપ્તસિદ્ધિયોગ-માનસિક ટેલીફોન વિદ્યા વગેરે અનેક ઉપયોગી વિદ્યાને જ્ઞાનનાર વિષયો, વિચારની આકર્ષણ શક્તિ એકત્ર કરવાની કળા, આંખની આકર્ષણશક્તિ,

ભાગ ૪ ભા-આત્મશક્તિ-વીલપાવર સિદ્ધ કરવાની કળા.

ભાગ ૫ ભા-માનસ સંદેશવિદ્યા કિંવા સંકલ્પ સિદ્ધિ-આ ભાગમાં મનુષ્યે પોતાના સંકલ્પોને સિદ્ધ કરવાની ઇચ્છા અન્યને જણાવવી, માનાસક સંદેશ મોકલવા, ધીમ્મના મનની વાત જણાવવી,

ભાગ ૬ ભા-આત્માની દિવ્યદૃષ્ટિ-આત્માની દિવ્યદૃષ્ટિ પ્રાપ્ત કરી ભૂત ભવિષ્ય અને વર્તમાન કાલી વાત જણાવવી કળા, ભવિષ્યની વાત જણાવવી કળા.

ભાગ ૭ ભા-પ્રેતાત્મતરવાનરૂપણ-મૃત્યુ પછીની મનુષ્યની ગાંઠ જણાવવી વિદ્યા, મૃત્યુ પછી થયેલા પ્રેતાની આત્મકથાઓ સાથે, વાંચી આજ્ઞા બની જશે.

ભાગ ૮ ભા-પુનર્જન્મ-સાદ્ધિયોગ-વર્તમાન જન્મમાં જ પૂર્વજન્મનું જ્ઞાન થવું, સભ્ય વિદ્યા-આ જન્મમાં પૂર્વજન્મનું જેમને જ્ઞાન હતું તેમના જીવનચરિત્રો સાથે.

ભાગ ૯ ભા-પ્રારબ્ધ પુરુષાર્થયોગ-મનુષ્યની ઉન્નતિના સાચા માર્ગો: સત્ય શું? પુરુષાર્થની પ્રજ્ઞાતા, સર્વસિદ્ધિનું મૂળ પ્રજ્ઞા, કમના શ્રેષ્ઠતા.

ભા ૧૦ ભા-દામપત્ય વિજ્ઞાનશાસ્ત્ર-ગૃહસ્થાશ્રમની શ્રેષ્ઠતા, પતિવ્રતાનું મહાત્મ્ય, પતિ વશ કરવાનો મહામત્ર, દ્રાપદીએ સત્યકામતા આપેલા મત્ર. પતિનું ચિત્ત આકર્ષણ કરવાનો માર્ગ,

ભા ૧૧ ભા-ઉપરત્ત શુભરહસ્ય વિજ્ઞાન-ઓપુરુષોએ જણાવવાના અને પાળવાના નિયમો; પ્રેમાજ હંપતીનું મહાત્મ્ય, પ્રેમનું મહાત્મ્ય, આંકુષ સમાગમ-એ પ્રજ્ઞાપતિનું કારણ.

ભાગ ૧૨ ભા-સુખજનન શાસ્ત્ર-ઉત્તમસંતતિ થવાના નિયમો ઉત્તમ પ્રજ્ઞ શાય તેવા ઉપાયો, ઓ પુરુષોએ જણાવવાના અને પાળવાના ઉપાયો.

ભાગ ૧૩ ભા-આરોગ્ય શાસ્ત્ર-જેમાં વગર દવાએ અન્યના રોગો મટાડવાના સ્હેલા ઉપચારો, જેમાં માટીના પ્રયોગો, ફુલના પ્રયોગો, ઉપવાસથી, માત્ર શકેપથી અનેક રોગો મટાડવાની વિદ્યાનો

જ્ઞાન આયુષ્ય અને છુદ્ધિવર્ધક ભાગ ૧૦૦ થી ૫૦૦ વખતુ આયુષ્ય વધારનારા; બુદ્ધરપતિ જેવી છુદ્ધિ વધારનારા પ્રયોગો, ખાત્રાવાળા બળ મેળવી આપનારા પ્રયોગો.

ભાગ ૧૫ ભા-ચમત્કારિક પ્રયોગો-જે અન્યને હરત પમાડે તેવા, અન્યના આગળ પોતે સિદ્ધિવાળા જણાય તેવા ચમત્કારિક પ્રયોગોનો સંગ્રહ.

ભાગ ૧૬ ભા-નિષ વિદ્યા-સર્પ, વીંછી, હંદર અને હડકાયા કુતરાના ઝેરને દુર કરવાના પ્રયોગો, ખાસ અતુભવ સિદ્ધ મૃત્યુના મુખમાં પડેલાને જીવાકનાર પ્રયોગો.

ભાગ ૧૭ ભા-સુતાવિદ્યા-ભૂત, પ્રેત, પિશાચનું વળગણ અને તેને દુર કરવાના પ્રયોગો, ખાસ ખાત્રોના ભૂત જાવ તેવા હુપા, દવાઓ, નસ્યો વગેરે ચોક્કસ પ્રયોગો.

ભાગ ૧૮ ભા-મત્ર વિદ્યા-કેટલાક અપ્રાસિદ્ધ, સ્હેલાઇથી સિદ્ધ આપનારા મત્રોની સાધના તેની વિધી સાથે જેવા કે લક્ષ્મ પ્રાપ્તિનો, કાર્ય સિદ્ધિનો, વશીકરણનો, મનની ઇચ્છા પુરી થાય તેવા મત્રોનો સંગ્રહ.

ભાગ ૧૯ ભા યત્ર વિદ્યા-જેમાં તરત દુખ આપે તેવા વ્યવહારિક અને પારમાર્થિક મુખાને મેળવી આપનાર મત્રો, (જત્રો), માદળીયાં, ગુપ્ત વિદ્યાના ભંડાર રૂપ, સીદ્ધિ આપનાર, કાય

ભાગ ૨૦ ભા તંત્રાવિદ્યા-જેમાં અનેક પ્રકારના અન્યને ચમત્કારો જતાવા શકાય તેવા તંત્ર વિદ્યાના પ્રયોગોનો સંગ્રહ છે.

ભાગ ૨૧ ભા-શાપ્તિ શાસ્ત્ર-જેમાં ધનવાન બની શકાય તેવા, સ્હેજમાં ધન મેળવી લેવાય તેવા અનેક પ્રયોગોનો સંગ્રહ છે. આવા ઉપયોગી પુસ્તકના તમે આજેજ માહક થજ્જે. તેની કૌમત રૂ. ૫) છે.

શ્રી ભાગ્યોદય ઓપીસ, ખાડીયા, અમદાવાદ.

સ્રીઓ માટે શક્તિની પુષ્ટિદાયક દવા

સ્રીઓનું } અમૃત } સુંદરીસાથી [૨૭૨૪]

(લાખે સ્રીઓ રોજ વાપરે છે અને લાખે સર્ટીફિકેટો મળ્યાં છે.)

મગાવો—તે સ્રીઓના તમામ રોગને માટે અક્સીર છે. સ્રીઓના કોષપણ દરહ જેવાં, લોહીવા, પ્રદર, રક્ત અને સ્વેત પ્રદર જેવાં ચીકણી, ઘાટી, પીળી, મગગુગળી, અગર લાલ રંગની લોહી જેવી રસી કે ધાતુ વજા કરે છે, પેસાળે અગન બળે, હાથ પગના તળીઆમાં, કોઠામાં, માથામાં અને કોષ વખતે આખા શરીરમાં મણકા મારે, દાટ, યુસ અને કમનર થાય, ઝીણા તાવ હમેશાં આવે, શગર સુકાષ ધોળી પુણી જેવું થાય, આખોતુ તેજ કમી થાય, દિવસે દિવસે શરીર સુકાષ બેહાલ થાય અશક્તિ આવે અને કામ થઇ શકે નહિ, આખા દિવસ કોઠા અને માથું દાટ્યાં કરે, તાવ, ઉધરસ, રતવા, દમ, ખાંસી, સોજા ઉછટી, અરચી, માનિક વટકાવ, દસ્તાન સંબંધી દરેક રોગ અગન ન રહેવે, ગર્ભાશયની પીડા, સુવાવડમાં પાવાથી કસવાવડ, સુવારોગ થતો નથી. શરીર બળવાન બનાવે છે, લોહી સુધારે છે. ગોળો ચડેલો, હિરડીરીયા વગેરે તમામ રોગ અને આવા અનેક દરદોના સમુદને આ સુંદર સાથી એકદમ મટાડી શકે છે. ડાક્ટરો અને વૈદ્યો પોતાનાં દરદીઓમાં જ્યાંય વાપરે છે.

૧ નાની બાળકોને પાવાથી શરીર પુષ્ટ રાખી યુવાન વયરથામાં પ્રદર વગેરે વ્યાધિ થવા દેતું નથી. ૨ યુવાન સ્રીઓને પ્રદરના વ્યાધિમાથી બચાવી ગર્ભાશયને સુગરી ગર્ભ ધારણ કરી શકે તેવું બનાવે છે. ૩ ગર્ભ રહ્યો હોય તે વખતે પીવાથી અધુરે માસે ગર્ભ પડતો નથી, ગર્ભનું પોષણ કરી પૂર્ણ માસે વિના કષ્ટે પ્રસવ થાય છે. ૪ સુવાવડ પછી પીવાથી સુવારોગ થતો નથી, બાળકને પુષ્ટ કરે તેકુ તંદુરસ્ત બાવણ બનાવે છે અને બાળકનુ ને તેની માતૃ શરીર પુષ્ટ કરે છે. ૫ સ્ત્રી રોગ તમામ મટાડે છે. હમેશાં પીવાથી સ્ત્રી તંદુરસ્ત રહી શકે છે. પ્રદર વગેરે વ્યાધિ થતા નથી. ૬ વૃદ્ધ વસ્થામાં પીવાથી શરીર પુષ્ટ અને તંદુરસ્ત યુવાન જેવું બને છે અને વૃદ્ધાવસ્થાને અટકાવે છે. આ માટે હજારો અભિપ્રાય મળ્યા છે અને હજારો સ્રીઓ, ડાક્ટરો અને વૈદ્યો પણ તેના ચાતુ ઉપયોગ કરે છે, તેજ તેની ઉત્તમતા છે.

ધરમપુરથી ડૉ. નાનાલાલ દેવીદાસ લખે છે કે: આપની દવા સુંદરીસાથી મારા દરદીઓને આપું છું. પ્રદર ઉપર ખજોળ સારો ફાયદો થાય છે. માટે એક ડઝન સુંદરીસાથીની બાટલોથી તુરત વી. પી. થી મેકલી આપશો.

લીલાઈથી ડૉ. મોહનલાલ જે. પાઠક એલ. એમ. ખી. લખે છે કે: સુંદરીસાથીની મેં મારા દરદીઓમાં અજબાયજ કરી જોઈ તો તે સ્રીઓનાં દરદો—પ્રદર, લોહીવા, ગર્ભાશયનો સોજા, સુવારોગ, વિવેરમાં ધણી ઉપચેગી અને અસરકરક માલમ પડી છે. તે પછી તો હું સ્રીઓનાં દરદોમાં સુંદરીસાથી વાપરું છું જેથી મારા ધણા કેસોમાં તે દવા ફતેહમંદનાં ડી છે. મારા દરદીઓને તે હું હવે સુંદરીસાથીજ વાપરવાનાં બલામણ કરું છું.

વાંસાવડથી ડૉ. રત્નાશંકર બંધર જોશી લખે છે કે: આપના સુંદરીસાથીની દવા મેં આખાના દરદોમાં વાપરી જોઈ ખાતો કરી છે, અને તે સારું ફાલ આપે છે. હું હવે સ્રી દરદીઓમાં સુંદરીસાથી છુટથી વાંડું છું જેથી મને જલ્દ મળે છે. અને હું ધણુજ દરદીઓને સુંદરીસાથી વાપરવાનાં બલામણ કરું છું.

બુનાગઢથી બેન કાશી હેમરજ લખે છે કે: સુંદરીસાથીથી અમને ધજોળ ફાયદો થયો છે. મારા વડલ બેન જાવને શ્વાસ, દમ ખાંસી વગેરે હતા, શરીર લેવાઇ ગયું હતું બપોરે દમ ચડતો ત્યારે તો એમજ ધારતી લગતી કે હાલમજ અનજરો, પણ આપની દવા સુંદરીસાથી તેણીને અત્યંતજાન રૂપ થઇ પડી છે તેથી અમે આપના ધજોળ આમાર માનીએ છાએ.

કી. રૂ. ૧-૦-૦ ત્રણ બાટલી પીસી પડે છે. ત્રણા કી. રૂ. ૨-૧૦-૦

દેવે કેમીકલ એન્ડ ફાર્માસ્યુટિકલ વર્કસ, કાલબાદશરોડ-મુંબાઈ અને અમદાવાદ

ध्यान दीजिये !

अवश्य ध्यान दीजिये !

अनाथालय-बडनगर ।

हे धर्ममाण जैन समाज !

हम अशहाय असमर्थ अनाथ बच्चोंको आर्यसमाज, मुसलमान, आदि अजनोंके चंगुलसे बडनगर अनाथालयने बचाया है। हमें श्रीमान् और भीमानोंकी कृपासे यहां धर्मशास्त्र, संस्कृत, कोष, काव्य, इंग्लिश, हिन्दी, गणित और व्याकरणके साथ २ डार्डिंग, गायन, कपडा, दरियां बुनना, वस्त्र सीना, आदि औद्योगिक शिक्षा भी दी जाती है। हम दो २ वर्षके अनाथ बच्चे मुसलमानोंके चंगुलसे बचकर आपकी छत्रछायामें आये हैं। इस समय हम ५१ अनाथ बच्चे हिलमिल आपस नम्र प्रार्थना करते हैं कि हमारी रक्षा कीजिये। माहवारी खर्च (५००) व (१०) में एकदिन का आहारदान कर पुण्यपथ लीजिये। एक छात्रका मासिक भोजन व्यय सिर्फ ५) के करीब है। दुःखित हृदय—

श्री. दि. जैन अनाथालय, बडनगर के अनाथ।

→ॐ औषधालय-बडनगर। ॐ←

इस परोपकारी संस्थाको स्थापित हुये १२ वर्ष हुए हैं। वर्तमानमें, भारतमें २७,०० शाखाएं स्थापित हैं, जिनके द्वारा हैजा, प्रेच, इन्फ्लूएन्जा, सजियातादि कठिन व साधारण रोगोंके प्रति शतक १० के हिसाबमें लाखों रोगियोंके प्राण, धन, धर्मकी रक्षा हो रही है। इस संस्थाकी राजा, महाराजा, वैद्य, डाक्टर, श्रीमान्, भीमान्, विद्वानों सभीने अपनाया है। यहांके कार्यमें प्रसन्न होकर श्रीमंत महाराजा सा. ग्वालियरमें सनद व एक मुहत्त (१०००) नकद तथा ३०) मासिक सहायता सर्वेके लिये मुक़रर कर दी है। ऐसी उपयोगी संस्थाकी मदद करना प्रत्येक बहुका परम कर्तव्य है।

→ॐ रोगियोंके लिये सुभीता। ॐ←

यहांकी जल वायु क्षय तकके रोगियोंको अत्यन्त लाभदायक है अतएव शीट मोहनलालजी तथा पंचानकी प्रदानित जमीनपर रोगियोंके ठहरनेके लिये कोठरियां व कमरे उदार श्रीमानोंकी तरफसे बनाये जा रहे हैं। कोठरीका २००) और कमरेका खर्च ५००) रुपया है। जो सज्जन अपना नाम निरस्मरणीय करना चाहें मंजूरी देवे। उनकी इच्छानुसार कोठरी वा कमरेपर उनके नामका बीतक व फोटो दिया जावेगा।

फल उस जन्मके शुभ दानका, नरदेह और जिनधर्म है।

आरोग्य तनधनधान्य सुख, ये भी इसीका मर्म है॥३॥

निवेदक,

भगवानदास महापंत्री,

श्री. दि. जैन मालवा प्रां० सभा, बडनगर. (मालवा)

दीन-हृदयके फफोले ।

कौन कलेजा थाम सुनेगा, मेरी इन आहोंको ?

कौन बुझावेगा आकरके, दुखियाकी दाहोंको ?

हूँ मनुष्य फिरभी पशुताका, लाञ्छन मुझपर भारी ।

मुझको खानेको बैठी है, निर्दय दुनियाँ सारी ॥

मेरे लिये दोष भारी है, ऊपर आँख उठाना ।

किसी दयालूके समीप जा, अपनी कथा सुनाना ॥

सबकी आँखोंमें खटका है, मेरा भ्रपर जीना ।

इसीलिये तो खुला हुआ है, हरदम मेरा सीना ॥

फटकारें दुनकारें मिलतीं, हैं बस जहाँ तहाँ पर ।

इन दुखिया आँखोंके आँसू, कहाँ बहाऊँ जाकर ॥

क्या मैं करूँ कहाँपर जाऊँ, उदर पूर्ति करनेको ?

क्या मैं गला घोट मर जाऊँ, विष खाऊँ मरनेको ?

किन्तु न इतना धैर्य हृदयमें, जो इतना कर डालें ।

विकट बुभुक्षाकी बाधाको, हो न व्यग्र सह डालें ॥

अब तो मुझे छोड़ना होगा, हा ! स्वधर्मसे नाता ।

तब शायद मिल पायेगी, इन दुःखोंसे कुछ साता ॥

हादिक भाव मसलने दोगे, इस दुनियाँमें आकर ।

अब मनुष्यताको खोना है, हा ! मनुष्य कहला कर ॥

इस प्रकार दुःखोंमें पीड़ित, आज हमारे भाई ।

छोड़ धर्मको बनते हैं नित, मुसलमान-ईसाई ॥

श्रीमानों ! चिन्ता इनकी कर, दयाभाव उर लाओ ।

हो मनुष्य तो मनुष्यताके, कुछ कर्त्तव्य दिखाओ ॥

व्यर्थ न व्यय करके निज धनका, इनको भी अपनाओ ।

विषय वामनाओंमें ही मत, जलवन इसे बहाओ ॥

निज चरित्रका कुछ सुधारकर, गुणोंको न खिलाओ ।

अगर नहीं बनता यह तुमसे, भला न मुख दिखलाओ ॥

विद्यार्थी-श्रीचन्द्र जैन, जयपुर ।



सम्पादकः—मूलचन्द किसनदास कापड़िया-सुरत ।

विषयानुक्रमणिका.

न०	विषय.	पृष्ठ.
१-	कुडची कांड (ब्र० प्रेमसागरजी)	१२९
२-	संपादकीय वक्तव्य-वयानामें मफलता, शिवहारा व कुडचीकांड	१३०
३-	जैन समाचागवलि	१३३
४-	हमारी अवनति कैसे हुई (पं० परमानंदजी)	१३७
५-	राजयक्ष्मा व वर्तमान युवक	१४०
६-	ने मनाथ व राजुल (पं० गुणमदनी)	१४३
७-	पगदा (पं० सिद्धसेनजी गौयलीय)	१४८
८-	मामाजिक समस्या (मोहनलाल मथुगदाव)	१४९
९-	गुजरातनी दशाहुमड नातिमां कुरिवाजो	१५०
१०-	उच्च जीवनना सूत्रो	१५१
११-	जमवानी विधि	१५१
१२-	हिंदीओने दिव्य संदेशो (चन्दुशाल)	१५२
१३-	शरीरोपयोगी नियमो (सा. पूनमचद छ.णी) मुकष्ट	

वर्ष २३वाँ
अंक ३.

वीर सं० २४५६
पौष.

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।- विशेषांक मूल्य ३।।

चातुर्वर्णमय परमेश्वर ।

तू परम ज्ञाना ब्रह्मका है, ब्रह्म तू परमेश है ।
 तूने दिया सब प्राणियोंको, धर्मका उपदेश है ॥
 हे ज्ञानधन, ब्राह्मण तपोधन, इसलिये कहते तुझे ।
 तेरे मुखाबुज-वचन-रसका, रसिक बनने दे मुझे ॥
 सम्राट तीनों लोकका तू विश्वका ज्ञाता महा ।
 त्रैलोक्यजेता मोहका तू, ही विजेता है अहा ॥
 तेजोमयी तू परम क्षत्रिय, युक्त है गुण नीतिसे ।
 निःसीम तेरी बल-भुजा, रक्षा करे भव-भीतिसे ॥
 तू साम्य मनकी ताकडी पर, तोलता सब चीजको ।
 तू भव्य-मानस-भूमिमें, बोता धरमके बीजको ॥
 पालक पशु सब प्राणियोंका, वैश्य वर कहते तुझे ।
 संपन्न कर, हे धर्म उस, ऐश्वर्य आत्मिकसे मुझे ॥
 हे दीन-भ्राता, दीन जनका, हृदय तेरा धाम है ।
 तूने बजायी विश्वकी, सेवा विमल निष्काम है ॥
 तू पाप धोता, शूद्रसम तू, क्यों नहीं है बोल दे ।
 तेरे चरण-रजकी किरण, मम ज्ञान लोचन खोल दे ॥
 चैतन्य, अज्ञ है, देहमे तू, मुक्त है, तू नित्य है ।
 संसारके सब भेद भावों के परे तू सब है ॥
 ब्राह्मण न क्षत्रिय, वैश्य नहीं, नहीं शूद्र भी तू है सही ।
 मंजुल निरंजन ज्ञानमय, निज रूप पाऊँ मैं यही ॥

ताराचन्द जैन पांड्या ।

दिगम्बर जैन

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वं: सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम, देगम्बरं जैन-समाज-मात्रम ॥

वर्ष २३वाँ | वीर सम्बत् २४५६, कार्तिक-मगसिर, विक्रम सम्बत् १९८९. अङ्क ३.

कुडची-काण्ड ।

कु-ऊ कहं, किन्तु कुछ कहा नहीं जाता है । क-र नहीं सके कुछ, काबरतासे हारे ॥
ह-स रहा रघु-विषयर, न रहा जाता है ॥ ह-पसे बबनोने, वही हुकम फरमाया ।
बी-रकार मचाते समय, बहुतसा खोबा । ना-मुमकिन है, सुन दिऊ सबका थरिया ॥
ये-घोंडे जैसा, जक बर्षाहरके रोया ॥ है-वही हुकम तुम मुसकमान बन जाओ ।
जै-नोसे निवेदन किया, एकता करलो । या-ग्राम छोड़ दो, नहीं सताये जाओ ॥
नि-ज कहइ जसिको, शांति शीघ्र ही करलो ॥ य-ह हुकम आपको, हमने ठीक सुनाया ।
यों-बहुत रोजसे, पुकार करता जाबा । व-द फरोसियोने उद्यम खूब मचाबा ॥
प-र नहीं किसीने, उसपर ध्यान जमाया ॥ न-दि गकत जरा भी, क्यान जात होता है ।
र-फतार बिदेगी नहीं, प्रहपर जाई । व-दमाशी सुन यवनोही, दुख होता है ॥
यो-घोने' तब तो, जनीति कर दिखवाई ॥ नि-न हाकनपर, अब हमे मोचना चहिए ।
र-ज प्रतिमाओंकी नभसे, गूब उदाई । ये-फूट सताती, उसे मोचना चहिए ॥
अ-न्याय हुआ बह, कुडची भीतर भाई ॥ या-वजनीवनके लिए, एकता चहिए ।
न्या-रे पनका फक पाया, हमने कैसा । ग्रा-हक जनैक्यताके, नदि रहना चहिए ॥
य-ह हाक हुआ, "केशरिबाजीका" जैसा ॥ म-त कायरताको, पास बुकाना चहिए ।
औ-रोने हमारे ऊपर, जोर जमाया । त-त्काल वीरता, हृदय जगाना चहिए ॥
र-ह रह पळिताना रहा, न कुछ भी पाया ॥ ज-स्वी कुडचीका न्याय कराना चहिए ।
उ-र हुआ बहुत ही दुखी, न कुछ बन जावे । दी-नोंकी तरह नहीं, बक गमाना चहिए ॥
न-दि रही वीरता, काबरता ही भावे ॥ जि-स बक्त सुनो नदि होता न्याय हमारा ।
का-बरताने ही, स्वयं हमारे बारे । ये-"प्रेम" करो सत्याग्रह, फर्न तुष्टारा ॥

सम्पादकीय-वक्तव्य

आज भारतवर्षके कौने १११ संगठनकी आवाज आ रही है। बड़े २ देश-व्याना काण्डमें नेता भी यही कह रहे हैं हमारी सफलता। कि स्वयंका पारम्परिक भेदभाव छोड़कर आपसमें बंधुत्वका जाता जोड़ो, भारतीय होनेके कारण हम सब एक हैं। हममें कोई संदेह नहीं कि यह संगठनका आदेश इतना उपयोगी है कि संसारकी कोई भी महान् शक्ति या विश्वका कोई भी दमनचक्र हमारे सामने टकरा नहीं लगा सक्ता। मगर देशके दुर्भाग्य या हमारी कम-जसीबीसे आज भारतीय जनता उन छोटी २ बातोंपर झगड़े खड़े कर देती है जो कि अज्ञा-स्पद हैं।

कुछ समयसे हिन्दू मुस्लिम बाजेका प्रश्न बड़ा जोर पकड़ रहा है। इतना ही नहीं, यह प्रश्न तो आज भारतव्यापी हो गया है और इसमें सैकड़ोंके भिन्न फोड़े गये तथा देशकी बरबादी कर दी गई है। जो लोग कुछ समय पूर्व भाई भाईकी भाँति लेश लेशके साथे वे एक दुसरेके शत्रु बन गये। इतना तो हुआ सो हुआ, मगर कुछ अविश्वकी वैष्णवोंने जैनियोंके साथ भी अवरदस्त झगड़ा खड़ा कर दिया। भारतपुर स्टेटमें वयाना ग्राममें दिगम्बर जैनियोंने श्री जिनेन्द्रदेवकी मवारी (रथ) निहानेका निश्चय किया था। निश्चय ही नहीं किन्तु हमारों रूपका स्वर्च करके रथकी पूर्ण तैयारी हो चुकी

थी तथा सर्वत्र लोगोंके पास आमंत्रण पत्रिकायें भी पहुंच चुकी थी। किन्तु कुछ सनातनधर्मी कहलाने वाले वैष्णव भाइयोंने उसमें रोड़ा अटकाया और वे हममें इतने प्रयत्नशील होगये कि 'हमारे जीनेजी जैनियोंका रथ आमवाजार या सार्वजनिक मार्गसे न निकलने पावे !' इसके लिये वे लोग सरकारी मोटरके आगे सो गये और सरकारसे इस बातकी प्रार्थना की कि जैनियोंका रथ नहीं निकलने पावे अन्यथा खून खराबियां होंगी, दुर्भिक्ष फैल जावेगा और सर्वत्र अशांति हो जावेगी !

फरक यह हुआ कि रथ रोक दिया गया और शांतिप्रिय जैनियोंकी धार्मिक आकांक्षा कुचक ढाली गई ! लेकिन "रंग काती है दिन पत्थर पे घिस जानेके बाद" तदनुसार जैनियोंकी कुचली गई मध्य भावना मरी नहीं प्रत्युत नया रंग लाई, नूनन उत्साह भर गया, नवीन स्फूर्ति जाग्रित होगई और भारतवर्षके मुख्य २ स्थानों पर अवरदस्त विरोध समायें हुई तथा भरतपुर सरकारसे रथ निकलवाये जानेकी प्रार्थना की गई। इतना ही नहीं किन्तु जैनमित्र, वीर, दिगम्बर जैन आदि जैन पत्रोंमें इसकी बराबर चर्चा होती रही तथा प्रयत्न चालू ही रहा।

मरणकी विजय होना ही चाहिये, बस हमारा प्रयत्न सफल होगया और वह ऐसा सफल हुआ कि तत्काल अमरुमें जाया गया। हमें निश्चित रूपसे मालूम हुआ है कि वहां (भरतपुर) के विद्वान एडमीनिस्ट्रेटर मि० डी० के० मेकेनज़ी (जो सब धर्मोंपर समान प्रेम रखते हैं) ने गत ता० १८ जनवरीकी शामको वयानाके

विषयमें फैसला देते हुये जैनियोंको अपनी रथयात्रा से रोकटोक निकालनेकी परवानगी देदी और डिप्टिक्ट मजिस्ट्रेट मि० रत्नाकर शास्त्री व पुलिस सुपिन्टेण्डेण्ट खानबहादुर मुन्शी नेकीमहमदखानको सूचना दी गई, कि वे जैन रथयात्रा, बयानाके आम बाजारमें नियत स्थानतक निकलवानेकी उचित व्यवस्था करें ।

इस हुक्मके अनुसार उचित व्यवस्था की गई, बयाना (भरतपुर) और आसपासके जैनियोंको खबर दी गई तथा ता० १९ मजबूरीको जैन रथयात्रा बड़ी शानके साथ निकाली गई । उसमें करीब १००० जैन सम्मिलित थे । किसी प्रकारका कोई उवद्वेग नहीं होने पाया जिसकी कि आशंका थी ।

हाँ, इसके पूर्व हम यह और शिष्यता चाहते थे कि अखिर भारतवर्षीय हिन्दूमहासभाने हम आपसी झगड़े या कुछ वैष्णवोंके अनुचित व्यवहारको रोकनेके लिये पूर्ण प्रयत्न किया था । उसके कार्यकर्ताओंको पूर्ण आकांक्षा थी कि बयानाके हिन्दूभाई शान्त होजावें और जैनियोंका रथ निकाला जावे । प्रत्यक्ष यह है कि हिन्दूमहासभाने इसमें बहुत कुछ प्रयत्न किया है इसके लिये हम उसके आभारी हैं । इस कार्यमें मि० मेकनशी सा० एडमीनिस्ट्रेटर, रायबहादुर प० त्रिनीवनकाळजी ज्यूडीशियल सेक्रेटरी, मि० रत्नाकर शास्त्री डिप्टिक्ट मजिस्ट्रेट, खानबहादुर मुन्शी, नेकीमहमदखान पुलिस सुपि० तथा और भी जिनसभाओं एवं महानुभावोंने सहायता दी है उनका हम सार्व आभार मानते हैं ।

अब इस विषयमें हमारा अंतिम कहना यह है कि कुछ नानामस लोग व्यर्थके टटे खड़े कर देते हैं जिसके निवारणार्थ व्यर्थ ही बड़ी शक्तियोंका दुरुपयोग करना पड़ता है । इसलिये सनातनी-हिन्दूभाई जैनियों या अन्य धर्मी भाइयोंके साथ इस ऐश्यके जमानेमें ऐसे झगड़े न उठाकर शान्तिपूर्वक वर्तमानमें सामने रखे हुये राष्ट्रीय उद्देश्यमें अपनी शक्तियों लगावें ताकि भारतके स्वतंत्रता का प्रश्न इस जमानेमें विलम्ब न हो । इन आपसी झगड़ोंमें हम आमतक फंसे रहे हैं, इसका परिणाम यही हुआ कि हम सज्ज बंधनोंमें जकड़ गये हैं । इसलिये इन बंधनोंको तोड़नेके लिये हमें पारस्परिक प्रेमकी आवश्यकता है । किसीके धार्मिक कार्योंमें बाधा डालना नज्बाय है और राष्ट्रीय उद्देश्यका विघात करना है । जो कुछ हुआ भी होगया अब शान्तिपूर्वक रहनेकी आवश्यकता है ।

पाठकोंको यह जानकर प्रसन्नता हुई होगी कि बयानामें आपको शिवहारा और अच्छी सफलता मिली कुड़ची । है । मगर अभी हमारे सामने शिवहारा तथा कुड़चीके दो प्रश्न और उपस्थित हैं । जिसमें शिवहाराका प्रश्न बयाना जैता ही समझिये अर्थात् बयानामें हिन्दुओंके जैनियोंका रथ रोकना था और यहाँ मुसलमानोंने । बयानामें सफलता मिल चुकी है और यहाँपर सफलताकी संभावना है । जो हो, शिवहाराके विषयमें हमें नरत्नक पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये जिनकर रथ न

निकल जाय । हमारा कर्तव्य है कि इसके लिये सकारिसे बराबर निवेदन जारी रखें ।

दूसरा है कुड़ची कांड, यह कांड मामूली नहीं है, मगर एक धार्मिक हृदयपर महान् आघात पहुंचानेवाला एवं कठोर व्यक्तिक भी रोंगटे खड़े कर देनेवाला है । मुपबमानोंद्वारा हमारी ६ जिन मूर्तियां तोड़ी जाने पर भी अभीतक हमने ऐसा प्रयत्न नहीं किया है कि अपराधी पकड़े जा सकें और वे दंडित किये जावें तथा कुड़चीके जेनोंपर होते हुये जत्याचार मिटें । बम्बई दि० जैन नवयुवक मंडलने ही इसमें प्रयत्न किया है और जांच कमिश्न कुड़ची लेजाकर जांच करके वापिस आया है । मगर उसकी रिपोर्ट प्रकाशित करनेके लिये पैसेकी आवश्यकता है, उसके ही कारण मंडल अभी चुपचाप है । जैन समाजसे अपील करनेपर भी ऐसे पूण्य कार्यमें उसे सहायता नहीं मिली यह बड़ी दर्जनाकी बात है । हम जैन समाजसे निवेदन करेंगे कि वह इस कार्यमें सिर्फ आर्थिक सहायता ही करे तो कार्यमें सफलता मिलजावे । थोड़ा बहुत जितना भी हो सके, माणिकचंद पानाचंद ज्वेरी, १५० ज्वेरीवाजार—बम्बई नं० २ इस धरे पर सहायता मेजनेकी कृपा करें ताकि नवयुवक मंडल उत्साहपूर्वक कार्य करे और कुड़चीकांडमें भी सफलता प्राप्त हो सके ।

जैन समाज ही नहीं किन्तु भारतवर्षीय समस्त जातियां या सभी पतली अंगुली । समाजबन्धी हम बातसे मनीषांति परिचिन होगये

हैं कि आगामी पहली अप्रैलसे शारदा एक्ट (बाळविवाह निषेधक कानून) चालू होजायेगा । अर्थात् बाळक बाळिकाओंका १८-१९ वर्षसे पहिले विवाह करना-कराना अपराध ठहराया जावेगा । मगर खेद है कि ऐसे हितैषी कानूनके विरोधी कुछ लोग मौजूद हैं । इसमें आश्चर्य तो करना ही नहीं चाहिये, कारण कि प्रत्येक दासवश व्यक्तिको छोटा-मोटा भी सुधारा खटका ही कसता है । फोड़ाका मवाद निकालनेके लिये जब बाघटार औजार सामने लाता है तब जज्ञानी बाळक रोता चिल्लाता और भागता है, मगर बलात् उसके नष्टर लगाकर जब फोड़ा साफ कर दिया जाता है तब वह खुश होजाता है । ठीक वही हालत हमारे विरोधी समाजकी है ।

सतीप्रथाको बंद हुये अभी सिर्फ १०० बरस ही हुये हैं, लोग उस राक्षसी प्रथाको सर्वथा मूल गये हैं । लोगोंने इसके बंद होनेके कानून बननेपर विरोध खड़ा किया था और अपन धार्मिक अधिकार बतलाकर जनताको खूब उभाया था, सुधारकोंको गालियां दीजाती थीं, सर्वत्र लोग छाती जोकते फिरते थे । मगर हितैषी कानूनकी विजय हुई और उस अमानुषी प्रथाका मुह काळा होगया । जो लोग विरोधी थे वे ही उपका नाम सुनकर खुबे रूपसे कहने लगे कि यह बहुत अच्छा हुआ, नरहत्यायें मिटी, ऐसे सुधारकी आवश्यकता थी, इत्यादि ।

यही हाल शारदा ऐक्टके विषयमें भी समझना चाहिये । इसके चालू होजानेपर विरोधी लोग एवं कहेंगे कि अबोव बाळकोंकी हत्या

रोकनेके लिये इस कानूनकी वास्तवमें आव-
श्यकता थी ।

फिर भी अभी जो लोग विरोध कर रहे हैं
और अप्रैलके बाद चाखू होनेपर भी जो लोग इस
कानूनके विरुद्ध अनोध बाळकोंका विवाह रचें
उनकी रोक होना परमावश्यक है । सरकारने
इस विषयमें पुलिसको केस चढानेका अधिकार
नहीं दिया है, इसलिये संभव है कि जिस
मुहतेदीके साथ बाळविवाह बंद होना चाहिये था
व हो सके । इसके लिये जगह २ नवयुवक
संघकी आवश्यकता है । ग्राममें समाजहिनेषी
नवयुवक मिलाकर संगठन करें और मंडळ स्था-
पित करें । उनका कर्तव्य होना चाहिये कि
जहाँ कहीं भी शारदा एन्डके विरुद्ध विवाहकी
तेषारी हो शीघ्र ही सरकारमें झुलठा करें । तब
सरकार आपकी मदद देगी और उसकी सहाय-
तासे उस अनुचित विवाहको रोकवावे ।

एक व्यक्ति ऐसे कार्य करनेमें पारस्परिक
वैमनस्यके सबसे संभव है कि द्विचक्रिया
सका है, मगर संगठित रूपसे नवयुवक मंडळ
इस कार्यको करे तो सफलता अवश्य मिलेगी फिर
भी वैमनस्य हो, कुराहवा हो, तुम्हारे ऊपर
आपत्तियाँ आवें तो उनकी चिन्ता न करके उन्हें
सहन करें और इस समाज एवं उन्नयनकी
बाळविवाहकी प्रथाको रोककर पुण्यके भागी
बनें । नवयुवक ! प्रारंभमें विरोध होना स्वा-
भाविक है, इसके लिये तुम निर्भय होकर सर-
कारकी मददसे इस कार्यमें सफलता प्राप्त करके
प्रथाके अनोध बाळकोंकी रक्षा करो ।



जैनसमाचारवलि

दिगम्बर जैनके विशेषांकके-विषयमें स्व०
तिलक महाराजका सुप्रसिद्ध मराठीपत्र 'केसरी'
(पुना) ने ता० २१-१-२०में अंकमें लिखा है
कि-दिगम्बर जैन-(स० गुरुचन्द्र किसनदास
कापडिया, सूत, वा० व० १। रु० विशेष
अंकाची कि० ॥॥) दिगम्बर जैन या हिंदी
मासिकाचा तेविषयचा वषाचा हा प्रथमांक
पनित्र निवाळा आहे या विशेषांकत जैनधर्म
व समाज या सम्बन्धानें लेख काँगत्या विद्वान
गुरुस्थानी दिले आहेत. दिगम्बर जैनसमाजात
जागृति करण्याचे काम हे मासिक चांगले करील
आहे या अंकातील लेखहि वाचनीय असून
जैन समाजातील अनेक प्रमुखांनी आयाचिन्नेहि
लेखात आली आहेत.

परिवारभूषणकी पदवी-नागपुरमें सेठ कने-
चंद दीपचंदजी परिवारने १९१०-११ उगाकर
मासिक "परमानंद प्रमेशाळा" सुरूकर
उसका प्रबंध हि० जैन पत्रोंको सुपुर्द किया है इससे
पत्रोंने आपकी परिवारभूषणकी पदवी दी है ।
इस मौकेपर संभवति सेठ प्रामीठाळजीने भी
१९११) प्रदान किये थे ।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन समा-का २२ वां
अधिवेशन श्री० भवनिधि (कोल्हापर) क्षेत्रके
वार्षिक मेलेपर ता० १८-२९-१० जनवरी
को होगा । समाजिका प्रधान सौपान बिला

वारिधि पं० चंपतरायजी बेरिस्टर ग्रहण करेंगे समाके साथ महिला परिषद भी होगी ।

गिरनारकी यात्राको स्पेशल गाड़ी-३० १४ जनवरीको कासगंज (एटा) से आमपासके दि० जैन यात्रियोंकी एक रेकगाड़ी गिरनार यात्राको रवाना हुई है । वह ट्रेन खास तीर्थों व शहरोंपर दो २ तीन २ दिन ठहरती है व गिरनारजीमें १५ दिन रहेगी । इस प्रकार एक दूसरी स्पेशल ट्रेन इस यात्राके लिये छोड़नेका प्रबंध होरहा है जिसके लिये कमसे कम २०० यात्रियोंकी मंजूरी मिलनेकी आवश्यकता है । जो भाई जिस स्टेशनसे बैठेंगे वहां गाड़ी खड़ी रहेगी व किराया खोटा बनेगा । गाड़ीमें ही जैन इकठ्ठाईद्वारा भोजन व प्यावका प्रबंध रहेगा । कहीं भी धर्मशालामें ठहरना न होगा परन्तु सब प्रबंध ट्रेनमें ही रहेगा तथा दो आदमियोंकी सीट एकको ही जायगी । ये सब बातें बी० श्री० सी० भाई० रेवनेने स्वीकार की हैं । इस विषयका पत्रव्यवहार ना० रघुवीरप्रसाद जैन विलराम दरवाजा, कासगंज (एटा)से करना चाहिये ।

सर सेठ हुकमचन्दजीकी-पारमार्थिक संस्थाओंका १५ वां वार्षिकोत्सव ता० १२ जनवरीको फाइनेन्स मिनिस्टर रा० रा० मोतीलालजीके सभापतित्वमें जबरीबागमें स्वाम संदपमें सानन्द होगया उसमें छात्रोंके हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी संवाद हुए थे व छात्रोंको ४४६।।। का तो इनाम बांटा गया था तथा अष्टपदकोंको सुवर्ण अंगूठी व शारदुशाक भेट किये गये थे । छात्र संमेलनमें कुम्भी, टेनिस, लीस

बकनुत्व, समस्थापुर्ति आदिकी स्पर्धामें भी पारितोषिक दिये गये थे ।

कंचनवाई श्राविकाश्रम-का वार्षिकोत्सव श्री० धर्मपत्नी रा० व० सेठ हीरालालजीके सभापतित्वमें ता० ११ जनवरीको हुआ था इसमें भी श्राविकाओंके संवाद भाषण आदि हुए थे ।

अंग्रेजी जैन गेअट-की २५ वर्षकी मिल्बर जुधिकी मनाई जानेवाली है । उस इसके खातर ही सम्पादक श्री० मल्लिनाथजीको मानपत्र व पर्स देनेका भी प्रबंध होरहा है ।

देहलीमें-भागामी महावीर जयंती (चैत्र सुदी १३) जैनमित्र मंडळकी ओरसे ता० ११-१२-१३ अथैकको तीन दिनोंतक मनायनेका अभीसे निश्चय होचुका है । दूसरे स्थानोंके भाइयोंको भी अभीसे इसके लिये तैयारी करते रहना चाहिये । यदि महावीरजयंती देहलीकी भांकि हरएक स्थानपर मनाई जाने ली महावीर जयंतीका जाहिर त्यौहार होजानेमें देर न लगेगी ।

लाशपुर (टीकभगढ़)-में निकली हुई प्रतिभाओंकी वेदीपतिष्ठा माघसुदी ५को होगी ।

वार्षिक मेले-श्री पालीनाणामें माघ सुदी ५को व पावागढ़ तथा गजपंधानीमें माघ सुदी १३-१४को वार्षिक मेले धूमधामसे होंगे ।

कुड़चीमें जैन राजाका उल्लेख-एक मराठी लेखके आधारसे अभी 'जैनमित्र' में कुड़चीका पूर्व इतिहास प्रकट हुआ है जिससे मालूम होता है कि वहांसे दक्षिण दिशामें ९-६ फर्सेगकी दूरीपर ९ फुट ऊंचा व ९ फुट लंबा

एक शिवालेश्वर मिका था जिसमें पुरानी कनड़ी भाषामें लेख था कि यहां ८०० वर्ष पहिले जैन मंदिर था, जो एक जैन राजाने अपनी माताकी इच्छानुसार बनाया था तथा उस समय बेरगाम, वेणुग्राम, रायबाग व कोल्हापुरमें भी जैन राजा राज्य काने थे । उस शिवालेश्वरको मुसलमानोंने फोड़ डाला है । जैन कुटुंबोंकी जमीने ३०० वर्षसे चली आती है उनके यी प्रमाण मिलते हैं ।

भारत० टि० जैन परिषद—की ओरसे आजकल पं० रवींद्रनाथजी न्यायतीर्थ व पंडित गुरुनारीकाजी शास्त्री प्रचार कार्य कर रहे हैं ।

अन्धेकी शादीपर रज्जुलालजीको मरुत दण्ड—मैनपुरके रज्जुलाल मोदीने अपनी भाने-जनकी शादी अन्धे लड़केके साथ करती थी । उस बेमका फैसला पंजीके सुपुर्द हुआ था । उसका अभी जेठे फैसला देकर रज्जुलाल मोदीको (२०००) जुमाना मंदिरके तथा (८०००) लड़कीके नामसे मि० मन्वानदासजी शर्मा ललितपुरवालोंकी बली बनाकर रनिस्टे करवाते तथा सुन्दरहा पूरा खर्च भी रज्जु मोदी देने ।

भालथोन पाठशालाको—जिनवाणी सेवक का० मूददीकाजीने (१०) मासिक आज्ञा देना स्वीकार किया इससे वहां स्थाने बंटा दोकर कन्या पाठशाला चालू होगई है ।

ब० गंगीलालजी—अभी बहवालीमें हैं व कुछ दिन वहां ही रहेंगे ।

शिवदाराका रथोत्सव—जो मुसलमानोंकी जास्तीके कारण बंद रहा था उसके लिये परिषदके मंत्री खुद प्रयत्न करते हैं व सफलताकी

पूर्ण आशा है अर्थात् बयानाकी तरह यहां भी श्रवयात्रा शीघ्र ही निकलनेकी उम्मेद है ।

वीर विद्यालय—सोनागिरिको आचार्यसंघके समय करीब ६००) सहायता मिली थी ।

जल गया—झांसीमें बा० विश्वभरदास गार्गीय जैनका आदिप्रेम सभ स्टेशनरी सहित का० १की रात्रिको अकस्मात जल गया जिससे आका करीब १९०००)का नुकसान होनेसे उनकी ९ वर्षकी कमाई धूममें मिल गई है ।

वजरीमराय (पो० खोदासंग, पटना)—में अभी मुसलमल जैन सुफर औषधालय खुला है । जिससे बाहरगाम भी एक आनेकी टिकट मेज-मेपर हरएक दवाई सुफर भेजी जाती है ।

“वीर”—पश्चिमपत्र (परिषद)का होलिकांक निकलनेवाला है । यह पत्र मेटसे प्रकट होता है ।

ब० लोरेलालजी—ललितपुरमें क्षेत्रपालमें मन्थन विमार थे । अब तबियत अच्छी है ।

मन्थ प्रान्त—के दि० जैनोमें अभी ४ अन्त-जोतीयविवाह हुए हैं ।

आचार्य मंथ—में अर० मुनि साधर विन-में हैं जिसके नाम निम्नलिखित हैं—

१. श्री १-८ आचार्य श्री शान्तिनाथजी
२. " " " मुनिश्री वीरनाथजी
३. " " " मुनिश्री नेमिसागरजी
४. " " " मुनिश्री चन्द्रसागरजी
५. " " " मुनिश्री भमिसागरजी
६. " " " मुनिश्री पादसागरजी
७. " " " मुनिश्री कुम्भुसागरजी

इनके अतिरिक्त ८-१० ऐरक, सुलक, अह्मचागी भी संघमें रहते हैं । यह संघ अभी मथुरा होकर गोरना पहुंचा है ।

कुन्बलगिरि—का वार्षिक मेका मार्गशीर्ष सुदी १९ को होववा। उत समय वहाँ केक कर्मसा-
गरजीमे सुनि दीक्षा ले जी है।

मल्लीनाथ विद्यालय—शिरडशाहपुरकी ओरसे
ब० कन्हैयाकाकजी सेठी प्रचारक नियुक्त हुए हैं।

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन कान्फरन्स—का
१३ वां अधिवेशन जून्नेर (पूना) में ता०
८-९-१० फरवरीको रा० सा० सेठ रवजी
सोवपाळके सभापतिस्वमें होनेवाला है जिसकी
तेवारी बडे जोरोके साथ होरही हैं। इस समाजमें
भी जमी नये व पुराने विचारके ऐसे दो पक्ष पड़े
हुए हैं इसलिये इसवार इस कान्फरन्समें जनैक
प्रकारके झगडे खड़े होनेकी संभावना दिख रही
है। प्रेक्षक फीस दो रूपये हैं। पूना या तलेगांव
स्टेशनसे मोटरद्वारा जाया जा सकता है। स्थान
भोजन आदिका उत्तम प्रबंध होरहा है।

“जैन महिलादर्श”—का पोष-माषका
संयुक्त अंक दो चित्र व ९० पृष्ठोंके २०-२९
सेखोंसे सुशोभित माष सुदी ३ को प्रकट होगा।
वह पत्र “आदर्श निबन्ध” नामक उपहार भी
देता है। सम्पादिका पंडिता चंदाबाईजी आरा
हैं व सूरतसे हमारे द्वारा ही प्रकट होता है।
वार्षिक मूल्य ३) हैं ‘दिसम्बर जैन’ के पाठक
“दर्श” के ग्राहक भी अवश्य होनावें।

अतिशयक्षेत्र बड़गांव निंबालकर—(पूना)
का वार्षिक रथयात्राका मेका ता० २-३ फरवरी
माष सुदी ४ व ५ को धूमधामसे होगा। यह
स्थान नीरा स्टेशनसे १० मील व बारामती
स्टेशनसे १९ मील है।

जाळणर छावनी—में जेव बाळ तथा पुनः
चाळ होगई है और इसका साकाशा जरता महा-
वीर जयन्तीके साथ बहुत ही तेवारीके साथ
करनेका प्रबन्ध होरहा है।

महाराष्ट्र मारवाडी जैन सम्मेलन—ता० ७
फरवरीको जून्नेरमें श्वे० मू० जैन कान्फरन्सके
पहले १ मिलेगा।

वेरिस्टर चंपतरायजी—साहब ता० १९
फरवरीको विवाहवत रवानः होंगे, जमी बम्बईमें
हैं। पता—हिराचन्द गुमानजी जैन बीडिंग
तारदेव—बम्बई।

डाहोडभां—पूना तो विश्व छे उता युव-
भाओ आहुण आभासकाणा स्वप्रयत्नशी आहु
करी छे।

अमहावाढनी—श्री. मो. दि. जैन जोर्डिंगभां
मकरसंक्रांति (उतरायण्य) ने दिने विवाही-
आओ सुप्री. पंडित छोटैलाखलना प्रमुष्पट सभा
करी पतंगो उडाववाना जेरशयध ज्युषारी ते न
उडाववानो कराव क्यो हने तथा ते दिने जोर्डि-
गना म्पाउन्डरी उत्तम सदाध कंध पण्य संकाय
वगर करी हती।

अंकलेधरभां—सुरत असहकारी दि. जैन
आगेवान शो छोटैलाख वेलाभाध गांधी तथा
तेमना पत्नी भाणुकाध जे अन्ने ज्यु अश्व
जल्हा खुब जोर्डिंगभां सलासहा तरीके सुंटाया
छे. वधाध.

सोलात्रा भाविकाअभ—ने श्री. नानी ज्हेन
अने मेना ज्हेनना प्रयास ने अभयुषी श. ८३) =
भांडवी, ७८) सुहारी, १५) महुजा, ४१) सुरत,
४४) अंशेधर, १४८) आभोद अने १०) साह-
राथी जोटके कुले ४४१) = नी सहायता हालभां
भणी छे. आ भाविकाअभ बने उततिपर आवसुं
लय छे.

हमारी अवनति कैसे हुई ?

(छे०-पं० परमानन्दजी न्यायतीर्थ-दमोह ।)

आज की धर्मको धारण करनेवाला जैनसमाज क्यों इस प्रकार मुर्दा रूपमें परिणत हो गया है ? जब हम इस बात पर ध्यान देते हैं तो उसका यही उत्तर ज्ञात होता है कि हम की प्रभुके कल्याणमय उपदेशको भूल गये हैं। उनके बताये हुये मार्गका अवलम्बन हमने बिड़कुड़ छोड़ दिया है। यही नहीं, किन्तु अपनी मूर्खताके कारण उसे अन्यथा रूपमें भी धारण कर लिया है। हमें प्राणीमात्रमे वात्सल्य रखना चाडिये किन्तु हम अपने एक भाईसे भी घृणा करते हैं। परोपकारकी जगह जरासी बातमें दूसरेका सर्वस्व खोनेको तैयार हैं। आत्मोत्थानकी जगह अपनी खोटी वृत्तियोंसे अवनतिके गर्तमें पड़ रहे हैं। ब्रह्मचर्यकी जगह अधिक भोगा-भिकाषी बन रहे हैं। आत्मसंयमी होनेकी जगह इन्द्रियकोलुपी होगये हैं।

भले ही यह समाज घनशक्ती रहो किन्तु उसी घनके दुरुपयोगसे वह समाज आज दीन है। भलेही इस समाजमें चतुरता अधिक हो किन्तु उस चातुर्यका उपयोग मात्र कषायोंकी पुष्टिमें होनेके कारण मूर्खमे भी मूर्ख है। भले ही यह समाज बड़ा धर्मात्मा है किन्तु अन्तरंगकी कुटिलतासे आज यह बड़े पापोंके फल भोगता हुआ नजर आता है। जैनसिद्धान्तके

सम्यक सागमय व अत्यन्त गूढ़ हैं किन्तु हमारे सिद्धान्त (उद्देश) तुच्छ व निस्वार हैं।

परोपकार और आत्मपतिष्ठाके क्रिये कारणभूत घनके द्वारा घनकुवेर होनेपर भी स्वार्थी और पतिष्ठाहीन हो रहे हैं। क्योंकि वे घनकुवेर घनको ही आदर्श मानकर मात्र घनकी प्राप्तिसे ही अपनी जीवनयात्रा सफल समझने हैं और प्रत्येक वस्तुकी जांच घनकी कमीतीसे करते हैं। अपने पुत्र व पुत्रीका लग्न वे घनके ही साथ करते हैं, दाम्पत्य यानी पति पत्नीके योग्य संबंध व अवस्था पर ध्यान नहीं देते हैं। मित्रता भी वे घनवानसे ही करते हैं किन्तु ईषाके द्वारा अन्तरंग क्लुषित होनेसे जरासी बातमें एक दूसरेके प्रतिद्वन्द्वी बन जाते हैं। वे अपना तन और मन घनके ही संचयमें न्योछावर करने हैं इसीलिये वे अन्य योग्य शक्तियोंको अपनेमें व्यक्त करनेके लिये प्रायः अशक्त रहते हैं। उनकी इच्छाओंका अन्त संतोषयुक्त नहीं रहता इसीलिये वे सुखका अनुभव नहीं कर सकेते हैं। घनीसे भी घनी पुरुष निम समय आत्मोत्थान और परोपकारसे चूकता है उसी समय निर्धन होजाना है। क्योंकि मानवीय आदर्शयुक्तियोंका पूर्तिके लिये पूर्ण रूपसे साधन प्राप्त बन जाना तथा अपने मान्य उद्देशकी पूर्ति सफलता पूर्वक करना यही सत्यतिका अर्थ व कार्य है।

हमारे व्यवहार दिन प्रतिदिन घनी होते चले जा रहे हैं बिनाहृदय क्रिये योग्य साधन प्राप्त होनेमें हम निरतनी लापरवाही करते हैं उससे भी

अधिक लापरवाही सन्तानके पैदा करनेमें व उससे भी अधिक लापरवाही उसके लालन पालनमें व उससे भी अधिक लापरवाही उसके शिक्षणमें व योग्य बनानेमें करते हैं । जन्मसे लेकर मरण तककी क्रियायें धर्मसे संस्कृत नहीं होती । लोकरूढ़िकी अधिकताके कारण अनेक व्यर्थके नेम दातूंग होने हैं किन्तु शिक्षाके अभावसे वे इशसंस्कारोंमें यथासाध्य संस्कार भी नहीं किये जाते । गृहस्थीके जिन नेम-दातूंगोंमें धर्मकी गन्ध नहीं है उनका होना व षोडशसंस्कारोंका न होना एक स्त्रोत्रातिके शिक्षित न होनेका भी फल है । विवाहके लिये हजारों आरामिके आदरसत्कार व भोजन-पानकी व्यवस्था कर लेना एक बड़े दरजेकी खटपट है किन्तु जैसे जैसे उसका मित्रान मिला लेने पर भी अज्ञानता और धर्मप्रेमके अभावसे जैनविधिपूर्वक रग लेना उससे भी कई गुनी खटपट समझकर जैनविधिपूर्वक रग नहीं कराया जाता है । बरातियोंके व बतियियोंके सत्कार व ठहरनेके लिये बाग बगीचे फल फूल गज बजे व गमरोंका इन्तजाम करना सुलभ समझ जाता है किन्तु विवाहोत्सवके इष्टके हुये जनसमुदायको १ घण्टादेशक द्वारा धर्मका व्याख्यान करा देना, समाजमान्य किमी नये कार्यकी नींव डाल देना, गरीबोंकी अवस्था पर विचार करना, अपनी व समाजकी उत्ततिपर विचार करना, स्थानीय पाठशाला आदि संस्थाओंका निरीक्षण करके उन्हें सुचेतन कर देना इत्यादि काम शक्तिसे बाइर समझे जा रहे हैं ।

ऐ जैनसमान । तुझे ध्यान रहे कि तेरा सर्वस्व इस क्रमसे नाश होगा कि तुझे उसका नरासा भी ध्यान न होगा ।

पठशाळा, कन्याशाळा, विद्यालय, सभा कमेटी आदिके अधिकारी बननेको हरएक मूखा है । प्रत्येक पुरुष अधिकारी व नेता बनना चाहता है और बन जाता है । किन्तु उस अधिकार या नेतृत्वशक्तिका निर्वाह करनेको वह अपने तन, मन, धन व समयका आवश्यक योग न देनेके कारण या न देसकनेके कारण तथा उस पदकी अयोग्यतासे अपने मंत्रित्व और सभापतित्व आदि अधिकारके साथ उस धार्मिक संस्था या कमेटीको दोषी बना अन्तमें सर्वनाश कर डारता है ।

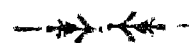
विद्यालयोंमें प्रतिवर्ष नई भर्ती अधिक होती हैं । किन्तु विद्यालयके उद्देशको सफल करनेवले विद्वान उस विद्यालयसे नहींके बराबर निकलते हैं । जब उनमें पढ़नेकी योग्यता आती है तब उन्हें पाठित्यकी आफत लग जाती है और वे उस विद्यालय या गुरुकुलसे स्वर्णका अवसर छोड़ अन्यत्र चले जाते हैं । विद्यालयकी ओरसे उन योग्य विद्यार्थियोंकी योग्य अवधि तककी रोकके लिये कोई अमरूप खाल नियम नहीं होता जिससे कि वे अपनी मनकी चंचलताके बश हो शीघ्र उस विद्यार्थी अवस्थाको न छोड़ें और किमी खान विषयमें पूर्ण पारंगत बन सकें । प्रतिवर्ष नये-नये विद्यार्थियोंकी भरतीसे प्रवन्धमें अधिक बढ़वत पड़ती है । खर्चा अधिक बढ़ जानेसे आवश्यक खर्चमें भी बर्बाद जाती है

इसलिये पढ़ाईमें अडचन पड़ती है और पुराने व्युत्पन्न बननेवाले योग्य ऊँची कक्षाओंके विद्यार्थियोंकी सुविधा नहीं रह सकती है। इन्हीं घटनाओंके धक्केके मारे बड़ेसे बड़े और पुरानेसे पुराने विद्यालयोंकी नींव हिल गई है और वे उद्देश्य च्युत हो चुके हैं। दस नये विद्यार्थियोंकी अपेक्षा एक पुराने तथा उच्च कक्षाके छात्रकी सुविधा बढ़ाकर उस विद्यार्थीके तन व मनको बरवान बनानेमें अनेक सुविधायें मित्राक्षर खर्च द्वारा उन्हें कलावीशरूप सिखाकर काल क्रमानुसार आवश्यक विद्यार्थीका सम्भाल कराया जाय। कोई ऐसा क्रम बाँध दिया जाय जिससे वे अपने पढ़े हुये ग्रन्थोंकी पुनरावृत्ति करके उन ग्रन्थोंके विषयमें सभा-चतुर बन सकें। भलेप्रकार उनकी देखरेख की जाय। उनके दोषोंकी छानबीन की जाय। उनकी शिक्षा देनेवाले योग्य शिक्षकोंका समावेश किया जाय। और जो योग्य हैं उन्हें समाज आदरकी दृष्टिसे देखे। क्योंकि गुणीका आदर न होना भी हमारा अवनतिकका एक गण्य कारण है।

उच्च विद्यार्थी ग्रन्थोंके अध्ययनके साथ प्रतिदिन भिन्न भिन्न व्यापारवाली दुकानों पर नियमसे एक प्रहर या त्वात्पर समय तक उस कार्यको सीखें। दुनियाके लिये आवश्यक नई नई वस्तुओंका निर्माण करना सीखें। ऐसे क्रमसे विद्यालयोंके उद्देश सफल होंगे। समाजकी आवश्यकतायें पूर्ण होंगी। और विद्याध्ययनका सफल उद्देश इस लोक संबंधी जीवनको सुखमय

बनाने लिये अन्तमें आत्मकल्याण करना भी इसी क्रमसे हो सकेगा। उन उच्च कक्षाके विद्यार्थियोंके शिक्षक उनके जीवन निर्वाहके विषयमें व स्वयं प्रवृत्ति करनेमें सलाह दें। योग्य विद्यार्थी जब समाजमें काम करने लग जाय और कारणवश जब उनकी आजीविकामें रोड़ा अटक जाय तो नियमित समय तक वे उस विषयमें कमजोर न हो जायें इसलिये व्युत्पन्न बनानेकी गरजसे जिस विद्यालयके हैं उसीमें वे रखे जाय। और इस नियमका सम्बन्ध भी इस नियमसे रखना चाहिये कि वे विद्यार्थी अपनी आयका कुछ अंश उस विद्यालयको कर्म खर्च करनेके रूपमें नहीं किन्तु सहायता रूपमें देते रहें। इस क्रमके पालन न होनेसे आज शिक्षाका स्वरूप बिगड़ रहा है।

हम कुटुम्बका निर्वाह करना नहीं जानते। पुत्र और पुत्रीकी उत्पत्तिमें मोर कोड़ीकी तौल लगाने हैं। असहाय विधवा जोकि एक प्रकारके दीक्षित रूपमें है उसका आदर नहीं करते हैं। शरुविवाह और वृद्धविवाहकी रोक भी जानसे नहीं करते हैं। जैन सिद्धांतका अध्ययन अपनी संनानको नहीं करते हैं। अपनी आजीविकाके मार्गमें सत्यता और विश्वासका मिलान नहीं करते हैं। नियमित ब्रह्मचर्य और आत्मसंयम पालन नहीं करते हैं। आत्मीय गुणोंकी मोरकी तौलका अन्दाज अपने हृदयमें नहीं लगाये हुए हैं। इत्यादि कारणोंसे ही हमारा अवनति हुई है। हमें चाहिये कि हम अव्यक्तिक मार्गको छोड़कर उन्नति पथमें अपना कदम रखें।



राज्यक्ष्मा (तपेदिक)

और

वर्तमानकी नवयुवक समाज ।

(ले०-आयुर्वेदाचार्य पं० सत्यधरजी जैन वैद्य-उपारा)

पाठको ! वर्तमान संसारमें ऐसा कुछ विपरीत परिगमन हो रहा है जो कि नहीं होना चाहिये । जैसे कि भारतवर्षमें ज्यों १ डाक्टर वैद्य हकी-मोंकी वृद्धि हो रही है त्यों २ अनेक प्रकारके रोगोंकी वृद्धि हो रही है । इसके मुख्य कारण हमारे कृत पूर्व अशुभ कर्म तो हैं ही, किन्तु बह्य कारण उसका हमारे मिथ्या आहार विहार तथा ब्रह्मचर्यव्रतका भंग है तथा कई ऐसे अनुचित तथा अन्यायरूप कार्य हैं कि जिनके कारण ही हमारे शरीरमें नानाप्रकारकी व्याधियां उत्पन्न हो रही हैं ।

यदि उन कारणोंको हम दूर नहीं करेंगे तो हम संसारमें इस शरीरसे कुछ भी कार्य संवादन नहीं कर सके । अतएव हमको उस बातका परिज्ञान हो जाना चाहिये कि वास्तवमें हमारा रोग क्या है और उस रोगका भी निदान क्या है तथा उस रोगके दूर करनेका उपाय क्या है ?

बाँदे हम लोगोंने अपने शारीरिक रोगकी परीक्षा करके उनकी चिकित्सा नहीं की तो हम शरीरसे कुछ भी धर्म साधन न कर सके क्योंकि धर्मका प्रधान साधन यह शरीर ही है "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" इत्यादि ।

यहाँपर मैं शरीर संबंधी अनेक रोगोंकी

गौणता रखकर केवल एक रोगका ही वर्णन करूंगा, जो कि लेखका शीर्षक है । अर्थात् राज्यक्ष्मा (तपेदिक) यह रोग पहिले बहुत कम होता था और इस पंचम कलिकालमें अधिकतासे देखा जाता है । इसके कारण यही है कि पहिले हमको शारीरिक क्रियाओंके करनेमें वक्तचित्त रहते थे तथा योग्य क्रियाएं ही करते थे । अब इस काममें ऐसे १ अनुचित कार्य किये जाते हैं जिनको सुनकर कलेजा कांप जाता है । और उन्हीं क्रियाओंके करनेसे ही ऐसे २ दुष्ट रोग उत्पन्न होते हैं । तथा उत्पन्न होकर असाध्य होजाते हैं जिससे कि छुटकारा पाना बहुत ही कठिन होजाता है ।

इस समय वास्तविक दृष्टिसे देखा जाय तो वर्तमान समाजमें राज्यक्ष्मा रोगकी उत्पत्ति होनेका प्रधान कारण है एक स्पर्श इन्द्रियके विषयकी अधीनता अर्थात् अति मैथुन जैसा कि आयुर्वेद ग्रन्थोंमें बतलाया है—

अति व्यवायिनो वाऽपि क्षीणे रेतस्य नंतराः ।
क्षीयन्ते धातवः सर्वे ततः शुष्यति मानवः ॥

अर्थात्—मैथुन कर्म करनेसे वीर्य क्षीण होजाता है और वीर्य क्षीण होजानेसे रस—रक्त—मांस—मेद—मज्जा—हड्डी—शुक्र ये सात सातुएं क्षीण होने लगती हैं और उनके क्षीण होनेसे मनुष्य सूख जाता है अर्थात् तपेदिक होजाता है ।

अथपि तपेदिक होनेके और भी कारण हैं परंतु यहां केवल अति मैथुनपर ही विचार करूंगा और वास्तवमें प्रधान कारण है भी यही । कारण कि कोई भी बीमारी जब तक शुक्र—

घातुमें प्रवेश नहीं करती है तब तक वह साध्य रहती है । और जब वह शुक्र गत होजाती है तब वह बीमारी असाध्य होजाती है और नहीं निकल सकती । जैसे कहा है—

“रसरक्तगतः साध्यः मांसमेदोश्च गतयः ।

अस्थिमज्जगतः कृच्छः शुक्रस्थस्तु न सिध्यति ॥

अर्थात्—जब तक कोईसा भी रोग रसघातु—रक्त घातु—मांस घातु—मेद घातु उन चार घातुओं तक प्रवेश करता है, तब तक तो वह जरूरीसे अच्छा होजाता है । और जब वह हड्डी और मज्जामें प्रवेश करजाता है तब वह रोग थोड़ी कठिनतासे निकलता है । और जब वह रोग ७वीं शुक्र घातुमें प्रवेश करता है तब फिर वह रोग असाध्य होजाता है अर्थात् वह रोग उस शरीरसे नहीं निकल सकता ।

इसीको डाक्टर लोग नं० १ तथा नं० २ और नं० ३ कहते हैं । अर्थात्—नम्बर १ का साध्य नम्बर २ का कठिनतासे साध्य और नम्बर ३ का असाध्य इस प्रकार व्यवहारसे कहते हैं । अब मैं राजयक्ष्माका स्वरूप बताकर उसकी उत्पत्ति तथा उसका निराकरणका उपाय बताऊँगा ।

हमारी समाजमें ब्रह्मचर्यका पालन ठीक तौरसे नहीं होता । बहुतसे लड़के तथा बहुतसी लड़कियां कुमारावस्थामें ही शक्तिका नाश, अपाकृतिक—दुराचार आदि करनेका दुर-म्यास कर लेते हैं जिससे कि उनका वीर्य परिपक्व न होकर कृच्छी अवस्थामें ही निकल जाता है तथा वीर्य निकल जानेसे नपुंसक तक होजाते हैं ।

जो सज्जन इस दुःस्वप्नामसे बच गये वो विवाह होनेपर अति मैथुन करते हैं । चाहे वह कन्या रजस्वला हुई हो या न हुई हो उसका थोड़ासा भी विचार न करके गर्भाशयकी नलीको विगाड़ देते हैं ।

चाहे स्त्रीको बुखार आता हो, चाहे खांसी हो, चाहे जुखाम हो या कुछ भी हो, अर्ध-कांक्ष जन बिना विषयके नहीं मान सके, क्योंकि उन्होंने तो स्त्रीको एक मात्र विषयका साधन ही समझ रक्खा है । इस प्रकारकी विषया-धिक्यता ही अनेक रोगोंका साधन बन जाती है । यदि भाग्यवश ऐसी ही कृच्छी अवस्थामें गर्भाधान होगया तब तो और भी कठिनता होजाती है ।

प्रायः ऐसी विषयाधिक्यतासे प्रथम तो वह स्त्री तथा वे महाशयनी दोनों कई रोगोंके घर बन जाते हैं । और यदि नहीं बने तो एक संतान होनेके बाद तो अवश्य ही रोगोंके ग्रास बन जाते हैं । ऐसी हालतमें स्त्रीको प्रसूतज्वर होजाता है या जीर्णज्वर होकर तपे-दिक होजाता है या मंदाग्नि होजाती है अथवा जिन्दगी भरके लिये ऐसी निकम्मी और कमजोर होजाती है जिससे कि उस बेचारीको जिन्दगीभर दुख २ में जाती है और अपने जीवनमें सुख कभी भी नहीं देख सकती । तथा महाशयनीको भी प्रमेह वा तपेदिक बगैरह ऐसे असाध्य रोग होजाते हैं जिनसे छुटकारा मिलना कठिनता होजाता है तथा ऐसी बीमारी खाते १ दोनों स्त्री पुरुषोंको

यदि साक छः महिना ढग गया तब तो हमारे महाशयनी बहुत ही जरूरी अपने बुढ़े माता पिताको दुखी कर संसारसे चक दमते हैं । तब विचारी वह भी विवाह होकर और दुखिनी हो जाती है । इस प्रकारसे हमारी पमानमें क्या समस्त भारतवर्षमें सैकड़ों हजारों नवयुवकोंकी अकारमृत्युएं होरहीं हैं जिससे विधवाओंकी संख्या बढ़ रही है तथा नवयुवकोंकी संख्या घट रही है और जो नवयुवक हैं उनकी क्रियाएं आचरण दुरुस्त नहीं—ब्रह्मचर्यका पाऊन नहीं । अतएव कमजोर होते चले जाते हैं । जिससे सन्तान भी प्रतिदिन कमजोर होती चली जाती है । इससे ज्ञात होता है कि समाजके मरणका समय शीघ्र ही है, दौड़कर आरहा है ।

अब हमको यदि समाजकी वास्तविक दशा सुधारना है तो हमको चाहिये कि जबतक हमारी कन्या रजस्वला न होनाय तबतक उसका विवाह न करें और जब वह रजस्वला होने लगे तभी उसको एक अच्छे लड़केके साथ सम्बंध करें जो कि शरीरसे स्वस्थ हो । तथा लड़कोंके पिताका वह कर्तव्य है कि वे अपने बच्चोंको १४ घण्टे अपनी दृष्टिमें रखें और स्वासकर कुमारावस्थामें तो बहुत जरूर ही । ताकि वे बच्चे कुचेष्टाएं न कर सकें—कुसंगतिमें नहीं पड़ सकें । और जब योग्य होजाय तब उनका योग्य कन्याके साथ विवाह करदें । विवाह होनेके बाद नवयुवकोंको चाहिये कि विषयकी आविषयता न करें । स्त्री विषयकी सामग्री नहीं है । विवाहका उद्देश्य कुछ विषयसेवन करना ही नहीं

है, किन्तु संतान पैदा करना ही विवाह करनेका प्रबान उद्देश है, सो संतान पैदा करनेके लिये प्रतिदिन मैथुन करनेकी आवश्यकता नहीं है । जब स्त्री रजस्वला हो तो ४थे दिन शुद्धि होनेके बाद पहिला दिन छोड़कर स्त्रीसे विषयसेवन करना चाहिये । सो भी १० दिन तक, बाद नहीं । क्योंकि गर्भाशयका मुख १५ दिन तक खुला रहता है सो ४ दिन तक तो रक्तस्राव ही होता रहता है और १ दिन शुद्धि स्थापनके लिये । अब बचे १० दिन सो १० दिन में ही यदि उसका वीर्य परिपक्व है तो गर्भ धारण होजायगा । इसके बाद गर्भाशयका मुख बंद हो जाता है । अतएव बाद विषय सेवन नहीं करना चाहिये क्योंकि उस समयका वीर्य व्यर्थ जाता है । इस प्रकार जो पुरुष तथा स्त्रीके आचरण रहेंगे तो न कभी पुरुष ही रोगसे पीड़ित होगा और न स्त्री ही रोगसे पीड़ित होगी । और संतान भी पुष्ट होगी तथा अकारमृत्यु भी न होगी । और विधवाओंकी संख्या भी न बढ़ेगी । तथा समाजमें अनेक प्रकारके अनाचार भी न होने पायंगे । आशा है हमारी नवयुवक समाज चेतनेगी और यदि उसने परिस्थिति संभाल ली तो अवश्य ही अमाजकी उन्नति उन्नति होगी अन्यथा नहीं । इतिशम् ।

सूर्यप्रकाश (नर्वान शास्त्र) २)

भणिक चरित्र

१॥॥)

निश्चयधर्मका मनन १।) भगवान पार्श्वनाथ २।।)

मैनेजर—दि० जैन पुस्तकालय—मुरत ।

श्री नेमिनाथ और राजकुल ।

(रचयिता—पं० गुणभद्रजी जैन, कलोल ।)

नहीं करेंगे नेमिनाथ पाणिग्रहण ।
 सब आडम्बर छोड़ गये रैवतक पर ॥
 राजकुले यह समाचार ज्यों ही सुना ।
 ओंधे मुख हा गिरी धरा पर कष्टसे ॥
 गिरी गगनसे दिव्य हाथ मुर अंगना ।
 अथवा है आश्रय विहीन कोमल लता ॥
 घेर लिया तत्काल उसे अति मोहने ।
 नहिं तो दुखवश वह अनर्थ करती वडा ॥
 दोनों थे दृग वन्द हस्त मस्तक तले ।
 खड़े हुये थे गुरुजन भी सब सामने ॥
 किया गया उपचार वेग बहु शांतिसे ।
 उठी बालिका हाथ उरस्थल कूटनी ॥
 थी उसको परवाह न अपने बसुकी ।
 आंखोंसे अविगम अश्रु थे वह रडे ॥
 सुनकर उसका रुदन वचन भी रो उडे ।
 होता करुणोत्पादक रमणीका रुदन ॥
 हा! हा!! हा!!! छिनगया हृदयका हास मम ।
 बतलाओ यदुवंशचन्द्रमा है कहाँ ? ॥
 आंखोंमें है नीर हृदय पर जल रहा ।
 बडवानल क्या आज समाई चित्तमें ॥
 आशा थी लवलेस स्वप्नमें भी नहीं ।
 हृदय अचानक कार्य कर क्यों होगया ॥
 चली रैवतक और भूमिको सींचनी ।
 गिरपड़ती थी कभी भूमिपर शोकवश ॥

देखा उमने स्वच्छ शिलापर नाथको ।
 मानों वह साक्षात् पुण्यके स्तम्भ थे ॥
 सह न सकी वह सती शोक आवेगको ।
 छिन्नलता सम शीघ्र चरण-तट गिर पड़ी ॥

राजकुल—

नाथ कहूं क्या व्यथा आज निज चित्तकी ।
 अन्तर्यामी सदा सभी तुम जानते ॥
 तो भी करता विवश मुझे अन्तःकरण ।
 व्यथा सुनाने हुई उपस्थित सामने ॥
 निरपराधिनी, नाथ! व्यर्थका कोप है ।
 अबलाको दुख देना क्या तुमको उचित ॥
 तीन लोकके एक तुम्हीं आधार हो ।
 दे सकते फिर क्यों मुझको आश्रय नहीं ॥
 दासीसे अपराध हुआ यदि भूलसे ।
 क्षमादान दो या प्रचण्ड तुम दण्ड दो ॥
 करती हूँ करजोड़ नाथ मैं प्रार्थना ।
 चूर चूर होरहा हृदय हे हृदय धन ॥
 पशुओंपरकी दया, दया मुझपर नहीं ।
 मैं तो हूँ हे नाथ! तुम्हारी संगिनी ॥

नेमिनाथ—

निरपराधिनी सदा, सदा तुम हो प्रिये ।
 नहीं किसीके भी प्रांत मेरा कोप है ॥
 सुख दुख दाता नहीं किसीका मैं कभी ।
 मिलते हैं सुख दुःख कर्मअनुसार ही ॥

क्या मुझको अधिकार तुम्हें मैं दंड दूं ।
आश्रय तुमलो आज त्रिलोकी नाथका ॥
यह संसार असार सार कुछ भी नहीं ।
रहता इष्ट मिलाप कभी दो चार दिन ॥
पढ़कर प्राणी हाय ! मोहके जालमें ।
पाते अगणित कष्ट बहुत विधि विश्वमें ॥

राजुल—

रोती ठण्डी आह भरे तब किङ्करी ।
कर दुखिनी क्यों मुझे सौख्य तुम चाहते ॥
बधु-कुलमें हे नाथ ! जन्म मेरा वृथा ।
विधिने क्या लिख दिया हाय ! इस भालमें ॥
कौन पूर्वके प्रबल-पापका दण्ड यह ।
भोग रही हूँ नाथ ! अधिक रोती हुई ॥
नाथ ! तुम्हारे विपुल विरहसे हूँ दुखी ।
नलिनी ज्यों रविके वियोगमें म्लान हो ॥
करे प्रार्थना बार बार वायु महा ।
होती लेकिन नहीं प्रफुलित पद्मिनी ॥
देता है सबको प्रकाश रवि नित्य ही ।
अन्धकार है नाथ तुम्हारे बिन यहां ॥
करते हैं स्पर्श-गगन जिसके महल ।
घन जनसे जो अतिशय करके व्याप्त है ॥
वही द्वारिका शून्य विपिनवत भामती ।
जिसमें प्रभुवर सभी मनुज मूर्च्छित पड़े ॥
बाल वृद्ध क्या और युवा सुकुमारियों ।
सभी चाहते तुम्हें स्वजनसे भी अधिक ॥
उनके प्रति यह घोर उपेक्षा भाव क्यों ।
नर-पुङ्खको श्रेष्ठ नहीं जो स्वप्नमें ॥

नेमिनाथ—

भरना ठण्डी आह सुन्दरी व्यर्थ है ।
परको दे मैं दुःख सौख्य नहीं चाहता ॥
बधु-कुलको तुम करो धर्म करके सफल ।
लिखा लेख मिट जावे जिससे भालका ॥
इष्ट जनोका विरह विश्वमें है नियत ।
उससे होना दुखी जीवकी मूर्खता ॥

राजुल—

मृदु गोदीमें ठौर तुम्हें जिसने दिया ।
देख वदन आनन्द मानती थी विपुल ॥
वह जननी हे नाथ ! होरही अधमरी ।
उठो उठो दो वेग उसे चल सान्त्वना ॥
उसका होना और न होना एकसा ।
पूज्यजनोंको जो न धैर्य देते कभी ॥
सोचो अपने चित्त प्रभू उपकारको ।
करो अवज्ञा नहीं मात आदेशकी ॥
कहलाओ मत यों कृतघ्न घनश्याम अब ।
हार गये श्रीकृष्ण मनाकर भी तुम्हें ॥
सद्वचनोंपर आप लक्ष्य देते नहीं ।
जनक तुम्हारे नाथ ! अधिक शोकार्त हैं ॥
पटक दिया है उन्हें शोकके गर्तमें ।
रहते भी आराम सौख्य उनको नहीं ॥
तुम बिन भाती नहीं विश्वकी संपदा ।
भार रूप वे जान रहे हैं देहको ॥
रोते उनके अरुण नेत्र दोनों हुये ।
माग रहे हैं मौत किन्तु आती नहीं ॥
देना उनको कष्ट आपको इष्ट क्या ?
अटक रहे अपकीर्ति नाथ कल्पान्त लों ॥

नेमिनाथ—

अक्षरशः सब सत्य कहे विम्बाधरी ।
कर विचार यह इन्द्रजाल संसार है ॥
कितनोंकी मृदु गोद मध्य खेला नहीं ।
नहीं खेलता रहा किसीकी गोदमें ॥
किसकी माता और कौनका पुत्र है ।
सघन वृक्षतल बैठे हैं सब पथिकजन ॥
पाके अपना समय विन्दुडते हैं विवश ।
करना मेरे लिये शोक सब व्यर्थ है ॥
समझो ! समझो !! समझ चुकी सब नाथ मैं ।

राशुद—

हाय भाग्य ही आज अन्यथा होरहा ॥
बंधनसे सब प्राणि मुक्ति हों इष्ट था ।
छोड़े जाते क्या न आप आदेशसे ॥
होते दोनों कार्य इष्ट क्या हानि थी ।
जय स्वसे हे नाथ ! दिशायें गंजती ॥
छूटे हैं नहीं मंगलीक कंक्रण अभी ।
सारा ही सामान पड़ा तैयार है ॥
मुदित करो सबको करके पाणिग्रहण ।
नाथ यही वस तुच्छ प्रार्थना मानिये ॥

नेमिनाथ—

नहीं तुम्हारी कभी उचित यह प्रार्थना ।
होती यदि यह योग्य मान लेता अभी ॥
बालकके भी वाक्य सुन्दरी योग्य हों ।
सादर उनको नित्य मानते विज्ञान ॥
मुक्ति रमाका शीघ्र करूं पाणिग्रहण ।
हृदयेश्वरि ! है हृदय मध्य यह भावना ॥
कृत्रिम पाणिग्रहण नहीं अब मैं करूं ।
जिसका है सम्बन्ध सदा ही देखसे ॥

इस विवाहसे हृदय अधिक भयभीत है ।
होता सुख-पद कभी अग्निस्पर्श क्या? ॥
एकत्रित पशु किये गये जिसमें अहो ।
प्रस्तुत थे हा अधिक हाथ लेले लुरी ॥
यह विवाह ही प्रिये ! दुःखका हेतु है ।
करना जिसमें पड़ा प्रथम आरम्भ बहु ॥
मध्य और अवसान कौन मुखमे कहूं ।
विष वृक्षोंमें नहीं लगेंगे आम्र फल ॥

राशुद—

मिलती हे प्रभु पूर्व पुण्यसे कामिनी ।
विष बलरि सम नाथ उमे तुम छोड़ते ॥
नहीं जानते आप नारियोंके सुगुण ।
करते हो वैराग्य भरी बातें सभी ॥
तंत्री सम वे मधुर शब्द नित बोलतीं ।
हैं प्रमूढ सम मृदुल अंग जिनके सदा ॥
रतिसे भी वे अधिक सुन्दरी विश्वमें ।
भरे दृये हैं सुगुण स्वच्छ सर्वांगमें ॥
सुखदायिनि हैं अन्य बहुतसी वस्तुएँ ।
ललना सम नहि सौख्यदायिनी एक भी ॥
उनके सारे अंग अधिक शोभा धरे ।
होजाता है चलित देख मुनिमन जिन्हें ॥
हैं नितम्ब स्थूल जघन जिनके बृहद् ।
पतली जिनकी कमर अधिकतर सोहती ॥
कुच सुवर्णके कलश विश्वविख्यात हैं ।
वदन चंद्रमा सदृश विम्बफल ओठ हैं ॥
हरिणी सम हैं चपलनेत्र जिनके बड़े ।
कोमल प्यारे केश नागसे शोभते ॥
लक्ष्मी ही साक्षात् मानिये कामिनी ।
लखकर जिनके अंग हर्ष होता विपुल ॥

शिवने अपने अंग मध्य धारण किया ।
ब्रह्मा उसके दास देखलो होगये ॥
जग भी लेता प्रथम नाम उनका यहां ।
बोले सीताराम राधिका कृष्ण ही ॥
गृहः कार्योंमें दक्ष अधिक होती प्रभो !
नारी सचमुच एक सदन-श्रृंगार है ॥
मानवको सब काल धैर्य देती वही ।
उस विन सुन्दर गेह प्रेत आवास है ॥
पृथिवीसे भी क्षमाशील वे हैं अधिक ।
शक्तिसे दूनी सदा गात्रकी कांति है ॥
पार्षतीसे बड़ा हुआ सौभाग्य है ।
निज स्वरूपसे जीत रहीं रति रूपको ॥
वैसी बनिता त्याग वसें जो विपिनमें ।
उनसा कोई मूर्ख न होगा लोकमें ॥

नेमिनाथ—

जिनका है आसक्त चित्त बहु फासमें ।
उन्हें भले ही योग्य जँचे ये भामिनी ॥
योगीजन तो उसे नागिनी मानते ।
रहते हैं नित दूर समग्र कल्याण निज ॥
नारीका संसर्ग सर्वदा दुःखदा ।
होते सहृण नष्ट सभी संसर्गसे ॥
करती मायाचार चित्त स्थिर नहीं ।
नहीं मानतीं किये हुये उपकारको ॥
काट डालतीं शीघ्र कीर्तिकी बल्लरी ।
फंसजाता जो मनुज बल्लभा प्रेममें ॥
धो बटे वह हाथ सौग्य वैराग्यसे ।
लगा बैठती ये कलङ्क निज वंशमें ॥
करती नहीं विश्वास दूसरोंका कभी ।
रहे प्रयोजन उन्हें नित्य निज स्वार्थसे ॥

मरजाना है योग्य घोर संग्राममें ।
जलजाना है योग्य प्रज्वलित अग्निमें ॥
तीन कालमें योग्य नहीं तियसे प्रणय ।
कामी कैसे करें प्रीति आश्चर्य है ॥
जो मुख है अपवित्र थूक का ठौर है ।
कहना उसको चन्द्र मूर्खता है बड़ी ॥
मांस पिन्ड हैं दीर्घ पयोधर देखलो ।
कनककुम्भसम कहें उन्हें कामी मनुज ॥
सतत बहाते रहे नेत्र युग अश्रु ही ।
कहते उनको कमल बड़ा आश्चर्य है ॥
है उनका सर्वाङ्ग मैलका द्वार ही ।
होजाते हैं अङ्ग शिथिल आती जरा ॥
होजाते हैं कृष्ण केश हा ! तूल सम ।
निज शरीरकी सर्व प्रभा जाती रहे ॥
कहती जो गुणवान सर्वथा भूल है ।
अपयशकी हैं मूल पापकी खान हैं ॥
शिवपथमें मैं इन्हें मानता अर्गला ।
जो पड़ते हैं मनुज नारिके फन्दमें ॥
कर सकते कल्याण न अपना स्वप्नमें ।
लोकोत्तर सुख मिले यही है भावना ॥
इसीलिये निज ध्यान प्रिये अब श्रेष्ठ है ।
आकुलता है जहां वहां सुख है कहां ॥
पेहिक सारे काम कष्टके गेह हैं ।
वनमें जो आनन्द नहीं प्रासादमें ॥
कनक पीजड़े मध्य कीर क्या हो सुखी ?
फिरता है स्वच्छन्द मृगेन्द्र अरण्यमें ॥
भावेगा क्या कभी उसे कंचन-सदन ?
घुम रहा हूं मैं कबका संसारमें ॥

पाये सब ही कष्ट बचा नहि एक भी ।
आती उनकी याद हृदय यह कांपता ॥
पड़े कौन जन जान वृक्ष कर गत्तमें ।
मुख अभिलाषी सभी केहरी कुन्थु तक ॥
कौन कंटकाकीर्ण पंथमें जायगा ।
विश्व बेलिके लिये तपस्या है छुरी ॥
तपमें ही है सार जान मैंने लिया ।
इससे आग्रह नारी ! तुम्हारा व्यर्थ है ॥

राजुक—

प्रभुवर कोमल अंग आपके फूल सम ।
सह सकते हैं नहीं कठिन आतापको ॥
घोर तपस्या नाथ ! खड्गकी धार है ।
रहो सदनमें यही सोच आरामसे ॥
हे अरण्य दुख भूमि जन्तुओंसे भरा ।
नाग सिंह गजराज मत्त जिसमें रहें ॥
पग पगपर हैं शूल नाथ पछताओगे ।
यह वय है मुकुमार न तपके योग्य हैं ॥
दासी अरु सब राजपाट किसके लिये ।
आवेंगे ये उच्च महल किस काममें ॥
गजपर हो आरूढ़ कौन निकला करे ।
किसका लखके वदन लोग होंगे मुदित ॥
तप करना ही नाथ तुम्हें जो इष्ट था ।
योग्य नहीं था आश सूत्रमें बांधना ॥
की थी मैंने हृदय सौख्यकी कल्पना ।
चूर चूर होगई हाय ! वह आज सब ॥
नहीं बांधते आप प्रणयके सूत्रसे ।
आती इस विध कभी दुःख वेला नहीं ॥
खिले हुए हैं यहां पुष्प चारों तरफ ।
सूख रहा है वेग नाथ ! यह मन कुसुम ॥

थोड़े दिन तुम सौख्य भोग फिर तप करो ।
होता यौवन वेग सदा अनिवार्य है ॥
ब्रह्म जाते जिसमें गजेन्द्र तक भी सहज ।
उसी नदीमें तुच्छ शशक क्या नहि बहे ॥
कर सकते आधीन मनुज अहिराजको ।
बांधे बन्धन मध्य मत्त गजराजको ॥
जिनका बल अवलोक इन्द्र भी कांपता ।
हो जाते हैं विकल सभी वे मारसे ॥

नेमिनाथ—

मुख फाड़ यमराज भिये बैठा हुआ ।
नहीं अघाता बार बार खाकर हमें ॥
सबके प्रति ही सदा एक सा भाव है ।
बाल, वृद्ध या युवा आदि नहि देखता ॥
कब यह घोंटे गला नहीं इसकी खबर ।
चलता इसका चक्र प्राणियों पर सतत ॥
वैसे रक्षक एक दूसरेके सभी ।
चलता किंचित जोर न यपके सामने ॥
उत्तम ही है प्रथम न पडना पङ्कमें ।
पड़कर कीचड़ मध्य उसे धोने फिर ॥
आती उनकी घोर मूर्खता पर हँसी ।
खाकरके जो गरल औषधी खोजते ॥
कहता उनको बुद्धिमान कोई नहीं ।
विषय भोग मैं पाप-पोटरी लूँ बढा ॥
चलना मेरा सहज शीघ्र दुःसाध्य है ।
फँसा अनेकों बार विषयके कीचमें ॥
तृप्त हुई क्या कभी हृदयकी वासना ।
बढ़ती ही वह गई पूर्ण उसको किया ॥
ऐसेमें ही अन्त जावका हो रहा ।
होती तृप्तसे तृप्त कभी भी अग्नि क्या ॥

कभी अघाता सरित नीरसे क्या उदधि?
विषयोंमें मुख नहीं कष्ट ही कष्ट है ।

राजुर—

प्राणनाथ ! दो भीख विपुल करुणा करो ।
अकथनीय हो रही हृदयकी वेदना ॥
मुनकर मेरी व्यथा वायु भी थप गई ।
करते हैं नहिं शब्द देख लो विहग गण ॥
तन मन मैं सब सौंप चुकी हूँ आपको ।
हे जीवनआधार ! आज जाऊँ कहाँ ॥
भमरी तजकर कमल कहाँपर जायगी ।
उमड़ रहा है शोक-सिंधु इस चित्तमें ॥
वरसाने हैं नयन इसीसे अश्रु-जल ।
रोते हैं निर्जीव श्रवण करके रुदन ॥
सहृदय हो हे नाथ ! हृदय न पसीजता ।
चलो सदन अब नाथ छोड़ सब रोषको ॥
लिपट रहूँगी लता सदृश मैं प्रेमसे ।
बस भविष्यमें शीघ्र फलेगी कामना ॥

नेमिनाथ—

प्राणप्रिये ! सब भांति तुम्हें समझा चुका ।
होना मेरे लिये व्यथित सुखकर नहीं ॥
सत्य विचारो एकवार इस विश्वके ।
सारे ही सुख होने क्रमसे नाश हैं ॥
जो कुल निश्चित किया, करूँगा मैं वही ।
होओ यों न अधीर चित्तमें इस समय ॥
रोनेसे दुख दर्द दूर होता नहीं ।
विदुषी होकर करो न व्यर्थ प्रलाप अब ॥



परदा ।

(ले०—साहित्यग्न प० सिद्धसेनजी जैन गोयलीय-उज्जयिणी)

सारमें कोई कार्य बिना कारणके नहीं
होता है इस बातको सभी मानते
सं हैं । परदेका रिवाज कबसे, क्यों
चला ? तथा यह उचित है अथवा अनुचित ?
उचित है तो कहाँ तक ? क्या बिना परदे हमारा
कार्य हो ही नहीं सकता ? पुरातन स्त्रियाँ सती
सीता, पद्मिनी आदि क्या सभी परदा रखती थीं ?
इत्यादि प्रश्न इस विषयमें बराबर उठते हैं । इस
विषयमें इन सभी प्रश्नोंका समावेश करते हुए
उनका उत्तर देना यह मेरा विचार बहुत दिनोंसे
हो रहा था जिसको आज सर्व समाजके सन्मुख
प्रस्तुत करता हूँ ।

भूमंडलमें जितने भी देश सभ्य और उन्नत-
शाली हैं अथवा रहे हैं उन्होंने कभी भी परदेकी
प्रथाका आदर नहीं किया । अबसे दो अढ़ाई
हजार वर्ष पहिले तथा उससे बहुत पीछे तक
भारतमें परदेका रिवाज नहीं था । स्त्री पुरुष
दोनोंको पूर्ण रूपसे खुले मुँह रहनेकी स्वतंत्रता
प्राप्त थी । प्राचीन इतिहास तथा शास्त्र इस
बातके साक्षी हैं । सीता, अंजना, द्रौपदी, चेलना
आदि आदर्श महिलाओंने कभी घूँघट (परदा) नहीं
निकाला । सीताजी स्वयंवरमें मुँह ढक कर नहीं
गई थी । स्वयंवरमें बाहरसे आये सैकड़ों राजकुमार
उनके सामने बैठे हुये थे । वे बिना किसी

प्रकारके भय या संकोचके स्वयंवर मंडपमें गई थीं और उन्होंने सबके सामने रामचन्द्रजीके गलेमें फूलमाला डाली थी । उसके बाद भी कहीं किसी भी शास्त्रमें ऐसा देखनेमें नहीं आता कि उन्होंने किसीको देखकर परदा कर लिया हो । बनवासके समय वे रामचन्द्रजीके साथ रही थी ।

जबसे परदेकी प्रथा चली है, परदोंमें शादियां होना शुरू हुवा है तबसे यथायोग्य सम्बन्ध नहीं होता । अनमेल विवाहकी जड़ भी यदि परदेको कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी ।

राजा श्रेणिककी रानी चेलना श्रेणिक महाराजके साथ मंदिरोंमें, उद्यानोंमें तथा वनों उषवनोंकी शोभा देखनेके लिये खुले मुंह जाती थी । भगवान महावीरके शमवशरणमें स्त्रियां उसी तरह खुले मुंह गई थीं जिस प्रकार पुरुष गये थे । चन्द्रगुप्त मौर्य के समयमें सीरया के राजा सेल्युकसने अपने दूत मेगास्थनीजको भारतमें भेजा था । उसने भारतकी उस समयकी सामाजिक अवस्थाका हाल लिखा है । जिससे प्रगट है कि उस समय स्त्रियोंमें परदेकी प्रथा नहीं थी । सातवीं शताब्दीमें महाराज हर्षकी बहिन राजेश्वरी देवी महाराज हर्षके साथ राजसभामें बैठी थी और सर्व प्रकारसे राजकाजमें सहायता देती थी । वह आज कलकी स्त्रियोंकी भांति घरकी चार दीवारीमें बन्द नहीं रहती थी । बारहवीं शताब्दीमें कन्नौतके राजा जयचन्द्रकी पुत्री संयोगिता खुले मुंह स्वयंवरमें गई थी । उदाहरणोंसे पुराण भरे पडे हैं ।

इसी प्रकारके अनेक दृष्टान्तोंसे यह सिद्ध

है कि १२ वीं शताब्दी तक भारतमें परदेका नाम भी किसीको मालूम न था । इसमें संदेह नहीं कि राजमहलोंमें खोजे लोग नौकर रहते थे, परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि स्त्रियां पुरुषोंको देख नहीं सकती थी अथवा घरकी चार दीवारीके अन्दर बन्द रहा करती थी ।

बारहवीं शताब्दीके पश्चात् भारतमें मुसलमानोंका प्रवेश हुआ । मुसलमानोंमें स्त्रियोंको परदेके भीतर रखना धर्मानुकूल समझा जाता है । अतएव उनकी स्त्रियां परदेके अन्दर रहती थीं । इस परदेके कारण ही आज काबुलमें कैसा घोर संग्राम छिड़ा हुआ है । राजाका प्रजापर प्रभाव पड़ता है । राजाके आचार, व्यवहार, रहनसहन और रीतिरिवाजोंका प्रजा प्रायः अनुकरण किया करती है, जैसे कि आजकल अंगरेजोंका राज्य होनेसे बहुत लोग हैट (Hat), कोट, पतलून आदि पहनने लगे हैं । एक तो भारतवासी अपने मुसलमान राजाओंको परदेमें स्त्रियोंको रखते देखकर स्वयं भी अपनी स्त्रियोंको परदेमें रखने लगे, दूसरे मुसलमान राजा जिस सुन्दर हिन्दू कन्याको देखते थे उससे विवाह कर लेते थे । राजाके सामने प्रजाकी क्या चल सकती है ? लाचार हिन्दुओंने अपनी कन्याओं और स्त्रियोंको घरके अन्दर बन्द रखना ही उचित और समयानुकूल समझा कि जिससे न उनकी कन्याओंपर वधवोंकी दृष्टि पड़ेगी और न वे अपनी कन्याओंको मुसलमानोंको देनेके लिये बाधित किये जायंगे । इन दोनों कारणोंसे धीरे-धीरे भारतमें परदेकी प्रथा दृढ़रूपसे प्रचलित

होगई । अतएव भारतमें परदेकी प्रथाके कारण मुसलमान लोग ही हैं । इसका एक स्पष्ट प्रमाण और है और वह यह है कि भारतमें भी जिन प्रांतोंमें मुसलमानोंका जोर नहीं हुआ वहां अब भी परदेकी प्रथा नहीं है । ऐसे प्रांत मद्रास, गुजरात और महाराष्ट्र हैं । जहां स्त्रियां खुले मुँह रहती हैं और दूसरेको देखकर आध-गज लम्बा घूंघट नहीं निकालतीं । मुसलमानोंका जोर पंजाब व संयुक्त प्रांतमें अधिक रहा, अतएव इन्हीं प्रान्तोंमें परदेकी प्रथा विशेष रूपसे प्रचलित है ।

यह नियम है कि जब कोई बात कई पीढ़ियों तक एक रूपमें चली जाती है तो फिर वही उचित और धर्मानुकूल समझी जाती है । लोग उसे छोड़ना नहीं चाहते किन्तु उसके छुटानेवालोंको बुरा बताते हैं । यही हाल आज कलकी परदेकी प्रथाका है । कई सौ वर्ष तक मुसलमानोंके शासनमें रहनेके कारण आज यह हालत होगई है कि परदेकी प्रथा अच्छी ही नहीं किन्तु धर्मानुकूल बताई जाती है । परन्तु अब देखना यह है कि आज कल परदेकी प्रथा लाभदायक है या हानिकर ?

आजकलके जमानेमें कोई व्यभिचार सम्बन्धी ऐसा अध्याचार नहीं किया जाता कि जो अच्छी कन्या या स्त्री उनकी पसंद आवे वे उससे बलात् शादी करलें अथवा और कोई जबरन कार्यवाही करें । अतएव यह भय कि राजा बलात्कार किसीकी सुन्दर कन्याको लेलेगा किसीके मनमें भी नहीं आसक्त ।

अबसे बड़ा दूषण जो परदेके पक्षपानी परदा

उठा देनेके विषयमें उपस्थित करते हैं वह यह है कि परदेके उठ जानेसे शील धर्म उठ जायगा, और स्त्रियां व्यभिचारिणी बन जायेंगी । परन्तु यह दूषण सर्वथा मिथ्या है । प्रथम तो यदि परदेके न रहनेसे शील धर्म भंग होता है तो इसका यह अर्थ हुवा कि जिन देशों और प्रान्तोंमें परदेकी प्रथा नहीं है वहां शीलधर्मका अभाव है । अर्थात् मद्रास महाराष्ट्र और गुजरातादि प्रान्तोंमें जहां परदेका नाम भी नहीं, व्यभिचारकी वृद्धि है और जिन प्रान्तोंमें परदेकी प्रथा है वहां शील धर्मका सद्भाव है ! अथवा पंजाब, संयुक्त प्रान्त, देहली, कलकत्ता आदिमें जहां एक ओरसे दूसरे छोर तक परदेका प्रचार है सदाचार और शील धर्मकी वृद्धि है ! इसमें क्या प्रमाण है ? कुछ भी नहीं । केवल मनमानी बात है । जिन लोगोंको भिन्न प्रान्तोंमें रहनेका अवसर मिला है वे इस बातको कह सकते हैं कि दक्षिणकी स्त्रियां कैसी सुशीला और पति-भक्ता होती हैं ।

दूसरे परदे और शीलका कोई सम्बन्ध नहीं है । परदेमें रहते हुये भी हजारों स्त्रियां शील धर्मको भंग कर सकती हैं और कर ही रही हैं और परदेमें न रहते हुए भी लाखों स्त्रियां उत्तमशीलकी रक्षा कर रही हैं । शीलका सम्बन्ध ज्ञान और शिक्षासे है । जिस स्त्रीके ज्ञान और शिक्षा नहीं है चाहे उसे आप हजार तालोंके भीतर भी बंद करके रक्में तो भी वह शील धर्म पर स्थिर नहीं रह सकती, परन्तु जिस स्त्रीमें ज्ञान है वह खुले मैदानमें रह कर भी शीलसे नहीं डिग सकती ।

एक राजकुमार एक सुशील एवं विदुषी स्त्री पर मोहित हो गया था, राजकुमारने उससे अपनी इच्छा पूर्ति करनी चाही-इस पर वह स्त्री कहती है:—

मैं पत्नीकी झूठन भई, भोगन योग न आन ।
जो मेरी इच्छा करे, कै कागा कै श्वान ॥

इतना सुनते ही राजकुमारको होश आया और इस कार्यसे उसे घृणा हुई । यदि स्त्री विदुषी न होती तो एक राजकुमारके सम्बन्धसे वह अपने शीलको बढवा ऋगा लेती इसमें कोई विस्मय नहीं था ।

ऐसे उदाहरणोंसे इतिहास भरपूर है । सीता, द्रौपदी, अंजना आदि विदुषी स्त्रियोंपर कैसीर आपत्तियां आईं । परन्तु उन्होंने शीलव्रतको भंग नहीं किया । सीताजीको रावणने कितना फुसलाया और लालच दिया । परन्तु वह सर्वथा रावणके अधिकारमें होते हुये भी अपने धर्मसे च्युत नहीं हुई ।

सीता पर्दा नहीं करती थी, इतना होने हुए भी लक्ष्मणने कभी मुँह तो क्या सीताके हस्तादिक भी नहीं देखे: जो निम्नश्लोकमें प्रगट होता है:—

कङ्कणं नैव जानामि, नैव जानामि कुण्डलं ।
नूपुरमेव जानामि नित्यं पादाभिवन्दनान् ॥

इसे कहते हैं—“शील” धन्य है ऐसे पुरुषोंको !

टाड राजस्थान—के देखनेसे कितनी ही राजपूत रमणियोंके ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि जिन्होंने ऐसी बुद्धिमानीसे अपने धर्मकी रक्षाकी कि जिसे पढ़कर पुरुषोंको भी अपना सिर नीचे

करना पड़ता है । चित्तौड़के राजा भीमसिंहकी रानी पद्मिनीका चित्र देखकर दिल्लीका यवन बादशाह अलाउद्दीन मोहित होगया था । उसने भीमसिंहको कैद कर लिया था और कह दिया था कि मैं तुम्हें तभी छोड़ सक्ता हूँ कि जब तुम अपनी रानीको मुझे दे दो । यह बात पद्मिनीको भी मालूम होगई ।

उसने तुरत अलाउद्दीनको कहला भेजा कि आप चिन्ता न करें मैं अभी आती हूँ । वह मर्दाना वेश कर और सातसौ डोलों (पालकियों) में ७०० वीर सिपाहियोंको बिठला कर बादशाहके डेरमें पहुंची और बादशाह व उसके आदमियोंको हराकर अपने पतिको कैसे छुड़ा लाई सो सब जानते हैं । क्या परदेवाली स्त्री ऐसी बहादुरीका कार्य कर सकती है ? खैर !

मुगल बादशाह अकबर मीनावाजार लगवाया करता था और उसमें राजपूत रमणियोंको सौदा खरीदनेके लिये बुलवाया करता था तथा स्वयं भी जनाने वेषमें वहां जाया करता था और जिसे चाहता था उससे अपनी इच्छा पूरी किया करता था ! एक दिन बीकानेरके राजा पृथिवीसिंहकी रानी रातको सौदा खरीदने कट गलीमेंसे जलद्वीर अपने घरको जा रही थी कि इतनेमें एक मनुष्यकी आवाज उसे सुनाई वी और क्षणभरके पश्चात् वही मनुष्य सामने आकर रास्ता रोक कर खड़ा हो गया । यह अकबर ही था ! जब रानीने अपने बचावकी कोई सूरत नहीं देखी तो वह अपनी कमरसे कटार निकाल कर शेरकी तरह उस पर कूद पड़ी और उसकी

गर्दन पर कटार रख कर कहने लगी कि यदि तू अपनी जान बचाना चाहता है तो इस बातकी कसम खा कि आजसे मैं किसी राजपूत रमणीसे ऐसा इरादा न करूंगा। देखिये, वह भी स्त्री थी। उसने किस प्रकार अपने तथा अपनी बहिनोंके शीलधर्मकी रक्षा की।

अतएव यह कहना कि परदा शीलधर्मको बचाता है सर्वथा मिथ्या है। परदेसे सिवाय हानि के कोई लाभ प्रतीत नहीं होता। सबसे बड़ी हानि जो परदेसे हो रही है वह यह है कि तंगमकानोंकी चार दीवारीके अन्दर रहनेसे स्त्रियोंका स्वास्थ्य खराब हो जाता है। शहरोंमें ऐसे छोटे-से मकान होते हैं कि उनमें ताजी हवा और सूर्यके प्रकाशका प्रवेश भी नहीं होता। बाहर कहीं आ जा नहीं सकती। परिणाम यह होता है कि ज्वर, मंदाग्नि, संग्रहणी आदि रोग वेचारियोंको घेर लेते हैं और वे शीघ्र ही मृत्युका ग्रास बन जाती हैं। यदि कुछ दिनों तक जीती भी हैं तो नित्य किसी न किसी रोगमें ग्रसित रहती हैं और जो संतान उत्पन्न करती हैं वह भी दुर्बल और रोगी होती हैं। कलकत्ते, बम्बई आदि बड़े-से शहरोंमें तो परदेवाली स्त्रियोंकी आफत है यही कारण है कि बहुतसे आदमी अपनी स्त्रियोंको वहां नहीं ले जाते। गांवकी स्त्रियोंका स्वास्थ्य शहरकी स्त्रियोंकी अपेक्षा अच्छा होता है। इसके यही कारण है कि गांवमें एक परदा अधिक नहीं होता दूसरे वहांके मकान लम्बे चौड़े और खुले हुए होते हैं। शहरोंमें मकानोंका किराया इतना अधिक

होता है कि साधारण स्थितिके मनुष्य बड़े और खुले मकान नहीं ले सकते। अतएव शरीर रक्षा, स्वास्थ्य रक्षा एवं दीर्घ व उत्तम जीवन बनानेके लिये इस बातकी आवश्यकता है कि परदेकी पथा उठा दी जाय। ऐसा करनेसे स्त्रियां उद्यानोंमें जाकर स्वच्छ वायुका सेवन कर सकती हैं। ऐसा करनेसे उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, उनकी संतान भी स्वस्थ होगी।

घरकी चारदीवारोंके भीतर बंद रहनेसे दूसरी बड़ी हानि यह है कि उनकी शिक्षाका समुचित प्रबंध नहीं हो सकता। शिक्षामें परदा सकावट डालता है। कारण कि हरएक आदमीके घरमें तो स्कूल हो ही नहीं सकते और बाहर परदेके कारण जाना नहीं हो सकता। यदि परदा उठा दिया जाय तो स्त्रियोंके लिये शिक्षाका मार्ग खुल सकता है और यह विचार कि अब कन्या सियनी (बड़ी) हो गई, अब इसका क्या हो गया, अब इसे बाहर नहीं निकालना चाहिये, मनसे निकल जायगा और छोटी बड़ी उम्र ही सभी कन्यायें पाठशालाओंमें पढ़नेके लिये जा सकेंगी।

तीसरे परदेके न रहनेसे स्त्रियोंका ज्ञान बढ़ेगा। आजकलकी स्त्रियोंको सिवाय घरकी बातोंके और किसी भी बातका ज्ञान नहीं होता। उनके विचार संकुचित रहते हैं। जिन प्रांतोंमें परदेकी पथा नहीं है वहांकी स्त्रियां परदेवाली स्त्रियोंकी अपेक्षा अधिक चतुर और ज्ञानवान होती हैं यह बात स्पष्ट है। इसके लिये किसी प्रमाणकी आवश्यकता नहीं है।

સામાજિક-સમસ્યા ।

લેખક:-મોહનલાલ મથુરાદાસ-કમ્પાલા (આફ્રિકા)

બહાલા વાંચકવૃંદ !!!

પ્રાણી માત્રને સત્ ઉપદેશ આપી જેણે મોક્ષ પંથ મોકળો કરી આપ્યો છે, એવા સર્વશુભ-સંપન્ન શ્રી મહાવીર સ્વામીને નમસ્કાર કરી આપની સેવામાં આપણા સમાજના મહત્વના પ્રશ્નો ઉકેલ કરતી એક સમસ્યા રજૂ કરું છું, મને કમેદ છે કે-તે સાંપ્રત સમયમાં મારા વાંચકવૃંદને લાભદાયક નિવડશે.

આ લખાણ એ આપણા દિ. જૈન સમાજના વ્યોત્ક્રમ વકીલ બાબુ સુરજલાલ સાહેબના આપણુ ઉપરથી ઉપજાવી કાઢેલ હોષ આપણે તે સમાજરત્નનો આભાર માનવો જોઈએ.

વિવિધને અનુકૂળ દૃષ્ટાંત એ સ્વયં ઉપજાવી કાઢેલ હોષ તે કામ જાતિવાળાએ પોતાને ગિર ખેંચી લઈ કપાયવશ થવાની જરૂર નથી.

મનુષ્ય માત્ર પર હું સમાનતાની નજરે નિહાળતો હોઉં મને તે કાંઈ કહેશે તેથી મને જરાપણ હર્ષ શોક નથી.

આટલું સ્પષ્ટીકરણ કર્યા પછી હવે હું વિવિધ તરફ વળીશ.

મહાનુભાવો ?

આજકાલ દુનિયા પરના બધા ઇતિહાસિક પુસ્તકોને એ ત્રણ માન્ય થઈ પડી છે કે પૂર્વના સમયમાં આ હિંદુસ્તાન એકજ દેશ દુનિયાના બધા દેશો કરતાં આત્મિક ઉન્નત અને સદાચારનું કેન્દ્ર હોઈ જ્ઞાનના ભંડાર સમ હતા. અને તેથીજ તે વખતે હિંદુસ્તાન દુનિયાના બધા દેશો પર શિશોમણી ગણાતું પરંતુ પાછળથી હિંદુસ્તાનમાં એવો અંધકાર છવાયો છે-કે હિંદુસ્તાનના લોકોએ

પોતે શુશ્રુવાન યતનું અનાવસ્થક માની પૂર્વજોની મોટામથીજ પોતાની મોટામ મનાવવા માંડી છે.

હમારા પૂર્વજો શુશ્રુવાન અને ધર્માત્મા હતા, જેથી તેમના વંશમાં ઉત્પન્ન થયેલા હમો પણ પવિત્ર હીએ એ એકજ ખેંચતાણુને લઈ દેશ-ભરમાં કલહવું બગર બહુ મરમ થઈ ગયું છે અને તેનું યજ્ઞ એ નીકળ્યું કે-જ્ઞાન-ધ્યાન-ધર્મ-કર્મ-વિદ્યા-મુદ્ધિ-અને પુરંપાર્ય એ સર્વ નાશ પામી પ્રાચીન ગૌરવ પણ નાશ પામ્યું છે. સાથેજ હિંદુસ્તાનના લોકોના ધણાજ વિભાગ પડી ગયા છે. અને તેઓ એક ખીબના હાથનું ખાતું-પીવું ને ખેડી વહેવાર પણ કરતા નથી. તે તેમાંજ ધર્મને ગૌરવ માનવા લાગ્યા છે.

કોઈ માણસ પડી તે ગમે તે પાપ-ગુણ-દુર્ગા-બાણ, અન્યાય, ચોરી, વ્યભિચાર કરે તેથી તેનો ધર્મ જતો નથી. પણ એક જાતીનો આદમી બીજી જાતીના આદમી સાથે રોડી-ખેડી વહેવાર કરે તો, તેનાં સંતાન અજ થઈ જાય છે. સેંકડો પેદા થયા પછી પણ તે શુદ્ધ થતાં નથી. માનો તેને શુદ્ધ કરવાનો ઉપાયજ નથી, એમ માન્યતા થઈ પડી છે.

શોક, મલાશોક ! જે દેશ શુણીની ખાણ હતા. તેજ દેશ એવા અંધારા કુવામાં પડ્યો છે. એ નકામી આભડછેટનું પરિણામ એ આવ્યું કે હિંદુસ્તાન બદારના લોકો કે જેને આપણા લોકો જુદા ધર્મથી અત્યંત નીચ નજરથી દેખતા હતા. તેઓજ હિંદુસ્તાન પર ચઢી આવ્યા. તેઓ જે લોકો પોતાને શુદ્ધ અને ગૌરવશાળી માનતા હતા તેમના પર રાજ્ય ચલાવવા લાગ્યા. એવી રીતે હિંદુસ્તાનના લોકો અપમાનીત થયા તેમણે તેમનાં

કર્મનું ણ ભોગવ્યું. તોપણ આપણા લોકોમાંથી એક ખીજી જાતીઓને ઉંચી નીચી માનવાનો નિશો ન હતો, ને આપસમાંનો વિરોધ દૂર ન થયો. કુટકાટ હતી તેમજ રહી. અરે ! તેથી પણ વધી અને તેજ વિરોધ ધર્મનો આધાર થઇ પડ્યો. ને તે જાતીઓથી પણ કેટલીક ઉપજાતીઓ થઇ. તે પણ એક ખીજીથી રોટી-ખેટી વહેવાર ન કરવામાં ધર્મ માનવા લાગી છે.

હાય ! તેનાથી પણ વધારે શોક તેનો થાય છે કે-જૈન ધર્મ મનુષ્ય માત્રની એક જ જાતી માને છે અને સિદ્ધ કરે છે કે-ગાય-ભેંસ આદિ પણ એક ખીજીથી ગર્ભ ધારણ કરી શકતાં નથી. પણ મનુષ્યોમાં તો બ્રાહ્મણ-ક્ષત્રી-વૈશ્ય-શૂદ્ર એઓના શરીરમાં જરા પણ ફેર નથી. કે તે જુદી જાતના ઓળખાય, તેઓ તો એક ખીજીથી ગર્ભ ધારણ કરી શકે છે તો પછી તેઓને જુદી જુદી જાતના કેમ કરી મનાય ? જાતિ તો બધા મનુષ્યોની એક છે. તેમાં વળી જે જૈન ધર્મ, કે-જેમાં બતાવ્યું છે. કે. ચણ્ડાલનો પુત્ર પણ જે ધર્મનો શ્રદ્ધાની થાય, તો તે દેવોથી પૂજાય છે, તેમજ અનુક્રમે મોક્ષ પણ જઈ શકે છે. મહાત્મા રૂપમદેવના ચક્રવર્તી પુત્ર ભરતજીએ ઘણી મ્લેચ્છ કન્યાઓથી વિવાહ કર્યાના દાખલા શાસ્ત્રોમાં મળી આવે છે, છતાં તેમને ધર્મ કે જાતિમાંથી ચ્યુત કર્યાની વાત કોઇપણ ગ્રંથમાંથી મળી આવતી નથી. તેમજ મ્લેચ્છ કન્યાઓથી પુત્રો પણ ઉત્પન્ન કર્યા હતા. છતાં તેમનામાં કે-તેમના વંશ-જોમાં જરા પણ ફેર પડ્યો નહોતો.

વળી જૈન શાસ્ત્રોમાં જણાવેલું છે કે-મ્લેચ્છ દેશમાંથી આવેલા મ્લેચ્છો પણ તત્વાર્થના શ્રદ્ધાન પૂર્વક જૈન ધર્મ ધારણ કરવાથી સુની દીક્ષાને લાયક થાય છે. તેની સાથે જ જૈન શાસ્ત્રોમાં એવું સાદું જણાવેલું છે-તમારા દેશમાં જે મૂઠ-અનપઠ-અને હુટકાટ કરનારા, તેમજ પ્રજાને ત્રાસ આપનારા મનુષ્યો હોય તેમને ઉપદેશ આપી તેમની શુદ્ધિ કરી જૈન બનાવો કે

જેથી તે ઉચ્ચ ચારિત્રવાળા થઇ જૈન ધર્મનો ફેલાવો કરે.

આપણા પૂજ્ય મહાવીર સ્વામીએ એવી રીતે ઘણી જાતિઓનો ઉદ્ધાર કરી જૈન ધર્મનો અંડો ધરકાવ્યો હતો. જેના દરેક ગ્રંથોમાં જાતી અને કુળનો અહંકાર કરનારને નીચ અને પાતકી ગણેલા છે. તેવા જંતીઓમાં પણ જાતિ મદ અને આપ-સમાં વિરોધ એવી રીતે ધુસી ગયાં છે કે-જેથી તેઓ પોતાનો ધર્મ પાળતી પોતાની જાતીઓ જોડે રોટી-ખેટી વહેવાર કરતાં અચકાચ છે.

હાલના સમયમાં જૈનો પણ હિંદુસ્તાનની ખીજી જાતિઓ માફક અગણિત જાતી અને ઉપજાતીમાં વહેંચાઇ ગયેલા છે. ને તેઓ અન્યોન્ન-રોટી-ખેટી વહેવાર કરતા નથી. તેમજ કરનારને જાતી બ્રષ્ટ થયેલા માને છે, જેથી તેમની સંખ્યા દિન પ્રતિદિન ઘટતી જાય છે. જે ઘટતાં ઘટતાં હાલ દિગમ્બર સ્વેતાંબર અને સ્થાનકવાસી ત્રણે મળી ફક્ત ૧૧૧૧ લાખજ રહી છે. અને તેમાંથી પણ દિન પ્રતિદિન ઘટતી જાય છે. જે વર્તમાન કાળની ઘટતી જતી સ્થિતિ એવી જ રીતે ચાલુ રહેશે તો સો કે સવાસો વર્ષમાં દુનિયા પરથી જૈન માત્રને લુપ્ત થવા સંભવ છે. કેટલો હૃદયવિદારક બનાવ ?

હાય ? જે જૈન ધર્મ સંસાર બરનો ધર્મ હતો, તે ઘટતાં ઘટતાં ફક્ત વાણીયાનો ધર્મ છે, એમ જણાવા લાગ્યું ને તે પણ ઘટતાં ઘટતાં એમ લોપ થઇ જાય ? હાય, શ્રી મહાવીર સ્વામીના નિર્વાણ ગમનને પુરાં ત્રણ હજાર વર્ષ થયા નથી, તેટલામાં જ તેનો લોપ થાય ? ખેદની વાત છે, સંસારમાં દ્રષ્ટિપાત કરતાં આપણી વસ્તીના ઘટારાનું ખર્ કરણ જાતી-ઉપજાતી તડ અને પેટાતડમાંના ભેદભાવ સિવાય કંઈ જણાવું નથી.

આજકાલ સુધરેલા વર્ગ રોટી વહેવાર ત્યાં ખેટી વહેવાર દાખલ કરવાની ઝુબેશ ઉઠાવી રહ્યો છે. તેને કેટલાક વઢો આદરણીય ગણી તે પ્રમાણે

વર્તન કરવા તૈયાર થયા છે, ત્યારે જે સમાજનાં નાણાંથી ધર્મજ્ઞાન મેળવી પંડિત થએલા છે—જે સમાજનાં નાણાંથીજ પોષાય છે, તેજ પંડિતો તેને એટલે રોટી વહેવાર ત્યાં ખેટી વહેવારની ઝુંબેશને ધર્મ બ્રહ્મ થયો, એમ અતાવવાની દુષ્ટ ચેષ્ટા કરી રહ્યા છે. તેમને ખચર નથી કે તેમનાજ માન્ય કરેલા આદિપુરાણુ આદિ ગ્રંથોમાં સ્પષ્ટ રૂપથી લખેલું છે કે—**આહમણુ પણુ શુદ્ધની કન્યાને પરણી શકે છે.** શાસ્ત્રોમાં સેંકડો દાખલા મળી આવે છે કે—**ત્રણે વર્ણો પરસ્પર અને શુદ્ધોની પણુ કન્યા વહેવાર કરતા—પણુ આજકાલનો ખંડેલવાલ ને અગ્રવાલ, પોરવાડ ને હુંમડ, મેવાડા ને નૃસિંહપુરા, રાયકવાળ ને અધેરવાળ, ગોલાપુરવ ને પક્ષીવાળ, આદિ જાતીઓ જૈન હોવા છતાં અસ્પર્શ ખેટી વહેવાર કરી શકતાં નથી.** તેમજ તેવાં લગ્ન કરનારને પાતકી ગણી તેમનું પ્રાયશ્ચિત્ત પણ થઇ શકે નહિ, એમ માને છે.

મારા તે માનવંતા અંધુઓ હમેશ મંદિરમાં શાસ્ત્ર વાંચતા કે સાંભળતા હશે તો તેમના જાણુ-વામાં આવ્યુંજ હશે કે—**આગળના સમયમાં આપણા કેટલાક ધર્મીઓ અંધુઓએ ખેલે-છો, શુદ્ધ, બીલો અને વેશ્યાઓની કન્યાઓથી પણ વીવાહ કરેલા છે, છતાં સમાજે તેમને પ્રશંસાની નજરે જોઇ તેમનાં વખાણુ કરેલાં છે.**

આજકાલ ધણું કરીને તો હુઆહુત-એક ખાળના હાથનું જમવું નહિ, પાણી પીવું નહિ, આદિ હાસ્યારપદ નિયમોજ ધર્મ કર્મ ગણવા લાગ્યાં છે. આત્મ કલ્યાણના સ્થાનમાં અન્યાના ખેલજ ધર્મ મનાવા લાગ્યો છે, હયા ધર્મની જગ્યાએ ઠોંગ અને આજહછેટે ધર્મનું સ્થાન લઇ લીધું છે. અક્ષોસની વાત છે, કે જે મહાવીર સ્વામીએ હયા ધર્મનો પ્રચાર કરી દુનિયાની જાતિ જૈન બનાવી હતી. જેમણે દરેક જીવ સરખાજ ગણેલા છે. તેમનાજ પુત્રો જૈનો. આમનમાલ અને માય-કાંગલા થઇ ચોકા ચોષીમાં ધર્મ માનાવા લાગ્યા છે !

હમે અમુક જાતના આદમીના હાથનું જમવું

નથી. અમુકના હાથનું પાણી પીતા નથી. કપડાં બદલી-અખોટ કરીનેજ રસોઇ કરીએ છીએ. જે કોઇ અડકી જાય, તો હમારો રસોઇ અબડાઇ જાય છે. જેને ખાવાથી હમારો ધર્મ નષ્ટ થાય છે, તેથીજ હમો કપડાં બદલી રસોડામાં બેસી જમીએ છીએ. અને એવી ખીજ બધી વાતોને ધર્મ માનવો તે ધર્મની મસ્કરી કરવા જેવું છે. બેશક, સફાઇ અને તંદુરસ્તીના નિયમોનું પાલન કરવું, તે સભ્ય ગૃહસ્થોને માટે જરૂરી છે, તેનું તો જરા પણ ધ્યાન રખાતું નથી. પણ જાતિ-બેદ-અને દેષ પક્ષપાત અને લોક મુદતાનો ઠોંગ બનાવી ધર્મનું અદનામ કરી દેછે. ધર્મ તો તત્ત્વ શ્રદ્ધાન અને અહિંસાદિ પાંચ વ્રતોના પળવામાં છે. લૌકિક પ્રવૃત્તિ ગમે તેમ હોય તેને ધર્મ સાથે કાંઇ સંબંધ નથી.

તત્વાર્થ સુત્રમાં કહ્યું છે કે—

सर्व एव हि जैतानां प्रमाणं लौकिको विधिः ।

यत्र सम्पत्त्वं हानिं सेयत्र न व्रतदूषणम् ॥

પરંતુ તત્વાર્થનું તો જેને જરા પણ જ્ઞાન કે શ્રદ્ધાન નથી. તે નાહક મિથ્યાત્વનું સેવન કરે છે. દુરુર અને કુદેવોને વ્રણીજ શ્રદ્ધા અને ભક્તિથી પૂજે છે. અહિંસા આદિ અણુવતોમાંથી એક પણ વ્રત જે પાળતા નથી. તેમજ સાત વ્યસનનો પણ જેણે ત્યાગ કર્યો નથી, એવા કેટલાય જૈનો છે. કે—જે રોટી પાણી અને રસોડાની છુઆ-છુતને ખતાવી પોતાને મોટા ધર્મીયા માને છે. અને ખાળ કે જેઓ ધર્મશ્રદ્ધાની હોદ્દા મનુષ્ય માત્રને સમાન માને છે, તેમને અધર્મી કહી નીચી નજરે નિહાળે છે.

ભાઇઓ, કેવલજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયાપછી શ્રીમહાવીર-સ્વામીએ દેશે દેશે હુમી મનુષ્યો અને પણ પક્ષીઓ સર્વેને ભવસાગરથી પાર ઉતારવાનો કલ્યાણ માર્ગ બતાવ્યો હતો. તમે તેમનાજ અનુયાયી થવા માગતા હો, અગર હો તો તમારી ફરજ છે કે—તમે તેમના ઉપદેશને મનુષ્ય માત્રના હૃદયમાં પહોંચાડો, હિંદુ હોય કે મુસલમાન, ખ્રિસ્તી હોય કે બૌદ્ધ, આહમણુ હોય કે ચમાર, બીલ હોય કે ગોર, આર્ય

હોય કે, મ્હેન્ટ, હિંદુસ્તાની હોય કે વિદેશો ગમે તે હોય પણ તેને સત્ય સનાતન જન માર્ગનો ઉપદેશ આપી જન બનાવો.

ન્યારે આપણા આચાર્યોએ ચંડાળોને ઉપદેશ આપી જન બનાવ્યા છે, તો પછી તમે કેમ કરી બીજાને જન બનાવવામાં સંકોચ રાખો છો ? ભાઈઓ, હૃદયને ઉદાર બનાવશો ત્યારેજ તમારો આત્મા ઉન્નતિ કરી શકશે. હૃદયને સંકુચિત રાખવાથી અને નારકીઓની મારક દ્વેષભાવ રાખવાથી, આ દુઃખ સાગરમાં પછડાવા સિવાય બીજો રસ્તો નથી. માટેજ હું જૈનો, ઉદાર થઈ તમારા ધર્મનો લાભ બીજાને પણ આપો ? ને તે તૈયાર થતા જૈનોને તમે શેડી-ખેડી વહેવારથી અપનાવી લ્યો.

જો તમે તેમ નહિ કરો તો તમારા ધર્મને સ્વિકારવાળા જરૂર તેમ કરતાં અચકાશે. કેમકે તેઓ તેમની જાતિ-તેમનો ધર્મ છોડી તમારા ધર્મમાં આવે તો જરૂર તેમને કન્યાની આપ ક્ષેમાં વિશેષ પડે. માટે જ તમે તેમને તમારા સહધર્મી ગણી તેમની સાથે ઉભય વહેવારથી ન જોડાવો. તો જરૂર તેમને થોડા ટાઇમ બાદ અસલ ધર્મમાં જવું પડે. માટે તમારી ફરજ છે કે-તેમને જન બનાવી યથાયોગ્ય શેડી-ખેડી વહેવારથી અપનાવી લેવા.

શાસ્ત્રમાં કોઈ જગ્યાએ જુદી જુદી જાતી-ઓનું વર્ણન જોવામાં આવતું નથી, પણ સૌ પોત પોતાના ધર્મથી જુદા જણાય છે. પણ તેથી કોઈ અંદરે અંદર રાગદ્વેષ રાખી જુદા રહેલા જણાતા નથી. માટે દરેક જન માત્રે એકત્ર થઈ જન ધર્મને સાચવવાની ખાસ જરૂર છે. ને તે જાતી-ઉપજાતીઓનો નાશ કરેજ બનશે.

વળી તે ઉપરાંત જે જાતી નથી, તેમની સાથે પણ વલાલ કરતાં શીખો. જીવ માત્રની સાથે મિત્રી ભાવ રાખો, સર્વનું બહુ ધન્ય છે, દુઃખોને મદદ કરો, કોઈથી ધૂણી કરો નહિ, કોઈથી દુરમનાવટ પણ ન બાધો, જે મૂર્ખ હોય અને ઉલટો ચાલતો હોય તેને ઉપદેશ આપી સુધારો ? એના-

થીજ તમારો આત્મા ઉચ્ચ અને પવિત્ર થઈ શકે છે.

હવે રહી છુઆક્રુતની વાત-તે એક ભારેમાં ભારે રોગ હિંદુઓને વળગેલો છે. ને તે પ્લેગની મારક જૈનોને પણ ચઢેલો છે તેના છુટકારા માટે હિંદુઓમાં ધણાં ભારે આંદોલન થઈ રહ્યાં છે. તેવીજ રીતે આપણે જૈનોએ પણ તેને તત્કાળ દૂર કરવા પ્રયાસવંત થવું જોઈએ ?

છુઆક્રુતની નકામી આભડછેટજ હિંદુસ્તાનને મનુષ્યત્વહીન કરેલો છે. આત્મીક ધર્મને છોડી લોકો એ જુદા ઢોંગમાં પ્રસાધ છે. ચારે તરફ તપાસ કરવાથી જણાઈ આવે છે કે-હંમેશ દરેક ધર્મમાં બચ્ચાં પોતાનાં કપડાં મલમુત્રથી બ્રષ્ટ કરે છે. ને તેને તેની માતા ઘોષ સાફ કરી ખુશીથી કામમાં લે છે. તેવીજ રીતે ગંદકીથી સાફ કરેલાં પણ પણ અડકવા યોગ્ય છે તો પછી અરપસ્ય ગણેલી જાતી કે-જે આપણી મનુષ્ય જાતીનાં આદમી છે તેમને નહાઈ સાફ થઈ વસ્ત્ર પવિત્ર કરી પહેર્યા પછી જા માટે અડકવું નહિ જોઈએ ?

એક પુરૂષ પછી તે ગમે તેવો પવિત્ર રહેતો હોય, શરીર અને વસ્ત્રને સાફ રાખતો હોય, ગંદકીની ખાસે પણ ન જતો હોય, પરંતુ તે અક્રુતનું સંતાન છે, તેથી તેને અડકવું એ મહાપાપ છે, અને એવોજ બીજો એક પુરૂષ કે-જે નિત્ય ગંદો રહે છે, પણ બ્રાહ્મણને બાળક છે જેથી અડકવા યોગ્ય છે એવી ખોટી તરકીબથી આપણે બચવાની જરૂર છે. અને એવો વહેવાર રાખવો જોઈએ, કે-ચાહે કોઈ હમારો મિત્ર હોય, અગર ચાહે તે હોય, પછી તે ગમે તે ધંધો કરતો હોય, પણ જે વખતે તેનું શરીર તથા વસ્ત્ર ગંદકીથી ભરેલાં હોય, તે વખતે તે અપવિત્ર અને અડકવા લાયક નથી. પરંતુ જે વખતે તે સાફ થાય, તે વખતે તે અપવિત્ર અને અડકવા લાયક નથી પરંતુ જે વખતે તે સાફ થાય, તે વખતે તેને અડકવામાં કોઈ દોષ નથી.

બાહ્યો, પૂર્વના સમયમાં આપણે શુદ્ધ અને કારોગરો ઉપર ભારે જીલમ કરેલા છે તેવીજ રીતે સ્ત્રીઓ ઉપર પણ જીલમ કરવામાં આકી રાખી નથી. મને જે ઇતીહાસનું જ્ઞાન છે તે ઉપરથી હું સ્પષ્ટ રીતે કહી શકું છું કે-હિંદુસ્તાનની પડતીનું કારણ વિદેશીઓના હાથે ધર્મ સ્થાપોનું છુટાવું, અને આપણને ગુલામ બનાવવા તે બધાં આપણા તે ઘેર અન્યાય અને જીલમનાંજ કૃણ છે કે જે આપણે શુદ્ધ અને સ્ત્રીઓ ઉપર કરવા લાગ્યા છીએ. હજુ પણ જ્યાંસુધી આપણે તે મહાન અપરાધથી મુક્ત નહિ થઈએ, તેમના પર કરાતા જીલમ બંધ નહિ કરીએ, ત્યાંસુધી આપણે ગુલામીમાંથી છુટવાના નથી.

ક્યાંસુધી કહેવું ? થોડા વખત પહેલાં તો હિંદુસ્તાનમાં એવો જીલમ થવા લાગ્યો. કે-પોતાને ઉંચ જાતી અને ઉંચ કુળના માનનારા કેટલાક પોતાની કન્યાઓને જન્મતાંજ મારવા લાગ્યા હતા. જો કે-તે રિવાજ ધીમે ધીમે નાબુદ થતો જાય છે. પણ હજી એવો રિવાજ જરૂર છે કે-કન્યાનો જન્મ થતાં કુટુંબમાં ઉદાસી છવાઈ જાય છે. તેમજ છોકરી આપનાર માતાની તેમજ જન્મ લેનાર છોકરીની ખરદાસ્ત બહુજ ખેપરવાદથી કરવામાં આવે છે. કન્યાને રાંડ અને મરીજન કહી પોતાનું કાળજી હાંડુ કરવામાં આવે છે. કદી કોઈ પોતાની દશ વર્ષની કન્યા કોઈ સાઈ કે સીત્તર વર્ષના પુત્ર સાથે પરણાવે અગર તેનાથી એટલે કન્યાથી નાના બાળક સાથે પરણાવે. અગર કન્યાનું લીલામની માફક વેચાણ કરે તો પણ તે દ્વાધર્મી-જૈની-અગર ઉંચ કુળનો ગણાય છે. તેવીજ રીતે તે પરણનાર પુત્રને પણ ઉંચા કુળનો માનવામાં વાંધો આવતો નથી !

એક પુરુષ ગમે તેટલીવાર લગ્ન કરે, પરંતુ ગમન કરે-વેસ્થા ગમન કરે, તો પણ તે ઉંચ કુળનો મનાય છે. કેટલો અત્યાચાર ?

પ્યારા બાહ્યો, જ્યાંસુધી તમે આ ઘેર

અન્યાયને દૂર નહિ કરો. ત્યાંસુધી તમારો દ્વાધર્મી ધર્મ જમદગ્યાપી થવાનો નથી.

આપણે જૈનેશ્વરે ચાલુ સમયમાં કમર કસી વૃદ્ધલગ્ન-બાળલગ્ન-વ્યર્થ વ્યય-અને નકામી જમ-જીવારો બંધ કરવાની ખાસ જરૂર છે. જ્યાંસુધી બાળલગ્ન અને વૃદ્ધલગ્ન બંધ થશે નહિ. ત્યાંસુધી બાળ વિધવાઓની સંખ્યા વધ્યાજ જશે. અને તે સમાજને અપવિત્ર બનાવ્યાજ કરશે. તેમના ગુપ્ત અત્યાચારથી લાખો બાળહત્યાઓ સમાજને શિર ચોટશે. અને તેથી આપણો સમાજ પ્રતિદીન ક્ષીણ થતોજ જશે. માટે દરેક જણની જરૂર છે છે. કે બાળલગ્ન-વૃદ્ધલગ્ન બંધ કરવા કટીબદ્ધ થવુંજ જોઈએ,

તમે જ્યાં સુધી વૃદ્ધલગ્ન અને બાળલગ્ન બંધ નહિ કરો ત્યાં સુધી તમે ગમે તે બંધન નાંખશો તો પણ વિધવાઓ દ્રઢ રહી શકવાની નથી. તે ત્યાં સુધી તમારાથી વિધવા વિવાહના હિમાયતીઓને જડબાતોડ જવાબ પણ આપી શકાવાનો નથી. બાળ-વિધવાઓ કમતી થશે તોજ સમાજની ઘટતી સંખ્યા કાંઈક વધારા પર આવશે. વૃદ્ધ લગ્નેજ આપણા સમાજનું સત્યાનાશ કાઢી નાંખ્યું છે. કામવાસના નાબુદ થએલા વૃદ્ધ ખચ્ચરો બાળ વહુઓને લાવીનેજ બાળ વિધવાનો વધારો કરે છે ને તેથીજ સમાજની હજારો વિધવાઓને અનીતિને રસ્તે જવું પડે છે. ને કેટલીકને તો જન ધર્મનો સદાને માટે ત્યાગ કરી મુસલમાન કે વેસ્થાની જાતમાં બળવું પડે છે.

બાળવિધવા દ્વારા થતા અનર્થોનાં સેંકડો ઉદા-હરણ મૌજુદ છે, પણ તે બધાં જાહેર કરવાથી તમારે નીચું જોવું પડે. ને કદાચ મારે પણ તમારા દ્વારા કષ્ટમય ઝંખડામાં ઉતરવું પડે જ્યાં અત્રે એકજ કિદાહરણ ટાંચી આ લખાણને બંધ કરીશ.

(અપૂર્ણ.)



દશાહમહ જાતિમાં કુરિવાજો.

(લખક—કેશવલાલ એન. જૈન, લાકરોડા)

ગુજરાતની દશા હમહ જાતિમાં લગ્ન સંબંધી ધત્યાદી કુરિવાજોનાં મૂળ ઘણાં હાંડા ગએલાં જોવામાં આવે છે. અને તે કુરિવાજો આપણું કેટલું અહિત કરી રહ્યા છે, તે આપણે જાણવાની જરૂર છે. અને જો આ કુરિવાજોને આપણી કોમમાંથી નાબુદ નહિ કરવામાં આવે તો તે ભવિષ્યમાં શું નુકશાન કરશે તે આપણાથી કળી શકાતું નથી ?

૧-લગ્ન-વિવાહ—આપણી જૈન કોમમાં લગ્નનો ખરો અર્થ સમજવો મુશ્કેલ થઈ પડેલો છે. અત્યારે તો લગ્ન એટલે નાનાં બાળકોને પરણાવવાં. પ્રિય બંધુઓ, આપણા નાના કોમળ બાળકોને પરણાવવાથી ઘણા પુશી થઈએ છીએ, પણ જો ઘણાં હાંડા વીચાર કરી જોવાથી તે લગ્ન મુખ્યમથ નહીં પણ એક મોટું દુઃખ છે. કારણ કે નાના બાળકોને નાની વયમાં વિધા પ્રાપ્ત કરવાનો અમુલ્ય સમય છે. તે સમયે તેમને પરણાવવાથી નુકશાન થાય છે. આજકાલનું વાતાવરણ એવું હોય છે કે બાળકો અથવા બાળકીઓને આવા કુલ્દેહના પાડવાથી (લગ્ન કરવાથી) તે બાળકોના મગજ ઉપર વધુજીવ ખરાબ અસર આવે છે. ને તેનું પરિણામ આગળ વ્યભિચાર સિવાય કંઈ નીપજતું નથી, જે આપણી કોમની પડતીનું આ પહેલું પગથીયું છે.

આપણા બાળકોની પુખ્ત હોમરે સીવાય લગ્ન કરવાથી બાળકોનાં મગજને નુકશાન પહોંચે છે. તથા તે અનેક અર્થકર રોગના ભોગ થઈ પડે છે. અને તેવા બાળકો પોતાની દિવંતથી કોઈપણ કાર્ય કરી શકતા નથી અને તેમને પારકી આશા રાખી બેસી રહેવું પડે છે. વળી આવા બાળકોના પ્રતાપથી આપણી દિ. જૈન કોમમાં ૧૦૦૦ ધરની ન્યાતમાં ૮ થી તે ૨૩ વર્ષની સિધવાઓની

સંખ્યા તેરની છે (૧૩) તે તથા મોટી હમરની સંખ્યા ઓછામાં ઓછી ૫૦-૬૦ ની તો હશેજ. આવી રીતે આપણી કોમની પડતી દશા કરનાર એક બાળલગ્ન છે. તેને દૂર કરવા માટે મારા પ્રિય વીર યુવકોના માથેજ છે. ન્યાં સુધી વીર યુવકો આ કાર્યમાં હાથ રાખશે નહિ ત્યાં સુધી જૈન કોમની આ કંઝાલ દશા દીવસે દીવસે વધતીજ જશે.

અત્યારના જમાના પ્રમાણે હાલ લગ્ન થાય છે તે આપણે હવે જોવા તેમ જાણવાની જરૂર છે. અત્યારે કલિયુગ કહોકે અત્યારનું ઝેરી વાતાવરણ કહોકે ? આજકાલ લગ્ન થાય છે, તે લગ્ન વિષે કોઈ તાજાં દાખલો તરફ હવે લક્ષ્ય ખેંચીએ. દાખલા તરીકે આ ચાલુ સાલની અંદર આપણી દિ. જૈન કોમમાં લગભગ ૩૫-૪૦ લગ્ન થયા છે. તે લગ્ન પ્રત્યક્ષ જોતાં કંઈ નવાઈ ઉપજે તેવાજ હતાં. લગ્નના પાસમાં તપકાએલ કેટલાક બાળકો તો એવાજ હતા કે જેઓને પુરતું ધોતીયું પહેરતાં ન આવડે! અરે ખાતાં પણ ન આવડે! આવી સ્થિતીના બાળકોનાં લગ્ન થયાં! અરે આ તે લગ્ન કે મજકરી? વળી લગ્નમાં આધુનીક કેળવણી પામેલાં આપણીજ જૈન દિવં દશા હમહ કાંઠાના કોમની સ્ત્રી લગ્ન આવે કે જાણે કોઈ નથી વસ્તુ પ્રાપ્ત થઈ આવી રીતે તે સ્ત્રી લગ્ન પ્રસંગે ધાર્મિક ગીત ગાવાં મુઠી પોતાના પિતા બાઈ સસરા જેઠ ધત્યાદિ કુટુંબી માણસોની શરમ રાખ્યા શિવાય ફટાણા ગીતો ગાવામાં બહુજ હરખ માને છે. તે ફટાણા ગીતો સાંભળી અરે જૈન કોમના નિર્લજ માણસો (પુરુષો) ઘણાજ પુશી થયા છે. અરે આજ ગીતો આપણી જૈન કોમને અધમ દશા ઉપર લાવનાર છે. અરે આજ ગીતો આપણી પવિત્ર જૈન સ્ત્રીઓને માથે કલંક ચઢાવનાર છે! અરે જૈન કોમની સ્ત્રીઓને આવાં નિર્લજ પટાણાં ગાણાં (ગીત) ગાવાની તદન છુટ! અરે જૈન બંધુઓ જરા ઉધમાંથી આંખ ઉઘાડો અને આવા કલંજિત કુરિવાજોને દૂર કરો અને ફટાણા ગીતને

અહીં સારા ધાર્મિક માંગણીક લગ્ન પ્રસંગે ગીતો ગવાય તો જૈન કોમને કંઈ દુઃખ ઉઠાવવું પડે નહિ. અરે તે શ્ટાણાં ગીતને—તમને એક પ્રત્યક્ષ ગાઇ સંભળાવું છું.

ગીત-૧—એક ટકાનું પાન મંગાવેરે, પેલી વેશ્યાના દાંત રંગાવેરે, દાંત કાળા ઝોટ ધોળા શેનાર વહુવ મેલો પાતરના ચાળારે.

ગીત-૨—પેલી પાતરે પાણી ભરાવ્યુરે, પેલી સીનાર દલાણુ દરાવ્યુરે પેલી ગદ્દીએ પાણી ભરાવ્યુરે.

ગીત-૩—કાળી કંઠી સવા લાખની સાજનીઆ લોકો પેલુરે નાતરં કોણે ક્યું ? સાજનીઆ લોકો ફલાણો દેસે કન્યાદાનરે સાજનીઆ લોકો.

પ્રિય અંધુઓ, જુઓ કેવાં ઉત્તમ ગીત ! અરે કેટલા દાખલા આવું ? આવા ઉત્તમ ગીતોથી આપણી નાની પ્રાજ કોમ ન સુધરે ? અરે જરૂર સુધરશે અને આપણી કોમને તેમના મગજ પ્રમાણે ઉત્તમ શીખરે ચઢાવી મુકશે તેમ જરૂર સમજાવે ! આ આપણી કોમનું આ બાણ્ય પગથીયું છે. વળી આપણા જૈન કોમના લોકો લગ્નનું મુહૂર્ત જોવરાતી શુભ પ્રસંગે લગ્ન કરવાની ઇચ્છા રાખે છે. પણ તે લગ્નનું મુહૂર્ત ક્યાં રચ્યું ? લગ્ન મહા મુદ્દા નું હોય તે વરમતીઆ મહા મુદ્દા ૧૨ સે પરણે આ તે મુદ્દા કે માણસોને ઇગરાતી શર્ત ? નકામા આપણી વ્યાતિપ વિદ્યાને કલંક લગાડીએ છીએ.

કારણ કે આવા લગ્નથી કંઈ અવારનવાર થાય તો આપણા લગ્નની શંકા ધરીએ છીએ પણ તે શંકા તદ્દન ખોટી અને નકામી છે. તે જુલ આપણી છે. અને આપણુ હાથે કરીને જુલના ભોગ થઈ પડીએ છીએ. અત્યારે લગ્ન બ્રાહ્મણ લોકો કરાવે છે પણ અરે તે બ્રાહ્મણ નથી પણ એક ઇગારા છે. કારણ કે તે લોકો શું સમજે છે. કે " વર મરો કે કન્યા મરો પણ ગોરનું ડાપું ખરું કરો. " અરે આવા વિચારના બ્રાહ્મણો પાસે લગ્ન કરાવવું નહિ, કારણ કે તે બ્રાહ્મણો—

શ્વેતકનું તો શાક ખનાવ્યું, મંત્રની ખનાવી માળા; ગોળ મહારાજને લગ્ન કરાવ્યું, વિધીમાં ઉઠ્યા ઘારા. સખત પદીનો ચહા ખનાવ્યો, ચાકુતીના થયા લાકુ; ધીગોળની ધાર કરાવી, આતે મહારાજ કે માંકુ ૧૧૧૧

કંઈ બણ્યા તો હોય નહિ અને લગ્ન કેવી રીતે કરાવી શકે, અરે બાઇ શ્વેતકમાં તો હવે સમોવરતે સાવધાન રહ્યાં છે અને ન્યાંત્યાં ગોળ મહારાજ જલદી પરણાવી વરકન્યાને ઉઠાડી મુકે કે તુરતજ મહારાજના ૩. ૧૭) પાકે. કહો ગોળ મહારાજના ખાપનું શું ગયું. કહો તે લગ્નકરાવે અગર ના કરાવે તો પણ રૂપીઆ તો પાકે પછી શું ? આવા વિધિ વીનાના લગ્નથી આપણી જૈન કોમનું સત્વાનાશ વળી ગયું. હજી સમજો તો બાજી હાથમાંથી ગમ્મ નથી. અરે જૈન વિધિથી લગ્ન કરાવો અને તેજ વિધિ પ્રમાણે થવાથી પછી જુઓ કે કેટલી જૈન કોમની વધતી થાય છે. અરે જૈન અંધુઓ, જૈન વિધિથી લગ્ન કરાવવાનો કાયદો અમલમાં લાવશે તો જૈન કોમનો ઉદ્ધાર થવાનું પહેલું પગથીયું ખુલ્લું થશે.

નૈસર્ગિક ઉચ્ચ જીવનનાં સુત્રો.

(જિન-ત્રીભુવન રજુછોટદાસ માળવી-કમ્પાસા.)

૧—મન શુદ્ધ, શાંત, સંયમી અને સુપ્રસન્ન રાખો.

૨—ત્રીચંબળ શક્ય તેટલું સાચવી રાખી વધારો.

૩—શરીર નિરોગી રાખવા લક્ષ પૂર્વક સંભાળ લો.

૪—સ્વચ્છ અને ખુલ્લી દવા તથા પુરા સૂર્ય પ્રકાશમાં હમેશાં રહો.

૫—પહેરવા ઝોટવાનાં વસ્ત્ર શક્ય તેટલાં થોડાં, મારક ને સ્વચ્છ રાખો.

૬—આહાર હલકો ને યોગ્ય પોષણ મળે એવો લેવો. અરોચર જુખની હાજત સિવાય ખાવું નહિ. થોડી જુખ રાખીને ખાવું. શળાહાર ઉત્તમ ખોરાક છે, મશાલા વિગેરે મિશ્ર કરવાથી

રામ ઉત્પન્ન કરનારો ખોરાક શ્યામ છે, તે ન લ્યો. શુદ્ધ તાણુ ઠંડુ પાણી ઉત્તમ પીણું છે. ચહા, કોશી, સોડા, લેમન, દારૂ ને ખીલકુલ વાપરશો નહિ.

૭—નિદ્રા શાંત અને ગાઢ લ્યો.

૮—હાજત થતાંજ મલમૂત કરો.

૯—રોજ દિવસે રનાન કરી ચામડી સ્વચ્છ રાખો, તેથી કેટલોક મેલ શરીર બહાર નીકળે છે.

૧૦—જરૂર શક્તિ પ્રમાણે નિયમીત કસરત લેવાનું કદિ ભુલશો નહિ. કસરત એ સાચું રસાયણ છે. માટે કસરત કરો, દીર્ઘાયુષી થાવને આદર્શ ખતો.

૧૧—તમારું વર્તન નિયમીત, સરળ, શાંત, પવિત્ર અને આદર્શ રાખો. આ નિયમો વિરૂદ્ધ વર્તન કરવું એ રોગને આમંત્રણ કરવા જેવું છે.



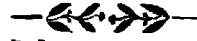
જમવાનો વિધિ.

જે માણસ ભૂખ લાગે ત્યારેજ જમે છે, તેને શારીરિક દુઃખ પ્રાપ્ત થતું નથી. ખનતા સુધી પહેલા પહોરમાં જમવું તે નહિ, ખીજે પહોર વ્યતિત થવા દેવો નહિ. તરસ લાગે હોય ત્યારે જમવું નહિ, તરસ ટાળ્યા પછી જમવું. ટાળ્યા સિવાય જમવાથી ગોળો ચઢે છે. ટાઢુ અનાજ જમવું નહિ. ટાઢુ અનાજ જમવાથી વાયુ થાય છે.

ઉત્તમ પુરૂષે પાટલા ઉપર ખેસી સામા પાટલા ઉપર ભોજન મૂકી જમવું. પૂર્વ દિશા અથવા ઉત્તર દિશા સામા મુખ રાખી જમવું. હાથમાં અન્ન લઇને જમવું નહિ, પાત્રમાં અન્ન લઇને જમવું. હાથ ડાળ્યા પગ ઉપર રાખીને જમવું નહિ, તેમજ તડકે અગાસે અંધારામાં અને ઝાઢ નીચે ખેસી જમવું નહિ. જમતાં ટચલી આંગળી ટાળવી નહિ, પગમાં પગરખાં મંદરીને જમવું નહિ, વળી ડાકણુ, માઠી-નજર વાળી સ્ત્રી અને શ્યાનની દષ્ટિએ ન જમવું. રૂતવંતી સ્ત્રીએ પકાવેલો આહાર જમવો નહિ. સૂખ્યાની કે પાપીની નજરે પડેલું ન જમવું, સર્વ ભોજન પ્રથમ સુધીને પછી જમવું કે જેથી કેઇની દષ્ટિ લાગે

નહિ. ભોજન જમતાં પ્રથમ પાણી પીવું નહિ, પ્રથમ પાણી પીવાથી અગ્નિ મંદ થઇ જાય છે. મધ્યમાં પાણી પીવું અમૃત સમાન કણું છે, જમ્યા પછી પાણી પીવું નહિ કારણ કે પછી પાણી પીધેલું શોલા સમાન છે. જમ્યા પછી કૂકત મુખ સાર કરવા એક ડોગળો પાણી પીવું, તે સિવાય પીવું તે હાનિકારક છે.

ભીખાભાઇ એફ. શાહ-વાંચ.



હિંદીઓને દિવ્ય સંદેશો.

સૌ સુણો હિંદીઓ આજ જય છે લાજ, હવે શું કરવું ? ટેક. બહુ પહાત આપણુ દેશ, ક્યાં જઇ કરવું. જઇ જુઓ દિવ્યના બાળ, ખતો ક્યાં રાંડ દિવ્ય ઉદ્ધારો, પછી જય ખપી સૌ દેશ, દિવ્ય નવ બાળો. સહુ થાઓ ખરે તૈયાર, ખરે આવાર માવતા કાળે, નવ જુઓ હવે તો હાર, હિતાર્થે લાળે. સહુ વીર ખતો ટેકીલા ? નવ રહો અંતરે મેલા ? સૌ ખતો ખરે રણવેલા ? તો હટે ખરેખર પેલા. સંપ જંપ નવ થાય, દેશ લુટાય, જગતમાં આળે, બહુ ખરેખરે દુઃખ થાય, ભારતના કાળે. સૌ સુણો. ૧. ઓ વીર વિખ્યાતો શીખ, ખતાવેો ખીક, દેશને તારો, તો જય હટી સૌ શત્રુ, કુહિત ધરનારો. વિર વલ્લભભાઇ સરદાર, જગીઆ ધાર, આવશે વહારે, સૌ કરો તેમનો સાથ, હિતારે પારે, સહુ સતત કરો વિચારો. આવતા આવને ટાળો ? ભારતના બાળ વિચારો, હવે નશો એક પણુ આરો ? સૌ સુણો. ૨. ભાઇ કરો ગાંધીને સહાય, અંતરે હકાય દિલમાં દાગે, કંઇ કરી વિચારો આજ, વધારો લાળે, બહુ જયમાલ વિદેશ, બાળો નવ ધેંશ, આજ ધરમાં તો, તેથી ઉપજે હ્દાય, ખરે તનમાં તો. ખતોને વીર હિંમત ઉર ધીર, હૈયામાં ધરજે, હવે પછી તમે તો કામ વિચારી કરજે. ભાઇ અહુશ કરોને ખાદી, તો થશે ખરે આખાદી, પછી જય ખરે અરખાદી, નવ બાળો વિદેશી ગાદી ? સૌ સુણો. ૩.

ચંદુલાલ હાંથીચંદ-રોનાશાહ્ય.

शरीरोपयोगी नियम ।

(ले-मास्टर पूनमचन्द मंगलनी, छापी पाठशाला)

शरीरको बलवान और पुष्ट रखनेके लिये अच्छा भोजन आवश्यक है। संवत्सरे जीने रहने और दैहिक (शरीर सम्बंधी) सुख भोग-नेके लिये भोजन ही एक सामग्री है, जो पर्याप्त मात्राके नित्य कामसे आती है। एक ढग रखने और एक शब्द कहनेसे हमारे शरीरका कुछ न कुछ भाग कम होजाता है और उसकी कमी भोजनसे पूर्ण होती है। सारे दिनके परिश्रमकी कमी भी भोजनसे पूर्ण हो सकती है इसलिये भोजन करना एक आवश्यक कार्य है।

बहुधा देखा जाता है कि कई मनुष्य भोजन करनेसे रोगी होते हैं और कई निरोगी रहते हैं सो ऐसा होनेमें भोजनके नियम ही कारण होते हैं। इसलिये पर्याप्त भोजन करनेवालोंकी निरोगी रहनेके लिये नीचे लिखे नियमोंपर ध्यान देना चाहिये।

(१) जो कुछ भोजन सामग्री हो वह प्रसू (ताजी) और शुद्ध हो। रखी हुई और लहई हुई वस्तुओंकी खानसे अनेक प्रकारके रोग हो जाते हैं। कई पदार्थ जैसे आटा, बेसन, रोटा आदि ऐसे हैं कि यदि पांच सात दिन रखे रहें तो उनमें बटपड़ जाते हैं और फिर अक्षय होजाते हैं। दूध, घी, आदि पदार्थोंमें बेचने-

वाले पानी और आलू बगैरह चीनोंका संयोग कर देते हैं जो अशुद्ध होनेके सिवाय बहुत हानिकारक होते हैं। इसलिये पदार्थोंकी शुद्धतापर विशेष ध्यान रखें।

(२) भोजन अच्छी तरहसे पका हुआ होना चाहिये। क्योंकि कच्चे भोजनको हजम करनेमें पेटको बड़ा परिश्रम पड़ना है और नित्यकी अठरागिन संद होती है। उसको हजम न होकर अतीर्णक रोग होजाता है।

(३) पहिलेके स्वाधे हुए भोजनको हजम हो जानेपर दूसरा भोजन करना चाहिये और प्रत्येक भोजनमें अल्पेकम ६ घण्टेका अन्तर होना चाहिये।

(४) बिना मूलके कभी न खावे क्योंकि भरे पेटमें दूसरा भोजन जहरका काम करता है। अक्सर देखा जाता है कि पाहुनेको प्रसन्न करनेके लिये लोग जबरदस्ती बिना मूलके भोजन कराते हैं और जब बीमार होजाता है तब दुःखित होते हैं सो ऐसा करना बड़ी मूर्खता है। पाहुनेके साथ यथावत् यद् अनुज्ञाका काम किया जाता है।

(५) परिचायके ज्यडा कभी न खाये बल्कि रुदा निराकम और निरोगी रहनेके लिये मूलसे कुछ कम खाना चाहिये। प्रायः लोग घरपर तो आसरेर खाते हैं परन्तु जब किसीके गहांसे निमंत्रण आता है तो मिष्ट आदि मिलनेसे डेढसेर पर हाथ फेरते हैं। ब्यपि वह शरीरको हृष्टपुष्ट और सुखी रखनेके लिये ऐसा करते हैं परन्तु इसके विरुद्ध बड़ रोगी होकर दुःख भोग निर्वक

होजते हैं तो ऐसा कमी न करना चाहिये। प्रतिदिन मितने बार और जितना खाते हो मूलके अनुसार उतना ही खाओ।

(६) दो बार थोड़ा थोड़ा खाना अच्छा परंतु एक बार भूखसे अधिक खाना अच्छा नहीं है।

(७) बन्दमूत्र आदि पदार्थ रोग पैदा करने वाले होते हैं इसलिये इन्हें खाने से बचें और सड़े फलोंसे सदा बचे रहें। अच्छी तरह से पका हुआ फल खाना कामकारी होता है।

(८) रात्रिको भोजन करना जैनशास्त्रके विरुद्ध है। जो मनुष्य सदा दिनको भोजन करते हैं वह अधिक निरोगी रहते हैं। जो मनुष्य रात्रिको भोजन करते हैं वे रोगी रहते हैं। रात्रिको पानी पीना लोह बराबर गिना जाता है इसलिये रात्रिको भोजनपान अवश्य त्याग करना चाहिये।

(९) जिस घरमें भोजन बनाया जाये वह बहुत साफ और सुथरा होना चाहिये। आप-पासमें कूड़े कचरे और दुर्गन्ध दूर होनेका कोई द्वार होना चाहिये।

(१०) रोगी शरीरमें वैद्यकी आज्ञाके अनुसार नीरस और हल्का भोजन करना चाहिये। पुष्टीकर भोजन बनानेमें कुछ खर्च नहीं पड़ता। चना, मूंग, जौ आदिकी दाल मात्रमें ही पुष्टीकर भोजन तैयार है। इनमें थोड़ा ही अथवा जैन भोजनखानेसे ही उत्तम आहार हो सकता है। दूधमें सब पदार्थके पुष्टीकारक पदार्थ हैं, इसको बड़ा उच्च होने अवश्य पीना चाहिये। गेहूं, बाजरी, मग, जौ आदिकी रोटी

खाने व इत्यादि सहित खानेसे ही यथेष्ट कामकारी होसकती है।

(११) भोजन सुस्थिर निश्चिन्त होकर संतोषपूर्वक करना चाहिये। प्रतिदिनकी बेगार समझ जैसे तेरे पेट भर लेनेकी गरमसे नहीं। जो भोजन अच्छी तरह किया जाता है उतना पाक अच्छा होकर शरीरको सुखकारी होता है।

रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्दजीका वियोग !

अतीव खेदके साथ खिन्नता पड़ता है कि श्रीमान रायबहादुर सेठ कस्तूरचन्दजी साइब इन्दौरका १५ जनवरीको अममयमें स्वर्गवास होगया ! आप बड़े दानी धर्मात्मा सज्जन थे। मोरटका (सिद्धवारकूट)में आपकी बनवाई हुई आलीशान धर्मशाला है। अन्त समय भी ५९०००) का दान कर गये हैं। आपकी आत्माओं शान्तिराम हो !

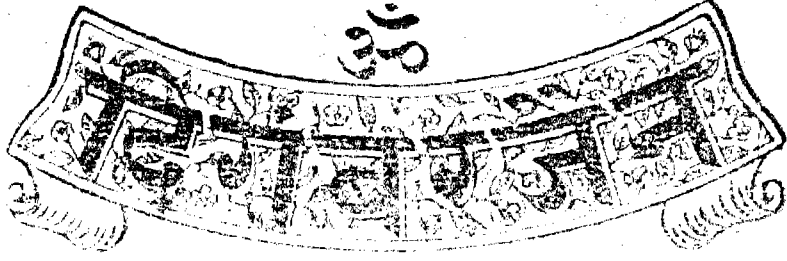
फिर तैयार होगया, अवश्य मगाइये।

जैनधर्म प्रकाश।

ब्रह्मचारीनी कृत यह सर्वोयोगी ग्रंथ दूमरीबार अतीव आकर्षक सचित्र छापकर प्रकट होगया। ए. सी. दरीव तीनसो व मुख्य सिर्फ अठ ही आने। अनेनोंमें प्रभावकार्य भी थोडकबंद मगाइये।

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-मुरत।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चक्रलासूरतमें मूलचन्द किसनदास कापटियाने मुद्रित किया और दिगम्बर जैन ऑफिस चन्दावाही सूरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।



सम्पादक:-मूलचन्द किसनदास कापड़िया-मुरत ।

विषयानुक्रमणिका.

नं० विषय. पृष्ठ.

- १-बीर स्तुति (पं० परमेशीदासजी न्यायतीर्थ) १५४
 २-सम्पादकीय वक्तव्य-श्रीमती मगनब्देनका
 स्वर्गवास, शिवहारामें सफलता
 ३-जैन समाचार संग्रह १५६
 ४-९-पद्मा: सफल जीवन १६१-१६४
 ६-७-देखा, अदर्श ब्रह्मचारी.... १६७-१६८
 ८-प्रतिष्ठा मुहुर्नपर विचार १७१
 ९-जैनमहिलारत्न मगनवर्द्धनीका स्वर्गवास.... १७७
 १०-११ महिलारत्नका विशेष, मुंबईनो शोक १८२-८०
 १२-आपणी स्त्री (रमणीकलाक वि० शाह) १८२

वर्ष २३वां
अंक ४.

बीर सं० २०५६
माघ.

स्वर्गीय, जैन महिलारत्न मगनब्देन—

के दिषयमें जोर भाई व बहिमें लेख व कविताएं
 भेजना चाहें ८ दिनमें भेजें, वे सब आगामी अंकमें
 प्रकट किये जायेंगे ।

भेजेंजर ।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।०) विशेषांक मूल्य ॥।)

स्वर्गीय जैनमहिलारत्न-

श्री० मगनब्हेन स्मारकफंडकी योजना ।

कमसे कम ५) स्मारकफंडमें भरनेवालेको
“दानवीर माणिकचन्द्र” ग्रन्थ भेंट ।

स्थान २ पर शोकसभा व स्मारकफंड होनेकी आवश्यकता ।



स्वर्गीय श्रीमती जैन महिलारत्न मगनबाईजी जे० पी० सारे जैन समाजका जो असीम उपकार कर गई हैं उसका ऋण चुकानेके लिये सारे जैन समाजका इतंभ्य है कि आपके वियोगकी शोक सभाएं हर एक स्थानपर करे तथा “मगनबाई स्मारक फंड” में हर एक स्त्री व पुरुष कथाशक्ति द्रव्य भरके दुर्लभ भेंटें ।

स्मारकफंडकी योजना ।

जिस प्रकार श्रीमती मगनब्हेन जे० पी० के पिताश्री-स्वर्गीय दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंदर्जाके स्मारकमें दो फंड होकर एक फंडसे “दानवीर माणिकचंद्र” नामक वृत्त ग्रंथ (२००० प्रतिभां) कायतसे भी कम मूल्यमें प्रकट किया गया था तथा करीब १००००) का फंड प्राप्त होकर “माणिकचंद्रग्रंथमाला” नामक संस्कृत ग्रंथमाला च.ख. होकर उपके द्वारा आमतक अनेक अरमा व अप्रकट संस्कृत ग्रन्थ आगत मृग्यसे प्रकट हुए हैं व चिरकालतक प्रकट होते रहेंगे, इसी प्रकार स्वर्गीय श्रीमती

मगनब्हेनका स्मारक होनेकी भी आवश्यकता है, क्योंकि सारे जैन स्त्रीपुमानकी उन्नतिके लिये आपने भी अपना तन मन धन अर्पण कर दिया था। इसलिये हमने “जैनमित्र” “दिगम्बर जैन” व “जैन महिलारत्न” द्वारा-

मगनबाई स्मारक फंड-

सोचनेका निश्चय किया है। अर्थात् इस फंडमें जो रकमें आवेंगी वह नाम ग्राम सहित इन तीनों पत्रोंमें प्रकट कर दी जायगी ।

इस फंडका उद्देश-स्वर्गीय श्रीमती मगनब्हेनका विद्वान जीवनचरित्र प्रकट करनेका व आपका नाम कायम रखनेके लिये आपके नामकी कोई ग्रन्थमाला, छात्रवृत्ति या इनाम फंड आदि स्थापन करनेका है तथा इसके पवन्वके लिये श्री० व० सीतलप्रसादजी, सेठ तागचन्द नवलचन्द जी०री, सेठ ठाकौरदास भगवानदास जी०री, जैन महिलारत्न श्रीमती कलितब्हेन, सेठ छोटदास घेठामाई गांधी अंकलेश्वर,

[शेष टाइटल पृष्ठ तीसरेपर देखो]



स्वर्गाय जैन महिचार्यन्—

ध्यामता मगनच्छेन जे० पी०

मुपुत्री, स्व० दानवीर सेठ माणिकचंदजी जे० पी०, बम्बई।

जन्म म० १९३९ पीणवरी १०. स्वर्गवाम—व० १९७० म० १९७०।

॥ श्रीवीतरागायनमः ।

दिगम्बर जैन

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्मृगवेषणाभिः ।
संशोथयत्पत्रमिदं प्रवर्तनाम, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३७१

वीर सम्बत् २४५६, माघ, विक्रम सम्बत् १९८६.

अङ्क ४.

वीर-स्तुति ।

(रचयिता-पं० परमेशीदास जैन न्यायतीर्थ-सूत ।)

हे वर्द्धमान भगवान अनाथनाथ !

हे वीतराग भवलंघन हेतु नाव !

मैं हूँ अनाथ, तुम नाथ अनाथके हो,

कीजे अपार भवसागर पार देव ॥ १ ॥

हे वीतराग पर निष्ठुर है नहीं तू,

हे कर्महीन पर दीनदयालु भी है ।

कीजे कृपाल ! भवजाल विदीर्ण मेरा,

तेरा सहाय जगको बस एक ही है ॥ २ ॥

तारे अनन्त दुखिया क्षणमें दयाल !

निष्पक्ष भी सब तुझे कहने परन्तु ।

मैंने अनन्त दुख देव ! नहीं सहे क्या ?

जो आज भी तुम नहीं मुझपे कृपाल ॥ ३ ॥

जाऊँ कहां कुल नहीं अब है विवेक,

अज्ञान मोह ममता मुझको भ्रमाती ।

हे नाथ ! शीघ्र वह मार्ग मुझे बतादो,

हो "दास" पास जिसपै चल देव तेरे ॥ ४ ॥

सम्पादकीय-वक्तव्य

आज हम जिस विषयपर लिखने बैठे हैं वह हृदयको आहत कर देनेवाले वज्राघातसे भी कहीं मर्मभेदी है। यह जैनमहिलारत्न श्री० दुष्ट विक्रमक काल साधु मगनवाईजी जे.पी. संत, सज्जन परोपकारी, का वियोग ! ज्ञानी विवेकी किसीको भी न देखकर यथेच्छ प्रवृत्ति करता है। कभी२ तो यह इतना अवि-वेकपूर्ण कार्य कर डालता है कि जिससे एक दो दस पंद्रह नहीं, किन्तु हजारों मनुष्योंको दुखी होना पड़ता है। जैन महिलारत्न श्रीमती मगनवाईजी जे० पी० से अधिकांश जैनसमाज परिचित है। लुनावला ग्राममें गत ७ फरवरी (माघ शु०९)की रात्रिको ९॥ बजे निर्दयीकालने उक्त महिलारत्नको उठा लिया। उस चांदनी रात्रिमें भी अंधकार कर दिया। सब बात तो यह है कि विधिका विधान ही विचित्र है, यही सब सोचकर संतोष करना पड़ता है।

आपका जन्म दानवीर सेठ माणिकचन्दजी जे० पी० बम्बईके यहाँ पौष वरी १० सं० १९३६में हुआ था। और संवत् १९४८में ही विवाह कर दिया गयाथा तथा कर्नोदय वयसत विवाहके ८ वर्ष बाद सं० १९५६में दो पुत्रियोंको प्रसवकर आप वैधव्य अवस्थाको प्राप्त होगई थी। किन्तु घन्य है उस महिलारत्नको कि जिसने ऐसी अवस्थामें समाजकी वह सेवा कर दिखाई कि जो अमिट और स्थई रहेगी। वैधव्य प्राप्तिके बाद आप अपने पिताके घर ही

रहीं, और थोड़े समयमें ही संकृत और धार्मिक ज्ञान संपादन किया। जैनसमाज और जैनधर्मकी उत्ततिके लिये निरंतर प्रयत्नशील रहनेवाले दानवीर सेठ माणिकचन्दजी उयो २ समाज सेवाका कार्य करते थे त्यों त्यों श्रीमती मगन-वाईजी भी अपने पिताश्रीके अनुकरण करनेमें पीछे नहीं रहती थीं। आपने जैन स्त्रीसमाजमें शिक्षापचार करनेका बीड़ा उठाया था, और वह उस समय जबकि स्त्री-शिक्षा पाप समझा जाता था, या यों कहिये कि स्त्रियोंको धर्मशास्त्र पढ़नेका अधिकारी ही नहीं माना जाता था। महिलारत्नने जैन स्त्रियोंमें शिक्षापचार करनेके लिये अपूर्व प्रयत्न किये थे जैसे—गां२२ घूमकर उपदेश करना, स्त्रियोंको समझाना, विववाओंके कल्याणहेतु श्राविकाश्रममें प्रविष्ट होनेके लिये प्रेरणा करना इत्यादि।

वीर संवत् १४२९ माघ शुक्ल १४ को तारंगान्जीमें बंबई प्रांतिक सभाके समय दि० जैन महिला परिषदमें आपने जोशीका हृदयको पिघला देनेवाला भाषण किया था और एक श्राविका-श्रम खोलनेके लिये फंड एकत्रित किया था। सर्व प्रथम स्वयं ही १००१) की रकम मरी थी, तब बातकी जातमें करीब तीन हजार रुपया एकत्रित होगया और इसी दमपर अहमदाबादमें श्राविकाश्रमकी स्थापना की गई। कुछ समयके बाद आश्रम बंबईमें लाया गया। इसके लिये आपने तन मन धन अर्पण कर दिया और सतत परिश्रम करके अनेक महिलाओंको समाजसेवाके योग्य तैयार किया। आपके ही उद्योग या अनु-करणसे आज दि० जैन समाजमें इन्दौर, आरा,

देहली, गोहाना, सांगली, सोजित्रा, सागवाड़ा आदि अनेक स्थानोंपर श्राविकाश्रम खुल चुके हैं और वे अच्छा कार्य कर रहे हैं । जैन समाजमें सर्व प्रथम मगनबाईजीने ही श्राविकाश्रम खोलनेका अमृतपूर्व कार्य किया था । इसके फंडके लिये आप अन्त समयतक बराबर प्रयत्न करती रहीं । हावां कि करीब ९०-९१ हजारका फंड वर्तमानमें आश्रमका है तथापि आपकी अंतिम इच्छा थी कि कमसेकम पूरे एक लाखका प्रौढ्यफंड होना चाहिये । यदि कोई दानी सज्जन उनकी इस अंतिम आकांक्षाकी पूर्ति कर दें तो बहुत ही अच्छा हो ।

स्त्री-समाज ही नहीं किन्तु समाज जैन समाज आपका ऋणी है । इसलिये उसका कर्तव्य होना चाहिये कि वह श्री० मगनबाईजी जे० पी० का कोई स्मारक स्थापित अवश्य करानेकी योजना करे । किसी उपकारीके गुणोंकी कदर करना, उसका अनुकरण करना, एवं उसकी अवशिष्ट आकांक्षाओंकी पूर्ति करना यही एक सभ्य समाजका पर्युपकार करना कहा जासکتा है ।

मगनबाईजीने जैन स्त्री समाजमें आशातीत सुधार किये हैं, ती भी अनेक कमी पूर्ण करना बाकी हैं । अगर आश्रमकी कुछ महिलायें उनका अनुकरण करें, निस्वार्थ भावसे सेवा कार्यमें लग जावें तो इसमें कोई संदेह नहीं कि जैन स्त्री-समाज भी एक दिन उन्नतिके शिखरपर आरूढ़ होकर धार्मिक एवं सामाजिक जागृति कर स्वपर करपाण करनेमें समर्थ हो सकेगी । हमारी हार्दिक भावना है कि स्वर्गीय आत्माको शांति लाभ हो और जैनसमाजमें अनेक महिलारत्न उत्पन्न होकर इसी प्रकार सेवाकर अपना जीवन सफल बनावें ।

पाठकोंको मालूम होगा कि शिवहारा (बिजनौर) में दि० जैनियोंका रथ निकलनेवाला था,

किन्तु मुसलमानों द्वारा शिवहारामें हमारी अनुचित विरोध उठाये सफलता । जानेपर कलेक्टर बाबू

सोहनलालजी श्रीबास्तव-ने दरकरअयोग्यता व अदूरदर्शितासे काम लिया और अन्यायपूर्वक रथयात्राको रोक दिया था ! यह अन्यायपूर्ण समाचार समाप्त जैन समाजमें बायुक्ती अंति फेर गये और जगह जगह विरोध सभायें की गई । इधर बिजनौरमें उस प्रान्तके कुछ प्रतिष्ठित जैनियोंने एकत्रित होकर यह निश्चय किया कि कमिश्नर बरेली और गवर्नरके पास डेप्युटेशन जावे, अगर इसमें सफलता न हो तो समाचारपत्रोंमें आन्दोलन कर युक्तपातकी कौंसिलमें इस मामलेको उठाया जावे । यदि इसमें भी सफलता न मिले तो सत्याग्रहका शंख फूँक कर सफलता देवीकी आरावना की जावे ।

निर्णयके अनुसार उस प्रान्तके कुछ मान्य व्यक्तियोंका एक डेप्युटेशन युक्त प्रान्त सरकारके मेम्बर श्री० लेम्बर्टसे भिजा । उन्होंने आश्वासन दिया तथा बिजनौर जिलेके कलेक्टर (नेदरसोर जो दिगम्बरमें जाये हैं) को रथयात्रा निकलवानेको लिखा । न्यायप्रिय कलेक्टर सा०ने शिवहारेके खास खास जैन, हिन्दू और मुसलमानोंसे बातचीत की और २८ जनवरीको उन लोगोंसे शांति रखनेके लिये इकरारनामा लिखवा लिया तथा जैनियोंको रथयात्रा निकालने व धर्ममहोत्सव मनानेके लिये ३ से १० मार्च तककी आशा देदी है ।

अब ता० ६ से १० मार्च तक रथोत्सव बड़े समारोहके साथ होगा और बीचके दिनोंमें कई धर्मसभायें होंगी । जिसमें व्याख्यानवाचस्पति पं० देवकीनंदनजी शास्त्री पं० जुगलकिशोरजी मुख्तार ब्र० कुंवर दिग्विजयसिंहजी आदि अनेक जैनधर्मके धुरन्धर विद्वान पधारेगे । इसी अवसर पर जीवदया प्रचारणी सभा आगराका अधिवेशन होगा तथा कृषिपदार्थनी आदि अनेक कार्य होंगे । ऐसे मौकेपर धर्मप्रेमी बंधुओंको इस महोत्सवमें अवश्य सम्मिलित होना चाहिये । इसमें कोई संदेह नहीं कि उक्त सफलताकी प्राप्तिमें भी भा० दि० जैन परिषद्ने पूरा प्रयत्न किया है । उसके मंत्री व अन्य कार्यकर्तागण दिन रात इसी कार्यमें बगे हैं, तब कहीं सफलता मिल सकी । हम परिषद्के कार्यकर्ताओंको इस उद्योगके लिये बधाई देते हैं । खेद तो इस बातका है कि भा० दि० जैन धर्मरक्षणी महासभा नाम रखानेवाली मनमानी महासभाने ऐसे संकट-निवारणके लिये कुछ भी प्रयत्न नहीं किया ! क्या यह सभा अब कोरी नामकी ही सभा रह गई है ? अस्तु, कुछ भी हो, जिन्हें बगन है, जिन्हें उतसाह है, जिनकी रगोंमें धर्म और समाजकी रक्ष हेतु खून संचार करता है वे अवश्य ऐसे कार्यमें जुट जाते हैं । तब सफलता मिलना स्वाभाविक ही है । अभी अनेक कार्य करना हमें बाकी हैं । उनके लिये संगठन, नवयुवक और उत्साहियोंकी आवश्यकता है ।

त्रिलायत जायेंगे—श्री० विद्यावारिधि बैरिष्ठर ज्योत्स्नरायजी सा० जैन धर्म प्रचारार्थ २१ फरवरीको त्रिलायत गये हैं ।

जैनसमाचारवलि

गिरनार स्पेशल ट्रेन—एक स्पेशल गिरनार-रनीके लिये सीकर (राजपूताना)से १५ मार्चको छूटेगी । उसमें प्रायः मारवाड़ प्रान्तके जैन रहेंगे । इसका मुकाम तारंगा, गिरनार, पाकी-ताना, अहमदाबाद, बड़ौदा, अंकलेश्वर, सूरत, कोलाव, रानई, नासिक, खण्डवा, इन्दौर, चित्तौरगढ़, उदैपुर, अनमेर आदि स्थानोंपर होगा । प्रचारक हुये—मछिनाथ दि० जैन विद्यालय शिरड-शहापुरकी ओरसे ब्र० कन्हैयालालजी प्रचारक नियुक्त हुये हैं ।

गुजरातके दशाहमड़ जौहरीका खून !

सखेद लिखना पड़ता है कि जौहरी नेमचंद छगनलाल दशहमड़ ओराण (पांतिम) निवासीका बंबईमें किसी दुष्टने खून करवाका है ! और काश टूंकमें बंदकर रेकमें रस्दीधी, जो सुसाबक पर पकड़ी गई । इसके संदेहमें ३-४ मुसलमान गिरफ्तार किये गये हैं ।

कटनी—में सि० कन्हैयालाल गिरधारीलाल-जीके ब्यु भ्राता रतनचंदजीका बसंतपंचमीको स्वर्गवास होगया । आप बड़े धर्मार्थमा दानी सखन थे । स्थानीय पाठशालाको (५५०००) करीब प्रदान कर चुके हैं । स्वर्गीयकी आत्माको शांतिकाम हो ।

आचार्य संघ—चौरासी मथुरामें १६-१७ फरवरी तक पधारेगा । सब भाइयोंको पधारना चाहिये ।

जैन महिलारत्न श्री० मगनवाईजी जे.पी.के वियोगमें शोक सभाएँ ।

बम्बई—में वैसे तो अनेक शोक सभायें हो चुकी थी, मगर सर्वसाधारण स्त्रियोंकी एक विराट सभा ११ फरवरीको हुई थी। उसमें शोकप्रदर्शक प्रस्तावके बाद एक 'स्मारक बनाने' का प्रस्ताव भी किया गया था। विद्वानोंके इस विषयपर प्रभावक भाषण हुये थे जिससे उसी समय ३२०) चन्दा स्त्रियोंकी तरफसे होगया। स्मारकके योग्य रकम इकट्ठी करनेके लिये १३ महिलाओंकी एक कमेटी भी बनाई गई। दिगम्बर जैन युवकमण्डल बम्बईकी ओरसे भी एक सभा की गई थी। उसमेंभी 'स्मारक बनाने' का प्रस्ताव किया गया था। इसीप्रकार—प्रे० मो० दि० जैन बंडिंग अहमदाबादमें शोकसभा की गई। खड़क प्रांतीय १० पाठशाळाएँ बन्द रही और विजयनगरमें शोकसभा हुई। दाहौद, ईडर, रतनाम, मथुला, रोहतक इत्यादि अनेक स्थानोंपर शोकसभायें की गईं ।

मुसारी—में ब्र० गंभीरालालजी तो कुछ समयसे थे ही, मगर दशमी प्रतिमावारी त्यागी केशरीमलजी तथा और २ त्यागियोंके पधारनेसे धर्मश्रवणका अच्छा काम रहता है ।

जैन विधिसे विवाह—नरसीपुर नि० सेठ भोगीलाल उगरचन्दनी बरात लेकर आमोद सेठ सोभागचन्द जेठाभाईके यहां गये थे। ब्रजकिया अंकलेधर निवासी छोटाकाकाजी गांधीने कराई बरपक्षसे ७८) और कन्यापक्षके ५०) दान किया गया ।

ब्र० आश्रम कुन्धलगिरिकी—श्री० वैरिष्ठर चम्पतरायनीने 'की आफ नॉलेन' भेट की है। तदर्थ धन्यवाद ।

विजयनगरसे—मोडसिया फते चन्दभाई ताराचन्दनी महामंत्री लिखते हैं कि हम नवागाम गये थे। वहां एक सभा की, उस समय मगरजी मेदाचन्दनीगे २०४) शास्त्रज्ञानके लिये प्रदान किये तदर्थ धन्यवाद ।

विजयनगरसे—मोडसिया फतेचंदभाई ताराचन्दनी महामंत्री लिखते हैं कि हम १ फरवरीको १९-१० धर्मप्रेमी सज्जनोंको लेकर देवक गये थे। वहांर भरयत्रा होना थी। माघ सुदी ९ को प्रतिमाजी विराजमान की गई। २ दिन जलयात्रा उत्सव सानंद हुआ। हमारे उपदेशसे हमीरचन्द हेमचन्दजी देवकने १९३) पूजन फंडमें और दूसरे भाइयोंने ४१) धर्मादा फंडमें प्रदान किये थे। १९१) के उपकरण मंदिरमें दिये गये थे। एक दिन समस्त आये हुये भाइयोंको प्रीतिभोज भी दिया गया था। इन धर्मप्रेमी भाईको उपस्थित समाजकी ओरसे धन्यवाद दिया गया था ।

मुनिश्री मुनिन्द्रसागरजी—जा० २८ जनवरीको विजयनगर (महीकांठा) में संघ सहित पधारे थे। यहांके नरेशने मुनि महाराजके उपदेशसे यात्री लोगोंका कर माफ कर दिया है। जब महाराज गिरनार तरफ विहार कर गये हैं ।

मुनि मुनीन्द्रसागरजी—का संघ आजकल खड़क प्रान्तमें भ्रमण कर रहा है। संघमें २ मुनि २ ऐकक १ छुल्लक ३ अर्भिका और २ ब्रह्मचारिणी हैं ।

हूमड़ जातिकी मनुष्य गणना—भारतवर्षमें आगामी मनुष्यगणना ता. २६ फरवरी १९९१ को होगी । उस समय समस्त हूमड़ भाइयोंका कर्तव्य होगा कि वह 'ज्ञाती' के कोष्ठक (खाने) में अपनेको 'हूमड़' लिखावें न कि 'गहानन' ।

वीरका विशेषांक—'समात्र अंक' चैत्र मासमें प्रगट होगा । उसमें अनेक समाजोपयोगी, जैन आतिका जगानेवाले लेख रहेंगे । ३) भेन्नकर अवश्य ग्राहक बनिये । पता—वृन्दावासीलाल जैन । 'वीर' कार्यालय—मेरठ कैंट ।

स्तीफा दे दिया—विद्वत्तरपं० रणेशपसादजी वर्णी न्यायाचार्यने स्याद्वाद महाविद्यालय काशीके अविछाता पदसे स्तीफा दे दिया है ।

पं० धन्नालालजीने मार्फा मांगी—गत वर्ष मोरेना विद्यालयके जीने बाबत बड़ा झगड़ा खड़ा हुआ था । उसमें पं० धन्नालालजीकी गलती थी, जिसकी माफी मुनिमहाराजके सामने मोरेनामें मांगी है ।

शिवहरामें सफलता—पाठकोंको मालूम है कि शिवहारा (बिजनौर) में मुसलमानोंकी अनुचित धमकीसे मजिस्ट्रेटने जैनियोंके रथ न निकालनेकी अन्यायपूर्ण घोषणा करदी थी । इर्ष है कि भा० दि० जैन परिवार आदिके प्रयत्नसे रथ निकालनेकी गवर्नमेंटसे आज्ञा मिल गई है । ता० ६ से १० मार्चतक रथयात्रा बड़ी धूम-धामसे होगी । इसी समय जीवदया सभा आगराका अधिवेशन भी होगा । समस्त सज्जनोंको पधारना चाहिये ।

आपरेशन कराया—सर सेठ हुकुमचन्दजी

सा० इन्दौर व उनकी धर्मपत्नी सी० कंचन-बाईने युवान बनने व निरोग रहनेके लिये जर्मनी डाक्टरसे आपरेशन कराके बंदरकी गांठ अपने शरीरमें प्रवेश करई है । कहते हैं कि बंदर मरा नहीं और १० मिनिटमें ही कूदने लग गया था ।

सोनासणमें शिखरजीका संघ—माघ सुदी ११ को सोनासणसे सेठ जीवाभाई उगरचन्द गांधीकी ओरसे सम्प्रेदशिखरकी यात्राको संघ निकलनेवाला था जिसमें २०० यात्री होंगे । प्रत्येक यात्रीसे सिर्फ ५१) लिये गये हैं । संघ काशी होकर ईसरी पहुंचेगा । डेढ़ माहका प्रोग्राम है ।

ऋषभ ज्ञान जयन्ती—अमरोहामें फरगुन ८० ९-१०-११ को समारोहसे मनाई जावेगी ।

उत्तीर्ण हुये—मदावरा नि० पं० नाथूगमजी जैन (गोलाकारे)ने चरमा केमिकमें डाक्टरी और ज्योतिष शास्त्रीकी परीक्षा पास करली है । तथा पं० रामकुँवरबाईने " आयुर्वेद विशारद " परीक्षा पास की है । बधाई !

दशमी प्रतिमा—ब्र० केशरीचन्दजीने माघ वदी ११ को बड़वानीमें दशमी प्रतिमा धारण की है ।

आगरासे गिरनारको स्पेशल—ट्रेन ता० २५ फरवरीके शामको ७ बजे रवाना होगी । जो जाना चाहें शिवनारायण जैन मानपाड़ा, आगरासे पत्रव्यवहार करें ।

पेंडत—(मैनपुरी)के माघके मेलेमें १००००० आदमी जाये थे । जीवदया सभाके प्रयत्नसे एक भी प्राणीकी हिंसा नहीं हुई ।

सेठ रावजी सखाराम दोशी-का लश्करमें
आचार्य संवके समय कीर्तन हुआ था ।

प्रतिष्ठा होगी-झाशपुर (टीकमगढ़)में जो
प्राचीन निनायन निकले हैं उनकी प्रतिष्ठा
फाणुन सुदी ९ को होगी ।

अहमदाबाद-की प्रे० मो० दि० जैन कॅडि-
गके विद्यार्थी नेमचन्द केशवलालने ता० २६के
राष्ट्रध्वजके दिन आनन्द स्वामी पहिरनेकी प्रतिज्ञा
की । और कुछ विद्यार्थियोंने राष्ट्रध्वज प्राणा-
पंग तक करनेकी प्रतिज्ञा की थी ।

मोरना-में आचार्य संव १६ जनवरीको
पहुंचा था । १८ को श्रोतसव हुआ था । संव
समक्ष २०-२९ पण्डितोंने पंचाणुवन मरण
किये थे ।

तारंगजी-के यात्रियोंसे जो १) मुड़का (कर)
लिया जाता था वह मगसिर माससे बंद कर
दिया गया है । अब गुजरातके प्रत्येक दिगम्बर
जैन गृहसे १) वार्षिक लिया जावेगा ।

सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि-का वार्षिकोत्सव फा-
णुन शुक्ल २ से ७ तक होगा । न्यायाचार्य
पं० गणेशदासी दर्शी आदि अनेक विद्वा-
नोंका समागम होगा । अनेकोंको सागर स्टेज-
नसे आना चाहिये ।

देहली जयंती उत्सव-के समय मंडलका
१९वां वार्षिकोत्सव, बर्द्धमान पब्लिक लायब्रे-
रीका १ रा उत्सव, सार्वभूम सम्मेलन, कवि
सम्मेलन आदि अनेक कार्य होंगे ।

बम्बई परीक्षालय-की परीक्षा ता० १२
अप्रैलसे होगी । इस वर्ष चौथा भाग, छःठका

और मराठी रत्नकरण्डके सिवाय बाकी सब
ग्रन्थोंकी कक्षावार ही परीक्षा होगी ।

विदुषी चम्पावतीदेवीका वियोग-लेखके
साथ लिखना पड़ता है कि चम्पावतीदेवी (सु-
पुत्री लाला शिवलालकी) अम्बाकाका अन्त समयमें
वियोग होगया । आप कलकत्ताकी न्यायमध्यमा
पास कर चुकी थी और गोवट्टपार, राजवार्तिक
आदि ग्रंथराजोंका अध्ययन किया था । द्रव्य-
संग्रह, रत्नकरण्डकी भाषाटीका भी की थी ।
अन्त समय ६०००)का दान किया है । आपके
वियोगसे जैन स्त्री-संसारकी बहुत कति हुई है ।

रावबहादुर (सेठ कस्तूरचन्दजी-इन्दौरके
वियोगमें सागर, मधुग, इन्दौर, बड़नगर सिबनी
आदि अनेक स्थानोंपर शोक समार्ये की गई हैं ।
आपने अन्त समय ९९०००) का दान किया
है । वास्तवमें जैनसमाजमेंसे एक श्रीमान् धर्मा-
त्माके उठानेमें भारी हानि हुई है ।

भेलसा-निवासी पं० मूलचन्दजीके उद्येष्ठ
आता कन्दैयालालजीका माघ कृ० अमावस्याको
स्वर्गवास होगया । आपने अन्त समय ९०)का
शास्त्र दान किया है ।

अन्त समय दान-श्रीमती मगनच ईत्री जे०
पी०ने अन्त समय ६३२४)का दान किया है ।
इनसे दो छात्रवृत्तियां, स्त्रियोपयोगी पुस्तक
प्रकाशन, संस्थाओंको सहायता और बम्बई परी-
क्षालयमें उत्तीर्ण स्त्रियोंको पारितोषिक इत्यादि
शुभ कार्य होंगे ।

गिरनारजी स्पेशल-जो १४ जनवरीको
कासगंजसे गिरनारजीको रवाना हुई थी वह

सानंद यात्रा करके १४ फरवरीको कासगंज पहुंच गई है । उसमें ९४० जैन थे । किराया दोनों ओरका सिर्फ १९=) लिखा गया था । जूनागढ़में संघके समय रथयात्रा भी निकाली गई थी । बाबू बड़ेतीपसादनीको तमाम प्रबंधके उपरकक्षमें 'सिंघई' की पदवी प्रदान की गई है ।

आचार्य संघ पर उपसर्ग—आचार्य श्री शान्तिसागरजी महाराज संघ सहित उत्तर हिन्दुस्तानमें विहार करते हुये राजाखेडा (बौद्धपुर स्टेट) में पहुंचे । वहां पर छोटा-काळ नामक एक ब्राह्मणने नग्न साधुओंको ग्राममें आनेका विरोध उठाया । जब संघ ग्राममें पधारही चुका था तब उस ब्राह्मणने एक भारी बड्ढयंत्र रचा और मुनियोंको मारनेके लिये सा० ४-२-३० को पचास साठ आदमियोंको लेकर आया । मगर पुलिसके प्रबन्धसे वह सफल न हो सका किन्तु उसे जैनियोंने पकड़ लिया । फिर क्या था, दंगा शुरू हो गया और जोर बढ़ने लगा । तब पुलिसने फायर किया जिससे गुंडे भाग गये । फिर छोटाकाळके दो बड्ढके अगुआ ढोकर ९०० आदमियोंको लेकर आये और जैनियोंके साथ मारामारी शुरू की जिसकी शान्तिके लिये पुलिसने फिर फायर किया । सब लोग भाग गये ।

इतने पर भी इन लोगोंकी मस्ती शांत नहीं हुई और करीब डेढ़ हजार आदमियोंने रात्रिको ९ बजे हमला किया ! इस समय तो जबरदस्त दंगा हुआ, कुछ लोगोंकी अंगु-लियां तलवारोंसे कट गईं ऐसा सुना जाता है । धौलपुर पुलिस सुपरि० मिस्टरकी लेकर आये

और दुष्टोंपर फायर करना प्रारम्भ किया । सब कहीं क्षुब्ध बातावरण शान्त हो पाया । संघ सानंद आगरा पहुंच गया है ।

गोरोंने जैन मंदिरमें गोली चलाई !

देहली ३ फरवरी—मोठकी मसजिदके करीब एक बहुत प्राचीन जैन मंदिर है जिसमें बगीचा भी लगा हुआ है और उसके अन्दर तट्टरीबन पचास साठ सालके पाख्तू मोर रहते हैं । वहां पर ता० ३० जनवरीको मिस्टरकी दो गोरे शिकार खेलनेकी गरजसे आये । वहाके लोगोंने तथा पुत्रारियोंने उनको मना किया । उन्होंने कहा कि हम शिकार नहीं खेलेंगे । लेकिन फिर भी मोरोंपर निशाना रगया, जिससे तीन मोर मर गये । तब गांवके आदमी उनके पास आये और उनसे कहा कि मने करनेपर भी तुमने यह मोर क्यों मारे ? उन आदमियोंके झुण्डपर गोरोंने फायर किये जिससे कि कई आदमी अकमी हुए और एकका सर फट गया ! फिर वह उन मोरोंको थैलेमें बंद करके लेजाने लगे । इतने हीमें गांव वालोंने बंदूक छीन ली । इस गरजसे कि निशानी रह जाय और मामलेकी तहकीकात बखूबी होनाय । तब गोरोंने पत्थर उठाकर एक आदमीके सरपर मारा जिससे उसका सिर फट गया । लोगोंने उसी उक्त कुतु-बके धोनमें रिपोर्टकी और तीनों मोर, बंदूक, कबूतर और थैला थानेमें पेश कर दिये और रिपोर्ट लिखवा दी । पुलिस मौकेपर आई और तहकीकात की । वे गोरे गिरफ्तार कर नई छाव-नीमें रखे गये हैं । बायक अभी अस्पतालमें हैं ।

' श्वेताम्बर जैन ' आगरा ।



(ले०-पं० सिद्धसेनजी गोयलीय, उज्जैनिया ।)

[मतांसे आगे]

चौथे-पदके कारण गृहमुखकी भी प्राप्ति नहीं होती। जहांतक ज्ञान पड़ता है जिन घरमें पदकी प्रथा है उनमें स्त्रियां केवल बाहरके लोगसे ही पर्दा नहीं करतीं-अपने जेठ, श्वसुर आदिसे भी पर्दा करती हैं और दूतरोके सामने अपने पतिको देखकर भी गजभर कम्पा पटाक्षेप कर लेती हैं। कैसे आश्चर्यकी बात है कि जो श्वसुर पिताके समान होता है उससे भी बहू पर्दा करती हैं। मान लो किसी घरमें अकेली एक स्त्री है और वह बेटेकी वह है। अब अगर उसका श्वसुर घरपर आता है और उसे कोई बात पूछनी होती है तो वहसे जवाब तक नहीं मिलता। इसी प्रकार यदि बहूको कुछ कहना होता है तो वह श्वसुरसे बोल नहीं सकती। किसी भी शास्त्रमें ऐसा लेख नहीं है कि स्त्रीको अपने श्वसुर अथवा जेठसे परदा करना चाहिये। स्त्रियां यहांतक करती हैं कि अपने पितृ तुर्य श्वसुर आदिसे बोलती नहीं किंतु नौकर आदिसे वे बराबर बोलचाल सांभव रखती हैं। दूसरे घरमें परदा और बाहर जाकर हरिद्वार, काशी आदि स्थानों-मेंलोंमें जहां हजारों गुण्डे बदमाश सुपलमान आदि वस्तुएँ बेचते हैं परदा न कर उनसे बोलती हैं, खरीद करती हैं, हंसी मनाक तक उड़ती है। आश्चर्य !

पांचवें पदकी प्रथाके कारण अतिथि सत्कारमें भी बाधा पड़ती है। मान लीजिये कि कोई अतिथि किसीके घरपर आया और घरमें उस समय केवल स्त्रियां ही हैं, पुरुष बाहर व्यापारादिके लिये गये हुए हैं। अब वह वेवरा सिवाय इसके कि घरपर दो चार आवाज देकर चला जाय और क्या करेगा ? अन्दरसे एक तो आवाज आएगी ही नहीं और यदि आई भी तो यह आएगी कि हैं नहीं, बाहर गये हैं। अब कभी पुरुष घरपर आवेंगे तब कहीं जाकर विचारेकी आवश्यकता (पाहुनगति) की जायगी। जिन प्रांतोंमें पदकी प्रथा नहीं है वहां ऐसा नहीं होता, वहां पुरुषोंकी अनुपस्थितिमें स्त्रियां सब काम कर लेती हैं। अभी गुजरातके दौरेमें मुझे पूर्ण अनुभव हुआ कि किननी ही जगह मुखियाके न होनेपर स्त्रियोंने ही उनकी अनुपस्थितिमें आज भगतके अतिरिक्त चन्दा (टीप) भी करके दिया है। यदि हवर भी परदेवली स्त्रियां होतीं तो चन्दा बहुतसी जगहोंपर न होता। दूसरे अतिथि सत्कार करना, उन्हें प्रीतिसे भोजन खिलाना यह कार्य स्त्रियोंका ही है। यदि स्त्रियां इस कामको न करें तो वे एक प्रकारसे पुरुषोंके ऊपर बोझा देती हैं। पुरुषोंको इतने काम होने हैं कि वे यह सब नहीं कर सकते हैं। यह स्त्रियोंका कर्तव्य है कि वे पुरुषोंके काममें सहायता दें।

बड़े घरानों (सेठ, साहूकारों) में देखा जाता है कि उनके यहां गेटी बगानेवाले नौकर लोग होते हैं, वे हा अतिथियोंको भी निमाते

है। क्या कभी नौकरों द्वारा भी अतिथि सत्कार कराया जाता है? श्री महाशस्त्र तत्त्वार्थसूत्रजीमें तो दूसरेको अतिथि-सत्कारके लिये कहना अर्थात् मुझे कार्य है मैं बाहर जाता हूं तुम उनको आहार दे देना आदि अतीचार माना गया है।

छट्टे-पदोंके उठा देनेसे स्त्रियां घग्गी चीजोंको हथियं खरीद सकती हैं। जिन प्रांतोंमें परदेकी प्रथा नहीं है उनमें सब चीजें स्त्रियां खरीद जाती हैं। हम पर हमारे कुछ पदोंके विरोधी भिन्न यह रहे बिना न रहेंगे कि यदि बाजारोंमें स्त्रियां सौदा खरीदने जायगी तो उनका चारित्र्य खराब होजायगा, सो इसके उत्तरमें मैं यही कहूंगा कि गुजरात-दक्षिणकी स्त्रियां पंजाब देहली व यू० पी० प्रान्तकी स्त्रियोंसे चारित्र्यमें कम नहीं होतीं।

इसलिये जब बाजारमें सौदा खरीदनेसे उनके चारित्र्य खराब नहीं होने तो इन प्रांतोंकी स्त्रियोंके भी चारित्र्य खराब नहीं हो सकते और न किसीकी मजाज है कि उनकी ओर निगाह उठाकर भी देख सके। इन प्रांतोंमें बरबर अनेक महिकाएं वजारमें सौदा खरीदनी हैं, खुले मुँह घूमती हैं, कोई उनकी तरफ आंग्र भी नहीं उठा सकता। इसके विपरीत जो स्त्रियां घूबट (पर्दा) करके बाहर निकलती हैं उन्हें देखनेकी लोगोंकी इच्छा होती है और उन्हें ही लोग घूर कर (तेज टपिसे) देखते हैं, कारण कि यह एक नियम है कि जितना आप जिस चीजको छिपाएंगे उतना ही अधिक लोग उसके देखनेका प्रयत्न करेंगे। क्योंकि छिपी हुई चीज

एकदमसे देखनेमें नहीं आती। इस कारण वार २ उसे देखा जाता है परन्तु इसके जो चीज साफ नजर आती हैं उसे लोग एक बार भी देख लेते हैं, फिर उसकी ओर देखते तक भी नहीं हैं। अतएव यह भय करना कि पदोंके उठ जानेसे लोग स्त्रियोंको बुरी निगाहसे देखेंगे, निर्मूलक है।

हां, यहांपर यह बता देना भी आवश्यक है कि जिस प्रकारके चमकीले भड़कीले कपड़े पंजाब, देहली और संयुक्त प्रांतकी स्त्रियां पहनती हैं तथा सिरसे लेकर पैरतक आमूषणोंसे लदी रहती हैं वे हानिकर हैं और सच पूछो तो वे ही बुराईके कारण हैं। उन्हें देखकर अवश्य रास्ता चरुतोंकी निगाह स्त्रियोंपर पड़ेगी। गुजरात, महार पूछी स्त्रियां सादे कपड़े पहनती हैं, जेवर उनके शरीरपर बहुत कम होते हैं। मथुरा, काशी आदि नगरोंमें तीर्थस्थानके कारण अनेक गुजरानी, दक्षिणी स्त्रियें आती हैं और वे खुले मुँह बाजारमें निकलती हैं। उनपर किसीकी भी कुदृष्टि नहीं पड़ती कारण कि वे पंजाब और यू० पी० व देहली प्रान्तकी स्त्रियोंके समान सिंगसे पैरतक आमूषणोंमें नहीं लदी होतीं और न उनकी तरह चमकीले भड़कीले कपड़े पहिनें होती हैं। अतएव परदेके उठानेके साथ साथ इस बातकी प्रथम आवश्यकता है कि आमूषणों और चमकीले भड़कीले कपड़ोंका पहिनना कम किया जाय। हम विश्वास दिक्ते हैं कि यदि स्त्रियोंमें शिक्षाका प्रचार किया जावे तथा परदेकी प्रथाको उठाकर उन्हें सादा किबास पहिननेका उपदेश दिया जावे तो उनपर किसी

प्रकारकी कोई आपत्ति नहीं आसक्ती किन्तु उनका स्वास्थ्य अच्छा रह सकता है, वे निरोगी सन्तान उत्पन्न कर सकती हैं, अपने ज्ञानको बढ़ा सकती हैं तथा पुरुषोंकी सहायक होसक्ती हैं ।

सातवें—मुझे कई बार लगन (शादी) में फेर करानेका अवसर प्राप्त हुवा है व होता रहता है । देखा जाता है कि कन्याको बिलकुल चारों तरफसे लपटकर बैठा देते हैं—उसका हांस चुटने लगता है । विवाहकी विधि किसी भी प्रकार ठीक नहीं होती । सप्त वचन जो वर और कन्याके द्वारा परस्परमें कहे जाने चाहिये किन्तु उनमें कोई वर ही अपने मुंहसे कहता होगा परन्तु परदेनशी कन्या तो कोई भी अपने मुखसे नहीं कहती, दोनों तरफके वचन गृहस्थाचार्य (पंडित) ही कहकर पूर्ण कर देता है । क्या इस प्रकारके धर्मकार्य करनेमें भी शर्म ? धार्मिक कार्योंमें तो इतनी शर्म परन्तु जहां गालियोंसे भरे हुए गीत गाये जाते हैं, नृत्य होता है, आपसमें लड़ती हैं तब बह शर्म, बह पर्दा किसर कूब कर जाता है सो समझमें नहीं आता है । धन्य हैं ऐसी समझको ।

एक पंजाबी स्त्री (परदेकी विरोधिनी) कहती थी कि संसारमें जो अंग शरीरके ढकने चाहिये वे तो ढके नहीं जाते और जो अंग सदैव खुले रहने चाहिये उन्हें ढकती हैं । जैसे—गुह्य अंगोंको मोटे र वस्त्रोंको पहनकर लज्जा ढकनी चाहिये परन्तु रेशमी बारीकर (महीन) सादियां और मल्लमली किनारीकी घोटियां पहनकर अप-वेको वे धन्य समझती हैं और मुखपर डेढ़

गज लम्बा परदा बटकता है ! इसमें सन्देह नहीं कि यदि घोटिके ऊपर पानी पड़ जावे तो उसका पहनना न पहनना बराबर होजाता है ।

आठवें—पति पत्नीका अधिक प्रेम परस्पर तभी होता है जब स्त्री पतिको अपने हाथसे बनाए हुये नाना प्रकारके व्यंजनसे पूर्ण भोजनको खिलाती हैं । पत्नीने तो पदा किया और नौकरने भोजन खिलाया तो फिर स्त्री क्या दर्शन करनेको घरमें आती है ?

बुन्देखंड आदि प्रान्तोंमें तो स्वयं अधिकांश स्त्रियां पानी विधिपूर्वक छानकर लाती हैं, नौकरोंपर पानीका भरोसा नहीं करतीं, नौकर क्या जाने अरु गालन विधि क्या होती है ? हमने देखा है जो घीवर (मांवाहारी) या और जातिवाले सेठ लोगोंके यहां पानी भरते हैं वे छल्ला नामको ही कूपर लेनाते हैं, पानी छाना और उपको वैसे ही (बिना निबानी किए) निचोड़ दिया जिससे वे सारे जीव एक-दम मर जाते हैं !

तभी लोग तो यह कहवत कइ देने है “पानी पीवे छानके, जीव मारे जानके ” जो कि सोलह आना चरितार्थ होती है । तथा अन्नको शोषकर स्वयं पीसना-कक (पेंच) का पीसा नहीं खाना, स्वयं रसोई बनाना, अतिथियोंको परोसना, पूजा--पाठादि करना सभी क्रियायें स्वयं होती हैं । इनका अनुकरण सभी प्रान्तवासी लोगोंको भी करना चाहिये । स्त्रियोंको पढ़ाना कहांतक ठीक है, उनका शीलवर्धन कैसा होता है आदि विषयको विशेष फिर कभी लिखूंगा । श्रीयुत

मा० भृगुमलनी सुशरफ कृत्र, माताका बेटीको उपदेश, मसुगाळ जाते समय देखिये उसमें मां, क्या १ शिक्षा देनी है ।

आज भई मेरी बेटी पराई सास ससुर घर जाना होगा । सास ससुर परिजनकी सेवा, पति पुत्रानित लाना होगा ॥ धर्म कमका साधन निश्चयिन, नारी धर्म निभाना होगा । पहिले उठना पीछे सोना, दिनभर हाथ हिलाना होगा ॥ भोजनकी विधि शोच समझकर, पानी छान वरतना होगा । लोभमान अह माया ममता, क्रोधकी आग बुझाना होगा ॥ कुल मर्यादा नहीं बिसरना, आज धर्म मन माना होगा । धन दौलतका गर्व गमाकर, धन धन दान दिखाना होगा ॥ ब्रह्माभूषण, गहना गांठा, इनका हठ नहीं करना होगा । आमदसे कम खर्च उठाकर, दुःख निवारण करना होगा ॥ शीलरतनको चरमें रखकर, पंचाणुवत धरना होगा । क्रोधित होय पति जो कदाचि, भाव विनीत बताना होगा ॥ विद्या पढ़कर निज हित करना देव, धर्म गुरु लखना होगा । धर्म नारीका ग्रन्थनमें जो तादी धर शिव पाना होगा ॥ 'बालक'की शिक्षा मन धरकर, घर र मंगल गाना होगा । आज भई०... .. ॥

क्या उपर्युक्त पद्यमें आई हुई बातें परदेवाली औरतसे होसक्ती हैं ? पाठको ! धर्मरतन पं० दीपचंदनी वर्णीकृत "पुत्रीको माताका उपदेश" नामक पुस्तक सूरतसे मंगाकर अवश्य पढ़ें ।

नोट—इस लेखमें और भी लेखोंसे सहायता ली गई है ।

नवीन शास्त्र--सूर्य प्रकाश ।

मूल श्लोक व हिन्दी टीका सहित । इसमें पंचमकालका वर्णन, वैष्णव धर्म व लोकात्मकी उत्पात्ति, भ्रंसे कुंदकुंदस्वामीका वाद, विधवा होना आदि दुःखोंके संबंधमें प्रश्नोत्तर, मूर्तिपूजा समर्थन, पूजन-अभिषेक, प्रतिष्ठाकी महिमा, शिखरजी व गिरनारका वर्णन, भीषण मुनि वर्णन व श्रुतावतार कथा भी है । शास्त्रकार वेष्टन सहित पृ० ४२२ व म० सिर्फ दो रुपये ।

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सूरत ।

सफल जीवन ।

(ले०-पं० किशोरिलालजी शास्त्री-साठूमर)

कीटाणुसे लेकर मनुष्य तक जन्म लेकर मृत्युके दुःखोंको भुगतान करते हैं । जिस प्रकार प्रभात, सायं, दिन, रात्रि, पुण्य, पाप, सुख, दुःख भलाई, बुलाई, सत्य, झूठ, शीत, उष्ण, सज्जन, दुर्जन और उदय, अस्तमनका जोड़ा विश्वमें पाया जाता है, इसी तरह अनादिकासे जन्म मरणका सवाल लगातार चला आया है व अनन्तकाल तक चला आवेगा । जिसने जन्म लिया उसका मरण प्रकृतिके नियमानुसार अवश्यभावी है । तीर्थंकर, ब्रह्मदत्त, चक्रवर्ती और नारायण सरीखे महाबलशाली शक्तिसम्पन्न आसमुद्रांत पृथ्वीका स्वामित्व पानेवाले भी अगणित इस घरातलपर आये । और अयु वेला आनेपर सभीने धन, मन और शरीर छोड़कर दूसरी गतिके प्रति प्रयाण कर दिया । मृत्यु (काल) आजानेपर इन्द्र धरणेन्द्र यहांतक कि जिनेन्द्र भी मंत्र, तंत्र और औषधिसे किसीको भी नहीं बचा सकते हैं । इसीलिए आनाल वृद्ध संसारको क्षणभंगुर और असार कहते हैं । आज सुबह जो बड़े सनघन कर बादशाहके तरुतपर बैठा हुआ है संभवतः मध्याह्न समय वही पुण्यःत्मा परेतमूमिमें दग्ध शरीर देखनेमें आता है । आयु-कायका कोई भरोसा नहीं है कि कब-क्युत होजावे ।

इस घंटीपर तिर्यकु, मानव और देव

पर्याय परिणत जीव मृत्युके पतीकारमें व ऐहिक लौकिकी भौतिक विभासितामें जीवनभर व्यतीत कर देते हैं । हरएक प्राणी यह चाहता है कि शारीरिक विभासिताओंकी कमी न हो और हमको मरण न करना पड़े । प्रातःकालसे शाम तक दुनियामें जितनी दौड़धूर होरही है जितने कारोबार चक रहे हैं, गरीबसे लेकर अमीर तकके जितने प्रयास हैं, उन सबका मुख्य कारण ऐहिलौकिक उत्कर्ष ही है । योगी वियोगी, रोगी—निरोगी । इनमेसे योगी और निरोगीका जीवन अच्छा माना जाता है ।

इसी तरह विचाराधीन विषय है कि जिवका जीवन सफल है उसका जन्म लेना और मरण करना प्रशंसनीय एवं स्तुत्य है । इस दुनियामें कितने प्राणी नहीं आये और चले गये, किंतु आज सफल जीवन आत्माओंका ही नाम स्मृति-पथ प्रस्थायी बना हुआ है । सफल जीवनवाले व्यक्तियोंकी गुण गाथा विश्वमें गायी जाती है । भारतके प्रत्येक व्यक्तिकी व स्वासकर जैन जातिके बच्चे बच्चेकी प्रबल धारणा होवे कि सफल जीवन अनन्त दारुण कष्टोंसे बढकर है । सिंहनीकी एक संतान बनका अद्वितीय शासन करती है । गर्दभीके कई संतान होनेपर भी उसे जीवनभर भार बहनमें जीवन कीका समाप्त करना पड़ती है । किसी कविने कहा है—या दुनियामें जायके छोड़ि देय तू ऐंठ । लेना है तो लेय ले उठी जात है पैठ ॥ १ ॥ सबसे मनुष्यको सुख आती है क्रोध, मद मात्सर्य, माया, ईर्ष्या, द्वेष और लोभ प्रभृति कुसंस्कारोंका उसके मानस मंदिरमें

इतना ज्यादा अधिकार होजाता है कि उनके कारण यह प्राणी यथार्थ हितकी तरफ नहीं झुक पाता है । यही कारण है कि आज भारतमें या जैनसमाजमें बहुत कुछ आर्थिक व ज्ञानादि असाधारण शक्ति होनेपर भी तमाम भारत या जैनसमाज फूटका अड्डा बन रही है । “मुण्डे मुण्डे मतिभिन्ना” के सिद्धांतानुसार प्रति व्यक्ति मत्तभेदके सहान चक्रमें पड़ा हुआ है । क्रोधादि कुत्सित वासनाओंके पूर्ण करनेके लिए मानव न जाने कितने अनर्थ नहीं करता है । यहां-तक “पराये अपशकुनके लिए अपनी नाक कटा लेने” की कहावतके अनुसार अपना सर्वस्व तक खो चुकनेके लिए तुरु भैठता है । इन्हीं दुर्वासनाओंकी पूर्तिके लिए लाखोंका दानपुण्य किया जाता है । लोग वर्षों पूजन, स्वाध्याय करते हैं । तीर्थयात्रा गमरथ प्रतिष्ठायें बड़े हाव-भावसे की जाती हैं । विद्यालय, औषधालय आदि कायम किये जाते हैं । समय पड़नेपर सज्जनोंकी मायापरिपूर्ण असाधारण आतिथ्य एवं सेवा सुश्रूषा की जाती है ।

विश्वमें जीवन सफल बनानेके कृत्रिम अगणित उपाय हैं । जबतक लौकिक व पारमार्थिक दोनों उद्देश्योंको लेकर जीवन—पणाली निर्माण नहीं की जावेगी तबतक सफल जीवनकी कोई आशा नहीं समझना चाहिए । मनुष्य मात्रके लिए दो प्रकारका मार्ग जीवन सफल बनानेके लिए है । १—गृह परिवारको छोड़कर पारमार्थिक सिद्धिकी तरफ ही अपना लक्ष्य बांधकर जीवन यापन करना । २—चूंकि इस उत्तम मार्गकी नाना उलझनोंके कारण प्राप्ति सहसा भिन्न ही

नहीं सकती है अतः गार्हस्थ्य जीवनमें ही रहकर एक देश पारमार्थिक मार्गका अनुसरण करते हुए जीवनकी पगडण्डियां तय करना है। आज जैन भारतमें दूसरे मार्गका पथिक बननेकी ही सुगमता है। कारण कि लौकिक जीवन पारमार्थिकताके बिना एक प्रकारसे नास्तिक जीवन है। मनुष्य—पर्यायको पाकर पुनः विषयोंमें मदोन्मत होजाता है। पूर्वमें जो पुण्य संपादन किया था; उसके अनुसार इस पर्याय रत्नको पाया। अब कर्तव्य है कि फिरसे अच्छी पारलौकिक कमाई संपादन करें जिससे दूसरे भवमें सुखकी प्राप्ति हो। ये भौतिक धन, स्त्री पुत्र और धन बांधवादिक तो यही पड़े रहेंगे, कोई साथमें जानेवाले नहीं है। साथमें अपना किया हुआ पुण्य पापही जाता है। वह किसीके रोके भी नहीं रुक सकता है। इसलिए लौकिक जीवनके साथ पारलौकिक उत्ततिकी चेष्टा करनेसे इस जीवनकी सफलता मानी गई है।

पारलौकिक जीवनकी साधक सामग्री आचार्योंने गृहस्थके लिए देवपूजा, गुरुपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये षट्कर्म बतलाये हैं। जिस प्रकार किसान खेती करता है, उसे उत्तम फल स्वरूप गेहूं आदि उत्तम पदार्थोंकी प्राप्ति तो होती ही है, साथमें मूषा बगैरह पदार्थ अनायास ही मिल जाते हैं। इनके लिए खासकर प्रयत्न नहीं करना पड़ता है। इसी तरहके देवपूजादिक षट्कर्मोंके करनेसे साक्षात् व परस्परसे स्वर्गमोक्षकी प्राप्ति होती है साथमें इस भवमें पुत्र पुत्रादि व धन धान्यादि

तो अनायास ही प्राप्त होजाते हैं। इस तरह जैनी मात्रका कर्तव्य है कि उभयसिद्धि विषायक शास्त्रोक्त षट्कर्मको दैनिक करना चाहिए। इसके बिना नरभव शून्य सरीखा समझना चाहिए।

जीवन—संग्राममें लोकव्यवहारकी बहुत भारी जरूरत है। कोई व्यक्ति विशेष धनवान हो या गुणवान, यदि वह व्यवहार ज्ञान शून्य है तो वह अपने जीवन संग्राममें विजयी नहीं बन सकता है। लोक व्यवहारमें बहुतसे सद्व्युक्तोंका समावेश पाया जाता है—दया, विश्वप्रेम, एकता, जातिप्रेम, धर्मप्रेम इत्यादि अपरिमित मानवोचित सुकृत्य, लोक व्यवहारके अतीव उपयोगी हैं। सबसे प्रथम लोक यात्राके निर्वाहके लिए न्यायपूर्वक आजीविका संपादन करना चाहिए। जिसप्रकार योगियोंको एक धामा रखना महापाप है, उसी तरह दरिद्रमय जीवन गृहस्थके लिए अत्यन्त हानिकारक है। अतः न्यायपूर्वक आजीविका करना चाहिए। आजीविका हजारों प्रकारसे की जासکتی है। मगर राजदण्ड व पंचदण्डका दोष जिसमें न आवे ऐसी आजीविका गृहस्थके लिए निर्दोष बतलाई गई है। जब अपने पास यथोचित आमद है, तब ही धार्मिक व अन्य लौकिक सेनाओंमें अग्रसर हो सके हैं, अन्यथा नहीं। अतः धर्म, अर्थ और काम इन तीन पुरुषार्थोंके सेवन करनेके सिद्धांतसे भी गृहस्थको आजीविका आद्योपान्त सोच विचार कर करना चाहिये।

२—प्रेम मनुष्यका प्रकृतिसिद्ध अधिकार है।

जिसके दिलमें प्रेमकी गंध नहीं है वह इस भारतमाताके लिए निर्गन्ध टेसूमें भी घटकर निष्कर्मा भारमात्रकी वस्तु है। प्रेम एक अनौकिक वस्तु है। आज अगर भारतके बच्चेमें विश्व-प्रेम या देशप्रेम या जाति और धर्मप्रेमकी भावना होती, रगरगमें प्रेम मिश्रित खूनका संचार होता तो भारत परतंत्र न होता; या जैनसमान अपनेको सबसे पिछड़ी हुई न देखती। जगह जगह जो आज दुर्बलियाँ देखनेमें आती हैं, उसके स्थानमें भाईसे भाई गले लगाकर मिलने। घर घरमें द्वेष, ईर्ष्या, कलह व अनैक्यता अपना साम्राज्य न जमा सकती। विश्वप्रेम या प्रेमभावके यथार्थ न पाये जानेसे हमारी अमोघ शक्तियाँ धूलिधूमरित न होकर पचण्ड सूर्य प्रतापके समान आसमानमें जगमगाती नहीं दिखती हैं। हमारा व्यापार प्रेम बंधन न होनेके कारण प्रत्यहं पतित एवं गिरतीपर है। जातीय दशा विखरती हुई जाती है। इसलिये जीवन सफल बनानेके लिये प्रेम या निश्चार्थ वात्सल्य भावकी अत्यधिक आवश्यकता प्रतीत होरही है।

आन कोई विपत्ति असित बंधुओंके साथ सहा-नुभूति मात्र भी दिखानेवाला नहीं दिखता। भाईर सहानुभूतिकी बजाय एक दूपरेको नीचा दिखानेकी हिरसमें अपने सर्वस्व तकको नष्ट करनेपर उतारू हैं। क्या ऐसी व्यावहारिकता हमारे व पराये जीवनको सफल बना सकती है? नहीं।

प्रमाद व अकर्मण्यता भी जीवनक्षेत्रमें खतरनाक अवस्था है। भारतका बहुभाग मानव समान दासवृत्तिमें पड़कर या भिक्षावृत्ति या परमुखापेक्षित्वसे उदरपूर्ति द्वारा विशिष्ट प्रमाद-

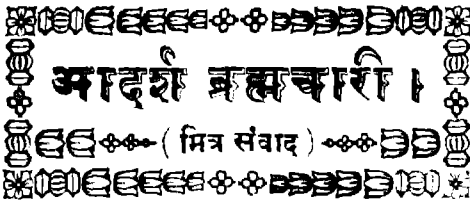
शील व अकर्मण्य होरहा हैं। आवाक, वृद्धको अपने पदस्थ परिस्थितिके अनुसार स्वपर कल्याणार्थ प्रयत्नशील रहना चाहिए।

खर्च बाहुल्य भी जीवनको अशांत बनाये रखता है। विनासिनाकी होइ खर्च बाहुल्यकी ओर अग्रसर बना देती है। ऐसी जगह स्मरण आता है कि आवश्यकताओंकी पूर्तिमें शांति नहीं है। बल्कि आवश्यकताओंकी निवृत्तिमें सुख शांति है। इसलिये बहु विहम्बनाओंमें न पड़कर सादगी जीवन विताना नितरां प्रशंसनीय है। पाठको! इसप्रकार इप छोटेसे छेसमें जीवन सफल बनानेके अमोघ एवं अचूक लौकिक व परमार्थिक सत्प्रयत्न बनाये गये हैं। जीवनके उपयोगी बनानेमें ही व्यक्तित्व और वक्तृत्वकी रक्षा होसकती है। अप्रसस्त जीवन मृत्युसे बढ़कर है।

—❁— देखा । —❁—

(गजल)

दुनियामें हमने सबको, मतलबका यार देखा ।
अपना सगा न लेकिन, कोई गम गुमारे देखा ॥
सब हैं बनी-बनीके, विगड़ीका यां न कोई ।
ये खूब दिलमें हमने, अपने विचार देखा ॥
ये नाते और रिश्ते, सब हैं ठगीके रस्ते ।
मतलबके बाद सबको, करते किनार देखा ॥
भरते थे दम, जो दमका, आखिर उन्हें भी हकदिन,
बगले ही तकते-तकते, बक्ते शिकार देखा ॥
इस थोड़ी मिंदगीमें, ये कर लिया तजुहवा ।
झूठा ' प्रिये ' यहाँका, सब कारोबार देखा ॥
' प्रिय '



(ले:—पं० दीपचन्द्रजी वर्णी, चौगासी ।)

माषका महिना होनेसे सभी जगह ठंड करारी पड़ रही है, आजकल जहां तहां ऊनके बस्त्रों तथा जिन्हें ऊन मक्खमर नहीं वे बिचारे रुईसे भरे हुए गुदड़ोंको पहिरे हुए दिखाई देते हैं । फिर भी दुर्दैवसे कड़ोड़ोंकी संख्यामें यहां हमारे भारतीय नरनारी ऐसे दिखाई देते हैं कि जिनको रेशम व ऊन व रुई भरे गुदड़ोंकी तो बात ही क्या परन्तु अपने तनको ढक कर बज्जा गिवारण करनेके लिये भी पर्याप्त फटे टूटे बस्त्र तक नहीं मिलते ! यदि कोई भाई तथा काके उन्हें कोई टाटका टुकड़ा देदेता तो उसे वे कश्मीरी शाल मानकर अपनेको घन्य गिन लेते हैं ।

इन दिनों श्रीमानोंकी दशा ही विचित्र हो जाती है, वे तो मरुमूत्र तक त्यागनेकी घरोसे बाहर मैदान तक नहीं जाने । और कतिपय तो ऐसे भी होंगे जो मोनेके कमरेके पाम डी कमोड रखवा जिया करने हैं, जब हमारे कृषकगण कंधेपर परेना रखे हुए खेतोंमें पानी देते तथा रातर भर शिगर ओस और पवनके झन्झटे सहते हुए रखवाकी करते हैं ।

यद्यपि हमारे योगीजन भी ऐसे समयोंमें चौहटोंपर नदियों या तालाबके किनारे शीत प्रदेशोंमें जहां पानी भी जमकर बर्फ बन जाता

है निश्चक ध्यान धरते हैं इसीको पंडित मुघर-दासजीने कैसा अच्छा चित्रण किया है—

शीतकाल सब ही जन कण्ठे,
खरे जहां बन वृक्ष उहे हैं ।
भंभा वायु चले वर्षा ऋतु,
वर्षत बावुल भूम रहे हैं ॥
तहां धीर तटनी तट चौषट,
ताल पार पर कर्म उहे हैं ।
सहें सभ्हाल शीतकी बाधा,
ते मुनि तारणतरण कहे हैं ॥

(पार्श्वपुराण)

तथापि बह्य दृष्टिसे दोनों समान रीत्या शीतसे पीड़ित असहायसे दुखी दिखते हुये भी अन्तःकर्म दोनोंके दिन रातका अंतर है । एक (गरीब) सब कि चाटकी दाहमें दहकते हुए दुःखसे समय काटते और आतंरीद्रभावोंसे सचि-कण कर्म बांभते हैं, तब दूसरे (दिगम्बर जैन साधु मुनि योगी) चाटकी छाहतकसे हटकर स्वात्मानुभवके सुखमें निरमग्न हुए धर्म तथा शुद्ध ध्यानसे कर्मोंकी निर्मला करके शिवपुराणके पथिक होते हैं ।

यह तो हुई सामान्य बात, अब विशेष मुनिये । संसारमें सभी तरहके जीव होने हैं, ऊार तो दो तरहके जीव बताये जिन्हें अपने ही विषय कषायोंको पोषणसे या उन्हें शोषणसे ही अक्-काश नहीं हैं, वे अरनेर नशेमें चूर हैं । उनकी जान दुनियां रही या जाओ । अब यहां उन लोगोंकी देखिये कि जो परके दुःखोंसे दुःखी और उनके सुखोंमें संतोषी हैं । वे हैं कांग्रेसमेन अर्थात् जो घरोंके सब प्रकारके ऐशो आरामको त्यागकर खुले सिर या गांधी टोपी

क्याये जोड़ेसे सारे लहरके बल पहिरे हुए कौड़ी काठ जाड़ेमें काहोर (जहां बहुत शीत पड़ती है) दौड़े जा रहे थे इनको दिनरात यही पुन सवार थी कि हमारा भारत-देस स्वाधीन हो, सुखी हो । ये अपने भारती नर नारियोंके आर्तस्वरोको सुनकर उनकी करुण दशा देखकर और उनके घनसे पुष्ट होनेवाले, उन्हींपर जल्पाचार करनेवाले स्वार्थी कृशुभन जीवोंके जल्पाचारोंसे ऊबरकर अपने तन, जन तकको भी मूठकर देखसेवामे लग रहे हैं । इनकी नीति है—
जयं मित्रः परो वेत्ति जणना कपुण्येतरसां,
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।
वाह ! ये ही पुरुष बन्ध हैं ॥

इन्हीं दिनों स्कूक, काठेज, कचहरी आदि समस्त राज्यकीय संस्थाओंकी छुट्टी होती है । इसीसे समीका कामेसमें संमिळित होने व तीर्थ-यात्राका शुभ अवसर मिल जाता है । हमजिये हमारे पाठकोंके चित्र परिचित मित्रगण भी यात्रार्थ चक दिये और सहकुटुम्ब श्री १००८ जम्बूध्वामी महाराजके निर्वाणक्षेत्र चौगसी मपुरा ज.बहुंचे । पातःकाकसे सन्ध्या तक सभी नर नारियोंने सिबाव छोटे बच्चोंके इस दिन उपवास किया और सारा दिन सामायिक पूजा स्थापनाआदि धर्मचर्चामें बिताया । वहां स्थित "श्री जयम ब्रह्मवर्षाश्रम" का निरीक्षण करके सन्तोष प्रसट किया । परन्तु 'अर्थाभावसे यथोचित जजति नहीं कर सका ।' इसपर समाजका लक्ष्य स्वीचनेके क्रिये अपनी सम्मति भी किल्ली, रात्रिको आश्रमोय ब्रह्मचारियोंने छात्र पढ़ा और १ मजन कहा—“वन मुनिराजपरम ब्रह्म-

चारी” इत्यादि । पश्चात् सब लोग बधाश्चान गये ।

हमारे मित्र ऐसे नहीं थे कि उपवासके दिन ही बके मांवेकी मांति शीघ्र ही निद्रादेवीके आश्रित होजांय । इसक्रिये वे धर्मचर्चामें ही समय बितानेके क्रिये एक कोठरीमें बच्चोंको सुलाकर एकत्र होकर बैठ गये कि इतनेमें अपने सहज स्वभावके अनुमार सिंगेनजी बोली—

सिंगेनजी—काका ! सुशीक अब स्वानो होगयो है, सो कहं बातचीत कगाई है ! का जब जलघट्टिवाके कौन बडूत दिन हैं, बात कहत थार महिना निकर जेईं ।

जयचंद्र कुछ बोधने ही वाळे थे कि इतनेमें सुशीक उक्त मजन किसकर जागवा और बोला—
पिताजी ! बों तो हमने श्री जम्बूध्वामी महा-
राजकी पूजा की है सो यह तो जाना कि यह श्री १००८ जम्बूध्वामीका निर्वाणक्षेत्र है, परन्तु मेरी इच्छा इनके विषयमें विशेष जाननेकी है ।

जय०—वेटा ! तुम्हारा प्रश्न मामयिक है । परन्तु तुम्हारी काकीजीने तो और राग छेड़ दिया है, सो पहिले किसका उत्तर दूं ?

सुशीक—(दूरसे काकीकी बात सुन चुका था, बोला)—प्रथम मेरा, क्योंकि पिताजी धर्म, जयं, काम पुरुषार्थोंमें प्रथम धर्म पुरुषार्थ ही मुख्य है, और हम लोग धर्मतीर्थपर धर्मपाषनाथं जाये हैं, तिसपर आज उपवासका दिन है । इसमें अन्यान्य बातें छोड़कर धर्मध्यान ही करना चाहिये, ऐसा मैंने रत्नकण्ठमें पढ़ा है और आपने एकदिन श्रीआदिपुगाजसे भरतमहाराजकी बात सुनाई थी कि जब आदिनाथ धगवानका केवकथान हुआ तथा भरतजीके पुत्र उत्पन्न हुआ

और आयुषशालामें सुदर्शनचक्र रत्न दिखा। ये तीनों समाचार श्री भरतजीको एक साथ सुननेमें आये तब उन्होंने पिछले दो को गौण करके प्रथम भगवानके केवलज्ञान करवाणकोत्मक मनाना ही मुख्य रक्खा था। इसलिये मेरा उत्तर दे दीं जये। संभव है इसमें काकीजीका भी समाधान होजावे। जय०—(भाभीजीकी ओर देखकर) क्या आज्ञा है ?

सिंगेनजी—सुशील तो पंडित होगयो है (हंफकर) ऐसे सही, येईको कड़वो कर देओ, वत तो ठीक कहत है, जौ तौ संसारको झगड़ो कगोई है, धर्मको समय मुशकलसे मिलत है।

जय०—भाबीजी वास्तवमें यही है (सुशीलसे) सुशील, श्री० जम्बूध्वामाजीका जीवनचरित्र पहिले तीन बार दिगम्बर जैन पुस्तकाख्य—सूरतसे छप चुका है सो घर रक्खा है और १ नया संक्षेपमें पूजा व मंदिर और सेठ लखमीचंद्रके घरानेके हाससहित इसी ऋषभ व० आश्रमकी ओरसे छपा हुआ यहीं मिलता है सो तू पढ़ लेना।

सुशील०—जी कह तो पढ़ ही लूंग, यह तो पुराण पुरुषोका चरित्र है सो जितने बार पढ़ा जाय उतना ही अच्छा है, इसके सिवाय यहां काकीजी, भाबीजी, जीजी आदि ऐसे भी हैं कि जिन्हें वाचना नहीं आता सो वे भी तो सुनकेगी।

जय०—हां यह सत्य है, अच्छा सुनो।

जब राजगृही नगरीमें राजा श्रेणिक राज्य काते थे, उस समय उनके यहां राज्यश्रेष्ठ अई-दासजी रहते थे, उन्हींकी धर्मपत्नी जिनमती सेठानीके पुत्र हमारे पूज्य जम्बूकुमार थे। ये बाल्यावस्थासे ही महापरक्रमी, रूपवान और

गुणवान थे। एक दिन जब वे १२-१३ वर्षके ही थे, कि राजाका पट्टवंश हाथी छूट गया और नगरजनोको त्रासित करते हुए इनके महककी ओर आया। उस समय ये बालकों सहित क्रीड़ा कर रहे थे, सो बालक तो उसे देखकर भाग गये, परन्तु इन्होंने भागना कायरताका चिह्न जानकर उसका सहाना किया और शीघ्र ही उसे बश करके उसपर चढ़ गये और राजपासादमें जाकर छोड़ आये। इस शिशुवयमें इतने भारी साहसको देखकर इनकी सब ओर विमलीके समान प्रशंसा फैल गई और उसी नगरीके निवासी चार श्रेष्ठियोंने अपनी २ चार कन्याएं इनको देना निश्चित कर लिया। कुछ दिन पश्चात् राजा मृगांड (श्रेणिक महाराजका आज्ञाकारी, जिमने अपनी कन्या श्रेणिक महाराजको देना निश्चित किया था) के यहांसे राजगृहीमें यह समाचार आया कि रत्नचूक विद्याधर आपकी नियोगनीको हरण करनेके विचारसे हमपर चढ़ आया है, गढ़ घेर लिया है, इससे आप हमारी सहायता करो। महाराज श्रेणिकने दरबारमें ये वृत्त सामंतोंको सुनाकर कहा कि इस कार्यके लिये कौन अश्रेष्ठर होता है वह आकर बोड़ा ठठाले। बस इतना कहना था कि श्री जम्बूकुमारने इकदम बोड़ा उठा लिया। कहां बाल्यवस्था और कहां विद्याधरसे युद्ध करना ! इस पराक्रम व साहसको देखकर लोग आश्चर्यान्वित होगये और परस्पर मुँह ताकने लगे। तब महाराज बोले—आश्चर्यकी बात नहीं है। “पूतके लक्षण पाठनेमें ही दिख जाते हैं।” सो तो तुम हाथीबाछे दिन देख ही चुके हो, मुझे विश्वास है कि

कुमार अपने कार्यमें सफल होंगे । वस आज्ञा होगई और ये कुछ सैन्य साथ लेकर केरकपुर भावहुंचे । और युद्धमें रत्नचूड़को जीतकर मृगांक से संधी करादी । तथा कन्या सहित उन दोनोंको श्रेणिक महाराजकी शरणमें लादिया ।

इस घटनाके कुछ ही दिन बाद श्री सुधर्माचार्य जो कि महावीर प्रभुके पश्चात् दूपरे केवली हुए हैं, संघ सहित वहां पवारे सो उनका धर्मोपदेश सुनकर थे (जम्बूकुमार) विरक्त होगये और दीक्षा लेनेका भाव प्रदर्शित किया । जिस मोहबश स्वप्न पुरजन तो दुखी हुए ही परन्तु उन वियोगिनी चारों कन्याओंने कहा कि—यदि जम्बूकुमार हमारा पाणिग्रहण करलें तो फिर छोड़ना दुष्कर होत्रायगा । अतएव जैसे बने, उनको राजी कर लेओ । यद्यपि कन्याओंके पारिवारिक जनोंने उनको इस दुःसाहसके लिये बहुत रोका, पर वे न मानी । निदान उनके पिताओंने आकर किसी तरह जम्बूकुमारको विवाह मात्र कर लेनेपर राजी कर लिया और जिस दिन विवाह होचुका और वे चारों नव-बधुएं अपनी उमंगोंको लिये हुए कुमारकी चित्र-सारीमें प्रथम ही रात्रिको पहुँची कि उनने अपना स्त्री चरित्र आरम्भ किया । परन्तु जैसे काले कंबुपर दुमरा रङ्ग नहीं चढ़ता, ऐसे ही इस वैरागीके चित्तपर उसका कुछ भी प्रभाव न पड़ा । किन्तु इसने ही अपनी बुद्धि और वैराग्यके बलसे उन्हें भी रात्रि भागमें सच्ची वैराग्यनी बना लिया ।

इसी समय एक विद्युतचर (राजकुमार) जो कि स्वदेश राज्यको त्याग करके चोरोमें प्रसिद्ध

हुआ, इनके यहां चोरीके लिये आया था, सो भी चोरी करना भूठकर इस विरागीके और उन रागनियोंको सम्वादको सुनने लगा । और जब वैराग्यकी विमथ हुई तो उसने जीतती पालीका डँका बना दिया—वह भी विरक्त होगया ।

इस प्रकार सबेरा होते ही स्वामी जम्बूकुमार, इनकी चारों नवबधुएँ और वह विद्युतचर (चोर) इत्यादि और भी बहुत जनोंने श्री जिनदीक्षा ग्रहण की और यथाशक्ति तपश्चरण करके स्व स्व योग्य स्वर्गादि गतियोंको प्राप्त हुए । तथा श्री जम्बूस्वामीको उग्रोग्र तपके प्रभावसे (जब कि सुषर्भ केवली मोक्षको प्राप्त हुए तब) केवल-ज्ञान प्राप्त हुआ । तत्पश्चात् विहार करते हुए आप इस स्थानको प्राप्त हुए और यहां शेष कर्मोंका नाश करके लगभग ८४ वर्षकी आयु पूर्ण करके मोक्षपद पाया ।

सब लोग—बन्ध है ऐसे महापुरुषको, बन्ध है ! सुशील—पिताजी! इनको ब्रह्मचारियोंमें आदर्श क्यों कहा ? क्या और कोई आदर्श नहीं हुए ? जय०—बेटा ! हुए क्यों नहीं; श्री वासुज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर ये २ तो तीर्थंकर ही हुए हैं और इनके सिवाय भीष्मपितामह, अकलंकस्वामी आदि बहुत महात्मा हुए हैं ।

सुशील—तब इन्हींकी विशेषता क्यों ? जय०—ठीक है, सुनो, वे पांच तो तीर्थंकर ही थे, क्षत्री कुलोत्पन्न थे, और मरण भी क्षत्रिय थे सो युद्ध करने २ ही संभव था। वे ही लोड गये । अकलंकस्वामी व दण्ड हुए, जिन्होंने बीड़ोंको पराजय कर समस्त भारतमें जनवर्षका

झंडा फहरा दिया था, परंतु मोक्ष (काळदोषसे) नहीं गये । किन्तु जम्बूस्वामी वैश्य थे और मोक्ष भी गये हैं । यद्यपि नेमिनाथ प्रभुने राजकुमारीको विवाहमे पहिले ही छोड़ा था, परंतु इन्होंने तो और भी गजब कर दिया—विवाह करके छोड़ दिया । जरे माई ! देख, एक तो कांटोंकी ओर ही नहीं जाता, एक निकट जाकर बच जाता है, और एक कांटोपर पेर रखकर भी उनसे जाहल नहीं होता, इतलिये चार तीर्थकरोंने तो विवाह ही नहीं किया । नेमिप्रभुने विवाह करते करते छोड़ दिया और ये तो विवाह करके भी छोड़ गये और रागमें नहीं फंसे ।

सुशील—बह तो सत्य है और ये बन्ध हैं, परन्तु पिताजी ! पहिले कीच अपेटकर फिर नहानेकी अपेक्षा तो उसे अपेटना ही नहीं कि जिससे फिर घोना न पड़े । अच्छा है जैसे उक्त चार तीर्थकरोंने किया तथा श्री अकलंकस्वामीने भी किया था ।

जय०—सत्य है बेटा, तुम्हारा भी किसी अपेक्षा सत्य ही है ।

सुशील—तो क्या जब कोई ऐसा आदर्श ब्रह्मचारी नहीं होसकता है ? मछे हो मोक्ष मत होओ परन्तु बर्म और देखसेवा तो करके पुण्य काम कर परंपरा मोक्ष पा सकेगा ।

जय०—निसंवेह होसकता है और ऐसे जब भी बहुतसे नरोत्तम हैं भी ।

सुशील—(कुछ संकोच कइया और भय सहित) तो पिताजी मेरा भी ऐसा ही भाव है ! मैंने जबसे अकलंकस्वामीका चरित्र पढ़ा है तनसे मेरे चेही आह धर रहे हैं और आज श्री जम्बूस्वामी

महाराजके निर्वाणकी बंदना पूजा करके मेरे वे भाव और भी दृढ़तम होगये हैं, (नत मस्तक हो) मेरी आप सर्व गुरुवर्गसे नम्र प्रार्थना है कि जैसे स्वामी अकलंक व निकलंकके पिताने उनको आदेश देकर अवकाश दे दिया था उसी प्रकार मुझे भी आप.....

सब लोग—जरे पागल ! इन बातोंमें क्या रक्सा है, तू बच्चा है, खाने खेकनेके दिन हैं । (जय० से) इपीसे तो कहते थे कि देखो सगाई फंसा दो, तब न मानी !

जय०—तो हानि क्या हुई ? कुछ बह कुमार्गमें तो नहीं जा रहा है ?

सब—येवा समयकाल कौन है ? भोकी बातें करते हो, संसारमें बंधवेक भी तो चकती है ।

जय०—क्षमा की जेये, काक जज्ञानी जनोपर ही अतर डाकता है, सुशील अब जज्ञानी नहीं है, बाकफ नहीं, वह स्वपर दिताहित जानता है । मैं उसकी इच्छाके विरुद्ध उसे फंसाकर दुस्ती नहीं करूंगा । मावीजीके आदेशानुसार चिरंजीव मिट्टनकी सगाई तो थोड़ी ही उमरमें होगई, परन्तु क्या भूक गये ? मनीराम दादानी होते, तो शायद आज वह बाकफ भी न होता ।

मि०—काकाजीकी जय हो ! निःसंवेह बदि अपनी संतानसे सच्चा प्रेम हो, तो बापबाबइयामें उसका विवाह और सगाई तो क्या करना, परन्तु उसे विवाह झादियोंमें भी नहीं जाने देना, न विवाहकी बातें सुनाना, जब तक कि वह योग्य विद्वान तथा स्वस्थ शरीर, गृहभार उठानेमें समर्थ न होनाक ! मुझे तो दादाजीने भीचनदान दिया है । काकाजी ! सुशील मेवाका

यह विचार बहुत दिनसे और बढ़ है, वे सदैव मेरे जीवनपर ठरते स्नाते व धैर्य देते रहे हैं, मेरी भी बही प्रार्थना है कि उनकी इच्छा विरुद्ध उन्हें न दबाया जाय ।

सि०—बैठ लड़का ऐसई आगे २ बोलत है ।

जय०—भावीजी उसका कहना सत्य है ।

सिंगेन—हमारी देबरानीसे भी तो पूछो, का कहती हैं !

जय०—तो तो आपके पास ही हैं पूछो ।

सिंगेन—(पीछे देखकर) काए बोलत काए नइयां ।

देबरानी—जीजी ! मैं का जानो, तुम जानो तुम्हारे देबर व लड़का जाने, दादजी दादाजी सब ही तो बैठे हैं, बहिन ! विवाह तो लड़कई की हू है ना ? ऊँची रानी विना अपनने करई वओ और ऊने प्रभुस्वामी महाराज जैसे छोड़ दओ तो आजकल कमकश्री जैसी विटियां तो नइयां जो संगमें अर्जका होगई थी !

इस समय मातापिताके विचार सुन २ कर सुशीक भीतर ही भीतर मारे हर्षके फूला न समाता था, मन ही मन अपना धन्यभाग्य समझता कि मुझे ऐसे उदार हृदय विवेकी माता पिता मिळे, मैं धन्य हूँ । इधर अपभन्द्रनीको अपनी धर्मपत्नीकी अनुकूल सम्मति देखकर अपार हर्ष था । वे अपनेकी इन्द्रसे भी अधिक सुखी समझ रहे थे, उधर सिंगेनजी व सिवई (टेक०) जी मन ही मन किसमिता रहे थे, सो वे मनीराम दादासे बोले ।

टेक०—दादाजी ! सुन रहे हो बोलत काए नइयां !

दादा—सुन तो रहे हैं, क्या बोळें ? अरे भैया !

ये विवाह काम कहलते हैं इनमें प्रबन्ध बंकीके दो आत्माओंका यावतजीवनके किये एकत्व कराया जाता है । सो जब दोनों रात्री—अनु-रागी होवें तभी तो काम बनेगा ? सुशीककी मांने ठीक ही तो कहा है कि विवाह लड़काका होना है, सो बह रात्री होय तो करो । इसमें अबरदस्ती क्या ? और वंछ किसका ? भगवानके बंशमें अभी कौन बैठा है ? परन्तु उनका नाम तो चिरकाळ रहेगा । (सुशीकको पास बुलाकर व मस्तकपर हाथ रखकर) बेटा ! जब तुम स्थाने हो, चतुर हो, यह भी सत्य है कि तुम्हारे सुयोग्य मातापिता भी तुम्हारी इच्छा विरुद्ध कुछ न करेंगे । तथापि तुमको स्वयं अपना भविष्य विचारना चाहिये ।

सुशीक—दादाजी ! मैंने खूब विचारा है और मिट्टनके जीवनसे मुझे बहुत शिक्षा मिली है । मुझे अक्षरचारिबोधी ही कथा रुचती है, उप-न्यास पढ़ने, नाटक देखने, मेळों ठेळोंमें जाने, छावी विवाहोंमें संमिकित होनेसे मुझे अत्यन्त चूणा होती है । जाय इस समय मेरे भाग्यके विधाता हैं, यदि मिट्टनको जीवनदान दिया है तो मुझे भी अभयदान दीजिये ।

दादा—बेटा ! चिरजीव रहो, ऐसा ही होगा । पर ये तो बताओ अक्षरचारी बनकर क्या करोगे ?

सुशीक—दादाजी ! मैं समझ गया, मैं निठळ्या न रहूंगा, समाजके पैसोंपर पानी फेरकर देखा-टन करता न फिरूंगा, मुझे मिष्टानकी लालसा नहीं है, मिससे कि किसीको खटकूं व अपने संभमसे दोग जाऊँ । मुझे समाजमें कोई नेप

बिन्द्यास बनाकर पूजा भी नहीं चाहिये ! जैसी कि आजकल अनेक जैनोंकी पद्धतिको देखकर आपको शंका हुई है । सो न करूँगा, किन्तु आज ही सादा खाने और सादा पहिरनेकी प्रतिज्ञा करूँगा, और जबतक शरीरमें शक्ति व धर्म व देख सेवाका अनुराग रहेगा, तबतक परिश्रम करके स्वाँँगा, शुद्ध स्वाँँगा, भले मजूरी करना पड़े और जब वह शुभ अवसर आवेगा, तो द्रव्य क्षेत्र काल और स्वभावोंका विचार करते हुए आगमोक्त रीत्या संयम मार्गमें बढ़ेगा अन्यथा नहीं, विश्वास रखिये कि दाससे आपके कुछ समाज व धर्मपर आक्षेप होनेका कुभवसर नहीं आने पावेगा ।

दादा०—बेटा ! द्रव्यक्षेत्र काल क्या किसीको रोकते हैं ?

सु०—जी, रोकते हैं, क्योंकि उद्दिष्ट रमागी महात्माओंका संयम तो जमी पक सकता है, जब कि गृहस्थ जन शुद्ध आहारी, सदाचारी, मुनि श्रावककी वृत्तियोंके शाता, श्रद्ध लु, विवेकी, क्रियावान हों ।

दा०—तब क्या इस कालमें उद्दिष्ट त्यागी हो ही नहीं सके ?

सु०—हो क्यों नहीं सके ? सो तो भगवानने पंचमकालके अंततक होना बताया है, परन्तु यह नहीं कहा कि अक्षुण्ण रीत्या होते रहेगा क्वचित् कदाचित् किसी क्षेत्र व किसी समय होते रहेंगे ।

दा०—यदि श्रावक ही वेसे न रहे जैसे तुम कहते हो, तो कैसे होंगे ?

सु०—जैसे ब्रह्मचारी जिनेश्वरदासजी कुंडलपुरमें ४ घंटे मरण समयमें मुनि रहे, या पंडित बलदेवदासजी, या अनंतसागरजी आदि महानुभाव हुए हैं वेसे ही । अर्थात् चर्या समय नहीं तो समाधिमरण समय तो हो सके हैं । वहां तो आहार व वस्त्रिका सम्बंधी दोष नहीं लगेगे ?

दा०—शाबास बेटा ! तुम सफल मनोरथ होओ । जम्बूस्वामीकी जय । दादाजीका यह अंतिम फेरला था, उन्होंने कतिपय प्रश्नोंद्वारा परीक्षा करके उक्त वचन कह दिये । जिसे सबने स्वीकार किया, और सुशीलकुमार अरसे ब्रह्मचारी सुशीलकुमार होगया । इसीलिये अबसे उसे हम आदर्श ब्रह्मचारी ही कहेंगे । आदर्श ब्रह्मचारीकी जय !

नोट—धन्य है ऐसे मातापिताओंको जो अपने पुत्रोंको ऐसी आदर्श शिक्षा देते हैं । लोग पाश्चात विद्याको दोष देते हैं । जिस समय जो भाषा राज्य व राष्ट्रकी होती है उसे जानना परमावश्यक है । परन्तु यह बात जरूरी है कि बालक शिक्षा किसी भाषाकी छेवे और चाहें कहीं विद्योपार्जनार्थ जावे इसमें हानि नहीं । यदि उनमें वास्तवस्थासे उत्तम धार्मिक संस्कार डाल दिये जाय तो विद्या कोई बुरी नहीं । बुरी तो संगति होती है, जो असंस्कृत बालकोंपर असर कर जाती है । इसलिये उनके संस्कार उत्तम बनाकर चाहे जिस विद्याका अभ्यास करने दीजिये और चाहे जहां देशांतरोंमें छोड़ दीजिये वे सदैव सी टंचके ही रहेंगे और दिनोदिन विशेष आमा प्रगट करेंगे ।



प्रतिष्ठामुहूर्तपर विचार ।

(छे०-५० शिखरचंद्र जैन, ज्योतिषदिवाकर-फर्रुखनगर,
श्रीआदीश्वर आदि प्रभु, अन्तिम हैं महावीर ।
गौतमस्वामी आदि मुनि, मैं नित नाऊ शीश ॥
श्रीगुरु कुशल मुनीन्द्रपद, ज्योतिषरत्न कहाय ।
ते दोनों मम चित वसो, नितपति करै सहाय ॥
ज्योतिषरत्न हैं तात मुझ, तिनसे सीखा ज्ञान ।
अल्पबुद्धि अनजान हूं, छुटि सुधारो विद्वान ॥
प्रिय पाठरुगण ।

आज मुझे यह अवसर प्राप्त हुआ है कि आपके सन्मुख कुछ थोड़ा सा संक्षिप्त बिम्बप्रतिष्ठा मुहूर्तका वर्णन करूँ। मैं सविनय प्रार्थना करता हूँ कि यदि कहीं कोई अशुद्धि रह जावे तो विद्वान उसको सुधार लें और मुझे अल्पबुद्धि जानकर क्षमा करें ।

प्रतिष्ठा मुहूर्तोंमें नीचे लिखे अनुसार विचार करना चाहिये। प्रतिष्ठा मेष वृष मिथुन वृश्चि मकर कुम्भके सूर्यमें होनी चाहिये। यदि पुरानी वेदीमें देवाधिदेव विराजमान करना है तो केवल बनि व मीनका सूर्य छोड़ बाकी सबमें कर सकते हैं। तिथियोंमें उत्तम तिथि तो शु० १० से कृष्णपक्षकी ५ तक है, बाकी मध्यम कही है।

तिथि जो प्रत्येक पक्षकी लेने हैं यानी शुक्ल पक्ष ०१।०२।०३।०५।०७।१०।११।१५ और कृष्णपक्षकी ०२।०३।०५।०७।१०।११ लेते हैं।

उत्तम बार तो सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार,

शुक्रवार है, शनिवार व रविवार मध्यम हैं। मंगलवार शुक्लमें कदापि नहीं लेना चाहिये। बाँचमें या अस्वीरमें आजावे तो कोई हर्ज नहीं है।

नक्षत्र—अश्वनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद, दम्त, श्रवण, मूल, अनुषावा, स्वाति, चित्रा, अभिजित, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, लिये हैं।

कुम्भ स्थापनका विचार इस प्रकारसे है कि सूर्य जिस नक्षत्रपर हो उससे ५ उत्तम फिर १६ स्वाज्य फिर ६ लेने योग्य हैं। इस नक्षत्रको सुन्दर देखकर सुन्दर बार तिथि सहित लेकर कुम्भस्थापन करना चाहिये।

प्रतिष्ठा करानेवालाका जन्म नक्षत्र जो हो उस नक्षत्रसे १०।१६।१७।१८।१९।२५ बाँ नक्षत्र छोड़ना चाहिये।

गुरु भृगुके अस्तमें प्रतिष्ठा करना मना है। चन्द्रमा भी हरएक जगह उदय व बलवान ही उत्तम देखकर लेना चाहिये। अन्यथा मध्यम अवश्य हो। गुरु, शुक्र भी बलवान लेने योग्य हैं।

प्रतिष्ठा करानेवालेकी जन्म राशिसे गुरु १।२।३।५।७।९।११ राशिके हों। प्रतिष्ठा करानेवालेकी जन्म राशिसे सूर्य ०३।०६।१०।११ राशिके लेने योग्य हैं। प्रतिष्ठा करानेवालेकी जन्मराशि या बोलसे चन्द्रमा ०४।८।१२ न हों। इसप्रकार प्रतिष्ठा करानेवालेको रवि, चन्द्र, गुरु बलाबल देखना योग्य है। और प्रतिमाजीके लिये चन्द्रबल देखना आवश्यक है।

जो प्रतिष्ठा कल्पपक्षमें होवे, जन्म नक्षत्रसे प्रतिष्ठा नक्षत्रका तारा देखे। चक्र नीचे दिया है।

तारा	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	
१	१	१०	१९	शुभ
२	२	११	२०	शुभ
३	३	१२	२१	अशुभ
४	४	१३	२२	शुभ
५	५	१४	२३	अशुभ
६	६	१५	२४	शुभ
७	७	१६	२५	अशुभ
८	८	१७	२६	शुभ
९	९	१८	२७	शुभ

शुभ तारासे मुहूर्त करना चाहिये -

इस प्रकार १।१०।१९ नक्षत्र होवे तो १ तारा १।१।२० होवे तो २ तारा है, इसी प्रकार विचार करें।

भद्रा विचार, भद्रा पाताक व स्वर्गके उत्तम कर्मन किये हैं तथा कार्य सिद्धिकारक बताये हैं। मध्य लोकके हानिकारक बताये हैं। चन्द्र नक्षत्र तिथि मास जान बताना चाहिये।

राहु ४-४ बड़ी दिनमें हरएक दिशा विदि-
काममें रहता है। पूर्वसे दक्षिणको चकता है सो
राहुको सन्मुख न लेवे।

राहुका विस्तृत वर्णन फिर किसी समय लिखेंगे।
प्रत्येक जन्मका समय इसप्रकार है—

शेष मीन ३।४, वृष कुम्भ ४।७, मिथुन मकर
५।१, कर्क बन ९।४३, सिंह वृश्चिक ९।९१,
कन्या तुला ९।४९।

पश्चात्तक होवे जन्म वेदीप्रतिष्ठामें स्थिर ही
लेना चाहिये। यदि नहीं बने तो किसी २ ने दुरव-

भाव भी ले लिया है। परन्तु चार जन्म कभी
नहीं लेना चाहिये। शेष, कर्क, तुला, मकर,
घर है। वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ स्थिर है।
मिथुन, कन्या, बन, मीन दुस्वभाव है।

अब जन्मके अंश कहते हैं—

शेष २७, वृष २०, मिथुन १७, कर्क १४,
सिंह १८, कन्या १८, तुला २४, वृश्चिक १२,
बन १७, मकर २०, कुम्भ १६, मीन १४।

इतने अंशोंतक बरकवान बनाया है। इसके
बाद जन्मके स्वामी देखे। जन्मके स्वामी बर-
वान उषके उत्तम ग्रहके घरमें होवे तो उत्तम
योग कहा है बाकी मध्यम। यदि जन्मके स्वामी
नीचके हो या शत्रुके घरमें होवे तो छोड़ने
चाहिये अर्थात् बर्नित है।

अब जन्म कुंडलीके ग्रहोंको दिखाते हैं—

रवि चन्द्र मंगल एक घर होवे तो अग्नि भय
जानना। चन्द्रमा शनि एक घर होय मृत्यु भय।
चन्द्रमा बुध होय वृद्धि करे।

चन्द्रमा गुरु होवे तो संसारमें महिमा पावे।

चन्द्रमा शुक्रहोवे तो सर्व प्रकारका सुख पावे।

यदि ८।१२ घर कोई शुभ ग्रह होवे तो
छोड़ देना बर्नित है। चन्द्रमा और पापक ग्रह
तीसरे छठे म्कारवे घर होवे तो अफ़ठे दहे हैं।

ग्रह शुभ अशुभ शत्रु मित्रता अवश्य विचा-
रनी चाहिये। यदि रवि बुध केन्द्रमें बैठे तो
दोषोंको नष्ट करता है। यदि श्रुग केन्द्रमें होवे
तो उसको कोई भी क्रूर गृह न देखता हो तो
बलि उत्तम कहा है। यदि गुरु बरकवान होकर
अकेला केन्द्रमें होवे और शुभ गृहका वह घर
होवे और कोई भी क्रूर गृह उसको देखता न

शोक !

शोक !!

महाशोक !!!

श्रीमती जैनमहिलारत्न—मगनपूजेन जे. पी. सुपुत्री,
दानवीर शैल माण्डिक्यदंष्ट्र जे. पी. नो. स्वर्गवास !

जैन स्त्रीसेविकाशिशुभेषिणां जीवन कार्य.

महा सुंदर ना सादा नव वागानी रात्रि
नेत्रे अंशुनी गांधनीथी शोभायमान हनी,
परंतु जैन समाजने भाटे कथ प्रदान करवावाणी
रानी हती. जे रानीजे सुअंशु अने पुताती वन्धे
दोखावणी नामना स्थानमां कणना नामथी प्रसिद्ध
आधु कर्मजे अकडम ने शरीरने नियंत्रण करी
दीधुं हे जे शरीरमां निवास करीने जैन महिला-
रत्ननी आत्माजे पोताना आत्मपन्न अने ज्ञानना
पुरुषार्थथी पोतानुं सर्व जीवन जैन स्त्री समाजनी
उन्नति भाटे अर्पण करी दीधुं हतुं. आ शरीर
जे क्षणवार पक्षेक्षा भोक्षतुं, दाक्षतुं, समन्तुं अने
विव्यार करतुं हतुं, आत्मने संग छुटवार्थी कार्य-
शील थप गयुं. हवे हेअ भोक्षणे नेा हतुंने
व्यवाय भणने नथी, प्राणु प्रन्दी संवरातुं काम
करनी नथी. यक्षुप्रन्दी काल सामे परार्थ अने
नेा ओषणपनी नथी. मृगमां हवा हे हवे आय-
वमां आवे नेा ने मय प्रदणु करतुं नथी.
जड रतंभवत् दशा जे जैतन शरीर (। थप ग-
के जे आत्मना संयोगथी प्रकृषित हती दाय ?
हवे आ शरीर कमल छ गयुं ! हवे जे लक्षित
भन वयन कायनी रजिथी जैन समाजनुं हित
अतुं अटकी गयुं. हवे जे शरीर प्राण थपने

माटीमां भणी गयुं. जैतन प्रणुजे घरने छेडयुं.
तन श्पी घर किअड थप गयुं. ५० वर्ष सुधी जे
शरीर पोतानुं कर्ण्य पावन हयुं हतुं, जेजे
नानपणुमां पोताना योग्य पिताश्री शैल माण्डिक्यदं
क्षीरत्यदंष्ट्रना प्रतापथी लप गान प्रपत हयुं
हतुं, जेजे विचरा अवस्था पोताना पिताना
सहासमां पुनवत् व्यतित करी हती, जेजे
संस्कृत अने धार्मिक ज्ञान संपादन करवामां
छेडकां वर्ष पत्तर करीने पोतानी योग्यता
वधारी हती.

जैन धर्मना प्रेमी अने जैन समाजना साया
पिता शैल जेजारे स्त्री पुरुष सर्व जैन समा-
जनी उन्नतिमां लजेकां दतां त्यारे अमनी आ
सायक पुत्रीजे जैन स्त्री समाजनी उन्नतिनुं
पीडं दायमां दीधुं.

जेजे संवत १९३५ तीर संवत २५३५ ना
महा शुद्ध २६ तमा २६-१-१९०७ते दिने सुअंशु
प्रतिभ समनी तारंगा सुभाषनी इन्द्ररत्न वपने
भजेथी दिगम्बर जैन महिला परिषदमां हृदयने
जेशदार पीयपात्रमार इतिहासी अक आवि-
काश्रम भोक्षवा भाटे इंड अकड कयुं तेमां पोने
प्रथम १०००) नी रकम ली तथा ग्रीज पास
लवनी तेमां ३. ३०५२) नी रकम लवला तेमां
द्वयदंष्ट्रमां आरारे २५००) नी जुअ रकम लवला
हती. आटनी जुअ रकमपीअ पोतानी दिगंभर
संवत १९३५ मांअ अमरावाहमां शैल प्रेमचंद
भो.पी.चंद दिगंभर जैन योगी सांमे अक महान
लाटे राभी श्रवितश्रम जेववामां आयुं-आज
२१ वर्ष थपां छे हे पितनुं सर्व जीवन जैन

हो तो ऐसे योगको कहा है—रक्ष दोष हरना है।
यदि पूर्ण घर चंद्रमा शुक्र, गुरु होवे तो
उत्तम कहा है। यदि सब गृह कृत्रुओं के घामें
होवे तो पविष्ट नहीं करानी चाहिये। शत्रुके
घरमें अविष्ट गृहोंका होना नष्ट है।

વિધવા સધવા અને કુમારીકાઓને સુયોગ મહિલા જનાવવામાં ખર્ચ કરી નાંખ્યું. આ મહિલાઓને સર્વેથી પ્રથમ દિ. જૈન સમાજમાં અથવા શાયદ સર્વ જૈન સમાજમાં પેતનું આર્થિક શ્રમ ખોલી અને તેને નારી રીતે અક્ષાયો કેટલીક માર્ગ પરવાવાળી બાહ્યો તેવા કુટુંબોમાં પેતનું જેમાં ખીજાં પણ આવાં આશ્રમોની જરૂર છે. આપની પોતાની પ્રેમણાથી જ ધર્મ, આગ. દિલ્લી ગોલાના, સાંગલી, સોજીત્રા સમવાડા આદિ સ્થાનો પર આર્થિકશ્રમે ખુલ્લાં છે અને તે પેતનું મને પૂજનક કામ કરી શકા છે. જૈનમહિલાઓને મગનબહેને મુંબઈ આર્થિકશ્રમને પેતે ધણું ધન આપ્યું અને પોતાના કુટુંબીઓ પાસે પણ આપ્યું તથા દેશ પર્યટક શરીને પોતાના મિષ્ટ વચનથી પ્રભાવશળી ઉપદેશો આપીને લગભગ ૯૦ કે ૯૧૦૦૦૦ તું ફંડ એકત્ર કર્યું છે. જૈન મહિલાઓને આજે દોઢ વર્ષથી માંદા હતાં. માંદગીમાં પણ આશ્રમની ખરાબર સેવા કરતાં, બાળાઓની દેખરેખ રાખતાં, કામળ પત્ર લખીને લોકો પાસે પૈસા કઢાવતાં, એમનો દેશોદેશ એવો પ્રભાવ હોતો કે જે કોઈ આવે તેમને બાહ્યતા (મગનબહેનના) દર્શનની ઇચ્છા થાય.

પોતાને તેમની સાથે વાત કરતાં માંદા શરીરને લીધે થાક લાગે છતાં આગમુંક બહેનો યા બંધુઓ સાથે પ્રસન્ન વદને વાત કરતાં. આટલી માંદગી ક્ષીણ શરીર થવા છતાં પણ સતતા દસ વાગ્યા સિવાય સુતાં નહિ. મુંબઈની હવાથી જ્યારે સાઈ ન થયું ત્યારે એ માસ પહેલા લોણાવળા ગયાં ત્યાં પ્રથમ તો આખા શરીર પર સેજ અને જાંઘાદરથી પીડિત હતાં પણ હા. બી. વલકરની દવાથી જાંઘાદર નિર્મુક્ત થયો. પોતે મહાભાર આવી શકે તેવી શક્તિ આવી. એ સેજો વારાહરતી મળી આપ્યા અને અમને સંતોષ થયો. જે કે શરીર તો ધણું જ ક્ષીણ હતું છતાં આશ્રમની ધર્મશ એમના મનમાં લાગેલી જ હતી. સ્વર્ગવાસ થતાં પહેલાં એમણે મારી પાસે ધ્રુવ ફંડનું પુસ્તક મંગાવ્યું અને ત્યાં જે કોઈ મળતા જાય તેમને

મતાવીને નવા રૂપીયા બરાબી તથા નવા રૂપીયા હોમ તેમને કામગ લખી મંગાવી લેવાનો પ્રયત્ન કરવો શરૂ કર્યો. ગત મહા શુદ્ધ ૬ ને દિવસે બ. સીતલપસાદજીને આપનો મેગાપ લખ્યો ત્યારે પોતે કહ્યું કે મારી એ દાર્દિક ઇચ્છા છે કે આશ્રમનું ફંડ એક લાખનું થઈ જાય. માત્ર ૯ કે ૧૦ હજાર રૂવે પૂટે છે. આપે અક્ષયારીજીને પુસ્તક દેખાડ્યું તેમાં દિલ્લી, બેલગાંમ અને સાંગલીની પહેલાં લખેલી રકમ વસુલ થઈ નહોતી કે જે ધ્રુવ ફંડમાં લખેલી હતી. અને દિલ્લીની રકમને માટે અક્ષયારીજીને કહ્યું કે આપ આને માટે ઉલ્લેખ કરો. બ. જીએ કહ્યું કે હું જરૂર એ માટે પ્રયત્ન કરીશ.

બી. મગનબહેન ૧૧૧ વર્ષથી માંદા હતાં. તખીયત સુધારવા માટે લોણાવળામાં ત્રિશ્રાંતિ લઈ રહ્યાં હતાં પણ એમનું મન નિરંતર સ્ત્રી સમાજની સેવામાં લીન હતું. એ અપૂર્વ પરોપકાર બાવ છે! આ સ્વર્ગસ્થ આત્માએજ ઉલ્લેખ કરીને ભારતવર્ષીય દિગંબર જૈન મહિલા પરિષદ સ્થાપન કરાવી હતી જેથી સ્ત્રી સમાજમાં ધણી જગૃતિ ફેલાઈ અને એના કારણે જૈન મહિલાદર્શ માસિકપત્ર ધણું ઉપયોગી, લેખમાળાઓને લખને ખરાબર નીકળ્યા કરે છે.

શ્રીમતી મગનબહેન પોતે પિતૃજ સાથે પ્રમથુ કરતાં હતાં અને જ્યાં ત્યાં પોતે ઉપદેશ દઈને પાઠશાળાઓ કન્યાશાળાઓ સ્થાપવતાં હતાં, સારાંસ કે દિગંબર જૈન સમાજમાં કન્યાશાળા કે શ્રવિકાશ્રમે સ્થાપવતું માન શ્રી. મગનબહેનનેજ ધટે છે.

પિતાજીના સ્વર્ગવાસ થયા પછી પણ પોતે જ્યાં સુધી શરીરમાં શક્તિ નહી ત્યાંસુધા સ્ત્રી કેળવણીના કામમાં પાછી પાતી ન કરી. આપે આજસને જીતી લીધું હતું. દરરોજ દેટલાએ પત્રોનાં ઉત્તર આપવા, વળી મુંબઈની પુસ્તકી સભાઓમાં કામ લેવો, બાપણે આપવાં અને અસહાયને સહાયતા કરવી એ શુભિ એમનામાં સ્વભાવિક હતા. આપ જકત પે. રીપકાણીજ હતી એટલાજ નહિ પણ જૈન સિદ્ધાન્તના સહસ્ત્રની જાણકાર, જૈન અભ્યાસ

શ. સ્ત્રીના મર્મને સમજવાવાળી એક વિદ્યાથી પંડિતા હતી. શુભસ્થાન માર્ગશાદિની ચર્ચાથી જાણકાર થઇને પણ નિશ્ચય નયના આશ્રયથી સ્વાત્માનું ભવ કરવાની ચાવીથી સુશોભિત હતી. સમય-સારાદિ પ્રયોગમાં એમનો સારો પ્રવેશ હતો. આમરી પાસે એવા શબ્દ નથી જે અમે આ જૈન મહિલાસ્ત્રના લાભદાયક કાર્યોનું વર્ણન કરી શકીએ. સમસ્ત ભારતવાસી જૈન સ્ત્રી સમાજને જ નહિ પણ સાથે સંપૂર્ણ પુરૂષ સમાજને પણ આવાં પરાપદારી અને આત્મચાતી આત્માના વિયોગનો શોક થશે. કલ્પિત છે કે જૈન સમાજ સ્થાન સ્થાનપર સત્તા કરીને એમના શુભાનુવંદ સમરણ કરે અને એ મૃતાત્માના કાર્યનો ઘડો લઈ તેમની માફક જીવન વીતાડવા પ્રયત્ન કરે !

કોઇ દાગી આત્મા એમની ઇચ્છા પૂર્ણ કરી દે તો ઠેકું સારું કે જેથી એમના અત્ત સમયની કામના તૃપ્ત થઈ શ્રાવિકાશ્રમનું ફંડ એક લાખનું થઈ જાય. આમરી આકાંક્ષા છે કે મનમોહજીનું જીવન ચરિત્ર પ્રકાશિત થાય. દરેક ગામો ગામમાં સ્ત્રીઓ સભા કરીને સમરક એકઠું કરી એમનાં ફૂનોપકારનું ચી સ્થાપ સમરણ કરે. સાથે પુરૂષોએ પણ તેમાં ભાગ લેવો જોઇએ. સ્ત્રી સમાજની તરફ એમનો જેટલો ઉપકાર છે તેને દરેક વ્યક્તિ જે પ્લાનમાં લાઇને, સમારક સ્થાપન કરે તો એમના દાગ કરેલા કામનું ઋણ કંઈક અંશે મુક્ત થાય. અમે મગનજીનની પુત્રી સો. કેશરજીન અને પૌત્રી બચુજીનનાં દુઃખમાં સંવેદના કરીએ છીએ અને ભાવના ભાવિયે છીએ કે જૈન મહિલાસ્ત્રનો આત્માને સુખ શાંતિ મળે ! તથા એમના દારા કેળવણી લાઇને તૈયાર થનાર શ્રાવિકાઓ જૈન મહિલાસ્ત્રના જીવન પ્રમાણે પોતાનું કર્તવ્ય બજાવે અને સ્વપર ઉત્તિ કરીને પોતાના જીવનને સર્જન બનાવે. અને એમના સમારક રૂપ આ મુંબઈ શ્રાવિકાશ્રમને વિશેષ ઉત્તિના શિખરપર ચઢાવે.

લલિતાજીન મુદ્દચંદ.

શ્રીમતી જૈન મહિલાસ્ત્રન મગનજીન જે. પી. નો દુઃખદ વિયોગ.

અરર ! હાય ! રે ! કોપ શું થયો,
મગન માંહિથી વજ્ર ધા પડયો.
નયન માંહિથી અશ્રુ રે ! વહે,
અરર ! કે જનો દેખી ના શકે.
જગત અંધારમાંહિરે ! દુઃખું,
હૃદય કાટનું, ચીત પાકનું.
સ્ત્રી સમાજમાં હાય ! શું થયું,
મનુજ જાતનું રતન ચુમ થયું.
રતન એ હતુ અમુક નારી એ,
મગનજીનના નામથી દીપે.
સકલ આશ્રમે:-શ્રાવિકાશ્રમે,
દુઃખજ આ બધું સુધીતે રહે.
શીતલ જાંબડી શ્રાવિકાતણી,
દીન દુઃખી અને ત્રિધરા તણી.
ધરમ કાર્યમાં ચંદ્રિકા બની,
નિજ પિતા તણું કુલ દીવાવતી.
મહા પરિશ્રમે અતીત દુઃખડાં,
સહી સહુ થયાં શ્રેષ્ઠ નારીમાં.
ધરમ-કર્મ ત કાજ અર્પીને,
જીવન બાળીયું રતનસમ ખરે.
કરમના નહિં કાંચકા કરે,
મનુજ બળ નહિ ત્યાં કદી શકે.
કરમ દુષ્ટને ધૈર્યને ધી,
રહ્યું હવે સદા લેવુરે સહી.
જગત જૈન જાતિ બની ઝણી,
ઋણુ અરે ! બધું કમમ વાળશે.
જગત જૈન આ ધા નહિ જુએ,
રડી રડી અને આંસુડાં દહુએ.
કુલ નહિં છતાં કુલ-ચાંપડી,
અરપીત સહુ આંગે આંખડી.
અમુલ રતના ધર્મ કાર્યમાં,
મદદ દઈ સદા રે'યું ત્યામમાં.
“અમળ શાંતિ એ આત્મ પામજે !”
નિજ સહુ મહી સિદ્ધિ સાધજો.
ત્રિભુવન રામચંદ શા ૬-માવનગર.

શ્રીમતી મગનબહેનના સ્વ- ર્ગવાસનો મુંબાઈમાં શોક.

શ્રી દિગંબર જૈન યુવક મંડળ મુંબાઈ તરફથી આગાઉથી વર્તમાન પત્રા ત્વાં હેન્ડગ્રીવ દ્વારા સુખવાયા મુજબ શ્રીમતી મગનબેન જે. પી ના તા. ૭-૨-૩૦ ને શુક્રવારે સોનાવણ ખાતે હૃદય બંધ પડવાથી નિપજેલા અવસાન માટે શોકસમા તા. ૧૦-૨-૩૦ ને સોમવારે મૃતના ૭૧ વર્ષે સી. પી. ટેન્કપર આવેલા હીરાબાગમાં શ્રીમાન પદ્માવરિષ્ઠિ જૈનદર્શન દિવાકર બેરીસ્ટર સંપત-રાયજી સાહેબના પ્રમુખપદ્મા નીચે મળી હતી.

સ્ખાનો હાલ પુરુષોથી અને કિપરની ગેલેરીઓ સીએચી ચીકર બરાઈ ગયો હતો. બરાબર ૧૧ વાગે પ્રમુખ સાહેબ પધાર્યા હતા. આદ બધાજો હીરાલાલ શાહે મંગળાચરણ કર્યા આદ પ્રમુખ-સ્થાન માટે બેરીસ્ટર સાહેબનું નામ રજુ કર્યું હતું. તેઓની ઓળખાણ કરાવતાં જણાવ્યું કે બેરીસ્ટર સંપતરાયજી જૈન સમાજના અગ્રણ્ય નેતા છે અને અંગ્રેજના જૈન સાહિત્ય લખનાર તેઓ છે. તેઓએ કી ઓફ નોર્થેજ, વોટ ઇઝ જૈનઝમ, આદિ ગ્રંથો અંગ્રેજીમાં લખી બહાર પાડ્યા છે.આદ તાલંચિના મડગાટ વચ્ચે પ્રમુખ સાહેબે પોતાનું સ્થાન ગ્રહણ કર્યું હતું. ત્યારબાદ શ્રીયુત શેઠ ભાઈચંદ્ર રૂપચંદ્ર નીચે મુજબનો દસાવ રજુ કર્યો હતો-

દસાવ ૧-શ્રી દિગંબર જૈન યુવક મંડળ તરફથી મળેલી મુંબાઈના જૈનોની આ બહેર સભા 'જૈન મહિલાવત્' -શ્રીમતી મગનબહેન જે. પી. (સંસ્થાપિકા ૨. ૩. શ્રાવિકાશ્રમ મુંબાઈ) ના તા. ૭-૨-૩૦ ને શુક્રવારે રતના સોનાવણ ખાતે નિપજેલા અસામયીક અવસાન માટે ખેદ પ્રદર્શાવ કરે છે; તેમજ તેમના કુટુંબી જનો પ્રત્યે સમવેદના પ્રગટ કરે છે અને તેમના આત્માને શાંતિ પ્રાપ્ત થાઓ એમ કહે છે.

દસાવ પર વિવેચન કરતાં વક્તાએ શ્રીમતી મગનબહેને જેદલાં ૩૨ વરસમાં જૈન સમાજની અગ્રણ્ય સેવાઓનું સચિત્તર વર્ણન કર્યું હતું. આદ બાદ શ્રી હીરાલાલ પી. શાહે દસાવને ઘટતા વિવેચન સાથે ટેકા આપ્યો હતો. આદ પંડિત દરબારીલાલજી ન્યાયતીર્થે દસાવને વધુ ટેકા આપતાં જણાવ્યું હતું કે મગનબહેને જે સંવાઓ અગ્રણી તેની કદર જૈન સમાજે તેમને 'મહિલાવત્' ની પદવી આપીને અને સરકારે તેઓને જે. પી. ની પદવીથી નવાજીને કરી છે. જૈન સમાજમાં તેઓ પદ્મલાલજી જે. પી. હતા. તેઓના પિતાજી શેઠ માણીચંદ્ર પાતાચંદ્ર જવેરી પુત્ર જે. પી. હતા. અને તેઓએ દિગંબર જૈન સમાજમાં કેળવણીના પ્રચારાર્થે કાંબાની સખાત કરી હતી. આદિ વિવેચન કર્યા બાદ પં. ઉત્તમકૃતરાયજી રોહિતકવાલાએ પણ દસાવને ટેકા આપતાં જણાવ્યું હતું કે હુતાન વયમાં વૈષ્ણવ્ય પ્રાપ્ત થયા બાદ તેઓએ પેતાનું જીવન, પરિત્ર અને આખા સ્ત્રી સમાજને આદર્શ રૂપ નિવડે તેથી રીતે વ્યતિત કર્યું હતું. વૈવશ્ય એ એક અંધારા યુગમાં બેસી રિતાકવાનો જીવન કાગ નથી પરંતુ વૈવશ્ય દીક્ષા ધારણ કરી પેતાનું અને ખીજી અજ્ઞાન દશામાં સખડતી વિધવા બહેનોનું આત્મ કલ્યાણ ૧૫ રીતે યથ રાધે તેને સાધામાં સારો દાખલો શ્રીમતી મગનબહેને મારવવપના આખા સ્ત્રી સમાજને પુરા પાડ્યો છે. આદિ વિવેચન કર્યા બાદ શ્રીયુત શીવજી કેવશીલાઈ મહાવાલાએ દસાવને અનુભવન આપતાં જણાવ્યું હતું કે મગનબહેનથી હું હેલા ૧૫ વરસથી પરિચિત છું. તેમના જેમાં વિદ્વષી બહેન નથી સ્થાનકવાસી જૈનોમાં કે નથી મે. સુ. જૈનોમાં. દિગંબરજૈન સમાજનું નામ તે બહેને પોતાની કૃતિવડે સર્વથી આગળ મુક્યું છે. વળી કટલાક જે એવું માને છે કે શ્રીમંત ઇ પ્રાપ્ત થાય એટલે લલાઈ પર લખાઈ આવેલુજ કે 'મોજ શોખમાંજ જીવન વ્યતીવ કરવું, સેવા કરવાનું કામ ગરીબજ કરે'

એવા વિચારો એ ખાલી જામણ છે એમાં પામ-
રતા અને પશુતા છે. મનુષ્ય જન્મની સદૃશતા
સેવા અને પરાપકારમાંજ છે એ સુવને મગનપહેને
પોતા જીવન કાળ દરમ્યાન વિદ્ધ કરી બતાવ્યું
છે. જે શ્રીમંતઇ, જે અધિકારમાં પરાપકારરૂપી
વામના નથી તે 'અ-ધિકાર' ને ધિકાર છે; મગ-
નપહેલનો રચુગ દેહ અત્યારે નથી પરંતુ તેમનો
આત્મા અચર અમર છે. તેમની પાછળ શોકના
માર આંસુ પાડી બેસી ન રહેતાં તેમનાં અધુરાં
કાર્ય કે જેનો બાર તેમની સહચારીણી શ્રીમતી
લક્ષ્મીતામહેન પર આવી પડ્યો છે તેમાં યોગ્ય
મદદ કરીએ તોજ કંઈ સાર્થકતા છે. આ વિવેચન
ક્યાં યાદ.—

પ્રમુખ આહુએ દરાવ પર ટુંક વિવે-
ચન કરતાં જણાવ્યું કે—જન્મ લેતી વખતે બાલક
રહે છે પરંતુ જે મનુષ્ય મરતી વખતે દસે અને
બીજા બધાં રહે એ દસા જીવનની સાથેકતા છે.
મગનપહેને શ્રીમંત કુટુંબમાં જન્મ પામી એ
પુરુષાર્થ કળાયો હતો. તેમનો યજ્ઞ ને પ્રીતિ
તેમના આત્માની ઉજવણીમાં જરા પણ ફરક
પડવા દેશે નહિ. તેમના મહાંમ પિતાઓ માણે-
કચ્છ શેઠ જેવા ચતુર અને પરાપકારી હતા,
તેવાજ આ પહેલ પણ હતાં, તેઓએ પાંચ
અણખન ધારણ હેલ્યાં પાંચ વરસ પર ક્યાં હતાં.
તેઓએ પોતાનું જીવન ધાર્મિક રીતે ગળ્યું હતું.
વિધવા બહેનો અને તે સાથે બી સમાજની જે
અનુપમ સેવા તેઓએ બજાવી છે. તે વડે
તેમનો યજ્ઞ રૂપી ધુવનો તારો હમેશાં ચમકતો
રહેશે. યાદ સર્વે સમાજનોએ ઉભા થઇ દરાવ
સર્વાનુમતે પાસ કર્યો હતો.

યાદ નીચેનો દરાવ શેઠ કુલચંદ શીવચ દે
(બમવાનગસ એન્ડ અર્ધસરાળા) રજુ કર્યો હતો.

દરાવ ૨—આ સમા 'મહિસારત' શ્રીમતી
મગનપહેને બી સમાજની ઉન્નતિ માટે પોતાનું
જીવન અર્પણ કરીને જે સેવા બજાવી છે તેના

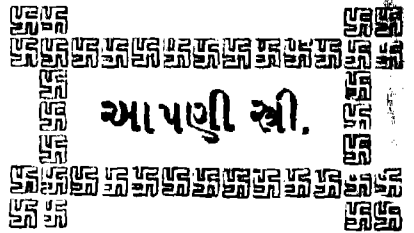
કામના રમણ તરીકે શ્રીમતી મગનપહેનનું
યોગ્ય સ્મારક થાય એમ ઇચ્છે છે.

દરાવ પર વિવેચન કરતાં વક્તાએ જણાવ્યું
હતું કે પહેલાં દરાવ પર જુદા જુદા વક્તાઓના
વિવેચનથી આપણે જાણી શક્યા છીએ કે મગન
પહેને સમાજની કેવી અનુપમ સેવા બજાવી છે.
એવી વ્યક્તિના અસ્તન માટે શોકનો દરાવ
કરીએ તે અપ નથી પરંતુ તેમનું યોગ્ય સ્મારક
ચારકા થાય તોજ સારું કહેવય. અને એ સ્મારક
વડે તેમણે ઉપાડેલું આ એમાં અને ખાસ કરી વિ-
ધવા બહેનોમાં ધાર્મિક જીવનના પ્રથમું કાર્ય
હમેશા ચાલું રહે તેમ કરવું જોઇએ. આ વિવેચન
ક્યાં યાદ કરાવને ટેકા આપવું શ્રીયુ પાં. રામ-
પ્રશાદજી શાસ્ત્રીએ વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે
મગનપહેનનું સ્મારક અટકે શાસ્ત્રાત મગન પહેનની
યાદગર. તેમનું સ્મારક ચિરસ્થાયી રહે તેવું કાવું
જોઇએ. આશા છે સમાજના અમલકા તેનાઓ
આ કામ તુરતમાં હાથ ધરશે.

આદ દરાવને વધુ ટેકા આપતાં શ્રીયુત જગમો-
હનદાસ શાહ વડોદરાવાળાએ જણાવ્યું કે—આ
વડે મગનપહેનના જીવનનો ટુંક ઉલ્લેખ કે જે
મારી જાણમાં છે તે આપ સામે રજુ કરીશ તે
અસ્થાને તદ્દિ ગણાય—

મગનપહેનનો જન્મ જૈનકુળ જૂપચુ ઘનઠીર
શેઠ માણેકચંદ પાનાચંદ ઝવેરીને ત્યાં ત્રિકમ
સં. ૧૯૩૭માં થયો હતો અને સં. ૧૯૪૮ માં
તેમના લગ્ન થયાં હતાં. લગ્ન થયા યાદ ૮ વર્ષે
સં. ૧૯૫૬ માં તેમને વૈધવ્ય દુઃખ પ્રાપ્ત થયું
હતું. ઓગણીશ વરસની યુવાન અવસ્થામાં વિધવા
થયા યાદ તે બહેને કર્મચોગે પ્રાપ્ત થયેલી આ
દુઃખ અવસ્થાને સુખરૂપ બનાવવા આત્મ કલ્યા-
ણનો સર્વોત્કૃષ્ટ માર્ગ લેતો યોગ્ય ધાર્યો. સ્વામી
અને પિતાની મહેનતો તથા પોતાનું અને પોતા
જેરી બીજી વિધવા બહેનોનું જીવન પવિત્ર બના-
વવા ૫-૭ વરસમાં અમહાવાદમાં શ્રવિકાપ્રત
રજાવ્યું અને યાદ કેટલાક સંજોગોને અનુસરી

તે આશ્રમ મુંબાઇ લાવવામાં આવ્યો. જેમાં શુભ-
 શાંત, વાગડ, અને દક્ષિણ પ્રાંતની અનેક વિધવા
 બહેનો ઉચ્ચ અને પવિત્ર શિક્ષણનો લાભ લઇ
 દેશના ગુણવત્તુદા વિભાગમાં સ્ત્રી કેવળણની
 પ્રચાર કરી રહી છે. ખેન નાનીબેન સંપત્રી, તથા
 શ્રીમાન પ્રભાવતી બહેન સોજીત્રા શ્રાવિકાશ્રમ
 ચલાવે છે, ખેન ચંચળબેન ભાવનગરમાં સ્ત્રીઓની
 પાઠશાળા ચલાવે છે. શ્રીમાન ખેન કલત્રે સાંગલીને
 શ્રવિકાશ્રમ ચલાવે છે, આદિ અનેક બહેનો ગુદી
 ગુદી સંસ્થાઓમાં સ્ત્રીસેવાનું કાર્ય ખાતરી રતી
 છે. આ બધી પ્રભાવ મગનબહેનની કૃષ્ણ કાર્યો-
 વાહીનો છે. આશ્રમની નાની મોટી બધી બહેનોને
 પોતાની સગી બહેન અને પુત્રાવત્ પાછે છે અને
 શિક્ષણ આપે છે. તારદેવ પરના તેમના આશ્રમમાં
 કોઇ પણ જાતના શીરમાના ભેરભાવ વગર દરેક
 જૈન બહેનોને તાબલ કરવામાં આવે છે. તેમના
 ત્યાં તેમની સહચારીણી બહેનો લલિતા બહેન અને
 ય. કંદુબહેનના શુભ પ્રયાસથી આશ્રમમાં હાલ
 ૮૦ થી ૯૦ હજારનું ધુવરંડ થવા પામ્યું છે.
 મગનબહેનનું જીવન શ્રીમત બહેનોને એક અનુ-
 પમ દર્શાવે છે કે જેમણે એક લખોપતીને
 ત્યાં જન્મ લઇ અનેક અશિક્ષિત અને દુઃખાંત
 બહેનોનું જીવન પવિત્ર અને ઉચ્ચ બનાવવાનો
 અને વેધવ્ય દિક્ષાના મુળ મંત્રરૂપ આત્મ કલ્ય-
 ણનો માર્ગ બતાવી ભારતની સંપૂર્ણ સ્ત્રીજાતિ
 પર અનહલ ઉપકાર કર્યો છે. ભારતનો સ્ત્રી સમાજ
 જો બહેનનો હંમેશને માટે ઋણી રહેશે. તેમનું
 ચિરસ્થાયી સમારક કરવું એ યોગ્ય છે. આશા
 છે કે જૈન સમાજના નેતાઓ આ વાતપર પુરતું
 લક્ષ આપશે. મગનબહેનને કેશવબહેન નામની
 એક રૂપ વરસની વયની સુક્ષિત પુત્રી છે. આદિ
 વિવેચન ક્યાં પાદ ભાષ મોતીલાલજીએ કા-
 વને વધુ ટેકા આપ્યા પાદ કરાવ સર્વાંગને પસાર
 કર્યો હતો. પાદ પ્રમુખ તથા સબાજનોના મંડળ
 તરફથી ભાષ જમમોદનદાસે આભાર માન્યા પાદ
 સભા દા. વાગે વિસ્મૃત થઇ હતી.



(લેખક:—રમણીક વી. શાહ. મુંબઇ.)

(મથાળું દેખી રખે કોઇ મમરાઇ જતા.
 આપણી સ્ત્રી એટલે આપણા સમાજની વ્યક્તિગત
 દરેક સ્ત્રી, નહિ કે આપણી પોતાની એકની એક
 પરણેતર ઘેરી !)

૧. જ્યાં કોઠા કહે છે કે સ્ત્રીનો જન્મનો
 આવ્યો-જ્યાં એવી પણ વાત થાય છે કે અમુક
 વર્ષો પછી માડીના ડબ્બામાં હાલ જેમ 'Reser-
 ved for ladies' રહે છે તેમ 'Reserved
 for men' રહેશે પુરૂષ જાતને હાલ તે ડબ્બામાં
 જવાનો હક નથી. ભૂલેચુકે પણ ને પુરૂષ તે
 ડબ્બામાં જઇ ચડ્યો તો સ્ત્રી (તે ડબ્બામાં
 બેસનારી) ત્હને બચવાની કાઠી ચૂકવાની સત્તા
 ધરાવે છે. જ્યારે સ્ત્રીના 'Reserved for
 men' ના જમાનામાં સ્ત્રીઓ તો પુરૂષના
 ડબ્બામાં ધણી ખુશીની બેસી શરણે આવા પ્રગ-
 તિમાન જમાનામાં આપણી સ્ત્રીની કિંમત કેટલી ?
 શ્રીમતિ સરોજીની નાયકુ. શ્રીમતિ કમળાદેવી
 ચટ્ટોપાધ્યાય, શ્રીમતી મીસીત હુલ્લીકર, શ્રીમતી
 જયશ્રી અને હંસા મહેતા, લીલા મુશી, ચારદા
 દિવાન, જ્યોત્સ્ના દુલ્લ, સરોજીની મહેતા, ઉર્મીલા
 મહેતા, લક્ષ્મીબહેન જેલણી, અયુબહેન લોટવાળા,
 શાંતિ અરશીવળા-આવું જ્યાં આપું હરકર
 આજે હિંદુસ્તાનમાં સ્ત્રીઓના હકનું રક્ષણ કરવા
 ઉચું થયું છે, જ્યાં બાટલી બધી સારી અને
 સજ્જડ રીતે સ્ત્રીઓની કિંમત અંકાય છે. સ્ત્રીઓને
 માન મળે છે ત્યાં આપણા સમાજની સ્ત્રી ક્યાં !

૨. અત્યારે ધણુથે ધરમાં હું લગ્ન સિવાય
 ખીજ કોઇ વાત સાંભળતોજ નથી. લગ્ન અને
 સોનું-બને રીતે ખરું છે. લગ્નની સાથે સોનું



અંધારેલું છે. એ આપણી સ્ત્રીઓની માન્યતા. અને ખીલું પરણ્યા પછી પણ ઘરમાં વારંવાર સોનાની અંગૂઠીઓ-લોકેટ-ચુની-વિંટી વિગેરેની વાતો કરી પોતાના પતિને ખબરવે એ આપણી સ્ત્રીઓનો જન્મસિદ્ધ હુકમ ! દરેક કુમારી કન્યાએ પોતાના વિવાહ થયા પછી એટલું તો સમજવું જોઈએ કે તે કેને પરણવાની છે. તેનું અવિધ્ય એક લક્ષ્યાધિપતિ સાથે કે એક કરોડપતિ સાથે કે પછી એકસો રૂપીમાના પગારદાર સાથે કે એક બીખારી સથે નિર્માય થયેલું છે. કન્યા જો આટલું સમજી પોતાના લક્ષ્યક માવથી પોતાનું ખર્ચ કતવ્ય અમરવાની લાગણીથી માગણી કરે (પરણ્યા પહેલાં અને પછી પણ) તો પતિ પતિ ધણા સુખથી રહે એમ હું એકલપણે ધારું છું.

૩. "આજે મ્હારે એ અમુક તોલા સોનું લાવ્યા," ત્યારે સામેથી ખીલું સ્ત્રી જવાબ આપે કે "અલીબાઇ, મ્હારે તો કંઈ ન આવ્યું" - આ સિવાય વધારે પડતી સારી વાતો તો આપણી સ્ત્રીઓના મુખમાં હું જોતોજ નથી. 'કેમ કાંતી ? પરણ્યું છે ને ?' ત્યારે ત્રીજી બોલે કે પાપા, જો આ ત્હારો વર, ખરું ને ? - આ સ્ત્રીઓને મળતા કેટલાક નવરાશના વખતનો સાર. "મેંની રાંડ સસલી તો અહુ ખરાય છે જુઓને મ્હારીરેમી આયું આયું બોલે છે." ત્યારે ચોથી જવાબ આપે કે "ત્યારે જુઓને પેલી ધરડી ઠોકરી પણ કેટલી કાંટા રૂપ છે ?" - આ પણ તેઓને મળતા વખતમાં કરેલી કુથલીનો સાર આપણુ સ્ત્રીઓને ન હોય તેમની સામે કરી સખંધ ન હોય. કરા કાયદા ગે-રાયદા છતાં આવી કુથલી કરવાની તેઓને ટેવજ હોય છે. કેટલ દિવસ ધરકામ કેમ સુધારવું - છોકરાં સારાં કેમ ઉછેરાય-ગામની બહાર શું થાય છે-દેહ એ કંઈ વરત છે-મંધી, જવાહર કેણુ છે-લીલા-હંસા, સરોજીની, કમળા કેણુ છે-આમાંને એક શબ્દ પણ હું નથી ધારતો કે આપણા સમાજનો કેટલપણુ પુરુષ સ્ત્રીના મુખમાંથી સાંભળવા લાગ્યશકી થયો હોય. અંધુઓ સ્ત્રીઓની અવનતિની પણ પરિસિમા હોય !

૪. આપણા સમાજમાં સ્ત્રી કેળવણી કેટલી ? ગુજરાતી ચાર કે પાંચ ચોપડીઓ. હું તો હજીયે કહું છું કે ચે પડીઓ શકનાથી કંઈ વળવાનું નથી છતાં કંઈ પાણી ભરતાં, અને રાંધતાં આવડ્યું એટલે કાંઈ અંધુ શીમાઇ ગયું એમ પણ રહમ-જવાનું નથી. આપણા સમાજમાં (ગુજરાતી બોલતા અને લખતા દરેક ગુજરાતી દિગંબર જે ન અંધુને અને જ્હેનને હું 'સમાજ' શબ્દથી ઉદ્દેશી રહ્યો છું) છપાતાં પેપરો કેટલાં ? આપણા સમાજમાં વાંચી શકે તેટલી સ્ત્રીઓ કેટલી ? આ જમાનાને અનુસાર એટલે તેના પ્રમાણમાં જો બણેલી સ્ત્રીઓ ગણીએ તો હું ધારું છું કે એક આંગળીના ત્રણજ વેડે ગણાય. જેટલી બણેલી છે. તે પોતાની ધરને ખાતર ખમવતી હોય તો તે જણુ, મને ખબર નથી. આખી દિગંબર જન કેમ લઇએ તોપણુ બણેલી સ્ત્રીઓ કેટલી નીકળે ? હું નથી ધારતો કે હજારે એકથી વધારે નીકળે. જ લાખની વરતીમાં છસો સ્ત્રી બણેલી-એ તે કાંઈ પ્રમાણુ છે ? એની તે કાંઈ કિંમત છે ? સ્ત્રીઓને કેળવણી અપાતી નથી તેનું કારણ જૂના વિચારના મરડા પુરુષો અને ધરડી સ્ત્રીઓ. તેઓ રહમજતાંજ નથી કે પોતાના ડહાપણમાં તેઓ પોતાની ઠોકરીઓના ભવ યગાડે છે. તેઓ રહમજતાં જનથી કે પોતાને ડહાપણુ કરતાં આવડવુંજ નથી.

૫. મુંબાઇમાં મને એક મિત્રે કહેલું કે "દિગંબર જેન"માં ગુજરાતી લેખો પુરતા પ્રમાણમાં આવતા નથી. એટલે આપણા તંત્રી સાહેબ દિંદી લેખોને વધુ પ્રમાણમાં પ્રથમ રચન આપે છે. શું આ વાત ખરી હોય તો કેટલી શોચનીય દશા ? ગુજરાતમાં ગુજરાતી દિગંબર જેનો માટે રક્ત એકજ પેપર અને તે પેપર પણ ચલાવવાની તે જેનોતી તાકાત નહિ-શક્તિ નહિ, ક્યો માણસ આ રિયતી જોઇ આંસુ ના પાડે ? પ્રભુ ! આ શું ? જેનોતી અવનતિની પણ પરિસિમા હોય ! કેટલ વખત સ્ત્રીઓને કદાચ લખતાં શરમ

आवती हरी ! ('आपझाभां संस्कृति पणु उंचीने-
तेधी')-आम भ्दारा भिन्ने ठेकर हरी हती)
आपझी स्त्रीओ पोताना पातने कागण लपवाभां
नेटकी काणल वे छे टेहकीज काणल जे पोताना
बिचारे अमुक अमुक यर्थात्मक विषयो पर हर्का-
ववाभां वापरे तो न्दने पावो छे के सारां
अपनवां परिष्कारि जइर आवे.

स्त्रीओने पृथतां तेओ कडे के "अमे जणुवां
नधी ते थुं लपुओ ! नकमी भाषाईड शा भाटे
हरीओ ?" हुं लडेमे पणुं के "जे लडेमे जणुवां
नधी तो लडेमे पतिदेव पर कागण लपतां क्वांधी
आवटे छे ? धरमां वात करतां लडेमे 'धष्पी'
अप्ये वापरे न्दारे कागण लपतां लडेमे... "पति-
देव" वापरे छे-लडेमे आ क्वांधी आवठथुं ?
कागणभां लडेमे लभारा अक्षरी पणुं केवां भीपी भीपी
कहो छे !" स्त्रीओ न्दवाम आवे के "ते पणुं
अहं पणुं लडेमे बेज लपवा नेटकी वपतअ
भणतो नधी" हुं लडेमे कहुं के "लडेमे कागण
लपवाभां अर्धी इलाक के आपो कलाक गयो
छे. लडेमे सागलक विषयोपर विचारे हर्का-
ववा अर्धी कलाक अपस छे." अणुओ ? आपणु
लडेमे भी पावेभी सारी लापानी मांगणी न करीओ
इत लडेमे विचारे जणुवा उरंतुअ लपवा
मांगीओ. हुं स्त्रीने जेती रहेवानी हा नधीने
पाडते. पोते अहारे हरीने काठ रयनात्मक कार्य
न करी सकतां होय तो पोताना सभाअमभां
नेटकी स्त्रीओ आवे तेहकीज स्त्रीओने जे
पोताना सारा विचारे हर्का वाहविवाह करी
लडेमे भनभां इभावे तो केटकी सरस धामरो
आषं स्त्रीओ कडे के लडेमे वांयवानी वपत
भणतो नधी भ्दारा धारवा मुठम ते ओक
गपज छे-हडकातुं गुडायुं छे. लडेमे अपोरे
वपत भणे छे. सारे पणुं भवे छे. तेओना
हिंसा मुठम तेओने अपोरेने वपत न भणे,
जे तेओ सवारे नव वागे हतां होय तो !
सतमे वपत न भणे, जे तेओ साडा सांत

वागे मुठ रहेतां होय तो. आ तदन अहरे
वात छे. रंधपुं, कपडां घोवां अने छोकरींनी सा-
वार करी आ सिवाय भीथुं काम तेओने होतुं
नधी. अने आ काम तेओ सोण क्वाक करतां
नधी. अने जे कडे तो ज्हेकां स्वर्गे सीपवि.
ओछाभां ओछो तेओने बार क्वाकने आराम
भणे छे. ते दरगियान जे तेओ अन्वास करतां
होय सार विषयो पर यर्था यसावता होय अने
पोताना उदंगी सुधारवाने प्रयत्न करतां होय तो
ओक वर्षमां अणुधारी इर पडे. भाषओ अने
अडेने ! कंध तो करी नहि तो पकी पत्थर पर
पाणुी थवाहो. 'अस्तु'

तीर्थकर चित्रावलि ।

२४ तीर्थकरोंके रंगबेरंगी २४ अलग बडे २ चित्र
कांचमें जडवाकर मंदिरोंमें रखने योग्य यह चित्रावलि
अवश्य मगाइये । मूल्य ३)

और भी बडे २ रंगीन चित्र-शिलरजी ॥, भा०
शांतिधारजी ॥), चम्पापुरी (=), पावापुरी (=),
गिनार (=), सोलह स्वान ॥), चन्द्रगुप्त स्वप्न ॥),
संसारवृक्ष (=), षट्पदेया स्वप्न (=), सीताजीकी
भजन परीक्षा ॥), जन्मकल्याणक ॥), भाहारान, ॥)
न० पार्श्वनाथ (=) ये चित्र तथा तीर्थ व रंगगिरीके ३५
प्रकारके एक आनेवाले चित्र भी अवश्य मगाइये ।

भगवान पार्श्वनाथ-अतीव आकर्षक मू. २॥)

आत्मानुशासन टीका (फिर तैवार) २)

मूर्धनकाश (शास्त्राकार विष्णुकुठ नवीन) १)

प्रश्नोत्तर श्रावकाचार-

शास्त्रक नवीन शास्त्र श्री सफळकर्ति कृत मूल ओक
२४८० व १० लायारामजी कृत हिन्दी भाषा वच-
निका भी अनवश्य मगाइये । शास्त्राकार मू० ३॥)

मैनेजर-दिगंबर जैन पुस्तकालय-सुरत ।

मुरुचंद किसनदास कापडिया सूरत, व
 बेशकालक प्रेमचंददास परीखकी बमेटी (उसमें
 नाम बदलानेकी सत्ता महित) नियुक्त करते हैं
 जो फंड पूर्ण होनेपर इपकी योजना निश्चय
 करके उसकी ही० गु० जैन बंडिंग टूटफंडकी
 इनकी वारस्था भी सुपुर करे। (माणिकचंद्र
 अंधमानाकी व्यवस्था भी इसी टूटके आधीन है)

मगनबाई स्मारक फंडमें—

कमसे कम रु० १००००) होनेकी अव-
 श्यता तो है ही, इसलिये हरएक अथ व
 शहरके भाइयोंको यथाशक्ति रकम स्वयं या प्रमा
 द्वारा अथवा चंदा द्वारा एकत्र करके हमी
 भेज देना चाहिये।

“दानवीर माणिकचंद्र” भेंट देंगे।

“मगनबाई स्मारक फंड” में कमसे कम १)
 देनेवाले हरएकद तारको “दानवीर माणिकचंद्र”
 नामक न्हा मरी अंश निम्में १००० पृष्ठ
 व ४० पत्र हैं तथा सुवहरी (की) निर है
 की जिसमें जैन विचारन श्रीमती मगन-
 च्छेनजी जे० पी० का सौभाग्यावस्थाका व
 विधवारस्थाका चित्र व कुछ परिचय भी
 है सिफं पोटेन मात्र अठ आने लेहर विलकुल
 मुफ्त भेज दिया जावेगा। इसलिये स्मारक-
 फंडकी रकम बढ़में मिलते ही “दानवीर माणिक-
 चंद्र अंश” पोटेन मात्र अठ आने लेहर भेज
 देंगे अथवा स्मारक फंडकी रकम मनिओर्डोसे न
 सेकरकी वी० पी०के साथ सम्मिल करके “दानवीर
 माणिकचंद्र” संगठना ही तो वेना भी कादेवेंगे

अर्थात् फंडकी रकम व पोस्टेकी वी० पी०से
 “दानवीर माणिकचंद्र” भेंट देंगे।

इस फंडमें अबतक इनप्रकार रकम प्राप्त हुई हैं—

मगनबाई स्मारक फंड।

- १०१) मुरुचंद किसनदास कापडिया—सूरत।
- ११) श्री० अ० सीतलप्रसादजी ”
- २९) छगनलाल उत्तमचन्द सरैया सूरत
- ९) पं० परमेशीदास न्यायतीर्थ ”

१४२) कुल

हमने एक पर दो अंक तो चढ़ा दिये हैं अब
 दो के चर अंक होनाना चाहिये।

इस फंडकी शीघ्र ही पूरा करना है इसलिये
 हरएक पाठक पाठिका स्थान १ पर परिश्रम
 करके फंड एकत्र करके भेजनेकी कृपा करें क्योंकि
 श्रीमती मगनबाईजीके अनन्य उपकारका बदला
 चुकाना हमारा परमरहित फर्ज है।

निवेदक—

मुरुचंद किसनदास कापडिया
 चन्दावाही—सूरत।

मिष्टान्न भोजन कराइये।

पूर्ण दि० जैन संस्थाओंके प्रबंधकोंसे निवे-
 दन है कि जहाँ संस्थाओंकी तरफसे भोजनका
 प्रबंध है वहाँके बंडिंग, अनाधारण, उदासीना-
 श्रम, विधवाश्रम, आश्रम आदिमें मेरी
 ओसे फरगुण शु० १९ को मिष्टान्न भोज
 करावें और विड इन पतेपर भेजकर रुपया मंगा
 लें। प्रेमसा नवलसा जैन पोरवाइ,
 बड़वाहा (इन्दौर)।

વિજયનગરથી—મોહાશીવા રતેહચંદભાઈ માહામંત્રી સખી જયારે છે કે હું વિજયનગર, નવાગામ, જયસને આવલવાડના આજ્ઞાને તમા ૧૦ પાઠશાળાના ભારતરોને તેડીને માહા સુદી ૩ દેવલ ગયો હતો. જ્યાં સહ પ ને રિને શા. ર્થી-ચંદ દેવચંદ તંદુથી જળયાત્રા પૂર્વેક વેદી પ્રતિષ્ઠા કરી હતી અને ખાસ્ડપરેશથી પૂજન હાંડમાં હમીર-ચંદ હેમચંદ તંદુથી ૧૫૭૦ તથા ખીજ ૪૨) રહ્યા. તેમજ પ્રતિષ્ઠાકારક તંદુથી દેશર માટે ૩. ૪૨૧, રમસેવકેને ૨૦) હનામ તથા ૧૨૨) ના બંધાર ખાજક વગેરે રહ્યાં હતાં. ને જમણુ પશુ અપાપ્યું હતું.

વળી શ્રીમતી મગનખડેન જે. પી. ના રમગ-વાસની ખખર સાંભળી વિજયનગરમાં દશ પાઠશાળાઓ તરફથી શોક સભા કરવામાં આવી હતી તેમજ અહીં પાઠશાળાઓમાં રંગ પાડી શોક દર્શાવવામાં આવ્યો હતો.

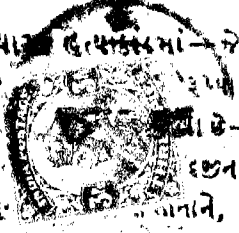
સુનિશ્રી સુનીંદ્રસાગરજી—સુનિ વિજય-સાગરજી, ઐલક દેવેદ્રસાગરજી, ઐલક વિનયસા-ગરજી, કુસ્થાક મુદ્ધિસાગરજી, યા. નાગજીભાઈ અને ધર્મવતી, ગુણવતી, વિષ્ણુમતી અને ઘાનવતી જે ચાર પ્રભાચરિણી સહિત પરતાપગદથી ૫૫ રરને ગીરનારજીની યાત્રાએ નીકળ્યા છે તે સંપ કેશરિયાજી વિજયનગર, બીલોલા, ચોરીવાડ દશ તારંગજીની યાત્રા કરી આગળ વધ્યો છે. આ કુંઘ પરતાપગદરાજા રેક જોમકરણુ કુકમીચંદ અને ધીનસાલ પલભાઈ તંદુથી માહવામાં આવ્યો છે સાથે ૪૦ માણસો છે દરેક રથને ધર્મ પ્રમાણના હતી રહે છે. ચે. રીયામાં એક ઐસક ને છુગક નર્તન થયા છે.

મગન ખડેનના વિધેય માટે બાવન-ગરનો શોક—ઈ. ૧૦-૨-૩૦ ને રાજ સતીક ખડેન દિ.૦ જૈન પાઠશાળાના હોલમાં રાત્રિએ શ્રીમતી જૈન મહિલારત મગનખડેન જે. પી. ના દાખદ અવસાનના શોક પદ્ધિવ કરવા શોક ત્રિભોવનનાય દીવાલજના પ્રમુખપણા નીચે એક

બહેર સમા મળી હતી, જેમાં પ્રપુત શોક અમરચંદ સુપીલાલ ઝરેરી (મુંબઇ) વિગેરે સંબંધિત મુસ્સો તેમજ મહિલાઓએ હાજરી આપી હતી અને તેમાં શાળાના સેક્રટરીએ શ્રી. મગન ખડેનની અમુદ્ય સમાજ સેવાની પ્રતિષ્ઠા કરી અને તેમના જીવનની રૂપરેખા વર્ણવી જમણુ હતું કે એ મહિલા રતના વિધેયથી અમારી પાઠશાળાનો એક સખળ આધાર ગયો છે. તેમના પ્રવાસથી શ્રીમતી સુભાબના ખડેન અમારી પાઠશાળામાં આવી ધાર્મિક ઉત્પતિ કરી રહ્યાં છે અને અહીંયા સર્વ બાંધગોને પશુ તેમની ધાર્મિક સંસ્થાઓ તથા ધાર્મિક કાર્યમાં સલાહમારની એક મીમતી ખોટ પડી છે. આજા હિંદુસ્તાનમાં પશુ તેમની ખોટ તરી જૈન મહિ-લાઓની ઉત્પતિના કાર્યમાં આગેજ પૂગશે. પછી તેમણે તેમના અવસાન માટે દીલગીની પ્રદર્શિવ કરવાને હરાવ મુક્યો હતો અને તેમના કુટુંબી-ઓને આલાસન આપવાની દરખાસ્ત મૂકી હતી અને તે સ્વર્ગસ્થ મહિલા રતના આત્માને પ્રજુ શાંતિ આપે એવી પ્રાર્થના કરી હતી. અને શ્રાધિકાશ્રમ અને તેમના કુટુંબીઓને શોકદર્શક તાર મોકલ્યો હતો.

આ પ્રસંગે શ્રીમતી સુભાબના ખડેને જીવંત પર્વવ ધાર્મિક કાર્યમાં નિરતાર્થપણે સેવા બજાવવાનું બહેર હતું હતું. પાઠશાળામાં તેમના અવસાનના શોક પદ્ધિ મે દી. શાળા ખંધ રાખી હતી.

કેશરિયાજી દેવચંદના—જે મુન્દેગા-રતે ૩૮૫૦... ૨૦૫૫ વર-કપી ને મુન્... ૫૦૦) ઉદ-યપુર રોટને, ૦... દજના સંતનેને, ૫૦૦) રવ. પુ... ૫૦૦) રવ. માણેકચંદજીના સતીને, ૫૦) કરતુરીપાઇના દિવરને તથા ૨૦૦૦) રવ. પં. ગિરધારીલા-લજીની ધર્મપતનીને.





सम्पादक:-मूलचन्द्र किसनदास कापड़िया-मुरत ।

विश्यानुक्रमणिका.

नं०	विषय.	पृष्ठ.
१-	सम्पादकीय वक्तव्य-गांधीजी अहिंसक जंगमें, महावीर जयंती	१८१
२-	जैन समाचारवलि.....	१८९
३-	होली व मित्रसंवाद (पं० दीपचंद्र वर्णी)	१९३
४-५	वीर जयंती, मिट्टीके गुण (शिखरचंद्र वैद्य)	२०१
६-	सुचारु सुधारकों द्वारा ही होता है (प्रमसागर)	२०६
७-	महावीर जयंतीनी उत्तवणी.....	२१०
८-९	रायदेश दशाहुमहसभा, मगर वहेनसंबंधीपत्र	२१४
१०-११	मोहनमाला, जयंती निररानकी	मुखपृष्ठ
१२-१३	मगनवहेन स्मारक फंड, भारत समरमें ,,	

वर्ष २३वां
अंक ५.

वीर सं० २४५६
फाल्गुन.

इस वर्षके ग्राहकोंको दिये जानेवाले -

दो उपहार ग्रन्थ-" हिन्दी जैन विवाह विधि "

व "नवरत्न" छप चुके हैं व तैयार होकर १९-२०

दिनमें सब ग्राहकोंके हप्त वर्षके मूल्यकी वी० पी०से

भेजे जायेंगे ।
मैनेजर ।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।०) विशेषांक मूल्य ॥॥)

स्वर्गीय जैन महिलारत्न-
मगनबहेन स्मारक फंडकी
स्वीकारता ।

- १३२) गतांक्रमे प्रकाशित
- ११) ठ कोरदास जमनादासनी चूडावाला-सूरत
२६) डाह्याभाई रीखवदास गजीवाला " "
२९) गमनलाल खुशाचंद सुतरवाला " "
५) मौनीलाल पन्नालाल " आगगा
५) वजेचंद मकनदास चूडावाला सूरत
५) क्रांतीलाल हरगोबनदास " "
५) नेमचन्द कस्तूरचन्द " "
५) परभुदास हेमचन्द " "
- १०१) श्री० सर सेठ हुक्मचंदनी सा० इंदौर
- ५) पारसोबा आपानी महाजन शि० डशाहपुर
५) द्वारकापसाद जैन पोस्ट मास्टर जयपुर
५) केशवलाल हीराचंद तलोद
५) अभेचन्द कालीदास जेतपुर
५) ध० प० ला० गुलाबचन्दनी लखनऊ
५) गणपतराय जगन्नाथ जैन जीरा
५) शोभाराम गंभीरमल टोंग्या इन्दौर
५) ब्र० दिग्विनयभिइनी नागपुर
५) सेवक माणिकलाल जैन सागराडा
५) दिगंबर जैन पंच नवागाम
५) मोढासिया फतेचंद तागाचंद विनयनगर
५) बासीरामसा रायचंदसा भ०मगढ़
५) हीगसा भीकामा खंडवा
५) अमगसा फूलचन्दसा " "
५) केशवसा अ० लालचन्दा " "
१) पं० नेमीचन्द्र सेठी मुडबिदि

- १९) रा० व० बाबू नोदरलजीसा० अममेर
५) ब्र० प्रेमसागरजी सिलोंडी
५) सरदारबहु कडोरेलालजी जगदलपुर
५) छोटीबहु ध०प० सेठ मुन्नालालजी " "
३) जननीबाई माता रज्जूलालजी " "
१) जगरानीबहू ध०प० रज्जूलालजी " "
३) रूपचन्दकी माताजी " "

४४९) कुल

स्वर्गीय जैन महिलारत्न श्रीमती मगनबहि-
नका सारे जैनसमाजपर किया गया उपकार
इतना अधिक है कि हम किसी प्रकार भी उससे
उत्कृण नहीं हो सकते तौ भी आपके उपकारका
यदकिंचित ऋण चुकानेके लिये आपके इस
स्मारकफंडमें यथाशक्ति अच्छी रकम या कमसे
कम ५) तो अवश्य ही भेजें। आशा है "दिगं-
बर जैन" के प्रत्येक पाठक इसके लिये तुर्त ही
प्रयत्न करके स्थान २ से अच्छी रकम इकट्ठी
करके भिजवावेगे। जिससे इस फंडमें अच्छी
रकम होसके।

कमसेकम ५) इस फंडमें देनेवालेको १०००
एछछा 'दानदीर माणिकचंद्र' सचित्र ग्रन्थ जहां-
तक सिलिकमें होगा भेंटमें दिया जाता है। जिन्होंने
कमसे कम ५) भेजे हैं वे पोस्टेज स्वर्च छह
आनेकी टिकिट भेजकर यह ग्रन्थ अनरजिस्टर्ड
पार्सलसे मंगाले अन्यथा वी० पी० से मगाना
हो तो बैसी सूचना दें परन्तु वी० पी०में पोष्टेज
स्वर्च कुल दश आने देने पड़ेगे। गुजरातके भाई
भी इस फण्डमें अच्छी सहायता अवश्य भेजें।

मूलचन्द किसनदास कापडिया-सूरत ।

द्वैगम्बर जैन

नाना कलाभिविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
सन्बोधयत्प्रमिदं प्रवर्त्तताम, द्वैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वां

वीर सम्बत् २४५६, फाल्गुन, विक्रम सम्बत् १९८६.

अङ्क ५.

सम्पादकीय-वक्तव्य

यह कौन नहीं जानता कि हमारा हिंद देश
१९० वर्षसे पराधीन-
महात्मा गांधीजी ताकी बेडीमें जकड़ा हुआ
अहिंसक जंगमें । है व हमें (भारतको)
अंग्रेजी राज्यमें, जैसी
स्वतंत्रता दूसरे अंगरेजी राज्य आयरलैण्ड, आ-
फ्रिका, केनेडा (अमेरिका) को है, नहीं है,
अर्थात् भारतके लिये अलग १ कानून हैं इसलिये
हमारी राष्ट्रीय महासभा (कौंग्रेस) ३० वर्षोंमें
चिन्ता रही है कि हमें संस्थानिक स्वराज्य प्राप्त
हो । परन्तु बादे करते २ आजतक अंग्रेज सर्कारने
हमको संस्थानिक स्वराज्य भी नहीं दिया जिससे
गत ता० ३१ दिसम्बर १९२९ को लाहौरकी
राष्ट्रीय महासभाने पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करनेके
ध्येयका प्रस्ताव पास कर डारा व सारे देशमें
ता० २६ जनवरीको स्वतंत्रता दिन मनाया
गया । फिर रा० महासभाने हिंदके हृदय सम्राट
महात्मा गांधीजीको पूर्ण अधिकार दिया कि
जाय जैसा व जिस प्रकार उचित समझें पूर्ण

स्वतंत्रता प्राप्त करनेके शांतिमय अहिंसक
प्रयोगोंका अवलम्बन करें ।

तब महात्माजीने एक ऐसा प्रयोग हूंद
निकाला जो आजतक किसीके ख्यालमें ही नहीं
आया था ! यह प्रयोग दूसरा कुछ नहीं परन्तु
समुद्रके खारे पानीसे प्राकृतिक नमक बनता है व
जो मजदूरी सहित १० पाईका एक मन पड़ता
है उसपर हमारी सरकार २०० पाई महसूल
वसूल कर ७ करोड़ रुपये प्रतिवर्ष हमसे ले
लेती है ! इस राक्षसी करको किसी भी प्रकार
न देना चाहिये यह है । इसके लिये महात्म-
जीने जब सूचना निकाली तब लोग हंसते थे कि
ऐसा कैसे होसकता है जब नमककी उत्पातिका
प्रबन्ध सरकारके ही हाथमें है ! परन्तु महात्मा-
जीने अपनी स्कीम प्रगट की तब सारे हिंदके
तो क्या परन्तु यूरोप व अमेरिकाके लोग भी
चकित होगये हैं व महात्माजीकी इस योजनापर
सारी दुनिया एक नजरसे देख रही है ।

फिर महात्मा गांधीजीने सरकारकी बिना
परवानगी नमक बनाने व लेनेका सत्याग्रह
(सविनय कानूनभंग) करनेको अहमदाबादसे
गत ता० १९ मार्चको प्रातःकाल ६॥ बजे ७९

सैनिक (स्वयंसेवक) सहित साबरमती आश्रमसे शहर बाहर तक प्रयाण किया तब लाखों आदमियोंकी भीड़ थी। महात्माजीका कुंकुम, फल, अक्षत, रूपये, नोट आदिसे सत्कार हुआ था। महात्माजीने रेलमें नहीं परन्तु पैदल ही यह कूच प्रारम्भ की है। अहमदाबादसे आप आसपासके ग्रामोंमें होकर खेड़ा जिलेमें पहुंचे। वहां रास ग्राम जहां कि ता० ७ मार्चको सरदार वल्लभभाईको व्याख्यान देनेकी मनाई करनेपर उसका भंग करनेको ३ माहकी सजा हुई है वहां पहुंचे। यहां महात्माजी व्याख्यान देंगे तो पकड़े जावेंगे ऐसी आशंका सर्वत्र थी। परन्तु महात्माजीने तो वहां निःसंकोच व्याख्यान दिया था व वहांसे आपका सैन्य भड़ोच पधारा है। वहांसे मार्गमें आते हुए ग्रामोंमें प्रचार करते हुए आप व आपके सैनिक ता० १ अप्रैलको सुरत पधरेंगे व सुरतसे फिर ग्रामोंमें प्रचार करते हुए ता० ५ अप्रैलको सुरत जिलेमें जलालपुरके पास डंडी ग्राम (जहां समुद्र किनारा है) पहुंचेंगे। वह ता० ६ अप्रैलको वहां समुद्रके पानीसे नमक बनानेका व ले जानेका सत्याग्रह (सविनय कानून भंग द्वारा) करेंगे।

इस योजनासे सारा देश ऐसा ही सत्याग्रह करनेकी तैयार होगया है (क्योंकि हिंदमें १८०० मीलतक समुद्र किनारा है जहां नमक बनाया जा सकता है) परन्तु राष्ट्रीय महासभा समितिने अभी प्रस्ताव किया है कि ता० ६ अप्रैलको यदि महात्माजी पकड़े जायेंगे तो फिर १५ प्रांतोंको ऐसा सत्याग्रह करनेकी मंजूरी दी

जायगी। इससे अभी सब प्रांत झलकेंगे हुए हैं परन्तु सत्याग्रह करनेकी तैयारी तो कर रहे हैं अर्थात् स्थान २ पर सैकड़ों हजारों स्वयंसेवकोंने इस सैन्यमें अपने नाम लिखाये हैं तथा महात्माजीके ग्रामोंमें प्रचारसे वहांके सैकड़ों तलाठी व पटेलोंने स्तीफे देदिये हैं। महात्माजीकी इस ऐतिहासिक कूचके समाचार हिंद व यूरोप अमेरिकामें नित्य ही सचित्र प्रकट होते रहते हैं क्योंकि महात्माजीके साथमें देश विदेशके अनेक संबाददाता व फोटोग्राफर रहते हैं। महात्माजी इस प्रथम प्रयासमें सफल-मनोरथ हों यही हमारी आन्तरिक भावना है।

* * *

भारतवर्ष सदासे गुणग्राही रहा है। इसके प्रति जिनने कोई उपकार महावीर जयंती किया उनका यह कृतज्ञ आरही है। रहा है। यह गुण और गुणियोंके मूल्यको जानता है। यही कारण है कि आज यहां अनेक जयंतीयां मनाई जाती हैं, पूर्वजोंका स्मरण किया जाता है और उनके गुणगान किये जाते हैं।

महावीर जयंती एक असाधारण जयंती है। यह किसी व्यक्ति, समाज या जातिके महापुरुषकी जयंती नहीं, किन्तु नगद्वितैवी, पतितपावन, प्राणिमात्रके मार्गदर्शक हमारे अंतिम तीर्थंकर महावीरस्वामीकी जयंती है। भगवान महावीरने भारतवर्षके प्रति जो उपकार किया है वह इच्छान्तकालतक भी विस्मरण न होगा।

आजसे करीब दस हजार वर्ष पूर्व भारतीय समाजमें भयंकर अत्याचार फैला हुआ था,

जातीय दुरभिमानके बशीभूत होकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपनी सत्ताओंका दुरुपयोग करने लगे थे, पापकी प्रबल सत्ता जम चुकी थी, बड़े बड़े तिलकवारी ब्राह्मण नरहत्या, गोवध और अश्वमेध यज्ञको धर्मका प्रधान अंग समझते थे ! ऐसे विकट जमानेमें भगवान महावीरस्वामीका इस भारतवसुंधरा पर कुंडलपुर ग्राममें राजा सिद्धार्थकी रानी त्रिशलादेवीकी कूससे चैत्रशुक्ल त्रयोदशीके दिन जन्म हुआ था । इसी पवित्र दिनको हम आज महावीरजयंतीका दिन मनाते हैं ।

महावीरस्वामीको जगत कल्याणकी आकांक्षा थी इसीलिये गृहस्थीके गर्तमें न फँसकर ३० वर्षकी अवस्थामें ही दिगम्बर दीक्षा धारण करली थी ।

दीक्षाके बाद—

उनका जीवन सबके लिये था । केवलज्ञान प्राप्तिके पश्चात् काशी, कौशांबी, कौशल, कलिंग, काम्बोज मत्स्य, गांधार, पवनश्रुति, भद्रकार आदि अनेक देशोंमें विहारकर समस्त प्राणियोंके कल्याण हेतु उपदेश दिया था । भगवानके समवशरणमें देवेन्द्र, चक्रवर्तीसे लेकर मनुष्य मात्र ही नहीं किन्तु पशुपक्षी भी उपदेश श्रवण करनेको आते थे और आत्मकल्याण करते थे ।

भगवान महावीरस्वामीने अपने उपदेश द्वारा पाखण्डके खण्ड खण्ड कर डाले थे, जातीय दुरभिमान छुड़वाकर विश्वप्रेमका प्रचार किया था और संसारको जैनी होनेके लिये शान्तिका मार्ग खोल दिया था । इन्हीं उपकारोंसे उपरुत होकर हम आज महावीर जयंती मनाते हैं ।

तत्कालीन परिस्थिति ।

चित्तसंभूत जातक ग्रन्थमें लिखा है कि चाण्डालके अकस्मात् दर्शन होजानेसे ब्राह्मण, वैश्य स्त्रियां आंखे धोती थीं और उन्हें मरवा तक डालती थीं ! वेदको सुननेवाले शूद्रके कानोंमें क्रीले ठोक दिये जाते थे ! ऐसे भयंकर पापोंका प्रतीकार भगवान महावीरस्वामीने अपने दिव्योपदेश द्वारा किया था और प्रत्येक जिज्ञासुको धर्म श्रवणका अधिकारी बतलाया था ।

उस समय याज्ञिक ब्राह्मणोंके अत्याचारका तो कुछ ठिकाना ही नहीं था । 'यज्ञार्थं पशवः शृष्टाः' 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' इत्यादि वाक्यों द्वारा भारी हिंसाका प्रचार कर डाला था ! गायको माता माननेवाले ब्राह्मणोंने वार्षिकामेष्टि यज्ञमें अप्रमृता गौ को होम करनेकी खुशी आज्ञा दे दी थी !

ऐसी विकट परिस्थितिमें भगवान महावीरस्वामीने अपने उपदेशामृतद्वारा हिंसादि पापोंसे संतप्त भारत-भूको शान्ति लाभ कराया था । यही कारण है कि बादमें अनेक राजा महाराजा एवं सम्पूर्ण प्रजा अहिंसाकी उपासक होगई थी और बहुत समय तक अक्षुण्ण अहिंसाका प्रचार रहा । ग्यारहवीं शताब्दीमें पाटन, चम्पापुर, अयोध्या, नागपुर, ज्वालापुर, बनारस, उज्जैन, पटना, मथुरा, विशाला आदि अनेक नगरोंके अहिंसक जैन राजा थे । महाभयंकर एवं प्रतिकूल जमानेमें भगवान महावीरस्वामीने शान्तिदायनी अहिंसाका प्रचार कर भारतीय जनताका ही नहीं किन्तु जगतका जो उपकार किया है उसके स्मरणमें हम महावीर जयन्ती मनाते हैं ।

हमारा कर्तव्य ।

महावीर जयन्ती (चैत्र सुदी १३) के दिन प्रातःकाल हमें भगवान महावीरस्वामीके गुण-गान करना चाहिये, जिन मंदिरमें जाकर पूजन करना चाहिये और महावीर चरित्र सुनना सुनाना चाहिये तथा यथाशक्ति व्रतोपवास भी करना चाहिये । गरीबोंको दान करना चाहिये और अपनी शक्तिके अनुसार विद्या दानादिमें द्रव्य प्रदान करना चाहिये । रात्रिके समय प्रत्येक ग्राम व शहरोंमें एक सार्वजनिक सभा की जावे । जिस प्रकार जैन मित्रमण्डल देहलीकी तरफसे यह दिवस तीन दिनोंतक मनानेकी विराट् आयोजना होती है, उसीप्रकार प्रत्येक शहरमें होनेकी आवश्यकता है । जहां २ सभयों की जावें वहां इस बातका पूर्ण ध्यान रखना चाहिये कि अजैन भाई काफी संख्यामें उपस्थित होसकें । पहिलेसे ही किसी ऐसे विद्वानको बुलानेकी आयोजना कर लेना चाहिये जिसके उपदेशको सुनकर अजैन जनतापर भगवान महावीरस्वामीके जीवन और उनके दिव्योपदेशोंका पूरा असर होसके ।

संक्षुचित दृष्टि ।

अब संकोच या तंगदिलीका जमाना नहीं है और न भगवान महावीरस्वामीमें भी यह बात थी । अब तो प्रत्येक व्यक्तिसे प्रेमपूर्वक वर्ताव करना चाहिये । संसार सत्यकी खोजमें है, इसलिये अपना सिद्धान्त मनुष्यमात्रको बतलानेमें कोई संकोच न होना चाहिये । दानी श्रीमानोंका कर्तव्य है कि उत्तमोत्तम जैन ग्रंथ या तत्संबंधी छोटें बड़े छपवाकर लाखोंकी

संख्यामें मुफ्त वितरण करना चाहिये । अब वह याज्ञिक जमाना नहीं है जिसमें “ स्त्रीशुद्धी नाश्रीयातां ” की अविवेकपूर्ण आज्ञा प्रचलित थी; किन्तु अब तो किसी भी निज्ञामुको जैनधर्मसे परिचित करानेमें ही महावीरजयंती मनानेकी सफलता समझना चाहिये ।

जैन-दीक्षा ।

जिस प्रकार भगवान महावीरस्वामीने प्राणी-मात्रके लिये जैनधर्मका दरवाजा खोल दिया था, तथा अनेक जैनार्चय उसका अनुकरण करते आये हैं उसी प्रकार अब भी अनेकोंको जैनदीक्षा देने (जैन बनाने) में संकोच न करना चाहिये । मिथ्यामार्गमें फंसे हुए एक ही मनुष्यको जैन-मार्गपर ले आना बड़ा भारी उपकार है । हमारे जैनशास्त्रोंसे स्पष्ट पता चलता है कि महाव्यसनी दृढ़सूर्य, अनंगसेना, वेश्या, यमपाल चाण्डाल, चौराधिपति सुरदत्त, काणा टीमरनी, वेश्याशक्त चारुदत्त आदि अनेक व्यसनी दुर्गाचारी और शूद्र भी जैनधर्मके प्रभावसे उत्तम गतिको प्राप्त हुये हैं ; तब क्यों न अनेकोंको जैन बनाया जाय ? जैन दीक्षाका विरोध करना प्रकाशको अन्धकार कहनेके समान है । क्या ही अच्छा हो यदि महावीर जयंतीके दिन उपदेश द्वारा अनेक अनेकोंको जैनधर्मका श्रद्धालु करके जैन बनाया जावे ? यह सबसे बड़ा उपकार है ।

महावीर जयंतीके दिन कुछ विशेष कार्य भी अवश्य होना चाहिये । इसमें तो कोई संदेह नहीं कि सबसे यह जयंती मनानेका रिवाज जारी हुआ है तबसे बहुत लाभ हुआ है, अनेक

अजैनोंको जैन सिद्धांतका परिचय हुआ है; किंतु फिर भी इसे आगे बढ़ानेकी जरूरत है। केवल कुछ शहरोंमें ही जयंती मनाई जाती है यह संतोषपद नहीं कही जासक्ती, किन्तु जब ग्राम ग्राममें (जहां एक भी जैन रहता है) जयंती मनाई जावेगी तब कहीं संतोष होगा। इसके लिये पूर्ण प्रयत्न होनेकी आवश्यकता है। तब महावीर जयंतीका आम त्यौहार होनेमें देर न लगेगी। जैसे कि देहलीमें महावीर जयंतीकी आम छुट्टी होनेकी सरकारसे गत वर्षसे मंजूरी मिल चुकी है। उसी प्रकार सर्वत्र प्रयत्न करना चाहिये।

मल्लीनाथ विशालय—शिवडशहापुर (निजाम) के लिये १० विद्यार्थियोंकी आवश्यकता है। अध्यापक पं० सुपर्णकुमारजी नियुक्त हुए हैं।

श्री द्रोणगिरिका—वार्षिक मेला ता० २ से ९ मार्च तक होगया। जनता अधिक थी परन्तु टीकमगढ नरेशके स्व०के कारण शोक छाया हुआ था। ता० ७को गुरुदत्त दि० जैन पाठशालाका अधिवेशन सिधई कुंदनलालजी सागरके सभापतिस्वमें हुआ था तब न्या० पं० गणेशप्रसादजी वर्णाने उपदेश दिया, जिसके अमरसे सभापतिजीने पाठशालाको ५०१) दिये व २१२।।।) और भी सहायता मिली थी। फिर सामाजिक कुरीतियोंको मिटानेका भी व्याख्यान हुआ था।

इन्दौरमें—सेठ शोभाराम गंभीरमलजीके पौत्रका विवाह फा० सुदी ८ को होगया, जिसकी खुशीमें इन्दौरके मंदिरोंको ७१९) व १०१) अलग २ संस्थाओंको यत्र तत्र भेजे गये हैं।

जैनसमाचारवलि

परताबगढ़—में सेठ माणिकलालजी जुवा दि० जैन विद्यालय जो ८ वर्षसे चल रहा है उसके लिये निजी मकान आपने (सेठ माणिकलालजीने ५०००) लगवाकर बनवा दिया व उसका उद्घाटन परताबगढ़ नरेशसे ता० २४ फरवरीको धूमधामसे करवाया था।

राजाखेडा—में मुनिमंघर ब्राह्मणों द्वारा उपसर्ग हुआ था जिसकी रक्षा घोलपुर नरेशने की थी इसके लिये घोलपुर नरेशको धन्यवादका प्रस्ताव अनेक स्थानोंसे भेजा जा रहा है।

ललितपुर—में गत ता० १० को भ्रान्तमंडलका ३२ वां अधिवेशन हुआ था, जिसमें पं० परमेष्ठीदासजी न्यायतीर्थ (सुरत) ने सामाजिक परिस्थितिपर व्याख्यान दिया था।

वा० भागीरथजी वर्णी—अभी अमरोहामें हैं व चैत्र मास तक यहां ही ठहरेंगे।

बडवानीमें उदासीनाश्रम—श्री ब० जेबी-लालजी महाराज कई माससे बडवानी (बावन-गजाजी) में ठहरे हुए हैं व वहां आपने एक उदासीनाश्रम खोलना निश्चित किया है जिसके लिये एक दानीने ६०) मासिक पांच वर्ष तक देना स्वीकार किया है जिससे अभी ३ त्यागी तो रह सकेंगे व अपने स्वयंसे विशेष त्यागी भी आसकते हैं। मुहुर्त बैशाख मासमें बडवानीमें ही होगा व मगसिर मासमें आश्रम बडवानी पहाडकी तलहटीपर चला जायगा।

किरतपुर-में अभी श्री० ब्र० सीतलप्रसा-
वजीने पांच भाइयोंको विधिपूर्वक यज्ञोपवीत
धारण कराया था उन्होंने कई प्रतिज्ञाएं धारण कीं ।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा-लाडनू (मारवाड) में
वैशाख वदी (गुजराती चैत्र वदी) १ से ५ तक
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगी । तब वहां मनमानी
सभा व खंडेलवाल महासभाके भी अधिवेशन
किये जानेवाले हैं ।

फिरोजाबादमें-वार्षिक मेला ता० २२ से
२६ मार्च तक धूमधामसे होगया । आचार्य
१०८ श्री शांतिसागरजीका संघ भी पधारा था ।
साथमें दि० जैन समिति फिरोजाबादका पंचम
अधिवेशन, लमेचू महासभा व पद्मावती परि-
षदके भी अधिवेशन हुए थे ।

वैद्यरत्न-पं० सुन्दरलालजी पछारके ज्ञान-
सागर औषधालयसे स्तीफा देकर इटारसीके म्यू-
निसिपल औषधालयमें नियुक्त हुए हैं । पछारसे
विदाईके समय आपको मानपत्र दिया गया था ।
आपने इटारसीमें ता० १५ मार्चको 'विद्याकी
आवश्यकता' पर ऐसा जोशीला व्याख्यान दिया
कि उसी समय वहां जैन पाठशाला स्थापनका
निश्चय होकर १८॥ मासिक चंदा लिखा गया था ।

आभार दर्शन-हमारी स्वर्गवासी बहिम जैन
महिलारत्न श्रीमती मगनबहेन जे० पी० के
असमय परलोकगमनसे अनेकानेक सज्जनों व
संस्थाओंसे शोक व समवेदना दर्शक प्रस्ताव व
पत्र आये हैं, उन सबको अलग-उत्तर देनेकी
असमर्थताके कारण इस जाहिरपत्र द्वारा उन
सबका मैं आभार मानता हूं ।

ताराचन्द नवलचंद जौहरी-बम्बई ।

साहित्याचार्य व कविरत्न-भारत विद्वत्
परिषद व सं० विश्वविद्यालय अजमेरकी साहि-
त्याचार्य व कविरत्नकी परीक्षामें मीड़ा जैन
पाठशालासे सुरेन्द्रचंद्र जैन वीर उत्तीर्ण हुए हैं
तथा 'हिन्दी साहित्यकोविद' में भी ६ विद्यार्थी
पास हुए हैं ।

खण्डवा-में अभी सेठ रावजी सखाराम
दोशी पधारे थे, तब मगनबाईजीकी शोक समा
आपके सभापतित्वमें हुई थी फिर यहां आपने
विष्णुकुमार मुनिपर कीर्तन किया था ।

देहलीमें महावीरजयंती उत्सव-इसवार भी
चैत्र सुदी १३-१४-१५ तीन दिनों तक बड़ी
भारी तैयारीके साथ सार्वजनिक रूपसे होगा ।
साथमें विद्वानोंसे इनामी निबंध व इनामी कवि-
ताएं भी मगाई हैं । यहां 'महावीर जयंती' की
सरकारी छुट्टी भी स्वीकृत हो चुकी है । इस
जयंतीमें अनेक जैन पंडित पधारेंगे तथा तीनों
दिनके सभापति क्रमशः-रा० ब० लाला मुल-
तानसिंहजी देहली, रा० ब० पारसदासजी
खनांची देहली व सेठ परमानन्दजी जैन एम०
ए० होंगे ।

शिवहारामें शानदार रथयात्रा-शिवहारा
(विजनीर) में जैन रथयात्रा मर्निस्ट्रेटकी अनु-
चित्त रोकके कारण बंद रखनी पड़ी थी, वह
फिर आज्ञा मिलजानेपर ता० ६ से ९ मार्च
तक सानंद होगई । सभी जैन अजैन हिन्दू
मुसलमानोंने रथयात्रामें भाग लिया था, बड़ी ही
धर्मप्रभावना हुई थी । श्री० ब्र० सीतलप्रादजी
पं० देवकीनन्दनजी छास्त्री व ब्र० दिग्विजय-

सिंहजी आदि पवारे ये व जीवदया प्र० सभा आगराका ९-१० वां वार्षिक अधिवेशन भी श्री० रा० ब० साहु जुगमंदिरदासजी रईस नजीबाबादके सभापतित्वमें सफलताके साथ हुआ था । जिसमें निम्नलिखित उप-योगी प्रस्ताव पास हुए थे—(१) साहु सलेखचंदनी चबरे वकील, श्री० मगनबाईजी आदिकी मृत्युपर शोक, (२) कार्यकर्ताओंका चुनाव होकर मंत्री दयासागर पं० बाबूगमजी व स० मंत्री पं० सुर्यपालजी शास्त्री नियुक्त हुए, (३) पाकवीरो, कोसॉबी, कारस, विन्देश्वरी, जीवनमाता, कैलादेवी, दशहरा, बांसवाडाकी बलिहिंसा बंद की जावे, (४) चमड़े व रेशमकी वस्तुओंसे घृणा की जावे, (५) नियमावलीमें सुधार, (६) सभाकी रजिस्ट्री कराई जावे, (७) मांसाहारके विरुद्ध देश व विदेशोंमें प्रचार किया जावे । यहां श्री० ब० सीतलप्रसादजीका व्याख्यान न होने देवें ऐसा वातावरण व प्रयास होनेपर भी साहुजी आदिके प्रयत्नसे आपके ७ वें प्रस्तावपर तथा जैनधर्मके महत्त्वपर ऐसे दो व्याख्यान सफलताके साथ हुए थे ।

बड़ी धारासभामें नियुक्त—श्री० बाबू निर्मलकुमारजी जैन रईस व बैरु आरा, बड़ी धारासभामें बिहार व ओरिसाकी ओरसे प्रजाकी ओरसे मेम्बर चुने गये हैं । बधाई !

मुनिसंघ—फिरोजाबादसे जलेसर, हाथरस, अलीगढ़, आदिके ग्रामोंमें विचरता हुआ चैत्र सुदीमें मथुग पहुंचनेकी संभावना है ।

माणिकचन्द दि० जैन परीक्षालय—बंबईकी परीक्षा इस साल ता० २२ अप्रैलसे होगी ।

रतलाम—से पांच कोसपर सेमालिया (सेलाना स्टेट) में श्वे० साधु दानविजयनीके व्याख्यानका वहांके राजा महाराजकुमारपर इतना प्रभाव पडा कि आप महाराजगढ़में मुनिश्रीको व्याख्यान देनेके लिये ले गये हैं व वहां ही व्याख्यान होते हैं ।

‘आदर्श जैन’ का—‘वीरांक’ महावीर जयंती पर प्रकट होनेवाला है । उत्तम लेख व कविताओंपर पदक भी देनेका प्रबंध हुआ है । यह मासिकपत्र पं० मूलचन्दनी जैन वत्सल कवि द्वारा बिजनौर (यू० पी०) से प्रकट होता है ।

पोहरी जागीर—(ग्वालियर) में महावीर जयंती उत्सव तीन दिनोंतक मनाया जावेगा । यहां ता० २ मार्चको अकलंक आश्रमकी स्थापना भी हुई है ।

वैद्य-मासिकपत्र जो मुरादाबादसे पं० शंकरलाल जैन वैद्य द्वारा १६ वर्षसे प्रकट होता है उसका १७वें वर्षका विशेषांक प्रकट होनेवाला है ।

‘वीर’—का “समाज अंक” भी महावीर जयंतीपर सचित्र प्रकट होनेवाला है । परिषदका यह पाक्षिक पत्र मेरठ (यू० पी०) से प्रकट होता है ।

मडावरा (शांसी)—में शांतिमतीजी, अनंतमतीजी व चन्द्रमतीजी ये तीन क्षुद्धिज्ञान गत मासमें पधारी थीं तब आपके उपदेशसे कन्या पाठशाला खोलनेको २०) मासिकके वचन मिले थे ।

जम्बूविद्यालय-सहारनपुर—का पंचम वार्षिकोत्सव फाल्गुन सुदी ९को श्री० ला० प्रद्युम्नकुमारजी रईसके सभापतित्वमें हुआ था । तब

न्या० पं० माणिकचन्द्रजी, जगन्नाथजी शास्त्री आदिके उत्तमोत्तम व्याख्यान हुए थे। यह विद्यालय उत्तरोत्तर उन्नतिपर आरहा है।

स्व० मगनबहिनकी—मासिक शोक सभा ता० ९ मार्चकी श्राविकाश्रम बम्बईमें धर्मचंद्रिका ब्र० कंकुबाईजीके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें आश्रमकी वर्तमान व भूतपूर्व श्राविकाणं व अनेक स्नेही संबंधीगण उपस्थित थे। उस समय श्री. ललिताबहेन, चतुरबाई, राजुबाई व सभापतिजीके प्रयत्नसे श्राविकाश्रममें एक लक्ष रुपयेमें ९०००) कम है उसको मगनबहेनकी स्मृतिमें पूर्ण करनेका प्रस्ताव पास होकर १२९७) का चंदा स्त्रियोंके स्मारक फन्डमें भरा गया था। जिसमें बड़ी २ रकमें ये हैं—१००१) लीलावतीबहिन पानाचंद जोहरी, १०१) स्व० ललिताबाई, १०१) ब्र० कंकुबहिन, १०१) सौ० केशवबहिन, १०१) सौ० कमलाबहिन, १०१) जैन महिलारत्न ललिताबहिन, १०१) सगुणाबाई रुहया, २०१) श्री० जडावबाई, १९१) श्रीमतीबाई गरगट्टे, १०१) माणिकबहिन, १०१) लक्ष्मीबहिन, १२९) पं० चंदाबाईजी, ११) चंदनबाई, ११) शांताबाई, ११) ब्र० राजुबाई, ११) श्री० कोकिल, ११) रतनबाई आदि।

अमरोहा—में ऋषभजान जयंती उत्सव ता० २२-२३-२४ फरवरीको हुआ था तब बा० भागीरथजी वर्णा, पं० देवकीनंदनजी, पं० जुगलकिशोरजी आदि भी पधारे थे।

वैद्यराज पं० कन्हैयालालजी—आयुर्वेद

भूषण कामपुर “ इन्डियन मेडिसन बोर्ड ” की ओरसे यू० पी० भरके वैद्यकी ओरसे मेम्बर चुने गये हैं। वधाई !

मुनिश्री शांतिसागरजी—(छानी) आजकल इन्दौरमें विराजमान हैं।

वेरिस्टर चम्पतरायजी—साहब ता० २२ फरवरीको बम्बईसे विलायत रवाना हुए थे। विदाईके लिये कई जैन भाइयोंने बंदरपर जाकर हारतोरे दिये थे। आप एक वर्षतक वहां जैनधर्म प्रचारार्थ ठहरेंगे। आपके पत्रव्यवहारका पता—
The Imperial Bank of India Ltd.
22 Old Broad Street London E. C. 2

मुनिश्री मूर्यसागरजी—वीरसागरजी, धर्मसागरजी व अजितसागरजी ये चार मुनिगण गत मासमें गोटेगांव पधारे थे तब वीरसागरजीने केशलोच किया था। अभी आपका बिहार जबलपुर प्रांतमें होरहा है।

गिरनारजी—जीमें मुनीन्द्रसागरजी आदिका संघ चत्र मासमें पहुंच जायगा।

श्री अतरसेन दि० जैन—संपादक 'देशभक्त' मेरठको राजद्रोहके कारण १ वर्षकी सजा हुई थी उसकी अपील करनेपर हाईकोर्टने सजा कम न करके एक वर्षके स्थानपर २ वर्षकी सजा करदी है। दुःख !

सुरत—मां विक्टोरिया थाजमां श्वेतांबर जैनोनां प्राचीन लुण्ठ मंदिर छे तेने अना धार्यकर्ताओ तेमांथी भूति उठावी लध वेची देवा तैयार थया छे तेनी विरुद्धमां अत्रे पोकार थध रह्यो छे ने श्वे० मुनि भाषु-धविष्यलु ओ मंदिर वेयावा न पाभे ते भाटे तनतोड प्रयत्न करी रह्या छे.

होली व मित्र-संवाद ।

(लेखक:—धर्मरत्न पं० दीपचन्द्रजी वर्णी, चौरासी)

शिरःकृतु गई। उसने जो अपने तीव्र झकोरोंसे वृक्षोंके भूषण स्वरूप पत्तोंको झड़ा झड़ाकर सौन्दर्य रहित नग्नमा कर दिया था, सो अब वसंतऋतुके शुभागमनसे वे वृक्ष फिरसे नव-पल्लवों सहित लहलहे पहिले भी सुन्दर दिखाई देने लगे हैं। आकाश चहुं ओर निर्मल होगया है। न तो अब शीतका प्रकोप ही रहा और न अभी गर्मीका आताप ही आया है। जहांतहां मंद र सुहावनी पवन चलती है, पक्षीगण भी मसन्न चित्त हुए चुहकते दिखाई देने हैं। कोयल अपनी निगली तान छेड़ रही है, जो कि विरही जनोंको तीरका काम करती है, और रसिक जनोंको मोहन करके अपने निकट आकर्षित करके बुलाती है। बगीचों व जंगलोंकी अकथनीय शोभा होरही है तारय्य हर तरहसे यह वसंतऋतु सुखद प्रतीत होती है।

इन्हीं दीनोंमें फाल्गुन सुदी ८ से १५ तक हमारा पवित्र अष्टान्हिका (नदीधर) पर्व आता है। इसमें अनेक भव्य जीव व्रत विधानादि उत्सव करके सातिशय पुण्य प्राप्त करते हैं। परन्तु कितनेक अज्ञानी लोग ऐसे पवित्र पर्व दिवसोंमें होलीके नामसे अनेक वृणित कार्य करते हैं। वे लोग जहां तहांसे मांगकर व चोरी

कर करके किसी एक जगह लकड़ी कंडे आदि पदार्थ एकत्र करके जलाते हैं। उसका नाम होली रखते हैं। फिर उसकी राख माथेमें लगाते हैं और होली है ऐसा कह कहकर भंड बचन बोलते हैं, जहांतहां चाहे जिसके ऊपर धूल, कीचड़ आदि पदार्थ फेंकते हैं। तारपयं नगर व ग्रामोंको ये लोग अत्यन्त मलिन कर डालते हैं इनके उपद्रवके कारण सम्य नर नारियोंको तो घरसे बाहिर निकलना ही कठिन होझता है। इनमें कोई यदि कुछ सम्य बनते हैं तो वे रंग गुलाल, अचोर लेकर चहे जिस पर डाक देते हैं। और एक बीभत्स रूप बनाये पाग-लकी तरह जहां तहां बेभार हुए फिरते हैं। ये इस अनाड़ीपनमें थक न जायं याकि किसीको देखकर लज्जा व संकोच न आजावे। इसलिये ये अज्ञानी अपने इस अज्ञानको व निर्लज्जताको, चरमसीमातक पहुंचानेके लिये मदिगा, चशं, गांजा, अथवा भंगको पीकर बिल्कुल बेसुब होजाते हैं। इनमेंसे मनुष्यत्व बिल्कुल ही हवा होजाता है। बहुतोंने तो इसे धार्मिक रूप दे रहा है और गवर्नमेन्टसे इसे आम तिहवार बताकर छुट्टियां कराली हैं। अस्तु, जो ठो-मज्जनोंको तो ऐसे समयमें भोर्ट कालेन आदिये अवकाश मिलजाता है और वे उममें बहुत कुछ

धर्म साधन करके पुण्योपार्जन करते हैं । इसी नीतिको लिये हुए हमारे मित्रगण भी अवकाश पाकर नगर्भोंकी उपाधियोंसे बचकर पुण्य संचयार्थ यात्राको चल दिये और हस्तिनापुर पहुंच गये ।

वास्तवमें यह स्थान परम रम्य और निरुपाधि है । हमारे पूज्य १००८ श्रीशांतिनाथ, कुंथुनाथ तथा अईनाथ तीर्थंकरोंने अपने गर्भ जन्म तप और ज्ञान कल्याणकोसे इसे पवित्र किया है । दानेश्वर राजा श्रेयांस भी यहीं प्रसिद्ध हुए हैं, और तभीसे (तृतीयकालके अंतसे) जब भगवान ऋषभनाथको वैशाख सुदी ३को राजा श्रेयांसने इक्षुरसका आहारदान दिया था, तभीसे संसारमें वह तिथि "अक्षयतृतीया" कहलाई क्योंकि उस दिन उनके यहां अक्षयनिधि होगई थी । इसलिये समाजके शुभचिंतकोंने अक्षयतृतीयाके दिन उक्त स्थानपर "एक दिगम्बर जैन गुरुकुल" श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमके नामसे खोला था जो आजकल श्री जम्बूस्वामी (अंतिम केवली)के पवित्र निर्वाण क्षेत्र चौरासी मथुगमें सुगक्षित है । तात्पर्य—ऐसे उत्तम व एकांत स्थानको देखकर मित्रगण बहुत हर्षित हुए और ८ दिन यहीं ठहरनेका निश्चय कर लिया । तदनुसार नित्य त्रिकाल सानाथिक पूजन स्वाध्यायादि करते हुए यथाशक्ति उपवासादि तप भी करते थे और परस्पर अवकाशानुसार धार्मिक तथा सामाजिक विषयोंपर बातलाप भी करने थे उसीका कुछ सारांश पाठकोंको सुनाते हैं ।

मिट्टनलाल—काकाजी, होलीका पर्व सर्व भारतमें मनाया जाता है तथा इसे चारों वर्णोंके

हिंदू तथा जैनी भी मानते हैं और अपना व परका वीभत्स श्रांग बनाकर घृणित तथा अश्लील गाना गाते और नशा करके रागलोंकी भांति मारे १ फिरते हैं, मानापमानका भी कोई ध्यान नहीं दिया जाता । मेरी समझमें इतना नीच घृणित पर्व तो कोई हो ही नहीं सक्ता, कि जहां बहिन वेष्टियोंके सामने भी लोग गन माने कुशब्द बोलते और कुचेष्टा करते देखे जाते हैं और कोई भी सम्य समाज इसका प्रतीकार नहीं करता । इसका क्या कारण ?

जय०—वेटा, प्रश्न तो मौकेका है, सुनो ! न तो यह धार्मिक पर्व है न इससे सांसारिक लाभ ही कोई है । परन्तु संसारमें रूढ़ियोंका साम्राज्य होनेसे कोई भी भलाई बुराई या असलियतपर विचार नहीं करता । बहावत है "शास्त्राद्दृष्टी बलीयशी" और यदि कोई कुछ करता भी है, तो लोग उसकी हंसी उड़ाते, बहिष्कार करते और उसपर नाना प्रकारकी आपत्तियां ला देनेमें भी कसर नहीं करते । जैसे कि आजकल कुछ लोगोंने बाल्यविवाह निषेध, वृद्धविवाह निषेध, अश्लील गाना और अनावश्यक व्ययोंका निषेध, समान वर्णोंमें परस्पर रोटी वेटी संवेध स्थापनकी चर्चा उठाई है, सो यद्यपि उन लोगोंका कहना शास्त्रविरुद्ध नहीं है, तो भी रूढ़िके भक्त अंधपरंपरा चलानेवाले विवेकहीन जन या उनसे आजीविका पाकर पेट पालनेवाले कतिपय मनुष्य उन लोगोंको सुधारक कहते हुए भी मनमानी गालियां सुनाते हैं, विरोध करते हैं । इसपर जब सुधारकोंने देखा कि ये लोग

समझते हुए भी इठ नहीं छोड़ते । और यहां भारत आरत होकर गारत होता जाता है तब उन्होंने बाल्यविवाह निषेधपर बड़ी धारासभामें विल पेश करके उसे "शारदा एक्ट" के नामसे पास करवा दिया । जो कि प्रथम अप्रैलसे समस्त ब्रिटिश भारतमें लागू हो जायगा । इसपर भी जैसी उच्छलकूद मचाई जारही है सो देखते ही हो इत्यादि, इसीप्रकार होलीको भी समझो ।

एक राजाकी एक होलिका नामकी कन्या थी जो कि अपने पूर्वले कुसुंकारों व साम्प्रत कुसुं-
गतिके कारण माता पितादि जनोसे छिपकर गुप्तरीत्या किसी विषयी मनुष्यसे रमने लगी । यह बात उसकी एक वृद्धादासीके सिवाय कोई न जानता था । इसलिये होलिकाने " कि कहीं यह मेरा भेट किसीपर प्रगट न कर देवे ।" उस निर्दोषनीको धोतसे अग्निमें डालकर जला दिया । दासी मरकर व्यन्तरीदेवी हुई और अव-
धिज्ञानसे अपना पूर्वला सब हाल जानकर होलि-
कासे बैरका बदला चुकानेके लिये उसने सारे नगरमें फोड़ापुंजमी, खज खुजली आदि रोग फैला दिये । और नगर लोगोंको स्वप्नमें सब बात करदी तथा यह भी कहा कि यदि तुम होलिका जैसी एक काष्ठकी पुतली बनाकर उसे चीतापर रखकर जलाओगे और होलिकाके नाम लेकर गालीगलौज बोलोगे तो मैं यह रोग समेट लूंगी । इत्यादि, बस वह दिन फाल्गुन सुदी १५ का था, लोगोंने वैसा ही किया और व्यन्-
तरीने अपनी माया संकोच ली, रोग मिट गया । तात्पर्य व्यन्तरीने होलिकाको बदनाम करके उसका पाप प्रगट करके अपना बदला लेलिया ।

परन्तु बेया ! यह लोक गतानुगतिक है । इस-
लिये प्रतिवर्ष वैसा ही होलिका दहन करने लगे, बकने बकाने लगे, ये ठहरे संसारके विषयी जीव इन्हें इसीमें आनन्द आगया । ब्रह्मणोंको इसमें भी कुछ पूजापात्री मिलने लगी । इसलिये उन्होंने इसे धार्मिकरूप दे दिया । हिन्दुओंकी संख्या बहुत और उनमें जैनी तो आटेमें नमक नितने थोड़े तिसपर भी इनके दुर्भाग्यसे इनको इन दो तीन सौ वर्षमें महालोभी परिग्रही मिथ्या-
त्वसे पूर्ण भट्टारक नामके गुरु मिल गये जिन्होंने इनको धर्मके नामपर केवल अपनी पूजा भेट भावना करना मात्र बनाया और विश्वास दि-
लाया कि तुम चहे सो करो । चाहे सो खाओ, किसी भी रागी देवी देवको मानो, चाहे जिस रूपपर चलो । परन्तु यदि हमारी भावना भेट करते हो तो सब अपराध माफ हैं । ये लोग वैसा ही उपदेश देने । जैसा कि किश्रियन पात्री कहते हैं, ईसापर विश्वास रखो तो सब माफ होजायगा । यही कारण है गुजरात जैसा भद्र प्रांत धर्मज्ञान विहीन होगया है । यही नहीं जहार इनकी पैगम्बरी रही बहार ज्ञानकी शून्यता ही पाई जाती है । जो हो बस इन लोगोंपर भी उन बहुमूल्य हिन्दुओंका प्रभाव पड़ा और ये भी अष्टादिहिका जैसे पवित्र पर्वमें भी इस अज्ञान चेष्टामें पड़ जाते हैं । कहा है -

“गतानुगतिकाः लोको न लोको परमार्थिकाः।
बालुकापुंजमात्रेण ताम्रपात्र गतोगतः ॥”

अर्थात्-एक साधू तामेंका तुमा लेकर नहाने गया और इस भयसे कि इस कोई ले न जाय

उसे रेतमें छिपाकर ढेर कर दिया। अन्य लोगोंने उसे ढेर करते देखलिया और उसका अनुकरण करके आपसपास सैंकड़ों रेतके ढेर बना दिये। जब साधू नहाकर अपना तृण निकालने लगा; तो सैंकड़ों रेतके ढेर देखकर अपने ढेरको न पहिचान सका और उक्त श्लोक कहकर चला गया अर्थात् लोक गतानुगतिक भेदिया चालके होते हैं—परमार्थको नहीं समझते, रेतका ढेर करने मात्रसे मेरा ताम्रपात्र खोया गया।

बेटा ! यही बात है, अब रुढ़ि पड़ गई है। इसका विरोध भी होरहा है और सुधार भी। अनेक स्थानोंमें अब लोग इस दिन खासे २ तरहके बरघोडे सर्घस (जलस) रूपांतर करके निकालने लगे हैं। होलीके रागोंमें सुकवियोंने नीति, धर्म और अध्यात्म रस पूर्ण रचनाएं तैयार की हैं। जिनको गाकर अश्लील गीतोंका परिहार करते हैं तथा अब पढ़लिखे लोग भी बहुत संभल गये हैं वे इसे निध गिनने लगे हैं। होतै २ सब सुधार जायगा।

टेक०—तो भैया क्या इसे मानना ही न चाहिये ?

जय०—जी, मेरा मत तो ऐसा ही है और माँही तो इसी प्रकार जैसा मना रहे हो !

टेक०—भैया सबसे गांधीकी आंधी चली है सबसे तो कपड़ेकी होली होने लगी।

जय०—ठीक है अभी आपने उसका अभिप्राय नहीं समझा, वह कपड़ोंकी नहीं विदेशी कपड़ोंकी होली है, ये वे कपड़े हैं जिनमें लाखों मन चर्बी लगती है और भारतकी कारीगरीको जाह्नकर गरीबोंके पेट फाटकर परदेशसे आते

हैं। इसलिये गांधीजीका क्या सभी देशनेताओंका कहना है कि अपने देशी (खदर) के ही वस्त्र पहिरो, और स्वयं ही रहटा कांत कर बनवाओ।

टेक०—यह तो ठीक है पर उन्हें जलाकर ही क्या होगा ?

जय०—यह केवल उनसे घृणा करानेके लिये है। तात्पर्य जो पासके जला देगा वह नवीन क्यों खरीदेगा ? इससे उसकी आती हुई बाढ़ रुकेगी, और देशके लोग अपनी जरूरतकी वस्तु आप बनाने लोंगे।

टेक०—बाल वृद्ध विवाह, कन्याविक्रय, अनावश्यक व्यय, भंड गीत रुकना तो ठीक है, परन्तु अंतर जातीय-विनातीय-असवर्णीय विवाह और तिसपर विधवा विवाह ये क्या है ? शृष्टा-चारीपना नहीं है ?

जय०—विधवा और विवाह यह बात तो अनमेल है, धर्म और लोकके विपरीत है। विवाह कन्याका ही सुना है लिखा वांचा है परन्तु भाइमाहब जहांतक बाल और वृद्ध विवाह सर्वथा बंद नहीं होते, वहां तक लोगोंको यह कहनेका अवसर मिल रहा है। “ इसलिये न रहेगा वांस, न बजेगी बंशी, अर्थात् न विधवाएं होगी, न लोगोंके मुँह ऐसा कहनेको फटेंगे। इसलिये शीघ्राति-शीघ्र बाल, वृद्धविवाह बंद होना चाहिये और अन्तर्जातीय, विनातीय, असवर्णीय विवाह तो पं० देवकीनंदनजीजैसे सिद्धांतशास्त्री जैसे महान विद्वान् भी आममविरुद्ध नहीं बताते—लोक विरुद्ध कहते हैं सो लोकमें ऐसी रीतियां सम-

यानुसार बनती बदलती रहती हैं । इसमें लोक अपना सामाजिक निर्वाह जैसा देखते हैं वैसा सुधारा बधारा करते रहते हैं । मात्र धर्मका विरोध बचाना जरूर चाहिये ।

टेक०—ठीक है, परन्तु बड़ी उमर १४ वर्ष ही तो शारदाविलमें है, सो इसके ऊपर कोई निश्चय है कि विधवा न होगी ?

जैय०—कर्मगति तो कोई नहीं जानता । परन्तु इतना अवश्य होगा कि एक तो १४ वर्षसे कमकी नवीन विधवा न होगी । दूसरी बात १४ वर्षमें कन्या भी स्वपर हिताहितको समझ लेती है । उसे धार्मिकज्ञान अपने कुल और कर्तव्यका भान भी होनाता है, सो यदि दुर्भाग्यवश वह दिन आया भी तो वे अपने धर्मके बलपर उस दुःखको संयम मार्गमें लगाकर शीलकी ध्वजारोपण कर देंगी । इसलिये बाल और वृद्ध लग्न, कन्या व वरविक्रय और भण्डगीत, कुहास्य (खोटी दिछ्छा) अनावश्यक व्यय ये तो जड़मूलसे निकालना चाहिये ।

टेक०—यह बिलकुल ठीक है, परन्तु स्वराज्य स्वराज्यका हौआ होरहा ह सो क्या !

जय०—भैया ! जब अठारह कोडाकोडी सागर भोगभूमिमें वीत गये और मोक्षमार्ग इस क्षेत्रमें बिलकुल ही रुक गया, उस समय उस मिथ्या-धकारका प्रतिकार करके मोक्षमार्ग चलानेवाले हमारे पूज्य १००८ श्री ऋषभदेव तीर्थंकर हुए । इसी प्रकार जब २ धर्मका लोप हुआ, मिथ्यात्व बढ़ा, तभी तब तीर्थंकर हुए और पुनः धर्मतीर्थ चलाया । तात्पर्य यह कि प्रकृतिका यह न्याय है । जब २ जिन बातोंकी आवश्यकता

बढ़ जाती है तभी तब वैसे उदार चेतांजु उत्पन्न होकर उन अन्य योंका प्रतिकार करते हैं । इस समय हमारे देशमें विदेशी सत्ता राज कर रही हैं । उसकी नीत्यनुसार हमारा देश दिनों दिन दरिद्र होकर दुखी होता जाता है । इसलिये देशनेता चाहते हैं कि हमारे देशका बन यहीं रहे । हम भी स्वाधीन रहे, हमारा प्रबंध हम ही करें । और इसके लिये वे अहिंसाकी नीतिको आगे रखकर कार्य कर रहे हैं, जो नीति जैनियोंको सर्वथा उपादेय है ।

टेक०—बात तो सत्य है । आजसे ३० वर्ष पहिले व आजमें बड़ा अंतर होगया है । लोगोंको रोटियोंके लले पड़ गये हैं, बड़े २ धर्मात्मा और विद्वान धनियोंकी हां में हां रोटियोंके लिये ही ख इच्छा विरुद्ध मिलाने हैं, बालबच्चे पालना कठिन होरहा है, मेरे तो खादीका व्रत है ही, लड़के भी खादी पहिरते हैं ।

भिगेन-में का तुम्हारी आज्ञा नई मानो, जो कोई समझैया चाहिए ? भिगेनजीके मुंहसे इतना निकलने ही “जय श्रीशांतिनाथ प्रभुकी” इन ध्वनीसे धर्मशाला गुंन गई । वहां उपस्थित अन्य भी जरनारियोंने स्वदेशी सूती खदर पहिरनेका नियम लिया और होलिका दहनके मिथ्यात्वका भी त्याग किया । पश्चात् निम्नप्रकार भजन करके सब निद्रादेवीकी गोदमें शयन करने लगे ।

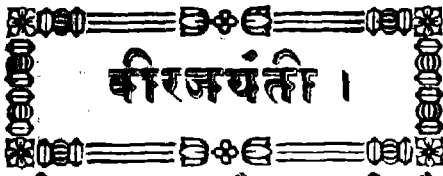
योगी फाग मचावे, देखो योगी फाग मचावे लाल ॥ टेक० ॥
समकित रंग रंगो बह जोगी ज्ञान गुलाल उड़ावे ॥ देखो ॥
चारित्रकी पिचकारी भरके शिव त्रियंघु इड़ावे ॥ ॥
पांच सखा संग पांच सखी ले पांचको नाच नचावे ॥ ॥
ध्यान अग्निके डार कर्म वसु रिपुकी खाक उड़ावे ॥ ॥
'दीपचन्द्र' स्वतंत्र होय फिर शिष संग रार मचावे ॥ ॥

असमर्थता ।

(ले०-पं० गुणभद्रजी, जैन-कलाट)
 जब विमल हृदयमें आत्मज्योति अति जागी ।
 तब आदिनाथने राज्य-सम्पदा त्यागी ॥
 श्रुत प्रस्तुत वे प्रभु हुये जगत दुःख हरने ।
 प्रिय अदभुत सुख साम्राज्य हस्तगत करने ॥१॥
 उन दया-सिंधुके साथ भूपवर कितने ।
 बन गये साधु सब त्याग राज्य सुख अपने ॥
 कैसे रह सकते थे वे भूप भवनमें ।
 जब रहे ईश उनका अति गहन विपिनमें ॥२॥
 निज स्वामीके अनुसार सदा ही चलना ।
 नित है समीर अनुकूल वृक्षका हिलना ॥
 होते हैं प्रभुसे कभी विमुख जो जगमें ।
 होजाता उनका पतन सहज ही मगमें ॥३॥
 थे सब ही भूपति सरल हृदय अज्ञानी ।
 थी नहीं साधुव्रत किया किसीकी जानी ॥
 करते थे जैसी क्रिया प्रथम आदिश्वर ।
 सदानुसार ही क्रिया करें वे नृपवर ॥४॥
 छह मास कठिन उपवास प्रतिज्ञा लेकर ।
 निज आत्म-ध्यानमें हुये लीन परमेश्वर ॥
 अत्यन्त अलौकिक थी प्रभुवरकी क्षमता ।
 वे खड़े हुवे कर रहे मेरुकी समता ॥५॥
 वह बस्त्र विहीन शरीर रम्य त्यों भाता ।
 निर्भेष सूर्य ज्यों अतिशय शोभा पाता ॥
 थे अर्द्धोन्मीलित नेत्र बड़े ही मनोहर ।
 घुटनो तक लटके हुये दीर्घ दोनों कर ॥६॥

वे नाथ ध्यानमें जब इस भांति विराजे ।
 तब दुःखित हुवे कच्छादिक सारे राजे ॥
 वे सह न सके हा ! कठिन परिपह ऐसे ।
 तरु भ्रष्ट पुष्प सहता न तापको जैसे ॥७॥
 यों कहे परस्पर दुःखित सभी निज मुखसे ।
 हम दुःखी हुये हैं आज क्षुधाके दुःखसे ॥
 हैं प्रभु तो ये अपमत्त दुःख सहनेमें ।
 आ सकता इनका नहीं धैर्य कहनेमें ॥८॥
 हो रहे क्षुधासे हाय व्यथित अतिशय हम ।
 पर खड़े रहेंगे कबतक प्रभु पर्वत सम ।
 हम यही समझते थे सब निज २ मनमें ॥
 प्रभुज्यों सुधि स्वयमेव चार छह दिनमें ॥९॥
 होगये खड़े यों कितने ही दिन इनको ।
 क्या भूल गये हैं हाय ! सर्वथा हमको ॥
 ये श्रुत श्रुत ही हमसे तप करवाते ।
 हा ! मिलता नहीं है अन्न प्राण अब जाते ॥१०॥
 यों करके हम उपवास वहांतक जीवें ।
 प्रभु मुखसे भी नहीं कहें आज क्या पीवें ॥
 क्यों उदरपूर्तिकी युक्ति न नाथ बताते ।
 हा ! व्यर्थ क्षुधासे तनका नाश कराने ॥११॥
 यदि रिपुओंका ही नाश इष्ट है उनको ।
 तो देते क्यों नहीं नाथ आज्ञा हमको ॥
 छह गुणमें यह तो नहीं कोई गुण नृरका ।
 है कौन प्रयोजन घोर आज इस तपका ॥१२॥
 ये दुःखोंसे आकीर्ण विपिनमें रहने ।
 हैं राजनीति अनभिज्ञ नाथ हम कहते ॥
 ये ईश चाहते हैं निज तनको तजना ।
 अब निश्चय हममें किया सर्व तप तजना ॥१३॥

मर जावेंगे वे मौत भूखके मारे । ये नाथ नहीं करते हैं कुछ भी करुणा ।
 नहीं करते भोज्य प्रबंध आज जग प्यारे ॥ कर इनकी समता इष्ट हमें क्या मरना ॥
 है इन ही पर अवलम्ब हमारा जीवन । नहीं ज्ञात हमें प्रभु सदन पुनः जावेंगे ।
 दुःख हमको सब स्वीकार मिले बस भोजन ॥१४॥ निष्कम्प खड़े क्या लाभ यहां पावेंगे ॥२१॥
 यह पूर्ण तपस्या हो न प्रभुकी जोंगें । जो करें बड़े नर कार्य न करना हमको ।
 खा कन्दमूल निर्वाह करेंगे तौलों ॥ है इष्ट यहांपर पेट पूर्ति ही हमको ॥
 हम अब तो निज निर्वाह करेंगे जाकर । हाथीका भारी भार न सहता घोड़ा ।
 फिर मिलजावेंगे शोघ ईशमें आकर ॥१५॥ उस काल सभीने धैर्य सेतुको तोड़ा ॥२१॥
 है पूर्वापर अवज्ञात नाथको सब ही । क्या मेरे माता पिता अभी जीवित है ।
 कुछ कर देंगे अधुनेव सहज निर्णय ही ॥ क्या पुत्र हमारे सभी नीतिमें रत है ॥
 अतएव घेर कर खड़े हुये प्रभुवरको । क्या करती होगी प्रिया अकेली घरमें ।
 क्या नक्षत्रोंने घेरलिया शशिवरको ॥१६॥ यों करें वहां संकल्प विविध वे मनमें ॥२३॥
 निज भोलापने वे लगे दिग्गाने ऐसे । यदि हुये विमुख हम लोग यहांपर इनसे ।
 भगवान होगये कष्ट आप क्यों ऐसे ॥ होंगे क्रोधित ये ध्यान पूर्ण कर हमसे ॥
 जब करने थे जगनाथ राज्यका शासन । अपहरण करेंगे राज्य सम्पदा सारी ।
 हम रहे सभी ही नित्य दयाके भानन ॥१७॥ या देंगे हमको दण्ड न्यायसे भारी ॥२४॥
 प्रभुके प्रसन्न लख हम थे प्रमुदित होने । गमनोत्सुक कोई पड़ा ईशके पगमें ।
 जब सोजाने थे ईश तभी हम सोते ॥ नहीं तुमसी है सामर्थ्य हमारे तनमें ॥
 नित भोजनके पश्चात् किया था भोजन । हा ! बैठा कोई दुःखित होरहा था अति ।
 बस ! प्रभु सेवामें लीन रहा था यह मन ॥१८॥ स्पष्ट बोल सकने थे नहीं वे प्रभु प्रति ॥२५॥
 की जगन्नाथने कठिन तपस्या पाया । कितने ही तो नृप खड़े हुये थे सन्मुख ।
 यह हमने भी तप लिया उन्होंके कारण ॥ कितनोंने लज्जा विवश किया नीचा मुख ॥
 अति स्वामि भक्ति ही कष्ट दे रही सम्प्रति । वे कितने ही यों लगे वहांसे जाने ।
 हो रही अलनल बिना हमारी दुर्गति ॥१९॥ प्रभुको पीछे अबलोक पुनः वे आने ॥२६॥
 हा ! आये हैं हम लोग यहां जिस दिनसे । कोई कहते थे हुआ क्षीण यह तन है ।
 नहीं ग्रहण किया है अन्न बारि उस दिनसे ॥ इस वनमें कोई हमें न अवलम्बन है ॥
 अति क्षीण होरही है प्रतिदिन यह काया । प्रभु हम सबका अपराध क्षमा तुम करना ।
 कुछ समझ न पड़ता इन्हें आज क्या भाया ॥२०॥ निज योग पूर्णकर व्यथा हमारी हरना ॥२७॥



वीरजयंती ।

(रक्षयिता-पं० मूलचन्द्र जैन वरसल-बिजमौर)

आवृत्तरण ।

(१)

अनाचार, अत्याचार, विश्वमें बढ़े थे अति ।
अंधश्रद्धा, रूढ़ियोंका गर्म बाजार था ॥
आत्मज्ञान शून्य, क्रियाकांड मग्न मानव थे ।
बढ़ा चहुं ओर घोर, हिंसक व्यापार था ॥
सहस्रों अनाथ, मृक, यज्ञ मध्य जलते थे ।
निर्बलोंके ऊपर शक्तिशालियोंका वार था ॥
विश्वताप हरनेको, शांति सौख्य भरनेको ।
करने उद्धार, हुआ वीर अवतार था ॥

(२)

दिव्यज्ञान सिंधु, अतुलित गुण रत्न खानि ।
जब वीर, धीरवीरका हुआ अवतार था ॥
हुए सुख मग्न, पूर्ण विश्व जीव गुर नर ।
आनंदका स्रोत-हिय-उमड़ा अपार था ॥
इन्द्रासन हिला, दिव्य नाद हुए सुरलोक ।
शशि युत, इन्द्र आया साज ले अपार था ॥
करके सहस्र नेत्र मुख, लवि पान किया ।
हुआ नहीं तृप्त, गया देख २ द्वार था ॥

महावीरत्व ।

(३)

विश्वमें अखंड, अद्वितीय वीर, वीर ही हैं ।
इन्द्रका संवाद सुन देख एक आया था ॥

करने परीक्षा, महावीर, वीर बालककी ।
महाविकराल रूप अजगर बनाया था ॥
देख भयानक रूप बालक भयवंत हुए ।
वीर पकड़ हाथोंसे, खूब ही नचाया था ॥
भूमिपै पछाडा, देव देखि वीर ताकतको ।
कीनी बहुस्तुति "महावीर" नाम गाया था ॥

दृष्टांश ।

(४)

युवति अखंड रूपराशि, देव बालाएं ।
देखि वीर वज्र मन विषयवार व्याप्यो ना ॥
वैभव अनंत, राज्य संपति अट्ट, और ।
सहस्रों प्रलोभनोंसे नेक हृदय कांप्यो ना ॥
क्षुद्र तृण सदृश विलोक विश्व वैभवको ।
लिया घोर संयम, शुभ मार्ग उन्नाप्यो ना ॥
घोर व्रत लीने, अति तीव्र तप कीने शुभ ।
ज्ञानरस भीने, मन नेक परिनाप्यो ना ॥

सुदृष्टांश ।

(५)

अचल सुमेख्वत ध्यानमग्न देखि रुद्र ।
क्रिये उपसर्ग घोर दया हिय धारी ना ॥
चरसे अंगारे, भरे पन्नग फुंकारे सिंह ।
व्याघ्र हुंकारे, वीर कायरता धारी ना ॥
अचल, अडिग, दृढ़ हुए ध्यानमग्न प्रभु ।
बली वज्र हृदयपर, संकटोंकी आरी ना ।
विश्व तन्त्र दशक, प्रकाश हुआ दिव्यज्ञान ।
कष्ट देखि, धन्यवीर ! हिंसत टुक हारी ना ॥

उपदेशामृत ।

(६)

जीव है अखँड, शुद्धबुद्ध ज्ञान शक्ति युक्त ।
 उसे कर्मवर्गणासे शीघ्रतः निकालो तुम ॥
 सत्यता, अहिंसा यम दम शम नियमोंसे ।
 अपना सशीघ्र साज जीवन सजालो तुम ॥
 दया शील समता संतोष मुग्धा सागरमें ।
 आओ विश्व जीवो! जरा दुवकी लगालो तुम ॥
 यही दिव्य वीर उपदेश पारिजातमाला ।
 श्रद्धा समेत निज गले मध्य डालो तुम ॥
 बनो स्वात्मलंबी आत्मशक्तिके उपासक दृढ़ ।
 कर्मवीरताका शस्त्र हाथमें संभालो तुम ॥
 काट डालो शीघ्र, परतंत्रताकी बेड़ियोंको ।
 साहस समेत सेवा विश्वकी कर डालो तुम ॥
 सत्याग्रही वीरवत, सत्यकर्म वेदीपर ।
 स्वार्थिवासनाएं, कामनाएं होंम डालो तुम ॥
 हरो विपत्तियोंसे, हटो नहीं पीछे कभी ।
 वीर उपदेश माला गले मध्य डालो तुम ॥

तीर्थकर चित्रावलि ।

२४ तीर्थकरोंके रंगविरंगी २४ अलग बड़े २ चित्र काचमें जड़वाकर मंदिरोंमें रखने योग्य बड़े चित्रावलि अवश्य मगाइये । (पृष्ठ ३)

और भी बड़े २ रंगीन चित्र-शिवरजी ॥, भा० शांतिप्रणयत्री ॥, चम्पापुरी (=), पावापुरी (=), गिरनार (=), सोलह स्वप्न ॥, चन्द्रयुगके स्वप्न ॥, संधारवृक्ष (=), षट्श्लेश्या स्वरूप (=), सीताजीकी भ्रमन परीक्षा ॥, जन्मकथाणक ॥, भाहारदान, १) भ० पार्श्वनाथ (=) ये चित्र तथा तीर्थ व त्यागियोंके २५ प्रकारके एक आनेवाले चित्र भी अवश्यर मगाइये ।

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।



मिट्टीके गुण व

सरल उपाय ।

(ले०-५० जियालाल शिखरचंद्र जैन वय-फरखनगर)

जब जिस समय मनुष्यके शरीरपरसे बाहर या अन्दरकी ओर शीत वा उष्ण नैम भी लगाया जावे वह शरीरके अन्दर भ्रमण करनेवाली शक्तिमें गई हुई समता लौटाने और रोगको दूर करनेमें परम उपयोगी होता है परंतु सब जगह केवल जल ही काम नहीं कर सकता, हवा भी गरमी सरदीके अलायदा २ हिस्सोंमें और प्रमाणमें काम आती है। हम वायुकी अपेक्षा विना अन्न मूल अधिक समय तक रह सकते हैं। उष्णकालमें जब वायु गरमीसे बहुत अधिक पतली होजाती है रोगी वा अरोगी मनुष्य घरतीके नीचे सुखे तहखानेमें उतर जाय और वहां घरतीके अंशोंसे भरी हुई स्वच्छ और ठण्डी वायुमें आधा घण्टा तक स्वास ले और शरीर पर उसका असर होने दे तो हम विधिसे रोगीके निर्बल शरीरको पुष्टता और आरोग्यको दृढ़ता प्राप्त होगी इसको गेगापथी अर्थात् वायु द्वारा रोगोंकी चिकित्सा कहने हैं परंतु सर्व प्रकारके रोगोंको दूर करनेमें यह सामर्थ्य नहीं। दोनों प्रकारकी बिजलीकी शक्ति भी मनुष्यके शरीरके रोगोंको दूर करनेमें परम लाभदायक है। बिजली मन और अदृश्य वस्तुकी शक्तिकी आज्ञानुसार काम करनेवाली है यह मनुष्यके तीनों भागोंमें अलग २ पीड़ा दूर करने, नसोंकी बाधा मिटाने और नसोंके रोग चंगा

करनेके लिये अन्दर प्रवेश कराई जाती है इसको विजली द्वारा रोगोंकी चिकित्सा कहते हैं। इसमें केवल इस विद्याकी जानकारी अवश्य नहीं है किन्तु रोगीके शरीरमें विजलीको यथावत् शुद्ध रीतिसे लगानेमें पुरी निपुणता और चातुरी भी आवश्यक है परंतु सब स्थानोंमें केवल इससे भी काम नहीं निकल सकता ।

पृथ्वीके गुणों और उपकारोंसे भी हमको अन-जान न रहना चाहिये । हमारे शरीरमें केवल विजली वायु और जलके अंश नहीं हैं किन्तु मट्टीका बहुत बड़ा अंश है जिससे कहने हैं कि देह बना है तो रोगीको उचित है कि ग्रीष्म-ऋतुमें वा दृमरे उष्णकालमें किमानके एकान्त खेत वा बागमें चला जावे-मस्तक छोड़ संपूर्ण शरीरमें सूर्यकी किरणें लगने दें, शिरको उस समय ढाका रखना चाहिये । जब शरीर इस-प्रकार कई मिनट तक नंगा रखने पर गरम हो जावे तो चाहिये कि तानी मट्टी उसपर मलकर आधा घण्टा वा अधिक काल तक रहने दे इसके उपरांत मट्टीको धोकर एक मोटे अंगोछेसे रगड़ डाले और धूपमें सुखाकर कपड़े पहन लें ।

रोगीको चाहिये कि और २ समय जब २ सुभीता हो हल जोतने वालेके पीछे २ खेतमें चलकर नीचा मुख करके तानी मट्टीकी वायुको संघता जावे जब हलसे वह उलटी जावे । धरतीकी तानी मट्टीमें आरोग्यता देनेवाली गुणकारी वायु भरी होती है। उसमें वह सब अंश होते हैं जो जीवनके आधार हैं ।

यह लाभ उनको ही प्राप्त होता है कि जो

देहातमें रहते हैं परन्तु बड़े नगरोंके रहनेवालोंके लिये क्या करना उचित है ?

इन परम लाभकारी विधिसे फायदा उठानेके लिये योग है कि घरमें एक कमरा ऐसा रखा जावे जिसमें खिडकीकी राहसे धूप आसके और वहां ही स्नान करनेका स्थान नियत किया जावे । वहां तीन खाने कटहरेकी सकलके बनालो । एकको स्वच्छ उपजाऊ मट्टीसे भरदो । रोगी पहले देहको धूपसे गर्म करके प्रथम २ प्रकारकी मट्टीको खूब शरीरमें मलकर वहां आधा घण्टा तक रहें इससे उपरांत मट्टीको धोकर देहको अंगोछेसे खूब रगड़ले और धूपमें सुखाकर कपड़े पहनले । कुछ समय तक नित्य इस रीतिसे करे । यदि रोग दीर्घकालसे हो तो चाहिये कि चिकनी मट्टीमें इतना साफ पानी डालकर कि जिसमें वह गारेके समान होनाय रोगी देहको उसमें शान डालें । यदि रोग कोई ऐसा हो जिससे शरीरमें जलन होती हो तो गारेको इतने गरम पानीसे बनावे जितना सहा जाय और फिर ऐसे ही गरम पानीसे धोवे । यदि जलन न होती हो तो खूब ठण्डे पानीसे गारा बनावो और वैसेही ठण्डे पानीसे देहको नियतकाल उपरांत धोवो और मोटे अंगोछेसे शरीरको रगड़कर और धूपमें सुखाकर कपड़े पहनलो । इस विधिसे चिकित्सा करनेसे बहुत रोग अच्छे होजाते हैं जब कि और रीतिसे वह असाध्य मानलिये गये हों । इस विधिसे औषधि और इलाज करनेको हम टेरापेथी अर्थात् मट्टी द्वारा चिकित्सा करना कहते हैं ।

वनस्पति व जीवधारी सम्बंधी सादी औषध

भी खानेकी चिंता नहीं। परन्तु कभी कोई ऐसी औषधिको जो विष हो किसी विधिसे व हेतु करके उदरमें न डालना चाहिये। यहाँ मुझे यह जतानेकी फिर आवश्यकता होती है। अर्थात् विनलीयुक्त अध्यात्म विद्याकी विधिकी चिकित्सा मन और शरीर दोनोंपर प्रभाव उत्पन्न करके रोगीको आराम करनेवाली है और यह मनपर असर पैदा करके बिना किसी औषधिके खिलानेकी आवश्यकता होती है तो हम किसी एक मत व रीतिपर निर्भर नहीं रहते। वरन् चिकित्से विस्मृत खेतकी उपजमें बिना गेक टोक काम लेते हैं। हम एम्पेथिक १, होम्पेथिक २, थोम्पन नियत निजम ३, हेड्रोपेथी ४, इलफ्टोपेथी ५, इगपेथी और टिरापेथीको जुदा २ नहीं समझते। हम विनलीयुक्त आध्यात्म विद्यामें उन सबके गुण और लाभोंको बहातक मानते हैं जहाँतक मनुष्यजातिके दुःख और पीड़ा निवृत्त करनेमें वह कारगर और उपयोगी सिद्ध हो। हम सबको एक मानकर चंगा करनेकी विधिके नामसे कहते हैं।

हम सोचते हैं कि बहुतोंके चित्तमें यह मंदेह उत्पन्न होगा कि जुदेर प्रकारकी मिट्टीके शरीरपर मलनेसे क्योंकर रोग दूर होते हैं और क्यों उनमें चंगा करनेकी शक्ति है, इस प्रश्नका पूरा उत्तर देना ऐसा ही कठिन है जैसा इसका उत्तर देना कि क्यों जल वायु या किसी औषधिसे मनुष्यके शरीरपर आराम पहुँचाने वाला गुण पैदा होता है। कोई वैद्य हकीम डाक्टर शीघ्र यह न बता सकेगा कि क्या कारण है कि अमुक औषधिसे अमुक असर मनुष्यके शरीर

पर पैदा होजाता है। वह केवल यही जानता है कि उस औषधिमें यह गुण है और बस उसके ही अनुसार काम करता है। औषधियोंके गुण बहुधा जावोंसे अकस्मात् मनुष्योंसे जान लिये गये हैं। जब एक विषधर सर्प (जिसको अंग्रेजीमें रेटिल स्नेक कहते हैं) दूधरेको काट लेता है तब यह दे डकर एक वृत्ती खालेता है इस रीतिसे विषके अमरसे बच जाता है। एक हब-जीने उत्तरके एजीनाके दलदलमें काम करने हुए यह बात देखी कि जब उसको एक रेटिल स्नेकने काट लिया तो उसने भी तुरन्त वही ही वृत्ती खाली और अच्छा होगया। सब मनुष्योंमें यह बात प्रगट होगई। अब जब किसीको सर्प काटता तो वह उसी दवाको खाकर अच्छा होजाता जब कि प्रथम इसके यह निश्चय था कि उस सर्पका काटा हुआ मरजाता है।

यथार्थमें प्रायः सब वनस्पति सम्बंधी औषधियां जो अब हकीमों वैद्योंके पास हैं सब जानकारी की हुई हैं। जब कोई नई दवा इस रीतिसे निकाली या खोजी गई तो अवश्य उसके गुणोंकी ठीक २ जाननेमें बहुत २ विरोध हुए परन्तु जब अनुभवसे जान लिया गया कि यह ठीक है तो वह ही दवा हकीमों वैद्योंके नित्य काममें आने लगी, इसी रीतिसे सब औषधियां जानी गई हैं। जिमोइट पादरियोंने अमेरिकन लोगोंसे जाना कि सिह्लवियन छाल ज्वर दूर करती है। इसपर पुगने हकीम भरोसा न करके हंसने लगे परन्तु जब कुछ दिनोंके अनुभवसे उसके गुण सिद्ध होगये तो वह ही लोग

उसको नित्य व्यवहारमें लाने लगे । अब ज्वरकी केवल यही दवा प्रसिद्ध है । आप जानते हैं कि कुनैन इसी छालसे बनाई जाती हैं । हम यहां एक अपना अनुभव भी प्रकट करते हैं । एक समय एक नचानेवाले मदारी फरुखनगरमें मांगता आया । उसके साथ एक बूढ़ा बन्दर था जिसको वह नचाता न था; किन्तु बेटेसे भी अधिक रखता था । हमने इसका कारण पूछा तो बताया कि बन्दर मेरा जीवनमूल है । एक समय मुझे ज्वर आया और शनैः २ पुराना होकर चौथैया हो गया । मैंने ३-४ वर्ष तक अनेक उपाय किये परन्तु कोई भी फलीभूत न हुआ । उस समय मेरे पास एक और बन्दर था जो बूढ़ा होकर मर गया था और एक नवीन बन्दरकी आवश्यकता हुई तब सहारनपुरके जंगलमें जाकर बन्दर पकड़ा । १५-२० दिन तो यह उखड़ा रहा । जब हिल गया तो मुझसे अधिक प्रेम रखने लगा । इसके सन्मुख मुझे एक दिन ऐसा ज्वर चढ़ा कि मुडबुड न रही । अगले दिन मैं सोया पड़ा था कि इस बन्दरने एक हरी घास लाकर मेरे मुंहमें निचोड़ दी । बस उसने ऐसा गुण किया कि मेरा ज्वर उसी दिन जाता रहा । इस कारण मैं इससे अधिक प्रीति रखता हूं । हमने मदारीसे पूछा तुम उस घासको जानते हो ? जानता हूं और आजकल आपके जंगलमें बहुत है । हम मदारीको साथ लेकर जंगलमें गये । उसने एक घास हमको बतलाई जिसकी गोलियांसे हमने बहुतों प्राणियोंका चौथैया दूर किया और करते रहते हैं ।

अब हम इस विषयको छोड़कर पदार्थोंके गुण किस २ रीतिसे जाने गये हैं कुछ ध्यान देते हैं । हम पूछते हैं कि मट्टीद्वारा रोगोंको दूर करनेका क्या प्रमाण है । हमने अपने लेखमें भलीभांति दिखलाया है कि विजलीकी शक्ति सब वस्तु और द्रव्योंपर अपना प्रभुत्व रखती है चाहे छोटे कण हो चाहे बड़ा गोला हो । यही कारण है कि सब प्रकारकी शक्ति और इच्छा वा गति मनमें रहती है और वहां हीसे निकलती है । मैंने पहले दिखाया है कि अच्छा अर्थात् रोग मुक्त करनेकी शक्ति मनुष्यके अंदर है और नसोंके अंदर विजली युक्त द्रव्यसे सम्बंध रखती है । और यह वायुसे सांस लेकर अन्दर जाती है । और रवाकार करनेवाली शक्ति है । यह दोनों शक्ति मनुष्यमें रहनेसे एक दूसरेसे मिल जाती है । सब कपालके विजली युक्त नसोंकी स्वीकार करनेवाली शक्तिके तत्व पेटमें आहारकी विजली वनस्पति अस्वीकारक शक्तिके तत्वके साथ मिल जाते हैं । जिसका फल भोजनका पचाव होता है जो केवल आहारका शरीरके अंशोंमें बदलाना है । शरीर जिसमें यह शक्ति बराबर काम करती रहती है अपने अंशोंको बदलती रहती है । पुराने उड़ते और निकलते रहते हैं और नये मरती होते रहते हैं परन्तु विजलीके अंश जो फेंफड़े वायुसे खींचते हैं कपालसे निकले हुए अपनी सुरत बदलते हैं, उतने दरजे तक नितनी वनस्पति आहारके कारण आवश्यक होती है । भोजनकी अस्वीकारक शक्तिपर असर करनेके लिये यह

अवश्य है कि वह उसके साथ वैसा ही संबंध रखे जैसा वायुके मध्यकी स्वीकार विजली धरतीके साथ रखती है जिससे वनस्पतिमें धरतीके अंश खिचकर आते हैं । यदि फेफड़ोंसे आकर्षित होकर वायुकी विजली व बदली हुई तो संभव नहीं कि आहारका पचाव हो जिससे भोजन शरीरके मांस और हड्डीके रूपमें बदल जाता है इसका स्पष्ट कारण यह है कि इस विजली अहार और जीत हुए शरीर बीचमें पूर्ण मिलनेकी योग्यता नहीं होती । जब वह विजली कपालसे निकलकर नसोंके अन्दर आकर रूप बदलती है तब मिलने योग्य होती है, वायु और पृथ्वीकी विजलीके साथ र घाम करनेसे धरतीके काए वनस्पतिमें चढ़ते हैं । अब इनका यथार्थ वर्णन करके हम दिखा सकेंगे कि मिट्टीमें रोगोंकी दूर करनेकी शक्ति है और पूर्ण रूपसे है । हम आशा करते हैं कि इस विषयपर पाठकगण ध्यान देंगे । जब शरीरके अंदरकी घूमनेवाली शक्तियां ऐसी सम हों कि वह अपने २ पथपर सुस्वर और मेलसे चलती हो और जब शरीर बाहरसे वायु, जल, वनस्पति, भूमिसे वही सम और सुन्दर संबन्ध रखता हो तो साधारण सृष्टिके नियमानुसार मनुष्य आरोग्य होगा परंतु जब इनमेंसे किसीकी समता कम होगी तो अवश्य रोग उत्पन्न होगा । अब कोन उपाय होसकता है जिसके द्वारा यह कठिनाइयां दूर हों । चित्त स्थिर और शांति बनी रहें । घूमने वाली शक्तियां भ्रम रहें और आरोग्यता और सुख लाभ हो । प्रथम हम इन परमावश्यक प्रश्नोंके उत्तरमें यह कहेंगे

कि सब जन जो विजलीकी विद्याके सिद्धांतोंसे जानकारी रखते हैं मानते हैं कि भूगोलकी वायुमें स्वीकार कारक और पृथ्वीमें अस्वीकार-कारक विजली विद्यमान हैं । इन दोनोंमें आकर्षण करने और हटानेकी शक्ति है । सब रोगी दोनों प्रकारके होते हैं—स्वीकारक और अस्वीकारक और वह ऐसी ही विजली द्वारा अच्छे होते हैं वा ऐसी वस्तुओंके काममें लानेसे जिनमें ऐसी विजली होती है । प्रथम हमें विजलीयुक्त अध्यात्म विद्या द्वारा अच्छा करनेका प्रयत्न करना चाहिये । इसमें साफल्यता प्राप्त होगी वा नहीं यह तुरंत रोगीके चित्तपर कुछ असर पैदा करनेकी परीक्षासे जान लिया जायगा । यदि सफलता होगई तो मनकी सब शक्तियोंमें तुरंत समता आजायेगी अर्थात् वह शान्ति और सन्तोषयुक्त होजायगा और मानसिक बल द्वारा नसोंकी और दूसरी घूमनेवाली शरीरकी शक्तियां उत्तेजित और सम होजायगी । जिसका फल आरोग्यता और सुख होता है परंतु यह चित्तपर असर उत्पन्न करानेसे रोग अच्छा न हो तो हमें औषधियोंके काममें लानेकी आवश्यकता होती है जिससे शरीर पर असर पैदा हो और शरीर द्वारा मनपर भी असर पैदा कराया जावे क्योंकि मन और शरीरमें ऐसा संबन्ध है कि एकका असर दूसरे पर पड़ता रहता है । (अपूर्ण)

सूर्यप्रकाश (नवीन शास्त्र) २)

निश्चयधर्मका मनन १।) भगवान पार्श्वनाथ २।।)

मेनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-धरत ।

सुधार, सुधारकों द्वारा ही होता है ।

(लेखक:-ड० प्रेमसागरजी, सिलौड़ी)

सुधार शब्द बड़े ही गम्भीर भावोंको लिए हुए है। जो उसके भावोंको अनुभवमें लाता है वही उसके शांति एवं मिष्ट रसका पान करता है। भावार्थ—जो सुधार करता है वही सुधारक है। सुधार वही है जो “किसीकी भी बिगड़ी परिस्थितिको सर्वाङ्ग परिवर्तन कर उसे वास्तविक अवस्थामें ला दे।” ऐसे सुधारको जो हाथमें लेता है वही सुधारक है और उसीके द्वारा सुधार होता है।

जो सुधारक है उसे किसी भी सुधारकी आवाज उठानी पड़ती है और उसके सफल होनेकी आशा रखनी पड़ती है। सफल होना व न होना यह उसकी सच्ची आवाजमें ही भरा रहता है जिसे कि उसने अपने सच्चे हृदयसे उठाई है।

सुधारककी सच्ची आवाज वही है। जो स्वार्थसे बहुत दूर हो तथा जिसमें मायाचार एवं असत्यने स्थान न पाया हो, जिसमें सत्यता एवं परोपकारताका निवास हो तथा जो शांतिपूर्वक अपने कर्तव्य पथपर डटे रहनेकी शिक्षा देती हो। जो अहिंसात्मिक वीरता एवं सहनशीलताका जामा पहिनाती हो, जिसको अपना-नेसे मनुष्य अपना तन, मन, और धन परोपकारमें अर्पण करनेको तैयार होजाता हो वही सुधारकी सच्ची आवाज है, जो एक सच्चे सुधारककी होसकती है।

आज हमारी समाजको ऐसे ही सुधारकोंकी आवश्यकता है; क्योंकि उनके द्वारा ही समाज पनप सकती है।

जिनको अपने स्वार्थमें घका पहुंचनेका डर है, जिनके अपमान पानेका भूत सदैव भय उपजाता रहता है और जिनको विघ्नबाधाओंकी शंका सदैव सताती रहती है वे स्वप्नमें भी सुधारक नहीं हो सके। सुधारकोंका हृदय बलवान् एवं पाक रहता है। उसमें तनिक भी डरपोकपन एवं अशक्तिको स्थान नहीं रहता। उसमें तो इतनी शक्ति और इतना निर्भयपन रहता है कि—भारीसे भारी विघ्नोंके बाण शांतिपूर्वक सहर्ष सहन करता है जो एक अशक्ति और डरपोक हृदयके लिए महाआपत्तिके भाजन है।

हमारी समाजमें ऐसे सुधारकोंकी कमी नहीं है किन्तु उनके सुकार्यमें, कतिपय पंडित लोग जिनको कि:-स्थितिपालक पद, समझदार समाजकी तरफसे मिल चुका है वे—विघ्न उपस्थित करते हैं जिससे कि:-सुधार नहीं होने पाता।

समाजके वर्तमान सुधारकोंमें अधिकांश सुधारक महानुभाव सचे सुधारक हैं। उनके हृदयमें सुधारकी सच्ची एवं निष्कपट ज्योति जागृति होचुकी है। वे चाहते हैं कि:-समाजका सुधार “शास्त्र और युक्तिअनुकूल” हो। किन्तु वह कहने मात्रके रूपमें न रहकर कार्यरूपमें परिणत

हो अर्थात् उसकी असली कार्यवाही की जावे ।

जैसा हमारे सच्चे सुधारक चाहते हैं वैसा हो भी सकता है । क्योंकि समाज, सन्तोषजनक नहीं तो इतने हिस्सेमें अवश्य जग चुकी है । जो कि स्थितिपालक दलकी हुल्लड़वाजीमय कटु नीतिका मर्दन करनेके लिए काफ़ी है ।

समाज समझ चुकी है कि—स्थितिपालक-दलकी कटु नीति मेरे लिए “लाभप्रद नहीं बल्कि भवनतिके अन्धे कूपमें पटकनेवाली है ।” इसलिए वह उसका स्वप्न अवस्थामें भी अवलंबन नहीं कर सकती ।

समझदार समाजने सच्चे सुधारकोंकी आवाज़ बड़े ध्यानसे सुनी और उसका मनन कर उसका उपयोग करनेकी तैयारी करनेमें जुट गये; क्योंकि वह समझ चुकी कि—सच्चे सुधारकोंकी आवाज़ दर असल सच्ची आवाज़ है । उसमें मायाचार और स्वार्थकी गंधका अंश नहीं है ।

स्थितिपालक दलने बहुत चाहा कि समाज हमारे ही कब्जेमें रहे और जैसा हम कहें उसे वह माने तथा जो रास्ता उसे हम बतावें वह उसपर चले । कहनेका तात्पर्य यह है कि—स्थितिपालकदल चाहता था कि—समाजको जैसा हम नचावें वैसा वह जावे लेकिन समाज उनकी दमननीतिसे उब गयी और सुधारकोंकी सच्ची आवाज़के उपयोग करनेमें दत्तचित्त होगयी ।

सच्चे सुधारकोंने अनुभव किया कि समाजका रोग साधारण रोग नहीं है बल्कि असाध्य है । जिसके द्वारा वह मरणासन्न अवस्थाको पहुँच चुकी है । जिसके फलस्वरूप मृत्यु, २१ लाल

उसकी गोदसे प्रतिदिन छीनती जा रही है । इस हिसानसे यह बहुत थोड़े समयमें ही अपना अस्तित्व संसारसे उठा लेगी । इसलिए उसकी योग्य चिकित्सा करना आवश्यक है ।

उक्त अनुभवका उपयोग सुधारकोंने किया और उसकी निम्नप्रकार चिकित्सा करना शुरू कर दी ।

समाज बाल विवाह आदि कुरीतियोंके रोगसे दुखी है जिससे कि—सन्तानोत्पत्तिका अभाव, असमयमें— युवक, युवतियोंका मृत्युशय्या पर सो जाना, निर्धन युवकोंका (जो शरीरसे दृष्ट-पुष्ट हैं, शक्तिवान हैं, सुन्दर हैं, बुद्धिवान हैं । और व्यापारकुशल हैं तथा जिनके द्वारा योग्य धर्मात्मा, कर्मवीर, सन्तान पैदा होसकी है) अविवाहित रह जाना और बाल विधवाओंका उत्पन्न होना इत्यादि हानियां होरहीं हैं जिनको आज तक किसी भी समाज—सेबकने समाजसे बाहर नहीं किया। हर्ष है कि हरविलास शारदाने बालविवाह निषेधक कानून तो बनवा दिया हैं । लोग कहते हैं कि—कुरीतियोंने समाजके अन्दर ऐसा अधिपत्य जमा लिया है कि—जिससे उसका हटाना मुश्किल हो रहा है; किन्तु मैं इसको नहीं मानता । मेरे अनुभवमें समाजसे कुरीतियोंके हटानेका योग्य प्रयत्न नहीं किया गया । यदि किया गया होता तो समाजको ये दुर्दिन नहीं देखने पड़ते और न हमारे सामने उसके जीवन मरणका प्रश्न उपस्थित होता ।

सुधारकी दम भरनेवाले स्थितिपालक कोम

भले ही बहुत दिनोंसे कुरीतियोंके हटानेका प्रयत्न करते चले आये हों; परन्तु उसमें उनको तनिक भी सफलता प्राप्त नहीं हुई। अर्थात् कुरीतियोंने समाजका पीछा नहीं छोड़ा। वे उन स्थितिपालकोंके थोथे प्रयत्नको टुकराती अपनी अपनी तरकी करती चली गई। इससे ज्ञात होता है कि—उनके प्रयत्नमें कुछ कमी थी अथवा यों कहिये कि वह नाममात्रका दिखावटी प्रयत्न था।

जब सुधारकोंके हृदयमें यह बात सहसा उत्पन्न हुई कि—“लोग सुधार सुधारका हल्ला (सभाओंमें व्याख्यानोका देना और प्रस्ताव पास करना) तो मचाते हैं परन्तु सुधारके चिह्न दिखाई नहीं देते।” इस बातका पूर्णांश ज्ञात कर सुधारकोंने सच्चे हृदयसे निर्भीकताको सामने रख, समाजसुधारका कार्य अपने हाथमें लिया। जिसमें वे कुछ अंशोंमें सफल भी हुए। उनकी सफलताके चिह्न देखकर हमको विश्वास होता है कि—वे भविष्यमें अवश्य ही सफलीभूत होंगे।

उन्होंने जो जो सुधार हाथमें लिए हैं वे हैं तो कठिन लेकिन उन वीर सुधारकोंके लिए जिनका की हृदय शुद्ध है, कुछ कठिन नहीं है।

उनका सबसे बड़ा सुधार, समाज सुधार है जो कुरीतियोंकी नेस्त नाबूद करने पर ही सफल हो सकता है। उसके लिए उन्होंने बहुतसे प्रयत्न जारी कर रखे हैं। उनमें सबसे बड़ा प्रयत्न “अन्तर्जातीय” विवाहका है। जिसका कि आन्दोलन बहुत दिनोंसे जारी है और जो सफलीभूत हो चला है। श्रीमान् पंडित दरबा-

रीलालजी इसके पुनर्जन्मदाता हैं। पंडितजीके कहनेसे यह भली भांति ज्ञात हो चुका है कि—“अन्तर्जातीय विवाह मरणासन्न समाजके लिए रामबाणकी तरह है। उसके प्रचलित होनेसे समाजमें संगठनका जन्म होगा, प्रेमबलकी बुद्धि होगी, विवाहिक समस्या हल होगी अर्थात् सब प्रकारके अनमेल विवाहोंका अन्त होगा। पुत्र पुत्रियोंकी प्रौढ अवस्थामें शादियां होंगी तथा गरीब घरानोंके युवक भी विवाहे जासकेंगे। सबसे बड़ा सुधार यह होगा कि—समाजकी छोटी छोटी जातियां जो वैवाहिक प्रथाके मजबूत बंधनमें बंधी आह! सांसे भर रही हैं, उन्हें छुटकारा मिलेगा अर्थात् वे जो मानिन्द मोतियांकी तरह बिखरी पड़ी हुई हैं, वे एकता सूत्रमें बड़ी ही सरलताके साथ पिरोई जासकेंगी एवं उन्हें भविष्यके लिये फलने फलनेका श्रेष्ठ साधन प्राप्त होगा।

समाजके समजदार लोगोंने विरोधियोंके हजार बहकाने पर भी उक्त प्रयत्न (अन्तर्जातीय विवाह) को स्वीकार कर उसे सफल बनाया है क्योंकि उसपर उनका विश्वास जम गया है तथा अधिकांश समाजके लोगोंको जमता जा रहा है। जमे क्यों नहीं क्योंकि वह शास्त्र सम्मतिसे तथा युक्तियोंसे सिद्ध हो चुका है। इसके विषयमें काफी खंडन मंडन व समर्थन हो चुका है।

वास्तवमें पंडितोंने शास्त्रसम्मत अन्तर्जातीय विवाहका विरोधकर भारी मुंहकी खाई।

सुधारककी सीमा नहीं है। सुधारक लोग जो उसे जितने अंशोंमें हाथमें ले रहे हैं उतनेमें

ही वे समाजका सुधार भलीभांति कर सकते हैं सिर्फ होना चाहिए निस्वार्थ, साहस एवं वीरतामय सेवा। हमें विश्वास रखना चाहिए कि सुधार सुधारकोंके द्वारा ही होता है। हमारी समाजके जो वर्तमान सुधारक हैं वे समाज सुधारके ठीक मार्गपर गमन कर रहे हैं अतएव उनके द्वारा समाज सुधार होना सम्भव है।

आपने जो जो सुधार समाजके सामने पेश किये हैं उनको अमरुमें कानेका प्रयत्न बड़े जोरोंके साथ होना चाहिये। एवं वह सुधार क्रान्तिरूप हो। उसी निवेदनके साथ मैं भी सुधारकी कुछ बातें आपके सामने पेश करता हूँ मुझे विश्वास है कि आप उसपर कृपया ध्यान देंगे।

सबसे प्रथम बात यह है कि एक सुधारस्कीम तैयार की जावे जिसका सम्पूर्ण अधिकार भारत० दिगम्बर जैन परिषदको रहे। परिषद आने आगामी वार्षिक अधिवेशनमें उसे प्रस्ताव रूपमें रखकर पास करावे तथा योग्य प्रचारकों द्वारा प्रत्येक स्थानोंमें उसका प्रचार करके उसे अमरुमें कानेकी घोषणा करावे।

उस स्कीमके भीतर निम्न बातोंको स्थान दिया जावे अर्थात्—

१—इन्दौर सरीखी मेक कमेटी एक वक्त पुनः किसी योग्य स्थानमें बैठे लीजाय और उसमें उन दूरदर्शी योग्य महानुभावोंको चुनकर रखवा जावे जो हृदयके निष्पक्ष एवं मध्यस्थ हों।

२—सुधार स्कीमका उपयोग प्रत्येक शहर, कस्बा एवं गाँवकी पंचायतियां करें और वे

वैवाहिक कुरीतियोंको हटानेके लिए अपने अपने वहाँ दंड विधान कायम करें।

३—समाजके निर्धन युवक अविवाहित रह जाते हैं उनका योग्य प्रबन्ध परिषदके द्वारा प्रत्येक पंचायतियोंसे प्रेरणा रूपा कराया जावे।

४—समाजके भीतर निर्धनताने बहुत समयसे अपना घा कर लिया है इसलिये उसके कारण फिजूरस्वर्चियोंको बहुत प्रबन्दी हटाया जावे और एक “निर्धन सहायक फंड” की स्थापना कराई जावे। जिसका उद्देश—“फंडके व्याप्तसे व्याज रहित रुपया पूंजीके बास्ते निर्धन वर्गको दिया जावे और वह रुपया उनसे किरत रूपसे बसूल किया जावे” ऐसा करनेसे निर्धनोंके पास आगामी पूंजी होजावेगी और फंडका रुपया भी सहजमें जुट जावेगा।

५—बालविधवाओंके लिये प्रत्येक मान्दमें विधवाश्रम स्थापित किये जावें जिसमें उनको धार्मिक व लौकिक शिक्षा दी जावे। अमीर व गरीब सभी बालविधवाएं इसमें रखनेका पंचायती प्रबन्ध होना चाहिये।

६—समाजके भीतर उच्च कोटि की शिक्षाके लिये “जैन कोलेज” की स्थापना महात्तक हो प्रबन्दी की जावे।

→ॐ प्रबोधसार। ॐ←

महापंडित यश वीरि विरचित मूल श्लोक व पं० लाला-
गमजी शास्त्रीकृत हिन्दी अर्थ व भाषाणं चरित। मू० १।)
मैनेजर, वि० जैन पुस्तकालय—सुरत।

* * * * *

“ મહાવીર જયંતીની ઉજવણી. ”

* * * * *

(લેખક—ત્રીલોચનદાસ રાયચંદ શાહ, ભાવનગર)

જે જે મહાન પુરુષો થઈ ગયા છે, તેઓ અમર છે, હવ્વુ જીવતાજ છે. અને તેમની જયંતીઓ આપણને હવ્વુ તેમની જીવંત પ્રેરણા રૂપ છે. તેમની જયંતીઓ આપણે શા માટે ઉજવવી જોઈએ ? તેમના અનંતગુણો તઃપ્રના પ્રેમબળની પ્રેરણાથી, તેમણે સ્વપર દિત માટે પોતાનું જીવન અપાવ્યું હતું તેથી અથવા આપણે તેમના ગુણો ઉપર પ્રેમ સતત વહેવડાવવા પ્રેરાઈએ અને તે પ્રેમથી આપણે ગુણવાન બનતા જઈએ. તેથી મહાન નીતિ શાસ્ત્રીનું કથન છે કે “તમાગ ચારિત્રમાં” સદ્ગુણો વધારવા હોય અને દુર્ગુણો કાઢવા હોય તો તેના વિરુદ્ધ ગુણોનું ચિંતવન કરો, અભિમાન કે ભોભને દૂર કરવા માટે નમ્રતા તથા ત્યાગના ગુણના રૂપરૂપ તમારા હૃદય ઉપર કંપનાની પીંછી વડે ચીતરો અને તેના ચિંતવનમાં લીન થાઓ. જેમ તમારો પ્રેમ તે ગુણ તરફ વધશે તેમ તમે ગુણવાન બનશો; વિચારથીજ ચારિત્ર ધરાય છે.

તેમણે સ્વપર દિત સાધ્યું તેમ આપણે પ્રેમથી તેમના સ્વપર દિતના માર્ગ ઉપર ચાલવા તેમને યાદ કરી પ્રેરાઈએ અને ચાલતા હોઈએ તો બુદ્ધચુક તપાસતા વધારે ઉત્સાહથી ચાલતાં પ્રેરાઈએ અને તેમણે જગતનું કલ્યાણ કર્યું છે માટે તેમને યાદ કરી તેમની જયંતી ઉજવી તેમના અમર પણાથી આપણે યોધ લઈએ. જયંતીઓ માત્ર સમાજો ભરી સારા સારા આપણો કે વ્યવેશી માત્ર પ્રેરણા કરી અથવા સાંભળી તેમાંના સદ્ગુણને આપણે ચારિત્રમાં ન ઉતારીએ, તેમાંની પ્રેરણાને આપણે અમલમાં ન લાવીએ તો જયંતી ઉજવવાનું કાંઈ પ્રયોજન ન રહે.

“વીર”ના અમરપણાની યાદી શુષ્ક વિધિઓ

કરી આપણે રાખી શકીએ નહિ; પણ તેમના જીવન ઉપરથી ધરો લઈ તેમના અમરપણાના માર્ગ ઉપર આપણે ગદી એમ બતાવી આપીએ કે તે “વીર” ના અમરપણાના પ્રતાપે આપણે એ માર્ગ ઉપર ચલ્યા હોએ અરે તેથી તે “વીર” અમર છે. આપણે પ્રદરથીઓએ તે માર્ગનું આચરણ યથા-શક્તિ તો કરવું જોઈએ. અત્યારની આપણી સ્થિતિ જોતાં આપણે એટલું તો અવરય કરી શકીએ કે સ્થાવર તેમજ બની શકે તેટલા ત્રસ જીવોની સંકલ્પી હિંસાથી બચીએ, નકામા ગમ્મતની ખાતર કે ટેવની ખાતર કરાતા પ્રપંચો, હાલકપટો, માયાચારો, દ્રોષ અને નિંદાઓ, કપાય આદિ ભાવો જે ધારીએ તો દૂર કરી શકીએ. આપણું જીવન શુભ વિચારોથી ઉજવળ કરી શકીએ. કેમકે શુભ વિચારોથી આપણું જીવન શુભ ધડાઈ શકે, શુભ અસર આપણા જીવન ઉપર જરૂર પડી શકે અને એવા શુભ વિચારો નિરંતર રચા કરે તો તેનું બળ એવું જામે કે અમુક વખતે આપણા આચરણમાં તે શુભ વિચારો મુકાયા ચિના રહે નહિ.

એક તરંગાનીનું સુત છે કે “વિચારમાં અહભુત શક્તિ ઉત્પન્ન કરવાનું સામર્થ્ય રહેલું છે. આત્મા સત્તાપણે પરમાત્મા છે, અને તેમાંથી આશક્તિ બહાર આવે છે,” પણ આપણા સમા-જની અધોદશા છે. અજ્ઞાનનું પડ એટલું જામ્યું છે કે તેવા શુભ વિચારોના ચિંતવનને બદલે દ્રોષ, કલેશ, કુસંપ, અને તેથી જામતાં યાત્રિના ફાંટાઓ દીન પ્રતિદીન નજરે પડતા જાય છે. એ અજ્ઞાન દૂર કરવા નેતાઓએ, શ્રીમંતોએ અથામ પ્રયત્નો સાથે મર્યા રહેવાની જરૂર છે. શ્રીમંતો અને નેતાઓ મોટા; અને મોટાની

મોટી ફરજે અને જવાબદારીઓ હોય છે. પોતાની શક્તિ છુપાવી તેઓ પોતાની ફરજે બદા ન કરે તો “વીર” પ્રભુના શાસનના તેઓ યુ-હેગાર છે.

મોટાઓએ ન્હાનાઓને શક્તિ છુપાવ્યા વગર તારવા, તે માટે તે વીર પ્રભુએ જન્મતા કલ્યાણ અર્થે રાજપાટ, માયા છોડી આદર્શ દાખલો બેસાડ્યો છે. જીવન સાશ્વત્યતાનો એ માર્ગ છે. જાણે કે અજાણે પોતાની ફરજે તરફ અથવા પોતાના ધર્મ અંધુઓ તરફની, સમાજ કે દેશ તરફની ફરજે તરફ તેઓએનું દુર્લક્ષ્ય રહે તો તે એક જાતનો દ્રોહજ છે. સમાજની જીવન-રૂપી લતા સુષ્ક થયા પછી અથવા મૃત્યુ પામ્યા પછી જલ સીંચ્ય નાટો લતાનીજ ચૈતન્યમયી હયાતી નથી તેથી શું કરીએ એપણુ માત્ર બહાનું છે. “સુકાણા મોલ સૃષ્ટિના, પછી વૃષ્ટિ થયાથી શું?” તેના કારણભૂત તેઓજ છે અને તેથી દેવ તેઓનો છે. સમાજ તેઓ તરફ પોતાની વજર માંડી તેમની સહાયની ગેરહાજરી જોતો ટળવ-ળતો હોય તેમાં તેવા દ્રોહથી સમાજ નિંદા, તિરસ્કાર, અપ્રેમ, મનનું જુદાપણું રાખવામાં યેવાતો જાય તે તો સ્વાભાવિક છે અને નેતાઓને કે શ્રીમાનોને તે મુંઝા મોઢે એક કોષ્ટાચારની માફક જોવું, રહેવું કે સાબળી રહેવું જોઈએ અને તેમ યતાં સમાજ ઉપર અપ્રેમ કે તિરસ્કાર ન રાખતાં ઉલટા પોતાની જુથો સુધારવાના ઉપાયો લેવા જોઈએ. માટે શ્રીમાનો અને નેતાઓ જો આવી જુથોને પાત્ર હોય તેમણે સાવધાન રહેવાની જરૂર છે.

એક કુટુંબ હોય તેમાંના બે બાઇઓ એક નાનો નિર્બલ અને બીજો મોટો સખળ હોય; તેમાં સખળની સહાયની જરૂર પડ્યે નિર્બળ આજ્ઞા રાખે અને તે જ્યારે ન મળે ત્યારે નાનો બાઇ તેની વિરૂદ્ધ રહે અને રીસાય એ પણુ સ્વાભા-વિક છે કેમકે તેમાં મોટા બાઇએ વધારે સમજી રહેવું જોઈએ અને તેથી પોતે પહેલ કરી નાના બાઇને પોતાની સાથેની સમાધાનીમાં ઉતારવો

જોઈએ. તેવી રીતે સમાજ એક કુટુંબ; તેમાં શ્રીમંતો ને નેતાઓ મોટા બાઇઓ છે અને સર્વ સાધારણ જન સમુદ તે નાના બાઇઓ. નેતા-ઓની અને શ્રીમંતોની બેપરવાઇ સમાજના અચાનને દૂર કરવાને બદલે અચાનને મજબુત કારણભૂત થાય છે.

આપણા સમાજના મધ્યમ વર્ગની આર્થિક સ્થિતિ પણ ક્ષણજ કંદેડી છે અને આ હકી-કત યુજરાતને પણ લાગુ પડે છે. તેમાં મધ્યમ વર્ગના વ્યક્તિઓ ક્ષણજ છે, કે જે નહિં શ્રીમંત કે નહિં બીખારી. શ્રીમંત નહિં એટલે પણ આર્થિક વિટંબના અને બીખારી નહિં હોવાથી બિક્ષા માટેની વીટંબના-એ પણ આર્થિક વિટં-બના; તેમાં યોગ્યરૂપ અને નિરૂપયોગી કેટલાક વ્યવહારિક રીતિઓ તેમની મુંઝવણમાં વધારો કરનારા હોય. આ સ્થિતિ ઉપર શ્રીમંતોનું અને નેતાઓનું પણ ખાસ લક્ષ્ય રહેવાની જરૂર છે. નહિં તો હાલમાં અર્થ સમાજના ધર્મના મીશ્ન-નમાં કે ઇસાઇના મીશનમાં કે મુસલમાનોનાં મીશનમાં તે મધ્યમવર્ગનું પરિવર્તન થઇ વિધર્મી-પણું-હણું આગળ વધવું જાય તેમ છે. કેમકે એક મહાન વિચારક સ્વેં જૈનાચાર્ય ન્યાયવિજયજી લખે છે કે હિંદુસ્તાનમાંથી એ ત્રણે મીશનો હાલમાં ગેરશોરથી કામ કરી રહેલ છે. તેમના મીશનમાં કેટલાએક જૈનો બળ્યા છે અને બળતા જાય છે. અત્યારે મજહબી કટોકટીના દારણુ સમયમાં હિંદુ નરનારીઓની રક્ષા અને સેવા તેઓ અહમુત જોશથી કરી રહ્યા છે, તેમની સગવડમરેલી સંસ્થા-ઓમાં દુઃખોયા જૈન નરનારીઓને સ્વતઃ પ્રવેશ કરવાનું મન થઇ આવે છે અને તે વીરોતા હક્ય-ગ્રહી પ્રયત્નો પણ બીજાઓને તેમની સંસ્થામાં ખેંચીને લાવે છે. એકલા યુજરાત, કાઠીયાવાડ ઉપર નહિં પણ જ્યાં જ્યાં જૈનોની વસ્તી છે તે બધા પ્રદેશો ઉપર વિચાર દૃષ્ટિ ફેંકવાની જરૂર છે; ત્યારેજ માલુમ પડી શકશે કે જૈનોમાં જુખમરો અને ખરીબાઇનો ત્રાસ કેટલો પ્રવર્તી રહ્યો છે ને

પેટને માટે ધર્મપરાંગમુખ થવાનું કેટલા પ્રમાણમાં બને છે.

કથું છે કે:-“બુધ્ધિતઃ કિં ન કરોતિ પાપમ” ખરી વાત તો એ છે કે પેટમાં રોટલો પડ્યો તો “નમો અરિહંતાય” સુત્રે. ઓશવાળો જે બધા જૈનીઓ હતા તેમાંથી કેટલાક ખીબા ધર્મમાં ગયા, એથી વધારે ઘટાડો પોરવાડોમાંથી થયો છે. ઓશવાલો વૈષ્ણવ થઈ ગયેલા મોબુદ છે, અને ખીબા સમાજમાં કેટલક બગડતા ગય છે. મોઢ જાતિ જૈન હતી તે પણ ધર્મોત્તરમાં પરિવર્તિત થઈ ગઈ છે. પુના, સતારા, અહમદનગરના જીલ્લાઓમાં “કંસારા” જાતિ એક વખતે જૈન હતી, જે આજે શૈવ ધર્મને માને છે. એમના પૂર્વજો અંધાવેડાં જૈન મંદિરો પણ મોબુદ છે. ગુજરાતની કપોળ, મોઢ જાતિઓમાં પહેલાં જૈનધર્મનો પ્રચાર હતો તે તેમના પૂર્વજો આવકોના અનેક મળેલા શિક્ષાલેખોથી જણાય છે.”

આ ઉપરાંત, બાલ વિધવાઓની સંખ્યા, અનેબેલ વિવાહનો પ્રકોપ તે મધ્યમ વર્ગની કંઈકી સ્થિતિને પુષ્ટી આપી રહ્યાં છે-કાંત્રિસોમાં હજારો ઠારવો પસાર થયા છતાં. આ બધું જોતાં એ મધ્યમ વર્ગ ક્યાં ઉભો છે એ વિચાર હૃદયમાં બહુ ખેદ ઉપજવે છે. જૈનોની દયા લીલાતરી-સુકવણીમાં આવીને સમાણી છે, એવા આજેપો ખેદની સાથે સાંભળવા પડે છે, પણ એટલું તો કહેવું પડશે કે જાતિ અંધુઓને સહાયતા કરવાની ઉદાર ભાવના જૈનોમાં ઓછી દેખાય છે. સાધર્મિક વાતસલ્યની ઉદાર ભાવના ઓછી દેખાય છે, જ્યારે પારસીઓમાં, મુસલમાનોમાં, ઇસાઈઓમાં અને ખ્રીસ્તીઓમાં વધારે પ્રમાણમાં દેખાય છે. તે કોમવાળા પોતાના ધંધા ઉપર પોતાનો ધર્મબંધુ મળે ત્યાં સુધી ખીબાની નિમણૂક નહિ કરવાના, એટલું જ નહિ પણ પોતાના ભાઈઓને ચાલતાં સુધી પોતાનીજ કોમમાં કોઈ જગ્યા ઉપર ચડાવી દેવાની કોશિસ કરવાના.

આચારે જૈનોનું સાધર્મિક વાતસલ્ય આજા બાગે

એકાદ દિવસ નહાનાં-મહોટાં જમણુ કરી દેવામાં સમાય છે પણ પોતાના ધર્મબંધુઓની કંઈકી સ્થિતિ સુધારવારૂપ જે ખરું સાધર્મિક-વાતસલ્ય છે તે તરફ જૈનો બધે અંશે બેદરકાર છે.” સાધર્મિક વાતસલ્ય તો શ્રીમદ્ હેમચંદ્રાચાર્યના કથન મુજબ આપતિમાં દસાયલાઓનો પોતાની લક્ષ્મી ખરચીને પણ ઉદ્ધાર કરવો, અન્તરાય દોષથી પેસે ચાલ્યો જતાં કંગાળ હાલતમાં આવેલાઓને ફરી પહેલાના સારી હાલત પર પહોંચાડવા અને ધર્મમાં ઠીલા પડતાઓને તે તે ઉપાયે ધર્મમાં સ્થિર કરવા. આજ પ્રમાણે આવિકા વર્ગની પ્રતિપત્તિ અને તેમના ઉદ્ધાર માટે પણ સમજ લેવું.” એક વિદ્વાન સાધુના શબ્દોમાં-“દીન દુઃખીમાં ગરીબ બંધુઓને સારી હાલત પર લાવવા જોઈએ કેમકે સાધર્મિક સારી હાલતમાં હોય તો જ ધર્મનાં ધાંખલા ટકી શકે.

સમાજની પડતીમાં ધર્મની પડતી થાયજ “ન ધર્મો ધાર્મિકૈઃ વિના.” ધર્મક્ષેત્રોના ચળકાટ સમાજના ચળકાટ ઉપર અવલંબિત છે. આવક આવિકાઓ રૂપ-પુષ્ટ અને સુખસંપન્ન હોય તો ધર્મક્ષેત્રોની પણ ઉન્નતિ થઈ શકે-જો તેઓજ ક્ષય રોગથી રીમાતા લાગે તો મંદિરો વિગેરેની સંભાળ કોણુ કરશે? “કુરામાં હોય તો હવાડામાં આવે” સમાજના યુવકોની પણ તેવીજ સંભાળ લેવી થવે છે.”

યુવકો એટલે અવિધ્યની પ્રજા, એટલે સમાજના અવિધ્યની સુધારણા માટે કાળજી અને ખાંત રાખવાની ખાસ જરૂર છે. સમાજના યુવકો માટે જરૂરીઆત મુજબ યોડીંગો, પાઠશાળાઓ, વાંચનાલયો, ઉપદેશકોના ઉપદેશો માટે પ્રયત્ન, ઉદ્યાન-શાળાઓ, અને તંદુરસ્તી માટે ઔષધાલયો અને વ્યાયામશાળાઓ અને “દિગંધર જૈનમાં” સં. ૧૯૮૫ના હાગણુ માસના અંકમાં પ્રકટ થયેલ શ્રીયુત ભાઈ જીવરાજ ગાંધી બી. એ. સોનાસણુવાળાની ગુજરાતમાં ગુરૂકુળની ચોજના મુજબના ગુરૂકુળો સ્થાપવાની ખાસ જરૂર છે. અને તે

યુવકો સારી રીતે તથા થયા પછી તેને યોગ્ય ધર્મમાં કે લાઘનમાં શ્રીમંતોના અને નેતાઓના પરિશ્રમથી ગમે તેવા યુવકને તેની યોગ્યતા પ્રમાણે વગની, ધનની, મનની અને તનની સહાયથી જોડાવાની ખાસ જરૂર છે. કેમકે હાલના વમના જમાનામાં કોઈ અપવાદ રૂપ યુવકનેજ તેરી સહાયની જરૂર ન રહે, તે સહાય માટે ખાસ તપાસ લેવાની શ્રીમંતો, નેતાઓની ખાસ દરજ છે.

યુવકોની સુધારણા માટેનો પ્રશ્ન તો ઘણે સ્થળે ચર્ચાનો વન છે. એટલે તે વિશે વિશેષ ચર્ચા કરવાની જરૂર રહેતી નથી. સમાજના મધ્યમ વર્ગની ઉન્નતિનો વિષય વિચારવા યોગ્ય છે. સમાજના મધ્યમ વર્ગ કે ગરીબોની ઉન્નતિ કીર્તિદાનોથી થઈ શકે તેમ નથી પણ સુપ્તદાનોથી થઈ શકે તેમ છે અને હાલના કીર્તિવાદી જમાનાના શ્રીમંત વર્ગમાં તેને સ્થાન નથી. મધ્યવર્ગ કંઈએક બિહુકની મારક કીર્તિવાનોની યાચના કરવા કોઈ રીતે જઈ શકે તેમ નથી કેમકે તેમને એક માત્ર જીવન નિર્વાહના સુયોગ્ય સાધનો સિવાય ખીજું કંઈ યાચવાનું રહેતું ન હોય અને તેરી જાતની યાચના માટે બિહુક થવામાં કુલ, જાતની આપર, અરસપરસના વ્યવહારીક સંબંધો આડે સ્વાભાવિક રીતેજ આવે માટે શ્રીમંતોએ સુપ્તદાન અને સુપ્ત સહાયોની યોજનાઓ હાથ ધરવાની જરૂર છે.

શ્રીમંતોએ એ ભુક્ષુનું ન જોઈએ કે કીર્તિદાનો કરતાં વધારે ગુણુકારક તેમના આત્મ વિકાશ માટે તેમના ઉન્નત જીવન માટે સુપ્તદાન છે. કીર્તિની હાલસા કીર્તિદાનોથી ઉપજવાનો બચ રહે છે અને હાલસા વિચારોની યોગ્યતા કે સ્વતંત્રતામાં ધણો ફેર કરી નાખે છે. અને જ્યારે વિચારોની યોગ્યતા કે સ્વતંત્રતા ન રહે ત્યાં આત્મ વિકાસ કે જીવનની ઉન્નતિ અટકી પડે એ સ્વાભાવિક છે. " કીર્તિ તો સદાયરણુનો પડ-હાથોજ છે, ખરી કીર્તિ તો સદાયરણુથી પોતાની

મેળ એટલે તેને શોધ્યા વિનાજ મળે છે. અને સેવાનો બદલો આપવા યોગ્ય સમયે હાજર થઈ જાય છે. કીર્તિ કીર્તિદાનોથી મેળવવાની ધુન્ડા રાખવી એ તો તેને શોધ્યા બરાબર છે અને તે તો સ્વતંત્રતા છે.

આવી સમાજની સ્થિતિના ઉદ્ધાર માટે હજારો કદર ધર્મધુરંધરો, શ્રીમાનોની ખાસ જરૂર છે અને તેવા મહાશયોને સ્વાર્થ-પરાયણુતાને જરા વિસરી, કુરસદ કાઢી તે માટે યોગ્ય તપાસ કરવાની અને યોગ્ય ઉપાયો યોજવાની ખાસ જરૂર છે. અને તે તેમની પવિત્ર દરજ છે. જો તેઓ એ કાર્ય નહિ કરે તો ખીજું કોણુ કરી શકશે ? અને નહિ કરે તો તેમનામાં કે મધ્યમ વર્ગમાં શો ફેર રહેશે ? સાધન સંપત્ત જીવન નિર્ધારક અને સ્વાર્થ પોતાના માટે ગુમાવી દેશે તો પછી ખીજીવાર એવા જીવનની પ્રાપ્તિનો શું બરોસો ! પોતાની મોટાઇનું ધડીમર બાન બૂલી મધ્યમ વર્ગના ટોળામાં હળીમળી તેમના દુઃખોની તપાસ કરી, તેમના પ્રેમ અને વિશ્વાસ મેળવી યથાયોગ્ય ઉપાયો યોજવાની ખાસ જરૂર છે. મધ્યમ વર્ગ એ તો સમાજ શરીરનું એક અંગ છે, અને એક અંગમાં સડો હોય અને તે દૂર ન થાય તો તે આખા શરીરમાં પ્રસરતો જાય છે. પ્રેમ પ્રેમને પોષે છે. પ્રેમ અને વિશ્વાસ એક ખીજને આકર્ષણુ કર્યા વિના રહેતા નથી. પ્રેમથી ગમે તે કાર્ય સાધી શકાય છે; અને આ કાર્ય પણ જો સાચો પ્રેમ હોય તો સાધી શકાય છે; સાચો પ્રેમ હજારો મુશ્કેલીઓને પાર પાડે છે. એક સાચો પ્રેમ સૌને વશ કરી શકે છે અને સૌ કાર્યો સાધી શકે છે. સાચો પ્રેમ દંડતાથી હૃદયમાં રાખી પ્રપાસો થવા જોઈએ પછી ઉદ્ધાર કે કંઈ પણ અશક્ય જેવું રહેતુંજ નથી. સમાજના મહિલા વર્ગ તરફ દૃષ્ટિ દોરવાની જરૂર છે તે વર્ગ વ્યવહારીક કે ધાર્મિક કેળવણીમાં પછાત છે તેમને તેની કેળવણી યથા યોગ્ય અપાતી નથી અને તેથી તેઓ પોતાના બગડોનો ઉદ્ધાર યોગ્ય

રીતે કરી શકતો નથી કે જે કાર્યમાં તેમનો ઝાઝો દિરસો છે તે વર્ગ ઔદ્યોગિક શિક્ષણ પણ પામી શકતો નથી અને તેના અભાવે વૈષ્ણવમાં કે પોતાના પતિની નબળી આર્થિક સ્થિતિમાં કુબર કરી મુસ્કેલીઓનો અને પરાધીનતાનો, વિધર્મીપણાનો કે દુરાચારપણાનો ભોગ બનવામાં યોગ્ય રીતે બચી શકતો નથી, અર્થાત્ એક પશુ સમાન યુદ્ધાભગીનીમાંથી બચી શકતો નથી. મહીલા વર્ગ પણ સમાજનું અધુનું અંગ છે અને તેમાં તેની આવી સ્થિતિ હોય ત્યારે સમાજની કેવી દશા હોય? સમાજના આ ઉપયોગી અંગની આવી દશા હોય તો પછી તેના સંતાનો પણ કેવા થાય? બાળકો એટલે બલિષ્ઠપાત્રી પ્રજા અને તે ન્યારે નબળી ત્યારે સમાજનું બલિષ્ઠ્ય પણ નબળું; માટે—

સમાજના મધ્યમ વર્ગના અંગની માફક આ અંગની આવી સ્થિતિ નાખૂદ કરવા ઉદ્યોગ-શાળાઓ, શ્રાવિકાશ્રમો, મહિલા-વિદ્યાલયો અને કન્યાશાળાઓની ન્યાં ન્યાં જરૂર હોય ત્યાં ત્યાં સ્થાપવાની શ્રીમંતોની નેતાઓની પવિત્ર દરજ છે.

ઉપર મુજબની માનવ જાતિની દરજે જેટલા પ્રમાણમાં બળવાય તેટલા પ્રમાણમાં “મહાવીર”-જઘંતીની સાર્થકતા છે. ટુંકમાં, છેવટ આવી જયંતીઓ ગામે ગામ ઉજવાય, આડંબર અને છેતરપીંડી છોડાય, કર્તવ્યપણાને સંભળાય અને એવી રીતે “વીર” પ્રભુના શાસનને ઉજવાયાય એવો આ લેખનો સારાંશ કે આશય છે તે આશય પાર પડે તે માટે આ લેખકની પ્રભુ પાસે પ્રાર્થના છે ઝં શાન્તિ! શાન્તિ!! શાન્તિ!!!



સૂર્યપ્રકાશ (નવીન શાસ્ત્ર) ૨)

નિશ્ચયધર્મકા મનન ૧.) મગવાન પાર્શ્વનાથ ૨।)

મેનેજર, દિ. જૈન પુસ્તકાલય-સુરત ।

રાયદેશ દશાહુમડ દિ. જૈન હિતવર્ધક સભા.

આપણા સમાજમાં અજ્ઞાનતાને લીધે કુરિવાજો વધી જમ દિવસે દિવસે આપણી પડતી થતી જાય છે. તેવા રિવાજોને અટકાવવા અને ચાલતા સમયને માફક આવે તેવા રિવાજો કરવા સાર, અને કેળવણીનો પ્રચાર થાય તે માટે ઉપરના નામથી એક સભા સંવત ૧૯૮૪ના ચૈત્ર સુદ ૧૫ ના રોજ શ્રી. તારંગાજી મુકામે સ્થાપવામાં આવી છે.

શ્રી તારંગાજી મુકામે દ્રુત દશ મેમ્બરો થયા હતા. અને એવું બંધારણ કયું હતું કે આપણે જે કંઈ કરીએ તેનો આપણે બધાએ પાળવું જોઈએ. આ મુજબ કંઈક કામ થવાથી બીજા એક વડાની મુકામે રાખવામાં આવી હતી. ત્યાં પણ કેટલાક દરાવો નરીન થયા હતા. ત્યારબાદ શ્રી રાયદેશનું સમગ્ર પંચ મુનાઈ મુકામે રાખવામાં આવી હતી. ત્યાંપણ કેટલાક દરાવો-નરીન રિવાજો કરી તેની ચોપડીઓ છપાવવા સાર ઉપલી સમાને મંજુરી આપી હતી. તે મુજબ છપાવી દરેકને ત્યાં આપવામાં આવી છે. ચોપડીઓ છપાવવાનું કારણ એટલું જ દરેક માણસ તે મુજબ વર્તે અને કાયદાનું ઉલ્લંઘન થતું અટકે. આ રિવાજોમાં ધણા ભાગે લગના રિવાજો છે. જે આશરે ૩૧ છે. બીજા કેટલાક સામાજિક સુધારા છે. મુખ્ય સુધારો મરણ પાછળ કુટવાનો છે. આ કુટવાનો રિવાજ મુનિશ્રી ૧૦૮ શાન્તિસાગરજી (છાણી) ના હિતોપદેશ દ્વારા બંધ થયેલ છે. અને ત્યારથી મરનારની પછવાડે કુટવાનું સહંતર બંધ થયું છે. આ મુજબ દરાવો કયાં બાદ શ્રી. પંચમાંથી ૩૩ મેમ્બરો ચૂંટાઈ આવેલ છે. જેથી વર્ષમાં એકાદ વખત તેઓશ્રીની એક બોલાવી શકાય. અને તેઓને આમંત્રણ આપવાની દરજ ઉપલી સભાના સેક્રટરીને સોંપેલી છે.

આરબાદ બરોહી મુકામે ઉપલી સભા મળી

હતી. અને સંવત ૧૯૮૫ના આસો સુદ ૨ ના રોજ શ્રી વડાણી મુકામે રાયદેશમાંથી ચૂંટાયેલા મેમ્બરને બોલાવવામાં આવ્યા હતા. તે વખતે પ્રથમ ક્ષેત્ર કરાવે સંબંધી વાટાઘાટ કરવામાં આવી હતી. અને કશઆત હોવાથી યોગ્ય કપકો જેને તેને આપવામાં આવ્યો હતો. અને આ વખતે આ મેમ્બરને 'મેનેજિંગ કમીટી,' એ નામ તેઓથી તરફથી આપવામાં આવ્યું હતું. આ મુકામે કામ પથુ શાન્તીપૂર્વક ચલ્યું હતું.

હવે ઉપલી સભાની છઠ્ઠી બેઠક જેક સુદ ખીજ ૫૨ સુ. પાલરાખવામાં આવી છે. આ સભાના કલ મેમ્બરો હાલમાં ૪૫ છે. જેનું ધારા ધોરણ નક્કી કરવામાં આવ્યું છે. જેથી હિ. વ. સભાના દરેક મેમ્બરને વિનંતી છે કે સેક્રટરી તરફથી લખવામાં આવે તે મુજબ સદરહુ રથજે હાજરી આપવા તરફી શેશી.

શ્રી. શાંતિ સેવક-કે. એન. મીઠાવાલા.
સેક્રટરી, ઈ. ડુ. દિ૦ જૈન હિ. વ. સભા, -ઈડર.



શ્રીમતી મગનજીને સંબંધી

શૈક હોરાચંદ ગુમાનજી જૈન બોર્ડિંગના એક જુના વિદ્યાર્થી તરફથી ત્યાંના સુપ્રિન્ટેન્ડન્ટને મળેલો પત્ર.

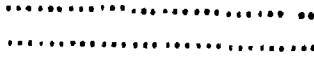
પુના. તા. ૧૬-૨-૩૦

સાહેબ,

પ્રખર તપસ્વિની-સમાજ સેવિકા શ્રીમતી મગનજીને ગયાં. શૈક કોને નહિ થયો હોય ? પરંતુ હૃદયનો હેવાસુનો માનવી પથુ અશ્રુ પાડે. મગન જીનેનાં સર્ગાં વ્હાલાંને મ્હારાં હૃદયનાં આશાસન. હૈમને કહેજો કે મગનજીનેની ઇચ્છા મગનજીનેની માફક સ્ત્રી રત્નો પાકે અને સમાજ સેવામાં અમ બાગ ભે તેવી જૈન કુમારીકાઓ જૈન માબાપો ઉત્પન્ન કરે તેવી હતી. મગનજીનેના આત્માને શાંતિ આપવા માટે જૈન માબાપો હવે કંઈ તે દિશામાં પગલાં ભરશે. અને મગનજીનેની માફક સમાજ સેવિકા એક

નહિ પથુ જૈન સમાજ ધોરણે પકવવા પ્રયત્ન કરશે. હૈમને કહેજો કે જોવાયેલી સ્ત્રીને જે પાછી નજ આવી શકે તેવી હોય તો હેનું સાઈક હૈનો બદલો વાળવામાં છે. મગનજીને ગયાં-પાછાં નહિ આવે પથુ તે ખોટ પુરી પાડવા માટે હૈમના જેવી સ્ત્રીઓ ઉત્પન્ન કરવી તેજ મગનજીનેની પાછળ રડતાં સ્ત્રી પુરૂષોની ફરજ છે. આંસુ પાડીએ-ગમે તેટલાં પાડીએ છતાં દેવાના ગિરીનું તેજ ગૂઢ સરોવર કદી બોહું થતું નથી.

દેવાના ગિરીમાં ઉડું એક ગૂઢ સરોવર; આંસુડાના અમીથી એ મયુ' રહેતું નિરન્તર. ઉડું સરોવર કદી ઉભરાઈ જતાં, એ અશ્રુનાં પ્રગટાંને ઝરણાંજ થાતાં.



તોએ સરોવરતણું જળ નહિ ખૂટે, જે સ્વર્ગના મહુર કાનનમાંથી ઉઠે.

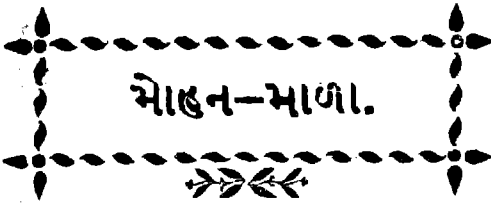
માટે અશ્રુનો એ બંડાર ખાલી કરવામાં કે બરી રાખવામાં કંઈ સાર નથી. અને તરણ પાછળની ખોટી દાંલિ ક્રિયાઓ પથુ કરવામાં સાર નથી. પથુ રહેના બદલે સ્ત્રીકેળવણી અપાષ અને આપથ જૈન માબાપોનું વલણ કેળવણી પ્રત્યેનું ક્રોધ તેવા પ્રયત્નો કરવામાંજ 'મગનજીને' નું અંતિમ ધ્યેય પૂર્ણ થશે. શી૦

રમણીકના રનેડવંદન.

વિલકુલ નઈ

કાશ્મીરી કેશર ।

માવ ઘટાકર ૧૧) તોલા કર દિયા હૈ । વિલા-
યતી કેશરકા ઉપયોગ મત કરિયે । મોર યહ શુભ
સ્વદેશી કાશ્મીરી કેશર હી હમારે ઘહાસે મંગાદ્યે ।
ઘશાંગધૂપ ૨૧) રતલ ।
અગરવત્તો ૧) રતલ ।
મેનેજર, વિગમ્વર જૈન પુસ્તકાલય-સુરત ।



મોહન-માળી.

જે:-મોહનલાલ મ. કાણીયાકર-કંપાલા.

[ખાસ અંકથી ચાલુ.]

૫૮-પ્રેમ છે ત્યાંજ સુખ છે.

૫૯-પ્રેમ એજ સંસાર સાગર પાર ઉતારનાર નોકા છે.

૬૦-પતિના દુઃખમાં દુઃખી, પતિના સુખમાં સુખી, પતિના ભાવની છુખી. પતિવ્રત નાર એ પુરી.

૬૧-પુરુષો જ્યારે શુદ્ધ પ્રેમી બનશે ત્યારેજ સ્ત્રીઓ પતિવ્રત ગુણથી અલંકૃત થશે.

૬૨-વૃદ્ધ લગ્નથી સ્ત્રીઓ અનીતિવાન બને છે.

૬૩-તે દ્રવ્ય શું કામનું કે જે વિષાદાનમાં વપરાતું નથી ?

૬૪-તે મનુષ્ય શાનાં કે જેનામાં ધર્મ-જ્ઞાન નથી ?

૬૫-ધિક્કાર છે તે જ્ઞાતિ અંધનને કે-જે બાણે અપત્તી કોયમાંથી કન્યા લેવાની છુટ આપતાં નથી.

૬૬-નથી ધર્મનું જ્ઞાન જેને લગારે-

પડયો માતને પેટ પલ્લર ભારે.

૬૭-જેને પ્રભુ પર પ્રેમ થયો હોય તે મન વચન અને કાયાએ કરી કોઈ પણ જીવને દુઃખ આપી શકે નહિ.

૬૮-અહિંસા વ્રત એ સર્વે ધર્મનું પગથીયું છે.

૬૯-ખરી જ્ઞાનિતેજ છે-કે-કોઈ ન થવા દેવો.

૭૦-સુખી તરફ મિત્ર ભાવ. દુઃખી તરફ દયા-ભાવ, પુણ્યવાન તરફ હર્ષભાવ, અને પાપીતરફ તેને સુધારવાની અપેક્ષા તેજ અંતર શુદ્ધિ કેહેવાય.

૭૧-પાંચેદ્રિને અનુકૂળ સંજોગો હોવા છતાં ચારિત્રબદ્ધ ન થવું તેજ ખરું શુરાતન છે.

૭૨-શરીર પરની મમતા છોડ્યા સિવાય આત્મા એળખી શકાતો નથી.

૭૩-નારીજ નરને પેદા કરે છે.

૭૪-બાળ લગ્ને સમાજનું સત્વાનાશ કલ્પું છે.

૭૫-જેરી સોખત તેવીજ અસર થાય છે.

૭૬ બૃખ્યા રહેવાથી જેટલાં મર્ણુ થાય છે. તેથી હજાર ગણાં મર્ણુ વધારે ખાવાથી થાય છે.

૭૭-સ્વચ્છતા એજ આરોગ્યની ચાવી છે.

૭૮-શીલવાનના શીલ કારણે, ઇશુ હલ્લુરમાં હોય છે, દુષ્ટને તે યોગ્ય શિક્ષા જલ્દી આપ્યો જાય છે.

૭૯-છે ન્યાય આ અવનિપરે ઇશ્વર તથા દરખારમાં. સૌ ન્યાય ત્યાં તોળાવશે યમકિંકરોનાં મારમાં.

૮૦-વધારી જ્ઞાન જ્ઞાનેાનું પોતે તેા કુલ્લક બનેા. અપાતી કર્મના અંધન મુક્તિ નારીને વરો.

૮૧-બગાડે ચિત દર્શનથી. સ્પર્શેથી બળને હરે, સમાગમથી હરે વિચર, નારી માતો રાક્ષસી,

૮૨-જેવા આપણે બીજને ધારીએ તેવાજ પોતે હોવા જોઇએ.

૮૩-કમળો થયો હોય તેજ અધું પીળું દેખે છે.

૮૪-આંધળાને અંધુય સરખું છે. કાળું કે રાતું, ધોળું કે લીલું. તેમજ મૂર્ખ માણસને અંધુય સરખું છે. પુન્ય કે પાપ-ધર્મ કે અધર્મ.

૮૫-દયાવાન હીકરીને વેચે નહિ.

૮૬-બ્રહ્માવાનજ સાધુ થઇ શકે છે.

૮૭-હિંસાનો પરિત્યાગ કરી મનને ધર્મ તરફ પરોવવું તેજ મેક્ષ જવાની નિસરણી છે.

૮૮-જશ રૂપી જયમાળા મેજવતી તેજ જીવનની સાચીચતા છે.

૮૯-મજેસા ધનનો સહકરપોગ કરવો એટલે કે તેનો દાન અને ધર્મમાં વ્યય કરવો.

૯૦-હાથે તેજ સાથે એ ચોક્કસ માની પોતાની કમાણીનો પોતેજ ધર્મકાર્યમાં વ્યય કરવો.

૯૧-મનુષ્ય માત્રની એકજ જાતિ માની દરેકના બલામાં પોતાનું બચું સમજવું.

૯૨-દુષ્ટ જ્ઞાતિ અંધનોજ સમાજને અધઃપાત કરનાર છે.

૯૩-બાણે અપત્તી કન્યાને ખુશીથી ગ્રહણ કરો.



ખહેર-ની દિ૦ જૈન પાઠશાલાના ૩૭ વિદ્યાર્થીઓની પરીક્ષા હમણાં લેવાઈ હતી જેમાં બુદ્ધા બુદ્ધા વિષયોમાં બધાજ વિદ્યાર્થી પાસ થયા હતા. હોલચંદ અમીચંદ માસ્તર સાડું શિક્ષણ આપે છે.

પાદરા-માં ૯૦ શ્રી સુરેન્દ્રકીર્તિજી હાલ પાદરામાં એક માસથી છે ને હીક ઉપદેશ અપાય છે.

વિજયનગર-થી મોડાસિયા ક્ષેત્રેહચંદલાઈ તારાચંદ મંત્રી લખે છે કે મારા હસ્તકની ખડકની ૧૦ પાઠશાલાઓની પરીક્ષા ચૈત્ર-માસે થનાર છે ત્યારે ઇનામમાં પુસ્તક વગેરે વેંચવા માટે ૩૦૦)ની જરૂર છે જેમાં ૨૫૦) તે છે ને ૫૦) પુટે છે તે આ સહાયતા મારા ઉપર કે લલ્લુભાઈ લખમચંદ ચોકસીને મુંબાઈ મોકલવા ઇની-ઓને પ્રાર્થના છે.

સેક જીવરાજ ઉગરચંદ-સોનાસણવા-લાને શિખરજી યાત્રાને સંઘ ગયામાસમાં જંપુરવામી (મથુરા) પધાર્યો હતો ત્યારે આપે ૩૦ બ્ર૦ આશ્રમને ૧૨૫) સેટ આપ્યા હતા.

બ્યારા-ના મંદિરનું અધું કામ લ-સુરેન્દ્રકીર્તિજીના પ્રયાસથી પુરું થયું છે. હવે વેદી પ્રતિષ્ઠાકારકની જરૂર છે.

સોજીયા ધાવિકાચમ-ને મેનાબહેનના પ્રયાસથી ૧૬) ડબકા, ૨૦) વડુ, ૫) બોજ, ૫) ધ્યાજ, ૩૫) પાદરા, ૧૮) વેડચ, ૧૬) છાણી, ૧૬) વડોદરા, ૧૦) દાવોલ, ૨૬) પ્રોરસદ, ૪) ફેટેક અને ૩. ૬) પ્રિયાસ-ણથી મળી ૩. ૧૮૭) ની મદદ મળી હતી. મંત્રી.

મહાવીર જયંતીકે સમય પ્રમાવનાકે લિણ અવશ્ય ૨ મંગાઈણ ।

- | | |
|--|-----------------|
| મહાવીર ચરિત્ર સંક્ષિપ્ત | =) |
| મહાવીર ચરિત્ર (હિંદી ટીકા સહિત) | ૧)। |
| વીર ગાયન | =) |
| વીર ગાયન મંજરી | ૩) |
| વીર પુષ્પાંજલિ ૧) આદર્શ જૈન મહાત્મા ૧) | |
| વીર પુષ્પાંજલી | -) |
| સામાયિક પાઠ સાર્થ વ વિધિ સહિત | -)।। |
| મેરી ભાવના |)।। |
| મહાત્મા રામચન્દ્ર | =)।। |
| સમાચિન્તક | =) |
| મશ્નોત્તર માલા | ।) |
| મગવાન મહાવીર | ૧)।। |
| મગવાન મહાવીર વ વુદ્ધ | ૧)।। |
| ત્રિનેન્દ્રમત દર્શન -) | તત્ત્વમાલા ૧=) |
| ચેતન-કર્મ વુદ્ધ | ૩) |
| શ્રાવક પ્રતિક્રમણ | ૧-) |
| પાતઃસ્મરણ મંગલપાઠ | -) |
| સમાચિમરણ વ મૃત્યુ મહોત્સવ | =) |
| પંચકલ્પાણક સાર્થ ૧) વીર પંચરત્ન ૧=) | |
| સીતલનાથ સ્તોત્ર -) | દેવ-ઉપાસના -)।। |
| મોક્ષમાર્ગકી કુંજી -)।। | સતી રત્ન ૧) |
| સતી ચરિત્ર-શીલ મહિમા | ૧-) |
| પેતિહાસિક મહાપુરુષ | ।।) |
| વિદ્વદ્ગરત્નમાલા | ।।=) |

પ્રમાવનામે વાંચનેકે લિયે યે પુસ્તકે ધોક્વંદ પૌને મૂલ્યમે મિલેગી ।

મૈનેજર દિ૦ જૈન પુસ્તકાલય-સુરત ।



जयंती जिनराजकी ।

ज-ब तक है जीवन ज्योति, जगत माहिं जगपगसी,
 य-ज्जायें सहँ किन्तु, धर्म अरु समाजकी-
 ती-न काल मुझसे हो, सेवा यह भावना है,
 जि-धर देखू उधर होवे, जयंती जिनराजकी ॥ १ ॥
 न-ही द्वेष भाव रहे, मैत्री समोदका हो-
 रा-त दिन प्रसार, रही चिन्ता इसी साजकी ।
 ज-गत जैन शासनकी, शरण प्राप्त करे और,
 की-र्ति लह मनावे जग, जयन्ती जिनराजकी ॥ २ ॥

भारत समरमें ।

दीनताकी दूर करो, नव्य भव्य भाव भरो,
 भारतके केश हरो, फँसा जो अमरमें ।
 या जो राजाधिराज, देखो यह दृश्य आज,
 अंखला है दासताकी, उसकी कमरमें ॥ १ ॥
 दुखिया है जौलों देश, तौलों कटौं शान्ति लेश,
 काटो अब शीघ्र केश, वही कौन अमर हैं ।
 लाखों गये लाल और, जायेंगे करोड़ों ही,
 गांधी बन अगुआ, कस बैठे अब कमर हैं ॥ २ ॥
 भीरना भगाय आज भारतकी रखो लाज,
 शक्ति है तुम्हारी वही जितनी एक अमरमें ।
 बस गया हाथ नहीं आवेगा कभी "दास"
 नाम शीघ्र लिखा लेना "भारत-समरमें" ॥ ३ ॥

परमेशीदास जैन न्यायतीर्थ-मूर्ति ।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खण्डिया चकलासूरखण्डे मूलकन्द विद्यनराय कापडियाने मुद्रित किया
 और विमन्ना किन "जाँकिर कन्नाकाकी सुरतके उन्कोले ही प्रकट किया ।



सम्पादकः—मूलचन्द्र किसनदास कापड़िया—मूरन ।

विषयानुक्रमणिका.

नं०	विषय.	पृष्ठ.
१	सम्पादकीय—अक्षयतृतीया, सत्याग्रह-संग्राम व जैनी, मुक्ति चन्द्रमागरनी, छोटालाल गांधी	२१७
२-३	जैन समाचारवलि, मगनज्जेनने निवापानरी	२२४-२६
४-६	मगनज्जेन विरयोग, मेवाडा भाइ-ओनुं कर्तव्य	३२६-२७
६-७	एकताने पंथे, खडकनी पाठशाला	२२८-३२
८-९	मिष्ट्रीके गुण, क्या परदा हानिकारक है !	२३२-३९
१०-११	हमारा कर्तव्य, राजस्थानमें जैनकी निर्द	४०-४४
१२-१३	द्वितीया श्रा केसेहो, ध्वानमें रखो	४५-४८

वर्ष २३वां
खंड ६.

वीर सं० २८५६
वीर.

उपहार ग्रन्थ-

इस वर्षके दो उपहार ग्रन्थ—'नवरत्न व जैन विवाहविधि' तैयार होकर १०-१५ दिनोंमें सब प्रादिकोशो वी० पी०से भेजे जावंगे ।

प्रकाशक ।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।०) विशेषांक मूल्य ॥।)



स्वर्गीय जैन महिहारस्त-
मगनबहेन स्मारकफंडमें
स्वीकारता ।

४४९) गतांशमें प्रकाशित

- १) चंद्रकाक जमनादास इस्वारिया कडोक
५) महावीर जैन पाठशाळा साहूनाक
९) जैन कन्याशाळा पंचायती महारानपुर
९) आत्माराम जयभारद्वैप " "
९) चंद्राबाई रामस्वरूप माळंगर
९) शरीक पयारामेबा झाडीग्राम शंभूर
९) बा० शिवचरणदास जैन असवंतनगर
९) शुकुबरमसाद जैन बेतूर
११) सौ० सेठानी हीरानाई इन्दौर

५०५० सेठ गेंदाकाक सुरममक

- १०) बाबकमाता उमरावसिंह जैन पुरकानी
९) डॉ० भाईकाक कपुरचन्द झाह नार
९) पुत्रकीदेवी डॉ० शंकरकाक स्वतीडी
९) गुरुचरणदास जैन करणनबाग
९१) मोहनकाक मधुगादस कणोसाकर

-कंशाळा (युगान्ठा आम्निडा)

- १०) ५०२० दीपचन्दनी जैन देशरादुन
९) ५०५० निरंजनकाक जैन फोर्टमजान
९) दामोदरदास जैन त्रिकीवासागर
२१) ५० अजितरमसादनी मम बीडाने
९) मोतीकाकजीकी वर्मेशरनी रागावंडी
५) सोनादेवी हरीचन्द जैन हरदोई
९) शुकुबरदास जैन एम.ए.एलए.बी. काहीर
९) विशेश्वरनाथ बाबाभारदास जैन देहडी

६१७) कुक

श्री० मगनबाईके इस स्मारक फंडमें दिगंबर जैनके मिन२ पाठकोने अपनी जोरसे रकम नहीं बेची है वे अब तो अवश्य २ मेत्र हैं । कमसे कम पांच रुपये देनेवालेको " दानवीर माणिकचंद्र " नामक १००० छठका सचित्र ग्रन्थ जवनक भेंटमें दिया जाता है । स्मारककी रकम भी बी० पी० से देना चाहेंगे तो यह अंश बी० पी० से भेनकर बसुका कर सकेंगे । निवेदक-मूलचंद किसनदास कापड़िया-सूरत ।

तीर्थकर चित्रावलि ।

२४ तीर्थकरोंके रंगबेरंगी २४ अलग बड़े २ पिच कांचमें जडवाकर मंदिरोंमें रखने योग्य यह चित्रावलि अवश्य मगाइये । मूल्य ३)

जौर भी बडे२ रंगीन चित्र-चिचरजी ३), आ० शांतिघाणरजी ॥), चम्पापुरी ५), पावापुरी ५), गिरनार ५), सोलह स्वप्न ॥), चन्द्रगुप्तके स्वप्न ॥) संसारवृक्ष ॥), बट्टेइया स्वरूप ५), सीताजीकी भग्नि परीक्षा ॥), जन्मकल्याणक १), आहारराम, १) अ० पार्श्वनाथ ५) ये चित्र तथा तीर्थ व त्यागियोंके १५ प्रकारके एक आनेवाले चित्र भी अवश्य२ मगाइये ।

जैन व्रतकथासंप्रह-

जिसमें रविवार, रत्नत्रय, दशलक्षण, सोलहकारण, भुतस्कंध, त्रिलोक तीज, मुकुट सप्तमी, फलदशमी, अवणद्वादशी, रोहिणीव्रत, आकाशपंचमी, कोकिलापंचमी, चंदनपट्टी, निदोषसप्तमी, निःशल्प अष्टमी, सुगंधदशमी, जिनरात्रि, मेषमाला, लम्बिबिधान, मौन एकादशी, गुरुपंचमी, द्वादशी, अनंतमत, अष्टानिका, पुष्पांबलि, बारहसौ चौतिस भादि अनेक व्रतोंकी कथाएं विधि सहित हैं । शाखाकार ५० १२० मु० १)

मैनेजर-दि० जैन पुस्तकालय-सूरत ।

दिगम्बर जैन



जमक व सुन नग-मन्नापट सधामे देर देवान एक बपकी
केलवाका जनेवले वीर दिगम्बर जैन बन्यु ।

“जिवि जय” प्रेम-सहित.

दिंगम्बर जैन

नाना कलाभिविधैश्च तत्त्रैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्यत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वाँ

वीर सम्बत् २४५६, चैत्र, विक्रम सम्बत् १९८६.

अङ्क ६.

सम्पादकीय-वक्तव्य

हमारे पाठक इस परम पर्वसे परिचित होंगे। वह वह दिवस है जब कि अक्षय तृतीया। भगवान् आदिनाथस्वामीका एक वर्ष पश्चात् पुणवशाही राणा श्रेयांसके यहां आहार हुआ था। उस समयकी परिस्थिति बड़ी विकट थी, लोगोंको वह ज्ञान नहीं था कि आहारदान किस प्रकार दिया जाता है। जब भगवान् आदिनाथस्वामी आहारके निमित्तसे पुर, खानि, मटंवे, खर्बट और खेट आदि अनेक छोटे बड़े ग्रामोंमें बिहार कर रहे थे तब आहार विधिसे अनभिज्ञ जन हाथी, घोड़ा, रत्न, वस्त्र, आभूषण आदि वस्तुएं भेट करनेके लिये उपस्थित होते थे। मगर भगवान्को इन विमूर्तियोंसे क्या प्रयोजन? वे तो चाहते थे कि शरीर स्थितिके लिये आहारदानकी प्रवृत्ति की जावे, जन्मवा नव दीक्षित मुनि व त्यागीगण मूलकी बाधा सहन न करके भ्रष्ट हो चुके हैं और हो जावेंगे।

भगवान्को योग वारण किये हुये छह मास और आहार निमित्त विहार करनेके लिये छह महीने अर्थात् कुल एक वर्ष हो चुका तब विहार करते हुये इस्तिनापुर आये। भगवान्ने विहार करते हुये राणमहलमें प्रवेश किया और श्रेयांस कुमारको भगवान्के दर्शन करके जतिस्मरण हो गया। तब सप्तगुणयुक्त श्रेयांसकुमारने भवभावक्तिपूर्वक श्री ऋषभदेवको इष्टुसका मासुक आहारदान दिया। तबसे दानकी विधि सर्वसाधारणको ज्ञात होगई।

आजकल भी सौभाग्यसे जैन मुनियोंका विहार होरहा है और अनेक जैन भाइयोंको आहारदान देनेका अवसर प्राप्त होता है; किन्तु हममें संदेह नहीं है कि वर्तमानमें मुनियोंकी आहार चर्चामें आवश्यकतासे भी अधिक आडंबर करना होता है। जिससे गरीब अमीर, छोटे बड़े सभी श्रावक आहारदानके पुण्यका काम नही ले पाते। वही बात बहुत खटकती है। अनजन्म अहारदान देनेके लिये श्र वर्थोंको अनावश्यक एवं मर्यादहीन प्रतिज्ञायें लेना पड़ती हैं। और आश्रमके लो यह है कि इससे भी नीचे दर्जेकी मोटी मोटी बातोंका चाहे वह ब्रती न भी हो।

आहारदान तो अविरतसम्भट्टि भी दे सका है, जो कि न तो इन्द्रिय विषयोंसे विरक्त होता है और न अन्न एवं स्थावर जीवोंकी हिंसाका ही त्यागी होता है। तब शूद्रनरक त्याग आदि अनेक अनुपयोगी तुच्छ प्रतिबंधन टाक देना सर्व साधारण गृहस्थोंको आहार देनेसे बंचित रखना है। यदि इस बातपर पुनः विचार किया जावे तो सर्वसाधारणको आहारदान देनेका सौभाग्य प्राप्त होसकता है। अस्तु,

पूर्वाचार्योंने दानके चार प्रकार बतलाये हैं। यदि कोई दानी गृहस्थ विद्यालय, छात्रावास आदिमें अपने द्रव्यको अर्पण करता है तो वह चारों दानका भागी हो जाता है। इस समय ज्ञान दानकी बहुत भारी आवश्यकता है। देश-कायकी परिस्थिति पर विचार करते हुए आज अपनी समाजको सुशिक्षित बनानेमें ही अधिकांश द्रव्यका उपयोग करना चाहिये। गरीबसे गरीब परिस्थितिवाला गृहस्थ भी यदि निश्चय करे तो एक वर्षमें कमसेकम १०) दान कर सका है। केवल उसको अपनी आमदनीमेंसे दो पैसे प्रतिदिन अलग निकालते जाना चाहिये। प्रत्येक जैन गृहस्थ शास्त्रों एवं पुराणोंको पढ़कर, सुनकर या अन्य प्रकारसे दानकी महिमासे परिचित है। इस लिये यदि अपनी आत्मा एवं समाज, बर्म तथा देशका कल्याण अभीष्ट है तो कुछ न कुछ दान अवश्य करते रहना चाहिये। वह अक्षमवृत्तीया (वैशाख शुक्ल १) प्रतिवर्ष हमें दानके लिये सावधान करती है। इस प्रवित्र दिवसमें कुछ न कुछ दान करना चाहिये। यही जैनकी उपयोगिता एवं अनुभव-जीवनका सार है।

आज भारतवर्षके कौनों कौनोंमें सत्याग्रह संग्राम चालू होगया है सत्याग्रह संग्राम। महात्मा गांधीकी अप्रतिहत आज्ञाको भारतीय बच्चे १ने अपने माथेपर श्लोक किया। अब और तबमें आसमान पाताळका अन्तर है। सन् १९का सत्याग्रह तो हमें केवल सोतेसे जया ही सका था किन्तु अब हमें वह प्रत्येक कार्यको अमकमें कानेका आवेश करता है। महात्माजीकी आज्ञानुसार भारतमें सर्वत्र नमक करका कानून तोड़ा गया। काखों स्त्री पुरुषोंने मिळकर खुले रूपमें नमक कानून भंग किया और अमीतक जारी है। इसको दवानेके लिये सरकार भी अपनी शक्तिषां अजमा रही है। दमनका दौरा दौरा होरहा है। सैकड़ों प्रतिष्ठित नेता जेलोंमें हूँस दिये गये हैं। अनेक सत्याग्रही सैनिक जुरी तरहसे ठोके पीटे गये हैं। ऐसा भी माखम हुआ है कि कककतेमें कुछ सैनिक नमक बनानेके लिये एक नदी कड़ाईमें पानी पका रहे थे। तब पुलिसने एक सैनिकको उस खौलते हुये पानीकी कड़ाईमें पटक दिया। उफ़! इस अत्याचारका भी कहीं ठिकाना है ?

एक नहीं अनेक प्रकारके अनर्थ भारतीय सत्याग्रही प्रजाके साथ किये जा रहे हैं। मगर शेरदिक सैनिक अपने काममें बराबर टिके हुये हैं। उन्हें सत्यपर भरोसा है, अहिंसाका बल है, पूर्वजन्म पर विश्वास है इसलिये मरनेका भय नहीं है। जेकखाना तो विनोदस्थान समझा जा रहा है। हमारा युद्ध अहिंसात्मक एवं सत्य है इसलिये विजय होना अवश्यमावी है।

नमकपर कर लगाना वास्तवमें अनुचित है इसको प्रत्येक सहृदयी नमक कर । व्यक्ति कह सकता है । हमारे पुस्तानपुस्तसे चढे जाये ठकवसायको खासनके बरुपर बकात कुचला गबा । पहिले तो लोग समुद्रसे पानी भरकर योही नमक बना लिबा करते थे और हमारो आदमी अपना डूबेट पालते थे । मगर बह बंद कर दिया गबा । जहांपर प्राकृतिक नमक जमता था वहां भी सरकारने एकाधिपत्य जमा लिया ।

सरकारको एक मन नमक तैयार करनेमें केवल १० पाई खर्च पड़ता है । उसपर २० आने जर्थात् १३० पाई टैक्स लगाया जाता है ! जिससे एक वर्षमें गरीब भारतसे ६ करोड़ ६९ लाख रुपया चूस लिया जाता है । गरीबसे गरीब मनुष्य और सभी छोटे बड़े पशुओं तकको नमककी आवश्यकता होती है । जर्थात् नमकपर टैक्स लगाकर सरकार भारतीय प्रत्येक बरुचेमे डेकर वृद्ध और पशुसे भी कुछ न कुछ कर बसूक करती है ! यही सब अनर्थ न सहकर महात्माजीने अपने विचारशील मस्तिष्कसे इसपर सत्याग्रह छेड़ा है । महात्मा गांधीजीका यह संग्राम जीवनका अन्तिम संग्राम है । अगर हम उनकी आज्ञाओंको बराबर पालन करते गये तो नमक कर जैसा मृतपाय होगबा है वैसे ही दूसरे अन्यायोंसे भी भारतवर्ष छुटकारा पा जायेगा यह विश्वास रखिये ।

हर्षका विषय है कि हमारे जैन भाई भी इस संग्राममें पूरा भाग ले रहे जैनियोंका हाथ । हैं । मणिकाल कोठारी, अमृतकाळ सेठ, छोटालाळ वेठामाई गांधी आदि सुप्रसिद्ध जैन वीर तो इसी संग्रामके कारण आज जेलोंमें पड़े हुये हैं । सैकड़ों जैन वीर अभी सैनिकके रूपमें काम कर रहे हैं व अनेकोंने अपने नाम इस शुभ कार्यमें लिखाये हैं । मा० दि० जैन परिषदके मंत्री बाबू रतनलालजी वकील बिजनीरमें कांग्रेस कमेटीके मंत्री हैं । वे हम चक्रवर्तमें प्रबरदस्त काम कर रहे हैं । जबतक यह अंक पाठकोंके हाथमें पहुंचेगा तब तक तो शायद यह शेर भी सरकारी महिमान बनकर जेरुखानेमें दहाड़ेगा । इधर मा० दि० जैन परिषदके समापति महोदय सुप्रसिद्ध सिंघई पन्नाळाळजी अमरावतीने तो एम० एल० सी० पदसे स्वीफा देकर अपने १३ वर्षके इकलौते पुत्रको सत्याग्रही सेन्यमें अर्पण कर दिया है । तथा वर्तमान सत्याग्रह संग्रामकी सहायतार्थ स्थानीय कांग्रेसकमेटीको १०) माह बार देना भी स्वीकृत किया है । आपका साहस, उदारता एवं देशभक्ति सराहनीय है । आपके इस सत्साहसको बचाई है । श्राविकाश्रम बम्बईकी छात्राओं भी नमक बनाने आदिमें पूरा भाग ले रही हैं । इसी प्रकार अनेक जैन भाई इस अहिंसक संग्राममें भाग ले रहे हैं । यदि हमें नाम मालूम होते रहेंगे तो बराबर प्रकाशित किये जावेंगे ।

दूसरा जांदोकन महात्माजीने मद्य निषेधका
उठ या है । भारतवर्षका
मद्य निषेध । २५ करोड़ रुपया प्रति-
वर्ष इस मद्यपानमें बिगाड़ा

जाता है । इतना ही नहीं किंतु जान बुझकर
पागळ बनकर अपना सर्वस्व नाश किया जाता
है । हमारा जैन धर्म तो सर्व प्रथम इसका
निषेध करता है । जैन होनेके पूर्व ही मद्यादि
सेवनका त्याग कराया जाता है । हमारे यहां
तो बतकाया है कि—

मद्यं मोहयति मनो, मोहितचित्तस्तु विस्मरति धर्म ।
विस्मृतधर्मा जीवो, हिंसामविशंकमाचरति ॥

अर्थात्—मद्य (शराब आदि) से मन मोहित
हो जाता है और मोहित चित्त होनेसे धर्म भूल
जाता है तथा धर्मको भूला हुआ प्राणी निःशंक
होकर हिंसामें प्रवृत्ति करने लगता है । महात्मा
गौकीजीका सिद्धांत भी अहिंसा पूर्ण है इसलिये
उन्होंने भी इस दुर्व्यसनको भारतवर्षसे उखाड़
 देनेकी नई स्कीम निकाली है ।

उनने केवल स्त्रियोंको ही इस कार्यको रोकनेकी
आज्ञा दी है । आज्ञा होते ही अनेक भारतीय
वीर बळनाओने इस पवित्र कार्यको अपने हाथमें
लेकर विकेटिंग प्रारम्भ कर दिया है । वे शराब
ताड़ीकी दुकानोंपर जाती हैं, दुकानदारसे निवे-
दन करती हैं कि भाई ! इस दुष्कर्मको छोड़कर
कोई अच्छा व्यवसाय करो । मले ही भीख
मांगना पड़े, किन्तु इस कानकी करके अपने
माइयोंको पागळ मत बनाओ । इस उपदेशसे
अनेक सद्दृश्यी भाई दुरत दुकान बंद करके
शान्ता प्रवृत्ति में लगे हैं । अनेक दुराग्रही उन

मां बहिनोंको खोटी खरी सुनाते हैं ! उन सत्या-
ग्रही वीरांगनाओने तो इसके लिये अपना जीवन
अपंग ही किया है, इसलिये वे सब सहन करके
अपना कर्तव्य करनेमें नहीं चूकती ।

इधर वे दुकानोंपर बरना बरके बैठ जाती हैं
तब अनेक बज्जाशीक एवं मनुष्यतापूर्ण भाई तो
दूर हीसे भाग जाते हैं, शराब पीनेको नहीं
जाते । और जो जाते भी हैं उन्हें वे सम-
झाती हैं कि भाई इस दुर्गन्धित शराब—ताड़ीको
पीकर पागळ मत बनो, देश और समाजका
नाश मत करो, चलो हम तुम्हें कामधेनुका दूध
पिकायेंगी । इस उपदेशसे अनेकों मान भी जाते
हैं । जो दुराग्रही होते हैं उनके उपसर्गोंको सहन
करनेका भी साहस उन वीरांगनाओंमें है । हमें
विश्वास है कि इस जान्दोकनसे शराब आदि
नशेकी चीजोंका नाश शीघ्र ही हो जावेगा ।
इसमें कोई संदेह नहीं कि महात्माजीकी प्रत्येक
राष्ट्रीय आज्ञाएँ हमारे हितकी हैं, जैनधर्मसे
संबंध रखनेवाली या उसके अनुकूल हैं । हमें
इसमें पूरा भाग लेना ही चाहिये ।

* * *

महात्माजी भारतीयोंके सुख एवं देशकी स्व-
तंत्रताके लिये विदेशी
विदेशी वस्त्र वस्त्र बहिष्कारको प्रधान
बहिष्कार । कारण बतलाते हैं । मा-
रतवर्ष विदेशी वस्त्रोंका

उपयोग करके कगाळ होगया है । लाखों भार-
तीय तो ऐसे मिलेंगे कि मिनको अपनी आज
बचानेके लिये कपड़ेका टुकड़ा भी नहीं मिलता ।

जो महलोंमें नाराम करनेवाले हैं, मस्मली गद्दोंपर सोनेवाले हैं, चाबीमय विदेशी बस्त्रोंसे अपने शरीरको अपवित्र बनाकर अहिंसा धर्मकी डींग मारते हैं उन्हें क्या खबर है कि भारत-वर्षकी कौसी परिस्थिति है ?

महात्माजी आदेश करते हैं कि अगर आप अहिंसा प्रेमी हैं, देश रक्षाके अभिलाषी हैं, दीनोंकी दयावाले हैं तो विदेशी बस्त्रोंका उपयोग मत करो। वास्तवमें खादी प्रचार करना जैनधर्मके अनुकूल है। हमें सखेद लिखना पड़ता है कि पवित्र जैन मंदिरोंमें आज भी विदेशी वस्त्र उपयोगमें आते हैं ! मस्मली वस्त्र काममें लाये जाते हैं ! क्या इनसे मंदिर पवित्र कहा जा-सकता है ? जिन वस्त्रोंके निमित्तसे असंरूप पाणि-योंकी हत्या की जाती हो उनको मंदिरको काममें लाना, उनमें त्रिनेन्द्र भगवानके द्वारा प्रतिपा-दित शास्त्रोंको बांधना, जिन प्रतिमाका प्रक्षालन करके उन अशुद्ध मलमलके वस्त्रोंसे पोंछना घोर अनर्थ है ! कमसेकम इस प्रकाशमय जमानेमें तो जैनियोंको अपने मंदिरोंमें ऐसे वस्त्रोंका उपयोग नहीं करना चाहिये ।

हम साथमें यह भी कह देना चाहते हैं कि प्रत्येक स्त्री पुरुष बालक बालिकाको शुद्ध खादी उपयोगमें लाना चाहिये। खादीका उपयोग करना देश, धर्म, समाज एवं पवित्रताका रक्षक है। जैनियोंको तो इन तमाम राष्ट्रीय बातोंमें जागे जाना चाहिये। कारण कि इनसे जैन धर्मका अनिष्ट संबंध है। प्रत्येक भारतीय यदि चर्खा और लकड़ी काटना सीख जाये तो सबके लिये

सब प्रकारकी खादी सुगमतासे मिल सकती है। हम अनुभवसे कह सकते हैं कि खादी पहिरनेसे आर्थिक लाभ तो होगा ही—मगर मानसिक पवित्रतामें भी यह प्रधान कारण है। खादीकी उपयोगिताके विषयमें बहुत कुछ लिखा जासकता है। हम अपने पाठकोंसे समाज अनुरोध करते हैं कि वे आजसे विदेशी वस्त्रोंका परित्याग कर खादी या स्वदेशी वस्त्रोंके ही उपयोग करनेकी प्रतिज्ञा लें। और राष्ट्रीय स्वतंत्रताके अहिंसात्मक संग्राममें तन मन धनसे भाग लें। जैन धर्मके लिये आधुनिक तमाम राष्ट्रीय बातें अनु-कूल हैं। इनमें सहयोग देना मानो जैन धर्मके किन्हीं सिद्धान्तोंका प्रचार करना है।

* * *

श्री १०८ मुनिश्री ज्ञानदसागरजीके वियोग-के शोकको हम नहीं मुनि चंद्रसागरजीका मूले थे इतनेमें परताव-वियोग। गढ़में गत ता० ११

मार्चकी रात्रिको ११ बजे

श्री १०८ मुनिश्री चंद्रसागरजीका अतीव वृद्धावस्थामें व बहुत दिनोंकी रुकबाकी बीमारीके बाद स्वर्गवास होगया। आपका कलटनमें वीसा हफ्त ज्ञातिमें सं० १९१७में जन्महुआ था तब नाम परमशीमाई था। आप साधारण पढ़ेकिये व सरल परिणामी थे। आपने सं० १९६९में कुरुक्षेत्रमें छुट्टक, सं० १९७०में परंढामें ऐकक व १९७२में झांझरपाटनमें मुनि दीक्षा ग्रहण की थी तब गुजरात व उत्तरप्रान्तमें आप एक ही मुनि दीख पड़ते थे। पक्षाघातकी

बीमारीसे आप कई वर्षोंसे बीमार होते हुए भी आहारविकी क्रिया बराबर पाकते थे । आपका सचित्र परिचय हम पिछले "त्रि० जैन" के कितनी विशेषांकमें प्रगट कर चुके हैं । आपकी आत्मको क्रांतिकाम हो यही हमारी श्री जिनेन्द्रदेवसे प्रार्थना है ।

* * *

जबारा गुजरातना हरेके हरेके भाष अहेन अंकुलेश्वर निवासो वीसा छोटालाल गांधीतुं मेवाडा गति सेठ छोटालाल अलिदान ! धेलाभाष गांधीथी परिचित छेव आपे गुजरातना दिगम्बर जैन भाषजोनी धार्मिक तेमज सामाजिक उत्तमि भाटे अनेक प्रकारना प्रयत्नो कर्मा हुता पक्षु ते उपरांत आपे केंदलांक वर्षोथी राजकीय लडवमां त्रिपलाप्युं हुतुं ते अेटले सुधी के आप १०-१२ वर्षोथी तो व्यापार धधो करे सुधी प्रजकीय सुधारथुा अने राजकीय कार्योभाज रन्धा पन्धा रहेता हुता, अने शुद्ध आदीधारी पन्धा हुता. आप अेक वपत अंकुलेश्वर भुनीसी-पालीडीना मेम्बर युंटावा हुता ते उपरांत तालुका जेडं अने अहम्य लख्खा बोक्क जेडंना मेम्बर पक्षु वर्षोथी युंटाता आन्धा छे. तेमज केंदलांक वपतथी अंकुलेश्वर नागरिक सडकारी अंकना अेरमेन हुता. आप नागपुर, राष्ट्रीय जंडा सत्याग्रह वपत जेव पक्षु पुशी पुशीथी गया हुता ते ते समये देवनी उत्तम सेवा पन्वनी हुती ते पछी सत्याग्रह अने असहकारना कार्यकम महात्मा गांधीअजे सुलतनी राणवाधी आप शांत रहेता हुता अने ठांअिसना कार्यथी असम रहेता हुता. पक्षु गत बाहोर केअेसे पक्षु स्वतन्त्रतातो हराव कथो त्पारथी आप पाछा शांति दिन राष्ट्रीय कार्यमां संबन्ध गया हुता अने महात्मा गांधीअजे भीडानो, सरकारी कानून शंभ अवातुं थिडिं कडपुं के तरवज तेषां आपे

जीपलाप्युं. महात्माअ अभधाथीअथी कुच करवा करता अंकुलेश्वर पधारेला त्पारे आपे उत्तम प्रभारतुं स्वागत क्युं हुतुं ते सैनिक तरीके अहार पड्या हुता ते पछी ता. ६ अग्रेसे महात्माअजे हांडी (बलाबपुर) मां ६१ सैनिको साथे भीडाना कायदानो अंग प्रारंल कथो ने सर्वत्र जेव प्रमाथे सामुदायिक अंग करवानो महात्माअतो आदेश मज्यो के आप पक्षु अंकुलेश्वरनी पासे अेक गावमां न्यां दरियाअ भीडुं भणी कडे छे, त्यां अेक सैनिकानी टुकडीने लडने गया हुता ने भीडाना कायदानो अंग कथो हुतो ते उपरथी सरकारे आपने पकड्या अने १ वर्षनी सादी देवनी सज्ज करी अमदावावनी सायरभनी जेलमां आपने भेकल्या छे. अंकुलेश्वरनी जनताअे तो आपनुं जे अपार अभिनंदन क्युं तेनी तो प्रशंसा अजे सुं करी अकअे पक्षु सरकारे तो अंकुलेश्वरथी लडवती वपते अेअने यारनी मारक जेडी पडेरवावी हाथे दोरडां यांधीने देवमां लडववानो शिष्टायार ! अतवी पोतानी अान अतावी हुती के जेथी लाके करी गय पक्षु आथी तो अंकुलेश्वरमां ने लख्य लखामां अज्ज प्युस्सी आन्धो छे ने हेर हेर भीडाना कायदानो अंग अड रहेता छे तेमज आपनी सो. पत्नी अालेकअहेन पक्षु अंकुलेश्वरमां स्थियो द्वारा उत्तमोत्तम जगृति करी अंकुलेश्वरने जन्वनी रखां छे. आज गुजरातमां भाष छोटालाल गांधीनी पोत पडी छे पक्षु अमने तो आशा छे के आप वजुंज गददी धुटा वध देशने पोतानी सेवानो लाभ डरी आपी शक्येज.

मूरत-में प्राथमिक स्कूलोमें महावीर जयंतीकी जाम छुट्टी श्री० गमनबाळ सुतरियाके प्रयत्नसे हुई थी । इस प्रकार हरएक स्थानपर प्रयत्न करके महावीर जयंतीकी जाम छुट्टी कराना चाहिये ।

नरखेड-में सेतवाळ समाजका प्रथम अधिवेशन ता० ६ अमेकको हीराचन्द्र आवाणेके समापनमें होगया ।

जैनसमाचारवर्ति

जैन सैनिक—महात्मा गांधीजीके नमक सत्याग्रह सैन्यमें बंबईमें चंदुकाळ अमनादास बलारिया (कलोक), वनकाळ केवलदास (मस्तिपाव), गिरधरकाळ ईश्वरदास (कलोक) व सौ० हीराबहिन नेमचंद शाह कलोकने अपने नाम पविष्ट करा दिये हैं ।

शे० जेनोका—करीब १००० यात्रियोंका एक संघ जमी शिखरजीकी यात्राथं एरीनपुरासे स्पेसक ट्रेनोंद्वारा गया था जिसमेंसे हैजा चेचक आदिसे करीब १०० आदमी मर गये । संघ पतिके पुत्रका भी वियोग होगया है ।

महावीर जयंती उत्सव ।

गत चैत्र सुदी १२को महावीर जयंती उत्सव बम्बई, अहमदानाद, देहली, हिसार, सनाढद, कलितपुर, मोरेना, नावां, इटारसी, अजमेर, निसरपुर, कश्कर, जगाधरी, हांसी, ठावर, सागर, कारंजा, सरचना, साहूमक, पाटन, मालंवर, हरदा आदि १ स्थानोंपर अपूर्व धूमधामसे मनाया गया था । जिसमें बम्बईमें विदेशी रत्न स्वाग व स्वाधी ग्रहण करनेका अच्छा उपदेश हुआ तथा नमक कानून तोड़नेके सत्याग्रहमें जेकगधे हुए श्री० छोटालाल घेलाभाई गांधीको व बंबईसे सत्याग्रह सैन्यमें पविष्ट होनेवाले गीरधरकाळ शाह, शांतिकाळ शाह व सोमचंद डाह्याभाई व अवेरचंद मगनकाळको अभिनंदनका प्रस्ताव प्राप्त हुआ था । अहमदाबादमें इस

समय दिगंबर जैन गुरुक मंडळ स्थापित होकर उसके १८ मेम्बर बने जिसके मंत्री चिमकाळ बकीक व मास्टर छोटैकाळजी परवार नियमित हुये व छोटैकाळ घेलाभाई गांधी अंकलेखरका जेल जानेके लिये अभिनंदन किया गया ।

झाबुआ—में पञ्जकाळजीकी चर्मपत्नी छाणी-बाईने रविवार व्रत उद्यापन किया तन चक्रवात्रा निकाकी गई व ९०), उपकरण यंदिसमें तथा १००) संस्थाओंको दान किया गया ।

उत्तम जैन चित्रकार—बंबईकी हमारी श्री० गु० जैन बोर्डिंगके विद्यार्थी एम० एन० नेमिकाळ जैन (मूडवित्री) ने चित्रकारीमें अति उत्तम शिक्षा प्राप्त की है । आपने १४ तीर्थंकर, ऋषभदेव, पार्श्वनाथ (तीन प्रकारके), महावीर भगवान, पंचपरमेष्ठी, संसार सुख, आहारग्रहण हुमच पञ्चावती, पांडुका शिवा व देवेन्द्र पूषके रंगीन चित्र बनाये हैं जिनको जर्मनी सेनकर रंगीन छपवाना चाहते हैं जिसके लिये सहायकी उन्हें आवश्यकता है । पत्र व्यवहार सुमि० बोर्डिंग तारदेव, बंबईसे होसकता है ।

बड़वानी—में बाबडी बनानेके लिये जानकी-बाई कककत्ताने १०००) प्रदान किये हैं ।

डुंगरपुर—में वैशाल बदी १२ को वेदीप-तिष्ठा होगी ।

प्रतापगढ़—में दि० जैन माहर्मोंमें बहुतसे कम एक ही मुहूर्तको निकाळकर करनेका क्रि-वाज होनेसे योग्य संबंध नहीं होने बाधा इससे वहां ४० प्रतिष्ठत निचवाएं हैं ! कुत्स ! क्या परतापगढ़ पंचायती इस कुपथा पर विचार अब भी नहीं करेगी ?

श्री जगनन्धेनके स्मारक फंड-में करीब ६०००) श्रीमती ब० कंकुबहिन व जैन महि-
कास्न ककितानहिनके प्रवचनसे स्त्रियोंकी ओरसे
भरे गये हैं जो आश्रमका स्वामी फंड
की १०००) भराकर आश्रमका स्वामी फंड
ठीकर एक साल तक करना चाहती है । व
सुरतमें खोले हुए स्मारक फंडका उपयोग मग-
नबाईके नामका कोई धार्मिक कार्य करनेमें
होया । इस फंडमें कमसेकम पांचर रुपये तो हर-
एक पाठकको सुरत अवश्य मित्रवाना चाहिये ।

कापता-महाडा (इन्दौर) से हुकासी नामकी
६ वर्षकी जैन लड़की कहीं कापता होगई है ।

इयारसी-में पं० सुन्दरकाक जैन वैद्यकी
चिकित्साप्रणालीसे खुश होकर रा० सा० नंद-
किशोरजीने आपको साइकिल भेंट की है ।

सोनागिरि-तीर्थकी सोनासण वाले संघने
१७६) दिये थे । संघपति सेठ जीवाभाई
डगरचन्द गांधीने सब १०० यात्रियोंको प्रत्ये-
कको ११) यात्रार्थ प्रदान किये हैं ।

सोजीत्रा-आश्रमको श्री० मैनाबहिनके
प्रवचनसे १७) राजापु, १२) दाहोद, ९)
शाबुजा, २०॥) स्तकाम, १४) बड़नगर, १९॥)
मठ, २८) बड़बाणी, ९८) इन्दौर, व १६२)
कुटकर भिकर २७०।=) सहायता चैत्र सुदी
१ तक प्राप्त हुई थी ।

करहक व कंपिकाजी-का मेका भूमिपामसे
होगवा ।

कुडची अत्याचार-के विषयमें सरकारने जो

रिपोर्ट निकाली है उसमें वहां पब्लिक जैन
मंदिर न होनेकी बात किली है वह विकसुक्त
गक्त है । हम हमारी आंखोंसे वहां अलग जैन
मंदिर देख जाये हैं । दुःख है कि अभी तक
इस अत्याचारका न्याय नहीं होता । जांच
कमीशनकी रिपोर्टें शीघ्र ही प्रकट होगी ।

जगमोहनदास हीराकाक शाह-बंबई ।

जारखी-विद्यालयकी परीक्षा २१ मईको
होगी । व विद्यालय १६ जूनको खूलेगा ।
इसके लिये चौथी कक्षा पास < विद्यार्थियोंकी
आवश्यकता है ।

भावनगर-में गिरनारजीकी यात्रासे लौटते
हुए एक चंद्रसागरजी, ब० आदिसागरजीने
पचारकर संतोकबहिन पाठशाळामें अच्छा उप-
देश दिया । पाठशाळाके कार्यसे भी आप अतीव
संतुष्ट हुए । सुलोचनाबहिन अच्छी तरहसे
पढ़ाते हैं ।

एटा-में ता० १२ अप्रैक तक श्री १०८
आचार्य श्री शक्तिसागरजीका संघ पहुंचा होगा ।

मुनिश्री मूर्यसागरजी-का संघ कुंडकपुर
पहुंच चुका है । यहां एक माहतक ठहरेंगे तथा
वैशाल सुदी १को यहां विमानोत्सव भी होगा ।
दमोह स्टेशनसे कुंडकपुर जाया जाता है ।

मुनिश्री चन्द्रसागरजी-के वियोगमें सागर
पाठशाळामें शोक सभा होगई । विद्यार्थी दयाचं-
द्रने स्वरचित शोक कविता पढ़ी थी ।

सिकोंडी-के तारनपंथी मंदिरमें दूसरी प्र-
तिमा स्थापित हुई ।

कोठिया-(मेवाड़) में वैशाल सुदी १ से ६
तक वैदी प्रसिद्धा होगी ।

પૂજ્ય મગનબહેનને- નિવાપાંજલી !

લાખતાં લેખિની સળકી પડે છે, શરીર સ્થિર રહી શકતું નથી, મન કલ્પાંત કરે છે, નયન આંસુ સારે છે તે હૃદય કાઠી જાય છે કે-જૈન ધર્મ રતન-જૈનકુલ ભૂપત્ય ભારત મહિલા ઉદ્ધારક-આદર્શ સ્ત્રીરતન-વિદુષી મગનબહેન જે૦ પી૦ ના આઠાળે અવસાનની તોષ લાખતી પડે છે.

આત્મારે હું દિંદથી ઘણું દૂર છું, પણ જ્યારે દિંદમાં હતો, ત્યારે આરેક વર્ષ ઉપર પૂજા મગનબહેનને જનને જોયાં હશે, ત્યારે પણ મેં તેમના મુખાર્વિંદપર સમાજોદ્ધાર, અજ્ઞાઉદ્ધાર, ધર્મોદ્ધારની જે લાગણી જોએલી છે, તેમના મુખથી જે બે શબ્દો સાંભળેલા છે, તે ધમક મારી કલ્પના બહારની હતી. તેનું વર્ણન કરવાને મારી લેખિની સામર્થ્યવાન નહોતી.

જૈન સમાજનું નરીખ કુરેલું હશે કે પછી શ્રાવિહાશ્રમની શિષ્યામિતે પૂજ્ય મગનબહેનના સંસર્ગથી દૂર રહેવાનું નિર્માયું હશે, તેથી મગનબહેનની તખીમત અગડી, તે તેમને સાંજુવલા રહેવું પડયું. તે દુષ્ટ કાળે, તેમને ત્યાંજ ત્રવટી લીધાં. મરણ દરેકને આવવાનુંજ છે, પણ આવા સમાજોદ્ધારક રતીનું મરણ જરૂર દરેકને દુ ખકતાંજ નિવડે છે. હણુ છે કે—

લાખ મરજો, પણ લાખિનો પાળનાર ન મરશો !

એ કહેવત સત્ય છે, તે તે આજે આપણને મગનબહેનની એ હાજરીમાં જણાશે. ભારત જૈન મહિલા પરિષદે, શ્રવીહાશ્રમ અને સમગ્ર જૈન સમાજને મગનબહેનની ખેટ અચુક લાગશે.

શ્રી ન્યાયી પરમાત્મા પાસે આપણે એજ ઠમ્ઠાએ કે તેમની જગ્યાએ તેવાંજ વિદુષી બહેન આપણને પ્રાપ્ત થાયો, અને સમાજને લાભાર્તાં નિવડેા.

આણેક જેવા પ્રેમવશાલી પિતાની પુત્રી હોવા છતાં જે બહેને સાદાષ અને સમ્યચરિતો અમુલ્ય પેપાક ધારણ કરી આખા સ્ત્રી સમાજપર નહિ, પણ આખા માનવ સમાજપર જે ઉચ્ચ સંસ્કારની ઉંડી છાપ પાડી છે, તે જે માણસ હશે, તે તો જૂતી નહિ જાય.

ગુજરાતની અજાન દિ૦ જૈન સ્ત્રી સમાજને સુવચરિત અને ધર્મને રરને ટોરવાનું માન કોષપણ પાત્રને હોય તો તે સર્ગીય મગનબહેનનેજ છે.

કારણ કે જગત માત્રમાં સંસારને સુધારનાર કે મગાડનાર સ્ત્રીજ છે. તે તે સ્ત્રીએ રૂપી સંસાર સારથીએને મગન બહેનેજ ઉપદેશથી સુધારેલાં હોષ ઉચ્ચ ચારિત્રી પણુ તેમણેજ છાપ પાડી છે.

કોષપણુ દેશની ઉન્નતિને આધાર સ્ત્રી શિક્ષા પર રહેશે છે. તે તેથીજ પ્રખ્યાત સત્રાટ તેપોલીયનને કહેવું પડયું છે કે—

કહે નેપોલીયન દેશને કરવા આખાદાન. સરસ રીત તો એજ છે, ત્રા માતાને જ્ઞાન.

એ નેપોલીયનનું વક્ત્ર પૂજ્ય મગનબહેને યથાર્થ કરી અવત્ત્યું છે. મગનબહેને ગુજરાતમાં જૈન શ્રાવીહાશ્રમ પ્રોડી, જૈન સમાજપર અનહદ ઉપકાર કરેલા છે. તેમનાં કાર્યોની નક્ક ખીજે ઘણું રદ્યો થએલી હોષ તેમણે સમગ્ર ભારતવર્ષમાં સ્ત્રી શિક્ષાની નીવ તાંખેલી છે, એમ કહીયું. તો તે અતિશયોક્તિ મગુશે નરિ.

નિતાને મજેસે માનવંતો ઇલકામ પણ સુશીલ સર્ગીય બહેન મેગરવા અવ્યવશાળી થયાં હતાં. અર્થાત તેમના પરોપકારનાં કાર્યોથી અને સલ્ય પરાયણતાથી આકર્ષાઈ સુન્મતી સરકારે તેમને જે૦ પી૦ નો માનવંતો ઇલકામ આપેા હતો.

જૈનો માટે એ એજા હર્ષની ત્રાવ નહોતી. કે જ્યારે ખીજ સમાજોમાં પણ જે૦ પી૦ થએલા પુરૂષો મણ્યા માંડયા હતા, ત્યારે જૈન સમાજમાંથી મગનબહેન જેમાં વિદુષી બહેન જે૦ પી૦ થયાં હતાં.

ભારત જૈન મહિલા પરિષદ સ્થાપવામાં મગનબહેનજી આગેવાની બરોડા ભાગ લઇ પ્રણી મહેનત લીધી હતી. જે કે તે સંસ્થા આપણા ગુજરાત પ્રાંતમાં બહોળી જાણીતી છે, પણ તેણે ઉત્તર હિંદુસ્તાનમાં પ્રણીજ પ્રગતિ કરેલી છે.

મગનબહેન ગુજરાતમાં જેટલા જાણીતા છે. તેથી પચાસ વર્ષના હિંદુસ્તાનના ખીજ ભાગોમાં જાણીતા છે.

મગનબહેન ધર્મમાં હોવા સાથે વ્યવહાર-કુશળ પણ હતાં. તેમના સહવાસમાં રહી જે બહેનોએ અભ્યાસ કર્યો છે-ધર્મ લાભ લીધાં છે, તે તેમના વાક્યવૃત્તિનાં વખાણ કર્યાં સિવાય રહેતાં નથી.

મગનબહેન ચારિત્રની મૂર્તિ હોઇ. તેમના હંસા ચારિત્રની છાપ તેમની શિષ્યાઓ ઉપર બેઠેલી પડતી કે તેમના શિષ્યવર્ગમાંથી ભાગ્યેજ કોઇ અયોગ્ય વર્તનશાલી હશે.

જન્મતમાં જૈન સમાજને શોભા આપનાર મહિલા માત્રમાં માનવંતા હિંદુસ્તાનમાં શ્રાવણીકા શિક્ષણની પહેલ કરનાર મુખ્ય શ્રાવણીકા અને ભારત. જૈન મહિલા પરિષદને તન, મન, ધન, અર્પણ કરનાર જૈન મહિલારત્ન ત્રિદુપી મગનબહેના અમર આત્માને પ્રભુ શાંતિ આપે એજ ઇચ્છા છે !

હિંદુસ્તાનના જૈન માત્રની ધરજ છે કે મહુ-મના નાગની યાદગીરીમાં તેમના નામનું એક સ્મારક ફૂંટ ખોલવામાં આવ્યું છે તેમાં યથાશક્તિ મદદ કરવી એ આપણી ધરજ છે ને તે ધરજમાંથી ગુજરાત નહીં સુદેશ એમ આશા રાખું છું. ને હું પણ ૫૧) ની તુચ્છ ભેટ આપું છું.

પ્રભુ મહુમના આત્માને શાંતિ આપે એજ ઇચ્છા. લખનાર હું છું દુઃખિન.—

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ કાણીસાકર
કંપાલા-(ધુમ્બાકા, એફિસ).



જૈન મહિલારત્ન મગનબહેનનો વિયોગ ।

હરિગીતછંદ.

ઝંડો જરીનો જૈનનો, ઝગકાવતાં જે બહેન તે,
થઇ આસ યમના મુખમાં, સિધાવીયાં સ્વર્ગેય તે.
જૈનો તણા જગ મંડળે, જે બહેન નાવિકસમહતાં,
રે હાય, આજે તેમનો, પતો નહિ આ લોકમાં.—૧

જે. પી. તણા ઇલકાપથી, માણુકે તેા શોભિત હતાં,
જૈનો બધાં જેના થકી, જૈનરતને પમ્યા હતા.
તેની તનય મગન હતી, સત્પાત્ર રૂપે નારમાં,
રે હાય, આજે તેમનો, પતો નહિ આ લોકમાં.—૨

નાની વયે વૈધવ્યથી, જે બહેન ત્રિદુપી થયાં,
પાળી અખંડ ઇલાચર્યને, જેણે સુશીલને સાચવ્યાં.
દિગમ્બરે ચેતામ્બરેને, મોઘ જેણે આપીયાં,
રે હાય, આજે તેમનો, પતો નહિ આ લોકમાં.—૩

તન-મન અને ધન વાપરી, શ્રાવક સ્ત્રીઓને ઠારણે,
આશ્રમની નીચ નાંખીને, આઠ્યાંજે ધરથી પારણે.
શ્રાવક સ્ત્રીઓના ધામમાં જે, આદ્ય સંસ્થાપક હતાં,
રે હાય, આજે તેમનો પતો નહિ આ લોકમાં.—૪

જે. પી. પત્ની જેનો મહી, જશ્નજૈનનો જગકાવીઓ,
જેની કૃતિથી કૃત્ય થઇ, સૌએ સદા વખાણીયાં.
ભારત તણી મહિલા મહી જે, રતન અમુલ્યમ હતાં,
રે હાય, આજે તેમનો, પતો નહિ આ લોકમાં.—૫

વૃત્તિ સદા જે બહેનની, સુધારવાની નારને,
શ્રાવક છતાં સૌ સાથે રહી સેવા કરે ભકારણે.
સૌ નારના શિરોમણી સખ, શ્રાવિકા મગન હતાં,
રે હાય, આજે તેમનો, પતો નહિ આ લોકમાં.—૬

જૈનો જરા પણ લાગણી જે, બહેનના માટે હશે,
સ્મારક કરેને તેમનું, તમ નામ રહું દીપરો.
જેના પ્રતાપે હિંદ મધ્યે ઉત્પતિ છે નારમાં,
રે હાય, મોહન તેમનો, પતો નહિ આ લોકમાં.—૭

મોહનલાલ મથુરાદાસ-કંપાલા (આફીલા.)

લગ્નમાં મેવાડા માઈયોનું કર્તવ્ય.

(લે૦-રતીલાલ કેશલલાલ શાહ-ધારવાડ)
હુમ શાંતિ બંધુઓ !

આવતા વેશ્યાખ માસમાં આપણા બંધુઓ લગ્નો કરવા માટે સેજવા ગામે ભેગા મળનાર છે. આપણામાં કોઇપણ કુટુંબ એવું નહિ હોય કે જે વેશ્યાખ માસમાં સેજવા ગયા સિવાય રહે એટલે કે આપણી બધી શાંતિ ભેગી મળશે. આપણે બધાએ ભેગા મળીને આપસ આપસના ક્રાંદાઓ તથા ખોટી મેજામજામાં વખત ન ગાળતા આપણી શાંતિની ઉન્નતિ કરવાનાં પગલાં લેવાં જોઈએ. આપણે ભેગા મળીને જે કરવા લાયક છે તે નીચે જણાવવાની રજા લઉં છું:—

હવે તો શારદાખીલ અમલમાં મુકાશે એટલે દરેક વર્ષની માફક આગલગ્નો તો આ વખતે નહિ થાય એમ ધારૂં છું. દરેક વખતે તો આજકાની ઉમ્મરનો વિચાર કર્યા વગર, તેમને સંસારમાં શું શું કર્તવ્ય કરવાના છે તેનું બાન થયા વગર તેમનું ભરણુ-પોષણુ કરી શકે, એવી યોગ્યતા પ્રાપ્ત થયા વગર, વિદ્યભ્યાસ પુરો થયા વગર, ધણું ખર્ચ ઠીંગલા-ઠીંગલીની માફક પરણુવાી દેવામાં આવતાં હતાં, અને તેમ થવાથી તેમને આખી જીંદગી દુઃખમાં ગાળવી પડતી. પરંતુ હવે તેની બધી દિવારો તુચિંતવન કરતું યોગ્ય ન કહેવાય. આશા છે કે બંધુઓ બધા ભેગા મળીને શારદાખીલના પ્રમાણેજ વર્તન કરવાનું યોગ્ય ધારશે.

વળી આજકાના વિવાહ (સગપણ) અલ્પ વયમાંથીજ-આજકા એ કે ત્રણ વર્ષનું હોય તર-થીજ કરી દેવામાં આવે છે. તેવી રીતે વિવાહ કરવાથી આજકાની ઉમ્મરનો તરશત રહી શકતો નથી. વળી આજકાની પસંદગી પણ આગપણથી કરેલી હોય તેમાં પણ મોટપણે ફર પડી જાય છે. માટે આજકાનો વિવાહ તો મોટી ઉમ્મરનાં સમ-જવા લાયક થાય ત્યારેજ કરવો જોઈએ. નાન-

પણમાં વિવાહ કરેલામાંના પતિ પત્નિ વચ્ચેના ત્રણેય સંબંધ ન હોવાના ધણા દાખલા મળી આવે છે. આ માટે ઠપકને પાત્ર તો તેમનાં મા આપજ છે. માટે માયાપો કાંઈ સમજે તો સાઈ! આપણામાં જે લગ્નો કરાવવામાં આવે છે તે ત્રણેય વીધી અનુસાર કરાવવામાં આવતાં નથી. ગોર મહારાજને એક રાતમાં દસ પંદર લગ્નો માટે આમંત્રણ હોય એટલે ખિચારા જે ચાર જેવા તેવા અશુદ્ધ શ્લોકોના ઉદગાર કાઢી, હરત-મેળાપ કરાવી, ફેરા-ફેરાવાની પોતાનું દાખું ખર્ચ કરે છે. ખીચારા પતિ-પતિની શું શું ફરજો (Duties) આ સંસારમાં પ્રવેશ કરીને તેમને અનુભવાની હોય છે તેનું પણ જાન આપવામાં આવતું નથી. આપણા જૈન શાસ્ત્રમાં લગ્નની વિધિ જણાવેલ છે જે અત્યારે દરેક બંધુના બંધુવામાં હશેજ. તે પછી શાસ્ત્રોની પ્રચલિત કુવિધિથી શામાટે આપણે લગ્ન કરાવવાં જોઈએ? દરેક ત્રીજે વર્ષે આપણે લગ્નગાળો ભરાય છે, જેમાં પચાસ સાઠ લગ્નો થતાં હશે, પરંતુ મેઠની વાત છે કે એ ચાર લગ્નો જૈનવિધિ અનુસાર થતાં હશે, એ આપણી કેટલી અગાંતારરથા સુચરે છે? તો દરેક શાંતિ-બંધુ ત્રી ફરજ છે કે પોતાનાં આજક-માલિકાઓનાં લગ્નો જૈનવિધિથીજ કરાવવાં જોઈએ.

આપણી શાંતિમાં મરણુ પાછળ રહવા-કુટ-વાનો, પ્રેત-ભોજનો, શ્રીમંતોના મોટા વરાઓ, ત્રિજેરે ધણા ધણા દુષ્ટ રિવાજો જડમૂળ ધાલી એટલે છે તે દૂર કરવા માટે મેવાડા બાઈઓની હજી આંખ ખુલતી નથી. યેડા વખત ઉપર આશુદ્ધ સુકામે આપણે બધાએ ભેગા મળીને જુના રિવાજોમાં કેટલાક સુચારાઓ દાખલ કરવા માટેના કરાવો પસાર કર્યા હતા, પરંતુ દિલગી-રીની વાત એ છે કે તે કરાવો તો કામજોમાંજ રહી ગયા, અને તે વખતે આગળ બેસનારા બધા બાઈઓ તેનાથી કાંઈ લાભ થાય તેમ નથી તેવું ધારીને તેનું ઉલ્લંઘન કરવા લાગ્યા. આ બધી આપણી નિર્ભંગતા નહિ તો ખીંટું શું સુચરે છે?

તો તે કરવો અમલમાં મુકવાનો અર્થએ પ્રથમ કરવો જોઈએ.

વળી આપણી યાત્રિયા સંમંડન કે બીજું કોઈ યાત્રિયું મંડળ નથી. હાલમાં આખા ગુજરાતમાં બીજી કોમોમાં દરેકમાં પોતપોતાની વિદ્યા-વ્યાસમાં મદદ કરવામાં જુના રિવાજોને દૂર કરી તેમાં યોગ્ય સુધારો કરવા વિષેમાં ભાગ લે છે. પરંતુ આપણા કમનસીબે આપણામાં તેવું કંઈ છેલ્લું નહિ. વિદ્યાવ્યાસ તરફ તો કોઈની રૂચી છેલ્લું નહિ. Graduates તો યાત્રિયામાં મદદમાં માંડ્યા છે, અને યોડું અગ્રેજી જાણનારા પણ યોડાકલ્મ મગી આવે છે તો ઉપર જણાવેલ બધાં કાર્યો કરવા માટે એક મંડળ સ્થાપવામાં આવે તો યાત્રિયા કંઈ ઉન્નત થઈ શકે! આશા છે કે કોઈ બાઈ બહાર પડશે, અને જરૂરી કોઈ મંડળની સ્થાપના કરશે.

બી કોળવણીનો પ્રચાર પણ આપણામાં બીલકુલ છેલ્લું નહિ તેમ કહીએ તો કંઈ વાંધો નથી. કોઈ કોઈ બાળિકાઓ મેચાર ગુજરાતી ચોપડીઓ બહુલી નીકળી આવે છે તે કંઈ કેલવણી કહેવાય નહીં. તેઓને ધર્મ શું તેવું જાનજ હોયું નથી. અવ્યાસ ક્યાં વગર ધાર્મિક પુસ્તકો પણ કેમ વાંચી શકાય ? અને તેથી તેમની આખી જીંદગી આપોઆપમાં લટકામાં, નિંદા-કુધલી કરવામાં વિગેરેમાં પસાર થાય છે. યોડાં વર્ષથી સોજીત્રામાં શ્રાવિકાશ્રમ સ્થાપવામાં આવેલ છે, પરંતુ તેનો હજુ બરોબર લાભ લેવાતો નથી. તેના માર્ગે સ્વર્ગસ્થ મહિલાસ્ત્રમ મગનબંડેન જેવી મહિલાઓ પેદા થવી જોઈએ. ત્યારેજ તેવું સાર્થક મણામ. આશા છે કે યાત્રિ-બંધુઓ પોતાની બાલિકાઓને આશ્રમમાં મોકલી ધાર્મિક શિક્ષણ અપાવી તેમણે કંઈ કલ્યાણ કરશે.

આંતમાં જીનેન્દ્ર પ્રજી પ્રત્યે પ્રાર્થના છે કે જીવે યાત્રિ-બંધુઓને ઉપર જણાવેલ વિચારો અમલમાં મુકવાની સદ્મુદ્ધિ આપો જેથી યાત્રિયું અને આખરે દિગંબર જૈન સમાજનું કલ્યાણ થઈ શકે ! અસ્તુ ! હિં ગહુના ?



એક્યતાને પંથે ।

(લે. ૨૦-૨૧૦ દેસાઈ)

જૈન સમાજમાં આ રાષ્ટ્રમે એક્યતાની જરૂરીઆત સંખંપી ખે મત હોઈ શકેલ નહિ. કારણ એક્યતા એ એક એવું મજબુત બળ છે કે તેના સામે દુનિયાનું કોઈપણ બળ ટકી શકતું નથી. એ ઉપરાંત એક્યતાના બીજાં અનેક શાયલ્લો છે. અને જો જૈન સમાજે આ પગલિના જમાનામાં પોતાનું પૂર્વિત સ્થાન પાછું પ્રાપ્ત કરવું હોય તો સમગ્ર જૈન પ્રજાએ એક થયેલ હુટકો છે. આ સિવાય જૈન પ્રજા પોતાની પૂર્વિત સ્થિતિ પ્રાપ્ત કરી શકશે નહિ.

અનેક્યતાથી થયેલાં ગુકશાનો.

પ્રિય વાંચકો, હું જે કહેવા માગું છું તે સમગ્ર જૈન પ્રજાને હૃદયોનેલ કહેવા માગું છું. કારણ એક્યતા ન સાયવરાથી જૈન પ્રજાની જેવી અધોમતી થઈ છે, તેવી બીજી કોઈ પ્રજાની બાગ્યેજ થઈ હશે. જૈનોએ પોતાના કુખંપણીલ શબ્દાર્થોનું પોતાનું મહત્વજાણી બીરદ શુમાવું છે. તેમજ આર્થિક નિર્મોલ્યતા, તથા ધાર્મિક તત્વ સંશોધકપણું તીવ્રરાતું જાય છે. જે જૈન હીમોસોફી જગતમાં સર્વે શ્રેષ્ઠ શીલસોફી મણાતી, તે હાલ ક્ષત કારણમાં અને તે ઉપર જીવનારા કૃટજાક પંડીતોમાંજ આવી રહી હોય તેમ જણાય છે. તેની હીમત અત્યારે નથી જૈનોને કે નથી જૈનોતરોને.

જૈનોમાં પડેલા પેટા તીબાઓ એજ કુખંપનાં જગતાં જીવતાં હાલકરણો છે કારણ દિગંબર સ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી તેમાં પણ વળી હસા-વીસા, નરસિંહપુરા, મેવાડા, કુમદ, ધત્વાદી વી-બામ જે આપણી સંકુચીત મનોદહાનો તાદ્રસ્પ નમુનો છે. આપણે એકનીરના તત્ત્વોને માનનાર એક બીજાને બીજ બીજ દૃષ્ટિથી પેખીએ જીએ.

તેટલું બધું અગાઉ આ બેદો પાડવામાં જે સીદ્ધાંતો આગળ મુકાય છે, તે ખરા સીદ્ધાંતો નથી. વીર પ્રજ્ઞના વચનોમાં મતભેદ હેઠળ સકેન્ન નહીં, પરંતુ આ બેદો પડાવનારની મહત્તાકાંક્ષા-ઓના ભાગ માત્ર થઇ પડેલા મુદ્દાઓને કાલમાં સીદ્ધાંતીક મતભેદો રૂપ આપાય છે. કારણ હાલમાં જેમ ડીક્ષા પ્રકરણને અંગે એ પક્ષે પડ્યા છે. જેવા કે બાલ ડીક્ષા વીરોધી અને બીજા તરફથી કરનાર, આ ચર્ચાઓમાં ડીક્ષા એ મૂલ સીદ્ધાંત કે જે અને પક્ષેને માન્ય છે, તે વસ્તુ વીતરાઇ અથવા રામવીજ્યયાત્રી પક્ષ પોતાની ખોટી મહત્તા સાધવા, આ તો ભાગવતી ડીક્ષાનો વીરોધી છે એમ કહી ઉતારો પાડવા પ્રયત્ન કરે છે. અને અંતે જેમ જીવકાલમાં બન્યું છે તેમ કદાચ આ અને પક્ષે પેટા તકેદું રૂપ ધારણ કરશે. અને જીવકાલમાં અનેલા આપણા મન્દાદિ બેદો તથા પેટા વિભાગોનો આમેદુષ્ટ ચિતાર છે. અભ્યાસ કરવા પછી કોપી સુગ મનુષ્ય પોતાને અમુક પંકિતભેદનો ગણી અભિમાન લેશે ? નહીં જ તો પછી આવા બીન કારણીય એક આગેવાનની અંતરંગ મહેન્દાઓને અંગે આપણી જૈનસમાજના છુટા પડી ગયેલા ભાગોને કામચોટ કરી એક અર્પી જૈન સમાજને એક અને અખંડિત ન બનાવવો ? અને હું આપણા આગેવાનોને વિનવું છું કે આપણી સમાજમાં પડેલા આ ભાગલાઓને સાંધવા નેઓએ કટીનક થવું આવશ્યક છે.

હવે આપણે વીચારીએ કે સામાન્ય પણ મતભેદોને અંગે પડેલા વાડાઓને સાંધવા લાંબા અધિભનની જરૂરીયાત છે, છતાં આપણે તો પ્રયત્ન કરેલ છુટકો કારણ પુરુષાર્થ સિવાય સીદ્ધિ નથી. તે ન્યાયે આપણે પુરુષાર્થ તો કરવો જોઈએ અને તેમ કરીશું તો બાબ નહિ તો કાલ અગર વર્ષે એ વરસે તેવું શુભ પરિણામ જરૂરથી અવતર્યાવિ શાવાતુંજ અને કદાચ હાલ તરત ચાટે આપણે આ વીષમ ના ચર્ચાએ છતાં હું આપણી દીગમ્બર જૈન સમાજમાં બીન કારણીય

પડેલા પેટા વીભાગો એકત્રીત કરવા તે અમર કસીને બહાર આવવુંજ જોઈએ કારણ આપણી સમાજમાં અને તેમાં એ ખાસ કરી મુખરાતમાં આપણા પેટા વીભાગો માત્ર ચારજ છે:—

મેવાડા, હુમઠ; નરસિંહપુરા ને રાંધવાળા.

મેવાડા ગાંઠમાં દુઃમદાયક વાત તો એ છે કે, તેમની ગાંઠમાં પણ તડ અમર જેને એકડા એ નામથી ઓલખીએ છીએ તેવા છે. જેવાકે અંકેશ્વરીયા ઇત્યાદિ. હું મારા એ બાઈઓને પૂછું છું કે, તમારા એ તડોમાં વિદ્વાન્વિતક મતભેદ શું છે ? જવાબ હું માતું છું કે નથી. એજ આવશે. તો પછી તમારી મરજી, ગાંઠના બાલકોને તમે જીવો છો, એમ કહી આપણી ગાંઠની છીનબિન દલા કરવાની શું જરૂર ? હું માતું છું ત્યાં સુધી તેનાં કારણો પણ મૈલિકલ્પ હશે. અંટકે કે તેઓ કન્યા અમારી તરફ નહોતા ઉતારવા અગરતો એવું બીજું કંઈક.

હવે બાઈઓ, વિચાર કરો કે વસ્તુસ્થિતિ શું છે ? આપણે આપણાજ પગ ઉપર કુકાડો નથી ચારવા વાર. અને તેમાં પણ કદાચ હું માતું છું કે (જોકે એકલ અમર નથી છતાં) હતા મેવાડા વીસા મેવાડા વીચેરે બેદો હશે. હું એ ગાંઠના આગેવાનોને વિનવું કરું છું કે આવા પેટા વિભાગોને ભેગા કરી આખી મેવાડા ગાંઠને એક જ દીગમ્બર જૈન સમાજની ગાંઠમાં જોડે એમની દેવી એ આપણા હીતનો ઉત્તમ ઉપાય છે.

હુમઠ-ગાંઠમાં પણ હતા, વીસા, કાઠવાલા, દેરવાલા વીચેરે બેદો છે. અને તેમાં પણ ઓંધું હોય તેમ કાઠ વિભાગમાં પણ ઓરણ પ્રાંતિજ્ઞા બેદોને રથાન મળ્યું હતું પરંતુ સદભાગ્યે એમના આગેવાનોએ દુરદેશીપણું બતાવી તેને એજવી દેવામાં આવ્યો છે. પરંતુ આટલું કરીને ભેસી નહીં રહેતાં હતા-વીસા વીચેરે બેદો બુદ્ધી બધ દીગમ્બર જૈન સમાજના ગૌરવવંતા અંગે રૂપે એક થાયા.

નરસિંહપુરા-ગાંઠમાં પણ હતાએ બેદો પડી

થયા છે. જે કે આ ગતિએ કેટલાંક વર્ષો થયાં સંમપુરા નામની પેટા ગતિને પોતામાં બેલચી દોષિલ છે, છતાં હાલમાં તે ગતિમાં કશું આદિએ ધર લાઈયું છે અને જહેર-નરસીપુરમાં તે વળી જે તડો પડી ગયા છે. આવા બેટો પડવાનું કારણ કંઈ સિદ્ધાંતિક મતબેદો નથી. પરંતુ બંને પક્ષના આગેવાનોના ખોટા મતવચનું પરિણામ છે. આ વસ્તુઓનો નાશ થવો અતિ આવશ્યક છે. કારણ આવા કલેશીયા અને અંગત મહત્વાંકોક્ષિયાથી આપણી ગતિઓની ખુવારી થાય છે. આ વસ્તુ ધ્યાનમાં લઈને બંને પક્ષના આગેવાનોએ એક થઈ જવાની જરૂર છે. કારણ આવા કમડાઓથી ગતિમાં કોઈપણ ગતતા સુધારા થઈ શકતા નથી. અને કલેશને પરિણામે તે ગાતીમાં અર્થહાનિ, ધાર્મિક પતનતા તથા કુરીવાળે દુર ન કરી શકાય તેવી રીતે જડ થઈ જાય છે. આ સ્થિતિમાંથી હંચ સ્થિતિ પર લઈ જવા માટે તેના આગેવાનોએ એક થઈ જવાની જરૂર છે અને કલ્પ્ય, જે આવા વીચારો જણાવતા આગેવાનો તેમ કરવા તૈયાર ન હોય એ આજના આજ્ઞાલમાં યુવાન વર્ગે એક થઈ તેમની જે સંકુચિત મનોદશા તોડી નાખી ગાતીને એક કરવી આવશ્યક છે, યુવાનોએ જ એકની ગાતીના આગાથી ધ્વજધારીઓ છે. ભવિષ્યના ગાંધી આગેવાનો છે, તે તેમણે જ્યાં જ્યાં જુદા અને અન્યાય હાલે ત્યાં પોતે આગેવાની લઈ તેના નાશ કરવા નિષ્ઠ થવું જોઈએ. શું જહેર નરસીપુરના કેમવાયલા યુવાનો પાસેથી સમજ આ પક્ષબેદ શીટાવી દે એમ ના છત્તે ? જરૂર, યુવાનોએ વડીલાધના ઓઠા નીચે ન દખાવે આવા. મીઠ્યા બેદોને દુર કરવા કમર કસવી જોઈએ અને આથી આગળ વધી આપણી આરે સમાજને એક થઈ અને બધા પેટા વીભાગો તોડી નાખી એક અને અખંડિત દીગમ્બર જૈન સમાજ રચવો જોઈએ. અને આ વસ્તુ તે સમાજના યુવાનો તથા અનુભવી અને જમાનાને ઝોળખનાર સુઘ આગેવાનો ધ્યાનમાં

લે તે જરૂરી આ વસ્તુ સીદ્ધ કરી શકાશે એમ માફ ખાત્રી બધું માનવું છે.

સમાજને એક કરવા તાત્કાલીક પગલાં શું ભરવા જોઈએ તેનો આપણે વીચાર કરીએ ગાતીના જે આગેવાનો એકઠા થઈ ગાતીનાં તડો સહજમાં એક કરી શકે, કારણ તેમાં ફક્ત મમતજ રહેશે હોય છે. તે આ જમાનામાં આવો જોણપક્ષ સમાજનું અહિન કરવો હોય છતાં આવો ખોટો મમત તે કોઈપણ જુદીવાન મનુષ્ય ન રાખે. જે તડના બંને આગેવાનો મમત છોડી દે તે એક થતાં જરા પણ વીલંબ નહીં થાય. આ પ્રમાણે સમગ્ર ગાતી એક થયા પછી ખીજી ગાતીઓ સાથે સંબંધ કેમ જોડવો તે વીહીત કરી શકાય. કારણ અહીં આ પણ ધાર્મિક તત્વોનો બેદ આપણા પેટા ગાતીઓમાં નથી જેવો કે દીગમ્બરોમાં અને સ્વેતાંબરોમાં બતાવાય છે. ત્યારે હવે સંબંધ નથી? ક્યાં તે ફક્ત કન્યા આપવા લેવામાં. અને સંબંધની જે છુટ થાય તે ગાતીઓ પેટા બેદ જુદી બધ એક અખંડિત દીગ જૈનસમાજ બને.

હવે આપણે વીચારીએ કે કન્યા નહીં આપવાનાં કારણ શા? ફક્ત ગાતી બેદ અને દુરના પ્રદેશોમાં કન્યા આપવી માખાપોતે કંઈક વચ્ચું પડવું હોય તેમ લાગે છે. આ બંને બાપતોનો તોડ થણીજ સહેલાઈથી થવા ઉપરાંત અને કન્યા આપવા લેવાની છુટ કર્યાથી એકજ સમાજ બનવા ઉપરાંત પણ અનેક ફાયદાઓ છે, ગાતી બેદને લીધે કન્યા અપાતી નથી. એવી દમ્બીબના જવાગમાં જણાવવાનું કે તમે (હુમડ, મેવાડા, ધર-સીંદપુરા, રાંઠવાળ) એક ખીજ સાથે જાઓ શકો છો, તમારા દરેક ધાર્મિક ઉત્સવો એક છે તમારા ધાર્મિક તત્વ એકજ છતાં તમારામાં ગાતીબેદ રહ્યાજ ક્યાં ? તે જવાબ એ આવશી કે કન્યા આપતા નથી માટે તેઓ ખીજી ગાતીના છે. આમ બંને વસ્તુનો જવાગ એકજ આવે છે. એટલે કે કન્યા નથી આપના માટે ગાતી બેદ છે અને ખીજી ગાતીબેદ છે, માટે કન્યા નથી આપતા

હવે આ જનામ કેટલા સંદોષ છે. એટલે કે જે કન્યાઓ આપવાની છુટી થાય કે તરત જ આપણા ગાતીબેદો અદ્વૈત થઈ જાય. આમ ગાતી બેદો તોડવાનું એ એક સમગ્ર દથીયાર છે અને આ પ્રમાણે આ દથીયારનો ઉપયોગ કરવાનું કામ જે ગાતીના ખાનદાન ગણાતા આગેવાનો કરે, નહીંકે સામાન્ય જનતાને હહે પણ અમલમાં મૂકી ખતાવે તો તરત જ આખો સમાજ તેમને અનુકરવા તૈયાર છે. પરંતુ જ્યાં સુધી આગેવાનોને પોતાના ઉચ્ચપણાનું, પોતાની ખાનદાનીનું અભીમાન છે ત્યાં સુધી આ વાત ખનરી શક્ય નથી, પણ આ જમાનો ખોટા ખ્યાલો અને અભીમાનનો નથી. એ વસ્તુ વીચારી ગાતી બેદ ઉંચા મૂકી પોતાની કન્યાઓનો જે યોગ્ય પુરુષ સાથે સંબંધ કરે તો તેનું જ જ દીગમ્બર જૈન સમાજની એકતામાં જરૂર આવવાનું.

આમ કરવાથી સમાજના વાડા નષ્ટ થવા ઉપરાંત ખીજ અનેક લાભો થશે. જેમ કે, કન્યા વિક્રમ અટકશે, ખાલલગ્નો બંધ થશે, વૃદ્ધ વીવાહ, તેમજ ખાલ વીધવાઓનું પ્રમાણ ઘટી જશે. અને આને અંગે વીધવા વીવાહનો જે અનુચીત પ્રશ્ન આપણા આંતરે રાહુની મારક આવી રહ્યો છે. તેનો પણ તોડ થઈ જશે. ઉપરાંત કળેડાં નહીં થઈ પડરાથી બરોબની પ્રજા ઉત્પત્તિ વીચારવાથી અને બજવાન બનશે. આ ક્ષણે એ કલ્પનાના તરંગો નથી, પણ નકર વસ્તુ સ્થિતી છે. કારણ વાડો વીચારણ થવાથી કન્યા યોગ્ય પુરુષ, જલદી પ્રમ થઈ શકે. અને તેમ થવાથી કળેડાં અટકે, વધી લાંખી ન્યાત ખનવાથી કન્યા મલવાની પૂર્ણ સંભાવના છે જેથી કન્યા વિક્રમ નહીં થાય કારણ પૈયા આપવા કોઈ તૈયાર જલ્દી થાય અને ખાલલગ્નો પણ નહીં થાય અને જ્યાં ખાલ લગ્ન નહીં, કન્યા વિક્રમ નહીં એટલે વૃદ્ધ લગ્નો પણ અટકી જવાનાંજ અને આટલી વસ્તુ એક ખીજને આધારે સિદ્ધ થઈ એટલે દીવા જેટલુંજ સ્પષ્ટ છે કે ખાલ-વિધવાનું પ્રમાણ પણ નહીંજ જેવું રહેવાનું.

અને આમ ખનવા પામે એટલે અભિચારવિદ્યો દોષ, મર્દાપાતો વીધરે ખાશે. આજીવનપ નેક થઈ જાય. એટલે વિધવાવિચારનું નામ પણ કોઈ નહીં છે. આમ એક વસ્તુખાંધો અનેક વસ્તુઓ સાધ્ય થઈ શકે છે. અને વળી સમાજને ઉચ્ચ તીવ્રતા પાંચે લઈ જાય, તો પછી કામાટે ગાતી બેદો છોડી દઈ, અંતર્ભૂતીય લગ્નો ન યોગ્ય ! કામાટે નીખારણ આવા લાભો અંતર્ભૂતીય લગ્નોના કરી છોડી દેવા ? હું 'હમ્મ' હું' કે આ પ્રશ્નો ઉપર ગુજરાતના આપણા વીદ્વાન લેખકો જરૂરી પ્રકાશ નાંખશે, અને તેની જરૂરીયાતો ખતાવો તે પ્રમાણે આચારમાં ઉતારવાના પ્રયત્નો કરશે. અને આ ઉપરાંત ખાઈ કાણ્વીસાકરની અંતર્ભૂતીય લગ્નો કરવામાં દરેક યુવાને મદદ કરવી પડે, ખાલલગ્ન અમર કન્યાવીક્રમ ના હેમ જે તે પ્રતીગા પણ વારતવીક છે. અને દરેક જૈન યુવક મંડલોના ઉદ્દેશોમાં આ ઉદ્દેશ પણ હોવો, જેમજ એવું માન્યતા છે. તો આજી છે કે આપણા યુવક મંડલો તરફથી ખાવી જાવતી પ્રવૃત્તિ કરવામાં આવે અને તેમની અદક્ષીને આવાં કેટલાક લગ્નો શક્ય બને તો ખાતી છે કે સમગ્ર સમાજ તે પગલાંને અનુકરશે. આમ જે આગેવાનો અને યુવકો એકત્રીતપણે પોતાને આ ઉદ્દેશ લક્ષ્યાં રાખી આવા લગ્નો યેજે તે જૈનોની એકપદાના દીવસ નહીંકેના ભવિષ્યમાં જરૂર જણાય.

પ્રશ્નોત્તર શ્રાવકાચાર-

નામક નવીન શાસ્ત્ર શ્રી સકલકીર્તિ કૃત મૂલ શ્લોક ૨૦૪૪ વ પં ૦ લોલારામજા કૃત હિન્દી માધા વચ્ચ-નિકા મી અવચર મગારયે । શાસ્ત્રાકાર મુ ૧૧૧)

જૈન મહિલા ગાયન ।

इसमें जिन्योंके लिए ९८ उत्तमोत्तम गायन हैं । प्रत्येक जैन महिलाके यहां इसकी होना परमावश्यक है । मूल्य ।=)

મૈત્રેય, વિં ૦ જૈન પુસ્તકાલય-સુરત ।

સહકની પાઠશાળાઓ.

વીજ્યનગરથી ખડકની દસ પાઠશાળાઓના મહામંત્રી મોહાસીયા દુતેચંદભાઈ તારાચંદ સખી બાણીએ છે કે મારા તાબાની ૧૦ પાઠશાળાની વાર્ષિક પરીક્ષા લેવા માટે મધ તા. ૨-૪-૩૦ ના રોજ વીજ્યનગરના સેકંડ મેજિસ્ટ્રેટ સાહેબ મોતીલાલજીને સહ હુ' મળે હતો. પ્રથમ અમે નવાગામની ડાબેડા ઠરતુરચંદ અમજારામની હેડસ્કુલની પરીક્ષા લીધી. ૪૯૫૦ પરીક્ષામાં બેસાડયા તેમાંથી ૪૭૫૦ પાસ અને ૨૫૦ નાપાસ. તેમ શેઠ સાં તરફથી મારતરોને તેમ ઊકરાને ૩૪-૮-૦ નું ધનામ વહેંચ્યું તેમ તા. ૩ ના રોજ નવાગામ ખાંધી તલકચંદ મોતીચંદની કન્યાશાળાની પરીક્ષા લીધી. ઊકરાએ ૧૫ પરીક્ષામાં બેસાડી ૬૨૬, પાસ થઈ છે. કન્યાશાળાની ઊકરાએને તેમ પાઠશાળાના ઊકરાએને મળી રૂ. ૩૮-૦-૦ નાં પુસ્તકો ધાર્મિક તેમ. વ્યવહારીકનાં વહેંચનામાં આંતરે હતાં. શેઠ લક્ષ્મીભાઈ લક્ષ્મીચંદ તરફથી કન્યાશાળામાં રૂ. ૩)નું ધનામ વહેંચ્યું ત્યાંથી તા. ૪ બાણુદા ગયા ત્યાં શેઠ કેવળદાસ રાવજીભાઈ ધરવાળાની પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૨૮૫૦ ઊકરા પરીક્ષામાં બેસાડયા ૨૫૫૦ પાસ અને ૩૫૦ નાપાસ. ઊકરાને રૂ. ૨૨-૮-૦ નાં પુસ્તકો વહેંચ્યાં. શેઠ તરફથી તેમ ગામ બાઈએ તરફથી મળી રૂ. ૫-૦-૦ નું કાપડ તેમ શેઠડ વહેંચ્યું. ત્યાંથી તા. ૫ છાષ્ટી સ્વમ્મતિ બુખુ દાનવીર શેઠ લક્ષ્મીભાઈ લક્ષ્મીચંદ મુંમઇવાળાની પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૪૫+૨ ઊકરા-ઊકરા પરીક્ષામાં બેસાડયા, ૪૧૫૨ પાસ અને ૩૫૦ નાપાસ. શેઠ સાહેબ તરફથી મારતરોને તેમ ઊકરાને રૂ. ૧૨-૮-૦ નું ધનામ તેમ ઊકરાને રૂ. ૪૬-૦-૦ પુસ્તકો મળી કુલે રૂ. ૬૮-૮-૦ નું ધનામ વહેંચ્યું. તા. ૭ વીંજેવાડા ત્રીધુત મુની મહારાજજી શ્રી. શાંતીસાગરજી બાણીવાળાની પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૫૪+૧૨ ઊકરા-ઊકરા પરીક્ષામાં બેસાડયા તેમાંથી ૪૮+૧૨ પાસ અને

૬+૦ નાપાસ. ઊકરાને ચોપડીએ રૂ. ૪૫-૦-૦ ની વહેંચ્યા. મારતરોને રૂ. ૭-૦-૦ નું ધનામ મહામંત્રી સાહેબ તરફથી વહેંચ્યું. ત્યાંથી તા. ૧ ના રોજ દેવળ ગયાં. ત્યાં આવલવાડાવાળા સંધવી વીરચંદભાઈ દેવચંદ પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૨૬+૧ પરીક્ષામાં બેસાડયા. ૨૨+૧ પાસ ૪+૦ નાપાસ. ઊકરાને રૂ. ૩૬-૪-૦ ના પુસ્તકો તેમ શેઠ તરફથી ઊકરાને તેમ મારતરોને કાપડ રૂ. ૧૫-૦-૦ નું ધનામ વહેંચ્યું. ત્યાંથી તા. ૧૩ ના રોજ ભુધર ગયા. ત્યાં જવાસવાળા શેઠ જેમચંદભાઈ લાલજી પુઝડીની પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૨૨+૬ પરીક્ષામાં બેસાડયા. ૧૯+૬ પાસ અને ૩૫૦ નાપાસ મહામંત્રી શ્વેતચંદભાઈ તરફથી મારતરોને તેમ ઊકરાને ૩૪-૦-૦ નું ધનામ તેમ ધર્મોદા રકમખંધી રૂ. ૨૭)નાં પુસ્તકો તેમ કાપડ વહેંચ્યું. ત્યાંથી તા. ૧૫ જાવલવાડામાં તાસવાળા શા. તલકચંદ જેલાભાઈ પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. ૨૫+૩ પરીક્ષામાં બેસાડયા ૨૧+૩ પાસ ૪+૦ નાપાસ તેમ રૂ. ૫૪-૦-૦ નું ધનામ ઊકરાને કાપડ તેમ પુસ્તકો વહેંચ્યાં. તેમ શેઠ તરફથી અને ગામ બાઈએ તરફથી રૂ. ૧૪-૦-૦ નું મારતરોને વહેંચ્યું. હવે આ વરસે પ્રથમ છાષ્ટી પછી નવાગામ, વીંજેવાડા, બુધર, જાવલવાડા, દેવળ, બાણુદા અને કન્યાશાળા આઠમે નંબરે આવી છે. આ અડક દેશમાં ઊકરાને સુધારનાર તેમ વીંજેવાડાન આપનાર શ્રી તીર્થક્ષેત્ર કમેટી તેમ સ્વમ્મતિબુખુ શેઠ લક્ષ્મીભાઈ લક્ષ્મીચંદ ચોઠસી છે તેા તેઓના અમે જેટલો આભાર માનીએ તેટલો ઓછો છે.

તા. ૬. મુની શ્રી ૧૦૮ શ્રી શાંતીસાગરજી (બાણી)ના ઉપદેશથી રૂ. ૧૨૦) આવેલા અને રૂ. ૧૦) અડક પંચ તરફથી આવેલા તેમરૂ. ૧૨૦) બહારગામથી મારા હરિક આવેલા કુલ ૩૫૫ ૬૦૦)ના ધાર્મિક તેમ વ્યવહારીક પુસ્તકો ધનામમાં ગાપવામાં આંખ્યા હતા.

લીં ૬૨૦ દુતેચંદભાઈ ર. મહામંત્રી.

मिट्टीके गुण व

सरल उपाय ।

(जतांकसे आगे)

(७०-५० जिवाकाल शिकारवांर जैन वैद्य-फरसनागर)

मान कीजिये कि रोग स्वीकारक है और उसी प्रकारके विजलीके असर होनेसे उत्पन्न हुआ है । इस प्रकारके सब रोगोंमें कठिन पीडा होती है, परन्तु जलन नहीं होती । इनको अच्छा करनेके लिये ठंडी दवाका उपेय करना चाहिये इनमें स्वीकारक विजलीके अंश रहते हैं । इसके विरुद्ध कोई औषधि काममें न जानी चाहिये— जबवा मान कीजिये कि रोग अस्वीकारक है और उसी प्रकारकी विजलीके असरसे उत्पन्न हुआ है इस प्रकारके सब रोगोंमें केवल पीडा नहीं होती, किंतु जलन भी होती है । इनके अच्छा करनेमें अस्वीकार कृत्तिका काममें जाना योग्य है और वह विशेषकर पृथ्वीसे ही सम्बंध रखती हैं ।

इस कामकारी विषयपर अब हम निश्चित और क्रमसहित रीतिपर लिखेंगे जिसमें सरलतासे समझ लिया जाय । यह आप जानते हैं कि रोगकी भाँति (किस्म) के अनुसार हम लोग विजली-गेऊ बनियम (दूसरे प्रकारकी विजली) चुम्बक शक्ति वा वायुको अत्यन्त ठन्डीसे उष्ण तक मिलवा सहज होसके काममें आते हैं । यह भी आप जानते हैं कि जब रोगमें आवश्यकता होती है तो हम जलको ठन्डा जबवा उष्ण जैसी आवश्यकता हो भीतर वा बाहर काममें आते

हैं और वह भी आप नित्य देखते हैं कि नाना प्रकारकी मड़ी बूटियां जलग र वा मिठाकर उबालकर वा भिगोकर जैसी रोगमें आवश्यकता मानी जाय लिखाई जाती हैं वा बाहर लगाई जाती हैं, जिसमें उपकारी फल निकले । अब हम विजलीसे लेकर जो सबसे सूदन पृथ्वी जबक पदार्थ है और सब वनस्पतिके पदार्थों तक उत्तर आये ।

अब प्रश्न यह है कि हम यही ठहर जायें और पृथ्वी तक और काम उडावें, क्या हम मड़ीबूटियों तक सन्तोष करें जो पृथ्वीमें सबसे प्रथम उत्पन्न हुई सन्तान हैं । और सदा उस (पृथ्वी) की छातीसे लगी रहती हैं व आगे उत्पन्न करनेवाले निवास तक बड़े महासे वह सब निकली हैं और पुष्ट होनेके लिये आहार पाती हैं । पृथ्वीसे अस्वीकारक विजली है इस कारण उत्पन्न बहुत बड़ा प्रभाव उन रोगोंपर होता है जिनमें जलन होती हैं । मिट्टी ठन्डी वा गर्म पुकाटिमकी सूतमें एकली वा और औषधिके साथ मिठाकर जैसी आवश्यकता हो खरीरके पीडित अंगपर लगाई जासकती है जबवा जब आवश्यकता हो तो सब देहपर सा-चारण रीतिपर वनस्पति उगानेवाली मिट्टी मकको । यदि रोग बहुत दिनोंका हो तो सब देहको मट्टीके गारेमें सान दो । वह ठन्डा वा गरम वा चिकनी वा बुन्ई मिट्टीका एकका वा दूसरी वस्तुके साथ मिला हुआ रोगकी किस्मके अनुसार होना योग्य है । केवल इतना जानना आवश्यक है कि मिट्टी किसप्रकारकी है और उसका क्रम और किसरीति करके एक प्रकारकी विमारीमें लगाना योग्य है ।

व्यपि मिट्टीद्वारा चिकित्सा करनेका फल प्रत्यक्ष है तो भी यही प्रश्न किया जाता है कि तुम मिट्टीमें अच्छे करनेवाली शक्तिका क्या प्रमाण दिखा सकते हैं ? यथार्थमें इसके सदस्यो प्रमाण हैं। बाह्यजन्ममें इसका एक दृष्टांत मौजूद है—एक अंधा जब ईसूपसीहके पास आया और विश्वास काकर कहने लगा कि हे स्वामी ! मेरे नेत्र खोकर दो तो ईसूने मिट्टीको थूँसे भिगोकर बलकी आंखोंपर रख दिया और आज्ञा दी कि आ सिंकोनके तालमें जाकर इनको घो, अन्वा यवा और घोनेपर उसके नेत्र खुल गये। बहुतसे ईसाई कहते हैं कि ईसूका यह सब करना अक्षय्य था, उसने अपनी देवी शक्तिसे आंखे अच्छी कर दी परन्तु यह विवाद करना ठीक है कि ईसूने कुछ किया कि दिखानेको तो अंधेकी आंखोंपर मिट्टी रखी और किसी दूसरी शक्तिसे उसे खोकर दिया। यथार्थमें उसने मिट्टी और जल ही द्वारा उस अंधेकी आंखे खोलीं। जो उसने प्रकाश रूपसे बगाया और बिना किसी मनुष्यका मय किये हुए उसने शुद्ध भावसे प्रगट किया कि इन्हीं वस्तुओंसे वह दुःखी अच्छा हुआ। यह मिट्टी और जलकी मिली शक्ति और उसके पूर्ण विश्वास और भरोसेसे हुआ जो ईसूने भलीभांति उसके चित्तपर बैठ दिया था।

ईसूके इस दृष्टांतको छोड़कर मैं संक्षेप रूपसे वर्णन करूँगा कि नाना प्रकारकी मिट्टियोंमें मनुष्यके शरीरसे विष और जलन खींचनेकी पूर्ण शक्ति रहती है और वह इतनी अधिक कि कोई

और जानी हुई औषधि वा वस्तु इस गुणमें उसके बराबर नहीं है। तनिकसा असर नहीं शक्ति प्रगट कर सकता है और बड़े भारी उपकारी फल निकालता है। बड़ी अथवा नदियोंकी धाराकी दशाको एक फूलका तिनका बता देता है।

इसका दृष्टांत कीजिए—जब मधु मक्खी वा दूसरा जहरीला कीड़ा डंक मारवे जिससे पीड़ा सूजन और जलन पैदा हो, जिस समय वह काटे तुरंत ऐसी मिट्टी उठाकर जिसमें बनस्पति उग सकती हो थूँस वा गुनगुने पानीसे भिगोकर भाव पर लगादो, उसका फल यह होगा कि तुरन्त विष खिंच आवेगा और पीड़ा बंद हो जावेगी। नीली वा सफेद प्रकारकी मिट्टी गरम पानी वा थूँसे गीली करके कगानेमें अधिक काम होता है, यदि वह तुरन्त काटते ही मिला जाय।

चिकनी वा सदे प्रकारकी मिट्टियोंकी आकर्षण शक्तिके विषयमें थोड़े सत्य सादे उदाहरण यह है कि एक वस्त्रपर तेरु वा चर्बी डाल दो और रहने दो जब कि नीचेकी वस्तु तक भीग जाय, कितने ही साबुन वा पानीसे उसे धोवो परन्तु उसकी चिकनाई दूर न होगी, और जब ठीक तैयार की हुई चिकनी मिट्टी उसपर फेंका दोगे तो वह उसको खींच लेगी। जब रेशमके कपड़े पर तेरु वा चर्बीका दाग लग जावे तो पिसी हुई मंगनेसया उजली मिट्टीको कपड़ेकी उरटी ओर मरुदो और सांघी दूसरी ओर गर्म लोहा रगड़ दो तो सब चिकनाई तुरन्त मिट जायगी और रेशम अपने स्वाभाविक रूपका चमकीला और चिकना हो जावेगा। फ्रेंच खडियाको पीसकर उनी कप-

होपर एक देनेसे भी तेरके दाग मिट जाते हैं यह एक निकाकना सर्वथा असम्भव होता यदि मिट्टीमें बिजलीकी खेंचनेवाली शक्ति न होती । किसी कपड़ेको किसी ऐसी वस्तुसे भिगोदो जिसकी गंध बड़ी तेज और कड़ी हो और किसी रीतिसे पानीसे बाने और वायु देनेसे दूर नहीं होती हो, उसको किसी ऐसी मिट्टीमें जिसमें बनस्पति उग सकती हो गड दो तो तीन चार दिन उपरांत निकाकनेपर उसकी सब गंध दूर होजावेगी ।

फिर यह प्रश्न होता है कि इसका क्या कारण है ? मैं उसका यह उत्तर देता हूं मनुष्य वा किसी जीवके पेटमें कोई जीव जो जीवित हो निगल लिया गया पच नहीं सकता, जबतक उसमें जीव है । जब मर जायगा तब पेटमें पचकर शरीरके अंशोंमें पहुंचेगा, परन्तु जबतक जीवित रहेगा अपनी शरीरकी शक्तिसे आसार खींचकर प्राण बचाये रहेगा । इसी रीति करके मिट्टी किसी वस्तुको नहीं पचा सकती जबतक कि उस वस्तुमें बनस्पति वा जीवधारी सम्बंधी कुछ जान हो । वह कौनो मिट्टीसे ही अपनी शक्ति आहार खींचते हैं परन्तु जब वह बेजान होकर सूख जाते हैं वा मर जाते हैं, तबही उसके अङ्गको अपने अंशोंमें भिटाकर आप पुष्ट होती है । वस इसीसे सिद्ध है कि मिट्टीमें जठका करनेकी शक्ति है ।

मनुष्यके शरीरमें वे सब वस्तुएं जो जीवधारीकी जानकी बाधक हैं मिट्टी चूस लेती हैं और अपनेमें भिटा लेती हैं जिसका एक पूर्ण आरोग्यता है । वस बड़ी कारण है कि मिट्टी-द्वारा चिकित्साको उत्तम मानते हैं ।

क्या पर्दा सर्वथा- -हानिकर है ?

(ले०-श्री० पं० दीपचन्दजी वर्णी)

दिगम्बर जैन पौष २४१६में एक ठेल पर्दा शीर्षक पं० सिद्धसेन गोयलीयका पढ़ा, उसीसे कुछ विचार उत्पन्न हुआ, वही नीचे लिख रहा हूं- पर्दासे केवल मुंह ढककर घरोके भीतर छिपे रहना, किसी सम्बंधीसे नहीं बोलना, जाव-इयक्त पड़नेपर भी अपना वा घरवालोंका नाम नहीं बताना चाहे आपत्ति विपत्ति भोगना पड़े, या कि धर्मबंधन भी सर्वस्व खोना पड़े तभी मौन रक्षना इत्यादिको ही पर्दा कहा जाता है वा यही पर्दाका अर्थ है तब तो मैं भी ऐसे पर्दाको कदा समझता हूं और वह निःसंदेह छोड़ देनेके लायक है । जैसा कि मैंने भी बहुत स्थानोंमें देखा है कि बहुत अपने स्वसुर व जेठसे तो नहीं बोलती परन्तु अपनी सात व जेठानी आदि तकसे नहीं बोलती ।

घरमें चोर घुस गया, बहने जागते हुए ठेल लिया, परन्तु स्वयं प्रतिकार करनेमें असमर्थ होनेसे तो कुछ कर नहीं सकती । यदि पक्ष नहीं है, सामुसे पर्दाके कारण बोलती नहीं । तब चोर वन भी हर सकता है और घर्मपर भी आघात कर सकता है । निकट एक घासे रहकर भी दोनों असहाय रहती हैं । स्वसुर व जेठ आदि बीमार पड़ा है, परन्तु पर्दाके कारण उनको बह पानी भी नहीं देसकती । रेकपर

सामान सहित पति बैठा ही था कि गाड़ी चकती हुई । अब परनीजी नहीं बताती कि वे किसकी पत्नी हैं । वे पति स्वसुर आदिका नाम लेना पाप समझती हैं । तब नाम गाम जाने बिना किसको तार किया जाय ? तबछ किसे किया जाय ? इत्यादि ऐसे अनेकों मामले नित्य प्रति होते ही रहते हैं । फिर भी वही झूठा पर्दाका मूत्र लगा ही चला जाता है । इन बातोंका सुचार नहीं किया जाता ।

एक तो यह बात है, और दूसरे इस पर्दामें और भी बात है, वह यह कि घरके सम्बंधी पिता समान स्वसुर सेठ व पुत्र समान देवर, मातावत् सासू बहिनवत् ननद व देबरानी जेठानी, इनसे तो न बोलेंगी, परन्तु नौकर कहार माकी आदिसे खुब बातें करेंगी, मेले ठेकोंमें चक्के धूमोंमें जाकर बाजारोंमें दूकादारोंसे सामान खरीदती फिरेंगी, वहां न मुंह ढंकेगा न मौन रहेगा यह सब पर्दाका दुरुपयोग करना मात्र है । वास्तवमें इसे पर्दा कहना, पर्देकी हंसी उड़ाना है । और इसे जितने जल्दी होवे बंदू देना चाहिये ।

और भी एक पर्दा ऐसा होरहा है कि धर्म-स्त्रकोमें न जाना, धार्मिक प्रश्न न पूछना, धर्म-शास्त्र न पढ़ना, धर्मोपदेश न देना, धार्मिक पद भजन न बोलना परन्तु देवर नंदोई विवाह (स-मधी) वहनोई आदिसे कुत्सित हास्य हंसना, उन पर रंग गुलाब अभीर छोड़ना, तथा अपने ऊपर छुड़वाना । इतना ही नहीं रंगनादि अवसरोंमें तो बड़े घरोंकी स्त्रियोंपर सन्मुख पक्षके नाई

आदि भी रंग गुलाब पतासा फेंकते और बह-लेमें स्त्रियां भी उनपर फेंकरकर मुंह ढंके लेती व मुंह फेर लेती हैं । इत्यादि अनेकों अनर्थके कारण कुरीतियां फैल रही हैं । यदि इसे भी पर्दा कहा जाता है, तो इसको पर्दा जानकर तुरत शाद डालना चाहिये ।

संभव है पंडितजीने ऐसे ही पर्देका निषेध किया होगा । परन्तु मेरुके घोखे कबरी न चकी जाय, इसी विचारसे कुछ कर्तों मिल रहा हं । सज्जनो ! वास्तवमें ऊपर बताया पर्दा पर्दा ही नहीं है, वह तो सुसंभ्रमानी बादशाहतके जुल्मी जमानेमें, नारियोंकी रक्षाके लिये ही अनेक स्थानोंकी भारतीय जनताने स्वीकार कर लिया था, वही क्यों वास्तवविवाहादि और भी अनेकों कुरीतियां स्वीकार करना पड़ीं, यहां तक कि धर्मोपदेशनोंकी रक्षार्थ, मंदिरोंके साम्हने छतोंपर अहातोंमें मसजिदोंके चिन्ह तक बनाना पड़े, इत्यादि बहुत ही बातें करना पड़ीं । परन्तु वह आपद्धर्म कहाता है, वह उसने ही काकके लिये होता है अहांतक आपत्ति शेष है । दवा तभीतक खाना गुणकारी है जबतक रोग है, परन्तु यदि निरोग होकर भी खाता रहेगा, तब तो वह दवा भी कुपट्य होकर उल्टा रोग पैदा करेगी इसलिये फिर दवा भी छोड़ना पड़ती है ।

मान लिया जाय उस समय इसे स्वीकार किया था, और वह काभकारी सिद्ध हुआ, तो उसम बात क्यों छोड़ दीजाय ? यदि वह कहोगे तो कहना पड़ेगा कि निःसंदेह उसम बात नई हो व पुरानी कभी छोड़ना नहीं

चाहिये और न बुरी बात नई हो व पुरानी वसे भी पकड़े रहना चाहिये । परंतु गुण दोषोंपर विचार करके अवश्य ही त्याग ग्रहण करना चाहिये ।

जुस्मी जमानेमें पदां चला, परंतु उस समय उसका वह रूप नहीं था जो हालमें है । उस समय तो केवल रक्षाके भावोंसे इतना ही किया गया था कि यथासंभव जुस्मी लोगोंको प्रथम पता ही न लगने पावे कि अमुक जगह स्त्रियां हैं । दूसरे कारणवश निकलना पड़े तो उनका मुखादि रूप न दिखाई देने पावे कि जिससे विषयी जीव जुस्म करनेका अवसर पासके । वस इसी हेतुसे चरोंमें रहती और बाहर निकलती तो मुँह आदि सब शरीर ढंकर निकलती थी, जो कि उस समय तो बहुत जरूरी था ।

पश्चात्—उसमें अत्याचार बढ़ गया, चरोंमें भी मुँह ढंका रहने लगा और गुरुजनोसे भी बोलना बंद होगया । इतना ही नहीं रहा, फिर मुँह मात्र ढंकना रह गया और हाथ पग पेट गला आदि अंग खुलने लगे । क्योंकि दिनों दिन जेवर पहिरनेका रिवाज बढ़ता गया और तब उसे दिखानेका भाव भी बढ़ गया । पश्चात् पाश्चात्य सभ्यता आई, विदेशी महीन कपड़े आने लगे । तब उन पतले कपड़ोंको पहिरना ओढ़ना आरम्भित होगया, जिससे शरीरके सम्पूर्ण अवयव दिखाई देने लगे । परन्तु मुँह-शर जरूर ढंकन रहा । वह पतला हो व मोटा, फिर उसमें भी वह हुआ कि दो उंगलियोंसे आंख ढकाकर देखना आरम्भ होगया और तब पुरुषोंको भी उनके रूप देखनेकी आकांक्षा

बढ़ गई और पर्दा रहते हुए भी पाप वासनाएं बढ़ने लगीं ।

कालकी कुटिल गति है । जीवोंमें पुरुषार्थ घट रहा है परन्तु कषाय विषय बढ़ रहे हैं । इसका फल यह हुआ कि अनेक स्थलोंमें घर ही में जुस्मी देखे जाने लगे और तब वह रिवाज जोर पकड़ गया, क्योंकि बाहिरवाला तो कभी देखेगा, और दाव पात लगेगा तब अनर्थ होगा, परन्तु यहां तो निरंतर देखना, एक घरमें रहना, अकेले तुकेले, समय बे समय मिलना, तब कारण कार्यका संयोग न होजाव इसपर दिनोंदिन अधिक अधिक जोर लगता गया । भिन्न भिन्न प्रांतोंमें इसके भिन्न भिन्न तरीके हैं । वे सर्वत्र समान नहीं हैं । कहीं कम कहीं अधिक, कहीं कैसा कहीं कैसा, परन्तु पावा सभी जगह जाता है ।

तब इसको मर्षादित करना, इसमें सुचार करना या सर्वथा हटा देना? वस इतना विचार करना है । परन्तु इसके पहिले पर्दाका अर्थ भी जान लेवें । मैं कह चुका हूं कि ऊपर बताया हुआ दंग पर्दा नहीं है । किन्तु पर्दाका अर्थ है किहाज काज, शरम, स्वात्मगौरव कुल व धर्मकी मर्षादा और लज्जा गुण जो नरनारियोंका मूषण है । श्रावकके ११ गुणोंमें लज्जा भी है । जिसके लज्जा नहीं वह वास्तवमें मनुष्य ही नहीं है । इस लिये इसकी रक्षा जैसे बने वैसे करना परम कर्तव्य है ।

और तब इसके लिये हमको नरनारियोंमें धार्मिक शिक्षाका प्रचार जोरोंके साथ करना

होगा । हमको बताना होगा कि धर्मों में धुसे रहने व मुँह टंककर रखनेका मूल हेतु क्या है ? और जब यह बात समस्त स्त्री व पुरुषोंके समझमें आजावेगी तब पर्दा रखो तो पर्दा है और न रखो तो पर्दा है । यह बात, हमारी पौराणिक महिमाएं तथा पुरुष भले प्रकार जानते थे, और तभी उस समय केवल मुँह टंकनेको ही पर्दा नहीं कहा जाता था ।

सीता पर्दा रखती थी, रावणकी हजार चेष्टाएं करनेपर भी उसका पर्दा न छूटा । द्रौपदीका पर्दा दुःसासन न हटा सका । रमनमंजूषाका पर्दा जबक सेठसे न निकल सका । इत्यादि जनैको दृष्टांत प्राचीन व अर्वाचीन मौजूद हैं । इस प्रकार प्रथम नरनारियोंमें पर्देका भाव भर देना चाहिये पश्चात् पर्दा हटा देना चाहिए, और हटा क्या देना वह हट ही जायगा । दीपकका लजेका सूर्य उगनेसे पहिले ही रहता है बाद मंद होजाता है । नकल वही तक मानी जाती है जहांतक असलका दर्शन नहीं हुआ । आप भी ऐसी सुखीक शिक्षित महिलाओंके लिये कोई भी पर्देकी कैद नहीं है । और पर्दा न रखनेसे उन्हें कोई बुरा भी नहीं कहता, क्योंकि पर्देका जो भाव है वह उनमें पूर्णतया है । उन्होंने अपनेसे बड़ोंको पिता, समवयस्कको भाई और लघु वयस्कको पुत्र मान लिया है । याकि वे सर्व प्राणी मात्रको द्रव्य दृष्टिसे अपना समान आत्माएं समझती हैं । और जीवात्मा स्त्रीपुरुष व जपुंसकादि लिंग रहित अलिंग हैं । तब समानमें काहेका पर्दा ! क्या जीव जीवसे पर्दा

करता है ? पुरुष पुरुषका स्त्री स्त्रीका पर्दा करता है ? नहीं कभी नहीं । क्या पूज्य अर्थिकाएं पर्दा रखती या मुँह टंक कर चरती थीं ?

तब पर्दा क्यों करता है ? क्यों करता है ? कहना होगा कि जिसके भीतर रागादि भावोंकी तीव्रता है या जो निर्बल है, अपनी व अपने धर्मकी रक्षा करनेमें समर्थ नहीं है, या असहाय है । तब ऐसी निर्बल अवस्थामें पर्दा सर्वथा छोड़ देना सहसा हानिकर होगा । इसलिये उन्हें मर्दावित पर्दा रखना चाहिये अर्थात् उन्हें घरसे बाहर सुपरिचित विश्वस्त नरनारियोंके साथ निकलना चाहिये । और सौभाग्यके चिन्ह मत्र कुल आभूषण पहिरकर मोटे कपड़ोंसे अपना सब शरीर यथायोग्य ढांककर तथा मुख इतना खुला रखकर कि जिससे मार्ग बराबर दिख सके तथा मार्गमें चलते हुए नर पशु व गाड़ी मोटारादिसे टुकरा न जवें, अपने साथवालोंसे संग न छूट जाय इसप्रकार मर्दावासे रहना चाहिये ।

घर हो व बाहर स्वच्छ हवा रसासोच्छ्वात लेनेके लिये नाक खुली रखना चाहिये । आवश्यकतानुसार स्वसुर जेठ देवर आदि जनैको पिता पुत्र मानकर अवश्य ही बोलना चाहिये और सासु आदिसे बोलना तो सदैव रहना चाहिये । घरके अंदर मुँह टंककर न रहना चाहिये । परन्तु ऐर गेर जोगोंके सन्मुख मुँह खोले फिरना, चहे जिससे बातें करना यह अवश्य निषेध है । किसी पर पुरुषसे एकान्तमें बात करना भयंकर है । नाटक थियेटरोंमें

सकंत सीनेमा आदि जमबट्ट स्थानोंमें जाना, व मेकों टेह्लोंमें बक्के धूपीमें जाना हानिकर है । पंडितजीने धूपने बबत लिखा है, सो बनने पतिके साथ यदि वे ऐसे स्थानोंमें जावें नहां उत्तम कुलीन लोग आते जाते हैं हानि नहीं है । धर्मस्थानमें जानेकी रोक नहीं है, शस्त्र पढ़ने सुननेकी मनाई नहीं है । धर्म कृत्य पूजा प्रक्षाक, स्वाध्याय, दान, तप, संयमादि करना उनको उत्तना ही मरूरी है कि निजना पुरुषोंको इसमें स्वतंत्र होना चाहिये ।

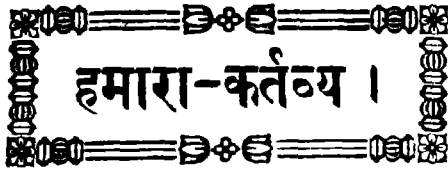
परन्तु मैं उनको हाकीटेनिश खिकाने व पार्कमें घुमानेके पक्षमें अवश्य नहीं हूं । स्वारथप्रक्षा केबक पार्कोंमें घूमने वा टेनिश बिल्लिगार्ड वेडमिंटन खेलनेसे नहीं होगी । किंतु वह होगी घरका काम काज करने, कूटने पीसने, दबने खांडने, बासन मांनने, रोट्टी बनाने, पानी भरने, लीपने पोतने, घरके पशु गौ आदिको दुःखने, सारबार करने, बच्चोंकी टहक करने, पति अदि गुरुननोंकी सेवा करने, ताना और सादा खुराक खाने, शीकन्नत पारने, ब्रह्मचर्य रखने आदिसे । मोटे वस्त्र पहिरने व धोने आदि कार्योवे खासा वरामाम होगा, स्वच्छता व शुद्धता रहेगी, अतिथि सेवा सधेगी, पैसा भी बचेगा, खाली समय बचे तब खर्चा चमावें, कपड़े सिपें, बाक बच्चों व आप पासकी बाई बहिनोंको पढ़ावें, आकसी न रहें, तब देखो कैसे स्वास्थव विगडता है ?

हम लोगोंके वहां मंदिर जाना तो अनिवायं है ही, और हमारे मंदिर औरोंसे बहुत स्वच्छ

साक रहते हैं । इसके सिवाय तीर्थ बात्राओंमें पति पिता पुत्रादिके साथ जानेमें कौन रोकता है ? रोकनेवाका केबक अज्ञान है । अज्ञान गया और रोक मिटी, नाहक किसीपर दोष रखनेसे क्या काम ? श्री० महिकारत्न मगनबहेन जे० पी०, ब्रह्मचारिणी कंकूबहेन, लकिताबहेन, चंदाबाई, चिरींनबाई आदिको क्या पर्दा है ? जिन्होंने महिका समाजको जगा दिया है ।

तात्पर्य यह है कि पहिले हमको सब अन-थोंका मूढ अज्ञान ही क्या पुरुषों व क्या स्त्रियोंमेंसे हटा देना चाहिये और उनको योग्य कर्तव्योंका ज्ञान करा देना चाहिये, उत्तम भावनाएं भर देना चाहिये । बस पर्दा हट गया समझो । पर्दा उनपर पुरुषोंने नहीं डाला है किन्तु उनके अज्ञानने पकड़ रक्खा है और उसे वे ही तब छोड़ सकेंगी जब ज्ञान होगा । दूसरा कौन छुड़ा सकता है ?

‘अति सर्वत्र वन्येत’के अनुसार सुधार करना चाहिये । समझना चाहिये कि आपसिकाकमें व कहीं संग छूट जानेपर पति आदिका नाम बनाना पाप नहीं है । सीता तो रामर रदती थी, सुवृद्ध जनोका नाम तो स्मरण रखना ठीक पारन्तु कोई भी कार्य हो, यदि मर्धादित होगा तो कामपद होगा और अमर्धादित होनेसे हानिकर होगा । बस इसी बातपर कक्ष्य रखकर सुधार किया जाय और मूठा पर्दा हटाकर शीक (ब्रह्म-चर्य) का पर्दा रक्खा जाय मही अंतिम बकव्य है । इति शम् ।



(ले०-पं० किशोरीलालजी शास्त्री सद्रूपक)

कोऽहं कीदृग्गुणः कवलयः किंप्राप्यः किमितिक्तः ।

इत्युदः प्रत्यहं नोचेदस्थाने हि मतिर्भवेत् ॥ १ ॥

वादीभक्तिहस्तुरि ।

अर्थ-मैं कौन हूँ ? मेरेमें कौनसा गुण है ? कहाँ मेरा निवास है ? मुझे क्या प्राप्त करना है ? मेरी प्राप्तव्य वस्तु किस निमित्तसे मिलेगी ? इस प्रकार विचार अगर प्रतिदिन न किया जाय तो बुद्धि अयोग्य स्थानमें प्रवृत्त होजाती है । आचार्य-प्रतिदिन सुबह शाम तथा वन सके तो मध्याह्नमें सामायिक करना गृहस्थका कर्तव्योंमेंसे प्रथम कर्तव्य है । उस समय मंत्र विधिपूर्वक जाप करके ऊपर लिखे प्रश्नोंको अच्छी तरह विचारना चाहिए, इन प्रश्नोंमें बहुत मारी रहस्य भरा हुआ है । जिस दिन विवेकशील प्राणीने शुद्ध हृदयसे इन प्रश्नोंका समुचित उत्तर अन्तरात्मासे पा लिया उसी दिन उसने अपने असली ध्येयको पा लिया । प्रकृतिके निबमानुसार किसी भी विवक्षित कार्यके पारम्भ करनेके तीन प्रकार हैं । समारंभ, समारंभ, आरंभ । मनुष्य ही विवक्षित कार्यके करनेका पक्का इरादा किया जाना व आद्योपान्त उसके निर्वाह व जानेवाले बिन्दों एवं कष्टोंकी सहिष्णुता आदिका पक्का विचार कर लिया जाता है, वह समारंभ कहलाता है । तथा विचार स्थिर होनेपर उस कार्यके योग्य सामग्री जुटाई जाती है वह समा-

रंभ समझना चाहिए । तत्पश्चात् कार्य पारम्भ किया जाता है । इसी तरह संसार वक्षामें कार्य-प्रणालीके तीन उपक्रम हैं । इसी प्रकार हमें हमारे धार्मिक कर्तव्य स्थिर करनेके लिए मनमें बारम्बार चिन्तन कर कर्तव्य मार्गका अवधारण करना चाहिए ।

इसके लिए आचार्योंने तीन समय (प्रातः, मध्याह्न व शाम) सामायिक ध्यानके लिए निश्चित कर दिये हैं । हमें उक्त समयोंमें अवश्य कर्तव्य मार्गपर ध्यान द्वारा प्रकाश डालना चाहिए । तथा कर्तव्य निश्चित कर लेनेपर उसके अनुसार चलना चाहिए । ऐसा करनेसे हमें सहजमें मोक्षमार्गकी तरफ रुचि होगी । उसके जाननेकी हृदयमें सच्ची लगन होगी । तथा हेयोपादेय ज्ञानका होनेपर अवश्यमेव चारित्रकी तरफ हम झुक पड़ेंगे । यही प्राणी मात्रका कर्तव्य है । अतः हमेंसा या सामायिकके समय उपर्युक्त श्लोकमें दिये गये प्रश्नोंपर मनन करना चाहिए ।

अतएव जिसको जिस पदार्थकी जिज्ञासा मनमें पैदा नहीं होती है तबतक उसे उस विषयक यथार्थ ज्ञान नहीं होता है । जैसे कि एक पुरुष शस्त्र स्वाध्याय कर रहा है । आखिरी चक्र शास्त्रके पत्र पकटते जानेसे काम नहीं होता है । बल्कि लगनपूर्वक मनन करते हुए पढ़नेसे फायदा होता है । उसे ही जिज्ञासा कहते हैं । अथवा प्रश्न करनेवाका प्रश्न करके उत्तर पाये हुए विषयको ब्रह्म साधारण शास्त्र श्रवण व स्वाध्यायके विशेष रूपसे जानता है ।

इसी तरह शीर्षकके श्लोकमें दिये गये पशुओंको जो जिज्ञासाले सिद्धान्त अनुसर जानता है, नवन करता है यह आत्मज्ञान एवं मोक्षमार्गकी तरफ मुक्त जाता है । अनंतानंत पर्वतों संसारिक यातनाओंमें ही ढांतीत हुई । कहीं भी समुचितरीत्या जैन धर्मका यथार्थ समागम नहीं मिला । यही कारण है कि अद्यावधि भ्रमणमें जन्म मरणके दुःख सदसे यह आत्मा उठा रहा है । श्री जिनेन्द्र देवकी पुनीत आज्ञा है कि एकबार जैन धर्मकी सेवामें अपना जीवन व्यतीत करो । सतत सर्गादि सुखोंकी व परंपरासे मोक्ष सुखकी प्राप्ति होगी । अर्थात् जिज्ञासापूर्वक रगनसे धर्मराशनमें जुट जाओ तो अपने स्वयंभुक्तो प्राप्त करनेमें फिर कोई कठिनाई नहीं रह आवेगी । कार्य करनेकी शैली मन, वचन, काय और कृपकारित अनुमोदना इस नव कोटिसे होती है । प्राकृतमें आज्ञाय यह है कि शीर्षकके श्लोकमें दिये गये मन्तव्योंको नबकोटीसे सतत चिन्तन करते रहना चाहिये ।

पथम पश्चमे पूछा गया है कि मैं कौन हूँ ? इस पश्चमे सुनते ही बहिर्गामा चोक उठता है— मैं मनुष्य हूँ, मैं जैन हूँ, मैं सेठ हूँ मैं विद्वान या मूर्ख हूँ । इत्यादि पर्यायाश्रित उत्तरोंको ही समुचित जन कह बैठता है । पश्चस्वित अन्तरात्मा कह देती है कि हे पर्यायमूढ ! तुम अनादिकाकसे मोह मदिराको पीकर पर्यायोंमें मूक रहे हो । निश्चयनयसे अत्मा न मनुष्य है, न सिर्षक, न नारक है, न देव है । न जैन न यवन, न ब्रह्मण, न क्षत्रिय, न वैश्य है

न सेठ न विद्वान और न मूर्ख है । न छोटा है, न बड़ा है, न ऊँच कुडवाळा है और न नीच कुडवाळा है । न पुत्र है न पिता है न स्त्री है न स्वामी है । न वृद्ध है न युवा है और न बालक है । अपितु अनन्त चतुष्टय स्वच्छ, राग द्वेष रहित, जन्म मरण रहित, जमर, जमर, सतत सुखो, बाह्य धन जन, ऐश्वर्यादिसे रहित बाह्य म्यंतर परिग्रह विहीन महान् शक्तिशाली ज्ञातादृष्टा अत्मा है । कर्मावृत्त होनेके कारण मनुष्यादि पर्याय मूढ होरहा है ।

द्वितीय पश्चमा आज्ञाय यह है कि संसारमें जितने द्रव्य हैं वे गुण और पर्याय सहित होते हैं । इसीको सामान्य विशेषात्मक होनेसे फर्क्य ऐसा निरूपण किया है । इन हीको विषय करनेबले द्रव्यार्थिक नय और पर्यायार्थिक नय हैं । इंपलिए पश्चन होता है कि मैं आत्मा द्रव्य हूँ, मुझमें क्या गुण होना चाहिए है ? बह्य ऐश्वर्यादिसे मद्गोमत्त पाणी आनेको विद्वान्, गणितज्ञ, इतिहासज्ञ आदि नाना गुण विशिष्ट मानकर पर्यायमें मत्ता होन भा है । संसृतिही भी अपना बहुत भारी मद्गोमत्तताका कारण मान बैठता है । यह सब मोक्षमार्गानभिज्ञ जीवात्माओंकी चेत्यें हैं । इनमें परतंत्र होजानेके कारण अत्माकी अत्तसिद्धि ही तरफरुचि, प्रज्ञा, श्रद्धा नहीं होती है । आत्मश्रद्धावान् व्यक्तियोंको विचारना चाहिए कि मेरी अत्तामें अनन्त गुण विमानमान हैं । मुख्य गुण ज्ञ तृप्त, दृष्ट्यापना, सुखवीर्य, सम्पदर्शन, ज्ञान आदि ७ मेरेमें

है । इन अष्ट कर्मों ने मेरे नैसर्गिक गुणों पर पदां
डाक रखा है । अतः मेरा स्वभाव विभावरूपमें
परिणत हो रहा है ।

तीसरा प्रश्न है कि मैं कहां का रहनेवाला हूं ।
व्यवहार नयसे अनादिकाकसे कर्मबंधके कारण
अनन्तानंत काल निगोदरक्षिमें रहा व अल्प
समयके लिए त्रसपथोपमें समय व्यतीत करता
रहा । इसी संस्कार वश यह अज्ञ प्राणी जिस २
पर्यायमें जाता है, वहीं विषके कीड़ेके मार्गिद
गर्क होता है । और वहीं का बसनेवाला अय-
नेको मानने लगता है । दर असकमें देखा जावे
तो जिस प्रकारसे कोई मनुष्य सिंइके चर्मको
ओढ़ लेता है और सिंह सरीखा मानने लगता
है, परन्तु वास्तवमें सिंह नहीं है । इसी तरह
वह प्राणी नाना गतियोंके नाना वेधोंमें
कतिपय समयके लिए जा बसता है । इसीलिए
इसका चतुर्गंतिका निवास वास्तविक नहीं है ।
जहां अत्म स्वभावकी जगृति है वही इस
चेतनका निवास है । निश्चयनयसे सभी द्रव्य
अरने २ परेक्षोंमें स्थित हैं । कोई किसीका
आधारभूत नहीं है । जिनका ऐसा कयाक है कि
लोकके शिखराममें मुक्तावस्था है, यह भ्रम
है । लोकके शिखराममें तो निगोदियातक निवास
करते हैं । अतः हे आत्मन् ! अपना रहनेका
ठिकाना शुद्ध चिद्रूपप्रदेश मय आत्मा ही है ।

चतुर्थ प्रश्नमें यह दिखलाया गया है कि मैं
जन्म जरा मरण व्याधि कर ग्रमित हूं । अब
मुझे क्या प्राप्त करना चाहिये । जहां मेरा
संकट दूर हो । सरागी प्राणी क्रमशः एकसे लेकर

लाखों रूपया कमानेमें जुटे हुए हैं । कोई विवा-
हकी फिकमें हैं । कोई पुत्रकी चाहमें हैं । कोई
मकानादिकी तलाशमें मर्धादातीत संक्रम है ।
कहां तक कहा जाय ? भौतिक जुटावको ही या
किंचित् देवपूजादिको सर्वेसर्वा मान उसकी
आयोजना मात्रको किपाप्य ? इस सवालका
उत्तर समझ बैठते हैं । निश्चयनयसे वह सब
क्षण नश्वर व ऐन्द्रियक हैं । इनसे अत्माका
कोई संबन्ध नहीं है । असकी प्राप्तव्य है मोक्ष
व सम्यक्त । सम्यग्दर्शन मोक्षमन्विरका प्रथम
सोपान है । जिसको सम्यक्तकी प्राप्ति होगई,
जिसका आत्मस्वरूप अवभासन होगया वह
नियमसे अर्द्धपुद्गलपरिवर्तनकालमें मोक्ष प्राप्त
करलेगा । बिना सम्यग्दर्शनके अप तप पूजन
स्वाध्याय, वन, स्त्री, पुत्रादि जीर्ण तृणवत्
निस्तार है । सम्यग्दर्शन सहित नरकका वास
मला और सम्यग्दर्शन रहित नभ्रमेवैयक तककी
महाविमूति निःसार है । अतः सम्यग्दर्शन और
परंपरासे मोक्षमार्ग द्वारा मोक्ष प्राप्तव्य है ।

इस तरह विचार कर जुकनेपर अन्तमें प्रश्न
उठता है कि मुझे तेरा प्राप्तव्य किस निमित्तसे
प्राप्त होगा ? अर्थात् जितने कार्य संसारमें होते
हैं विना कारणके नहीं हैं । शीतकी बाधा भेट-
नेके लिए उष्णस्पर्शकी जरूरत पड़ती है ।
और उष्ण वेदनाके निवारण करनेके लिए
शीतलोपचार करना पड़ते हैं । छुवाके लिए
अन्न, द्रैथुनके लिए स्त्री, इत्यादि सांसारिक
आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए नाना प्रकारके
कारण कल्प जुटाने पड़ते हैं । इसी तरह संसा-

रकी नाचा भेटनेके लिए या प्राप्त कर्मसे मुक्त होनेके लिए निमित्त मिलाना ही हमारा पांचवें प्रश्नका असली ध्येय है ।

यों तो लोग शारीरिक विकासिताकी परिवृद्धिके लिए रातदिन ऐड़ीसे छेकर चोटी तक पसीना बहाते हैं । न्याय अन्यायका विचार नहीं करते हैं । भक्ष्य अभक्ष्यका विचार नहीं रहता है । शूकरकी तरह सुबहसे शामतक उदरपूणी और काम पुरुषार्थका प्रधान बक्ष्य ही रक्खा जाता है । आचार्योंका कहना है कि गृहस्थकी धर्म, अर्थ और काम ये तीन पुरुषार्थ अविरोध पूर्वक पालन करना चाहिए, मगर प्राणियोंपर कलिकालने इतने अरुदी असर डाल दिया है कि धर्म पुरुषार्थको बतूनी जमाखर्च सरीखा बनाते हुए अर्थ और काम पुरुषार्थपर सोरह आना ध्यानकर लिया है । प्रदेशर में व्यक्ति व्यक्तिमें अर्थ और कामके सिवा अन्य गंध भी नहीं है । दर असलमें इनकी मुख्यतासे हमे हमारा प्राप्तव्य नहीं मिल सकता है । मोक्षकी प्राप्ति संवर और निर्जरासे होगी । प्रति समय कर्म बन्ध होरहा है । जबतक आमदनीमें पासा-श्रवको नहीं रोकेगे तबतक हमारी सर्व क्रियायें गमस्नानवत होनाया करती है । अतएव संवरकी अत्यधिक आवश्यकता है । व मोक्षप्राप्तिको एकोदेश निर्जरा ही कार्यकारी है । मोक्षकी प्रथम सीड़ी सम्पददर्शन दर्शनमोहके उपशम क्षय क्षयोपशमसे ही मिलेगी । व्यवहारमें प्रथम, संवेग अनुकंपा और अस्तित्वय ये चार भावनाएं निश्चय सम्पत्तको प्राप्त कराती हैं । इसके

अतिरिक्त देवशास्त्र गुरुका श्रद्धान, सततस्व, नव पदार्थ, पंचारितकायका श्रद्धान् व्यवहार सम्पत्तके लिए अनिवार्य है । अगर आज पंचमकालमें यह भी न बन पड़ा तो फिर हममें व तिर्थचोंमें कोई भेद नहीं रह जावेगा ।

आज वर्तमान जैन भारतमें अत्मस्वरूपकी प्राप्तिका मुख्य साधन व्यवहार सम्पत्त ही है । अतएव प्राणीमात्रका इसकी तरफ प्रधान बक्ष्य होना चाहिए । इसके अतिरिक्त अन्तरात्माकी ज्योतिकी जागृतिमें सतत व्यसनका त्याग व अन्यायका त्याग व अभक्ष्य सेवनका त्याग व अष्टमूलगुण परिपालन यह रूप इसके सहचारित्वकी तरह साधन है ।

पाठकों ! इसके विषयमें कहना तो बहुत कुछ था किन्तु पुनः बधावसर कहूंगा । मेरा ध्येय वही है “ भावना भवनाशिनी ” के सिद्धान्त अनुसार हमें अपनी कर्तव्य गाथाको निरंतर रटते रहना चाहिए । और उसके मुजब बधासक्ति प्रयत्न करना चाहिए । अन्यथा आयु-काल थोड़ा है, कालका परवाना आनेपर हमें दूसरी परीयके लिए अनिच्छा रहनेपर भी जाना पड़ेगा । अतः सतत शास्त्रध्यान करते हुए सम्पत्तकी चाहमें सततव्यसन त्याग, अष्टमूलगुण धारण करना हमारा कर्तव्य है । कर्तव्य पाकनसे ही हम भगवान महावीरकी संतान कहलावेंगे ।

सतीचरित्र और शीलमहिमा ।

इसमें सतियोंके चरित्र हैं । पृष्ठ ६० मूल्य (—)

फिर तैयार होगया, अवश्य मगाइये ।

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।

राजस्थानमें जैनियोंकी प्राचीन कीर्ति ।

(ले०-रामकुमार सेठो, रतनपुरकलां)

संसार परिवर्तनशील है । एक समय वह था कि जैन धर्मकी धरना समस्त भूमण्डल पर फहराती थी और जैन सम्रज्यकी छायामें मनुष्य आनन्द करते थे । महाराज चंद्रपुत्र और अशोकके समय तक जैन राजकी नीब स्थिर थी, पश्चात् इसका अद्ययावत प्रारम्भ हुआ । राजस्थानमें अनेकों बार यवन राजाओंकी चढ़ाहयां हुईं । निस प्रदेशको उन्होंने हस्तगत किया उसका विनाश ही करते गये । मंदिरोंके स्थानमें मसजिद तथा धर्मशाळाओंको अन्य रूपमें परिवर्तन कर दिया । असंख्य जन तकवारके जोरसे कुत्तकमान बनाये गये । आजकल यदि कोई व्यक्ति राजस्थानका दर्शन करे तो उसका हृदय चकचक करने लगता है, हृदयमें करुणारसका आवेग उठ जाता है । अब भी उन मग्न प्राचीन स्थलोंको देखकर बहुतसी पुरानी कथायें याद आजाती हैं । चित्तौड़में जैनियोंके ९-६ मंदिर अब भी विद्यमान हैं । उनमें स्थित जिन प्रतिमामें देखकर प्राचीन शिराकलाकी याद आजाती है । जैसलमेर, धूरी, उदयपुरके अन्तर्गत ग्रामोंमें अनेक प्राचीन जैन मंदिर हैं जो अब मग्न दृश्यामें हैं । केशरियानाथजीका मंदिर अब भी राजस्थानकी शोभा बढ़ा रहा है । राजा रायमल जैन थे जिनके कई बनवाये हुए मंदिर अबतक विद्यमान

हैं । हम लोगोंको एक ऐसी संस्था बनानी चाहिये जो कि प्राचीन वस्तुओंकी खोज करनेवाली हो; क्योंकि किसी भी जातिका पूर्व इतिहास उसकी उन्नतिका सहायक होता है ।

जैनियों ! अब भी सावधान हो जाओ, तुम्हारी प्राचीन कीर्ति अज्ञय है । अधुनिक लोग तुम्हें बौद्धके समकालीन बता रहे हैं, उनके अज्ञान काट खोल दो । उन्हें समझाओ और यह प्रमाणित करदो कि जैनधर्म अनादिसे है और अनादि कालतक रहेगा, यही सनातनधर्म है । राजस्थानका इतिहास इस बातका साक्षी है कि प्राचीनकालसे ही जैनधर्म चका आ रहा है । २१६ नं० एक लेख जो जमी हाक ही मिठा है इस बातकी साक्षी है । आधुनिक इतिहास वेत्ताओंके लिये राजस्थानका इतिहास प्रमाण स्वरूप है, आतु । अब शीघ्र ही जैन भाइयोंकी आनी लुप्तपायः अक्षय कीर्तिको प्रकटित करना चाहिये नहीं तो विश्वमें तुम्हारा नाम लेनेवाला कोई भी नहीं रहेगा । बड़े १ विद्वान् जीहरोसे हमारा अनुरोध है कि वे एक ऐसी संस्था स्थापित करें जो कि पत्रोंमें जैन कीर्ति सम्बंधी लेख मधुरी तथा सरस्वती आदि पत्रिकाओंमें छपाती रहे ।

गीता छंद ।

है कीर्ति अक्षय यह हमारी कोरुमें विक्रमात है ।
विद्वानोंको यह सदा इतिहास हीसे ज्ञात है ॥
अतएव अबतो जैनियों कुछ ध्यान निम हिवमें करो ।
अब लुप्तपायः कीर्ति है जो तुम उसे प्रकटित करो ॥

यदि वृद्धतासे भय है तो दांतोंकी रक्षा करो ।

(ले०-पं० मनोहरलाल जैन वैद्य-शिवपुरकलां)

संसारके प्रत्येक व्यक्ति सुख और शांतिपूर्वक जीवन वितानेकी अभिलाषा रखते हैं । परन्तु अबतक वे तदनुकूल योग्य आचरणोंकी ग्रहण नहीं करेंगे तबतक सुख और शांति कोसों दूर है । बहुतसे द्रव्यकोलुपी मनुष्य शरीरकी कुछ भी परवा न करके केवल द्रव्योपार्जनमें ही सुख और शांति समझते हैं । अनेकों जिन्हा इंद्रियके कोलुपी नानापकारके अमक्ष पदार्थोंका आस्वादन कर क्षणिक सुखके वाते इसीको ही अपूर्व आनन्द मानते हैं । चाहे कालांतरमें नानापकारके दन्त सुख रोगादि व शरीरकी अस्वस्थता क्यों न हो और यह बहुमतसे सिद्ध है कि जितने रोग होते हैं वे कुभोजन तथा कुआचरणोंसे हुआ करते हैं । तो भला सोचनेकी बात है कि जो दाहकी पीड़ासे दग्ध हो रहा है वह क्या सूर्यकी तापसे शांति लाभ करसकता है ? कदापि नहीं । उसी प्रकार जिसको शरीरकी रक्षा करनेमें लापरवाही है वह भी शांति लाभ नहीं करसकता । कक्षाधिपति भले ही होनाओ, परन्तु शरीर स्वस्थ (निरोग) नहीं है तो कुछ भी नहीं । अतएव निश्चयसे सिद्ध है कि द्रव्यादि भोगोपभोग सामग्रीका अभाव होते हुये निर्धन स्वस्थ (निरोग) मनुष्य कक्षाधीशसे सहस्र गुणा सुखी है ।

यही हमारा उद्देश "दंतारक्षा" से है । वर्तमानमें हमको बहुतसे ऐसे मनुष्य देखनेमें आते

हैं जिनकी अवस्था ४० वर्षसे कम है। कदापि १०० वर्षके वृद्धकी तरह दांत रहित पीपले बनकर खुली बन जाते हैं । इसका यही कारण है कि हम लोगोंका योग्य स्नानपान और शरीरकी रक्षापर रञ्ज मात्र ध्यान नहीं । यदि आप बहुत कालतक स्वादपूर्वक भोजनका आनन्द और सुखसे जीवन विताना चाहते हो तो अमक्ष मक्षण दांतोंको हानिकारक पदार्थोंका अमक्षण मत करो । प्रतिदिन अच्छी तरहसे दांतोंका संभन करो । ऋतुके अनुसार किंचित् स्वच्छ शीतक व उष्ण जलसे बार बार कुल्ला कर सुखको शुद्ध रखलो ।

बहुतसे स्त्री पुरुष व उनकी अनुकरणशील पुत्र पुत्रियां दंतौन करना कोई योग्य क्रिया ही नहीं समझतीं, परयुत दंतौन करना बुरा समझते हैं । यह उनकी और उनके बयोवृद्धोंकी नितान्त मूल है । हमलोग साधु नहीं हैं ये गुण साधुओंके हैं । अनुभवसे ज्ञात है कि बहुतसे स्त्री पुरुष व उनकी सन्तान भोजनको जाते हैं, थोड़ासा जब सुखमें किया और कुल्ला कर सधुकी तरह भोजन करने लगे । बाद रखनेकी बात है कि यही आकरष्य प्रतिदिनका दन्त मल एकत्रित कर क्रीट व दुर्गंधादि नाना प्रकारके दन्त रोगोंको उत्पन्न कर दन्त नष्ट करदेता है और अतसमयमें ही दन्तहीन पीपले बुढ़हे बन बैठते हैं । ऐसा होनेसे सुखकी शोभा और भोजनका स्वाद जाता

रहता है। साथमें अच्छी तरह भोजन न करनेके कारण अवचरा भोजन खाया जाता है, जो अधिक समयमें भी ठीक तौरसे हजम नहीं होता। जिससे अजीर्ण तथा आमादि रोग होकर मुखव्रण बगैरह नाना असाध्य रोग होजाते हैं और जीवन पर्यन्त अनेक दुःखोंका सामना करना पड़ता है। यदि कदाचित् कभी सभा सोसायटीमें जानेका सौभाग्य हुआ तो उस वक्त मुँहकी दुर्गन्धतासे जनसमूहमें बैठना कठिन होजाता है। साथमें समिपस्थ लोग उसको बुरी तरह घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं और कहते हैं कि ये मनुष्य क्या दरिद्री और मूर्ख है कि इसको दांतोंकी शुद्धिका कुछ भी रूपाक नहीं, मूर्खकी तरह बैठा हुआ है। इत्यादि अयोग्य रीतिसे अनादरकी दृष्टिसे देखा जाता है। अर्धु ।

मेरे प्यारे शिक्षामित्रापी भविष्य उन्नतिके भाजन छात्रगण ? इस विषयपर आप लोगोंको विशेष रीतिसे अवश्य ही ध्यान देना चाहिये। दन्तशुद्धि व जिह्वाशुद्धि जबतक ठीक न होगी तबतक नोकरेकी शाब्दिक शुद्धि होना कठिन है। शब्दके उच्चारणसे ही अनुमान किया जाता है कि ये विशेष ज्ञानी पुरुष है। दन्तशुद्धिके साथ साथ आप लोगोंको और भी शरीर संबंधी विषय पर रूपाक रखना चाहिये। जैसे बधासमय योग्य स्नाना पीना, ब्रह्मचर्यसे रहना व्यायाम बगैरह करना, स्वच्छ वायुका दोनोवक्त सेवन करना, समयानुकूल पढ़ना, संघषा समय बिना दीपकके तथा चांदनीमें ब छेट कर आंखोंसे पुस्तक लगाकर इत्यादि अयोग्य रीतिसे नहीं

पढ़ना चाहिये। उसवक्त आप लोगोंको ऐसा करनेसे नुकसान नहीं मालूम पड़ता किन्तु कालान्तरमें दृष्टिकी हीनता, मस्तककी कमजोरी आदि अनेक नुकसान होजाते हैं जो मुझे अनुभवसे ज्ञात हैं। यहाँपर प्रकरण बश संक्षेपसे मैंने दोचार बातें लिखी हैं। आशा है अवश्य ही योग्य समग्रकर ध्यान देंगे।

वर्तमानके स्त्री पुरुषोंमें जो मिस्त्री आदि अनेक मसालोंको दांतोंपर लगानेकी परपाटी प्रचलित है यह पथा वास्तवमें बहुत ही अयोग्य और निन्दनीय है। कृष्णतासे दांतोंकी व मुखकी शोभा नहीं होती; किन्तु दन्तावलीका वर्णन हरएक स्थानपर स्फटिकके सदृश घीत ही किया गया है न कि कृष्ण। और कहाँतक लिखें, बहुतसे अज्ञानी मूर्ख लोगोंकी देखा देखीसे स्त्रियोंकी रसना इंद्रियमें भी कीड़ोंकी खलवाहट होने लगी वे तंबाखु खाने, सुँघने आदि नशेबाजीमें रात्रि दिन अग्रसर होनेकी कोशिश कर रही हैं। बड़े २ अनुभववी डाक्टरोंने सिद्ध कर दिया है कि तंबाखु बहुत बुरी नशेकी चीज है इससे कलेजा दग्ध होता जाता है दांत खराब होजाते हैं और तो क्या इसके विषये अकारण मृत्यु भी होजाती है।

अब हम दांतोंकी शुद्धिके लिये यह बताना चाहते हैं कि दंतों किस वृक्षकी होनी चाहिये और कब करना अथवा जो दंतों करनेसे पाप समझते हैं उन्हें क्या करना चाहिये इत्यादि सममाण लिखते हैं, जैसा कि सुव्रतादि ऋषियोंने लिखा है—

उत्थायोत्थाय सततं स्वस्थेनारोग्यमिच्छता ।
धीमता यदनुष्ठेयं तत्सर्वं संभवक्ष्यते ॥

अर्थ—हम उन बातोंको बतलाते हैं जो नित्य प्रति ठठकर स्वास्थ्य और आरोग्यकी इच्छा करने-वाले बुद्धिमान पुरुषोंको करने योग्य हैं ।

तत्रादौ दन्तपवनं द्वादशांगुलमायतम् ।
कनिष्ठकापरिणाहमृज्वग्रंथितमत्रणम् ॥
अयुग्मग्रंथियञ्चापि प्रत्यग्रं शस्तभूमिजम् ।
अवेक्ष्यर्तुञ्च दोषं चरसं वीर्यञ्च योजयेत् ॥
कषायं मधुरं तिक्तं कटुकं प्रातरस्थितः ।

अर्थ—प्रत्येक मानवको प्रातःकाल सूर्योदयके प्रथम ही शौच क्रियासे निवृत्त होकर बारह अंगुल लम्बी कनिष्ठ अंगुलीके समान रथूक सीधी बिना गांठकी छिद्र रहित जिसमें दो गांठे न हों उत्तम मूमिमें उत्पन्न हुए वृक्षकी होनी चाहिये प्रस्तु दोष रस और वीर्यके अनुसार देखकर कसैकी मीठी चरपरी कड़वी दत्तुन होनी चाहिये ।

यथा—निम्बश्च तिक्तके श्रेष्ठः कषाये खदिरस्तथा ।

मधूको मधुरश्रेष्ठः करञ्जः कटुके तथा ॥

अर्थ—चरपरे वृक्षोंमें नीम, कसैलेमें खैर, मीठेमें महुआ और कड़वेमें कंसकी दत्तीन श्रेष्ठ हैं ।

अब रही यह बात कि जिनको दत्तीनसे ग्रहेन है वे निम्नःश औषधियोंके चूर्णसे दांतोंपर मंजन करें । और साथमें दत्तीनवाले भी कोमल कूर्चोंसे कगाकर शनैः दांतोंपर रगड़े । दंतमंजन त्रिकुटा (सोठ मिर्चपीपल) त्रिफल (हरक बडेडा आंठला) तैल और सेवा नमक मिला जबवा तेजोवतीके चूर्णसे नित्य प्रति दांतोंका मंजन करें । साथमें ये ध्यान रहे कि कूर्चोंको मसूड़ों पर न रगड़े क्योंकि रगड़से क्षतदि होकर रक्त निकलनेकी

संभावना है । प्रत्येक कार्यके अनंतर फफ मांति होनी चाहिये सो कहते हैं । यथा—

तद्दीर्घोपदेहो तुश्लेष्याणं चापकर्षति ।

वैशद्यमन्नाभिरुचि सौमनस्यं करोति च ॥ इभुत

अर्थ—दातन करनेसे मुखकी दुर्गंध और चिक्-नापना दूर होजाता है, कफ निकल जाता है, मुखमें विशदता अन्नमें रुचि और चित्तमें प्रसन्नता होजाती है ।

अब यहां यह बतलाना जरूरी है कि कौन-२ रोगशले दत्तीन न करें । जिस मनुष्यके गले, तालु, ओष्ठ, जिह्वा आदिमें रोग होगया हो, मुखपाकमें श्वासमें, खांसी, हिचकी, मूच्छार्त, मदपीडित, शिर रोगी, तृषार्त, बका हुआ, अर्दित रोग, कर्णशूळ, दन्त रोगी, इसप्रकार ऊपर लिखे रोगोंमें और इन रोगियोंको दत्तीन करना बर्जनीक है ।

बादमें जीभके मरुको भी जिह्मी द्वारा शनैः र साफ करना चाहिये । इससे जिह्वाकी शुद्धि मुखकी विरसता जीभका मरुदुर्गंधता और अड़ता दूर होजाती है । वैद्यशास्त्रानुसार जिह्मी निम्नप्रकार बतलाई गई हैं । यथा—

जिह्वानिलेखनं सौम्यं सौवर्णं वार्षमेव च ।
तन्मलापहरं सस्तं मृदुश्लक्ष्णं दशांगुलम् ॥ इभुत
निव्हा मरु दूर करनेके लिये अच्छी कोमल चिकनी दश अंगुल लम्बी चांदी सोने जबवा वृक्षकी होनी चाहिये ।

आशा है हरएक व्यक्ति इस साधारण लेखको पढ़कर सार ग्रहण करेंगे । साथमें दन्त मंजनके १-४ अनुमूत नुक्तों और देवा हं, जिनको जो अनुकूल पड़े अवश्य ही काम उठावेंगे ।

१-बादामके छिलकेकी राख १ तोला, मस्तगी ६ मासे, काजी मिर्च १ मासे, सैबा नमक ६ मासे, कपूर ६ मासे उपरोक्त सब चीनोंको कूट पीसकर कपडछान करके प्रतिदिन मंजन करें ।

२-दालचीनीका चूर्ण ४ तोला, रीठेका चूर्ण १ तोला, फिटकरी १ माशा, कर्था २ तोला, विप्रमेष्ट १० रत्ती, इलायची १ तोला, दालचीनीका तेक ४ मासा इन सबको कूट पीस छानकर चूर्ण बनाले । फिर इस चूर्णसे चौगुनी सेकसड़ीका चूर्ण मिलाकर दांतोंपर मंजन करें । यह चूर्ण बहुत ही उत्तम है मरु शुद्ध करता है कीटोंको भी नष्ट करता है ।

३-खट्टे अनारके छिलके १ तो० फिटकरी २ तो० अकरकरा ७ मा० गुन्नाबके फूठ ७ मा० माजुक ७ मा० इनको कूटपीस छानकर दांतोंपर मजनेसे दांत मजबूत और शुद्ध होते हैं ।

तीर्थकर चित्रावलि ।

२४ तीर्थकरोंके रंगवेरंगी २४ अलग बड़े २ चित्र कान्चमें जडवाकर मंदिरोंमें रखने योग्य यह चित्रावलि अवश्य मगाइये । मूल्य ३)

और भी बड़े २ रंगीन चित्र-शिलाली ॥, प्रा० क्षांतिप्रणयत्री ॥), चम्पापुरी (=), पावापुरी (=), गिरनार (=), मोलह स्वप्न ॥), चन्द्रगुप्तके स्वप्न ॥) अक्षयवृक्ष (=), पद्मेक्ष्मा स्वप्न (=), सीताजीकी अग्नि परीक्षा ॥), जन्मकल्याणक ॥), आहारदान, ॥) म० पार्श्वनाथ (=) ये चित्र तथा तीर्थ म त्यागियोंके ३५ प्रश्नकारके एक आनेवाले चित्र भी अवश्य मगाइये ।

प्रबोधसार टीका ,, १।)

चतुर्विंशतिसंघान नबीन ॥॥)

मैनेजर-दि० जैन पुस्तकालय-मुरत ।

ध्यानमें रखनेयोग्य बातें ।

१-प्रत्येक मनुष्यको प्रतिदिन इस बातके लिए तैयार रहना चाहिए कि कोई न कोई मनुष्य हमारी बातें अवश्य फाटेगा और हमें विरास भी करेगा ।

२-संसारमें कोई निर्दोष नहीं है । इसलिये किसीसे भी निर्दोष व्यवहारकी आशा मत रखो ।

३-प्रत्येक मनुष्यके स्वभावका मंजन करो । निससे उसकी प्रसन्नता और अनुकूलता मा-लूम पड़े ।

४-यदि किसीपर आपत्ति आवे तो सहानुभूति प्रगट करो और आनन्द होनेपर आनन्द मनाओ ।

५-यदि तुम्हारा स्वभाव चिढ़ाचिढ़ा है तो शीघ्रतासे मत बोलो और क्रोध जानेपर सहसा कोई काम मत करो ।

६-मरु बन पड़े दुमरेको अच्छी सलाह देनेसे मत चूको ।

७-मपने बड़ोंसे अग्रजापूर्वक और छोटीसे सम्मानपूर्वक व्यवहार करो ।

८-किसीकी प्रशंसा करनी हो तो दस बाद मियोमें करो और दोष कहना तो एकान्तमें कहो । प्रशंसा तो सदैव करो । पर निन्दा समय पर करो ।

९-शक्य उन्नत न बनो किन्तु औंठोंको भी उन्नत बनाओ । कंछेदीलाल जैन न्यायतीर्थ ।

परिवर्द्धके सभापतिका त्याग—हमारी भारत
 दि० जैन परिवर्द्धके सभापति श्री० सि० पन्ना-
 काकनी-अमरावतीने वाराणसीकी सभासदी त्याग
 दी, अपने १३ वर्षके पुत्रको सत्याग्रह संग्राम-
 मके किये दे दिया व १०) मासिक सहायता
 सत्याग्रह संग्राम अर्थात् चले देते रहना
 स्वीकार किया है। अन्य है आपके हम आदर्श
 त्यागको।

अमरावती—के देखभक्त मंगलजी, प्रेमचरणी,
 बाबूकाकनी, मोतीकाकनी आदि परवार भाई-
 भाइयोंने सत्याग्रह सैनिकोंमें अपने नाम लिखाये
 हैं तथा पन्नाकाक गांधी दि०, रतनकाक काळे
 (स्वा० श्वे०) जैन भी स्वयंसेवकोंमें मरती
 हुए हैं।

अंतरीक्षजीमें श्वे० जैनोंका जुलम—सिरपुर
 (अकोला) से आरणेनी द्वारा माखूर हुआ है
 कि अंतरीक्षजीमें श्वे० जैनोंद्वारा बहुत जुलम व
 अनुचित बर्ताव हो रहा है। मूक मंदिरको ये
 लोग ताका लगाकर दर्शन पूजामें अंतराय करते
 हैं। व चर्मलाका ज० १ की दीवाल तुड़वाने
 लग गये हैं व मंदिरके पासकी खुली जमीनपर
 भी अपना हक करनेकी कार्रवाई कर रहे हैं।
 हमारे पार्वती बगीचासे १०० वृक्ष (जाम,
 सीताफल आदिके) कटवा डाले हैं व पार्वती
 मंदिरका दरवाजा व मार्ग बंद करनेको १० मण्डू
 लगाये हैं। ये लोग मूक मंदिरके आसपासकी
 दीवाल भी गिराने लगे तब पुलिस बुलाकर बंद
 कराया, थोड़े समय बाद फिर गिराने लगे तब
 फिर पुलिस आई तब बंद किया। एक वृद्ध

दि० जैन स्त्रीने इस समय सत्याग्रह भी किया
 था। श्वे० जैनोंने अपने आदिमियोंको कठो
 सहित लड़े रखे थे। अभी तो यह अत्याचार
 पुलिसने रुकवाया है परंतु जने वे ऐसे अत्या-
 चार नहीं करेंगे ऐसा कैसे कहा जासकता है ?
 हमारी तीर्थक्षेत्र कमेटीको इस मामलेपर पूर्ण
 ध्यान देना चाहिये। प्रिन्सी कौंसिलके फेलोके
 अनुयाय दर्शन, पूजन आदिके सब हक हमें
 वापस मिलने चाहिये।

देवगढ़—जीर्णोद्धारके किये २०००) वा०
 मधुगदास पदमचंद (जागर) ने देना स्वीकार
 किया है। अब कार्य प्रारंभ होगा। और बहुत
 सहायताकी आवश्यकता है।

नाथूराम सिंघई—कलितपुर।

मुनि श्री पायसागरजी—ने स्वास्थ्य ठीक
 होनेसे अब आगरासे दक्षिणकी तरफ बिहार
 किया है।

दुधनी—में पंचकस्याजक प्रतिष्ठा होगई।
 कारनासे ज० देवचंदजी व पं० देवकीनंदनजी
 सिद्धान्तशास्त्री भी पधारये व तीन कीर्तन-
 कारोंके अलगकीर्तन हुए थे। मंदिरमें ११००)
 की जाब हुई थी।

पंचकोला—में “ जैन युवक संघ ” स्थापित
 हुआ है।

दशाहुमठ भाई जेलमें—सोलापुरमें भाई
 शिवदास मोतीचंद वेगमणीकर दशाहुमठ तथा
 परशोतम राठी मातादी ये दोनों जैन बन्धु
 नमक कानून सत्याग्रह संग्राममें टाई १ वर्षकी
 कैदको सुधी २ गये हैं। वचाई !!!

परिषद्के महामंत्री—हमारे भारत० वि० जैन परिषद्के महामंत्री बा० रतनकाकमी जैन वकील बिजनौर, जिन्हा कौन्सेल कमेटीके भी मंत्री होनेसे आपने सत्याग्रह संग्राममें अपना पदार्पण किया है जिससे आपके जेठ मानेकी पूर्ण संभाषना होनेसे आपने अपनी अनुपस्थितिमें परिषद्के मंत्रीका कार्यभार बा० राजेन्द्रकुमार जैन बिजनौरको सुपुर्न किया है।

वंवई श्राविकाश्रम—में ता० २९-४-३० से ता० ९-६-३० तक गरीबी छुट्टियां रहेगी इसलिये नवीन प्रवेश होनेवाली श्राविकाओंको छुट्टीके बाद प्रवेशकार्य में जाने चाहिये।

असयत्तीयाका फर्ज—वंवईसे जगमोहनदास हीराबाब लिखते हैं कि गत तीसरे वर्ष इसी दिन केशरिबानीके मंदिरमें हत्याकांड होकर हमारे कई दिगम्बरी साईं मारे गये व ज़रूमी किये गये थे उसीका पूर्ण फैसला अभीतक नहीं हुआ है न अजादंड केसका सुझावा हुआ है। दूसरे कुड़ची अत्याचार कांडका न्याय भी अभीतक नहीं हुआ है इसलिये हरएक स्थान इस अक्षयत्तीयाको सभा करके शोक मनाना चाहिये व शीघ्र न्याय मिले ऐसी कार्यवाई करनी चाहिये। केशरिबानी हत्याकांड कमेटी अबमेर क्या सोचई है कि कुछ भी सुधार नहीं प्रकट करती? कुड़ची ज्ञान कम'छनई रिपोर्ट भी अभीतक प्रकट नहीं हुई है ऐसा क्यों।

भूल सुधार—इस अंकमें पृ० २९९ से २७० को २३३ से २४८ तक समझें।

→॥ फूल ! ॥←

नवल छटा दिखला इठलाते,
पंज करते हो क्यां भूल !
तनिक देरमें गिर पृथ्वीपर,
हो जाओगे—~~न~~ समूल !
जिन करकमलोंने रक्षा की है,
तेरी नित्य निरन्तर ! फूल !
मदमें फूला देख तुझे वह,
बन जायेंगे तत ! विशाल !
जिसने मोद सहित सींचा है,
तुमको मान मनोहर ! फूल !
होकर कुपित नष्ट कर देगा,
देख तुम्हारी भारी भूल !
उपमा रहित समझ अपनेको,
करते महा भयंकर भूल !
पतित पद दलित होजानेपर,
सभी हसोंगे तुमपर फूल !
अहङ्कार कर कभी न फूला,
वह रहता नित प्रति ! भरपूर !
फूल गया होकर मदाब्ध जो,
होता है वह चकना चूर !
चाहो कीर्ति जगतमें अपनी,
नष्ट बने तब डाली ! सम !
जगमें उत्तम कहलावेगें,
बनकर अनुपम स्वयम् कुमुम !

—कल्याण।

विलकुल नई काश्मीरी केशर।

भाप घटाकर १॥) तोला कर दिया है। मिला-यती केशरका उपयोग मत करिये। और यही शुद्ध स्वदेशी काश्मीरी केशर ही हमारे यहाँसे भेगाइये।

वशांगधूप २॥) रतल।

अगरबत्तो १॥) रतल।

मेनेजर, दिगम्बर जैन पुस्तकालय—सुरत।

"जेनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकलासुरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया और दिगम्बर जैन "ऑफिस बन्वाबाकी सुरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।



संपादक:-मूलचन्द्र किसनदास कापड़िया-सुरत।

विषयानुक्रमणिका.

नं०	विषय.	पृष्ठ.
१	जिनवाणीकी पुकार	२७३
२	संपादकीय वक्तव्य-देशकी परिस्थिति, सुरतके सरैया जेनी जेलमें....	२७४
३	जैन समाचार	२७७
४	श्रुतपंचमी (पं० दीपचंदनी वर्णा)	२७९
५	राजा शारबेल व उमका वंश (कामतापमाद)	२८४
६-७	अभिमान, जगज्जे भंगल....	२८६-८७
८-९	देवगढ़ क्षेत्र, प्रेम-पाश	२९१-९४
१०-११	सोनीत्रा श्राविकश्रम, लग्रगाळो	२९५-९७
१२-१३	महावीरघोषणा, जन ई के जमदूत	२९८-३०१
१४	मगज्जेन न्यायकांड	मुद्रपट

वर्ष २३वां
अंक ७

वीर सं० २४५६
वैशाख.

उपहारग्रन्थ वी० पी० से।

"दिगम्बर जैन" के इस २३वें वर्षके दो उपहार ग्रन्थ-
मवरत्न और हिन्दी जैन विवाहविधि तैयार हैं व ८ दिनोंमें
सब ग्राहकोंको २०) पी० पी० से क्रमशः भेजे जायेंगे।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।०) विशेषांक मूल्य ३।।)

સ્વર્ગીય જૈન મહિલારત્ન—

મગનજીન સ્મારક- કૃંડમાં મળેલી સ્વીકારતા.

૧૩૭) ગયા અંકમાં પ્રકાશિત

- | | |
|-------------------------|--------|
| ૫) નેત્રીચંદ વકીલ | જયપુર |
| ૨૫) જ્ઞાનવતીબાઈ | ગોહાના |
| ૧૦૧૧) દિં નૈન યંચ | કટક |
| ૫) મહાદેવી મહાવીરપ્રસાદ | ખતૌલી |
| ૫) પ્યારેલાલ કન્હૈયાલાલ | કાનપુર |
| ૫) નાથુરામ ચુનીલાલ | અંજડ |
| ૫) પં. ગુલાબચંદળ | બડવાની |
| ૫) પ્ર૦ કૃતેહસાગળ | બીલીડા |

(૭૦૨૧૧)

“દિગંબર જૈન” ના જે જે વાંચકોએ આ સ્મારક કૃંડમાં હજી સુધી પોતાનો ફાળો મોકલાવ્યો નથી તેમને છેવટમાં આગ્રહ પૂર્વક નિવેદન કરીએ છીએ કે સ્વર્ગવાસી જૈન મહિલારત્ન જીન મગનજીન માણેકચંદ જે. પી. નો આખી જૈન સ્ત્રીસમાજ પ્રત્યેનો અનહદ ઉપકાર ધ્યાનમાં લાવી તેના ચતુર ક્રિયિત બહુભા તરીકે આ સ્મારક કૃંડમાં તમારો યથાશક્તિ ફાળો તરતજ જરૂર મોકલાવી આપો. ઓછામાં ઓછા ૫) મોકલનારને “દાનવીર માણેકચંદ નામનો ઘણો મોટો ગ્રન્થ જેમાં ૪૦ ચિત્ર છે તથા ૧૦૦૦ પૃ. છે તે માત્ર આઠ આના. પોસ્ટેજના લઈ ભેટ અપાય છે. હવે આઠ દિવસમાં આ કૃંડ બંધ કરવામાં આવશે માટે જીન મગનજીનનું નામ કાયમ રાખવા માટે ખોલવામાં આવેલા આ સ્મારક કૃંડમાં યથાશક્તિ રકમ તરતજ મોકલો. નિવેદક—

મુલચંદ કસનદાસ કાપડિયા—મુરત.

આંકલાવ—ના એક બાઇબે પોતાની ૧૩ વર્ષની પુત્રીની સગાઇ ઘોષાના ૫૦ વર્ષના એક શ્રદ્ધ ભાઈ સાથે કરી છે, તે વિવાહ ન થાય એ માટે મુંબાઇ દિં જૈન યુવકમંડળ પ્રયત્નશીલ છે.

ઉજેડિયા—માં પં. દીપચંદળ વર્ણી તથા મારતર લલ્લુભાઇના ઉપદેશથી નિર્માલ્ય દ્રવ્ય વેચવું નહી, લગ્નાદિમાં બહા ગીતો ગાવા નહી, આખા ગામમાં ચાહનો બહિષ્કાર, સ્વદેશી વસ્ત્રોનો અનેકે નિયમ લીધો, ૨૫ ક્ષત્રિયોએ માંત્ર દારૂ છોડયા, સ્ત્રીઓનું રડવા કુટવાનું બંધ થયું, જે જૈન પાશાલામાં રેટિયો ચાલુ થયો છે.

અમદાવાદ—માં પતાસાની પોળવાળા નૃસિંહપુરા દિ. જૈન મંદિરની વેદી પ્રતિષ્ઠા પં. દીપચંદળ વર્ણીએ સામાન્ય વિધિથી પથ્થાળ ઓછા ખર્ચે વેશ્યાખ સુદ ૩ ને દિને કરાવી હતી જે પ્રસંગે ૩૧) ૩. બ. આશ્રમને દાન મળ્યું હતું.

સ્વદેશી વ પવિત્ર કાશ્મીરી કેશર ।

માવ ઘટાકર ૧૧) તોલ્લા કર રિયા હૈ । વિકા-
પતી કેશરકા ઉપયોગ મત કરિયે । મૌર વહી શુભ
સ્વદેશી કાશ્મીરી કેશર હી હમારે મહાંસે મેગાહયે ।
દશાંગધૂપ ૨૧) રતલ । અગરહસો ૨૧) રતલ ।
મેનેજર, વિગમ્હર જૈન પુસ્તકાલય—મુરત ।

અષ્ટાનિકા પર્વકે લિયે—

શ્રીપાલચરિત્ર ૧૧) =) મૈનાસુન્દરી નાટક ૨૧)

શ્રીપાલ નાટક ૧) સતીચરિત્ર ૧-)

સિદ્ધક્ષેત્રપૂજાસંગ્રહ ।

સખી સિદ્ધક્ષેત્ર વ અતિશયક્ષેત્રકી પૂજાર્પ મુ. ૧)

→ ॐ પ્રવોધસાર । ॐ ←

મહાપંચિત યશકીર્તિ ચિરચિત મૂલ શ્લોક વ પં. ભાટા-
રામજી શાસ્ત્રીકૃત હિન્દી અર્થ વ માધાર્યં શબ્દિવ । મુ. ૧)

મેનેજર, દિં જૈન પુસ્તકાલય—મુરત ।

“दिगम्बर जैन”



श्रीः मेठ लगनलाल उच्चपंचद संख्या जनी-मुरत ।

(देवासेवा करते हुए आपकी सवा वर्ष सत्यकेदकी सजा हुई है ।)

॥ श्रीबीतरगायनमः ।

दिगम्बर जैन

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सन्त्योपदेशस्मृगवेषणाभिः ।
संशोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दिगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वां

वोर सम्बत् २४५६, वैशाख, विक्रम सम्बन् १९८६.

अङ्क ७.

जिनवाणीकी पुकार ।

(१)

शास्त्रोंकी रक्षा नहीं होती, भेदारोंमें सड़े हुये ।
जयधवलदिक ग्रंथ अनुपम, टीका विन हैं पड़े हुये ॥
हा समाज ! भीषण भविष्य अब, तेरा होता जाता है ।
पतितावस्था तेरी लावकर, दुखी हुई जिनमाता है ॥

(२)

दो हजार चारसौं वर्षोंमें वर्ष अभी बीते भई ।
वर्द्धमान स्वामीने, जब थी मुक्तिनिपा को परणहि ॥
इन्द्रनारि गुर अमुष्कोकती जनता, बिलकर सब आई ।
दीपमालिका करी मनोहर, सब जीवोंकी मुखदाई ॥

(३)

भगवन भाषित शास्त्रोंकी गति बुरी हुई है आज यहां ।
मगर अधर्मी जर्मन मन्वते हैं संथोंका स्याक महा ॥
बहु संख्यामें शास्त्र हमारे, उनके पास मिलेंगे आज ।
संस्कृत प्रेम उन्हें अनुपम है, हमें नहीं है किंचित लाज ॥

(४)

अब तो यवन राज्य नहीं भई शास्त्रोंका परचार करो ।
ऐसा अबगर मिलन कठिन है जिनजनका विन्तार करो ॥
जैन वंधुओ अब भी चेतो, समय सु निकला जाता है ।
दृष्ट कृत्य यह देव हमारे, दुखी हुई जिन माता है ॥

रामकुमार सेठी-रतनपुर ।

सम्पादकीय-वक्तव्य

आज भारतवर्षकी परिस्थितिसे बच्चा २ परिचित होचुका है । वर्तमानका देशकी परिस्थिति । युद्ध संसारमें एक अनुपम युद्ध है । आजतक किसी देशकी स्वाधीनता बिना हिंसा, मारामार या शस्त्र अस्त्रके नहीं मिली । मगर हमारा वर्तमान भारतवर्ष मनुष्यतामय युद्धके द्वारा स्वतंत्र होना चाहता है, अहिंसासे स्वराज्य प्राप्त करना चाहता है और दुनियांमें यह मिद्ध कर देना चाहता है कि अहिंसाके अप्रतिहत शस्त्रोंके सामने तमाम भौतिक शस्त्र व्यर्थ हैं । अहिंसाके द्वारा जिस दिन भारतवर्ष हिंसा और अत्याचारोंपर विषय प्राप्त करेगा उस दिन न केवल हिन्दुस्तानको ही शांति मिलेगी किन्तु समस्त संसार सुख और निराकुलताकी गोदमें अपार शांतिदा अनुभव करेगा ।

संसारके महापुरुष महात्मा गांधीजीने यह अहिंसक युद्ध प्रारम्भ करके भारतवर्षको अहिंसा और वीरताका पाठ पढ़ाया । तथा प्रतियोगितामें बन्दूक तकरवार मशीनगनें होते हुए भी निहत्थे देशको निर्भीक और साहसी बनाया ।

परन्तु जैसे द्वितीय विश्वयुद्धके प्रवृत्तियोंकी विष्णु-भक्ति भयकारी लगी थी, रोमन साम्राज्यके सत्ताधारियोंको ईशुकी सत्य घोषणमें राजद्रोहकी गंध आई थी, ग्रीसके पुराण पंथियोंको सेक्रेटिसकी प्रवृत्ति भयकारी लगी थी, उसी प्रकार ब्रिटिश सरकारको महात्मा गांधीकी प्रवृत्ति भय

मरी मालूम हुई और उन्हें ४ मईकी रात्रिको १ बजे (१) सोतेसे जगाकर कराडी (नवसारी) ग्राममें सन् १८२७के २९ वें एक्टके अनुसार गिरफ्तार करके यरोडा (पूना) जेलमें अनिश्चित समयके लिये भेज दिया ।

* * *

उस वृद्ध तपस्वीकी गिरफ्तारीके बाद तो सर्वत्र यही काम चालू गिरफ्तारीके बाद । होगया । आज भारतवर्षमें प्रत्येक पान्तकी जेलें भरी हुई हैं । उनमें अब सभी तपस्वी निवास करते हैं, बड़े श्रीमान्, धीमान्, नेता और देश-हितैषी वीर उन जेलोंको सुशोभित कर रहे हैं । यहां तक कि अबका कहलानेवाली भारतीय वीर लकनायें भी आज कारावासमें पड़ी हुई स्वतंत्रताका मंत्र जप रही हैं । उनमें श्रीमती कमला-देवी चट्टोपाध्याय, भारतकोकिला सरोजनी नायडू तथा स्वामी श्रद्धानन्दकी प्रपौत्री सत्य-वतीदेवीके नाम उल्लेखनीय हैं । जहां ऐसी पवित्र आत्माओंका निवास हो उसे जेलखाना कहनेको हमारा मन स्वीकार नहीं करता ।

हमें कोई संदेह नहीं कि महात्माजी शांति और अहिंसाकी साक्षात् मूर्ति है । आपकी गिरफ्तारीके बाद कोई इतना बड़ा शांतिका अधिष्ठाता न रहा । जिसके फलस्वरूप अगुक्त स्थानोंमें कुछ लोगोंने बरुवा प्रारम्भ कर दिया । इधर सरकारने भी अपनी पुरी शक्तिसे दमन करना प्रारम्भ कर दिया है । जिससे लोगोंमें उपसर्ग सहन करनेकी शक्ति जागई, और अहिंसाका भान होगया है । हमारों वीर आज

माणोंपर बानी लगाकर पुलिसकी लठियोंके बीचमें घसे चले जाते हैं और अपने अहिंसा एवं सत्यके नामपर आंख उठाकर भी नहीं देखते ।

* * *

भारतवर्षकी भिखारी बनानेमें मुख्य कारण

यही है कि हमारा देश

विदेशी वस्त्र । एक वर्षमें ६०-७०

करोड़ रुपयाका वस्त्र वि-

देशसे मगाता है । हमारे यहां रुई उत्पन्न होती है, सूत काता प्राप्तता है और उत्तमसे उत्तम वस्त्र बनाये जासकते हैं, फिर भी विदेशीमें ६० करोड़ रुपया व्यर्थ मेनना मारी मूर्खता है । इससे आर्थिक हानि तो है ही, मगर धार्मिक हानि भी कम नहीं है । हमारा धर्म अहिंसा है, हमें हर प्रकारसे अहिंसाकी रक्षा करना चाहिये । याद रहे कि विदेशी वस्त्रोंका उपयोग करने वाला एक मारी भिखारि साका मानी होता है । विदेशी वस्त्रोंमें चरबीका उपयोग होता है, जिसके लिये जबरदस्त हिंसा करना पड़ती है । अगर आप स्वदेशी वस्त्रोंका उपयोग करने लगे तो यह हिंसा न हो और देशका द्रव्य भी देशमें ही रहे ।

यदि आप देश हिंसे हैं, अगर आपकी अहिंसासे प्रेम है तो आपको इन बातोंपर पूर्ण ध्यान देना चाहिये:-

(१) हम हाथके द्वारा काते गये और हाथके बुने हुये वस्त्रका उपयोग करेंगे । अगर हाथकी शुद्ध स्वदेशी खादी नहीं मिलेगी तो मन्वृत्त देशी मीऊमें देशी सूतसे बना हुआ ही वस्त्र उपयोगमें लावेंगे । (२) विदेशी वस्त्रका व्या-

पार नहीं करेंगे । (३) देव मंदिरोंमें विदेशी कपड़ेका एक टुकड़ा भी काममें नहीं लेने देंगे और कमसे कम वहां तो विशुद्ध खादीका ही उपयोग करेंगे । (४) नित्यप्रति थोड़ा बहुत सूत स्वयं कातेंगे और घर घर जरखा तथा तकलीका प्रचार करेंगे । (५) दूपरोको देशीवस्त्रसे प्रेम करावेंगे, इत्यदि । हमारी समझसे तो गांव१ की पंचायतें मिलकर विदेशी वस्त्र उपयोगमें न लानेकी आज्ञा कर दें तो सबसे अच्छा हो ।

अब भारतवर्षके बड़े-र महापुरुष हमारी खातिर या देशके लिये जे०की यातनायें सहन कर रहे हैं तब क्या हमारा कर्तव्य इतना भी नहीं है कि हम कमसेकम अहिंसा वर्मके नामपर या देश हितकी दृष्टिसे शुद्ध स्वदेशी वस्त्र पहिनें ? आज निरामिताका समय नहीं है, मौनशौकका जमाना गया । हमारे भाइयोंकी रोटियोंके लाले पड़े हुये हैं, ऐसे समयमें हमारी आंखें खुलना चाहिये । हमारा कर्तव्य है कि अब व्यर्थकी धूमधाम छोड़कर सादा पहिनें, सादा खावें और सादगीके साथ रहें । मड़कीले चटकीले वस्त्रोंको पहिनकर ही बड़े नहीं कहलाते, किन्तु जीवनमें जितनी सादगी आवेगी उतना ही महत्त्व कहा जावेगा । यही तो हमारा जैनधर्म बतलाता है ।

विदेशी वस्त्रोंके साथ ही साथ हमें यह बात भी ध्यानमें लाना चाहिये कि हम जितनी वस्तु भी उपयोग करें वे स्वदेशी ही हों, अपने भारतवर्षकी बनी हुई हों । जो वस्तु देशमें ब बनती हों वह विवश होकर विदेशको ले किन्तु इंग्रैंडकी बनी हुई वस्तु तो उपयोगमें न लाई जावे ।

જ્ય હમ ઇન વાતોંકા દટ્ટ સંકલ્પ કર લેંગે તો હમારા દેશ સુસ્ત્રી બનેગા, હસે મરપેટ રોટિયાં મિક્કને લગેંગી ઓર હમારે અર્હિસાવમંકી રક્ષા હોકર દેશમેં પવિત્રતા ઓર સાદગીકા સંચાર હોગા । અગર આર દેશદ્રોહી નહીં હૈં ઓર અર્હિસાવમંકે ઉપાસક હૈં તો ઇન વાતોંપર પૂરા ઘ્યાન રલ્વના ચાહિયે ।

* * *

આખા હિંદુસ્તાનમાં હિન્દને સ્વતંત્ર કરવાની જે હિલચાલ દિંદના હૃદય-સુરતના સરૈયા જૈની સમ્રાટ મહાત્મા ગાંધી-જેલમાં.

છતી આચાનુસાર ચાલી રહેલી છે. તેમાં જૈનોનો ઘાણો પણ છેજ અને આજ સુધી ધણુ જૈન બંધુઓ જેવા કે-છોટાલાલ ગાંધી, આ. રાજનલાલ વડીલ, અયોધ્યાપ્રસાદ ગોયલ્લીય, આ. નેમીશરણુજી, અમૃતલાલ શેઠ, મણીલાલ કોઠારી, આદિ જેવ મહેલના મહેમાન બન્યા છે તે અનંકો પકડાયા છે તેવીજ રીતે સુરતના વસિંહપુરા શાંતિના એક અગ્રેસર તેમજ સુરતના જાહેર કાર્યોમાં આશરે ૨૦ વર્ષથી અગ્રમણ્ય ભાગ લેનાર એક નિર્ભીક કાર્યકર્તા તેમજ અમારા અંગત મિત્ર બાઇ છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા જૈની પણ આજે સાબરમતી જેલમાં સરકારના મહેમાન બન્યા છે. બાઇ સરૈયાની દેશ અને સમાજ સેવ્ય પ્રત્યેની ધનસ અપૂર્વ છે. એઓ સુરત મ્યુનિસીપાલીટીના એક સભ્ય પણ છે. આપને ઉચ્ચકક્ષીભર્યા બે બાધણુ કરવા માટે સરકારે પકડી સવા વર્ષની સખ્ત કેદની સજા તા. ૧૯-૫-૩૦ ને દિને કરી છે જે તેમણે હરતે મુખે યદ્યથુ કરી છે. પકડાતી વખતે બાઇ સરૈયા દેશ પ્રત્યે તે સમાજ પ્રત્યે જે સ્વદેશી પ્રત લેવાનો સંદેશો આપી ગયા છે તે દરેકે દરેક પાંદકે હૃદયમાં કોતરી રાખવાનો છે.

* * *

બાઇ સરૈયાને અભિનંદન આપવાને સુરતમાં જે જાહેર સભા મળી અભિનંદન. હતી તેમાં એવો ઠરાવ થયો હતો કે “બાઇ સરૈ-

યાને સુરત શહેર અભિનંદન આપે છે, અને ઠરાવે છે કે જ્યાં સુધી સંપૂર્ણ સ્વરાજ્ય નહિ મળે ત્યાં સુધી અમે જાંપીને બેસવાના નથી ને સરકારને જાંપીને બેસવા દેવાના નથી.” તથા સુરતના દિગમ્બર જૈનોની એક સભા નવાપરામાં ગુજરાતીને દહેરે તા. ૧૪ મીએ રાત્રે શેઠ ઠાકોર-દાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી (મુખજી)ના પ્રમુખપણુ નીચે મળી હતી, જેમાં બાઇ સરૈયાનો સમાજ પ્રત્યેનો સંદેશો વાંચી સંબલાવવામાં આવ્યો હતો તે નીચે મુજબ છે—“આજે અહિંસક યુદ્ધમાં એક પણ જૈન પગલ ન રહેવો જોઇએ. સાચો જૈન જન કોઇ હોય તો તે મહાત્મા ગાંધીજી છે...દુનિયા અત્યારે જે હિંદુસ્તાનના આ અહિંસક યુદ્ધપર દષ્ટિ રાખી રહી છે તેમાં સર-ળતા મેગરા દુનયામાં અહિંસાના વિજયનો ડંકો વમડાવશો. જે જૈન બાઇઓ સક્રિય ભાગ લેવા અસમથો હોય તેઓ પરદેશી કાપડનો સંપૂર્ણ પાંદખકાર કરવાનું કાંઈ પણ વાસરી જાય નાહ.”

એ પછી અનંક વિવેચનો પૂર્વક બાઇ સરૈયાને અભિનંદન આપવાનો જે ઠરાવ થયો હતો તે નીચે મુજબ છે—

“ સુરતના દિગમ્બર જૈનોનાં આ સભા બાઇ છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા જૈનીને દેહસેવા કરતાં કરતાં થયેલી, સવા વર્ષની સખ્ત કેદ માટે તેમના આ આત્મ ભોગવું અભિનંદન કરે છે. અને એમના આદેશાનુસાર દિગમ્બર જૈનોને દેશને પગલે ચલવા તથા કંઈ નહિ તો વિદેશી કાપડનો અત્ પ્રિટિશ વસ્તુનો અહિંકાર કરી યની થકે તો ખાદીજ, નાહ તો મીસવું શુદ્ધ કાપડ અને યથાશક્ય દરેક વસ્તુ સ્વદેશીજ વાપ-રવાને આમ્રહ પૂર્વક નિવેદન કરે છે.” આ ઠરાવ યતાંજ કેટલાક બાઇ જહેનોએ સ્વદેશી વસ્ત્ર

जैनसमाचारवर्ति

शोकजनक वियोग—एक निर्मीक, शांत परिणामी, लेखक—वक्ता व सच्चे सुधारक तथा विद्वान् पं० ब्रजबासीलालजी—मेरठ जो 'वीर' के प्रकाशनका कार्य अतीव परिश्रम पूर्वक करते थे उनका गत ता० १९ मईको स्वर्गवास हो-गया । आपकी कमी जैन समाजको बहुत खट-केगी । आपकी आत्माको शांति प्राप्त हो यही हमारी भावना है । आपके वियोगके कारण 'वीर' के प्रकाशनमें भी विरल होगा ।

पठार—में पलाढालनीकी पुत्रीकी श्यामीं तेरहद्वीप पूजन विधान व समवसरण विधान धूमधामसे करामा गया था जिससे धर्मकी अच्छी प्रभावना हुई थी ।

कुंथलगिरि—के ब० आश्रमको (१००) कक-कत्ता पंचायतने प्रदान किये हैं ।

अनेकांत—पत्रकी छट्टी व सातवीं क्रिण कारणवशात् संयुक्त प्रकट होगी ।

हवे पछी सेवानी प्रतिष्ठा लीधी छती. भाष सदै-थाना स्मरणभां ने स्वदेशी प्रतने करार कथे छे तेना अमल सुरतना तेमज युजरातना जेनाअे करी भाष सदैथाना सदेशने सशष करवे जेअअे. देखना उद्वारने भागं विदेशी पाठिअार अने स्वदेशी स्वीकार सित्राय भीजे अेक पथु नथी ते तरह अभास पाठके दुर्धक्ष्य नछि राप्थी अेम पूथु आशु छे. भाष सदैथी नददीथी छुटा थप आनी देख तथा सभाज सेरानां विशेष कार्य करे अेम अभासो आंतरिक भावना छे.

मनुष्य गणनामें जैनोंका खाना अलग—हिंदमें प्रति दश २ वर्षमें मनुष्य गणना होती है, उसी प्रकार आगामी ई० सन् १९११ में मनुष्य गणना होगी । गणनाके फारमसे जैनोंका खाना जो अलग रहता है कुछ भाइयोंने उसे निकाल देनेकी चर्चा उपस्थित की थी, इससे स्पष्ट खुशासेकी आवश्यकता होनेसे जैन सुमति मित्रमंडल रावलपिण्डीने सरकारको खास पत्र लिखकर इस बातका खुशासा पूछा था जिसका उत्तर इंडिया गवर्नमेंटके उपमंत्री ए० व्हीटकरने ता० १९ मईको शिमलासे दिया है कि सेन्सस (मनुष्य गणना) के फार-मोंमें जैनोंकी संख्या अलग बतानेवाला खाना रहता है उसको निकाल देनेका इंडिया गवर्न-मेंटका इरादा नहीं है (अर्थात् जैनोंका खाना अलग ही रहेगा)

आदर्श विद्यादान—इन्दौरमें स्व० सेठ गंभी-रमलजी टोंग्याके स्मरणमें (७००) विद्यादानके लिये निकाले गये हैं जिनमेंसे ९०१) तो अलग २ संस्थाओंको भेजे गये हैं, शेषके लिये जहां १ बोर्डिंग व पाठशाळा हों वहांके भाई सहायताके लिये सेठ श्रीभाराम गंभीरमलजी टोंग्या इतबारा वाजार—इन्दौरसे पत्रव्यवहार करें ।

देहलीमें—सौभाग्यमळ जैन सत्याग्रहीको १ मासकी सजा हुई है ।

हिन्दू व महात्माजी—के विषयमें 'वर्तमान' देहलीमें ता० ७ अप्रैलको एक ज्योतिषीकी भविष्यवाणी प्रकट हुई थी । वह जान तक बहुत अंशोंमें सच्ची पढ़ती आई है । उसमें किला

है कि ८ जून तक गवर्नमेंट घनघोर दमन करेगी जिससे लाखों आदमी जेठ जांशये। ८ जूनसे १ जुलाई तक दमनकी तेजी कम होगी। १ जुलाईसे ३ सितंबर तक महात्माजीका काम तेजीसे चलेगा व सरकार एक कौनेमें बेठी रहेगी। अंतमें आचार होकर ३ सितम्बरसे ११ सितम्बर तक उसे फिर गिरफ्तारियां करनी पड़ेंगी। जिसमें गवर्नमेंटको जबर्दस्त हानि उठानी होगी तथा वह ११ अक्टूबर और ११ नवम्बरके बीचमें महात्माजीकी शर्तोंको मंजूर कर लेगी। जिसपर ३ जनवरीसे २० फरवरी १९२१ के अंदर जमन (जैन) होजायगा।

सदर, झांसीके-जैनियोंने निश्चय किया है कि ता० ६ जूनके बाद जो जैनी भाई स्वदेशी व खदरके पकड़े पहने हुए नहीं होगा वह मंदिरके अंदर नहीं जाने पायगा व मंदिरके संपूर्ण कार्योंमें खदरका व्यवहार किया जायगा।

जैन शिक्षा मंदिर जबलपुर-के लिये संस्कृत अध्ययन करने वाले छात्रोंकी आवश्यकता है।

अनेकांत पत्र (देहली)-मम विद्यार्थी, काय-ब्रेरी, स्त्री वर्ग, तीर्थक्षेत्र, पाठशाला, बोर्डिंग आदिको ४) के स्थानमें ३) मूल्यमें दिया जाता है।

विदेशी वस्त्र त्याग-ब्र० सीतलप्रसादजीके उपदेशसे आरंभर छावनीके मंदिरमें १५ स्त्रियोंने यह प्रतिज्ञा की कि हम एक वर्ष तक विदेशी वस्त्र नहीं पहिनेंगे व अब जो खरीदेंगे स्वदेशी ही खरीदेंगे।

सोलापुर-में सेठ माणिकचन्द रामचन्द शाह जैन-प्रभापति म्यूनिसिपैलिटीको सरकारने ६ माइ कैद व १००००) का जुर्माना किया है। थुलिया-के सेठ गुलाबचन्दनी हीराकारने औनरेरी मजिस्ट्रेटका व रायसाहिबका पद छोड़ दिया है।

वीर विद्यालय-पपीरा (टीकमगढ़) के लिये १० छात्रोंकी आवश्यकता है।

सूरतमें-भाई छगनकाक उत्तमचन्द सरैया जैनीको १। वर्ष सख्त कैदकी सजा हुई है। आप साबरमती जेठमें व वर्गमें रखे गये हैं।

नागपुरमें-महात्मा भगवानदीनजी भी जेठ गये हैं।

विजनौरमें-हमारी भारत० दि० जैन परिषदके मंत्री नबू रतनकाकनी वकील व बा० नेमिसागरजी वकील भी जेठ गये हैं।

अमरावतीमें-सि० पन्नाकाकनी परिवार व इनकी परनी जोरशोरसे सत्याग्रहका कार्य कर रहे हैं। एक दो बार आपके पकड़े जानेकी अफवाह भी उड़ी थी।

दि० जैन युवक मंडल-बम्बई-की एक सभा ता० १८ मईको मंगळदास शाहके सभापतित्वमें हुई थी, जिसमें छगनकाक सरैया जैनी-सूरत जेठ गये हैं उनका तथा गिरफ्तार होने वाले चन्दूकाक वखारिया व शेठ बाळचन्द हीराचन्दसाका सी० आई० ई० का पद छोड़ देनेके लिये अभिनन्दनका प्रस्ताव पास किया गया था। स्वदेशी वस्तु प्रचारके लिये मंडलमें दो प्रस्ताव पास हुए थे।

१८ सिद्धि—नामक उपयोगी पुस्तक दो पैसेकी टिकिट भेजनेपर सिद्धि जैन कार्यालय कलितपुरसे मुफ्त मिलती है ।

नग्न श्यामलाल मुनि नहीं था—छिदवाड़में एक श्यामलाल नामका पागलता एक दि० जैन चरनागरे भाई रहता है । उसने मूर्खतासे ऐसा निबन्ध लेलिया कि जहाँतक मैं जंगलका कानून न तोड़ूँगा तबतक मैं नंगा रहूँगा । इसी कारणसे उसको सरकारसे तीन माहकी सजा हुई है । परन्तु 'लोकमत' आदि पत्रोंमें जैन मुनिको सजा, ऐसा हाक छर जानेसे दि० जैनोको अनेक पत्रोंमें इसका खुरासा प्रकट करना पड़ा है कि श्यामलाल दि० जैन मुनि नहीं था । दि० जैन मुनिको नग्न विचरनेकी कहीं भी रोकटोक नहीं है ।

आगरामें—कई जैन स्त्रियाँ स्वयंसेविकायें हुई हैं व उन्होंने अपने विदेशी कपड़े जला दिये हैं ।

कपुर्थला—में एक ब्रह्मणने विधिवरुंके जैन-धर्म ग्रहण किया है ।

आचार्य श्री शान्तिसागरजी—का संघ अव-तक मथुरा पहुंच गया होगा । संघरति भी मथुरा पधारे हैं ।

देहलीमें—अयोध्यापसादनी गोबलीय जैनको १ माहकी सख्त सजा हुई है ।

अंबालाल साराभाई—अमदावादने कैसरेडिदका सोनेका चांद सरकारको वापिस कर दिया है ।

अंतर्रातीय विवाह—ता० १३ मईको निग-नूर (दक्षिण)में पंचम व चतुर्थ जातिके बीचमें एक अंतर्रातीय विवाह होगया ।

ब्र० प्रेमसागरजी—जबलपुर प्रांतमें भ्रमण करके खादी व स्वदेशीका व्रत लोगोंसे लिवा रहे हैं ।

पं० जिनेश्वरदासजी—मावल जैन कविका ४ मईको देहलीमें देहांत होगया ।

राघोगढ़ (ग्वालियर)—में देशसेवक शुद्ध खादी मण्डार १२ माससे बाख है, जिसमें सन प्रकारके शुद्ध खादीके बत्त मिलते हैं ।

सत्याग्रह प्रेमी—सेठ हीरालाल जैन राघोगढ़ सूचित करते हैं कि जो स्थानीय भाई सत्या-ग्रहमें संमिलित होंगे उनके बालबच्चोंको हमारे पास भेजदें, उनके वस्त्र भोजन पढ़ने आदिकी व्यवस्था हम कर देंगे । उनको चर्खा भी मिलायेंगे ।

स्याद्राद महाविद्यालय काशी—का २४ वां वार्षिकोत्सव गत २७ अप्रैलको पं० इंद्रदेवजी तिवारी रजिस्ट्रारके समापतित्वमें होगया । आगामी सालके लिये ४००) का बजट पास हुआ है । छुट्टीके बाद विद्यालय आबाद बड़ी ९ को खुलेगा । अब औद्योगिक शिक्षाका धर्म भी बाख होनेवाला है जिसमें वैद्यक व मुनी-मीकी शिक्षा दी अथवा दिलाई जायगी ।

कुमारी राजुबाई—(उमडीकर दशाहमद जैन) खेतीवाड़ी कालेजकी अंतिम बड़ी परीक्षामें पास हुई है ।

सूरत—में छगनलाल सरैया जैनने जेक जाते १ अपनी मोटर कारको दानमें दे दी थी ।

इन्दौरमें—में सेठ गंभीरमलनी टोंग्याका ८८ वर्षकी आयुमें ता० ६ मईको आबुमें स्वर्गवास होगया । ९००००)का दान निकाका गया है ।

બેરિષ્ટર ચંપતરાયજી સાહુ-કે પ્રયત્નસે
લંહનમે 'ક્રમ જૈન પ્રી કાયલેરી' સ્થાપિત હુઈ
હે, જિસકે મંત્રી એલેક્ઝાંડર ગોલ્ડન નિયુક્ત હુપ
હે । બારિસ્ટર સાહુ સામ્પ્રાહિક સમા કરકે
જૈન ધર્મકે સિદ્ધાંતો પર ચર્ચા કરતે હે ।

માહાત્મા ગાંધીજીકો-ગત તા. ૧ મઈકો
સરકારને ફરાદી (અલાહપુર)મે રાત્રિકો ૧ બજે
બાકર સોતેસે જગાયે યે વ તુર્તેદી વહાંસે મોટર
વ રેલમે વિઠાકર ચેરોહા (પૂના)કી જેલમે હેગયે ।
મહાત્માકો ૧૮૧૭કા ૨૧વાં એકટ લગાકર
કેદ પકડે હે વ સરકાર બાપકો જલતક ચાઈ
તલતક કેદમે ડાક રલેગી !

જૈન બાલાવિશ્રામ આરા-નો શ્રી. ૫૦. ચંદા-
બાઈજી દ્વારા સ્થાપિત હે ઉસકા નવવાં વાર્ષિકો-
સવ અભિષેક પૂનઝપૂર્વક તા. ૨૦ મઈકો
શ્રી. ૫૦. ધર્મપત્ની વા. ૦ નંદકિશોરજી જૈન હિપ્ટી
કલેક્ટરકે સમાપતિસ્વમે હુબા યા જિસમે છાત્રા-
ઓકે સંવાદ, સ્લેક વ વ્યારૂપાન હુપ યે । સ્વદેશી
વસ્ત્રકે સંવાદસે તો સમાપતિ વ અન્ય મહિલાઓને
સ્વદેશી વસ્ત્ર પહિનને વ વિવેશી ન મંગાનેકા
નિયમ લિયા । ફિર પારતોષિક વાંટા ગયા વ
સંગિત મનનાદિ હુપ । ફિર સવકો મિષ્ટાન્ન
મોજ દિયા ગયા વ અંતમે શ્રી. ૦ વા. ૦ નિર્મલ-
કુમારજીકી બોરસે સવ (કરીવ ૬૦) છાત્રાઓકો
૫૬૨ સાહી દીગઈ વ સમાપતિને ૬૬) બાશ્રમકો
મૈટ કિયે । સરસ્વતીવાઈ ।

સુનિ સુનીંદ્રસાગરજી-નો સંધ ગિરનાર
યાત્રા કરી અમદાવાદ આવી જઇ હાલ સોનાસણ
પહોંચી જવાની તૈયારી છે. ચોમાસું સોનાસણમાં
ભવા સંભવ છે.

પ્રાંતજ-માં માંધી નેમચંદ ઉમરચંદ પોતાની
પત્નીના સ્વર્ગવાસના સ્મરણમાં ૧૦૦) શાસ્ત્રદાન
ખાટે કાઢયા છે.

સાણીદા-માં શેઠ કાળીદાસ સાંકળચંદ
તરશ્થી વેદી પ્રતિષ્ઠા ગયા માસમાં થઇ હતી જેમાં
પં. દીપચંદજી, ભારતર લલ્લુભાઈ વગેરેના ઉપ-
દેશ્થી ૧૦૦ સ્ત્રી પુરુષોએ મૃત્યુ પાછળ પરમામ
રહવા ન જવાની ને કાઢ સંજોગમાં જવું પડે
તો તે મામમાં કાઢને ત્યાં ન જમવાની પ્રતિજ્ઞા
લીધી હતી.

ટાકાટકા-માં શા. તલકચંદ કુમેરદાસ તર-
શ્થી મડિયા પાનાચંદ યુલાખચંદના હરતે ૧૨૩૪
વ્રતવું ઉઘાપન ચૈત્ર વદી ૪ થી ૧૧ સુધી થયું
હતું જે સમયે ધ. રતેસાગરજી, ધ. લક્ષ્મીચંદજી,
મેનાબહેન વગેરેએ પધારી ઉપદેશ આપ્યા હતા.
મંદિરમાં ૧૫૦૦)ની ઉપજ થઇ હતી. એક દિવસ
શીશોડાના મેજરટ્રેટ સાહેબના પ્રમુખપણા નીચે
જહેર સભા થઈ હતી તેમાં આપે વિઘાપર ઉત્તમ
બાપણ આપ્યું હતું. ઉપદેશ્થી અત્રે ૫૦ યુવક
સ્ત્રી પુરુષોએ સ્વદેશી વસ્ત્ર પહેરવાનો અને ચાહ
ન પીવાનો નિયમ લીધો હતો.

ખડકની સાત પાઠશાલાઓ-ના વિદ્યા-
ચિંથિતે પણ ખડવાહ નિ. સેઠ નવલચંદશા પ્રેમ-
ચંદશાની તરશ્થી જમણ અપાયું હતું.

પિતા જેલમાં, પુત્રીના લગ્ન-અંકલેશ્વરના
મહાન નેતા શ્રી. છોટલાલ થેલાબાઈ માંધી તે
ચેરાડાની જેલમાં છે પણ તેમની ૧૫ વર્ષની
પુત્રી ઉર્મિલાના લગ્ન તેમના સગાંઓએ જેલ-
માંથી તેમની પરવાનગી મંગાવીને કોલ્હાપુરમાં
પ્રોફેસરની જગ્યા ધરાવનાર સાકરલાલ શાહ
(ઉમર વર્ષ ૨૮) જેઓ એમનીજ વીસા મેવાડા
ચાતિના છે તેમની સાથે અત્યંત સાદાપથી ખાદી-
મય વેશાખ વદ ૧૧ ને દિને અંકલેશ્વરમાં કર્યા
હતા. લગ્નમાં હાલ તાસાં કે વાળનો ખર્ચ પણ
કર્યો નહોતો.

શ્રાવિકાશ્રમ સોજીયા-માં તા. ૩૦ જુન
સુધી ગરમીની રજા પડી છે.



(६०-पं० दीपवन्दनी वर्षी-चौराही, मथुरा)

ज्येष्ठका महिना है, धूप करारी पड़ने लगी है, मातःकाक आठ बजेसे ही धूप तेज होनेसे भूमि तप जाती है, नव बजते २ तो लू चढना भी प्रारम्भ होजाता है । श्रीमान् लोग तो नव बजे भोजन पान कर भूपरोमें (लू के ढरसे) जा छिपते हैं और रोखनदानोंमें लक्षकी टट्टियां लगाकर जलका छिड़काव कराते व पंखा खिचवाते हैं । इन दिनों इनकी हाकत मोमके पुतळोंके समान हो जाती है । मानों कि धूप लगी और ये पिघले । ठंडाई सोडावाटर लेमन बर्फ आदिसे तर रहते हैं, खाने पीनेमें इनके नखरे देखते ही बनते हैं । भडा ऐसे सुकुमारों (कायरों) से कोई देशकी रक्षाका विश्वास कर सक्ता है ? कभी नहीं । क्योंकि ये विचारे जब अपनी ही रक्षा नहीं करसक्ते तब स्वाभित्तनों, अति समाज व देशकी बात तो योजनों दूर है ।

एक औरकी तो हुई यह बात, जब दूपरी ओर देखिये कि हमारे कितने माई इपी कड़ी धूप व लूको सहते हुए, पंखा खींचते हैं वानी छिड़कते हैं, खेतोंमें पौना क्रिये धूप रहे हैं, ईट गारा ढोःहे हैं, बोझा उठा रहे हैं, कोई खोनवा फिरा रहे हैं, (बंजी गौरी कर रहे हैं) विचारे मनुष्योंकी जब यह बात है तो पशु पक्षियोंकी तो कहना ही क्या है ? अकाश

सुख जानेसे दूर २ तक पानीका पता नहीं मिलता । घास और वृक्षोंके पत्ते धूपसे सूखकर जल माने हैं जिससे खानेको नहीं मिलता । फिर भी मार तो ढोना ही पड़ता है और हकने पर बाबुकोंकी मार खाना पड़ती है । मुहसे फसुकर गिरता जाता है पर मूखे प्यासे गरम भूमि व रेतीले मैदानोंमेंसे हांफते २ चले जाते हैं । छेर जैसे बकी पशु जंगल छोड़कर भाग जाते हैं और पक्षी देशांतरोंमें चले जाते हैं ।

जब कि संसारी दीन (कायर) जन इस प्रकार दुखी हुए कर्मोंके भोगोंको भोगते हैं, तब हमारे परम दिगम्बर साधु महात्मा स्वाधीन हुए कायसे ममत्त्व छोड़कर गिरिके शिखिरोपर खड़े २ वा पद्यासन अचल ध्यान लगाकर उन कर्मोंको जलाकर निर्मूलक कर देने हैं, वे ही बन्ध हैं । नरमन्मका सूच्य लाडा (काय) उन्हीने लिखा है ।

अथवा जो प्राणी ऐसा तीव्र तपश्रम करनेमें असमर्थ हैं वे अपने पुत्र-कलत्रादिकोंके साथ रहकर साधुपद पानेकी भावनासे घरमें ही एक देश संयम ब्रत व तपका साधन करते रहते हैं । देवपूजा, गुरु (अतिथि) सेवा, स्वाध्याय, रसत्याग, इच्छा निरोध, चतुर्विधि दान, तीर्थ-यात्रा, विद्वज्जनसमकेहन आदि कार्योंमें स्वस्तिक अनुसार प्रवृत्त रहते हैं ।

द्वारा पाना इष्ट प्रतीत नहीं होता ।

जय-ब्रह्मचारीजी ! यह सत्य है कि आपके कर्मोंसे प्राप्त इस आपके शरीरके उत्पादक व पालक पोषक हम दम्बति किसी अपेक्षासे बड़े भाते हैं । परन्तु आपके आत्माका तो कोई उत्पादक निमित्त नहीं है ? वह तो स्वयंसिद्ध अनादि निधेन है । इसके सिवाय जबतक आपने अपने आत्माको पहिचानकर उसकी प्राप्तिके लिये संयम मार्गमें पग नहीं रखा था, तबतक व्यवहारसे हमको भी बड़े (गुरुजन) कहते थे । परन्तु हम तो जहां थे, वहाँ रहे और आप हम लोगोंको पीछे छोड़कर आगे निकल गये हैं । इसलिये आप संयमवृद्ध हैं, हमारे चारित्र-गुरु हैं । वास्तवमें कोई उमरमें बड़ा होने मात्रसे बड़ा नहीं होसकता किन्तु ज्ञान संयमादि गुणोंमें बड़ा होनेसे ही बड़ा गिना जाता है अतएव संयम की विनय करना हमारा धर्म है ।

जा० ब्र०—नरमस्तक हो चुप हो रहा । पश्चात् मिट्टनकालने पूछा क्यों ब्रह्मचारीजी ! यह श्रुतपंचमी पूर्व कब, कैसे और क्यों प्रसिद्ध हुआ ? सो कृपा करके बताइये ।

जा० ब्र०—जी भाईसा० । पश्च तो सामायिक है, अच्छा सुनिये, मैंने जैसा सुना व बांचा है तदनुसार संक्षेपसे कहूंगा—(सब सुनने लगे)

सुनिये ! इसी भरतक्षेत्रमें बामदेशमें एक वसुन्धरा नामकी सुन्दर नगरी थी, वहां नरवाहन नामका राजा अपनी सुरूपा नामकी रानी सहित राज्य करता था । परन्तु पुत्र न होनेसे चिन्तित रहा करता था । उसी नगरमें १ सुबुद्धि नामका राजश्रेष्ठि रहता था । उसने राजाको

उपदेश दिया कि यदि आप पञ्चावतीकी आराधना करें और जैनधर्मकी सेवा करें तो पुत्र होगा ।

राजाने सेठके कहे अनुसार किया और पूर्व पुण्यके योगसे उनको पुत्ररत्नकी प्राप्ति हुई । जिसका नाम पद्म रक्खा । पश्चात् राजाने दशहजार स्तंभों और चार शाकाओंसे मंडित एक सहस्रकूट चैत्यालय कराया, जिसकी प्रतिवर्ष यात्रा मंडोत्सव करता था ।

तदनुसार वसंत ऋतुका समय आगया । और राजाने पूजामहोत्सव पूर्वक रथयात्रा करके श्रीजीको सिंहासनपर विराजमान किया । इसी अवसरपर श्री परम दिगम्बर मुनिमहाराजोंका संघ भी उनके पुण्योदयसे वहां आगया । सो राजा प्रजा सहित वंदनार्थ गया । और वहां अपने मित्र मगवाधिपतिको मुनिस्वरूपमें देखकर विरक्तचित्त होकर सुबुद्धि श्रेष्ठि सहित मुनि होगया । इनका दीक्षा नाम क्रमशः मृतबलि और पुष्पदंत रक्खा गया । इसी अवसरमें गिरनार पर्वतकी ओरसे १ पत्रवाहक वहां आया, वंदना करके श्री धरसेनाचार्य मुनिराजका पत्र दिया । जिसमें लिखा था कि मुझको अग्रावणी पूर्वके पंचम वस्तुका ज्ञान प्राप्त है और मेरी अ.यु अत्यन्त है, अतएव कोई दो तीक्ष्णबुद्धि मुनि मेरे सन्निकट आकर इस व्याख्यानको सुन लेंवें तो अच्छा हो, और इसकी परम्परा चकती रहे ।

तब उक्त दोनों मुनिराज भूतबलि और पुष्पदंत गिरनारकी ओर विहार कर गये और वहां पहुंचकर श्रीधरसेनाचार्यके निकट रहकर उक्त व्याख्यान सुना । यह व्याख्यान अषाढ़ शुक्ल

एकादशीको पूर्ण हुआ पश्चात् श्रीवरसेन स्वामीने इनको विदा करके सन्यास धारण कर लिया और ये दोनों मुनिपुंगव विहार करके कपिलः अंकलेश्वर नगरमें पधारे । वहां ठहरकर इन्होंने उसकी षडंग रचना करके शास्त्ररूपसे लिखाकर लेखकोंको संतोषित कराया, और इसी ज्येष्ठ शुक्ला पंचमीको उस शास्त्रका संवत्सहित श्रावण जनोंने पूजामहोत्सव किया, तथा स्वशक्ति अनुसार व्रतोपवास भी धारण किये । तभीसे यह महान पुण्योत्पादक श्रुतपंचमी महोत्सव संसारमें विख्यात हुआ ।

हम लोगोंको भी इस दिन यथाशक्ति व्रत विधान, उपवास तथा श्री वीरभद्रकी वाणीका सर्व साधारण जनतामें प्रचार करनेके लिये यत्न सोचना चाहिये और उन उपायोंको कार्यमें परिणत करनेके लिये तन मन और धन लगाकर जुट जाना चाहिये ।

मिट्टन—महाराज ! यह तो जाना, अब दो एक बातोंकी शंकाका निराकरण और कर दीजिये ।

आ० ब्र०—कहिये १ ।

मिट्टन—नीच और ऊंच किसे कहते हैं ?

आ० ब्र०—जिसका आत्मा मिथ्यात्व और विषयकषायोंसे लिस होरहा है, जो सदा जुआ आदि व्यसनाशुक्त है । जो हिंसादि पापोंमें पतित होगया है, वही नीच है । और जिसने मिथ्यात्वको त्यागकर व्यसन और पापोंको छोड़ा है, अपने अत्मासे विषय और कषायभावोंको दूरकर निकाल रहा है, वह ऊंच है और कर्मरहित सिद्ध त्ना सर्वोच्च है ।

मि०—तब ज्ञाति वर्णसे ऊंच नीच न ठहरा ?

आ० ब्र०—नहीं, देखो सम्यक्त्वसे शुद्ध चांढाळ शरीरधारी आत्माकी देव पूजा करते हैं । परन्तु मिथ्यारवी ब्राह्मण क्षत्री वैश्यको निम्न स्थान बताया है । और भी सुनो, पूडवपादाचार्य क्या कहते हैं—

जातिलिगविकल्पेन येषां च समयामहा ।

तेऽपि न प्राप्नुवन्त्येव परमं परमात्मनः ॥

अर्थात्—जो ज्ञाति व भेष आदिके दुराम्रहमें पड़े रहते हैं वे परमात्मपदको प्राप्त नहीं होते । व्यवहारमें ब्राह्मण, क्षत्रियादि वर्ण ज्ञातिवाले उच्च व शुद्ध नीच माने जाते हैं । इसका अर्थ भी वही है । सुनो कविवर बनारसीदासजी वर्णोंकी क्या व्याख्या करते हैं ?

जो निदग्ध मारग गहे, रहे ब्रह्म गुण लीन ।

ब्रह्म दृष्टि सुख अनुभवे, सो ब्राह्मण परवीन ॥१॥

जो निदग्ध गुण जानके, करे शुद्ध व्यवहार ।

जीते सेना मोहकी, सो क्षत्री भुज भार ॥२॥

जो जाने व्यवहार नथ, दृढ़ व्यवहारी होय ।

शुभ करणी सो रम रहे, वैश्य कहावे सोय ॥३॥

जो मिथ्यामत आदरे, रागद्वेषकी छान ।

बिन विवेक करनी करे, शुद्ध वर्ण सो जन ॥४॥

चार भेद कहेति सो, ऊंच नीच कुल नाम ।

और वर्णसंकर सबै, जे मिश्रित परिणाम ॥५॥

क्या आप नहीं जानते हैं कि ऊंच वर्णोंमें जन्म लेनेवाले व्यसनासक्त जुआदी सट्टाबाज आदि मनुष्योंकी प्रतीत नहीं रहती ? वे पतित और आदर रहित होजाते हैं । परन्तु सदाधारी सच्चा एक शुद्ध भी आदरकी दृष्टिसे देखा जाता है । इसलिये प्रत्येक मनुष्यको उच्च बननेके लिये (जैसा कि उसका जन्मसिद्ध अधिकार है) मिथ्यात्व, व्यसन, पाप, तथा विषय कषायोंको अपने आत्मासे हटाना चाहिये ।

मि०—तो क्या शुद्ध भी ऊँच होसका है ?

आ० ब्र०—हाँ ! अवश्य होसका है, हमारे पूर्वाचार्यों ने पशुओं तकको ब्रत देकर श्रावक बनाया है । इसके अलावा यदि यह कह दिया जाय कि तुम शुद्ध हो कुछ नहीं कर सकते, ऊँच नहीं चढ़ सकते, तो वे विचारे कायर होकर अपने आाको सुधारनेका प्रयत्न करनेसे बंचित रह जाते हैं । इसलिये उनकी शक्तिको विकसित न होने देनेका महापातक भी उन्हीं लोगोंको लगता है, जो कि उनको उठनेसे रोकते हैं । और भैया ! धर्ममार्ग तो सबके लिये सदैव खुला है, उस ऊँच—नीच ही क्या ? धर्म सेवन करनेसे कुत्ता भी देव और अधर्मसे देव भी कुत्ता होजाता है । इसलिये धर्मका आति या धर्मका मद करके किसी आत्माके श्रेय मार्गको रोकना पाप है ।

सब—वाह ! क्या अच्छी बात कही ?

आ० ब्र०—और कुछ पूछिये ।

मि०—उब वर्ण और जातिका क्यों चर्चा ?

आ० ब्र०—वर्ण तो कर्मसे चला, और जाति व्यवहारमें निर्वाहार्थ कल्पना करली गई । वास्तवमें संपूर्ण मनुष्य मात्र एक मनुष्य जातिके जीव है ।

मि०—आजकल विवाह विषयक बड़ा वाद-विवाद चर रहा है, सो उसमें आपका क्या मत है ?

आ० ब्र०—भाई ! मुझे इस विषयसे कोई सम्बन्ध नहीं । मैं तो कृतकारित और अनुमोदनासे इस पर्याय भरको इसका त्याग कर चुका । अब जिसे विवाह करना कराना हो, वह जाने । मुझसे और धर्म बार्ता क्रीजिये ।

मि०—परस्परिक विवाद (कथाम) मिटाना भी तो धर्म है ।

आ० ब्र०—अवश्य है, परन्तु मेरी रुचि इस विषयमें चर्चा करनेकी नहीं है । जो मत जिन-सेवादि आचार्योंका है, मैं उसमें सहमत हूँ । आप इसके लिये आदिनाथपुराण, हरिवंशपुराण, पद्मपुराण, पांडवपुराण, आदि ग्रन्थ देखिये । और पं० दौलतरामजी आदि प्राचीन भाषाकार विद्वानोंने जो अर्थ किया है, उसीकी श्रद्धा कीजिये । आजकलके पंडितोंकी तू तू मैं मैं न बढिये, इसीमें श्रेय है । अच्छा अब तो मैं जाता हूँ, थोड़ी देर प्रयाद दूर करूँगा । पश्चात् सामायिकका काळ आनेवाला है । दर्शनविशुद्धिः ।

ब्रह्म०के जानेके बाद टेकचंदने कहा कि पिछले प्रश्नका उत्तर सुनाशा नहीं हुआ । तब जेचंद बोले—

जै०—भैया सुनाता ही है, पिसेको पीसना ही क्या ? विजातीय अन्तर्जातीय और असवर्ण आगम विकल नहीं है, लोकविरुद्ध अवश्य माना जाता है, और विषवाविवाह तो बेजोडसी ही बात है । विवाह कन्माका ही होता है, ऐसा ही ग्रन्थोंमें बांचा सुना है । और ब्रह्मचारियोंको इस वादविवादमें काळ लगानेसे कुछ काम नहीं । हमें भी उनसे ऐसे प्रश्न करना चाहिए । उनके उपदेश सुननेके लिये और बहुत विषय हैं । इन विवाहादि संसारिक विषयोंमें हमलोग स्वयं निर्णय आगमके अनुसार कर सकते हैं । जो आचार्य लिख गये और प्राचीन पंडित अर्थ कर गये हैं वही प्रमाण है । अच्छा अब कुछ देर आराम करको । अब जिनेन्द्रदेवकी ।

राजा खारवेल और उसका वंश ।

(लेखक-श्री० बाबू कामताप्रसादजी-अलीगंज ।)

कच्छिपू-चक्रवर्ती राजा खारवेल ईस्वी पूर्व दूसरी शताब्दि के लगभग हुये हैं । सम्राट् अन्द्रगुप्त मौर्यकी तरह वह भी एक पक्षके जैन राजा थे । वह जिसने ही वीर थे, उतने ही धर्मात्मा थे । उनका पता अभीतक किसी जैन ग्रंथमें तो चला नहीं है । पर हाँ, उन्हींके समयका उकेरा हुआ उनका शिकालेख उनके जीवचरित्रको प्रकट करनेमें आज एकमात्र हमारा सहायक है । आश्रमसे वह भी समयकी कृपासे इतना अस्पष्ट होगया है कि सुगमतासे उसको ठीक २ पद लेना कठिन है । विद्वानोंने वर्षों कोशिस करके उसे तरह तरहसे पढ़ा है । खैर उस सबसे इस समय हमें मतलब नहीं है । हमें देखना है कि उनका वंश क्या था ?

शिकालेखमें उन्हें चेदिवंशत्र महामेघवाहन एक खारवेल लिखा है और इससे स्पष्ट है कि वह चेदिवंशके नररत्न थे । महामेघवाहन और एक उनके विरुद्ध थे । यह क्यों थें ? इसका उत्तर मि० जयसवालने हिन्दू पुराणोंके आधारसे यह दिया है कि वह कौशिकके राजा एकसे सम्बन्धित थे और कौशिक (दक्षिण) में एक राजवंश था जो 'मेघ' नामसे परिचित था । उसीका अधिकार कच्छिपूमें हुआ । अतएव उसके कारण ही खारवेलकी 'महामेघवाहन' उपाधि समझना ठीक है । हमने जैन हरिवंशपुराणसे इस मतकी पुष्टि की; क्योंकि राजा ऐलेयके

वंशन अभिचन्द्रको विन्ध्याचलके पुष्ट भागमें चेदिराष्ट्री स्थापना करते वहां लिखा है ।

इसके विपरीत एक श्वेतांबर मुनि किसी संदिग्ध थेरावलीके आचारसे खारवेलका वंश चेट बताते हैं और उन्हें वैशालीके राजा चेटकसे सम्बन्धित करते हैं । श्वे० थेरावलीके इस मतका खण्डन हमने 'अनेकान्त'की किरण ९ में किया और अपने उक्त मतको भी प्रकट किया । किंतु 'अनेकान्त'के प्रवीण संपादकने हमारे लेखपर कई आपत्तियां की हैं । उनका उत्तर उसी पत्रमें छपता तो ठीक था; परन्तु उक्त संपादक महोदयका अपनी संपादकीय टिप्पणियोंके विरुद्ध छिख छाप देना मुझे अशक्य जंचा; क्योंकि पिछले सावकेसे मैं इस ही नतीजेको पहुंचा हूं । 'अनेकान्त'की ४ थी किरणमें मेरा एक नोट खारवेलके लेखकी १४वीं पंक्तिसे सम्बन्धमें प्रकट करके मान्य संपादकने एक उग्रहास सा किया है और यह जाहिर किया है कि मानो उस पंक्तिका विशेष सम्बन्ध श्वेतांबरीय सिद्धांतसे है और इस सम्बन्धमें उन्होंने मि० जायसवालका वह अर्थ भी पेश किया है जिसमें 'यापज्ञापक' शब्दका अर्थ जैन साधु करके, उन साधुओंको सबत्प्र प्रकट किया गया है ।

मैंने इनपर उनको लिखा कि पूर्वोक्त नोटको उस हालतमें ही प्रकट करनेको मैंने आपको लिखा था जब कि आप सन् १९१८ में जो इस पंक्तिका नया रूप प्रकट हुआ है, उसे देखकर इसे ठीक कर लें । अतः आप इस बातका संशोधन प्रकट कर दें और आप जो जायसवालकीके अनुसार यापज्ञापक शब्दसे जैन साधुओंको सबत्प्र प्रकट

करते हैं सो ठीक नहीं; क्योंकि याज्ञापक शब्दके अर्थ जैन साधु कारविक हैं—किसी प्रमाणाचार पर अवलम्बित नहीं है। किन्तु सम्पादक महोदयने इस संशोधनको प्रकट करनेकी कृपा नहीं की। इसीमें प्रस्तुत लेख “दिगम्बर जैन” में जैननेको बाध्य हुआ है। मुझे विश्वास है कि मुख्तार सा० मुझे इस धृष्टताके लिये क्षमा करेंगे।

स्वामिके वंशको श्वे० येरावलीके अनुसार चेत न माननेके लिये मैंने नौ कारण बताये थे; किन्तु उनमेंसे सिर्फ ८ व ९ नं० के कारणोंपर ही आपत्ति की गई है और कहा गया है कि सुस्थित और सुपतिबुद्ध नामक स्वविरोधा स्वामिकी बुझाई हुई सभामें ‘मौजूद होना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।’ तथापि देवाचार्य, बुद्धिगिणाचार्य, चर्मसेनाचार्य व नक्षत्राचार्य (दिगम्बर)का भी उस सभामें मौजूद रहना उचित समझते हैं। मुख्तार सा०के इस मतको स्वीकार कर लेनेपर भी, येरावलीका इस सम्बन्धमें आपत्तिमत्क होना निःशेष नहीं होनात; क्योंकि उसमें उन आचार्योंका उल्लेख है जो दिगम्बरोंमें मिकते हैं और किसी श्वेतांबरी पट्टावलीमें जिनका नाम नहीं है। अतएव इस येरावलीको नई कृति मानना उचित है। साथ ही यह मानना होगा कि स्वामिके अपनी सभा अपनी मृत्युसे पहले बुझाई थी और वी० नि० सं० ३३० में येरावली उनकी मृत्यु बताती है। इस दशामें न चर्मसेनाचार्य और न नक्षत्राचार्य अंगज्ञानके धारक होने रूपमें उसमें सम्मिलित होसके हैं, और चूंकि वह सभा अंगज्ञानके

उद्धारके लिये एकत्र की गई थी; इसलिये उसमें अंग ज्ञानियोंका पहुंचना विशेषतः उचित मानकर ही श्वे० येरावलीकारने उनका उल्लेख किया कहना ठीक है। तब साधारण रूपमें उनका पहुंचना न पहुंचना बराबर है। अतः येरावलीको जाली मानना अनुचित नहीं है और जब श्वे० उसे मूळरूपमें दिखानेको तैयार नहीं हैं, तब हमारा उसे जाली कहना बिल्कुल ठीक है।

अब रही बात ‘हरिवंशपुराण’ के उक्त उल्लेखके अनुसार स्वामिकका सम्बन्ध ऐलेयसे बता-नेकी; सो इस सम्बन्धमें आपत्तिपूर्ण फिजूल हैं। यह ग्यारह लाख वर्षकी पुरानी बात है तो कुछ हमें नहीं। राजघरानेमें तो इससे भी पुरानी २ बातोंका उल्लेख मिकता है। स्वयं भगवान ऋष-भनाथके वंशसे सम्बन्ध बतानेवाले क्षत्री आज मौजूद हैं और इतिहासज्ञ विद्वान भी इस बातको प्रकट करते हैं। इसीलिये यह उल्लेख बहुत प्राचीन होनेके कारण ही अमान्य नहीं ठहराया जासकता।

मुख्तार सा० हरिवंशमें ‘ऐलवंश’ के उल्लेख न होने मात्रसे हमारे कथनको शब्द कुछ ठहराते हैं—परन्तु स्वामिक तो जारनेको ‘ऐल’ प्रकट करते ही हैं। और हमने अपने लेखमें किसी ‘ऐलवंश’ का उल्लेख नहीं किया है। हरिवंशपुराणमें ‘हरिवंश’ का वर्णन करनेकी प्रधानता है—उसमें अन्य वंशोंका सामान्य परिचय होना भी कठिन है। तो भी सामान्यतः ऐलेयके वंशज अभिचन्द्र द्वारा चेट्टिवंशकी स्थापनाका उल्लेख उसमें है ही और स्वामिक आप-नेको चेट्टिवंशका लिखते ही हैं—फिर उन्हें

ऐलेयकी सन्तानमें न मानना कैसे ठीक है ?
 भले ही किसी 'ऐकवंश' का नाम न मिले—वह
 मिले भी कैसे ? जब कि उसके उत्तराधिकारियोंने
 एक दूमेरे वंश चेष्टिही स्थापना करली थी ।
 तिसपर ऐलेयकी सन्तान उस हरिवंशका उल्लेख
 अपने लिये क्यों करती; जिसमें उनके पूर्वज
 ऐलेयके पिता दक्षने कन्याको पत्नी बना-
 नेका दुष्कर्म किया था और ऐलेयको उनसे
 अलग होकर अपने बाहुबलसे स्वाधीन राज्य
 स्थापित करना पड़ा था । इस दृष्टामें हरिवंशसे
 अपनेको अलग बतानेके लिये एवं अपने बहो-
 दुर पूर्वज ऐलेयका नाम कायम रखनेके लिये
 चेदिवंशजोंका अपने नामके साथ 'ऐक' विरुद्ध
 धारण करना ठीक है । इस दृष्टामें उन्हें ऐक-
 वंशज कहना ही ठीक है । अतः स्वारवेकको
 राजा ऐलेयसे सम्बन्धित बताना कोरा झूठक
 नहीं है—बल्कि यथार्थ बात है ।

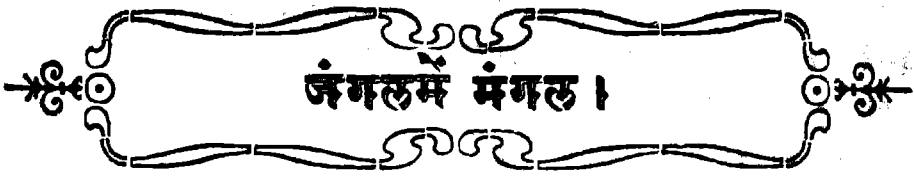
हमें सांपदायिकताकी रक्षाका जरा भी रुकाव
 नहीं है; बल्कि जो बात सत्य है उसीको पुष्टि
 देनेका हमारा प्रयास है । मुरुतार सा० न जाने
 क्यों दिगम्बर संप्रदायके ग्रंथोंकी सत्य बातसे
 भी हिचकते हैं और उसके सम्प्रदायके महत्त्व-
 काकी साहित्यको 'अनेकान्त' में पुष्टिरवान
 देनेसे शिस्तकते हैं । खेद है, मुरुतार सा०
 हमारे संप्रदायिक पक्षपातका एक भी उदाहरण
 न देकर वृथा ही हमपर आक्षेप करते हैं । इस
 कृपाके लिये हमारे पास सिवाय चन्द्रबादके और
 कुछ नहीं है । इति

अभिमान ।

कहा एक चींटीने मुझसे,
 देखो मैं कैसी गुणवान ।
 लेती खोज अन्नके कणको,
 मेरा बिल है महल महान ॥
 वेश कीमती अन्न-कणोंसे,
 भरा खानाना मेरा ज्ञान ।
 मुझसा होगा कौन यज्ञस्वी,
 निपुण, भाग्यशाली धनवान ॥१॥
 तुच्छ घमण्डी चींटीकी ये,
 बातें मुन मैं खूब हँसा ।
 पर सोचा फिर ज्ञानी नरको,
 भी है ऐसा गर्व नशा ॥
 पा कुछ टुकड़े तुच्छ धातुके,
 खुदको मानें वह गुणवान ।
 विनाश्रीक निज तुच्छ घरोंसे,
 जगमें निजको गिने महान ॥२॥

x x x
 चक्रवर्तिके वैभवकी भी,
 नहीं लोकमें महिमा है ।
 विश्व बीच इस वसुन्धराकी,
 सिन्धु-विन्दु समसीमा है ॥
 क्षुद्र बुद्धि यज्ञ क्षणिक वस्तुका,
 रे मावव! घमण्ड कर मत ।
 वर्तमान ना सदा काल है,
 नहीं देश है निखिल जगत ॥३॥

“चन्द्र” शंकरावाटन शहर ।



[लेखक-नथमल पो० जैन सुप्रिन्टेन्डेन्ट दि० जैन बोर्डिंग-उदयपुर]

महाराणा प्रतापसिंहने, जो बीरता दिखाई ।
आहिर है कुल ब्रह्ममें, कैसे छिपै छिपाई ॥

प्रिय सज्जनो ! इस मेवाड़ मूमिकी अलण्ड कीर्तिकपी ज्योति यहाँके वीर और वीराङ्गनाओंसे संसारमें देदीप्यमान है, परन्तु महाराणा प्रताप-सिंहसे उषादा गौरववाला शब्द ही कोई हुआ होगा कि जिनके कीर्तिकपी सबसे उनके पिता उदयसिंहकी कलंकरूपी रात्रि भाग गई । संवत् १६१७ में पिताका स्वर्गवास होने-पर अपने चरण कमलोंसे राउपगद्दीको पवित्र किया । राउपारोहणके समय मेवाड़ मूमि यव-नोंकी परतंत्रताकी बेड़ीमें जकड़ी हुई थी । महाराणाजीने मातृमूमिका उद्धार करनेके लिये वे कड़ी प्रतिज्ञाएँ की थी कि:-मैं सोनेके पात्रमें भोजन नहीं करूँगा, बिछोनेपर न सोऊँगा, डढ़ी न पढ़ूँगा और जंगलोंमें बास करूँगा इत्यादि ।

प्रिय सज्जनो ! इस प्रतिज्ञासे पुराने जमानेके राजा और प्रजाका अपूर्व प्रेम, देशाभिमान, मातृमूमिका प्रेम इत्यादि प्रत्यक्ष रूपसे झूठकते हैं । क्या राजाजी चाहते तो प्रजाको नष्टभ्रष्ट नहीं कर सकते थे ? अवश्य कर सकते थे । परन्तु तब वीरवरने प्रजाके दुखको भरना ही दुःख समझा । वे पूर्णरूपसे जानते थे कि राजा और प्रजाका प्रेम, पिता पुत्रके समान, गाय बछड़ेके समान है । जिस प्रकार पिता पुत्रका

पाकन करता है, उसी प्रकार राजा प्रजाको पाकन करे । महाराणा रामचन्द्रजीने भी अपने पुत्रोंको समझाया था कि:-

“ ब्राह्म राज प्रिय प्रजा दुस्वारी ।

सो नृप अवश नरक अधिकारी ॥ ”

ऐसी नीति मनमें विचार कर राजाजीने प्रजा व देशके रक्षणार्थ अपने तन, मन, बलको तिष्ठाञ्जलि देदी । इस विकट समयमें हमारी भारत माताका उद्धार करनेके लिये उन्हीं जैसे वीर आत्माकी जरूरत है । क्या वे फिर भी इसमें पदार्पण करेंगे और इस उनडे हुए भारतको फिरसे हरा भरा बनायेंगे ? ऐसे वीर रत्नको पाकर मेवाड़के गौरवका तो पूछना ही क्या है परन्तु साथमें भारतने ऐसे वीरवरको पाकर संपूर्ण मूमण्डलको नीचा दिखा दिया था ।

महाराणाजी इस प्रतिज्ञापर दृढ़ रहते हुए; २५ वर्षतक मेवाड़के द्वारके लिये हजारों दुःखोंका सामना करते हुए बने रहे । बने महाराणाका भोजन इस प्रकार बनता था-

“कन्दमूल (1) फल लहे मीठे बडुने जैसे पाते थे ।
देते सबका बांट बचे बाकी पछे खुद खाते थे ॥
कभी कन्द फलफूल मूठ जंगलमें नजर न आते थे ॥
सुत, रानी, सामंत सहित लंघन कर तब रह जाते थे ॥१४

बन्ध है ऐसे उस वीरको भिसने अपनी प्रजाके लिये हतना कष्ट उठाया । आज कल भी उद-

बपुरके महाराजा साहसमें बड़ी प्रेम प्रभाकी तरफ देखनेमें आया है । विगत वर्ष वर्षा अधिक होनेके कारणसे “ पिछड़ोका” नामक ठाकावमें बेहद पानी भर जानेके कारण प्रभाके कुछ लोगोके होसहवास-साधन होगये के परन्तु महाराजा कत्सेसिंहजी अपने महलोंको छोड़कर अपने बापसाहोकी रीतिके अनुसार प्रभारक्षणार्थ ठाकाव पर अजमल छोड़कर रक्षाका उपाय सोचने लगे । आपने यह दृढ़ प्रतिज्ञा की थी कि जबतक प्रभाकी रक्षाका उपाय न होगा तबतक मैं अजमल ग्रहण नहीं करूंगा। वन्य है इन महाराजा साहसको जिन्होंने अपने दादाओंके प्रणके समान प्रण कर दिखाया ! जास्तिर अपना काखों रुपसेके बगीचे विगड़नेका विचार न करके प्रभाके रक्षार्थ बगीचेमें पानी निकलनेका रास्ता बनवाया । यह क्या ही अच्छा प्रभाप्रेमका ताजा उदाहरण है ?

महाराजाजीके ऊपर सबनोंका बनमण्डल उमड़ने कर जाता था । परन्तु वीरवरकी भुजाओंके नरकरपी बायुसे छिन्नमिल होझते थे । एक मेवाड़पर सबनोंका टिड्डीदक बराबर जाता ही रहा तब राजाजीने अपनी प्रभाको यह दुःख दिया कि पहाड़ोंमें जाकर बसो, खेत जोतना छोड़दो और उनमें गायें भेड़ें भी मत चराओ । राजाजीका इससे यह मतलब था कि इस पवित्र भूमिकी चीजोंसे दुष्ट सबनोंका भरणपोषण न हो । महाराजाजीने केवल प्रभाहीको जंगलोंमें दुःख उठानेको नहीं भेजा था, परन्तु आप भी उस दुःखके साथी हुए थे । यह क्या ही अच्छा

प्रभाप्रेमका आदर्श है । राजाजी सबनोंको बराबर हराते गये ।

जयपुरके राजा विहारीमलने अकबरको अपनी लड़की १६१० ई०में उपाहकर मित्रता करली । यहीसे हिन्दू मुसलमानोंका खून मिलना शुरू होगया । इनका पोता मानसिंह अकबरका बड़ा भारी सेनापति हुआ । सब राजा महाराजाओंने मुगलोंके सामने शिर झुका दिया परन्तु इन दो देशोंके वीरोंने अपना शिर न झुकाया अर्थात् बून्दी और मेवाड़के राजाओंने हिन्दूओंका गौरव रखा । उस समय किसी कविने कहा है कि:-

“बड़े बड़े मूयाल, हिम्मत अपनी हारके ।
बेटी बहन विशाल, यवनको ब्याहन लगे ॥
केवल राना एक, निज भुजदंजन ओरसे ।
राखी अपनी टेक, हनि यवनन सहि दुखधने ॥

एक समय राजा मानसिंहजी शोकापुरसे जीतकर लौट रहे थे उस समय वे मेवाड़में जाये और राजाजीसे यह कहा कि:-

समाचार मेजा तरुत, तृप प्रतापके तीर ।
करहु अतिथितकार बर, भीर वीर गंभीर ॥

राजाजीने अपने पुत्र अमरसिंहसे कहा कि बेटा ! इनके लिये भोजन इत्यादि तैयार कराओ । अमरसिंहने उदयसागर पर भोजन तैयार कराया । भोजनके समय राजाजीने यह बहाना बना लिया कि मेरे शिरमें दर्द है । मानसिंह अपने मनमें समझ गया कि राजाजी मेरे साथ भोजन करना नहीं चाहते, गुस्सेसे भरकर यह कहते हुए चला गया:-

मान भी ज़्यादा गर ना चूर करदू भांपकी ।
तो नहीं मैं मानसिंह हूँ और कुछ दिन रखी थीर ॥

राजा मानसिंहने जङ्गलको मेवाड़ जीतनेकी काकछामें फंसाकर मेवाड़पर चढ़ाई करा दी । सलीमके सेनापतिरबमें बघनोंने मेवाड़पर बड़े जोरजोरसे बाबा मारा । इसमें महाराणा भी अपने परमपिय चेतक नामक घोड़ेपर बैठकर कुछ सामंतोंके साथ बघनोंका दमन करनेके क्रिये संवत् १६१२में हजदीबाटीके रणक्षेत्रमें उतरे, बगधोर युद्ध प्रारम्भ हो गया । महाराणाने अपने घोड़ेके सलीमके हाथके मस्तकपर दो पांव रखवा दिये और माका मारनेको उठाया तो हाथी भाग गया । इस समय राजाजीको छत्रुओंसे चिरा देखकर “ ओड़ा ” के राजाने अपने ऊपर मेवाड़का छत्र धारणकर राजाजीको बचाया । राजाजीका चेतक उनको तेजीके साथ वहांसे मगा लेगया । राजाजीके पीछे दो बघनोंने अपने घोड़े दौड़ाये । उनके पीछे और भी बहुतसे दौड़े परन्तु सब जीट गये । वे दोनों सवार जगे बढ़ते ही गये । राजाजीके भाई शक्तसिंहने भाईके प्रेममें आकर इन दोनोंका काम तमाम कर डाला । फिर यह चिह्न लेते हुए कि ये बुद्धसवार ! ठरजा ! राजाजीके पीछे चला । राजाजी भाईको जाते हुए देखकर क्रोधित होगये । क्योंकि ये मुगलोंकी सेनामें नौकरी करते थे । राजाजीने समझा कि यह दुष्ट मुझे जकेका पाकर मारनेको आरहा है । परन्तु उन दोनों बघनोंकी काशोंको देखकर आपसमें प्रेमसे मिळे । यही राजाजीका प्राण-

प्यारा चेतक नामक घोड़ा असार संसारकी छौंकी-
कर चला गया । राजाजी नाना प्रकारसे विचार
करते हुए ऐसा कहने लगे—

‘ चेतकको मुख मोदमें, धरि चूंन परताप ।
कैर कर ध्याकुल बदन, रह २ कैर विताप ॥
चेतकको लखिके मृतक, वृष प्रताप रणवीर ।
करि निकाउ रोचन लगे, धरहि न रचक थीर ॥

इससे राजाजीका सेवकके प्रति कितना प्रेम
होटा था वह जाहिर होता है । हरद्वक मस्ति-
कका यह कर्तव्य है कि वह अपने नौकरके प्रति
हमेशा प्रीति रखे, चाहे वह पशु हो या
जादमी । शक्तिसिंहने अपना घोड़ा राजाजीको
देकर बिदा मांगी । फिर वे मुगल सेनामें गये
तो वहांसे भी निकाले गये, तब वेष्ट जीतते
हुए राजाजीसे जा मिळे ।

प्रातःस्मरणीय राजा मतापसिंहजीका नाम किस
अभागने न सुना होगा ? वे कैसे वीर थे इस
बातको उनके छत्रुओंसे भी जाहिर होता है ।
वे गाथा करते थे कि—पुत्र (मत्ताप) ने अपने
राज्य व सुखको तिकाज की देवी परन्तु बघ-
नोंके सामने अपने उजत शिरको न झुकाया ।
एक इसी ही वीरवरने हिन्दुओंके गौरवको
अक्षण्ड रक्खा । अन्य हैं ऐसे वीर पुत्र पैदा
करनेवाली जननिको ! इत्यादि शब्दोंसे तारीफ
किया करते थे ।

प्रभापेयी राजाने बनमें किसप्रकार दुःख
उठाये हैं उनको सुननेसे किस कठोर हृदय-
वालेका हृदय न पिघल जावेगा ? सुनिये—
एक दिन राजाकी सुता, तणकी रोटी खाय ।
बन चिताव तेहि छीन छै, भग्नी अचानक आय ॥

तब कन्या रोबन लगी, राना ताहि निहार ।
मन ही मन सोचन लगे, हा हा ! कष्ट अपार ॥

इस प्रकार राजाजीने अपनी पुत्रीकी दशा देखकर संघिपत्र अकबरके पास भेजा । पत्र पहुंचते ही अकबरकी खुशीका तो पृच्छना ही क्या था । वह पत्र लेकर बीकानेर नरेश पृथिव-
राजके पास पहुंचा जो कि दिल्लीमें थे । राजाने कहा कि यह पत्र राजाजीने नहीं लिखा है । तीन कालमें भी राजाजी अपना शिर आपके सामने नहीं झुका सकते हैं । फिर बादशाह अपनासा मुंह लेकर चला गया । राजा पृथिव-
राजने गुप्त पत्र राजाजीके पास यह भेजा कि—

“ राजपूत अकृत अकबरने किये रागी सभी ।
ये बचे इक आप ही निज देश अनुरागी भयो ॥
खो भी संधी करनेको तैयार इकदम होगये ।
हा । भभागो देश भारत, वीर तब कहं सोगये ॥
क्या कहं किससे कहूं, कुछ भी नहीं चलता उपाय ।
कट जायगी पृथ्वी तो बस, इकबारगी जाऊं समाय ॥
छत्रियोंमें आपहीमे, धर्मकी रक्षा करी ।
पर आप अब करते हो क्या, सोचोतो ऐ नरकेशरी ॥
“ चिढ़ीको पड़नाय, मये बदल इक नारगी ।
गई वीरता आय, पहिले सी परतारमें ” ॥

इस पत्रके जबाबमें राजाजीने लिख दिया कि मैंने संघिपत्र नहीं भेजा है । इस प्रकार मेवाड़ जीतनेका कोई उपाय न सूझनेके कारणसे राजाजीने पंजाबमें आकर नया राज्य जमानेका विचार किया । तब अमरसिंहने अपनी मांसे यह कहा कि मां भूल लगी है । तब महाराणी पद्मावतीने कहा, बेटा—

“ आटो है कम घासको, कुंवर बताऊं तोय ।
जीवने वाले हैं बहुत, पुरो कैसे होय ॥

सुन रानीके वचन तृप, कहन लगे बिलखाय ।
धूळ मिला प्रिय आजु तो, लीजै काम चलाय ॥
धूळ मिलाकर घासके, आटेमें इकवार ।
महारानीने तुरत ही, रोटी करी तैयार ॥
रानाजी जीमन लगे, संग सबै सरदार ।
खात सराहत स्वादको, अति हित सहित उदार ॥

हे प्रभु ! अन्य है ऐसे देश व प्रजाप्रेमवाले वीरको कि जिसने अपने सहकुटुम्ब पास व धूरकी रोटी खाई । वह भी बड़े ही प्रेमसे । क्या आपकल भी भारतका भाग्य फिर ऐसा उदय होगा कि ऐसे वीर रत्न उत्पन्न हों ? जब राजाजी मेवाड़ छोड़कर चलने लगे तब भामा-
शाह जैनने अट्ट बचन राजाके पांवोंमें रखकर कहा कि आप इससे मेवाड़की रक्षा करें और अन्वत्र न पचें । वह बच इतना था कि १२ वर्षतक २५००० मनुष्योंकी सेना पाळी जा सकती थी । वन पाकर राजाजी वापिस लौट पड़े और बिमलीकी तरह मुगलोंपर जा चढ़े । उनको छिन्नभिन्न कर दिया । मेवाड़के राजाओंको चाहिये कि उनके पितामहोंको मदद करनेवाले जैनियोंपर हमेशा कृपादृष्टि रखना करें ।

राजाजीने पहले पहल कुंभामेरको जीतनेके बाद एकके बाद एक किले जीतते ही गये । इस प्रकार कई वर्ष कठिन तपश्चरण करनेके पश्चात् मेवाड़में धर्मराज्य स्थापित किया जो आजतक अमनचैनसे चल रहा है । राजाजी संवत् १६४२ (ई० १९८६) तक यवनोंकी चढ़ाईकी राह देखते रहे, परन्तु कोई चढ़ाई नहीं हुई ।

उस वीरवारकी आत्मा इस प्रकार देश रक्षा करते हुए अकबरकी कीर्तिको जीतते हुए यव-नोंका मान दखन करते हुए इस असार संसारसे सम्भ्रत १६९१ ई० सन् १५९७में चल बसी। उस वीर आत्मामें अपना नाम अमर कर हम लोगोंके लिये आदर्श जीवन छोड़ दिया। अंतमें मरण समय महाराणाजी अपने पुत्र अमरको सामंतोंकी गोदमें सौंपकर इस प्रकार कहने लगे:-

प्यारे वीरधीर क्षत्री सब, सुनो हमारे बचन प्रमान ।
आरत भारत परम सहायक, धर्मनिष्ठ यशशील निधान ॥
मैं तो एक निमित्त मात्र हूँ, कौन बड़ा उपकार किया ।
जो कुछ करा धरा तुमने ही, डूबा देश उबार लिया ॥
हा । प्यारे चेतकका मी, उपकार कहा नहीं जाता है ।
आती है जब याद कलेजा, रह रह मुँहको आता है ॥
भामासाह जैन मंत्रीने, देखो कैसा काम किया ।
वे प्रमुदित मन निज संचित धन, जगतीतलमें नाम किया ॥
होषका हूँ उच्छ्रुण नहीं मैं, इन सबके ऋणसे भाई ।
धन्यवाद देता हूँ सबको, बार बार हिय हर्षाई ॥

जैन व्रतकथासंग्रह-

जिसमें रविवार, रत्नत्रय, दशलक्षण, सोलहकारण, श्रुतस्कंध, त्रिलोक तीज, मुकुट सप्तमी, फलदशमी, श्रवणद्वादशी, रोहिणीव्रत, आकाशपंचमी, कोकिलापंचमी, चंदनषष्ठी, निर्दोषसप्तमी, निःशल्य अष्टमी, सुगंधदशमी, जिनरात्रि, मेघमाला, लम्बिविधान, मौन एकादशी, गरुडपंचमी, द्वादशी, अनंतव्रत, अष्टानिका, पुष्पाञ्जलि, बारहसौ चौतीस आदि अनेक व्रतोंकी कथार्थ विधि सहित हैं। शास्त्राकार पृ० १२० मू० १)

जैन महिला गायन ।

इसमें जिन्योंके लिए ९८ उत्तमोत्तम गायन हैं। प्रत्येक जैन महिलाके यहां इसका होना परमावश्यक है। मूल्य १८)

सैनैज्जर-दिगंबर जैन पुस्तकालय-वृत्त ।



जी० आई० पी० लाइन जो देहलीसे बम्बईको गई है उसीपर कलितपुर है और कलितपुरसे दक्षिणकी ओर दूसरा स्टेशन जासलीन है। यहांसे बैरगाढी देवगढ़को जाती है जो करीब ९ मील है। पैदल मार्ग ७ मील है। देवगढ़ ग्राम बहुत छोटासा ऊनद ग्राम समान है। यहांपर अभी एक भी घर जैनियोंका नहीं है। यहांकी आबादी करीब डेढ़सौकी है जिनमें सब सहारिया और अहीर हैं। दो चार घर ब्राह्मणोंके भी हैं। देवगढ़ ग्राम वेतवा नदीके मुहाने पर बसा हुआ है। यहांसे १०० फीटकी ऊँचाई पर करनालीका दुर्ग है जिसको कीर्ति-बर्मा चंदेलने बनवाया था। इस पर्वतकी चढ़ाई सोनागिरके पर्वतके समान अति सरल तथा सीधी है। पहाड़की चढ़ाई तै करनेपर एक खंडहर द्वार मिलता है। यह द्वार पर्वतकी परिधिको बेड़े हुए कोटका द्वार है इसको तोरणद्वार कहते हैं। इस द्वारको पार करते हुए दो कोट और मिलते हैं। दूसरा और तीसरा कोट मंदिरोंको घेरे हुए है। इन कोटोंके भीतर अनेक देवाल्य होनेसे ही संभवतः इसका नाम देवगढ़ पड़ा होगा।

इनके भीतर सैकड़ों जैन मंदिरोंके भग्नावशेष पाए जाते हैं। हजारों जैन मूर्तियां देवाल्योंके बाहर बत्रतत्र ओंधी सीधी पड़ी हुई हैं। निच-पर र्वाका जल पढ़नेसे और कई जमनेसे

उनके रंग रूपमें भी अन्तर पड़ रहा है और पड़ गया है ।

बहुतसे छोटे २ मंदिरोंको छोड़कर बाकीके जैन मंदिर तीस हैं जिनमें अनुपम कारीगरी पाई जाती है । ऐसी उत्तम कारीगरीके देवा-लय अन्वयत्र मिलना कठिन है । ये मंदिर ८वीं से १२ वीं सदीके बने हुए पाए जाते हैं । इन्हीं मंदिरोंमें तीन मंदिर विशेष उल्लेखनीय हैं । मंदिर नं० ११ सबसे बड़ा मंदिर है । जिसके पूर्वमें कई मंदिर भिन्न २ समयके हैं । इसमें छातिनाथ भगवानकी खड्गासन प्रतिमाजी हैं जिसकी ऊंचाई १२ फुटके है । ४, ५ फुटकी तो अनेक मूर्तियां हैं । इस मूर्तिके समयका पता नहीं लगता—यह मूर्ति अतिशयवान हैं ।

इस मंदिरके उत्तरी दाकानमें एक विचित्र शिवालेख है जिसमें “ ज्ञानशिला ” खुदा हुआ है । १८ भाषाओं और १८ लिपियोंके नमूने मिले हुए हैं । इसको सा खानामदीने लिखाया था । इस मंदिरके आगे खुदा हुआ बरामदा जो ४२ फीट ३ इंच वर्ग है जिसमें ६, ६ स्तम्भोंकी छह कतारे हैं । इसके बीचमें एक बंधूतरा है जिसपर जैन मूर्तियां विराजमान हैं । वहाँपर ही पुजारी नित्यप्रति पूजा करता है । इसके सामने १६३ फीट दूरीपर एक मंडप चार स्तम्भोंपर स्थित है । इन स्तम्भोंमेंसे एक स्तम्भपर राजा मोमदेवका शिवालेख पाया जाता है जो सम्बत ९१९ या शका सं० ७८४ का है । मंदिर नं० १२ के मंडपमें तीर्थंकर अश्वमेधके द्वितीय पुत्र गोम्पटेश्वर या

बाहुबलिकी मूर्ति है जिसका सं० ११ सदीका दिया हुआ है । एक पाषाणका सहस्रफुट चैत्यालय है जिसमें एक हजार जाठ मूर्तियां उकीरी हुई हैं, सब साबित हैं । इन मंदिरोंमें और इनके बाहर पर्वत पर सैकड़ों क्या हजारों जैन मूर्तियां खंडित, अखंडित अवस्थामें पड़ी हुई हैं ।

मूर्तियां ऐसी सुन्दर तथा मनोज्ञ हैं कि जिनके अवयव वाली मूर्तियां अन्वयत्र कहीं नहीं पाई जातीं । पर्वतके दक्षिणकी ओर दो सीढ़ियां हैं जिनको राजघाटी और नहरघाटी कहते हैं । बसोतका पानी इन्हीं घाटियोंमें होकर नदीमें चला जाता है । ये घाटी चट्टानसे खोदी हुई हैं जिनपर खुदाईकी कारीगरी पाई जाती है । राजघाटीके किनारे एक जाठ लाहनोंका छोटासा शिवालेख है जो संवत् ११५४ का है । इसको राजा बरमने खुदावाया था । जो कीर्तिवर्मा चंदेलका बनीर आजम या उसीके नामसे कीर्तिगिर दुर्ग कहलाता है । यह सं० ११५४की बात है । यहाँपर एक सिद्धकी गुफा है । यह पहाड़में खुदी हुई हैं जिसका मार्ग पहाड़ीके ऊपरसे सीढ़ीद्वारा नीचेको है । इसके तीन द्वार हैं । दो स्तम्भोंपर छत सुरक्षित है । इस चट्टानके बहार एक छोटासा शिवालेख है जो गुप्त समयका है । एक दूसरा शिवालेख है जो राजा वीरने सं० १२४५ में कुरारको जीता था ।

देवगढ़में पड़ेले सहरियोंका आधिपत्य था । इनपर गोड़ोंने विजय पाई । इनको परा-स्तकर गुप्त बंशीय राजाओंके हाथमें देवगढ़

आया । स्कन्धगुप्त आदि इस वंशके कई सि-
काहेल देवगढ़में अब तक पाए जाते हैं । गुप्त
वंशके अनन्तर कन्नौजके भोजवंशी राजाओंने
इस प्रान्तको जीता । इसके बाद चंदेकवंशी
राजाओंके हाथमें देवगढ़ आया । इन्हींके बापदादे
धुर्मंगदसिंहने यहां आकर विश्राम लिया था ।
इनका स्वर्गवास ई०सन् १९९४में हुआ था । उस
समय देवगढ़ एक विशाल तथा सुन्दर नगर
था । इसी कुटुम्बने दतियाका किला बनवाया
था । कलितपुरके आसपास इस वंशके अनेक
सिकाहेल अबतक पाए जाते हैं । इस वंशकी
राजधानी महोबा थी । सन् १८११ ई० में
महाराजा सिधियाकी ओरसे जो कर्नेल बैन-
टिस्टी फिलोज देवगढ़के ऊपर चढ़कर आये ये
उन्होंने तीन दिन बराबर लड़कर बादको देव-
गढ़पर कब्जा कर पाया था । चंदेरीके बदलेमें
सरकार हिंदको मिला था, अभीसे सरकारके
कब्जेमें देवगढ़ है ।

किलेकी दीवाल चाहे चंदेक राजाओंने बन-
वाई हो या पूर्वकी बनी हो यह हम नहीं कह
सकते, परन्तु इसकी मोटाई १५ फीट है और
बिना सिमेंट गारेकी बनी है । इसमें गोला
बतानेके लिए सुरास हैं । हदबंदीकी दीवाल
नदीकी ओर बातो बनाई ही नहीं गई हो या
गिर गई हो परन्तु उसकी मोटाई २० फीटसे
कहीं अधिक नहीं । बड़े जगम्मेकी बात तो
यह है कि किलेके उत्तरी पश्चिमी कोनेसे एक
परशरकी दीवाल २१ फीट मोटी है जो ६००
फीट दूर तक पहाड़ीके किनारे तक चली गई

है । शायद यह दीवाल दूसरे किलेकी हो, जो
नष्टपाव होगई हो ।

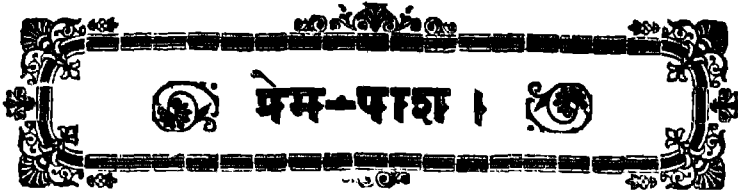
देवगढ़के बड़े मंदिर सब लड़े हुए हैं जिनमें
जीर्णोद्धारकी सख्त जरूरत है । पहले इनमें
किबाड़ोकी जोड़ियां भी नहीं थीं परंतु धर्म-
परायण श्रीमान् सेठ पदमचंदनी आगरावाळोने
कोहेकी जोड़ियां लगवादी हैं । बाकी सब
मरम्मत पड़ी हुई है इसके लिए हमारे
उदार चेतु, धर्मात्मा सज्जनोंको कुछ देना
चाहिए ।

दो मंदिर तुम्बिक भी हैं जिनमें पुरातन
कारीशरीके विचित्र नमूने देखनेमें आते हैं ।
मंदिरोंके लड्डे नाबदार चहरके समान हैं ।
सब मंदिर करीब ९-१० सौ वर्षके पुसने हैं ।
इनके समूचे रहनेका कारण केवल यही है कि
यह केवल पाषाण २ के बने हुए हैं । इनमें
चूने गारेका नाम भी नहीं है ।

देवगढ़में करीब २०० के सिकाहेल हैं
जिनको पुरातन विभागने संकलन किया है
और वे बहुत ही शीघ्र प्रकाशमें आनेवाले हैं ।

अन्तमें समाजके श्रीमानोंसे मेरा यही निवेदन
है कि इस अतिशय क्षेत्रकी ओर ध्यान दीजिए
और दिक् स्लोककर इसके जीर्णोद्धारमें द्रव्य
दीजिए । यदि इन क्षेत्रकी ओर जैनसमाजकी
कुछ समयके लिए पूर्ववत् उपेक्षा वृद्धि रही तो
यह प्राचीन क्षेत्र नष्ट हो जायगा । इससे इसकी
रक्षाके लिए सभी भाइयोंको द्रव्यसे सहानुता
पहुंचानी चाहिये । समाजसेवक-

नाथूराम सिंघई जैन, कलितपुर ।



(श्री० लेखक—ब्रह्मचारी प्रेमसागरजी)

प्रेम प्रेम सब कोई कहे, प्रेम न जाने कोय ।
प्रेम तत्व जाने बिना, कैसे प्रेमी होय ॥
प्रेम पंथ अति कठिन है, बिरले पावें पार ।
जो पावें सो शीघ्र ही, करें आत्म-उद्धार ॥

लोग मठे ही कहें कि प्रेममें आनन्द है
लेकिन मुझे उनके कहने पर तनिक भी विश्वास
नहीं होता क्योंकि मैंने जहांतक समझा है
वही समझा है कि प्रेम सुखमय नहीं बरिष्ठ
दुःखमय है । अगर प्रेम सुखमय होता तो
उसके भीतर दुःखका अंश क्यों दिखाई देता ?
क्या शुद्ध सम्बन्धके भीतर भी मिथ्यात्वकी
कालिमा छिपी रहती है ? नहीं, नहीं कदापि
नहीं । मिथ्यात्वके अभावमें ही शुद्ध सम्ब-
न्धका उदय होता है ऐसा मानना पड़ेगा ।
यदि फिर भी उसमें मिथ्यात्वकी कालिमाका
अंश रहा माना जाय तो उसे सम्बन्धका पूर्ण
रूप देना हो नहीं सका ।

इसी प्रकार जिस प्रेमके भीतर दुःखके अंश
अंकुरित होरहे हैं उस प्रेमको प्रेम कहना हमारी
अज्ञानताका परिचायक है । वह प्रेम सार्थक
प्रेमके पदको न पाकर प्रेमाभासके ही रूपमें रहता
है । प्रेम वही है जिसके भीतर सुखका उबाउब
सरोवर भरा हो और जिसमें श्रद्धाके कंज खिले
हों । इस प्रेमको ही प्रेम कहना चाहिये और

यही सार्थक प्रेम कहा जा सकता है । तात्पर्य
यह है कि सार्थक प्रेम वही है जो श्रद्धा एवं
सुख और शान्तिसे संयुक्त हो । सार्थक प्रेमके
भीतर साम्यभावोंका सद्भाव एवं आत्मोद्धारकी
लगनकी अपूर्व छटा रहती है । राग, द्वेष, मोह,
क्रोध, मान, माया, मत्सर आदि विपर्यय
भावोंका समावेश नहीं रहता ।

सत्य प्रेम सुखमय है एवं सुख देनेवाला है
किन्तु उसका स्वरूप एक प्रेमीके सिवाय अन्यके
लिये समझना कठिन है ।

सार्थक प्रेमके अभावमें एक वह प्रेम है जिसके
भीतर सर्वांश मोहका साम्राज्य स्थापित है । और
उसके अनुचर—राग, द्वेष, काम, मोह, माया,
मत्सर, क्रोधादि, उसके साथमें हैं । उस प्रेमको
हम सार्थक प्रेम नहीं कहकर असार्थक, असत्य
और मिथ्या प्रेम कहेंगे; क्योंकि सार्थक प्रेमके
भीतर उक्त विपरीत भाव नहीं होता ।

असार्थक प्रेमके भीतर मोहकी अत्यन्त गह-
कता होती है । जिसके हृदयमें वह प्रवेश कर
जाता है उसको पागल बना देता है । वस, इसी
प्रेमको हम प्रेमपाश कहते हैं और दर असल
ही भी ।

बड़े २ समझदार मानव इस असार्थक प्रेमके
व्यापारमें घाटा खा जाते हैं और इतना खंते

શ્રાવિકાશ્રમ સોજિત્રાનો વાર્ષિકોત્સવ.

શ્રી સોજિત્રા દિ. જૈન શ્રાવિકાશ્રમનો ચતુર્થ વાર્ષિકોત્સવ ગત વૈશાખ સુદ ૧૪ ને દીને કબો-ઉવાળા બાગોળે શ્રી વીસા મેવાડા યાત્રિની વાડીમાં ઉજવવામાં આવ્યો હતો. શરૂઆતમાં મંગલાચરણ કર્યાબાદ સ્વાગતનું ગીત ગવાયા બાદ કરમસદતા પણ હાલ ગીરેડી (અંગાલ) રહેતા શેઠ ડાહ્યાભાઈ શીવલાલની પ્રમુખ તરીકે ચૂંટણી થઈ હતી. ત્યારપછી આશ્રમના મંત્રી શા. રતીલાલ જગજીવનદાસે આશ્રમનો સંવત ૧૯૮૪-૧૯૮૫ ના વર્ષનો આવક વ્યવહારો રીપોર્ટ વાંચી સંજળાઓ હતો. રીપોર્ટ વાંચી રહ્યા બાદ આશ્રમની આળાઓએ ગરબો ગાઈ જાન પ્રચારની જરૂરીયાત દેખાડી હતી. ત્યારબાદ સ્ત્રીઓને ભણતરની જરૂર એ સંબંધી આશ્રમની આળાઓએ સંવાદ કરી દેખાડ્યો હતો, સંવાદ થઈ રહ્યાબાદ 'ભારત ઝીન' આશ્રમની આળાઓએ ગાયું હતું. ત્યારબાદ અન્ય અન્ય વક્તાઓએ પ્રસંગને અનુસરતા વિષય પર નીચે મુજબ બાણ્ય (વિવેચન) કર્યું હતું:-

મોહનલાલ કાળીદાસ મોહીસીદરના બાણ્યનો સાર—“અદરથો અને બંહેનો, દેશને માટે સ્ત્રીઓની ફરજ એ વિષય પર મેનામેને ધ્યાન

હૈં કિં એક દિન દિવાલિયા હી બનકર રહતે હૈં ।
 હમારી મમજાને તો ઇન દા હમમેં તનિકુ મી
 દેષ નહીં હૈં, કયોકિં અમાર્યક મેમ હી એક એમા
 મેમ હૈં જો મોહ એમ્-મમજાસે મરા દુભા હૈં ।
 મોહી માનવ સમજરાગ હોતા હુઆ મી મુલો
 કૈસી કિંગાઓરો કરતા હુઆ દુઃસ્વરે સમુદ્રમેં
 ગોતે લાને ડગલા હૈં । નહીં નહીં મૈં મૂલ તપા
 વહાં તો એમા મમજના તાહિયે કિં વડ મોહી
 માનવ અપને ભિયે દુઃસોકો નિમત્રજ કરકે હી
 ડુભાતા હૈં ।

ખેચ્યું છે એ પ્રશંસનીય છે. આળાઓએ 'સારી જહાંસે હિંદુસ્તાન' એ ગીત ગાયું પણ અફસોસની વાત છે કે એક આબુ પુષ્પ વર્ગમાં આદી ટોપી તથા સ્વદેશી પોશાક જેવામાં આવે છે, બ્યારે આળાઓપર વિદેશી સાડીઓ જેવામાં આવે છે. તેત્રીસ કરોડપર (હિંદુસ્તાનમાં) એક લાખ માણસ રાન્ય કરી રહ્યા છે તેવું કારણ આપણામાં કેળવણીનો અભાવ તેજ છે હાલ અપાતી કેળવણી એ જલે કે પૈસા પેદા કરવાનેજ અપતી હોય એમ જણાય છે. પુત્રોની જોડલી દગમર ગખવામાં આવે છે તેને એકસોમો લાગ આપણી સમાજમાં પુત્રીઓ માટે અપાતો નથી. સ્ત્રી કેળવણી સકુલમાં અપાતી કેળવણીમાં સમાતી નથી, પણ તે પોતાના આળાકો-પુત્રીઓ, પતિને તથા અન્ય વર્ગને સતોષ આપવામાં રહેલી છે.

તુર્કસ્તાન દેશમાં પડકારો રિવાજ સ્ત્રી વર્ગમાં પ્રચલિત હતો. દરનવદેશમાં પણ તેજ પૃથા ચાલુ હતી. હવે પાંચ વર્ષથી તુર્કસ્તાનમાંથી પડકાર રિવજનો નાશ થયો છે અને સ્ત્રી વર્ગ સ્વતંત્ર બન્યો છે મુસ્લમાનમત પાશના દાય તીચે સ્વતંત્રનો વાયરો જાન પુરોએ સ્વતંત્રતા મેળવી છે. અને તે મેળવવામાં તુર્કી રમણીઓએ સહાનુભૂતિ આપી હતી. પરંતુ તુર્કસ્તાન યુરોપનો મોઠો માણસ ગણાતો તે અત્યારે યુરોપને ડરડપ બની રહ્યો છે. અફઘાનિસ્તાનમાં શાહનો અમલ શરૂ થયો. તેણે સ્ત્રી વર્ગ માટે સ્વતંત્રતા બહોર કરી પણ મુશ્કાળે કોઈપર ખેતરી અસર કરી અને શાહને નાશબગ કરી યુરોપમાં જઈ રહેવું પડ્યું છે! મહાત્મા ગાંધીની અળવળ સાતમે દેશમાં આત્રી રહી છે. આપણી કોમની સ્ત્રીઓ બાણ્યેજ તે જાણતી હશે. દેશની રમણીઓવું હાલવું કાર્ય વિદેશી કપડાંના ત્યાગ વિષે જનસમાજને દોરવવાનું છે. આપણી કોમની સ્ત્રીઓએ દેશની અળવળને અનુસરતું કંઈ કર્યું નથી. ફક્ત અંકલેશ્વરતા છોટાલાલ શેલા-બાપનાં ધર્મપતિ માણેકગવરીએ કંઈકે કર્યું

છે. આશ્રમને સુધારવાના પ્રયાસ કરવાની જરૂર-
છે. મુંબાઇમાં નાનીબેન ગભજરે સ્થાપેલો મુંબાઇ
વનિતા વિશ્રામ છે ને મગનબહેને સ્થાપેલું શ્રાવિકાશ્રમ
છે. તેમણે પોતાની જીંદગી શ્રાવિકાશ્રમના હિતાર્થે
અર્પણ કરી હતી. સોજીત્રા આશ્રમને સ્થપાયાને
ચાર વર્ષ થયાં છતાં હજુ તેમાંથી કોઇ તૈયાર
થયું નથી, આશ્રમની આર્થિક સ્થિતિ નરમ છે.
આશ્રમમાંથી તૈયાર થઈ સેવિકાઓ આવી કાર્ય
કરે તો કામ ઘણું સંગીન થાય. ” ઉપર પ્રમાણે
વિવેચન કર્યાબાદ ડૉક્ટર ભાઈલાલ કપુરચંદે ખીજી
કોમની માફક આપણી કોમમાં સ્ત્રી કેળવણીનો
પ્રચાર વધુ થાય એવી ભલામણ કરી હતી.

ત્યારબાદ વડુના શા. સેવકલાલ પૂંબભાઈએ
વિવેચન કરતાં કહ્યું હતું કે સ્ત્રી પુરૂષ એ એક
ગાડાનાં બે પૈડાં સમાન છે, બે એક બરાબર
અને ખીણું નખણું હોય તો તે ગાડું ચાલે નહિ.
સ્ત્રી કેળવણી વિના આપણો ઉદ્ધાર નથી. આવા
આશ્રમને દરેકની સહાનુભૂતિની જરૂર છે. ત્યાર-
બાદ શા. કાળીદાસ ફૂલચંદભાઈએ વિવેચન કરતાં
કહ્યું હતું કે નામાનો દિસામ તપાસતાં માલુમ
પડે છે કે કેટલીક રકમોનું વ્યાજ તેમજ મુદલ
પણુ આવતું નથી, આવક ખીજી કમતી થાય છે
અને વ્યાજ તથા મુદલ આવતું ન રહે તો આશ્ર-
મની પ્રગતિ અટકી પડે માટે તેની વહેણી રકમો
નિયમસર આશ્રમને પહોંચાડવાની ભલામણ કરી
હતી. ત્યારબાદ દાવોલના શા. ભોગીલાલ અંબા-
લાલે કસરતની જરૂરીઆત તથા રેંટીઆથી
કાંતતાં વણુતાં શીખી તેનાં કપડાં તૈયાર કરી
પહેરવાનું સૂચ્યું હતું. ત્યારબાદ આમોદના શા.
ચીમનલાલ કરનુરચંદે વાણીઆમાં રહેલી આત્મ-
શક્તિ, મહાત્મા ગાંધીનું પ્રદાન આપી દેખાડી
હતી. તેમણે વધાનામાં કહ્યું હતું કે આપણી કોમ
પછાત છે. સ્ત્રીઓ પણુ તેટલીજ પછાત છે. મરદ
કમાઈ જાણે પણુ તેનો યોગ્ય વ્યય કરનાર પ્રધા-
નરૂપ સ્ત્રીજ છે.

ત્યારબાદ ભોજના અંબાલાલ ત્રિભોવનદાસે

પ્રસંગને અનુસરતું વિવેચન કરતાં કોમના બાળક-
બાળકીઓને યોગ્ય તાલીમ લેવાની જરૂરીઆત
દેખાડી હતી. આશ્રમ માટે ટીકા ન કરતાં કાર્ય
કરવું જોઈએ. ગૃહઉદ્યોગ તથા રેંટીઆનું શિક્ષણ
વીગેરેની જરૂરીઆત સૂચવવામાં આવી હતી. ‘બાળ-
કોને સારાં કરવાં હોય તો માતાઓને કેળવણી
આપો.’ સંસારનો એક સાથી નબળો તો સંસાર નબળો
સ્ત્રી સુધરે તો ફાયદો. આશ્રમને મહોદાની સહાનુ-
ભૂતિ તે ખરી સહાનુભૂતિ નથી પણુ તન, મન,
અને ધનથી થવી જોઈએ, જમાનો બદલાયો છે.
સ્ત્રીઓને કેળવણીની જરૂર છે. દેશની સ્ત્રીઓ
જગૃત થઈ છે, સ્ત્રી-યુવક સંઘ સ્થપાયા છે
અને તે દારૂની દુકાન તથા વિદેશી કાપડની દુકાન
પર પીકેટીંગ કરી રહ્યાં છે. ત્યારપછી પ્રભાવતી-
બેને વિવેચન કરતાં કોમની સ્ત્રીઓને આશ્રમમાં
રાખેલા શીવવાના સંચાનો વધુ ને વધુ લાભ
લેવાની ભલામણ કરી હતી, ત્યારબાદ પ્રમુખશ્રીએ
નીચે મુજબ વિવેચન કર્યું હતું—

પ્રમુખશ્રીના ભાષણનો ટુંક સાર.

“ભાઈઓ, શ્રાવિકાશ્રમ પ્રત્યે કોમે પુરી ફરજ
અદા કરી નથી. સ્ત્રી અને પુરૂષ એક ગાડાનાં
બે પૈડાં છે. સ્ત્રીના સુધારા વિના સમાજની ઉન્નતિ
નથી. મારા સાંભળવામાં આવ્યું છે કે ઠપાને
લીધે આશ્રમની પ્રગતિને કંઈક કંઈક નુકશાન
પહોંચી રહ્યું છે. ભાઈઓ અને બહેનો, આશ્રમ
સોજીત્રામાં એટલે આપણને ઘેર બેઠે ગંગા છે;
એટલે જેટલો લાભ ન લઈએ તેટલો ઝોછો છે.
દમારા તરફ આનો લાભ મળતો નથી. આવા
આશ્રમને ફૂલ નહિ ને ફૂલની પાંખડી સમાન
બની શકે તે પ્રમાણે મદદ કરવી. આશ્રમને ખર્ચ
ઝોછો આવે તે માટે શ્રીમતી પ્રભાવતીબેને પ્રમો-
શન ફાલ જતું કરેલું છે તે પ્રશંસનીય છે.
આપણામાં નાતો થાય છે, લગ્નો થાય છે, વરાઓ
થાય છે, અને તેવી રીતે પૈસા વપરાય છે. પૈસા
વાપરવાનો ઠીક રસ્તો આવા આશ્રમને બનતી
મદદ કરવામાં છે. પોતાને ત્યાં લગ્ન, અગર ન્યાત-

વરાના પ્રસંગે આવા આશ્રમને પાંચ દશતી કમમાં કમ ભેટ કરવી એ આવશ્યક છે." ત્યારબાદ પ્રમુખશ્રીએ પોતાની પુત્રીના લગ્નની ખુશાલી બદલ આશ્રમને રૂ. ૨૧) એકત્રીસ ભેટ આપ્યા હતા. તથા અન્ય સદ્ગ્રહસ્થો તરફથી મેળાવડા પ્રસંગે લગ્નની ખુશાલીમાં તથા ચાલુ મદદ તરીકે આવેલી રકમો રૂ. ૧૫૩ આભાર સાથે સ્ત્રીકારવામાં આવી. ત્યારબાદ પ્રમુખશ્રીના હાથથી બાળાઓને ઇનામ વહેંચવામાં આવ્યાં હતાં. ઇનામ વહેંચાયા બાદ આશ્રમના મંત્રી તરફથી મેળાવડા પ્રસંગે પંચારાત્ર સદ્ગ્રહસ્થો તથા સનાતીઓનો આભાર માની બાળાઓ તરફથી અંત મગ્ન ગવાયા બાદ સભા વિસર્જન થઈ હતી.

મંત્રી-શા. રતીલાલ જગજીવનદાસ.



“સોજિત્રાનો લગ્નગાઠો.”

હંમેશના રિવાજ મુજબ ચાલુ સાથે મેવાડા બંધુઓ સોજિત્રા મુકામે ભેગા મળ્યા હતા. સમયને અનુસરીને આ વખતે વધુ માણસોએ હાજરી આપી નહોતી. કુલ લગ્નો આશરે ત્રીસ થયાં હતાં, જેમાં ફક્ત છ લગ્નો જૈન વિધિ અનુસાર કરાવવામાં આવ્યાં હતા. આ હજુ આપણી કેટલી અજ્ઞાનદશા સુચવે છે ? આખા દેશભરમાં ત્યારે ધર્મના નામે અસંખ્ય ભેગા અન્ય મતાવલંબીઓ તરફથી અપાય છે, અને દરેક વ્યક્તિ મરવાને માટે ધર્મના નામે આગળ આવે છે ત્યારે આપણી જ્ઞાતિમાં લગ્ન જેવી અત્યંત ઉપયોગી ક્રિયાઓ પણ હજુ ધાર્મિક વિધિ અનુસાર કરવામાં આવતી નથી, એ દિલગીરી ભરેલી વાત છે. આ ઠેકાણે કોઈ બંધુ પ્રશ્ન પૂછશે કે જૈન વિધિ અનુસાર લગ્નોની વિધિ કરાવનાર કોણ છે ? તો તે ભાઈને મ્હારે નિવેદન કરવાનું કે તેવી વિધિ અનુસાર લગ્નો કરાવનાર ઉત્સાહી બંધુઓ તો ઘણા મળી શકે છે, પરંતુ તેવા લગ્નો પોતાનાં બાળક આલિકા-

ઓનાં કરાવનાર કોઈ ઉત્સાહી અને ધર્મના અનુનવાળા ભાઈ મળતા મુશ્કેલ છે. ત્યારે આખો દેશ પ્રગતિને પંથે આગળ ધરી રહ્યો છે, ત્યારે હજુ આપણા મેવાડા બંધુઓ ધોર નિદ્રામાં પડી રહ્યા છે. આશા છે કે હવે પછીના લગ્નગાળામાં આ વખત કરતાં વધુ લગ્નો જૈન વિધિ અનુસાર કરાવવાનો ઉત્સાહ વધશે !

ચાલુ સાથે ત્રીસ લગ્નો થયાં, તેમાં કેટલાક બાળલગ્નો પણ થયાં હશે, પરંતુ આ માટે કોઈપણ ભાઈને દોષ દેવો અપ્રતિત ગણાય, કેમકે બાલ્ય વયમાંથી વિવાહો કરવામાં આવેલા તે વખતે ઉંમરનો ભેદ રાખવામાં આવેલો નહિ. તેથી તેજ બાળકાઓ પુખ્ત ઉંમરે આવવાથી તેમની સમાન વયના અથવા એક બે વર્ષ વધુ ઉંમરવાળા યુવકોને લગ્નોની ગ્રંથીમાં જોડાવું પડ્યું, પરંતુ ઘણીજ દીલગીરીની વાત એ છે કે આ વખતે કેટલાક વિવાદ નવા કરવામાં આવ્યા તેમાં પણ ઉંમરનો તફાવત કાયદા પ્રમાણે જેવો જોઈએ તેવો રાખવામાં આવેલ નથી. આણુંદ મુકામે આપણા જ્ઞાતિ પંથે ચાર વર્ષનો તફાવત રાખવાનો દરખાવ કરેલો તે કાયદાને પણ જ્ઞાતિ બંધુઓ માન આપતા નથી. આપણામાં કહેવત છે કે “જોતો સરદાર આંધળો હોય તેનું કારકર અવશ્ય કુવામાં પડે.” તે મુજબજ આપણી જ્ઞાતિના આગેવાનો અને કાયદા કરનારોઓ પોતેજ જો તે કાયદાઓનો ભંગ કરી રહ્યા હોય તો પછી બીજાઓને માટે શું કહેવાનું ? દરેક મેવાડા બંધુને મારી નષ્ટ વિનંતી છે કે તેઓ વિવાહની બાબતમાં ઉંમરનો તફાવત રાખી પોતાનાં બાળકોને સુખી કરવાની ઇચ્છા રાખશે !

આ વખતે ખીજી હર્ષની વાત એ બની કે જ્ઞાતિના કેટલાક ઉત્સાહી અન ખાંતલા યુવકોએ ભેગા મલી એક યુવક સંવંતી સ્થાપના કરી. તેનું નામ “શ્રી વીશામેવાડા દિ. જૈન યુવક સંઘ” રાખવામાં આવ્યું છે. તે સ્થાપના માટે મ્હારી ખાસ ઇચ્છા હતી તેમાં મને પ્રોત્સા-

હન મળ્યું તે માટે હું સર્વે જ્ઞાતિ બંધુઓનો અત્યંત આભારી છું. સદર સંઘમાં લગ્નગાળામાં લગભગ ૧૪૦ યુવકોએ સભાસદ તરીકે પોતાનાં નામ નોંધાવ્યાં છે, તેમાંથી ૨૧ સભાસદોની એક કારોબારી કમીટી ચુંટી કાઢવામાં આવી છે.

આ યુવક સંઘે પોતાની પ્રથમની સામાન્ય સભામાં કેટલાક સુધારાના ઠરાવો જેવા કે પરદેશી કાપડનો બહીષ્કાર, ૩૭ વર્ષની ઉંમરની નીચેના બંધુના આરમામાં ભાગ નહિ લેવાનું, રકવા કુટવાના રિવાજનો બહીષ્કાર, વિગેરે ઠરાવો કર્યાં છે તે મુળ્ય દરેક યુવક સભાસદને વર્તન કરવાની ફરજ છે. આશા છે કે સર્વે યુવક બંધુઓ તે મુળ્ય આદર્શો, અને જેઓ સભાસદ નહિ હોય તેઓને તે પ્રમાણે કરવાને અને સંઘના સભાસદોમાં પોતાનું નામ નોંધાવવાને પ્રેરશે. કારોબારી કમીટી હવે ઉંઘમાં નહિ ઉંઘતાં વખતસર એડેકો બેલાવી પોતાનું કાર્ય ચાલુ રાખશે, અને સંઘના સેક્રેટરી સાહેબ પણ પોતાના ધંધામાંથી થોડો કાઠાણ વખત કાઢી સંઘના કાર્યને આગળ ધપાવશે. મહારી પણ જિનેન્દ પ્રભુ પ્રત્યે પ્રાર્થના છે કે આ યુવક સંઘને ચિરસ્થાયી રાખે ! વધુમાં સેક્રેટરી સાહેબને એટલું જ નિવેદન કરવાનું કે સામાન્ય ઠરાવ થયા મુળ્ય જે જે બંધારણો તથા ઠરાવો પસાર કરવામાં આવ્યાં છે તે તે તથા સભાસદો તથા કારોબારી મંડળના સભાસદોનાં નામો, વિગેરેની યાદી પત્રિકા રૂપે સત્વર તેમના તરફથી પ્રગટ કરવામાં આવશે !

વૈશાખ સુદી ૧૪ના દિવસે આપણા સોશ્વત્રા આલિપ્તશ્રમનો દિવાળીકોત્સવ ઉજવવામાં આવ્યો હતો. તેમાં સંવાદો, ભાષણો વિગેરે થઇ આલિપ્તકોત્સવને ઈનામો વહેંચવામાં આવ્યાં હતાં. મેવાડા બંધુઓએ ઉત્સવ પ્રસંગે ટીક સંખ્યામાં લાજરી આપી હતી. ભાષણોમાં જ્ઞાતિની બહેનોના પરદેશી કાપડના મોડ માટે ખાસ ટીકા થઇ હતી.

ઉપરના બનાવો શિવાય બીજાં કંઈ ખાસ

કાર્ય બન્યું નહોતું. આ વર્ષે શ્રીયુત્ત બહારક સુરેન્દ્રકીર્તિજી તથા બીજા એક બ્રહ્મચારી મોતીલાલજી સોશ્વત્રામાં હતા. આશા છે કે મેવાડા ભાષણો યુવક સંઘને પોતાનાથી બનતી મદદ આપી તેને યોગ્ય સુધારા કરવા દમ જ્ઞાતિને ઉત્તરિના શિખરે ચઢાવવા પોતાના તન, મન, અને ધનથી મદદ કરવા ચૂકશે નહિ. અસ્તુ ।

જ્ઞાતિ સેવક.

રતિલાલ કેશવલાલ વડોદરા હાલ ભરૂચ.



મહાવીરની વિચાર-ઘોષણા

અને

આપણું કર્તવ્ય.

“માનવ હૃદયના ઉચ્ચ અભિજ્ઞાનો વડે દુનીયામાં પૂજાના અને મહાન ગણાતા મહાપુરુષોના વિચારિક આંદલતો વડે ઉત્પત્તિ પામેલા ધર્મ-મતોની તુલના કરતાં, વિદ્વતાં તમામ પ્રાણી પ્રત્યે ‘દયા અને ક્ષમા’ ની પવિત્ર ભાવના નિર્માણ પ્રવાહથી વિભુષિત કરનાર મનજ સર્વોપરી મનનીય અને વંદનીય થઇ શકે એ નિર્વિવાદજ છે.

મહાત્મા કાઈપટના વિચારો વિચારકતાં માત્ર મનુષ્ય જીવનની રક્ષા અને મનુષ્ય પ્રેમની પરિ-સીમા પ્રદિપ્ત થાય છે. વળી સ્વધર્મ સુસ્ત પેમંબરના પવિત્ર ફરમાનોનું પ્રતિપાદન કરતાં સ્વધર્મોંગે બ્રાતૃભાવ પ્રગટાવતી માનવ વ્યક્તિઓને જ ચહાવું એ સત્કાર્ય મનાવું પ્રત્યક્ષ થાય છે. તેમજ વિદ્વતા અન્ય ધર્મમતોનું નિરીક્ષણ કરતાં ‘દયા અને ક્ષમા’ ની પવિત્ર ભાવના કેવળ સંકુચાત ભાવે વિરમેલી જણાય છે. ન્યારે કર્મવીર શ્રી. મહાવીરના વિચારોની ઘોષણા કેવળ દયા અને ક્ષમામંજ તદ્વાકાર થયેલી આપણને જ્ઞાત થાય છે. તેઓશ્રીના પુનિત ને પ્રેમમય હૃદયમાંથી સમગ્ર સૃષ્ટિના જીવાત્માઓને શાન્તિ આપવા ‘દયા અને ક્ષમાની’ શીતકર ધારા

અવિદ્યુત પ્રવાહથી વહી રહી હતી. એમની જીવન દીક્ષા જીવન રક્ષામાં સમાએલી હતી. તેઓશ્રીના પ્રેમમય મનોરાજ્યના સામ્રાજ્યને દિગ્વિજય ક્ષમા વૈરવ્ય મૂષણ એ સુત્રમાંજ સમાએલો હતો. મતલબ કે શ્રી મહાવીર દયાનીજ મૂર્તિ હતા. એવા દયાળુ, માયાળુ, પવિત્ર, ક્ષમાધારી પ્રેમાળ, અને સર્વગુણ સંપન્ન મહા સમર્થ પિતાના આપણે પુત્રો કહેવાઈએ એ ખરેખર આપણા ભાગ્યનીજ સીમા છે. શ્રી વીર તુલ્ય તો થવું દૂર રહ્યું, પણ શ્રી વીર પ્રભુના પુત્ર તરીકે ઓળખાવું એ પણ આપણા મહાભાગ્યની વાત છે, અને તે મહાભાગ્ય આપણને પ્રાપ્ત થયું છે.

સકળ શાસ્ત્રમાં પારંગત સર્વગુણ સંપન્ન મહાવીરના જીવનની પ્રતિભા આત્મવત્ત સત્કમંત્રણ એ મહામંત્રનેજ અવલંબેલી છે. આપણે શ્રી વીરપ્રભુના પુત્રો હોવાથી તેની પવિત્ર ભાવના આપણામાં સર્વદા વલ્લાજ કરવી જોઈએ. અને તે વહે તેમાંજ આપણું કારણ છે. આપણે સર્વે અંધુઓ છીએ, એકજ પિતાના પુત્રો છીએ, બેદા-બેદની ઝેરીલી દવા આપણા નિવસોથી સજાને માટે દૂર થવી જોઈએ. સંપન્ના મધુરા સુખકર મહાગુણો આપણામાં પ્રવેશવા જોઈએ. અન્યોત્ય સહાય કરવાની વૃત્તિ સત્વર પ્રગટવી જોઈએ. વીર-પ્રભુના વિચારો સમાન આપણા વિચારો થવા જોઈએ. એમના પવિત્ર વર્તનની શુભ નકલ આપણે કરવી જોઈએ. સ્વધર્મ ઉપર આસ્થા, જીતેદ્રિય-પાણું, શાન્તિ, સંતોષ, મહાત્મા ઔદાર્ય, સત્ય, પ્રમાણિકપણું, દયા, પરીપકાર, ગુણગુણપણું એવા ઉચ્ચ મહાગુણો આપણામાં પ્રવેશવા જોઈએ, હાલની પ્રણાલી તરફ દ્રષ્ટિ કરતાં સંસારી સ્વાર્થ, સંશય, ભ્રમ, ભુલ, કપટ, અપ્રમાણિકપણું, અસં-તોષ, આશા, વૃષ્ટ્યા, સ્વાશ્રયનો વિચાર નહિ-બીજાનું સાફ ખમાય નહિ, સ્ત્રી વિષયમાં લજ્જતા, કામ ચોરી, વચન ચોરી, ધન ચોરી, એ દુગુણોની ઝાંખી થાય છે એ ખરેખર શોચનીય છે.

દીક્ષાગીરીની વાત એ છે, કે આપણે વીર

પ્રભુના મહાગુણોથી વિશ્લેષ થઈ, સ્વાર્થ અને એકલપેટા બની ગયા છીએ. નહિતો સાચ રીતે નિરીક્ષતાં પિતાની સંપત્તિમાં પિતાની સર્વ સંત-તીનો સરખો હિસ્સો છે, પિતાની સંપત્તિ પુત્રોના ઉદ્ધાર કાળે કામે લાગે એજ પિતાની મોટાઇ છે. અને પિતાની મોટાઇના પ્રભાવનો પ્રસાર કરવો એ પુત્રોનો ધર્મ છે તેઓ શ્રીએ સૃષ્ટિ વ્યવહાર આપણા હાથમાં સોંપેલો છે, તે નિર્મલ શુદ્ધ ભાવે ચલાવવો એ આપણું કર્તવ્ય છે. સમયના પરી-વર્તન સાથે વ્યવહારમાં પરીવર્તન થવું જાઇએ. કાર્યની દિશા સમયાધીન બનવી જોઈએ તદ્દપિ અમારી વર્તમાન દશા પ્રત્યે નિહાલતાં તેમાંનું લેશ પણ જણાવું નથી.

અર્વાચીન સમયમાં પિતાને નામે મંદિરની પેટીઓદારા પિતાના અમુક પુત્રોના હરતે ચાલતો ધર્મનો વ્યાપાર પ્રતિ વર્ષે લાખો રૂપીઆ નફો કરે છે. અને એવી રીતે એકડી કરેલી કરોડોની મિલકતો પ્રભુના ભંડારમાં દેવ દ્રવ્યની છાપ લઈને પડેલી છે. ત્યારે બિચારા રંક સેંકડો જીવાત્માઓ અન્ન વિના દુઃખી થતા દ્રષ્ટિપાત થાય છે. હજારો વીરપુત્રો ગરીબીનાં અસહ્ય દુઃખથી પીડિત થતા દુઃખી દરિદ્રીદેશમાં દ્રષ્ટિગોચર થાય છે. બિચારા ધરખાર વિનાના અનેક મનુષ્ય દેવો સંજોગોની પ્રતિકુળતાથી શિયાળા ઉનાળાની શીતોષ્ણતા પોતાના દુઃખી દેહ પર ઝીલે છે. આજે આપણા સેંકડો અંધુઓ પંદર કે વીસ રૂપીઆની નોકરીમાં પોતાની જાંઠગી અતિત કરે છે. સવારના છ થી રાતના બાર વાગ્યા પર્વત ધાંચીતા બળદની માફક વૈતર કરતા ધસડાયા કરે છે.

બાહુતી વીશાઓમાં હલકાં ખાણાં ખાવાં, ધર્મની ધર્મશાળાઓ, ઓળખીતાની પેટીઓ, કે મ્યુની-સીપાલીટીના જાહેર રસ્તા પર સુતું અને દેવ મંદિરોમાં નહાવું એ દશા આજ સેંકડો મનુષ્યો અનુભવે છે. બિચારા રંક લાચારો લગ્ન કે કુટુંબનું સુખ તો સ્વપ્ને પણ જોઈ શકતા નથી. ભારતવર્ષની ૩૩ કરોડની વસ્તીમાં તો ત્રણ

કરોડથી વધારે ભાગ તો કેવળ અન્ન વિનાજ દુઃખી થાય છે. ખીજી તરફ જોતાં ધણા ધર્મ-શ્રદ્ધાળુ ભાઈઓ જેની જરૂર નથી તેવાં કામમાં ફક્ત વાહવાહ કહેવડાવવાના લાભાર્થેજ હજારો રૂપીઆનું પાણી કરે છે. તેઓ નિરાશ્રીત બંધુઓ તરફ દ્રષ્ટિ પણ કરતા નથી. “જે અમીરી પ્રભુતા અગ્ર વસ્ત્ર વિના ટળવળતા લાઈ-ઓના કલ્યાણાર્થે કામ લાગતી નથી તે અમીરી શું કામની છે? નષ્ટ થજો તે પ્રભુતા જે રંક પામર પ્રાણીઓનાં કષ્ટ કાપવા માટે કામ આવતી નથી.” આજ દેવ મંદિરોમાં કરોડો રૂપીઆ સડે છે. અને તેજ પિતાના સેંકડો પુત્રો અન્ન વસ્ત્ર વિના ટળવળે છે.

આ વ્યવહાર-આ પૃથા દયાળુ પિતાના કાર્ય-વાહક પુત્રોથી ચાલે છે, એ નવાઈની વાત છે. પિતાની સંપત્તિમાં સરખા દિરસાવાળા પુત્રોમાં એકને ત્યાં લીલા લહેર ત્યારે ખીજા ભાઈને ત્યાં અન્નના પણ સાંસા. એક ભાઈ ગજસ્વાર ત્યારે ખીજા ભાઈને રસ્તે ચાલતાં પણ અડચણુ, એક લાખો રૂપીઆની સખાવતો કરે ત્યારે ખીજો ભાઈ લાખો હાથ કરીને તે લેછે. અરેરે ? ? ? કેટલી દીલગીરીની વાત, સમગ્રે કે કોઈ માણસનો જેષ્ઠ પુત્ર પિતાના નામથી ધધો કરી લાખો રૂપીઆ કમાય એ અરસામાં તેનો લઘુ બ્રાતા અવનતિની પરિસ્થિતિને માપતો હોય, તો શું તે વડીલ બંધુની ફરજ નથી, કે પોતાના લઘુ બંધુને પિતાની સંપત્તિમાંથી સહાય કરે ? અલ્પત સહાય કરવી એ તેની ફરજ છે. અને તેમ ન કરનાર ધિક્કારને પાત્ર છે. “જે પિતાનું કીમતી જીવન દુનીયાના લલા ખાતર કુરખાન હટું તે પિતાનાં નામની જે સંપત્તિ-રૂપીઆ તે દુનીયાના ખાતર કામ ન લાગે ? નહિ નહિ, એમ બનેજ કેમ ! દયાળુ પિતાની પ્રેમાળ આરા સર્વને સુખી કરવાની છે, એમની અંતર ઇચ્છા સર્વનું ભલું કરવું એજ છે. તે ઇચ્છાને આધિન થવું એ આપણી ફરજ છે.

ગરીબોનાં ગળાં રેંસનાર, રંકને માંકડાની માફક નચાવનાર શ્રીમંત મહારીઓ દેવ દ્રવ્યરૂપે મનાતી લાખો રૂપીઆની મિલકતો જેને જરૂર નથી તેવાં પરદેશી અને પરધર્મી ખાતામાં સાકા ત્રણથી ચાર ટકાનું વ્યાજ ઉપજવવા રોકે છે. તેવી રીતે એકત્ર કરેલી દેવ મંદિરોની હજારોની મિલકતો, કાચદાની મારામારી પાછળ ફના થાય છે. વીર પ્રભુના પુત્રોમાં વેર અને વિરોધ જગાડવામાં કામે લાગે છે, હજારોનું પાણી વરઘોડાઓ પાછળ થાય છે. અને સેંકડોનો ધુમાડો પર્વોના પ્રભાવ પ્રદિપ્તાર્થે થાય છે. પરંતુ નિરાધાર રંક પ્રાણીઓના ઉદ્ધારાર્થે, કેળવણી પ્રચારાર્થે, સમાજ સુધારણાર્થે તેમજ સત્ય ધર્મના પાલનાર્થે એક પાઈ પણ પર-ચવામાં આવતી નથી, તેવે વખતે તો તેને દેવદ્રવ્યની છાપ મારી અલગ રાખવામાં આવે છે, આથી સ્પષ્ટ જણાય છે, કે જૈન સમાજ સત્યથી કેટલી વિમુખ છે.

કદિ જો જૈન મંદિરોની લાખો બંકડે કરો-ડોની મિલકતોથી એક જૈન એક સ્થાપવામાં આવે તો જૈન સમાજની વ્યાપારિક ઉન્નતિ કેટલી સરસ અને સુંદર થાય ? કોઈપણ દેશ કે સમાજની ઉન્નતિનું મૂળ સ્થાન તપાસીશું તો આપણને સ્પષ્ટ જણાશે, કે વ્યાપારિક ઉન્નતિ થતાંજ તેઓની ઉન્નતિનું આરોહણ થયું છે. આપણા પ્રતાપી રાજકર્તા અંગ્રેજો અને કાર્યકુશળ જાપાનેસાં દ્રષ્ટાંતો આપણી આંખો આગળ તરવરી રહ્યાં છે; છતાં આપણે જોવાની તસ્દી ન લેતાં લાખોની મિલકતો પ્રતિ વર્ષે વિદેશી બેંકને બેટ ધરાવીએ છીએ, એ શું સુચવે છે ?

કોઈપણ દેશની ચડતી પડતીનો આધાર તેના નેતાઓ ઉપર રહેલો છે. નેતાઓ સમાજને ન્યાં દોરવા માગે ત્યાં દોરી શકે છે. સમાજ દોરવાનું કામ શ્રીમંતો કરતાં જૈન મુની મહારાજો ઉપર વધારે મજબુતી ધરાવે છે. જે કાર્ય પચીસ ધનવાનો, કે દસઆર વક્તાઓ હાલ કરી શકતા નથી તે કાર્ય આપણા મુનિમહાદાઓ ધારે તો ન ધારેલા સમયમાં સાધી શકે.

હું તો આપની આગળ એટલે સુધી કહેવાના હિંમત ધરાવું છું, કે આપણે આપણી ઉન્નતિનો ઉદય ત્યારેજ જોઈશું, કે જ્યારે દેવ મંદિરોની કરોડોની મિલકતો કેળવણીનો પ્રચાર કરવાના કામે લાગશે. જેન સાધુઓ પ્રત નિયમ આપવાના કાર્યથી વિશ્લેષ થઈ સમાજની કોન્ટ્રોલમાં ભાગ લેશે, સમાજમાં વિદ્યા, વીર્ય અને એક્ય વધારવા પ્રયાસ કરશે તેમજ ગચ્છગચ્છના મતમતાંતરોના ભેદ બાવોને તોડી જેન જાળકોમાં એક્ય પેદા કરશે, અને એથી પણ આગળ જ્યારે મંદિરો હાઈસ્કૂલો અને કોલેજો થશે અને તેના અપણા જેન ત્યાગીઓ શિક્ષકો અને પ્રોફેસરો તરીકે કામ કરશે ત્યારેજ જેન સમાજ ઉન્નતિનો ઉદય જોશે.' શાન્તિ ? શાન્તિ ? ? શાન્તિ ? ?

જમાઈ કે જમદૂત ?

(લે:-ચંદુલાલ પીતાંબરદાસ શાહ-અહેર)

મહીકાંઠા એજન્સીમાં મોરાર પટેલ નામે એક ગરીબ ખેડૂત રહેતો હતો. વાતક નદીના એક રમ્ય તટ ઉપર પટેલની પાચેક વિંધા જમીન હતી, જે ઉપર પટેલના આખાય કુટુંબનો નિવાસ થતો. પટેલને એક ત્રિભોવન નામક પુત્ર હતો જેણે નજીકના ગામમાં આવેલ એક સરકારી ગુજરાતી શાળામાં સાત ધોરણ સુધી વિદ્યાભ્યાસ કર્યો હતો. મોરાર પટેલ પાસે વડિલોપાર્જિત અન્ય માલમિલકત નહીં હોવાથી, જમીન એજ તેમનું સર્વસ્વ હતું. આજ ગામમાં અતિ ધનાઢય એવા એક શેઠ વસતા હતા; તેમના વૈભવમાં સંતતિના અભાવે થોડીક ન્યુતતા રહી ગઈ હતી. ધર્મિય કૃપાએ પચાસ વર્ષની પાકી વયે શેઠને ઘેર પુત્ર અવતર્યો, એટલે પ્રભુ ભક્તિ કરવાનું કૌરે મૂકી "મારકણો સાંઠ જોમાસુ મ્હાલે" ના જેવું કંઈક શેઠને વિષે થયું.

નદિના રમ્ય તટે આવેલી મોરાર પટેલની જમીન થોડીક હોવા છતાં મકાન બાંધવાના કામમાં ધણીજ સગવડમય હતી, એટલે જો જમીન ઉપર શેઠની આંખ ઠરી. એક દિવસે પટેલને ઘેર ખોલાવી શેઠે જમીનની યોગ્ય હિંમતે માંગણી કરી. વાન સાંભળતાજ પટેલના આંતરડાંમાં તેલ રેડાયું. આપદાદાના વખતની એ જમીન સોના સાટે પણ વેચવી પટેલને ન પરવડે એ વાત સહેજે સમગ્રય તેમ છે, પરંતુ શેઠને તો ગમે તે ઉપાયે એ જમીન પડાવવી હતી, એટલે એકી સાથે શામ, દામ, દંડ અને બેદના સામટા પ્રયોગો ખેડૂતને દયાવવા કરી નાખ્યા. છતાંય જ્યારે પટેલ મક્કમ રહ્યા, ત્યારે શેઠે સરકારી માણસો મોકલાવી નજીવી હિંમતે જમીન ખરીદી લીધી. જમીન જતાં પટેલની સ્થિતિ કકોડી થઈ ગઈ, અને શેઠને માથે શાપની વર્ષો વરસવા લાગી. ત્રીજેજ દિવસે પટેલની જમીનમાં શેઠની હવેલીને પાયો નાંખાયો, અને એ મકાનના મુહૂર્તના દિવસથીજ શેઠની પડવતીનો પણ પાયો રચાયો. મોરાર પટેલ વહાણું ન વાય અને ખેતર તરફ જાય, ખેતરનાં નષ્ટ પ્રષ્ટ અવશેષો નિહાળી તેમની આંખમાંથી શ્રાવણુ ભાદરવાની વૃષ્ટિ સમી અશ્રુ-ધારા વહે. આમ કેટલાંક વર્ષો વહી ગયાં; દુઃખ અને વખાના માર્યા પટેલ દેવલોક પામ્યા, અને અન્નનાય વાંધા એવા સંકટના સમયે સંસારની અધાર્ય ધૂંસરી અનુભવવિહોણા ત્રિભોવન ઉપર આવી પડી. આજીવિકાનો નોકરી સિવાય અન્ય કોઈ માર્ગ નહીં હોવાથી ત્રીભોવન પોતાની પત્નિ, તથા રતન નામક દીકરી સહીત અમદાવાદ આવ્યેક અહીં તેના ગામના કોઈ ભલા વણિક પુત્રની સ્હાયથી એક મીલમાં મહીનાના પચીસ રૂપીઆના પગારે નોકરી રહ્યા.

(૨)

અમદાવાદ આવ્યા પછી એક બનાવથી ત્રિભોવનનો લાગ્ય સિતારો અમકયો. સાષ્ટમતી તટે આવેલા બંજલામાં સૂતા ત્રિભોવનના શેઠનો

એક દિવસ અચાનક ડો શત્રુ હાથે ધાત થતો ત્રિભોવને અટકાવ્યો. શેઠની છ'હંગી જોખમમાંથી બચી, અને આ અનહદ ઉપકારની કદર કરી શેઠ તેને રૂપીઆ પચાસનો પગાર કરી આપ્યો. જેમ જેમ કાળ માર્ગ પ્રતિક્ષા કરતો ગયો તેમ તેમ શેઠની તેની પ્રત્યેની મહેરમાં અભિવ્રદ્ધિ થતી ગઈ. અને ત્રિભોવન શેઠની અનેક અંગત ખાનગી ખાખતોનો જાણકાર થયો. ત્રિભોવનની પુત્રી રતન આ સમયે કન્યાશાળામાં ગુજરાતી શ્રીજ્ઞ ધોરણમાં ભણતી હતી. શેઠને જ્ઞેની તરફ ઘણાજ રસ હોતો, અને ડોક સમયે તો તેને જન્મવાને પણ પોતાને ધરે પોતાવતા અને આતો જો અને ખાવાનું લવા આપતા.

(૪)

એક દિવસ સાયંકાળે અસ્વસ્થ ચિત્તને સ્વસ્થ કરવાને મોરાર પટેલ 'એલીસબિજ' તરફ વાયુસેવનાર્યે જતા હતા. માર્ગમાંજ 'વિક્ટોરિયા ગાર્ડન' આવેલ હોવાથી શહસાજ તે તરફ વળ્યા. વાટિકાની મધ્યમાં પટેલા બાંકડા નજીક આવતાં અચાનક એક મિત્રનો ભેટો થયો. ઉભય મિત્રતાની પવિત્ર સાંકળથી સંગઠિત થએલ હતા. ત્રિભોવને તેને દિલનો વત કહી, અને મિત્રે એક ખી. એ, માં અભ્યાસ કરતા પેતાના એળખાતા યુવાનને રતનને લાયક મ વિચનું મચન કીધું. ઉભયે એમ ઠરાવ્યું કે તેઓએ ખીજે દીવને મંત્રણાર્થે ત્રિભોવનને ત્યા મળવું, અને વેવીશાળા નક્કી કરવા.

(૩)

રતન આર ધોરણ પૂરું કરી ગઈ એટલે ત્રિભોવન પટેલને વિચાર તેનો અભ્યાસ અંધ કરાવવનો હતો. રતને આ વાત પોતાનીજ સાથે ભણતી શેઠની પુત્રીને કહી હતી તેજે તે વાત પોતાના પિતાને મળી અને રતનને પોતાની સાથે અંગ્રેજી ભણવા આવવા તું પટેલને કહેવાને પિતાને આજીજ કરી. એક દિવસ ત્રિભોવન પટેલ શેઠને અંગલે ગયા. ત્યારે શેઠ રતનના વત કહી બજેલી ગઢેલી પુત્રને ચોખ્ખ વર નહીં મળે એવી ભાવિથી પટેલ રતનને અંગ્રેજી ભણાવવાની ના કહી. શેઠ પટેલને સમજાવ્યું કે પટેલા તો વિદ્યાભ્યાસમાં ઘણાજ આગળ વધ્યા છે, એટલે વગનો ચિંતા નહીં કરતા. અશીથી રતનને ભણવા મોકલે. ભણતરનું સુધર્મું ખરચ વૂજ પડે પારીશ. મરજી નહોતી છતામ, શેઠના આગ્રહથી રતનનો અભ્યાસ આજી રાખવાનું કરી પટેલ ધેર ગયા. પંદર વર્સની યુવાવયે પટેલાજ રતને છઠ્ઠા ધોરણમાં પ્રવેશ કર્યો. છોકરી યોવન કાળમાં પ્રવેગી વૃદ્ધેલી હોવાથી તેના લગનાં ચિંતા પટેલને થવા લાગી. વરની શોધમાં ને શોધમાં એક વરસ ચિતી ગયું, અને તે દરમિયાન રતને મેટ્રીકની પરિક્ષા પણ પસાર કીધી તથે પટેલને તાલાવેલી થવા લાગી, અને અદર્શિશ પુત્રીના વિચારમાજ રહેવા લાગ્યા.

શરૂઆત પ્રમણે પુરૂષોત્તમ પટેલ રસિકલાલને લઈ ખીજે દીવને સંધ્યાકાળે જાગર થયો. યુવાન જી સ્વતંત્ર્યને પ્રિમાયતી હતો, તથા આંચોને મળે ઉચ્ચ માન ધરાવતો હતો, એ વાત પુરૂષોત્તમથી અનબી નેતી રસિકલાલને તેતાં જોનારનો તેના વિષે ઉચ્ચ આભપ્રાય અધાતો, અને આતુંજ કંઈ ત્રિભોવનની ખાખતમાં બન્યું. આવો ભણેલો મરનારેલા મળે તો ખરજી સુખો થશે એમ ખેલે જનુ મતાવા લાગ્યા. સંકેત પ્રમણે પુરૂષોત્તમે રસિકને રતનના નર્શન કરાવ્યા અને ધીમે રહીને વિવાહની વાત ઉપાટી. રસિકલાલે કહ્યું, 'વિવહ કરવો એ મારા હાથમાં નથી, ત્દમે કરવન છે તો મારા માતૃશ્રીને તેડવું.' ત્રિભોવને વાત કહ્યુલ કીધી અને ત્રિભોવને રસિકલાલ પોતાની માત. માથે ફરી ત્યા આવ્યા. વિવાહની વત કહી એટલે રસિકની મા પાલા, " જુઓ ભઈ મ્દારે, પુત્ર ભણવા તેમજ [દ. ૧૦૦] અને આપણી ન્યાતમાં આવા નર્શનઆ કંઈ સમને કરી મુક્યા છે જે કંઈ દરવ્યા વિતા વિવાહ કરીએ. ત્દમાર્ગ દીકરને મ્દારા દેવકુમાર જેવા પુત્રરાવ સાથે પરજીવવી તૈય તો રૂપીઆ પણ હજાર જંઈએ. શક્તિ હોય તો વાત કરવે, નહાંતર એટલેથીજ વાતને દાખી રેવે " સુધરેલા

પુત્રોની માતાઓ પણ આવી હશે એ વાત તો ત્રિભોવને આજે જાણી. પોતાની પાસે ફક્ત એક હજાર રૂપિયા જ હતા, અને છતાંય કોઈ પણ ઉપાયે કેળવાયલા વર સાથેજ રતનને લગભગ યોજવાનો પટેલનો વિચાર હતો. એટલે કેટલીક વાટઘાટ અને રકઝકને અંતે રૂપિયા બે હજાર આપવાનાં કરાવી વેવિશાળ નક્કી કર્યો, અને વિવાહની વેદી ઉપર નિર્દોશ બાળા હોમાઇ.

(૫)

દિવાળીની રાત્રીઓમાં રસિકલાલ અને રતનનાં લગ્ન થઇ ગયાં. વિવાહ અથવા વર વિક્રમના દરાવેલ રૂપિયા દયાળુ શેઠ પાસેથી ઉછીના આણી, રસિકની માને અર્પણ કરી, જન વગાવી. પંચાનું પાણી થયા સાટે પુત્રી સુખમાં પડી એ વિચારે ત્રિભોવન પટેલનું મન પ્રસન્નતા પામ્યું. જમાઇ કેળવાયેલ હોવાથી, કપાતર માતાની જહાંગીરી શાસનનીતિનો કેક સમયે પણ ખંસ થશે, અને દીકરી સુખના દિવસો જોશે એમ તે ધારતા અહીં, રસિકલાલ ઘરે આવ્યા પછી મુખાઇ પોતાના અભ્યાસાર્થે જવાનો હતો, કારણકે એમ. એ. નો કલાસ શરૂ થઇ ગયો હતો. વસ્તુસ્થિતિ આવી હોવાથી પૈસાની જરૂર હતી, પરંતુ તેની સ્થિતિ ગરીબ હોવાથી હાલ ટુરત તો રૂ. પાંચસો હસોની રકમ મેળવવી એ મુશ્કેલીની વાત હતી. કિન્તુ આનો તોડ તેની જમાનાને ઘોષને પીગએલ માતાને લાવવા એ રહેજ વાત હતી. તેણે રસિકને આટલી રકમ સસરા પાસે કઢાવવાને બંબેર્યો, અને બહેવારે જ્ઞાન તથા અક્ષયના ખારદાન રસિકે ત્રિભોવન ઉપર રૂ. ૬૦૦) મોકલવાને પત્ર પાઠવ્યો!

પટેલના હસ્તમાં પત્ર આવતાંજ તેમના હાલ બેહાલ થઇ ગયા. સ્વાર્થતાની પરાકાષ્ટાએ પહોંચેલ કૃતઘની જમાઇ ઉપર તીરસ્કાર છૂટ્યો, છતાંય પુત્રીના હિતાર્થે આ કામ કરવાની તેને ફરજ પડી. રતનના વેવિશાળ અને લગ્ન પ્રસંગે થએલ ખરચને પરિણામે પટેલને લગભગ રૂ. ૪૦૦૦) ની કાણુ ઊડી હતી. એટલે આટલી મોટી રકમ મેળવતાં પટેલના આંતરડાં ઉંચાં થઇ ગયાં. શેઠ સિવાય અન્ય કોઇ તહેનો આધાર નહીં હોવાથી, પત્ર લઇ અગુજીની આંખે તે તેમની

પાસે ગયા. કમાલીન અને સ્વામી અંધ રસિકલાલની આપખૂદી વર્તણૂક તરફ શેઠને પણ રીસ તો ભારી ચઢી કિન્તુ પટેલની વિનવણીથી રૂ. ૬૦૦) ગણી આપ્યા, બાકી આ વખતે તો શેઠ નહીં રસિકલાલને સ્વાદ ચખાડતે.

(૬)

કલહાર હાથમાં આવતાં વેંતજ રસિક મુંબા-પુરી ઉપડયો. એમ. એ. ની પરિક્ષા પાસ કરી અને નડિયાદની નિશાળનો હેડમાસ્તર તરીકે નિમાયો. નાગરવાડામાં એક ઘર ભાડે રાખી માતા તથા પત્નિ સાથે મૃદસંસાર શરૂ કરી. દવે સાસુની દમનનીતિ શરૂ થઇ. ડમલે અંબે પગલે ડોસી રતનનો વાંક કાઢવા કરતી. ફરજી અને ભૂખકે શીમતિના મુખમાંથી ગાલિકાની આવણુ બાદરવા સમી અતિ વૃષ્ટિ થવા લાગી. "તને આ નથી આવડતું અને ગાલ્યું નથી આવડતું; વૃદ્ધો આખેલ દહાડો ચોપડો લઇને ચોટી રહે છે. કેડ તો નમાવતીજ નથી." વગેરેની પુષ્પાંબલિ પ્રતિદિન અર્થે.

આમ રામયણુ અને મહાભારતની રમતોમાં રતનનું શરીર સુકઈ જઈ તેણું જીવન શુષ્ક અને નિરસ થઇ ગયું. બિચારીને પતિ તરફથીય ક્યાંય વતકિંચિત સુખ હતું તો પણ ડોકરીતુંજ ઉપજાણું લેતો, અને તે પાપણીની રીખામણે ચઢી સુશીલ અને શાન્ત સ્વભાવની રતનને નિર્દય માર મારતો, ખરેજ આ વિસમી સહીલા જમાઇ અને સાસુનાં કરપીણ તાંડવ નૃત્ય હતાં.

પતિપરાયણા રતન મુંબે મોઢે માર સહી લેતી. અને આત્મ શરીરે ગુજરતા આવા સીતમ-ગાર જૂઝમનો કોઈની સમીપ ઉચ્ચાર કે ઉલ્લેખ સરખોય કરતી નહીં, રતનને સંતાપવામાં રસિકની માવાનો એક ગુપ્ત આશય હતો. તે પોતાના પુત્રને કુલીન કુટુંબની કોઇ અન્ય કન્યા સાથે પરણાવી, તે માર્ગે બીજા બે ચાર હજારની ધાપ મારવા ઇચ્છતી હતી, કાળ ચક્રની ગતિ વધતાં આ વાત રતનનાં સમજવામાં આવી ગઇ, અને પોતાને સંતાપવાનું કારણુ પણ એજ હોવું જોઇએ એમ તેને સ્પષ્ટ સમજાયું. પિતાને પત્ર લખવાને મન થયું કિન્તુ પતિભક્તિએ વિલેપ નાખ્યો.

અને બીજી બાજુએ ત્રિભોવનને પણ દીકરી

तरही जे त्वा मासना हांवा समयथी पत्र नही आववाथी चिंता थवा लागी, समाचारनी आकांक्षे ते काण व्यतित करवा हांग्यो.

अही रतन जेकवार अयानक याह पत्नी सासुने आपती हती. तेवाभां अयानक रानां प्यासुं छटकी गयुं, अने डोसीना हाथ उपर पडुं डोसी थोडक हाजवां पणु पुरा; अने आ डोसी डोसीअे न लप्याय अने वंचाय जेवी गालोनी वष्टि रतन उपर वर्षावीं, मातुश्रीने हाजवाथी थती असव्य वेदना अवणु सभा पितृभक्त रसिकथी नहीं सहेवातां, तेजे रतनने लता प्रहर अने हस्तथी पृथ प्जापरी करी. अग्निजवाणामा पूत होमवातुं नजे जाकी रहुं होय तेम अपुरामा पुइ भांयारीने गुद प्हार धेकी मधी ते जेअं सुधी के रात्रीअे रतनने जूजे तरपे पीडाअे जोडवा उपर जे पडोशमां रतेना जेक भाधजे जेन जाअे जे जेवन न अर्थुं होत ते सुतुं पडत.

(७)

आम दुःखमां जेक जे दिवस नव्या छतय रसिक के तनी म. डोळने रतननी द्या पणु न आवी. आ कूरता पांडोश्रीथी देधी न नवाथी तेजे दुःख-सागरमां जपती जाणाने अयावी धर लक्ष नव. तेना पिताने पत्र लप्यो. त्रिजोवन पत्र वाचतांअे मरिंत अर्थ गंवा, अने कण पणतांअे सुअ दुःखना लागीय. शैश पाजे गये शैश जेअे जेनुं सर्वाथ वतुं जेअे कडेवांमां काअे अतिशयोक्ति नही गणाय. अहे पत्र वाच्ये, अने अत्यंत क्रोध अदयोः पडेलने दिवासे आ. जेअे अने निर्दय रसिक तथ. तेनी कपातर भातान आ वपते ते अराअर अयर लक्ष नांअयाने शैश निश्रय ज्यो, परंतु पडेल तेम करवानां ना पायी. त्याथी विदाय थळ पडेल साडाअर वगे डिपडती लोडल ट्रेनमा नाड्याअे आव्या. रसिक-लावने धरं गया. रतन नीचिअे सूती हती. पिताने देआ. देअतांअे डोटे वणगी पडी, अने धुसके धुसके नयन आलमांथी साधार अश्रु पदन करवा लागी. भरितजे हाथ हेरवी, शान्तवन्-ज्या

सिंचन करी, त्रिजोवन पडेल उपर गया. न छुटके नजे जेवतुं पडतुं होय तेम डोसी 'आरो' जेअ वधां. पाणी पीना पडेल जेहा जेवाभां रसिकलाल पणु आवी पडोअ्यो. श्रीमान पणु शिण्डाअरनी वशीकरणु विधाने वश अजेल होवाथी ससरा साथे थोटोअे समय वार्तालापमां चिंताअ्यो. वागु करी सधणां निद्राधिन थयां. प्रातःकाणे नास्तो लीधा पधी पडेले रतनने पिअर मोकलवा तेनी सासुने कथुं. जेटले श्रीमतीअे कथुं: 'जे तमारी दीकरी रही, ज्मां आपणुं कथुं याजे छे जे हा ना कहीअे.

"दीक तमारे जे कडेव होय ते करो. आकी मारी रतन जेवी न होय." जेअ कही त्रिजोवने रतनने तैयार थता कथुं. रतन तैयार थअ. जेटले पडेल पुत्रीने लक्ष अमनावाह आव्या. रतन पास धरेणु नहेतां. इतर डोसीअे कयारनांअे ते छीनवी लीधां हता. अने पडेल? अरे, ते पणु रावसाडेअे रसिकलावे वेडरी नांअ्युं हतुं, जेटले रतनने सधणे. आधाअर पिता उपरअे हतो. धीरे धीरे त्रिजोवने आ वात सांअणी. अने हृदयमा वळ सगे बा थरो. अने न्यारे तेजे सांअल्युं के रसिकलावे पीणवरनी उपाधी धारणु करी, रतननां अथ अगारयो छे, त्यारे तो ते नातर जाणकनी माअेक रही पडयो. अने आ अमलकादी यातर निअ आवातथी जाणकप्रेमी अने वत्सल्यमय पिता मृत्युशरणु थयो.

त्रिजोवननां मरुथी कुटुंबी जेनोनां रिचति अति करवाअनक थर्ष गही. रतनने 'उपर आल अने नाये धरतां सिवाय अन्य आधर न रथो. जियारी अत्यंत पीडावा लागी अने रसिकसालना कर नअरानो जाय थर्ष पडी.

(८)

सासु अने पतिथी त्यजयची रतन लहेना आपुना शैठनी महथी जेक अन्यासाणानी मुअ्य शिक्षिका तरीके नीमाअ. आम त्यजयची तरुथीअे अवशेष जवन समाज अने ज्योथीनी जेवाभां संबम नियमनां शिक्षणु अणुतां अने अणुवतां गाल्युं.

"जेनविजय" प्रिंटिंग प्रेस, खपाटिया चकलासूरतमे मूलचन्द्र किसनदास कापडियाने मुद्रित किया
 और "दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्द्रावाडी सूरतसे उद्देशे ही प्रकृत किया।



विज्ञान-जन

सम्पादक:-मूलचन्द्र किसनदास कापड़िया-मृत।

विषयानुक्रमणिका.

नं०	विषय.	पृष्ठ.
१	सम्पादकीय-चातुर्मास, मुनियोंके प्रति, त्यागियोंसे, गृहस्थोंमे	३०३
२-३	जैन समाचारवलि, भग्ने हैं	३०५-१०
४	नैसर्गिक प्रेम भक्ति और जैनधर्म	३११
५	देशकी परिस्थिति और जैनसमाज	३१२
६-७	शिक्षा कैसी हो ? युवकोंके प्रति	३२२, २१
८-९	आपणी स्त्री (२) पुरकगंडजो	३२७, ३०
१०-११	आगेग्यनामो मार्गो अनुभव, भक्ति	३३१-२३
१२-१३	आत्मिक प्रेम, कर्मकी कदापी	३३४
१४	चूनाकी उपयोगिता. मुखपृष्ठ

१५ २३०
अंक ८

वी० ए० १०५६
उद्योग.

उपहारग्रन्थकी वी० पी० होगी।

इस वर्षके दो उपहार प्र०-नवरत्न और हिन्दी जैन विवाहविधि तबे पुराने मनी साहकोहो उगहारी व री० ए० पोटेन सहित (२) को १०५० से ८-१० दिनेमे क्रमशः भेजना प्रारम्भ होमा। आशा है कि हरएक पढ़के वी० पी० मिलते ही खुदा लखेगे। प्रकाशक।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।०० विशेषांक मूल्य ॥१॥

दो और अपूर्व चित्र ।

समोशरणकी रचना ।

यह त्रिरंगा चित्र १०×१९ साइजमें इतना मनोहर और भावपूर्वक रचा गया है कि देखते ही आपका मन प्रसन्न हो जावेगा । इसमें भिन्न भिन्न बारह सभायें बनाई गई हैं । जिनमें मुनिशाम, कहरवासी देवियां, अजिका, ज्योतिषी, अन्तर, भवनवासी देवियां, भवनवासी व्यंतर, ज्योतिषी तथा कहरवासी देव और मनुष्य तथा विधियोंकी स्पष्ट रचना की गई है । इसके बाद आठ मुनियां बनाई गई हैं । जिनमें त्रिनेत्र मंदिर, स्वातिका, फूलवाड़ी, तरवन, स्वप्नापंक्ति, कल्पवृक्ष, तप मंदिर और बारह सभाओंकी रचना अनेक रंगोंमें की गई है । मानसस्योकी वनावट बहुत ही उत्तम है । उसमें प्रतिमाजी बनाकर उसपर भगवानका अनुपम चित्र अथा वतलाया गया है । भगवानके ऊपर तीन कल्प अत्यन्त शोभनिक बनाये गये हैं । इस इस चित्रका वर्णन नहीं कर सके । आप स्वयं मंगाकर देखिये । इससे मंदिर और मसानोंकी शोभा बढ़ेगी तथा समवशरणका पूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा । मुख्य मंत्र ॥)

स्वदेशी व पवित्र काश्मीरी केशर ।

मात्र घटाकर १॥) टोकरा का दिया है । निम्न-
वर्ती केशरका उपयोग मत करिये । और पक्षी सुब
स्वदेशी काश्मीरी केशर ही हमारे यहाँसे मंगाइये ।
बशांमधुप २॥) रत्नल । अगारवली १॥) रत्नल ।
मैनेजर, विमम्बर जैन पुस्तकालय-सुरत ।

श्री बाहुबलिस्वामी ।

यह चित्र २०×१९ साइजमें अपने ढंगका निराका है । प्रथम इंद्रगिरि पर्वतकी प्राकृतिक रचना गई है । उसके नीचे जिनमंदिर तथा बगलमें श्रवणबेहगोला शहरकी रचना है । ताबावका दृश्य तो अतीव मन मोहक है । पहाड़के ऊपर मंदिरोंका चारोंओर दर्शन कराया गया है और बीचमें अति सौम्य मुर्ति श्री-बाहुबलिस्वामी (गोमटस्वामी)का बड़ा चित्र अत्यन्त शान्तिदायक बनाया गया है । (सू० ॥)

और भी १० प्रकारके आदिके रंगीन व १९ प्रकारके एक जानेवाले सादे चित्र भी मंगाइए ।

नवीन ग्रन्थ-

समवशरणपाठ सचित्र ।

वह्यवारी भगवानसागर कृत यह एक अपूर्व ग्रन्थ अभी प्रगट किया गया है । इसमें समवशरण सम्बंधी २१ उत्तमोत्तम चित्र दिये गये हैं । साइज ही आचार्य शक्तिपातरजी व मुनि श्री शक्ति-सागरजी कृणी तथा ॥० भगवानसागरजीके भी चित्र हैं । उत्तमोत्तम छंदोंमें अष्टोत्तर शत नाम, चौपठ ऋद्धियां, पंडित पुजारी आदिके अक्षर हैं । बरह सभाओं, दुस्माकाक आदिका वर्णन करके पूज में दी गई हैं । ग्रन्थ सखिल है । (१० संख्या १२१ और करीब २९ चित्रोंके होते हुये भी मुख्य मात्र ॥॥) रखा गया है । आकार बड़ा व टाईप भी बढ़े हैं ।

सिद्धेश्वरपूजासंग्रह ।

सभी सिद्धेश्वर व अतिशयशेनकी पूजाएँ मू. १।
मैनेजर, दिगम्बर जैन पुस्तकालय-सुरत ।

दिगम्बर जैन

नाना कलाभिविधिंश्च तत्त्वं: सन्योपदेशस्मृगवेपणाभिः ।
संबोधयन्पत्रमिदं प्रवर्त्तनात्. दिगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वां

वीर सम्बत् २४५६, ज्येष्ठ, विक्रम सम्बत् १९८६.

अंक ८.

सम्पादकीय-वक्तव्य

जब चातुर्मास प्रारम्भ होगया है, पर्येक जैन
माधु गमनागमनकी प्रवृ
चातुर्मास । तिथी रोककर एक स्थान
पर आत्मस्थान करने हैं।

ब्रह्मचारी, त्यागी भी यथाशक्ति एक जगह रह-
कर ज्ञान एवं चाग्निही वृद्धिगत क्रिया करने
हैं। अनेकोंमें भी चातुर्मासके समय अनेक
माधु एक स्थानपर ही निवास किया
करते हैं। ज्ञान कल वषों होनेके कारण
जीव अन्तुओंकी विशेष उत्पत्ति होजाती है,
वही गमनागमन परिश्रमका एक मुख्य कारण
है। साथमें और भी अनेक कारण पाये जाते
हैं। जाने जानेमें कादव-कीचड़की बाध होना
है, शक्ति स्वाध्याय नहीं हो सकत, संपन्न-
पाकन और आत्मस्थान भी नहीं किया जासकत ;
जब कि एक स्थानपर रहकर यह सब बाधक
कारण नहीं रहते।

यदि सब पूछा जावे तो क्या मुनि और
क्या आर्यक, सभीके लिये लाभ लेनेका यह अनुर्व
जबसर प्राप्त होता है। गृहस्थ इस समय क्या-

पार, व्यवसाय, विवाह, शादी और तमाम संस-
टोंसे निवृत्त होजाते हैं। इधर संप्रुतमासम
होता है। ऐसे समयमें बहुत कुछ कार्य किया
जासकता है। दुःख तो इस बातका है कि ऐसे
अपूर्व समयका हम बाजार उपयोग करना नहीं
जानते, बर्बाद करने ही नहीं। हमी चातुर्मासमें
अनेक धार्मिक त्यौहार आते हैं, रक्षाबंधन आता
है, अर्चण जैन महापर्व इसी समय होता है।
कहनेका तात्पर्य यह है कि जनाम वातावरण हमारे
अनुकूल होजाता है। अगर हमने पर भी हम
इसका लाभ न लेसके तो दुर्भाग्य मानना चाहिये।

* * *

सौभाग्यसे वर्तमानमें मुनियोंका समागम हुआ
है। जहाँर उनका चातु-
मुनिराजोंके प्रति। और तथा ही वहाँकी
जयता तो बहु भाग धा-
मिक होजाती न हिये। मुनि महाराज उपदेश
करें, अनुर्वर अस्त्रोंका श्रवण करवें उद्योगी
प्रतिज्ञायें दिलावें, गृहस्थोंको स्वनजका मार्ग
बतलावें, उनकी तमाम प्रवृत्तियोंकी बर्मासुद्ध
बनानेका प्रयत्न करें। यदि यह सब कार्य मुनि-
राज करें। और गृहस्थ उपपर ध्यान दें तो

समझना चाहिये कि मुनियोंका चातुर्मास करना और श्रावकोंके शहर या ग्राममें इस सत्समागमका मिळना सब सार्थक होगया। और यदि उक्त बातोंका प्रचार न हुआ तो कहना होगा कि पूर्ण कर्तव्यका पाठन ही नहीं किया गया।

मुनि महाराजका प्रभाव गृहस्थोंपर जितना पड़ना चाहिये, उतना और किसीका नहीं बढ़ सकता। जब बात यही है तब जहांपर मुनि राजका चातुर्मास हुआ हो, चार महीनेमें वहांकी जनता धार्मिक हो जाना चाहिये। साथमें वह भी निश्चिन्त देना उचित है कि मात्र जैनोंको ही नहीं, किन्तु पर्येक अजैनको भी उपदेश कामका मौका देना चाहिये। जहां परम निस्वार्थी दिगम्बर वीतरागी साधु चार चार माह तक उपदेश करें वहां अजैनोंके हृदयपर कुछ भी असर न हो यह हो नहीं सक्त। इमन्त्रिये उदार भावसे किसीके मुकाबलेमें न आकर शास्त्रानुसृत अजैनोंको जैन बनानेका प्रयत्न यदि मुनिमहागण करें तो बहुत कुछ सफलता हो सकती है। चातुर्मासमें एक एक मुनि यदि १९-२९ ही नये जैन बनावें तो प्रतिवर्ष मैकड़ों अजैन जैन धर्मानुयायी हो सके हैं। मगर दुःख तो यह है कि कुछ अदूरदर्शी पंडितोंके समलेके कारण इस बातका प्रयत्न ही नहीं किया जाना। अगर मुनिमंडल इस बातपर ध्यान देवे तो उनके कर्तव्यका पाठन तो होगा ही, साथमें अनेक जीवोंका ब्रह्मण भी होगा।

* *

अब कुछ निवेदन त्यागी और ब्रह्मचारियोंसे भी करना है। एक तो त्यागी और ब्रह्म- यही है कि आप उन चारियोंसे। ग्रामोंके गृहस्थोंको सच्चा गृहस्थ बना दें जहांपर आपका चार मास तक निवास हो। वहांका पर्येक स्त्रीपुरुष क्रियावान होजावे। सभी स्वाध्याय करने लगे और बाबकोंका भी शिक्षाक्रम जारी होजाय। लोगोंमेंसे कुरीतियोंका निकास होकर विवेक और सत्यका विकास होजावे। आपका कर्तव्य होना चाहिये कि धार्मिक उपदेशके साथ ही साथ लोगोंको देशसेवा और समाजसेवाकी ओर भी उत्सुक करें। पहिली बात तो यह है कि त्यागी स्वयं ही इन कार्योंमें प्रवृत्त होवे।

किसी भी त्यागीके शरीरपर अपवित्र विदेशी वस्त्र न हो। सभी स्वादीका उपयोग करें। समय मित्रनेपर (एक घंटा अवश्य ही निकालकर) तकली या चर्खा काने और अपने कपडे अपने काने हुये सूतसे ही बनवावें। तमाम स्वदेशी वस्तुयें ही उपयोगमें लावें। इतना होने हुये ही आपका मनतापर पूरा प्रभाव पड़ सक्त है।

धार्मिक उपदेशके साथ ही साथ गृहस्थोंको बर्खा और तकली द्वारा सूत कानेका भी उपदेश करें। लोगोंको शुद्ध स्वादी ही पहिरनेका उपदेश करें। देव मंदिरोंमें एक भी अपवित्र विदेशी वस्त्र न रहे। उसके स्थानमें स्वादीका उपयोग कराया जावे। चरबीयुक्त वस्त्रोंसे भगवानकी

प्रतिमाका प्रश्लाक करना, शास्त्र धंधना महान् वृणित कार्य है, यह सब लोगोंके गले उतार देना चाहिये । इसके साथ ही साथ देशसेवा करनेके अन्याय उपाय भी बतकाये जावें । कारण कि जैनोंका देश सेवामें पीछे रहना ठीक नहीं होगा । जैनियोंके आवावा सर्व साधारणको भी धार्मिक उपदेश दिया जावे, उन्हें स्तोत्र २ वपसनोंसे बचनेका आदेश किया जावे और धर्मका मर्म समझ कर जैन धर्ममें दीक्षित किया जावे ।

त्यागियों व ब्रह्मचारियोंसे एक यह भी निवेदन है कि जहाँ समाजमें फूटफाट हो वहाँ आपके उपदेश से निकल ही जाना चाहिये । दूसरे—गृहस्थोंके स्वानयन, पहिनाव उदाव, और रहनसहनमें निमनी होसके उत्तरी सादगी आदिका पद्यतन करना चाहिये । उनके प्रति अपना व्यवहार भी ऐसा होना चाहिये निमसे उन्हें अपने कारण किसी प्रकारकी आक्रुता न होने पावे ।

धर्मरत्न पं० दीपचन्द्रजी वर्णी अभां हमारे यहां पवारे थे । आपके सीधे सादे स्वानयन व रहनसहनकी हम क्या तारीफ करें ! आपका कहना था कि "प्रत्येक मुनि या त्यागी को यह सोचनेना चाहिये कि जब हम स्वयं गृहस्थ थे तब प्रतिदिन मिष्टान्न नहीं बनाने थे । अगर अब हमें गृहस्थ प्रतिदिन मिष्टान्न या हलुआ पुरी देता है तो समझना चाहिये कि इस हमारे निमित्तसे ही ऐसा करना पड़ता है इसलिये उम विशिष्ट आहारको न लेवे, और गृहस्थोंकी इस प्रणालीको मिटादे । निम्नसे अपनेको और गृहस्थको किसी प्रकारकी भी आक्रुता न होने पावे । "

वास्तवमें यह बात ध्यानमें रखने योग्य है । अगर मुनि या त्यागी हमको स्वीकार करेंगे तो बहुत ही अच्छा होगा । उदासीनोंका मार्ग तो इन बातोंमें बहुत सीधा सादा और साधारण होना चाहिये ।

* * *

मुनियों या त्यागी ब्रह्मचारियोंको तो सर्वदाही आत्मकल्याणका अवसर गृहस्थोंसे । रहता है, मगर हमारे

लिये तो यह चातुर्मास ही एक अपूर्व अवसर प्राप्त होता है । आठ महीने गृहस्थ नाना प्रकारकी गार्हस्थ्य अशुद्धीमें फंसा रहता है, मगर आत्मकल्याणका यह प्राकृतिक अवसर मिलता है । हम समय कहीं तो मुनिराजोंका समागम होता है, कहीं त्यागी ब्रह्मचारी विरानते हैं, तो कहीं विद्वानोंका साथ होता है । उनसे हमें नित्य उपदेश गृह्यण करना चाहिये । और विवेकपूर्वक सन्मार्गपर आरुढ़ होना चाहिये ।

छोटे २ ग्रामोंमें जहाँकी जनता अज्ञान है, जहाँ त्यागी व उपदेशकोंकी सखी आवश्यक है वहाँ मुनियों या त्यागियोंका पचारना बहुत कम होता है ! इसलिये वहाँकी जनताकी शास्त्रस्वाध्याय करके अचना कल्याण करना चाहिये । प्रत्येक पढ़ा लिखा त्वापुरुष यह प्रतिज्ञा करले कि हमें तो चातुर्मासमें अमुक शास्त्रकी स्वाध्याय करना ही है । वस, चार मासमें उसे पूरा करले । जो पढ़े लिखे नहीं हैं उन्हें शास्त्र सुनाकर स्वयं कल्याण करें । स्वाध्यायके उपयोगी समाप्त जैन ग्रंथ "दिगम्बर

जैन पुस्तकालय-सूत्र"के पतेसे मिल सके हैं।

यहाँ मुनियों वा त्यागियोंका समागम है वहाँ की तो कहना ही क्या है ? चार मासके उपवेशसे यह मूढ़ पुरुष भी विवेकी होसकता है। दूर दूरसे लोग दर्शनोंको भोगे हुये आते हैं। मगर मात्र मुनि दर्शनसे आत्मकल्याण नहीं होगा। वे चारित्रकी आदर्शमूर्ति हैं। उनके दर्शन करके अपनेको भी संयमी होना चाहिये। उपदेश सुनकर तदनुसार प्रवृत्ति करना चाहिये। अहिंसा और सत्यपूर्ण व्यवहार होना चाहिये। यही मुनिदर्शनका फल है।

दूसरी एक बात और भी ध्यानमें लेने योग्य है। वह यह है कि मुनियोंका वह संयम श्रावकोंके आचार पर रहता है। अगर हम विशेष आहंवर करें, खोटी भक्ति वा ठवर्षकी भीड़माड़ करें तो उनकी संयम पूर्णरीत्या नहीं पक सक्ता। इसलिये तमाम कार्य विवेक पूर्वक होना चाहिये। यदि आप मुनियोंके संयमकी रक्षा करना चाहते हैं तो आहारादिकमें विशेषता न करके जिस प्रकार अपने निरंतर भोजन करते हैं उसी प्रकार साधारण आहार देना चाहिये। मुनियोंकी तो गौतमीवृत्ति होती है, उसमें अपनेको विशेष आहंवर बढ़ाकर आकुञ्चित न होना चाहिये। इसके अलावा मुनियों वा त्यागियोंकी वैयावृत्ति करना अपना कर्तव्य है। मगर इसमें भी अति कर देना ठीक नहीं है। मोहवश या अत्रिवेदके नाम मुनियोंके निवासस्थानोंमें मर्यादातीत साधनाका एकत्रित कर देना वैवाचित्त नहीं, चित्त महान अज्ञान है। हमारी तो यह आन्तरिक भावना रहती है कि मुनिवर्ग व्यवस्थित रहकर

गृहस्थोंका कल्याण करे और गृहस्थोंका व्यवहार भी मुनिराजोंके प्रति ऐसा रहे कि जिससे किसी भी पक्षविशेषको कोई टीका टिप्पणी वा समालोचनाका अवसर न मिले। मुनियों वा गृहस्थोंकी तमाम प्रवृत्तियां शास्त्रानुकूल मर्यादित हों।

प्रत्येक गृहस्थका दैनिक कार्यक्रम होना परमावश्यक है। यथासमय पूजा, स्वाध्याय, हाथ आदि करे, आत्मध्यानका समय निकाले और तमाम प्रवृत्तियोंको भी समयानुसार व्यवस्थित बनाले। यदि वर्तमान समयको देखा जाय तो व्यर्थ समय गंवाना घोर अनर्थ है। जिस समय मनुष्य निठला होता है उस समय उसका उपयोग खोटी बातोंमें जाता है। इसलिये ऐसा न करके उस समय प्रत्येक स्त्री पुरुष धर्मचर्चा करे, समाज और देशसेवाके विषयमें विचार करे तथा चरखा काले, तकली द्वारा सूत्र निकाले और अपने तनके किये अपने द्वारा काले हुये सूत्रसे ही रत्न बनवावे। जब आप ऐसा करेंगे तो आपका उपयोग उत्तम तो रहेगा ही, साथ ही साथ देशसेवामें भी कुछ भाग दिया हुआ कहना सकेगा।

ऐसी सुररिश्चितिके होते हुये भी अगर जैनसमाज अपनी उन्नति न कर सका तो फिर कौनसा अवसर प्राप्त होगा ? इसलिये मुनियों, त्यागियों, विद्वानों और सामान्य गृहस्थोंको अपना कर्तव्य समझकर चलना चाहिये। यही धर्म व समाज व देशके कल्याणका उपाय है। व्यवस्थित होनेका सबसे अच्छा अवसर तो चातुर्मासमें ही मिलता है। इसे व्यर्थ नहीं गंवा देना चाहिये।



जैन समाचारवर्ति

आचार्य संघ मथुरामें—श्री १०८ आचार्य श्री छातिसागरजीका संघ आषाढ़ वदी १३को सकुडक चौगाली (मथुरा) पहुंच गया है व चातुर्मास वहां ही होगा। मुनि वंदना व श्री जंबु-स्वामी क्षेत्रके दर्शनार्थ सबको पधारना चाहिये।

कुंडलपुरमें मुनि श्री सूर्यसागरजी—मुनि श्री सूर्यसागरजी, श्री वीरसागरजी, श्री धर्म सागरजी व श्री अमितसागरजीका चातुर्मास कुंडलपुर (दमोह) में होगा। वहां इन्दौरसे पं० पलाकाक गोषा आदि ४ उदासीन आये हैं व न्वाबाआचार्य पं० गणेशमसादनी वर्णी भी वहां ही चातुर्मास करेंगे।

सरसेठ हुकमचंदजी—श्री १७ वीं वर्षगांठ जंबरीबाग इन्दौरमें मास्टर सुखचंदनी बी० ए०के सभापतित्वमें गत ता० १७ जूनको पदे मारी समारोहके साथ हुई थी। तब सेठजीकी दानशीलता व गुणानुवादपर प्रो० श्रीनिवासजी, पं० कन्मुनाब त्रिपाठी, पं० बंशीधरजी शास्त्री आदिके न्वाकमान हुए थे।

कुयलगिरि—आश्रमका ता० १७ जूनको सेठ रावजी सखाराम दोशी सोलापुरने निरीक्षण कर अतीव सन्तोष प्रकट करके सबको मिष्टान्न भोजन कराया व १००)के टीनके पत्रे दिये।

दिवली (मानभूमि)—में श्रीवदया सभा आगाराके प्रबन्धसे ज्येष्ठके मेषमें एक भी प्राणीकी हिंसा नहीं हुई थी।

कारंजा—के महावीर म० आश्रमको मण्डिक डेलकर बा० कृष्णकाठ वर्मा वंवाईने २०००)की पुस्तकें भेंट की हैं।

देशसेवायें जैनोका हिस्सा।

सूरत—के सरेबा जैनी व अंकुशेश्वरके छोटा-लाकनी गांवो नासिक व बरोदाकी जेठमें सकु-लक हैं। रोहतक—से हरकसिंह जैन व सुख-देवसिंह जैन जेठ गये हैं। कलकत्ते—में सेठ पदमराजजी जैन रानीवाडेको ६ मासकी सजा व उनकी १६ वर्षकी पुत्री इन्दुमतीको ९ मासकी सजा हुई है। ललितपुर—में वैद्यमूषण पं० मथुरामसादनी शगव पिकेटिंगके किये गिरफ्तार किये गये हैं। कटनी—में कई जैन स्वयंसेवक कार्य करते हैं। हुकमचंद जैन जेठ गये हैं। पलाकाक गंधेलीय भी स्वयं कार्य कर रहे हैं।

जबलपुर—में ३२-३२ दि० जैन स्वयंसेवक व स्वयंसेविका कार्य कर रही हैं। जैन व्यापा-रियोने विदेशी कपडा न मगानेकी प्रतिज्ञा की है। दमोह—में १५ जैन स्वयंसेवक कार्य करते हैं। विदेशी वस्त्र मंगाना व बेचना बंद हुआ है, विदेशी पहिनकर मंदिरमें न जाने देनेका पिकेटिंग जारी है। इटावा—में जैन वाकबुद्धि विकाशिनी सभाके प्रबन्धसे सारी पंचायतने विदेशी वस्त्र त्यागका व मंदिरमें स्वदेशी वस्त्र पहिनकर ही जानेका नियमसे निश्चय किया है। जिससे धरना बंद हुआ है। लखनऊ—में दि० जैन सभाके प्रबन्धसे एक वर्षतक दि० जैन मंदिरोंमें विदेशीवस्त्र नहीं प्रदान करेंगे। देहली—के मंदिरोंमें धरना देनेपर विदेशी वस्त्र पहिन-

कर कोई नहीं जाते व अनेकोंने विदेशी वस्त्र त्याग किया है। धरना देते समय एक मंदिरमें एक पंडितजी ऐसे बिगड़े कि विदेशी वस्त्र पहिनकर स्वयंसेवकोंके ऊपरसे निकल गये व कहा कि मैं मर जाऊँगा, परन्तु विदेशी वस्त्र नहीं छोड़ूंगा। बाहरे पंडितजी !! बंबई—में २१ जूनको १० जैन स्वयंसेवकोंको मार पड़ी थी। पटना—में जैन व्यापारियोंने विदेशी कपड़ा बेचना बंद कर दिया है। जो है उसको सौक करके कोम्रे-समें रख दिये हैं। अलीगंज—में भी विदेशी कपड़ा जैन ब्रह्मजनोंने बेचना बंद कर दिया है। बहाला—(पुंबई) में गिरधरलाल नरोत्तम शाहको मार पड़ी थी व चन्दुलाल वस्त्रारिवाको तीन मासकी सजा हुई है। महात्मा—भगवानदीन-जीको जबलपुरमें २ वर्षकी सजा और हिसारके का० जगदीशरायको ४ मासकी सजा हुई है। बिजनौर—में श्री० भारत० दि० जैन परिषदके मंत्री बा० रतनलाल जैन वकील व बा० नेमिधरण वकीलको १—१ वर्षकी सजा हुई है। सोनीपतमें—रामचन्द्रजी सिंहल जैन जेल गये हैं। इत्यादि।

लाहर्न—में मनमानी महासभाने कंडनमें होनेवाली राउन्ड टेबल कान्फरंसमें जैन प्रतिनिधि भेजनेका प्रस्ताव किया था जब कि देशमें इसी कान्फरंसका पूर्ण बहिष्कार होरहा है। क्या ऐसा प्रस्ताव करके मनमानी महासभाने विला-यत गमन निषेधका अपना हठ छोड़ दिया है !!! बेचारे कूपमंजूक पंडितोंको यह भी मालूम नहीं होगा कि राउन्ड टेबल कान्फरंस हिंदमें होगी या विलायतमें ?

ला० हजारीलालजी—मंत्रीकी सुपुत्रीका विवाह इन्दौरमें जैनविधिसे होकर ११ संस्वा-ओंको दान किया गया था।

नये हंगपर वेदी प्रतिष्ठा—बड़ीत (मेरठ) में ज्येष्ठ सुदी १को बा० मूकचंदजी व पं० तुल-सीरामजी काव्यतीर्थके द्वारा अतीव कम स्वर्चमें वेदी प्रतिष्ठा होगई। प्रतिष्ठाकारक श्री झुपकी-बाईने २२९) विद्या दान किया था।

महावीर ब्र० आश्रम—फारंजाके छात्रोंने मांगीतुंगी व गजपंथाकी यात्रा १ मास प्रवास करके की थी तब २१४) दान मिला था।

सर्वोच्च डिग्री—रा० व० नांदमलजी अजमे-रके भतीजे बा० सोभागमलजी दो वर्ष हुए विद्या-यत गये थे उन्होंने वहां विज्ञानकी सर्वोच्च डिग्री Ph. D. पी० एच० डी० पास की है।

परिषद—की ओरसे चकते हुए परीक्षाकथमें इस साल बोर्डिंगोंके ४७२ छात्रोंने वार्षिक परीक्षा दी थी जिनमेंसे ३७७ पास हुये थे।

पावापुरी केस—बराबर पांच माह तक पटनामें चककर ता० ७ जूनको पूर्ण हुआ था। अब १०—१९ दिनमें फैसला निकलेकी आशा है।

सर हुए—रा० व० डॉ० मोतीसागरजी दि० जैन बाईस चांसलर देहली यूनिवर्सिटीको सर-नाईटका पद प्राप्त हुआ है।

जसवन्तनगर—में का० प्यारेलाल बुढ़ेलेका विवाह प्राचीन पद्मावतीपुरवाल कन्याके साथ हुआ है।

ब्र० गंगाप्रसादजी—ने मनीपुर (आसाम)में चातुर्मास किया है।

श्रुतपंचमी उत्सव—पालेज, उदयपुर, बड़वाड, बुड़ार, पनागर, कारंजा, सागर, शिरडशहापुर, कुन्थलगिरि, किरतपुर, आरा, बोधेगांव, बंरई, आदि १ में मनाया गया था ।

दो असह्य वियोग—देहलीमें रा० बा० ल० सुकतानसिंहजी जैन रईसका ता० १ जूनको स्वर्गवास होगया । आप कई दफे घागसभाके मेम्बर हो चुके थे व विद्वान्त कई दफे गये थे । देहलीके खास जैन अगुए थे । तथा मेरठमें सच्चे सुवारक व अंग्रेजी पढ़े लिखे घर्मिक जैन विद्वान बा० रिषभदासजी जैन वकीलका भी अचानक स्वर्गवास होगया । आप अंग्रेजी जैन साहित्यके अच्छे लेखक थे । व कई ग्रंथ अंग्रेजीमें अनुवाद कर प्रकट किये हैं । आप दोनोंकी आत्माओंकी शांति व कुटुंबीनोंको धैर्य प्राप्त हो ।

साहित्याचार्य—काशीकी उच्च परीक्षामें स्या० महाविद्यालय काशीसे पं० परमानन्दजीने साहित्याचार्य व बंशीधरजीने व्याकरणाचार्यकी परीक्षा पास की है ।

रायबहादुर—सेठ रतनलालजी जैन रांची रायबहादुर हुए हैं ।

दीक्षाजाल—रम्बईमें श्रे० जैन हुनि रामविजयजीने एक परतापगढ़के दि० जैन भाईकी जाळसे दीक्षा देना चाही थी परन्तु दि० जैन युवकमंडलके प्रयत्नसे यह जाळ पकड़ी गई और दीक्षा न हो सकी ।

दि० जैन युवक मंडल बम्बई—की एक समा ता० ८ जूनको हुई थी जिसमें जेठ जानेवाले जैन सत्याग्रहियोंका व कुहची गांव कमीशनके

समासद वामन मुसादमका जेठ जानेपर अभिनन्दन किया गया था व काडनू महासभाके राउन्डटेबल कान्फरंस सम्बंधी प्रस्तावका विरोध किया गया था ।

ब्र० सीतलप्रसादजी—चातुर्मासमें अपरोहा ठहरेंगे ।

मजिस्ट्रेट हुए—का० हनारीकाळजी वकील बड़वानीमें व बा० तोताकाळजी वकील अंनडवे सिटी मजिस्ट्रेट नियुक्त हुए हैं ।

कुपमंडुकरताका फल—कासारबोरीमें एक सेतवाळ जैनको जातिसे अलगकर उसका मंदिरमें दर्शन करनेका भी बंद कर दिया गया जिससे वह मुसलमान होगया है ।

धुलिया—में सेठ गुळाबचंदजी हीराकाळजीने वर्तमान राजकीय परिस्थितिके कारण रायसाहबकी व आ० मजिस्ट्रेटकी पदवी छोड़ दी है ।

सुरतना दशाहुअड—दि० जैन लाघओओ पंच मेणवी अयाड सुदी ७ ना थनारे ओओओव देशनी नाजुक परिस्थिति वीधे अंध राभी तेना १६९) कंग्रेसमां दान क्यो छे तथा देशमां स्वराज्यनी यणवण यावे त्यां सुधी विदेशी पत्र नहीं अरीदवानो तथा क्रेषपणु न्याती नमणु न करवानो पंचायतीओ इगव क्यो छे जे अनुकरणीय छे.

छानामाना वृद्धविवाह—दि० जैन युवक मंडल सुंआधना तीव्र प्रयास छतां लावनगरवाणो वृद्धविवाह सुरत पासे नवसारीमां छानामाना अछ गये दतो. ज्येथी अियारा युवक मंडलना ओ सभासद तेओ नडियादथी मनाछ हुकम पणु लाव्या दता, ते वडोदरा अने सुरतमां तपास करी पाछा गया दता.

मेट्रीक पासने छनाम—शेड मनोरदास परशोत्तमदास पंडोलीवाणोओ आ साल वीसामेवाडा डोभमांथी मेट्रीकमां पास थनार विद्यार्थीओने १०) छनाम वहेथी आप्युं दतुं.

अपने ही हाथों मरते हैं ।

(ले०-व्याकरण भूषण पं० मुन्नालालजी-बांदीकुई ।)

जो जन नर जीवन पाकरके, कर्तव्योंमें हैं लीन नहीं ।
 पर दुःख हरा नहीं ज्ञान लहा सत्कृत्योंको कुछ कीन नहीं ॥
 सम्यग्दर्शन अरु ज्ञानचरित, जिनके हिरदे ये तीन नहीं ।
 वे मूर्ख निपट अज्ञानी हैं उनके सम कोई दीन नहीं ॥
 जो स्वारथसे अन्धे होकर, परंपंच पाप अति करते हैं ।
 धिक्कार योग्य वे पुरुष आप अपने ही हाथों मरते हैं ॥ १ ॥
 संसार है पायाजाल बड़ा, इसमें सुखका लवलेश नहीं ।
 आना जाना मरना जीना इसके समान कुछ लेश नहीं ॥
 इससे मानव पर्याय पाय, निज जीवनका उद्धार करो ।
 मंझधार पड़ी यह जंजर पंजर नैया जल्दी पार करो ॥
 इस चार दिनाके जीवनमें जो पाप किया नित करते हैं ।
 धिक्कार योग्य वे पुरुष आप अपने ही हाथों मरते हैं ॥ २ ॥
 जो दुस्वियोंको दुखसे निकालनेका नहीं मार्ग मुझाते हैं ।
 केवल ताना तूनीसे ही बस निज पाण्डित्य दिखाते हैं ॥
 या धर्म मार्गको मिटा जातिमें, पाप प्रवृत्ति कराते हैं ।
 मूछोंपर देते ताव, नहीं कुछ भी मनमें शर्माते हैं ॥
 निज स्वारथ हित ही धर्म जातिको, पतित हाय ! जो करते हैं ।
 धिक्कार योग्य वे पुरुष आप अपने ही हाथों मरते हैं ॥ ३ ॥
 जो निज स्वारथसे मिरा, औरको खुद भी नीचे गिरते हैं ।
 या जो समाजमें आग लगा पानीको दोढ़े फिरते हैं ॥
 अब गया धर्म अरु चली जाति, जो ऐसा कहते रहते हैं ।
 पर वे उसके उद्धार हेतु कुछ करते हैं ना धरते हैं ॥
 अरु फल प्रकल रखनेको ही नित, धर्म साग जो करते हैं ।
 धिक्कार योग्य वे पुरुष आप अपने ही हाथों मरते हैं ॥ ४ ॥

नैसर्गिक प्रेम, भक्ति और जैन धर्म ।

(लेखक—वि० शिखरचंदनी जैन—हरदा ।)

प्रायः देखा जाता है कि जब वर्षा ऋतुमें अथवा अन्यान्य अवसरोंपर सर्पादि किंवा उसके ही समान कोई और जीव-जन्तु इस पकृतिदेवीके पटलपर स्पर्शकन्दतापूर्वक विचरण करता प.या जाता है और उस समय उसके अशोभा ग्यसे किसी महास्यकी दृष्टि उसपर पतन हो जाती है तो उनकी ध्यान तुरंत उस तुच्छ प्राणीके ओर आकर्षित होजाता है, जैसे वह कहींका बड़ा भारी मृत प्रेत हो। उनकी आंखोंमें मृत्युका दर्शन दिखने लगता है, मानो वह साम्राज्य मराम ही हो। उसे देखते ही आर दिंदोरा पीट देते हैं, जैसे कोई बड़े धर्मात्मा व्यक्ति लोगोंको अचेत कर रहे हों। समीपस्थ सम म एकत्रित होजाता है उस समय हमें यह व क् वर्षा हमारे श्रवणोंको टकराती है। 'सारे र', "जाने न पावे नीच", "ककड़ी काओ, ककड़ी काओ" इत्यादि वाक्योंसे वायुमंडल घोषित हो जाता है ।

किंतु यहां क्षणभरके लिये एकताप्रेमियोंके विरुद्ध आतीय रीतिसे विचार करें तो हमें ज्ञात होगा कि वे सज्जन जेनेतर ही होंगे। यदि कोई जैन होता तो वह क्या करता? वह कहता "अरे? नहीं भाई, जानेदो उस प्राणीको" "क्यों सताते हो, गरीबको"। ऐसा क्यों? एक

जैन और एक जैनमें इतना अंतर क्यों? क्या वे दोनों मनुष्य नहीं हैं? क्या उन दोनोंके सदृश-हृदय नहीं है? क्या उन्हें वही अकवायु नहीं लगा? कुछ देरके लिये विदेशोंको छोड़ दीजिये पर हमारे भारतवासियों—यवनकोंको भी समझ लीजिये—पर सोचिये ।

विश्व रूपसे विचार करनेसे विदित होता है कि यह धार्मिक भाव ही हैं जो उन पुरुषोंके आत्माओंमें अपना निवास स्थान बनाये हुए हैं। फलतः यह सिद्धान्त स्थिर होता है कि प्रत्येक धर्मका प्रभाव उसके अनुयायियोंपर पूर्ण रूपसे नहीं तौभी अधिकांश पड़ता ही है। आगे इसीलिये हम धर्मगत विचारों सहित जातिगत विचारोंका भी किन्हीं स्थानोंमें समावेश कर देंगे ।

एकही—मंडलमें ही नहीं इस विशद विस्तृत ब्रह्मांडमें जैनधर्म मात्र ही एक ऐसा धर्म है जो प्राणी मात्रपर पूर्ण दया चाहता है तथा अहिंसाका अटक अनुयायी है। दूसरे धर्म भी विश्व-प्रेम—पचारका बीड़ा उठानेका दावा करते हैं। अहिंसाको माननेवाले कहते हैं। दयाका पाठ पढ़ाते हैं। परोपकारकी पुकार मचाते हैं। ईसाई धर्म कहता है "प्रेम करो" स्वयं प्रभु क्राइस्टने कहा है "यदि कोई एक तुम्हारे गाल-

पर चपल जमावे तो तुम उसके रन्मुख द्वितीय भी करदो ।” किन्तु क्या हमारे ईसाई भ्रातृ-गण इनका श्लांश भी पाकन करते हैं ? इसमें उनका क्या दोष ? उनका धर्म ही उनके विचारोंकी परिमित करता है । उनके मस्तिष्ककी शक्ति या उनकी बुद्धि मानव समानसे आगे नहीं बढ़ती । फिर ईसाई राष्ट्योंकी वर्तमान प्रगति ही की ओर देखिये । ये प्रभु ईसाके प्यारे दुःखारे विजित राष्ट्योंसे कैसा व्यवहार करते हैं । जौहदा भी नंबर मार लेते हैं ।

हिंदू-धर्म भी कुछ अहिंसाका पक्क पन्नारक न हो ऐसा नहीं है । पर उसके विचारोंकी विशालता भी देखिये । अहिंसा रहता है किंतु हिंसा न करनेको कितने अंशोंमें मानता है ? महाभारत एवं मनुस्मृतिमें स्पष्ट श्रद्धमें मांस-क्षण ग्राह्य बतलाया है । स्वयंमक जूमादि क्रिया-योंकी दिवासे निवृत्त होनेका उपाय कायाम बतलाकर चुप्पी साबलो है । परिणाम स्वरूप हम देखने हैं कि हिंदूजोग छोटे प्राणियोंपर दया नहीं रखते । और पश्चात्तप पृच्छनेपर, वेधक एक छोटा सा हास्य या ‘ये हमें मताते हैं इमजिये हम मारने हैं ।’ कहते हैं । कितना अच्छा फार्मौला (गुरु सिद्धांत) है ?

अब इस्लाम धर्मपर विचार कीजिये । यह तो बड़े ही संकुचित विचारका है । यह तो किसीकी भी नहीं सुनता । यह हिंदु बिंदु, ईसाई-बीसाई किसीको भी कुछ नहीं समझता है । समझता है तो मुसलमानी धर्मको ही—स्वतःको उच्च और खुदाके और इमानके बीचका जगतका

रास्ता समझता है । जैसे इस्लाम नहीं होता तो यह मानधर्मदक एध्वीमंडलमें मंडलित होकर रह जाता । अछा ताकाका चश्मेदीव जगत इसे मुनस्तर नहीं होता ।

अब बौद्ध धर्मको राजिये । यह धर्म जैन धर्मसे अवश्य टकर लगानेवाला है । पर वास्तवमें क्या ऐसा ही है जैसा कि प्रकट किया जाता है ? इतिहासके एष्ट ठकटिये और वहां निकालिये जहां महात्मा बुद्ध आजीवन अहिंसाका अलौकिक (!) उपदेश देते हुए मृत्युकी राह देखरहे थे । इतिहास परिचित व्यक्तियोंसे अपरिचित नहीं है कि उन्होंने उन्नत समय एक मनुष्यके हाग लाया हुआ शूकरका मांसमक्षण किया था । संसारके एक बड़े महात्माने जिनने अपना संपूर्ण समय राज त्यागकर प्राणियोंकी दयामें दिया । आश्चर्य ! मला फिर उसके अनुयायी मांस, मछली, मदिरा न उड़यें तो क्या करें ? मिसा-कमें हम मापाट, चीन और लंकाको जहां कि बौद्धधर्म सीमित होगया है, पेश कर सकते हैं ।

बत यह है कि जिन प्रकार उसके होनेसे हमें चंद्रिकाकी आवश्यकता प्रतीत होती है या सूर्यका मूर्य मःछम होता है । या जैसे दुर्गुणी गणसे सुगुणी और उदुगणसे उदुनाथको हम जान सकते हैं । या जिस प्रकार अवधमेंके मधुध धर्म आसित हो सकता है या जैसे मूसोंके होनेसे हम बुद्धिमानका आदर करते हैं । उसी भांति इन संसारके चार बड़े धर्मोंसे जैन धर्मकी जो एक छोटी सम्प्रदायका धर्म माना जाता है जिसका हम आगे कथन करेंगे । उमकी महत्ता

प्रदर्शित करनेको हमने तुम्हना दिखाकाई है कि उसमें कुछ तथ्य, नैसर्गिक प्रेम और भक्ति है या नहीं । हमारा उद्देश किसी विशेष धर्मका अपमान करनेका कभी नहीं है ।

अब जैन धर्मपर दृष्टि डालिये । कितना शांत, सरल, सच्चा और सीधा है । उसकी नजरमें यह सारा नजराना एक ही तरह दिखाई देता है । वह सर्व प्राणियोंको एक समान सम्झता है, किसीको शत्रु नहीं समझता । यदि मैं कहूँ कि प्रेम, सहृदयता एवं सौश्रद्धाकी इति श्री जैन धर्महीमें होती है तो कुछ अशुक्ति न होगी । जानीय हो विनासीय हो, कृमि हो या मरुत गज हो, मनुष्य हो या देव हो, कोई भी प्राणी क्यों न हो; यह जैन धर्म ही सदृश उदार प्रकृतिस्व धर्मका कार्य है जो किसीसे द्वेष नहीं किसीसे शत्रुता नहीं । अपने मार्ग जाना और आने मार्ग जाना । एक चिंटी ही क्यों, वह तो किसीको कष्ट नहीं पहुंचाती परन्तु एक खटमक, जू या इतर हिसक या दुःखदायक जीवके प्रति भी कितना क्षम्य एवं सौम्य भाव रखना यह हमी महान उदार धर्मका सिद्धान्त है । जैनियोंके प्राथमिक पाठ—ज्ञानार्थिक पाठ—के प्रथम श्लोक—

सत्त्वेषु मैत्री गुणेषु प्रमोद,
क्रिष्णेषु जीवेषु कृपापरस्वम ।
माध्यस्थमात्रं विपरीतवृत्तौ,
सदा ममामा विदधातु देव ॥

—का क्या तात्पर्य है ? ऐसा कौन करनेका साहस कर सकता है ? यहां भी हम जैन धर्म-हीको खड़ा पाते हैं । आप प्रशंसा तो सभी करते हैं; परन्तु यह तो बिना प्रशंसा किये आपही

प्रशंसनीय कहवाने योग्य है । जो दूसरा शत्रुता रखे तो यह मित्रताके व्यवहारकी सम्प्रति देता है ।

यह नहीं कहता कि अपुत्र धर्महीसे स्वर्ग मिलता है । पूर्ण अहिंसाका पावन कीजिये अथवा उसके कुछ अंश हीका पावन कीजिये, आपको बधायोग्य फल प्राप्त होगा । कोई जातिका या किसी देशका जीव हो । कमाईकी कथासे प्रत्येक जैनी परिचित ही है । चारुदत्तके बकरोंका देव बन्ध में परिणत होना किमो जैनीसे छिपा नहीं है । पर हां, एक बात है, यह इतना उदार नहीं है कि केवल अपनी प्रसन्नतासे स्वर्गसुख या मोक्षमोदक लुटादे । थोड़ा भी प्रसन्न हुआ और किसीको स्वर्ग दे दिया, किसीको अप-वर्ग । भई, यहां तो रायेके सोरह अने हैं । कितना और जैसा करो उतना ही फल-प्राप्ति करो । इस स्थानपर यह अपुत्रो अवश्यमेव निराशा निर्जन बनमें असा दे । परन्तु यदि हम एक चतुर न्यायाधीशके कर्तव्यकी ओर दृष्टि-पात करें तो यह प्रश्न बड़ी सरलतासे हल हो सकता है । कर्तव्य करो । आत्माका कल्याण केवल प्राणी प्रिय है । यह तो इयका प्रधान उद्देश है ।

आनकक पायः ऐसे “पूर्व प्रवक्त प्रेम प्रचारक” धर्मपर यह आश्रय किया जाता है कि भारतका पतन बौद्धधर्म और जैनधर्मके सिद्धांतोंके कारण ही हुआ है । देशभान्य नेता काल-जीने भी इसी तरहका कथन किया है । यह कलंक यथार्थमें अवगोचनीय है । हम देखेंगे कि यह कहांतक जैन धर्मपर आरोपित होसकता

है ? विशेष वर्णन न करके हम कुछ प्रमाण देना चाहते हैं । देखिये:-

[भारतपतनके कतिपय कारण मेरी बुद्धि अनुसार ये होसकते हैं—प्रथमतः आर्य लोगोंको भारतभूमिपर आये लगभग ७००० वर्ष होचुके थे । इससे उनका वह पौराणिक उत्साह, श्रमता, हठता, साहस और शक्ति घट गई थी जो कि इन नये उत्तरीय लोगों (सैनिकों) में थी । द्वितीय सैनिक व्यवसाय केवल क्षत्रियोंका है, धंधा समझा जाने लगा था । तीसरे उत्तरीय स्वतंत्रतासे विचारण और साहसी कार्य अब इन समय बहुत कम रह गये थे । कारण कि प्रथम प्रथम अब वे आये तब विकासी नहीं थे और उनका केवल एक बही कार्य—युद्ध था जैसा कि इन यवनगणका था । पश्चात् भागमें वे ज्योश् साम्भ होते गये विकासप्रियता जाती गई और उनकी शक्ति कई कार्योंमें विभाजित होगई । जैसे यदि कोई विषाधी इतिहासके एक विषयको पढे तो वह उस विषयमें अधिक जानाक्ष एवं निपुण होसकता है । किन्तु कई विषयोंका परिणाम ? विदेशियोंको ये सुविषयें थीं । इस समय हममें जनैक्यका निवास था और रण-कला मूल गये थे । सेनापतिके साथ ही हम साहस खोदेते थे । ये राजनैतिक कारण हैं । सामाजिक कारण यही है कि हम लोगोंकी जनैक्य जाति—उपजातियां स्थापित होगई थीं । इनके धार्मिक या बुद्धिमान लोगोंका बहुतसा समय खंडन मंडन वादविवादमें व्यतीत होता था । एक दूसरेकी प्रतिद्वंद्विता करनेमें ये अपनी संपूर्ण शक्तियोंसे मुस्तेद होगये थे । यह विभि-

जता ही एक बड़ी भारी भारत—उपवर्णनका कारण हुआ । अन्ततः महाभारतकी निर्बलता और उस समयसे प्रचलित कुरीतियोंने दबी हुई जनैक्यके सम आना बल इस समय दिखाया । इत्यादि और भी जनैक्य कारण हैं]

मेरी सम्पत्तिसे तो भारतवर्षके विनाशका कारण जैनधर्मका हास होना था । तथा यदि जैनधर्म पुनः प्रचलित होनावे तो सम्झ लीजिये कि संसारके कष्टोंका अंत आगया । प्रगतभूमिमें जितनी बुराईयें और झगड़े हैं वे आप ही आप समूह नष्ट होजावेंगे । एक समय वह आजायगा जिस समय संसारके ये सारे राष्ट्र अपने राजनीतिक हथकंडे (कौतुक) त्याग देंगे । वे श्वेत या अश्वेताका अभिमान छोड़ देंगे । छोटे २ राष्ट्रोंको हड़पना छोड़ देंगे । न कहीं लड़ाई होगी न युद्धका नाम सुनाई देगा । लड़ाई या युद्धादि होंगे तो इतनी प्राण हानि नहीं होगी । इतने मनुष्य एक साथ पृथ्वीपर नहीं लोटाये जायेंगे । ये युद्ध या लड़ाई होगी तो केवल निर्बलोंकी स्वस्वरकाके लिये; संसारको उसके किसी भागको नहीं—मुख पहुंचानेके लिये परोपकारके हेतु संसारके सैनिक लड़ेंगे । सब लोग (प्राणी) स्वच्छन्दतासे विवरण करेंगे, कोई किसीका अनु नहीं होवेगा । समयपर आपसमें एक दूसरोंको सहायता देनेको उत्तर रहेंगे । बुराईके समर्थन करनेको कोई उत्तर नहीं होगा । स्वार्थ अपना विस्तार बांध कूच कर जायेगा । मनुष्य और ये सब प्राणी उसी रूपमें होंगे जिसमें अभी हम हैं । परन्तु वे स्पष्ट बक्ता होंगे । अपने विचार निर्भयतासे प्रकट करेंगे, पहिले दूसरेका कल्याण

सोचेंगे फिर अपनी मलाई का ध्यान देंगे। कभी कोई मिथ्या भाषण नहीं करेगा। उस समय न चोर होंगे न डाकू। सब बिहान होंगे पर प्रतियामें नहीं फूरेंगे। अविद्वानोंका और तुच्छ जीवोंका संहार नहीं करेंगे परन्तु उनकी रक्षामें अपने प्राण अर्पण करेंगे।

तो यदि हम संसारमें स्वर्ग जाना चाहते हैं तो हमें जैनधर्मके सिद्धान्तोंका प्रचार करना होगा। पूज्यो! संसार आज किस स्थितिमें है? अमेरिका क्यों अपना सैनिक बल बढ़ा रहा है? उसकी देखादेखी सबसे और ब्रिटेनकी अरसेनाका बहुत अधिक संख्यामें सिंगापुरमें रखनेसे, क्या तात्पर्य सोचकर जापान चिंतित है एवं अपना सैनिकबल वृद्धि कर रहा है? वायुयान बनवा रहा है। "लोग ओफ नेशन" से भूमंडलको क्या काम हुआ? उसमें भी काले कैसे समझे जाते हैं? ये चिताएँ लोगोंको एक ऐसे युगमें दबा रही हैं जब हम समाचार पत्रोंमें नित्य ही नूतनर आविष्कारों और अन्वेषणोंके विषयमें सुनते हैं। जब कि लोग पूर्वकालसे बहुत अधिक सम्य, सुशील एवं बुद्धिशील, उत्तमशिक्षित समझते हैं। इन कारणोंसे ज्ञात होता है कि संसार किस ओर आ रहा है? इसकी एक दशा है "जैनधर्म"। उसके पास कोई जादू नहीं है, किन्तु केवल उसका यह नैसर्गिक प्रेम है। जो इन संसार व्याप्त रोगोंकी एक मात्र रामबाण औषधि है। ये उपरिलिखित विचार मेरे नहीं, जैनधर्मके हैं और हर एक जैनियोंमें स्वभावतः कार्य करते हैं। जैनियोंके शत्रुओंको कोई कहने नहीं जाता।

कि तुम ऐसा करो, ऐसा मत करो, अहिंसा महाव्रत पाओ, हिंसासे दूर रहो। जैन धर्मके प्रकाश होते ही उनके हृदयसे अज्ञानतम चुर-केसे निकल मागता है और उनकी ज्ञानकली स्वभावतः ही स्फुटित हो जाती है और उसमें नैसर्गिक प्रेम घुस जाता है। यह बरवान किंवा मधुर सुखादु अमृत फल कीन देता है? बही स्वभाविक प्रेमवाला पूर्ण-एष्टकी-प्रेम-प्रचारक "जैन धर्म" हम कह सकते हैं कि जैन धर्ममें नैसर्गिक प्रेम नहीं है? कदापि नहीं। जैनियोंमें ये इच्छाएं स्वभावसे ही व्याप्त रहती हैं।

इसी कारण (जैन) लोग पर्युषण-पर्व और अन्यान्य धार्मिक अवसरोंपर लाखों रुपया व्यय कर पशु, पक्षियोंको छुड़वा देते हैं। किसी कराहते प्राणीके शब्दसे वाण व्यवहितसे होजाते हैं और सदैव यह कामना करते रहते हैं कि उसके हृदयको शांति मिले, उसे सुख मिले। मानारमान सहनेकी क्षमता, उदार विचार, स्वभावसे ही सद्गुणी होना, मांस, मदिरा आदि अमक्ष्य मक्षणसे दूर रहना। इनका त्याग मनुःभृतिमें भी बतलाया है। वे सब विचार जैनधर्मके ही ऊगाकक हैं। पर हाय! (लिखे बिना नहीं रह सकता) हमारे जैन समाजकी क्या दशा होगई? कहाँ गया हमारा वह "विश्वप्रेम" का अन्नदायक जैन धर्म? इसकी अवस्थापर अब अश्रुश्रवित करनेके और कोई उपाय नहीं सुझता। हम लोग कितने क्रियाहीन होगये। कितने अनेक्य-देवीकी शरणमें मग्न हो अपनेको सुखी समझ रहे हैं। उसे चारों ओरसे खींच कर अस्तव्यस्त कर रहे

हैं ? हमारा दुर्भाग्य ! किंतु हमारे दोबोसे हमारे धर्ममें कोई कांछन नहीं लग सकता । वह अपना कार्य अभी तक करता चला जाता है । हम कारर उससे काम उठाएँ या नहीं, यह हमपर निर्भर है । जैनियो ! यदि जब भी आपमें स्वधर्म प्रेम है तो ठठो और विश्वप्रेम, सच्चे स्वाभाविक प्रेमकी विगुल बनादो ।

जब हम इसे भक्तिके कंटेपर चढ़ाते हैं और देखते हैं कि यह कितना भारी है । प्रथम हम इसकी भक्तिको " आदर्श पुरुषों " के फिर "साहित्य"के फिर "जैनधर्ममें व्याप्त भावों"के एवं अंततः "जैनियोंके धार्मिक दैनिक कार्यों"के बलोर परल अन्य मतोंकी बातोंसे तोलेंगे और देखेंगे कि इस भक्तिकी कितनी मात्रा है ।

इसके आदर्श पुरुष तीर्थंकर भगवान मुनिगण आदि हैं । जो प्रथम-पूज्य एवं प्रातःस्मरणीय हैं । इनकी चारित्र्यकोषना ? इनके चारित्र्यमें यह भक्ति उत्पादक भाव है जो अपनी ओर आकर्षित कर लेता है । उनका महान् चारित्र्य उनकी कष्ट, विघ्न-बाधाकी सहनशक्ति बड़ी ही अनौत्सी है । उनका अपूर्व आत्मत्याग । इनपर विचार कर जैसे एक पत्त भी उनके परार्थ भावोंकी नेत्रोंसे षट्कोदन करोर हरधमें तो भक्तिओत उमड़ बढ़ता है । ऐसे देवाधिदेव हमें किस मतमें मिर लौ हैं । त्रुटि रहित, परि- यह सहनशील, आर। और चारित्र्य उनका प्रेसा है जिससे भक्ति सहस्रों धाराओंसे प्रवाहित हो निकल पड़ती है । दे व, महादेव, इन्द्रादिसे उनकी तुलना उन " शुभ्रम " की कैसे कर सकते हैं ? ।

हमारे देखमें ही नहीं संसार भरमें सदृशों नेता हैं । सभी कुछ न कुछ देश कार्य करते हैं, क्रिया है तथा करेंगे, परन्तु महात्मा गांधीका शुभ नाम स्मरण करते ही क्यों तनसे विलुप्तसी स्फूर्ति होने लगती है ? इस नाममें ऐसा क्या चमत्कार है ? कुछ हज्जी और मांसा-दिके संग्रहमें कहांका मादू भरा है ? बात यह है कि यह उनका अपूर्व आत्मत्याग है जो लोगोंको उनके नाम स्मरणसे गदगद कर भक्ति कुण्डमें स्नान करा देता है । निष्कषं यह निकलता है कि जैन साधुओंमें अन्यान्य साधु-ओसे और अधिक पर-स्वार्थ कामना है । तर फिर इप बांटसे भी जैनधर्ममें भक्तिकी मात्रा अधिक है और बहुत अधिक है ।

जब साहित्यके बांटसे तीळिये । साहित्य उसके कवियों और लेखकोंपर निर्भर है और उनके विचार उनके धर्मपर अवलंबित हैं । अन्य मतावलंबी कवियोंने भी अच्छी भक्तिकी महिमा उनकी कृतिसे प्रकट की है । पर उनमेंसे बहुत ऐसे हैं जिनने " श्रृंगार " हीको अधिक अग-नाया है । उन लोगोंने भू-विशेष, कटाक्षवि, हावभावमें ही अपनी प्रतिभा-प्रदर्शित की है । यद्यपि जैन कवियोंने गो० तुकसीदासजी सदृश उपमा और हरकों व उच्च भाषामें; केसवदास सदृश उत्प्रेक्षाकंकार आदि अलंकृत भाषामें, देव सदृश भधुर भाषामें, अपने भाव प्रकट नहीं किये हैं । उनने सरल व सीधी भाषामें अपने विचार प्रकट किये हैं । जिसमें सर्व साधारण समझ सकें और काम उठा सकें । तथापि ये साहित्यिक

प्रतिभा एवं प्रखर बुद्धि विषयक विषय और भाषा इन कवियोंमें भी जागई है ।

कविवर वृन्दावनदासजी, बनारसीदासजी तथा भूपरदासजी आदि जैन विद्वानोंकी कविता देखके क्या हम कह सकते हैं कि इनकी भाषा अति अलंकृत न होनेपर गो-स्वामीजी मद्दश वरुणापूर्ण या भक्ति उत्पन्न कर नहीं है ? उनके ग्रन्थ अन्यान्य जैनोत्तर कवियोंसे किसी दशाभी हीन नहीं समझे जाते । हां उनमें कई कवियोंने अच्छी भक्ति प्रदर्शित की है जो सराहनीय है । तुलसीदासजीके पद और कवित्त मुरदासजीके पद, रामस्वामिके मंत्रैये, मीराबाईके पद अबश्य भक्तिमें सर बोर हैं । किंतु उदाहरण स्वरूप, 'हे दीन-बंधु श्रीपति करुणानिधानजी, अब मेरी क्या बयों न हरी बर बयों लगी ।' बाळा छंद (विन्ती) क्या उनकी समता नहीं कर सक ? कितना अश्रुत एवं भाव है । कितनी हृदय-स्पर्शी मार्मिकता है ? मन कितना भक्ति रससे उमड़ उठता है ? " पशु पतित प्रावन में जपावन, चरण आयो शरणजी " बाळा पद कितना हृदयको छूता है ? करुणा—रस शरीरसे बाहिर निकलना चाहता है । जब भगवानके सम्मुख खड़े होकर एक चित्तसे, भगवानमें मन लगाकर इसी विन्तीकी पढ़ते हैं, ऐसा मालूम होता है उसके एकर शब्दमें जादूकासा अंतर भरा हुआ है ।

जब यह उच्च स्तरसे पढ़ते हैं तब तनकी सुष नटी रहती । वह श्री जिनेन्द्र देवमें इस प्रकार

तकलीन होजाता है जैसे साधारण लोग विषय वासना राग रंगोंके कार्योंमें मग्न होजाते हैं । "श्री-पति जिनवर करुणावतनं दुखहरण तुम्हारा बाना है । मत मेरी बार अबार करो मोहि देहु सकक कर्याणा है ।" यह क्या किसीसे कम है ? मुझ इसके भावोंको समझानेमें असमर्थता दिखलाता है । गद्यमें तो जैन साहित्य भक्तिमें बहुत ही जागे बढ़ गया है । जहां देखो जिनेन्द्र भगवानकी भक्ति ही भक्ति दिखाई देती है ।

तीसरे—जैन धर्म भी ऐसे उच्च, उदार विचारों एवं सिद्धान्तोंकी नीवपर स्थिर है कि भक्ति आप ही आप स्फुरित होजाती है ।

उपके विषय विचार केवल कह कर नहीं प्रकाशित किये जासकते । जैसाका तैसा स्वक-पका कहना जैन धर्मका भाव है । समानताका व्यवहार इसी धर्म-मालिककी संपदा है । देखके जय भागमें इस विषयपर प्रचुरतासे लिख दिया गया है । अन्यर धर्मोंमें इतना दयाभाव, प्रति-पाणी पर नहीं जितना जैन धर्ममें है । वे " पूर्ण " को नहीं मानते जैसा जैन धर्म । वे उसके कुछ अंशको ही मानते हैं । इसलिये जैनधर्म सब जीवोंको प्रिय है । निष्कर्षतः उसही सर्वप्रियताके कारण उसमें भक्ति उत्पन्न होती, समवेदनात्मक विचारोंके कारण वृद्धि पाती और उसकी महत्ता एवं गहनताके कारण अपने उच्च स्थान तक पहुंच जाती है ।

जब जैनोंके धार्मिक दैनिक कार्योंमें दृष्टि-पात कीजिये जैसा कि जैनधर्म उन्हें करनेको प्रेरित करता है । सूर्योदयके कुछ समय पहिले

क्षेप्या परिश्रम करना । पीछे सामायिक करना ।
 आत्म चिन्तन कर उसमें जैनी लोग वा
 सामायिक कर्ता क्या विचार करता है ?
 हे पशु । मेरा सब जीवोंमें समान हो । मेरा
 कोई शत्रु न हो । मैं किसीसे शत्रुता न रखूँ ।
 मेरे भाव विचार शत्रुमें भी उसके कामके हों ।”
 कहा ! ऐसे विचारदातामें भी भक्ति न उत्पन्न
 हो ? कभी संभव है ? पशु त शौचादि क्रियासे
 निवृत्त हो स्नान कर भगवानकी पूजा तथा
 दर्शन निमित्त गृहसे पर्यटन करना । उस समय
 शरीरकी संपूर्ण इंद्रियां एकत्रित हों । मन केवल
 भगवानके चरणारविंदोंमें लगा हो । तत्पश्चात्
 बड़े भक्तिभावसे दर्शन करना । पूजा करना ।
 फिर दिनभर सत्य पूर्वक अपना व्यवसाय कार्य
 करना । साधारण वस्त्र, पवित्र सादगीयुक्त
 जीवन, छांत परिणाम, मित्रभाव रहना ।

यह निश्चित है कि जो मनुष्य जैसा सुनेगा,
 जैसे व्यक्तिका चरित्र पढ़ेगा या जैसी वस्तु
 देखेगा उसका प्रभाव उसपर अवश्य पड़ेगा ।
 जैसे यदि कोई मनुष्य नेपोक्रियनका जीवन-
 चरित्र पढ़ेगा तो उसमें वीरताका संचार होगा ।
 म० टःल्टायका जीवनचरित्र पढ़ेगा तो दया
 भावका, या यदि किसी डाकूका चरित्र पढ़ेगा
 तो उसकी प्रवृत्ति उसीकी और दौड़ेगी । इसी
 प्रकार यदि कोई मूत्र या क्षिपी अन्य पशुका
 चित्र देखेगा तो उसका हृदय अथवा कांप
 उठेगा और वहां मनुष्य यदि किसी गायका
 चित्र देखेगा तो उसमें भक्तिभाव विकसित
 होगा । यही कारण है कि जैन मुनियोंमें और

जैन प्रतिमाओंके देखनेसे उनमें भक्तिका संचार
 होता है । त्याग दृश्य सम्पुल आ उपस्थित
 होजाता है और यही इच्छा रहती है कि भक्त
 बन सदैव सेवा किया करें । पर और २ कुलप
 मूर्तियों और देवोंको देखनेसे घृणासी उत्पन्न
 होती है । उनमें भ्रद्धा हट जाती है । पूज्य-
 भावका विस्मरण होजाता है । इन्ही कारणोंसे
 जैनधर्मियोंमें बहुत अधिक भक्ति उत्पन्न होती
 हैं, अपेक्षा अन्य मूर्तियों और साधुओंके ।
 कोई २ यह कहते हैं कि जैनीलोग नास्तिक
 हैं, वे ईश्वरको नहीं मानते । जो किसीको
 मानते ही नहीं उनमें भ्रद्धा कैसे होतकती है ?
 यहां मैं उन्हें यह विस्तरा देना चाहता हूं कि
 जैनी नास्तिक नहीं हैं, वे ईश्वरको जगका कर्ता
 हर्ता नहीं मानते जिससे कि उत्तर अनेक
 दोष आरोपित होजाते हैं । तात्पर्य यह है कि
 जैनधर्ममें भक्ति व प्रेमके उत्पन्न करनेके अनेक
 कारण मौजूद हैं और सच्चे जैनमें नैसर्गिक प्रेम
 व भक्ति होती है ।

जैन व्रतकथासंग्रह—

जिसमें रविवार, रत्नत्रय, दशलक्षण, सोलहकारण,
 भुतस्कंध, त्रिलोक तीज, मुकुट सप्तमी, फलदशमी,
 भवणद्वादशी, रोहिणीव्रत, आकाशपंचमी, कोकिलापं-
 चमी, चंदनषष्ठी, निर्दोषसप्तमी, निःशल्य अष्टमी, सुगं-
 धदशमी, जिनरात्रि, मेघमाला, लब्धिविधान, मौन
 एकादशी, गरुडपंचमी, द्वादशी, अनंतव्रत, अष्टानिका,
 पुष्पांजलि, बारहसौ चौतीस आदि अनेक व्रतोंकी
 कथाएं विधि सहित हैं । शास्त्राकार पृ० १२० पृ० १)

मैनेजर—दि० जैन पुस्तकालय—मुरत ।

देशकी परिस्थिति और जैन समाज ।

(लेखक—पं० बरमेछीदास जैन न्यायतोर्ध-सूरत ।)

भारतवर्षकी परिस्थिति आज भयानक है । गत तीन महीनोंमें जो जागृति आई है वह अमृतपूर्व एवं वर्णनातीत है । इस थोड़ेसे समयमें भारतीयोंने वह काम कर दिखाया है जिसकी स्व-प्रमै भी आशा नहीं थी । महात्माजीके महामंत्रसे प्रभावित होकर काखों वीर हथेलीपर जान डेकर देशकी स्वतंत्रताके लिये बाहर निकल पड़े और सरे आम अपने आत्मबलका परिचय दिया । सरकारने भी दमन करनेमें कमर नहीं रखी । उन निहत्थे सत्याग्रही वीरोंपर काठियां चलाई गईं, थोड़े दौड़ाये गये, गोलीबार किया गया, धोतियां खोक खोककर गुहा भागौर अश्लील आक्रमण किये गये, उन्हें बसीटा गया, पीटा गया और बुरी तरह ठोका गया । मगर देशके लिये मर मिटनेको तैयार हुये वीर दीवाने इस दमनसे कहां पीछे हटनेवाले थे ? वे तो अहिंसाके भरोसे और सत्यके आशरपर डटे रहे । सेकड़ोंके माथे फूटे, हजारों प्रायक हुये और कितनेक वीर इस नश्वर शरीरको छोड़कर अमर हो गये ।

अहा अपने देशके लिये ऐसा बलिदान, इतनी शक्ति और अतुक त्याग होसकता हो, जहां ऐसे २ उपसर्गसहिष्णु वीर मौजूद हों, वहां स्वतंत्रता प्राप्तमें फिर बिकम्बकी कहां संभावना है ?

इधर तो देशके दुकारोंका तैयार होना और उधरसे सरकारका अवैशमें आकर अपने सच्चे स्वरूपमें जानाना, बस यही तो स्वातन्त्र्यके चिह्न हैं । कौन करारना कर सकता था कि एक सम्म्य सरकार यह सब कर सकती है ? सरकारी पुलिस जो हमारी रक्षक कही जाती है, प्रमाका जिसपर भरोसा है (सुना है कि) उसने सोलापुरमें स्त्रियोंपर अमानुषिक अत्याचार किये उनपर बकाहकार (1) किया । और उन्हींके सामने उनके पुरुषोंको नंगाकर काके मारा । ऐसा समाचार ११ जूनकी सत्याग्रह पत्रिका सूरतमें निकला था । अब बताइये कि ऐसी गोरी अत्याचारी पुलिसको प्रमाकी रक्षक कहा जावे या क्या ?

इतनेपर भी बायसगव मांने एक नया फरमान निष्ठाका है कि जो कोई पुलिस या सरकारी अमलदारोंका महिष्कार करे या करावे, अवधा उन्हें रहनेको मकान, खानेपीनेका सामान देरमें जानाकानी करे, अथवा किसी काम करनेमें टाकमटूक करे तो उसे ६ माहकी सजा होगी । अब वहांपर विचार यह करना है कि जो पुलिस हमारी मां बहिनोंकी काज लूटे और ऐमे राक्षसी वर्जन करे, क्या हम उसकी पूजा करें ? स्त्री जातिके सम्मानका दावा रखनेवाली अंगरेज सरकार सोलापुर आदिकी इन नीच घटनाओंपर

विचार करके देखले कि ऐसे समयपर निहत्थी, अहिंसक एवं शान्तप्रभा क्या करे ?

समाचार-त्रोंसे मालूम हुआ है कि राजपुत्रोंमें नदीके जिस घाटपर स्त्रियां पानी भरती हैं उसी घाटपर बेशरम पुलिस नंगी होकर नहाने लगती है ! वहाँके नेता स्त्रियोंको यह कह कर शान्त करदेते हैं कि तुम इन्हें अपना बड़का सम्झकर चुप रहो ।

सच पूछा जावे तो महारमानीके अहिंसक मंत्रके प्रभावसे ही प्रजा इन तमाम बदमाशियोंको शान्तिसे सहन कर रही है, अन्यथा इसका क्या परिणाम जाता सो कुछ कहा नहीं जासکتा । मगर अपनी सचची विजय तो क्षमा, शान्ति और अहिंसामें ही है । इसी लिये लोगोंको इसपर दृष्टे रहना चाहिये ।

प्रजाको इस बातका पुरा भरोसा है कि ज्यों ज्यों अन्धाचार या दमन बढ़ता जावेगा त्यों त्यों हमारी स्वतंत्रताके दिन पास आते जावेंगे । ठोकर लगनेपर लोगोंको कुछ भान आता है । भारतकी प्रजा सैकड़ों वर्षोंसे सोई हुई है, उसके लगानेके लिये इतने ही दमनकी आवश्यकता थी । अब देखवासी होशमें आये हैं, उन्हें अपनी दशाका भान हुआ है । हिताहितका विचार और हेयोपादेयका ज्ञान हुआ है । इसीलिये स्थान २ पर परदेशी बन्ध बहिष्कार और मद्यपान निषेध होरहा है । फल यह हुआ है कि जिन दुकानों पर हजारोंकी शराब निकती थी उनपर अब दस पांच रुपया जाना ही कठिन होगया है । अहमदाबाद जैसे भारी शहरमें तो प्रथकी प्रायः तमाम दुकानें बंद होगई हैं । सरकारने

तो इसपर भी अपना अंकुश लगाया है और जाहिर कर दिया है कि जो कोई शराब ताड़ी बेचने या खरीदनेवालोंको रोकेगा उसे ६ मासकी सजा होगी । मगर स्थान २ पर महिलायें इन कार्योंमें जुटी हुई हैं । उनपर अनेक आपत्तियां आईं, जैक गईं, अमान सहन किया फिर भी वे इन काममें लगी हुई हैं । वे चाहती हैं कि हमारे भाई इस मद्यपानके महापापसे मुक्त हो जावें, जिससे हमारे देशका २५ करोड़ रुपया बचे और चर्मकी भी रक्षा हो । इसमें कोई संदेह नहीं कि स्त्रियोंके इस प्रयत्नसे थोड़े ही समयमें शराब आदिकी एक भी दुकान नहीं रहने पावेगी । और भारतवर्ष मद्यपानके पापसे मुक्त हो जावेगा ।

दूसरा काम स्त्रियोंने परदेशी बन्ध बहिष्कारका अपने हाथमें लिया है । अब तो पुरुष भी इसमें पुरा भाग ले रहे हैं । स्थान २ पर प्रचलित दस्त विकेटिंग चाख है । हाकां कि सरकारने इसपर भी ६ मासकी सजा रखी है, मगर यह काम बड़े जोरोंपर चाख है । कितने ही स्थानोंपर तो गिरफ्तारियां हुई हैं, समामें हो रही हैं, मगर कार्य प्रगतिपर है । इसका अव-रदस्त जसर हुआ है । गत वर्षके अप्रैल मासमें मान्चेस्टरसे मिलना कपड़ा भारतवर्षमें आया था उससे बहुत कम कपड़ा इस वर्षके अप्रैलमें आया है । यह नीचेके आंकड़ेसे स्पष्ट होजाता है:—

	१९२९	१९३०
बम्बई....	२७०,२९१००)	१८८,५१६००)
मदरास....	९९६,८७००)	९६४,५८००)
कलकत्ता....	८८,१४६४००)	४२०,४०१००)

इतनी कमी तो मात्र अप्रैल मासमें ही हुई है । जबकि यह कार्य प्रारम्भ हुआ ही था । मगर गत २ मासमें तो अबरदस्त कमी हो चुकी है । मले ही विदेशी वस्त्रके निषेध करनेवालोंको सजायें हो रही हैं । मगर लोगोंने तो अब विचार लिया है कि हमें कपड़ोंके पीछे परदेशमें जाता हुआ मूले भारतका ६० करोड़ रुपया किमी तरह भी बचाना है । जिन दुकानोंपर सौ दौसी रुपयाकी रोम बिक्री होती थी उनपर आज १०-१९ रुपयाकी भी नहीं होती । बाजारके बजार और दुकानें बंद पड़ी हैं । कितनी ही दुकानोंपर तो कांम्रेनकी सील बंद करके विदेशी कपड़े रख दिये गये हैं । अगर आप पूछें कि लोगोंको एतदम इतने बहिष्कारकी कैसे सूझी ? तो कहना होगा कि सरकारी दमनने जानबूझकर सुझाया । और ज्यों१ अभी दमन होगा त्यों२ लोगोंको अपने हितहितकी बातें मालूम होती जावेंगी ।

अच्छा, तो देशकी आज ऐसी परिस्थिति है । इस विषयमें कुछ जैनियोंसे भी कहनेकी इच्छा है । वह मात्र यही कि इस महायुद्धमें जैनियोंने भी काफी बहिदान दिया है । कितने ही जेठ गये और अनेकों सत्याग्रहियोंमें काम भी का रहे हैं । मगर अभी अपनी आन्तरिक परिस्थिति जैसी चाहिये वैसी नहीं सुबरी है । प्रत्येक अहिंसा प्रेमी जैनका कर्तव्य होना चाहिये कि कमसे कम धार्मिक दृष्टिसे ही वह महा अपवित्र चरनी और अंडेके चेरसे संयुक्त किसी भी परदेशी वस्त्रको हाथसे स्पर्श न करे । अपने जिनालयोंसे ऐसे अशुद्ध विदेशी

वस्त्रोंको निकाल दें । और उस स्थान पर शुद्ध स्वदेशी खादीका उपयोग किया जावे । अपना सारा कुटुम्ब खादीमय होजावे । यदि इतना न हो सके तो अपनी देशी मीठ (जिनमें कि सूत काता और बुना जाता हो तथा जिनकी माक-क्रियत भारतवासीके हाथमें हो) का ही वस्त्र उपयोगमें लावें । घर घर चर्खा और तकली द्वारा सूत काता जावे । अगर विशेष कुछ देख सेवा आप नहीं कर सके तो इतना काम आ-शय करना चाहिये । एक सख देशभक्त स्वदेशके बने चिपड़ेसे जितना प्रेम करता है उतना विदेशके बट्टियासे बढ़िया वस्त्रोंसे भी नहीं कर सक्त ।

जरमनीके एक स्टम्प नामक देशभक्तको जब फ्रांसके सम्र ट् नैरोलियन मोनापार्टने गिरफ्तार करके जेठने रख और जेठरने उसे फ्रांसके बने कपड़े पहिरनेको दिये तब स्टम्पने साफ इन्कार कर दिया और जोरदार शब्दोंमें कहा कि जिन देशके लोगोंने हमारे देशकी प्रताका खूब चूम लिया हो, जिसने हमारे ऊपर अत्याचार किये हों, हम उस देशकी प्रताके हाथके बने कपड़ेको स्पर्श भी नहीं कर सके । मुझे जरमनीसे कपड़े मंगाये जावें तो ठीक, बरना मैं विदेशी वस्त्र पहिरनेकी अपेक्षा नंगा रहना पसंद करता हूं । वह स्वदेशाभिमानी कितने दिनतक नग्न रहा, आखिरकार उसे इसी इठके कारण फांसीका हुकुम सुनाया गया ! उस वीरने हंसते२ इस स्वीकार किया और फांसीपर लटकते हुये बोला कि जरमनी ! जरमनी !! मेरा प्यारा देश जरमनी !!! आज

मैं जाता हूँ, अपने देशके लिये प्राण समर्पण करता हूँ, मगर मरनेपर मेरा कफन मेरे प्यारे देश जरमनीका ही मगाया जावे । मेरे मुर्दा शरीरको भी परदेशी बस्त्र स्पर्शित न कराया जावे ! अन्तमें यही हुआ । जरमनसे कफन मगाया गया और देशभक्तिकी कदर करनेवाले सम्राट् नेपोलियनने स्वयं उसका अंतिम संस्कार किया ! यह है स्वदेशाभिमान ! इसे कहते हैं देशभक्ति !!

क्या इस आरुधानसे हमें कुछ शिक्षा लेना चाहिये ? जब एक देशभक्त अपने देशी बस्त्रके लिये सत्याग्रह करनेके अपराधमें फांसीपर लटकवाया जाता है, और फिर भी वह मरते-अपने कफनके लिये देशी कपड़ेकी मांग करता है, तब क्या हमें अपने देशके ही बने कपड़े उपयोग करनेमें महत्त्व न समझना चाहिये ? आपको मालूम है कि परदेशी कपड़ोंकी दुकानोंपर पिकेटिंग करनेवाले अनेक स्त्री पुरुष जेठ जारहे हैं । यदि आप स्वयं विदेशी बस्त्रोंका बेचना और पहिरना छोड़ दें तो अपने भाई बहनोंको न पिकेटिंग करना पड़े और न कारावासके कष्टोंको सहन करना पड़े ।

दर्पका विषय है कि अनेक स्थानोंपर बनानेने विदेशी कपड़े न मगाने और न बेचनेका नियम लिया है, र्बनियोंने न सीनेकी प्रतिज्ञा की है और रंगरेजोंने न रंगनेका विचार कर लिया है । ऐसे समयमें भारतवर्षके तमाम जैनियोंको भी इन अपवित्र बस्त्रोंसे मोह छोड़कर देशके बने हुये शुद्ध बस्त्रोंका उपयोग करना चाहिये । ग्राम ग्रामकी पंचायतें मिलकर इस देश व धर्म-

रक्षक कार्यमें यदि भाग लेंगे तो दुखिबा भारतकी स्वतंत्रतामें बहुत कुछ सहायता मिले । अपने देव मंदिरोंमें विदेशी बस्त्रोंका होना और उनको पहिनकर दर्शन पूजन करना एक पाप समझना चाहिये । इसी लिये देहलीके जैन मंदिरोंमें सत्याग्रहियोंने धरना दिया है और देशी बस्त्र पहिनकर ही अन्दर जाने देते हैं । इससे सबको शिक्षा लेना चाहिये, जिससे कि अपने भाई स्वयं दुखी न हों ।

जिसके लिये देशके बस्त्रों वीर मरनेको तैयार हुये हैं उसके लिये क्या आप इतना भी नहीं कर सकेगे ?

बाह्यरोय महोदयने भी इस बातको प्रगट किया है कि स्वदेशी उद्योगको उत्तेजन दिया जावे, लोग स्वदेशी चीजें ही उपयोगमें लावे और उसके लिये दूसरोंको भी शान्तिके साथ प्रेरित करें तो कोई अपराध नहीं कहकावेगा । जब ऐसा ही है, तब तो आपको इसके अनुसार कार्य करना चाहिये । मात्र स्वदेशी बस्त्र नहीं, किन्तु जो वस्तु भी देशी मिलसकी हो वह विदेशी न खरीदी जावे । यही सच्ची देशभक्ति है । जो भाई इस बातको लेंगे या जो पंचायत इसका निश्चय करे, यदि वह "दि० जैन आफिस सूरत" के पते पर लिखकर भेजें तो दिगम्बर जैनमें प्रगट किया जावेगा ।

सिद्धक्षेत्रपूजासंग्रह ।

सभी सिद्धक्षेत्र व अतिशयक्षेत्रकी पूजाएँ मू. १।)

सूर्यप्रकाश (नवीन शास्त्र) २)

मैनेजर, वि० जैन पुस्तकालय-सूरत ।

शिक्षा कैसे होना चाहिये ?

(लेखक—पं० रविन्द्रनाथ जैन न्यायतीर्थ ।)

संसारमें गिरना और उठना जर्बात पतन और उत्थान सदैव हुआ करता है। मनुष्य अपनी समुच्चति प्राप्त करनेके लिये भरसक प्रयत्न करता है पर फिर भी उसमें झुट्टि रहनेके कारण सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है। यदि उस झुट्टिको समझकर निकाल दिया जाय तो संभव है कि मनुष्य अपने कार्यमें सफल होवे। कृपिका बाक्य है:—

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ।
द्वेनेन देयमिति कापुरुषाः बहन्ति ॥
देवं निहरय कुरु पौरुषमात्मशाक्त्या ।
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः ॥

जैसे पशुओंमें सिंह राजा होता है वैसे ही जो उद्योगी है वही पुरुष सिंह (पुरुष श्रेष्ठ) है और उसके ही लक्ष्मी प्राप्त होती है और 'मागधके बरपर जो होना होता है वही मिलता है।' ऐसा कहनेवाले काबर पुरुष होते हैं। आवश्यक यह है कि बैबपर कात मारकर शक्तिके मुताविक कोशिश करो। यदि फिर भी कामयाबी न हो तो सोचो कि इसमें क्या झुट्टि मौजूद है। वस उसको निकालकर फेंक दो। अवश्य ही अपने कार्यमें सफलता मिलेगी।

कुछ काक पूर्व जर्बात इस्वी० १८वीं सताब्दीके मध्य हमारे भारतके नरपुंगवोंने अपने देशको समुच्चत बनानेके लिये शिक्षाका अनि-

वार्य होना आवश्यक समझ करसे हमारे देशमें पाश्चात्य विद्याको मुख्य स्थान दिखानेका प्रयत्न किया है, तबसे वह तो जरूर हुआ कि हमारे देशमें स्वाधीनता प्राप्त करनेकी आकांक्ष गंगा दिनोदिन बढ़ने लगी है। हम भी माईको माईकी दृष्टिसे देखने लगे हैं, पर जिससे कि करीब ९०० वर्षसे गुलाम देशको स्वाधीन होनेकी धुन सवार हुई है, पर इस देशने जिन देशोंसे स्वाधीनता पानेकी शिक्षा पाई है उनका अभी इसने बहुत ही थोड़ा अनुकरण किया है या यों कहिये कि हमारे पूर्वजोंका अनुकरण तो वह बहुतसा कर चुके और थोड़ेही समयमें अपने देशको बनबक विद्या बुद्धिसे परिपूर्ण अपना सिर ऊंचा कर रहे हैं पर हमारे भारतमें ज्यों ज्यों शिक्षा बढ़ती जाती है त्यों त्यों दासताके फंदेमें फंस रहा है।

जहां हमारे पूर्वज अपनी आजीविकासे निश्चित हो धर्म साधन कर मुक्तिका उपाय ढूंढते थे वहांपर आज शिक्षित लोग जीविकाकी चिंतामें फंस धर्म कर्मको दुबा दीन बनकर नौकरी खोज करते हैं परन्तु उसमें भी निराशाकी झलक देखकर जीवन विसर्जन कर देते हैं। कारण इसका सिर्फ यही है कि हम आर्य बननेके उसूलोंको मूक बैठे हैं।

श्री पुत्र्य गुरुवर्य पं० बंशीधरजी न्यायालंकार
हन्तौरने एकबार कर्तव्योपदेश देते समय बताया
था कि “मनुष्यको आवश्यक सब कार्यों-
मेंसे किसी एकका आलंबन कर प्रयत्न करना
चाहिये, व्यर्थ चिन्ता न करना चाहिये ।”

हमारे पूर्वोक्तोंने भी आर्यकी ठाकर्या करते
समय बताया है कि जो असि मसि कृषि सेवा
शिक्षण वाणिज्य इन षट्कर्मों को करें वह आर्य हैं ।

अतः यदि हम पूर्वोक्त वाक्यको ध्यानमें लाकर
कार्यरूपमें इसे परिणत करें तो अवश्य
मनुष्य जीवन सुखी हो जावे पर इसपर
कोर्गोंका ध्यान जाता कहां है ? केवल
षट् कार्योंको मूल सच्ची झूठी सिद्ध कर बन
कमानेका ही सिलसिला जारी कर रक्खा है ।
गरीब जनता भले ही भाड़में जाय उसकी
सुनता ही कौन है ? कुछ महापुरुषोंका ध्यान
इस ओर गया भी है और वे गरीब जनताको
आदर्श बनानेमें लगे हुये हैं । देखें कैसी सफलता
मिलती है ।

वर्तमान जमानेके पुरुषोंके चेहरेपर वीरताका
भाव तो कोसों दूर रहा पर चिन्ताके कारण
सुलकर फांटे हो रहे हैं । अगर एक बच्चा जोरसे
दिवा जाय तो जमीनपर जा गिरे ।

(१) इसलिये सर्वे प्रथम चिन्ताको दूर कर
शरीर ठीक बनाना चाहिये ।

“ शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनं । ”

अर्थात् धर्मका भी मूल कारण शरीर है । अतः
शरीरको ब्रह्मचर्य पूर्वक दृष्टपुष्ट बनानेकी शिक्षा
प्रत्येक प्राणीको देनी चाहिये ।

(२) किसी भी कार्यमें प्रयत्न करनेपर ही
सफलता मिलती है, व्यर्थ चिन्ता करनेसे कार्य
विगड़ जाता है ।

किसी कविका वाक्य है कि:-

यह चिन्ता चितासे बढ़कर है,
धुनके समान लग जाती है ।
मुरदेको चिता जलाती है,
चिन्ता जीतेको खाती है ॥

आर्यशिक्षा ।

आर्यशिक्षा ९ प्रकारकी है-

१ असि (शस्त्रविद्या), २ मसि (लेखनविद्या),
३ कृषि (खेती करनेकी शिक्षा), ४ सेवा (नीच-
रीवृत्ति), ५ शिक्षण (नाना प्रकारकी आवश्यक
चीजें तय्यार करना), ६ वाणिज्य (स्वदेश और
विदेशसे नाना प्रकारका व्यापार करना) । मनु-
ष्यका शैशवकाल ५ वर्षतक रहता है । छठे वर्षमें
बाळको असि शिक्षाका प्रारम्भ करना चाहिये ।
वास्थावस्थामें शरीर क्रोमक होनेसे नाना प्रकार-
से आसन लगाकर असि शिक्षा अवश्य देनी
चाहिये । असि शिक्षाके लिये प्रारम्भसे सेना
आदिमें न भेज द्रोणाचार्य सदृश गुरुओंके पास
शस्त्रशिक्षा देनी चाहिये ।

अर्द्धे शस्त्रस्य शास्त्रस्य द्वे विद्ये प्रतिपत्तये ।

आद्या हास्याय वृद्धत्वे द्वितीया त्रिपते सदा ॥

शिक्षाके प्रारम्भमें मनुष्यको शस्त्रविद्या और
शास्त्रविद्या जानना चाहिये शस्त्रविद्या वृद्धाव-
स्थामें हास्यास्पद होती है और शास्त्रविद्या
सदैव आदरणीय होती है । यहाँपर सर्वे प्रथम
शस्त्रविद्या पढ़ना बताया है, बादमें शास्त्र विद्या ।
यदि शस्त्र विद्या पहिले अभीष्ट नहीं होती तो

“ भावी शास्त्रस्य शस्त्रस्य ” ऐसा कह देनेपर नीतिकारोंको तो शस्त्रविद्या ही अभीष्ट थी । यद्यपि वृद्धावस्थामें वह हास्यास्पद होती है, अर्थात् जिस समय शस्त्र उठानेकी शक्ति नहीं उस समय शस्त्रविद्यासे कार्य नहीं चलता ।

कहनेका तात्पर्य यह है कि षट्कार्योंमें शस्त्र-विद्या ही मुख्य है । यदि शस्त्र चढाना जानते होंगे तो आसतायियोंसे अपने स्त्री पुत्रादि तथा देव गुरु शास्त्र धर्मकी रक्षा कर पावेंगे अन्यथा नहीं । देखिये भारतवर्षका इतिहास काला काल पतराय कृतः—

“पांड्य देशके राजाने रामानुजाचार्यकी आज्ञासे ८००० जैनियोंको वैष्णव न होनेके कारण मरवाया था ।।।”

महमूद गजनवीने जब सोमनाथकी मूर्तिको तोड़ा तो उस समय देवकी रक्षा क्यों न हो पाई ? कारण सिर्फ नाताकती अथवा शस्त्र-विद्याका न जानना ही है ।

महमूद गजनवी मथुरा और कन्नौजमें अदमी पकड़कर लेगया और कन्नौजमें प्राकर २) ६० की आदमीको बेचा, इसका क्या कारण था ? और कुजेवने इतनी देवमूर्ति तोड़ी इसका क्या कारण था ?

धर्मजीके सामने तमाम राष्ट्रोके संघियत्र रसे रहे पर उसने अपनी इच्छानुसार बेकजियम जादिपर बाबा किया, इसका क्या कारण था ? क्यों बेकजियम अपनी रक्षा न कर सका ? कारण एक अच्छी तरहसे शस्त्रविद्याका न जानना । अब दूसरी ओर भी दृष्टि डालिये—वीर नैयो-कियनने कैसे फांसका ताप पाया ? केवल

शस्त्रविद्याके बरकर ही न ? अर्जुनादिने कैसे कौरवोंको मीता ? शस्त्रके बर कर ही न ? राम जंगलमें अकेले थे पर रावण स्त्रातूपणको कैसे मारा ? केवल शस्त्रविद्याके बरकर ही ।

प्रताप शिवानी कौन थे जिन्होंने अकेले होकर भारतके सम्राटोंकी नाकमें दम कर दिया था ? कहनेका मतलब यही है कि रामको वसिष्ठके पाप पांडवोंको द्रोणाचार्यके पास इत्यादि गुरुओंके पास शिक्षा दीगई थी जिससे कि वह भावी जीवनमें निश्चित हो स्वच्छन्दतासे कार्य कर सके । इतर हमारे जैनियोंमें अन्य धर्मवालोंके आघातके मयसे उनमें मिले रहनेके किये त्रिब-र्णाचारादि ग्रन्थोंमें उनके ही धार्मिक सिद्धान्तोंको भर लिया । यद्यपि उस समयकी अपेक्षा यह ठीक था, क्योंकि बनिये शस्त्रविद्या जानते नहीं थे तब कारते ही क्या ? उनके मुंहसे तोः—

“बनिये की नीची और फिर नीची” वाली कहावत चरितार्थ होरही थी । अस्तु, यदि हमें अपने जीवनको सुखमय बनाकर रखना है तो अपने बचावके किये अवश्य प्रयत्न करना होगा और वह शस्त्रविद्याके द्वारा ही होगा ।

शस्त्रविद्यासे कोई खास शस्त्रविद्यासे अभिप्राय नहीं है किन्तु अस्थाके अनुसार काठी, तक-बार, धनुष, बंदूक, चक्र, बरछा, क्यूह प्रवेश आदि अवश्य सीखा जाय । साथहीमें शास्त्रविद्याका भी अभ्यास कराना चाहिये । यद्यपि लोग कहेंगे कि दो काम एक साथ कैसे होंगे ? इसके किये यही कइना पर्याप्त होगा कि—

दिन रातके २४ घंटेमेंसे सुबह ९ से ८ और शाम ६॥ से ९॥ तक ६ घंटा प्राथमिक

शास्त्राभ्यासके पठन और अध्ययनके लिये पर्याप्त होंगे ।

९ वर्ष उपरान्त बाळकोंको नगर बाहर स्थापित गुरुकुलमें भेजकर ब्रह्मचर्य पूर्वक उत्साह बताते हुये योग्य शिक्षकों द्वारा विद्याभ्यास कराया जावे तो संभव है ६ वर्षमें बाळक शास्त्र विद्या और शस्त्रविद्या दोनोंमें निपुण होजावे ।

शस्त्रविद्याके लिये प्रातःकाल ८ से सायंकाल ६॥ तकमें किसी भी समय ४ घंटा समय निकाला जासकता है और उसमें बाळकोंको कोई बहचस भी उपस्थित न होगी ।

उनको राम अर्जुनकी तरह जंगलमें भेजाकर प्रकृतिका निरीक्षण कराते हुये भक्ती भांति शिक्षा दीजानी चाहिये । वर्तमानके टेनिस आदि नाजुक मिजाजी खेलोंमें समय बिटानेसे कोई अपने बचावके लिये शिक्षा नहीं मिलती अतः इनमें समय न बिताकर शस्त्र और शास्त्र-विद्या दोनों प्रारंभसे ही पढाना चाहिये ।

शस्त्र विद्यासे सम्पर्क किसी स्थास विद्यासे नहीं है किन्तु कोई भी विद्या अथवा १ या ३ विद्याओंका भी अध्ययन एकसाथ होसकता है ।

वर्तमान समयमें १५ सालकी उमरतक यदि कैल न हुआ तो बाळक हिन्दी पढता है, बादमें संस्कृतमें आचार्य और अंग्रेजीमें एम० ए० आदि होते होते १० वर्ष और व्यतीत होजाते हैं । इसपरकार १५ सालके करीब अवस्था हो जाती है । यदि कैल होगये तो पूछना ही क्या है ? न जाने कितनी अवस्था पूरी होने तक चढ़ना होता है । गरम यह कि पढ़ते-१ जीवन

गौनभाग व्यतीत होजाता है, क्योंकि वर्तमान समयमें अधिकांश १० से ऊपर नहीं जाते । बाद पढ़नेके आजीविका जमानेमें कुछ समय लगता है, नस जीवन योंही बरबाद होजाता है ।

और यदि जीविका न लगी तो रेजों आदिके तले दबकर आत्मघात किया जाता है ! अतः यदि सचमुचमें हमें आर्य बनना होतो सर्व प्रथम शास्त्र विद्याके साथ शस्त्रविद्या अवश्य सीखना चाहिये । साथ ही साथ प्रत्येक छात्र-ओंमें औद्योगिक शिक्षा भी अनिवार्य रखी जाना चाहिये । अन्यथा शिक्षा प्राप्त करनेके बाद बुरी तरह जीवन व्यतीत होता है ।

युवकोंके प्रति ।

अय नौजवानो चेतो किस नींद सोरहे हो ।
खो करके सारी इज्जत किस ओर जारहे हो ॥
संख्या तुम्हारी देखो दिन दिनमें घट रही है ।
लेते खबर नहीं तुम किस पन्थ जारहे हो ॥
देखो तो रूढ़ियोंने किस भांति घर बनाया ।
नीचे गिरा दिया है क्यों गिरते जारहे हो ॥
माई मरें या जीवें तुमको फिर नही है ।
आपसमें फूट करके सबको हसा रहे हो ॥
यह पक्षपात देखो भूतो सा चढ़ रहा है ।
पढ़ करके फन्दे इसके विपदाको पारहे हो ॥
सोते रहेंगे अब भी अय जैन जाति वीरो ।
यह जैनधर्म उज्वल नाटक लजा रहे हो ॥
आओ हे माई देखो चेतो जरा तो सम्हलो ।
ये 'चन्द्र' समय सुकीरत नाटक लजा रहे हो ॥

लक्ष्मीधर जैन,

सतर्क विद्यालय-सागर ।

આપણી સ્ત્રી (૨)

(લેખક:-રમણીક વી૦ શાહ-મુંબઇ)

શરૂઆત તો કરી, પરિસ્થાનનું તો મૂકેને બાનબ હવું. લોકો શું કહેશે અને શું બોલશે તે મૂકેને ખચકાત હતી. અરે ભાઈ-દરેકને ખચકાત પડે, કારણ આપણા લોકોનું પાણી કંઈ ઉંડું નથી, ઊંઘરું છે. પથથી ઝાળાંથી સંક્રામ, તરવાની બચાવ નહિ. 'આપણી સ્ત્રી' ના મહાળા ત્રિવિધ મહેલખવા માંડ્યું. પ્રથમકે ઇલાયો ત્યાર પછી તે--" એમાં એણે શું લખ્યું છે ? નવરાં બેઠાં કંઈ સુઝે નહિ એટલે ચીતરી કાઢ્યું--આ તે કંઈ લખવાની કૌશી છે ? નેટલું બોલતાં આવડે છે તેટલું લખતાં આવડતું નથી. હવે ભાઈને પરણવાનું આન્યુને ? એટલે પહેલેથી તૈયારી કરવા માંડી નહિતો લગ્ન અને સોનું ઉચ્ચારવાની પણ શી બચરાત હતી ? " આવાં આવાં વાક્યોનો ખવની મહારા કાને પડ્યો. વાક્યો બોલનાર મહારી પાસે તો બોલેજ નહિ. કારણ બે, એક તો એ કે કોઈના વિષે કંઈપણ બોલવું હોય તો તે તેની સંસ્કારીમાં ત્રીજા માણસની આગળ બોલવું એ આપણા લોકોનો જ-મસિદ્દ હુંક અને રિવાજ. અચારી ખીનું કારણ એ કે હું બહુ નાનો છું.

મૂકેને કોઈ કહે નહિ કારણ યુદ્ધ ઉદ્ધત કહેવાય. મગજ પાડેલું (વિચારોથી પરિપૂર્ણ-પરિપક્વ) નહિ-મૂકે સંસારની લીલીસુકી જોયેલી નહિ. અરી વાત છે. અને ખરી વાત છે. મૂકે કંઈ બહુબળું નથી. અરે પણ બલા ! તેનો અર્થ એમ થતો હશે કે મહારા લેખ ખાખતની ખીજાએ કહેલી મહારી બુલો-ખીજાને કરવી પડતી ટીકાએ ખીજાને બોલવાં પડતાં આવા બકવારો મૂકેને ન કહેવાય ? " હું બહુ નાનો છું " એનો અર્થ એમ થતો હશે કે એકના વિષે ખીજાએ ત્રીજા સાથે વાત કરી જાનંદ માનવો ! હું નથી ધારતો. અને વાંચકો ! તહેજેલું શું ધરો છો ? તમારી પોતાનીજ વિવેક યુદ્ધિથી (By

the real sense of discrimination) મૂકેને કહે છે તે માણસો, જે ખાવો ખીન પાયેદાર નકામો છતાં ડહાપણનો-પણ લાવારો કરે (કારણ કે તેઓ તેને ડહાપણ ગણે છે) કાણ કહેવાય ? તેમની યુદ્ધિનું માપ કેટલું ? મૂકે કહ્યું તેમ આપણા લોકોનું પાણી છીછરું ને !

મિત્રો અને મહારો આશય:-મૂકે સાંભળ્યું કે કેટલાક તો લેખ વાંચીને-અરે વાંચતાં વાચતાં પણ દરમા. આ પણ મૂકે ધાયું હતું તેમજ. સહેજેજ ઉડો વિચાર કર્યો હોત તો માલમ પડતે કે મહારો લેખ કદા આજકાલની પરિસ્થિતિનો ચિતારજ છે. મહારો લેખ એકલાં બલેલાંજ વાંચે એવી મરજ નહોતી. ('બલેલાં' નો અર્થ અહિંયા હું શહેરમાં વસતાં દિગમ્બર જેનો અને વધારામાં તેઓ કે જે પોતાની જાતને બલેલા, આગળ પડતા હોવાનું કહેવાની અભિમાન લે છે) મહારો આશય આપણી યુજ-રાતી જનતાની એકેએક સ્ત્રી વાંચે તેવો હતો. દરેક સ્ત્રી પોતાનુંજ ચિત્ર છે એમ બે ધડી કટ્ટી શકતે અને જે પોતાનું મન યુદ્ધ હોત તો પોતાના વિચાર મૂકે કહ્યું તેમ સુધરી શકત.

હજી પણ વખત મયો નથી સુધરી શકાય તેમ છે. મિત્ર તરથી મૂકેને સવાલ પૂછવામાં આવ્યો કે લેખની લાખા આવી કેમ ? મૂકે કહ્યું-એવીજ હોય. મહારા શબ્દો નથી પણ અસુક ખેરાઓનાજ છે. મહારી લાખામાં લખું તો ખેરાં-એને મજા ન પડે. મહારો તો ખેરાંએને લેખ વંચાવવો હતો. તે ન વાંચે તો પરાણે વંચાવવો હતો. ' મૂકેને મહારા મિત્રોપર સંપૂર્ણ વિશ્વાસ છે. જેને મિત્રોએ તે લેખ વાંચ્યો હશે અને આ ખીજા લેખો વાંચશે તે સર્વેને હું વિનંતી કરીશ કે મહારા પ્રચાર કાર્યમાં તેઓએ ભાગ પડાવવો. ખેરાંએને ખાસ બચાવવું કે આ તમારું દિગ્દ-ક્ષન ! કંઈ સુધરવાનું મન થાય છે ? થતું હોય તો સુધરે ઉચવાની દિશા બદલતો જાય છે. મહારા કમના બહેાળાવા માટે હું કોઈની મદદ ન માગું

તો છેવટે મિત્રોની તો માગુંજી. અલખત જી મહારા મતને મળતા હોય અને મહારી શયે રાજી હોય.

સ્ત્રી કેળવણી:—આપણા સમાજની હાલની પરિસ્થિતિમાં જો કોઈ સવાલ સૌથી અગત્યનો હોય તો તે ‘સ્ત્રી કેળવણી.’ આપણા સમાજની આ અધોગતિ અને આ ગર્તા પતનમાંથી જો આપણે બચવું હોય તે બહાર નીકળવું હોય તો સૌથી પ્રથમ દરજ્જા ‘સ્ત્રી કેળવણી.’ અંધારા ભોંયરામાં ઘૂસી ગયેલા આપણા સમાજને બહાર પ્રકાશમાં આવવું હોય તો ભોંયરાની સીડીનું પ્રથમ પગથીયું ‘સ્ત્રી કેળવણી.’ અરે મામ! બધાયે આમ કહે છે. પણ તે ‘સ્ત્રી કેળવણી.’ છે શું? કોડો કહે કે સ્ત્રીને બણાવવી જોઈએ, પણ શું બણાવવું જોઈએ તે કોઈએ કહ્યું નહિ. આટલા આટલા લેખો ‘સ્ત્રી કેળવણી’ પર આવ્યા. અંદર શું હતું? સ્ત્રી કેળવણીના અભાવથી થતા ગેર-ફાયદા અને પ્રભાવથી થતા શાયદા (ખરેખર—મહેં તો આજ વાંચ્યું છે. અનવા જ્ઞેમ છે કે ખીજ લેખો મહેં વાંચ્યા પણ ન હોય.) પણ કોઈએ ન કહ્યું કે ‘સ્ત્રી કેળવણી’ કેવા પ્રકારની જોઈએ? સ્ત્રી કેળવણી એટલે મેટ્રીક કે બી. એ. ?

સ્ત્રી કેળવણી એટલે શું? રાત્રી પાંચ ચોપડીઓ કે રાંધવું અને પાણી ભરવું? આપણા સમાજમાંથી કેટલાયે માણસો એવા નીકળશે કે જોને છેલ્લો અર્થ આપીનાં ત્રણ કરતાં વધારે પસંદ પડે. કામજી? સ્ત્રી જો બણેલી નહોય તો નોકરી તરીકે રાખી શકાય—ગમે તેટલો માર મારી શકાય અને ગમે તેવા કામ કરાવી શકાય, પણ જો તે બણેલી હોય તો તે પોતાના હક્ક બરાબર રક્ષાને. આર્ય લલના આર્ય સંસ્કૃતિને લીધે માર તો સહન કરે પણ પાછળથી પતિને પોતાનાં કામઠી વાક્યોથી રડાવી શકે. કામ તો કરે પણ પાછળથી પતિની આ ગદાશાહી અક્ષય મટે ટકેર કરી શકે.

આપણા આ સુરત સમાજને એવું કાંઈ ન ગમે, સ્ત્રી પતિના સામું બોલેજી કેમ? અરે પણ

બલા! તે સામું બોલ્યું કહેવાયજી નહિ. આ હેમને ખચર ન પડે. આર્ય લલનાને આર્ય સંસ્કૃતિને છાજે તેવી કેળવણી આપવી હોય તો ‘સાચું બોલવું’ એટલે શું તે હેમને ખચરજી ન પડે. ધાર્મિક અને વ્યવહારિક આપવી પણ ધાર્મિકમાં શું આવે? દહેરાસરમાં દર્શન કરવાં એટલુંજી નહિ પણ તે ઉપરાંત લૌકિક ધર્મ રક્ષામળવે પડે છે. દહેરાસરમાં જતાં જતાં આપણા બૈરાને કેવી હાશપાશ થાય છે તે આપણે જાણીએ છીએ. છોકરું રડતું હોય કે બાત યુવાપર મુક્યો હોય! દહેરાસરમાં ત્રણ મિનીટ ક્યાંથી લાગે! આવાં અધૂરાં દર્શન કરી પાપ આંધવા હેતાં કરતાં દર્શનજી ન કરવાં તે વધારે સાંદું છે. પતિને ઉતાવળ ન હોય તો નાહી કરીને દર્શન નિરાંતના ક્યાં પહોંજી યુલો સળગાવે અથવા જો પતિને ઉતાવળ હોય તો પ્રથમ રાંધીનેજી શરી નહાઈ દહેરાસર જાય તો વધારે સાંદું. અલખત રાંધવાં પડેલાં પવિત્ર તો થવુંજી પડે.

ધાર્મિક શિક્ષણમાં સામાયિક-વૈમાત્ર્ય અને જૈન ધર્મનાં સાધારણ તત્વો તો આવડવાંજી જોઈએ. જૈન ધર્મની ચોપડીએ ગાખી એટલે કે ધર્મનાં તત્વો હૃદયમાં ઉતર્યા એમ ન કહી શકાય. આચરણ આચરવું જોઈએ. અને વખત આવે નારતીક પુરવો અથવા પર ધર્મનાં બૈરાં સાથે વાદવિવાદ કરી જૈન ધર્મનું રક્ષણ કરવા પુરવું જન દરેક સ્ત્રીમાં હોવુંજી જોઈએ.

હવે વ્યવહારિક શિક્ષણમાં શું આવે? એટલું રાંધવું અને પાણી ભરવું નહિ. ખીજું બધુંયે છે. વાંચવું, લખવું અને કેટલીક કળાઓ જોવી કે મુખંગીત અને ચિત્રામણ આ દરેકની ઉપયોગીતા છે. દરેક સ્ત્રી શક્ત બેજી મિનીટ વિચાર કરશે તો માલમ પડશે કે સંગીત અને ચિત્રામણ હેમનાં શા કામમાં આવે એટલુંજી નહિ કહું. વળી આ બધું કોલેજમાં જવાથીજી આવડે છે તે તદ્દન ખોટું અને હડહડતું જીવું. કેટલાક કહેશે કે સ્ત્રીએને ચોપડી વાંચવાનું શું કામ? હેમને

ખબર નથી કે સાહિત્ય અથવા સાહ વાંચન તે જીવનથી સહેલાઈમાં જુદાં ન પડી શકે. સાહિત્ય અને જીવન એકત્રીય છે. સાહિત્ય વિના જીવન નથી અને જીવન વિના સાહિત્ય નથી. સ્ત્રીઓમાં ખરાબ પરિણામ ઉત્પન્ન થાય છે તે વાત તદ્દન ખોટી. સાહિત્યથી સ્ત્રીઓ પોતાના જીવનમાં ઉત્તમોત્તમ સામગ્રી ભેગી કરી શકે છે. પોતાનું જીવન સુધારી શકે છે.

સારા લેખો લખવા અને વાંચવા તે પશુ એક જાતનું ઉત્તમ સાહિત્યજ કહેવાય. 'આપણી સ્ત્રી' નું આપણા સમાજમાં સ્થાન-કેટલું છે ? એક ઇચ્છુએ નહિ. સ્થાનનો અર્થ કિંમત કરીએ તો એક ડોડીનુંપે નહિ. કારણ કેણું ? આપણે પોતેજ આપણી સ્ત્રીને આપણેજ નીચી પાડી, આપણી સ્ત્રીને આપણેજ ઉંચી ન આવવા દીધા. દિગ્દુસ્તાનમાં જે જે સ્ત્રીઓનાં નામ જાણામાં મિલાવ્ય છે, તેમાંથી ગુજરાતી દિગંબર સ્ત્રીઓ કેટલી ! અરે જેન સ્ત્રીઓ કેટલી ! એકપણ નહિ. અંગ્રેજી ભણે એટલીજ જાણાઓમાં પ્રસિદ્ધ થાય તેવું કંઈ નહિ તેવીજ રીતે અંગ્રેજી ન જણે તે જાણાઓમાં પ્રસિદ્ધ નજ થાય તેમ પણ નહિ. એ તો કાંઈ એવો સમય છે તેથી જો સ્ત્રીઓ થોડું અંગ્રેજી જણે તો કાંઈ-હોમને કપડોઓ નીચડે જ્યારે હોમના પતિને ત્યાં અંગ્રેજી માણુએજ આવતા રહેતા હોય.

આપણી સ્ત્રીની આ અધમ અને ગરીબ દશા-કારણ આપણે હોમના તાલી આપણનેજ ખબર નહિ કે આપણે કેવા છીએ. પછી આપણી સ્ત્રી કેવી છે તે જાણવાની આપણને પરવા ક્યાંથી હોય ? સ્ત્રીઓ માટે કેટલી પાઠશાળાઓ ખુલી ? કેટલા આશ્રમો ખૂલ્યા ? શું સમાજને ગરીબ તરીકે, હિંદ કળે છે ? ના. ત્યારે આશ્રમો કે પાઠશાળાઓ કેમ ખૂલતાં નથી ? અને જે ખૂલ્યાં છે ત્યાં કેમ કેટલું સ્ત્રીઓ કે છોકરીઓ ઠીક ભાગ લેતા નથી ? કેમ મદદ લેતાં નથી ? કારણ આપણે પોતેજ આપણી છોકરીઓને

જવા દેતા નથી. મહાત્મું શું કાઢીએ છીએ ?-“તે કેવી રીતે મહારાથી એટલે માખાપથી અળસી રહે ? છોકરી બાર વર્ષે મહોટી થઇ જાય-પરણાવની જોઈએને?”

અરે ભાઈ ! આને કાંઈ બદલાનાં હોય ! આવાં વાક્યો કાંઈ પોતાની પુત્રી પ્રત્યેના પ્રેમ બતાવે છે ? ના ઉંચું ગયા જન્મનો તેણીની સાથેના કાંઈ દ્વેષ બતાવે છે કે જ્યાં છોકરીને લેની ઉન્નતિ ન કરવા દેખે. પુત્રીને શ્રેય રાખીનેયે કાંઈ કેળવણી આપતા હોઈએ તો કીક. આતો : “પાણી ભરી આવ અને કચરા કાઢ” સીરાય સુગુણ દુર્ગુણની તે વાતજ નથી. કળા જ્ઞાનનું તો નામજ નહિ. આપણી સ્ત્રીનું સ્થાન-આપણા સમાજમાં એક ગરીબડી ગણ કરતાં પણ વધુ ગરીબ. આપણી સ્ત્રી પર-આપણી પુત્રાંપર આપણે ધારીએ તે કરી શકીએ. શાથી ? સ્ત્રી જાત ખરીને ? જાણે પ્રભુએ સ્ત્રીને આપણા કરતા જન્મથીજ નીચી ન બનાવી હોય ?

આપણે રહમજતાંજ નથી કે પ્રભુએ કયું બનાવ્યુંજ નથી. કેમ કેહનાથી ઉતરતું કે ચડતું કહી શકાયજ નહિ. સ્ત્રી અને પુરુષ બન્ને એક બીજાને સરખાં મદદગાર. કેમ કેહનાથી ચડતું ઉતરતું કહેનાર મૂર્ખો અને અક્ષય વિહારીઓ. બધે સ્ત્રી પોતાની જાતે માને કે તે લેના પતિ કરતાં નીચી અને હલકી પણ પતિની ફરજ નથી કે સ્ત્રીને તે રહમજાવે કે “તું મહારા કરતાં હલકી અને નીચી” આપણી આર્ય સંસ્કૃતિને લીધે આપણી આર્ય ધર્મનાઓ બધે ગમે તે માને પણ આપણે તેમ કરવાની ફરજ નહિ પાડી જોઈએ. ફરજયાત કામ લાખો પપત સુધી અને લાંબી ઉંચ્ય બાવવા સાથે ટપી રહે છે. આપણા લોકોને આ તો ખબરજ છે. મરજ્યાત સારી આત્યવગત અને વર્તણુક માટે ઉચ્ય અને શીટ સાહિત્યની જરૂર છે.

૫. ઉપસંહાર-સવસ્તુ-પણ બધામાંનું થોડું હું કહી ચૂક્યો. આંખ આડા કાન કરવાનો આ

વખત નથી. હિંદુસ્તાનના ઢેડ અને બંગ્લીયા પણ સુધરવાનો પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે. હક સ્થાપિત કરવા તનતોડ જર અને જહેમત ઉઠાવી રહ્યા છે. આપણે જૈનો કંઈ નહિ કરીયે, જૈન સ્ત્રીઓ માટે જૈન પુરખો હવે પાછા પડશે ? આપણે પારસી કોમનો દાખલો લઈયે તો તરત ખખર પડે. નાનામાં નાની કોમ છતાં હિંદમાં લહેમનો સંપૂર્ણ હક. જૈનોની વસ્તી લહેમના કરતાં વધારે પણ કાંઈ હક ! નહિ. ઉલ્ટાં તેઓ અંદર અંદર લહે, પૈસા ખરચે ને પામમાલ થાય. જૈન બંધુઓ અને ખહેનો-ખહારાં જેવાં કેટલાંયે લખાણો આવશે. કંઈક તો કરો, નહિ તો પછી પત્થર પર પાણી થવાદો. એજ. અસ્તુ.



“યુવક મંડલોની નવઝાઈ.”

આજકાલ યુવક મંડલો ઉત્સાહ ધેલા યુવકો સ્થાયે છે ખરા પરંતુ મંડલો કેમ ચલાવવા તેવું વ્યવહારિક ઉદ્દેશ્ય તે ઉત્સાહધેલા યુવક મંડલના સંચાલકોને ધણીવાર હોતું નથી અને તેમ છતાં સદ્દેશ્યે કોઈ દહ અને કૃત નિશ્ચયી સંચાલક મળે છે, તો તેને વ્યવહારમાં ઉતારી શકતા નથી. આ નયળાઇઓનું કારણ શું છે તે વિષે તેમણે કદીએ વિચાર કર્યો છે ખરો ? પુરુષાર્થ મંડલો સ્થાપવામાં નથી પણ મંડલોના ઉદ્દેશને વ્યવહારમાં ઉતારવામાં છે. તેનો વિચાર મંડલના સંચાલકોએ બાળ્યે જ કર્યો હોય તેમ લાગે છે.

આરીજ નયળાઇનું ભોમ હાલમાં સુખાઇનું દિ. જૈન યુવક મંડલ હાલમાં ઘણું પડ્યું હોય તેમ લાગે છે. કારણ જો આ વસ્તુ સ્થિતિ ન હોય તો આજ બંધે વર્ષે થયાં મંડલના ઉદ્દેશો મૂર્ત સ્વરૂપ લેતા જણાતા નથી તેનું કારણ ? અને ખખર છે ત્યાં સુધી તો મંડલોનાં ખને મંત્રીઓ ઉત્સાહી અને કામ કરી શકે તેવા છે. છતાં તેમના માથે આ કલંક કેમ ? તેઓ કેમ આ નયળાઇનો ભોમ ઘણું પડ્યા છે. મંડલના માથે

હાલમાંજ એક જવાબદારી ભર્યું કામ પણ પમતી પડ્યું છતાં તે પાર ઉતારવામાં મંડલ નિષ્ણદ મયું હોય તેમ લાગે છે. જો કે અને વિશ્વાસ કે કે મંત્રીઓએ તેને માટે પુરતી જહેમત ઉઠાવી હતી પરંતુ પુરતા પ્રચાર કાર્યને કામાવે જાને સામાન્ય જનતાનું પીડવળ નહી હોવાથી તેમ હાથ હેઠા પડ્યા હોય તેમ સ્પષ્ટ રીતે બોલાં જણાય છે. પરંતુ આ જગ્યાએ હું મંડલના કાર્યકરોને એક સુચના કરી લઉં કે કોઈ કાર્ય પાર ઉતારવા માટે પહેલાથી ક્ષેત્ર તૈયાર કરવું જોઇએ જે મંડલ તરફથી હાપાઓ વા ખેટકોઈ દ્વારા થયું નહોતું. અમુક વસ્તુ ખોટી છે માટે અટકાવવી જોઇએ એમ આપણને લાગે તો આપણે આપણી શાછળ દોરવવા મામતાં સમાજને દાખલા દલીલો દ્વારા તે સિદ્ધ કરી આપવું જ જોઇએ અને એવા કૃત્યો તરફ સમાજને રોષ જરી જાંખે જોતો કરીએ તોજ અપકૃત્ય કરતો માણસ સમાજની રોષજરી જાંખ જોઇ પાછો ફરે, તે સિવાય નહી. મંડલ ખુદ તે સિવાય ખીજી રીતે સામા માણસને અપકૃત્ય કરતો અટકાવી શકતું નથી તે મંડલના કાર્યકરોએ બૂલવું જોઇતું નથી અને જ્યારે દરેક મંડલ આ સદસ્ય સમજ જરી તો તે કદિ નિષ્ફળ જવા સરજાયેલું નથી જોકે આજની નિષ્ફળતાની જવાબદારી હું એકલા મંડલ ઉપરજ છોડી દેવા માંમતો નહીંજ. અજાત સમાજની નિષ્ક્રીયતા પણ તેને આબારી છે અને સમાજની આ નિષ્ક્રીયતા ઉદ્દેશવાનો એક ખરો રસ્તો પ્રચાર કાર્યનો છે તે મંડલે સત્તર ઉઘાડી લેવો જોઇએ, એમ માફ માનવું છે. હજુ શું કે મંડલના સંચાલકો આ નિષ્ફળતાથી કંઠાવી જઈ પોતાની પ્રવૃત્તિ અટકાવશે નહી પરંતુ ડબલ વેગથી જરી શખશે તો આખરે મંડલની સમાજ સુધારાની નેમ શાવશે એમ કહેવામાં હું જરાયે અતિશયોક્તી કરતો નહીંજ અને સમાજે પણ પોતાની હિત વસ્તુ ખ્યાનમાં રાખી તેમને અપનાવી લેવા ઘટે છે.

રા. ઉત્સાહ.

આરોગ્યતા વિષે મારો અનુભવ.

(સ્રી:- ડૉ. ચીમનલાલ કર્સ્તુચંદ વેદ્ય. વડોદરા.)

રાત્રે વે'લા ને સુષ, વે'લા હો વીર,
બળ, યુદ્ધ, ધન બહુ વધે, સુખીયું થાય શરીર.
ધણાજી ભોડો ઠવા વજીરનાં બાબઠાલ મળ
ઉપરાંત પૈસા ખર્ચે છે. અને કહે છે કે તેમ કયાં
વખર ચાલે નહિ. કારણ કે:—

શરીરે સુખી તો, સુખી સર્વ વાતે,
શરીરે દુ:ખી તો, દુ:ખી છે સદા તે.

મારે તેજીને કહત એજીજી જવાગ કે જે
કુદરતના નિયમોનું વધારોગ્ય પાલન પોષણ કર-
વામાં આવે તો હું નથી ધારતો કે પૈસાનો
આટલો અધો ભોગ આપવો પડે? આશ્ચર્યની
વાદ છે કે બાબ ઠાલ સમાજમાં આમ કેમ
ચાલે છે! કારણ એજ કે કુદરતના નીતિ નિય-
મોનું હલ બહાર પોષણ કરવાથી અર્થાત આરો-
ગ્ય રક્ષાના નિયમો વિરુદ્ધ વર્તન થવાથી આ
બધું તેમને શોષણ પડે છે નહિ વાં? ?

જે તમે મરચું હલ ઉપરાંત ખાશો તો તમને
સ્વાદમાં સુમધુર લાગશે. પરંતુ પાછગથી તમને
તેની યોગ્ય શિક્ષા થવીજી જોઈશે. તમને શિક્ષામાં
ખાંસી થશે એટલુંજ નહિ પણ ગ્રાડા તથા પેશાબે
નહી બળતરા થશે. આ હલ ઉપરાંત સેવન કર-
નારનું પ્રત્યક્ષ ફળ ખરું કેની ?

માટે સૌ સમજીને દરરોજના કુદરતી નીતિ
નિયમોનું વધા મોગ્ય પાલન કરી. પૈસાની તેમાં
ખીલકુલ જરૂર પડતી નથી, અને એવું કહેવું એ
ખીજીને પોતાની સાથે દોષમાં નાખ્યા બરાબર છે.

દરરોજ સ્વધારમાં ચાર વાગે ઉઠી ઇષ્ટદેવનું
સ્મરણ કરી ૧૧ શેર ઠંડુ જળ પી લેવું. વાંઘાના
ભોજનાં બરી મુકેલું હોય તો વધારે સારું. જેથી
શરીર પ્રકૃષ્ઠીત થાય છે. હલ્ય પવિત્ર અને છે,
અને રોગચાળા કરતી વખતે ઝાંડો નિર્મળ આવે
છે. તથા કરસા! સોજી, કમજીઆત વિજીરે ઠી

નાજુદ થાય છે. મળજીવનો ત્યાગ કરતી વખતે
મનુષ્યે કરાંજીવું નહિ. તથા મળને રાકવો નહિ.
જે તે રાકવામાં આવે તે તેમાંથી ફેટલીક વીર
આંખી મુકીને નવલવા બાધિના ઉપદ્રવે પેશ થાય
છે. ખાસ કરીને ખરબારે એવે-ઠીકાકાકીક નામનો
જીવલેજી બાધિ વિશેષ માલમ પડી આવે છે.

મળનો ત્યાગ કરી રથા પછો તે બામ સારી
રીતે ધોષ નાખવો, તથા હાથ પગ, દુર્મંથ દુર
થતા સુધી પાણી અને માટીથી ધોષ નાખવા.
સાચુની કોષ જરૂર નથી.

દાતણુ:—આપણા ભોડો દાતણુ કરવામાં
ધણીજી નિષ્કાળજી રામે છે. અને યૈરાં તેવાથીજી
વધારે કાળજી ભેનારાં હોય છે. આ તરફ ધણુંજ
દુર્લભ્ય આપાય છે. તે નાજુદ કરવું એ વાંચકની
રરજી છે. દાતણુ ખાસ કરીને ખાવળ તથા લીમ-
કાનું સાથી ઉત્તમ મજીએલું છે. ઇજીને ઉચ્ચોગ
કરવાની વિશેષતા જણાવી નથી, પરંતુ દાતણુ
સાધારણ જીવું લઈ તેનો કુજી જકમાના ખો-
દામાં સારી પેઠે રહી વળે તે પ્રમાણે જોઈજી.
દાંત બરેખર જોઈયા અને સ્ક્રેદ સાખવા પ્રયત્ન
કરવો. જોજી બરોખર સાહ સાખવા નથી તેજી-
નેજી શોષણ પડે છે. તેમાંથી પદ થઈ પેટમાં બધ
છે, અને પાથેરીઆ, ઝાડા, સંમલજી તથા
અપચાના ઠી માળકોનો જન્મ થાય છે, જે
પછી પોતાનેજી પાલવવા પડે છે. દંતમાંજી
અને ત્યાં સુધી દેહી વાપરવું વધુ ઉત્તમ છે. વિદેશી
ફેટલીક વખત બજાચાર કરી મુકે છે.

ઉચ્ચમ.	મધ્યમ.	જીવલેજી.
આઠ સોપારી	કોલસો ને	} ધીકણી અણુની રાખ.
અથવા ફેડેલી	જીરું મીઠું	
બદામનો કોલસો	રહેજી	

અત્યારે જે બજાર માલ વેચાય છે તે સુખ-
ધોવાળો ચાકનો જીરો પરંતુ જેજી સાખના પૈસા
ઉપજાવવા હોય અને ધધો કરવો હોય, તેજી
કમ્પામાં પેક કરતી વખતે સુમધોત વસ્તુ સાથે
સાખવું મોજીજી કરી રંગ બદલી નાખવા
પ્રયત્ન કરવો.

કેટલાક ખરાબ ટેવોથી દાંતની વિશેષ ખરાબી કરી મુઠી યુવાવસ્થા પસંદ નહીં પડવાથી ઘડપણ અવસ્થા પસંદ કરે છે.

અતીશય પાન ખાવાથી પોપડા બાજી સડો પેદા થાય છે. દાંત રંગીને દાડમી શોભા વધારવા બનાવટી પ્રયાસ થાય છે. પરંતુ કુદરતથી કોઈ દાહ્યું નથી. લગ્નમાં પોથી જેવી આબડ હેટ વસ્તુ મુઠી આમલીની ખટાશ ચાખી મુખાકૃતિની કુદરતી શોભામાં વધારે કરવા માણસ શું આ દોષને સુધારી શકતો નથી? તદુપરાંત ખીજ અનેક અનિષ્ટ ખાવપાન વસ્તુઓ જેવી કે ચા, પાન, ખાંડી, તમાકુ, એ સર્વ આરોગ્યને હાનિકર્તા છે, તો પછી શા માટે વિશેષ ઉત્તમન આપવું ઘટે ?

નહાવું—નહાવામાં ઉતાવળ કરવી એ શિષ્ટાચાર ધણેખરે ડેકાણે બેવામાં આવે છે. શરીર ચોળાને નાવું એ તો કુદરતી કાયદાને માન આપનાર માટે? પણ ખબર નથી કે ચોળાને નહાવાથી મન શુદ્ધિ સાથે વિશેષ પવિત્ર બને છે, શરીર હલકું તથા સ્ફૂર્તિવાળું બન્યાય છે, અને નવી હોશ પેદા થતાં સાથે બધી ઉત્પન્ન થયેલી ગ્લાનિયું નિકંદન થાય છે; તથા સાથે સાથે ખસ, દરાબ, ખરબવું વિગેરે ચામડીનાં દર્દોનો નાશ થાય છે. એ આ પૂજારીઓને કાંઈ ખબર હોય છે ખરી? સેવા પૂજા કરવા માટે નહાવું બેઠએ એ પ્રમાણે દરેકબવું કરેલું કામ હોવાથી બલદી સ્નાન ક્રિયામાંથી પરવારી ધંધાવશ થઈ ઉતાવળે ઘર બહાર નીકળી પડે છે.

કસરત—કસરતના દિમાયતીઓ સારી પેઠે બણે છે છતાં ટુંક વિવેચન કરવું એ મારી લેખક તરીકે દરબ છે, એમ સમજી યોડોક ચીતાર આપ સમક્ષ રજુ કરું છું, તે ધ્યાનમાં લઈ પ્રયત્ન કરશો તો સારી વાત છે. તો કું સમજીશ કે આ લીધેલી મહેનત સફળ થઈ છે. નહીતર મેં, મનુષ્ય જીવન તરીકે, મારી રરબ ખબતી છે એમ સમજવા માટે હિતકર માનીશ.

બ્યામામ કરવાથી શરીરમાં વિશેષ બેમ પેદા થાય છે. હાડકાં મજબુત થાય છે, અને તેનો ઉપયોગ બહુર પડે ત્યારે નિડરતાથી આત્મ રક્ષક તરીકે થઈ શકે છે. સ્નાયુઓને કેળવવાથી થયેલી બલહમી દૂર થાય છે, ખોરાક પચે છે. આયુષ્યની વૃદ્ધિ થાય છે, અને ઝાડો અથવા પેટ સાચા આવે છે. ચુંક આવતી હોય, પેટમાં દુઃખાવો થતો હોય તો પણ તે દવા લીધા વગર નાચુદ થઈ જાય છે.

ઉંધ—સારી ઉંધ લાવવી હોય તો દરેક મનુષ્યે સારી રીતે કુદમ કરવો અને વખતનો સદુપયોગ કરવો. સ્વપ્ન એમ દલાવે છે કે મગજ અવ્યવસ્થામાં છે. સુતી વખતે મનઃ શુદ્ધિ માટે હાથપમ ઘીઈ ઇપ્ટ દેવતું સ્મરણ કરી મુઠ બવું. મગજ પ્રકુદ્ધીત થાય તે માટે ઉંધની ખાત બહુર છે. ઓછામાં ઓછી નિદાન ૭ કલાક ઉંધ લેવી જોઈએ. ઓછી લેવાથી કેટલીક વખતે શરીરની આરોગ્યતાને નુકશાન પહોંચે છે.

દિવસે સુવાથી શરીરમાં ગ્લાનિ પેદા થાય છે. સાથે સાથે હાડકાં હમમ થઈ આગસની ખોટી માઇનથી થાય છે. ખર જેતાં તે ઉત્તિનો કટો થતું છે.

સદાચાર વાને સદ્વર્તન—નીતિને રસ્તે ચાલનાર માણસ સુખી થાય છે એ અસંભવીત નથી. સદ્વર્તનથી કેટલીકવાર કીર્તિસ્થબો રોપાય છે અને પ્રતિષ્ઠાના વધે છે. દુરાચારથી શરીરની પામખાલી થાય છે.

કરવો ચરીરને નુકશાન કરતાં હોવાથી ઇશ્વરાધાન થવું પડે છે. કેટલાક વિષયાંબ થઈને અને બ્નર કર્મમાં સપડાઈને પોતાને હાથે શરીરની ખુવારી કરે છે. હસ્ત દોષ જેવી કુટેવોથી જંગોની પામખાલી કરનાર આજે આ દુનીયામાં ધણા નીકળે છે. તેનાથી તાકાત ઘટે છે, આખોતું તેબ કરી થાય છે, દાનોમાં બહેરાશ આવે છે સ્મરણ-શક્તિમાં મોટા ફાદાર થાય છે. એટલાબ માટે બ્રહ્મચર્ય પાળવું એ વધારે ઉચિત બજાયું

છે. વિદ્યાર્થી જીવનમાં તો તે અવશ્ય પાઠ્યવું જોઈએ. વળી પાઠ્યલગ્ન જેવા દુષ્ટ જીવલેણ કુરોવાળેતું નીકંદન કરવાતો હજુ દરેકે દેરી બેલો એ "મહાવીર" અને "કર્મવીર ગાંધી"ના દરેકે દરેક અનુયાયીની શ્રદ્ધ છે. માટે પ્રાણી પર હયા રાખી મન, વચન અને કાયનું નૈતિક વર્તન રાખવું. દુઃકામાં જીવ્યાવવાનું એજ કે:- "દુઃ કેવા કામમાં મારો સમય મુજબરું છું," એ વાતનું નિત્ય ચિંતવન કરનાર પુરુષ દુઃખી થતો નથી. અહમ્ અતિવિસ્તરેણ ।

આત્મિક-પ્રેમ.

(સે.-હુરચોવાવનચંદ નેમચંદ વખારિયા-મુંબઈ)

બધા સદ્ગુણોનું મૂળ પ્રેમ છે. આ પ્રેમ દેહની સુંદરતા કે ધનની અધિકતાને લીધે નહીં, અધિકાર કે સારી ભાગવમ ધરાવનારા ઉપર નહીં, બલિષ્ઠમાં ઉપયોગી કે મદદગાર ઘરો તે માટે નહીં પણ કેવળ સત્તાગત અનંત શક્તિવાન આત્મા છે અને આત્મા એ પરમાત્મા છે એમ જાણી આત્મ દૃષ્ટિએ આત્મા ઉપર પ્રેમ કરવાનો છે. તે સિવાયનો પ્રેમ તે પ્રેમ નથી પણ મોહ છે, રાગ છે, રનેહ છે, ખીજને શાંતિ આપી પોતાને છુપ માનવું તે પ્રેમ છે. પ્રેમ છે ત્યાં આત્મભાન છે. પ્રેમના પ્રમાણમાં શુદ્ધ આત્માનો અનુભવ થાય છે. જે સત્તા રાજ્યમાં, ધનમાં, અધિકારમાં નથી તે સત્તા પ્રેમી ઉપદેશ કર્તાના વચનમાં રહેલી છે. જો તે ઉપદેશમાં પ્રેમ નહીં હોય તો તેના ઉપદેશ અને નેટણે મોહક કે પડિતાઇ બરોઈ હશે છતાં ખાલી કાંસાના રણકારાથી તેમાં વિશેષ અધિકતા અનુભવાશે નહીં. તે ઉપદેશ ભાગ્યુષી, આત્મભાન, અને આંતરના પ્રેમ વિનાનો હોવાથી વદન મુખો અને અસર વીનાનો નીવડશે. અને તેની અસર તરતમાં લુપ્તાઇ જશે. શ્રદ્ધા સાધન જેની છે. પ્રેમ જે સાધ્ય હોવાથી સાધનના ફળરૂપે છે. પ્રેમને બહાર કાઢવાનો પ્રયત્ન કરવાનો એજી માર્ગ છે કે ખીજને આપવું. દાન એ પ્રેમની નીક છે. તે દાન પ્રેમનું પાણી બહાર આવી ખીજને શાંતિ કરે છે.

બકિત થકી ભવપાર.

(ધન્યાશ્રી)

બકિત થકી ભવપાર,
 પામીશું અમે બકિત થકી ભવપાર. ટેઃ
 રાગ કેષથી વહીત જે ચાની,
 સમતા સદા પરનાર. પામીશું
 મુર એવાએ માર્ગે ખતાવ્યો,
 જેથી પમાશે પાર. પામીશું
 સર્વશ એવા અરિહંત દેવે,
 બ્રાહ્મણ જે કેવળ જ્ઞાન. પામીશું
 દયા કરો પ્રાણી પર સર્વે,
 ધર્મ તણો એ સાર. પામીશું
 સત્ય ધરી દિંસાને ત્યાગો,
 ધારી હંદે કરજ્યાય. પામીશું
 પર ધન ને પર નારને ત્યાગો,
 સદા સતોષી ધાવ. પામીશું
 અનીતીને આબા છેટ જાણી,
 આલો નીતિ અનુસાર. પામીશું
 જ્ઞાન થશે આત્માનું બપારે,
 મોહન પામે પાર. પામીશું

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ-કમ્પાસા.

માગવા આવેલા યાચકને એક પૈસો કે હુકડો આપવો કરણ્ય કામ નથી પણ પ્રેમ તો ગરીબાઇનાં મુગ કારણો દુઃખીઆનાં દુઃખ અને અચાનીએનાં અચાન દુર કરવામાં રહેલો છે. શ્રી પાર્શ્વનાથ પ્રભુએ અમર્ષથી વરસાદ વરસાવી તારીલા મુઘી પાણીમાં હુમાડનાર કમદ તાપસના જીવને ખોધી-ખાંજ આપી પોતાના માર્ગનો પથીક બનાવ્યો. અહીં અપરાધીને પણ

અમૂલ્ય મહા આપવાણી તે પ્રજામાં પ્રેમનીજ મુખ્યતા હતી. શ્રી નેમીનાથ સ્વામીએ ગૃહસ્થાશ્રમમાં પોતાના વિકાસ પ્રસંગે ગૌરવ (ભાષાથી) રૂપને એકઠાં કરેલાં પશુઓને ઊંડી મુક્તવના ખાતર વિવાહના ત્યાગ કરવા પર્વતનું યજ્ઞીકાન આપી જીવે પ્રત્યેના અપૂર્વ પ્રેમનો પાઠ વિશ્વને સ્મિતવ્યો છે.

ગૃહસ્થાશ્રમમાં પણ ત્યાગી જીવનને શોભાવે તેનું ધાર્મિક જીવન ગુણરતાર સુદર્શન શ્રેણીએ અમલવા રાણીને બતાવવા ખાતર મૈત્ર ધારણ કરી આત્મીક પ્રેમને લીધે જીવનને મહવાતુ સ્વીકાર્યું હતું આ સર્વ આત્મીક પ્રેમનીજ છાયા છે. આ જગત દયા કરનારના અભાવેજ દુઃખી છે. પ્રેમ કદી નીચ્છળ થતો નથી. પ્રેમ જેવો બેલું દેણું પાણી આપનારો જગતમાં કોઈ ઉત્તમ સદ્-ગુણ નથી.

પ્રેમી આત્મામાં ધર્મ ન હોય, ધર્મના દેખ બીજાની મહત્વતા જોઈ શકે છે. તે મહત્વતાની મદર કરી જાય છે તે ભવિષ્યનો મહાન પુરુષ થવાને હોયક અને છે. પ્રેમી આત્મા મુજાનુશાગી હોય છે. પ્રેમી જીવનમાં અભિમાન ન હોય. તે પોતાના ઉત્તમ ધર્મો બોળને કદી ન ખતાવે, એ મુખ્ય અભિમાન છે. સારાં કર્તવ્યનો પદ્મો તે ન છુટ્ટે. પ્રેમીજીવમાં સ્વાર્થ ન હોવાથી તેના ઉપ-દેશનો અસર સારી થાય છે. સ્વાર્થ ત્યાગની ખરી મૂર્તિઓજ વિશ્વના નાથક અને છે. એમ કરવાથી આત્માની મહાન શક્તિઓનો વિકાસ થાય છે. ત્યાગમાંજ આત્માની ઉન્નતિ રહેલી છે. જેને મહાન થવાનું હોય તેણે સર્વસ્વનો એમ આપવો જોઈએ. કોષ અને પ્રેમને આપત્તમાં વિશેષ છે. મનુષ્ય સ્વભાવની નબળાઈ અને કર્મના સિદ્ધાંતનું અજ્ઞાન એ કોષ કરનારમાં રહેલાં મુશ્કેલ છે. શારી-રીક પાપ કરતાં કોષનું પાપ ઉત્તરું નથી પણ વધારે છે. કોષી મનુષ્યમાં ધર્મ, અભિમાન, જનુ-દારતા, ધાતરીપણું, નિર્દયતા, એકલપેકાપણું આદિ ક્રોધેક દુઃખો વસે છે તે બદલાવવા માટે પ્રેમ

મુખ્ય સાધન છે. પ્રેમથીજ તેની શક્તિઓ બદ-લાઈ જાય છે. ખરા પ્રેમાળુ અંતઃકરણના મનુ-ષ્યોનો ઉપદેશ પણે બાને નીરર્થક જતો નથી. શોકો તેને હાથથી છુટ્ટે છે. તેનાં વચનો અમેાથ છે તેથી જીવેના હૃદયમાં મહાને માટે તેની ઉંડી અસર સન્માન સાથે કાંતરાઈ રહે છે. તમારામાં જો પ્રેમ હોય તો વિશ્વના તમામ જીવો તરફ બેદભાવ રાખ્યા વિના પ્રેમનો વરસાદ વરસાવો. પ્રેમમાં બેદભાવ કે વિકલ્પ ન શોભે. નમ્ર વાણી એ સ્વર્ગમાંથી કરતો દિવ્ય રસ છે. પ્રેમની મહુસ્તાથી અને દીક્ષસોજ ભરી આંખોથી વિશ્વના જીવો તરફ દષ્ટિ કરો. વિચારોને નિર્મળ બનાવો. તેમાં બદ્ધિત સામર્થ્ય રહેલું છે કેમકે તમારા મુખેમાં તમારા વિચારોના બાવ બજાઈ આવે છે. સારા વીચારો કરીરને આરોગ્ય બનાવે છે.



કરમની એજ કહાણી છે.

ગણલ.

હશે તમહીરમાં જેવું, થશે તદ્દમ્હીરમાં તેવું, નહિ જાયે કયું લેવું, કરમની એજ કહાણી છે-૧
 થશે જઈ હુંમશે કે ધર, પછી જાઓ સમુદ્રે પણ, મેજવશે ભાગ્ય તમ જેવું, કરમની એજ કહાણી છે-૨
 કદી કોષ લાખ મેજવશે, કદી કોષ પાપમાં પડશે, રહેશે કરમના જેવું, કરમની એજ કહાણી છે-૩
 તમે જો પાપ આદરશે, વળી જો સત્ય પરદરશે, જશે તમ નીચના થયે, કરમની એજ કહાણી છે-૪
 વિચારો કર્મની રીતો, અધર્મો કોષને જીતો, તરવ તમ માન મેજવશે, કરમની એજ કહાણી છે-૫
 કરમથી રામજી વનમાં, રોજાણો રાવણે પગમાં, હરામે પાડવે ધરમાં, કરમની એજ કહાણી છે-૬
 રૂબને વિર જીવે, સહા ઉપકર્મ આનદે, અપાવ્યાં કર્મ મોહમનાં, કરમની એજ કહાણી છે-૭
 એકનશાલ મથુરાશાશ્રમ-કરમણી (સુમાન્ડા)

चूनेकी उपयोगिता ।

कितना सीधासा नाम, कितनी उपयोगी वस्तु, परन्तु कितने ऐसे मनुष्य हैं जो इसका उपयोग भलीभांति जानते हैं ? अधिकांश तो इसका उपयोग पान तथा खाने तथा घरकी सफेदीके लिये ही है ।

आज पाठकोंके सामने इसी साधारण चूनेके सम्बन्धमें मैंने कुछ लिखनेका निश्चय किया है । इसे संस्कृतमें चूर्ण, सुषा, हिन्दीमें चूना, कच्ची, गुजरातीमें चुना, बंगालीमें च्यून कहते हैं । पानी पड़ते ही यह चूग बन जाता है । यह तेज और क्षार द्रव्य है । शरीरकी बनावटमें जो द्रव्य भाग लेते हैं उनमें चूनेका भी एक मुख्य स्थान है । इस मात्रामें कमी बेशी होनेसे शरीरमें भी उसका परिणाम होता है । जब इसकी कमी हो जाती है तो अस्थिदुःख, अम्लविष इत्यादि नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होने लगते हैं । अब हम इसके उपयोगपर विचार करें । सबसे अधिक इसका उपयोग घरकी सफाईमें किया जाता है । जब आप किसी जगह रहना चाहते हैं तब सबसे प्रथम आप उस घरमें सफेदी करवते हैं । यह किस लिये ? क्या केवल सफेद देखनेके लिये ही ? नहीं । परन्तु इस सफेदीके करवानेसे उस जगहसे कीड़ोंका नाश होता है । उनकी वृद्धि रुकती है । इसीलिये रहना आरम्भ करनेके पहिले आप मकानमें सफेदी इत्यादि करवाते हैं । इसी प्रकार जिस मकानमें खरबके रोगीने निवास किया हो उसमें भी सफेदी कीजाती है । इससे

भी कीट नाश करनेका ही अभिप्राय है । ऐसेसे आक्रान्त रोगीके मकानों भी चूनेसे ही सफाई जाता है । कहनेका अभिप्राय यह है कि सफाई तथा कीटनाश करनेमें भी इस चूनेका स्थान बहुत ऊँचा है । पानमें जो यह प्रयोग किया जाता है उसे तो सभी जानते हैं । इस चूनेका मानव शरीरमें दो प्रकारसे उपयोग किया जासकता है ।

एक अन्तः दूसरा बाह्य प्रत्येसे । उपयोग करनेके पहले इसे निम्नलिखित प्रकारसे तैयार कर लेना चाहिये । साधारण तरीकेसे आप एक पाव चूनेके डकेको लगभग तीन सेर पानीमें भिगो दें, चूना घुल जायगा । कुछ समय उपरान्त जो पानी ऊपर रहेगा उसे छाने : छाने : दूसरे पात्रमें ढाक लें और फिर एक बार उसे नितारकर एक हरे रंगके धाँचकी कुट्टिकामें भरकर रख लें । यही चूर्णोदक वा लाइम वाटर (Lime water) है । इसका प्रयोग निम्न प्रकारसे भिन्न रोगोंमें करना चाहिये:-

प्रायः देखनेमें जाता है कि कभी कभी बालक माताका दूध दूषित होनेसे उसे पचानेमें असमर्थ होते हैं । बाहरी जर्बात् गाव इत्यादिका दूध भी नहीं पचा सकते । कब यह होता है कि बालकको जो दूध पिनाया जाता है, वह बमन कर देता है और दिन-दिन बलहीन होता जाता है । अस्थियोंकी वृद्धि होना भी रुक जाता है, टट्टी कट्टी हुई, पतली, दूषित, गन्ध-बाजी जाने लगती है । ऐसी अवस्थामें बालक मुरझाने लगते हैं, बदनपर भी झुरियाँनी बन जाती हैं । ऐसी अवस्थामें बालकको यह चूर्णो-

एक उमरके हिसाबसे बानी साधारण तौरसे जितने महीनेका बाळक हो उतने ही बूँद दूधमें बाळकर दिनमें दो समय देना चाहिये । बाळककी अवस्थानुसार इसकी मात्रामें कमीबेसी की जासकती है । इसके सात दिनके प्रयोगसे ही आप देखेंगे कि बाळकको जब दूध पचने लगा है । उसकी कपायमें भी परिवर्तन होना आरम्भ होगया है । इस प्रकार यह प्रयोग कुछ समय तक जारी रखनेसे बाळक सम्पूर्ण रूपसे स्वास्थ्य लाभ कर सकेगा ।

जम्कताके आविश्यसे जब के जाना आरंभ होजाता है तब इस चूर्णोदकको सेवन कराना चाहिये । इससे वमन बंद होकर पेटमें स्थित अपकव अन्न पच जाता है तथा उसकी जम्कता भी दूर होजाती है । इसी प्रकार जजीर्णसे जुकाव होने लगते हैं उसमें भी यह चूर्णोदक फलप्रद है । पेटकी खराबीसे जब मुखमें छाले पड़ जाते हैं उस समय इसको मुखमें धारण करना चाहिये । इससे छाले दूर होजाते हैं । जब कोई अंग जक जाय उस अवस्थाके किये इस चूर्णोदकमें बराबरकी मात्रासे जम्कतीका लेक मिलाकर रखले उसे जग्निदग्ध स्थानपर लगावे या उसपर इसमें मिश्रीही हुई कपड़ेकी गद्दी रखे । परन्तु स्मरण रहे यह जग्निदग्धकी प्रथम अवस्थामें ही उप-योगी है ।

मूठमें चुनचुने पड़नेपर विधान पूर्वक इसकी प्रयोग करनेसे कृमियोंका शीघ्र ही नाश होता है । विच्छूके काटनेपर दक्षिण स्थानपर चूर्णो-दकमें नीतादर मिलाकर लेप करे या कपड़ेकी गद्दी इसमें मिश्रीकर रखे ।

अब इसका बाह्य प्रयोग भी देखिये—
चूर्णोदक बननेके बार जो बुझा हुआ चुना रह गया है उसे सुखा कर, पीस कर कपडछन करके रख लीजिये । शरीरमें जहां कहीं भी फुंसी फोड़ा, स्थानिक सूजन, बदका निकलना, बाह्य ग्रन्थियोंकी सूजन, गलगंड इत्यादि पर इस चूर्णको पानी या चीके साथ मिलाकर गरम करके लेप करे । इस प्रकार दिनमें दो तीन समय लेप करना चाहिये । इससे उक्त फोड़ा फुंसी दूर जाती हैं या पककर फूट जाती हैं । मैं कह सकता हूं कि जो कार्य Anti Phlog-
gisticin (एंटीफ्लोजिस्टीन) से किया जाता है वह सब कार्य इस मामूकी चुनेसे मही प्रकार पूर्ण होता है । परन्तु सर्वसाधारण इसकी उप-योगितासे अभिन्न नहीं है । मधुमेहमें जो पीड़िका (कारबंकल) होती है उसमें भी इसका उपयोग बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हुआ है ।

जब फुंसी आरम्भ होती है तभीसे इसका लेप करना आरम्भ करे । जब फूटकर वह जरूम बन जावे तब जरूममें आयुर्वेदकी पसिद्ध औषधि “दशांगलेप” का प्रयोग तथा जासपास चुनेके चूर्णका लेप करे ।

अन्तमें निवेदन है कि पाठक इसे मामूकी चीज न समझें, अपितु इसके यथार्थ गुणसे ठठावें । इस सम्बंधमें किसी सज्जनको कुछ और भी पूछतांछ करनी हो तो वह पत्रद्वारा या समझ मिलाकर कर सकते हैं । “वैद्य” मासिकपत्र मुरादाबादसे लखत ।



सम्पादकः—पूलचन्द किसनदास कापड़िया—मुरत ।

विषयानुक्रमणिका.

नं०	विषय.	पृष्ठ.
१	कापड़ियाजीकी सौ० चर्मपत्निका असमयमें स्वर्गवास	... ३३९
२	संपादकीय—रक्षाबंधन, वर्तमान आन्दोलन, हमारा कर्तव्य	... ३३६
३-४	चातुर्मास, जैन समाचारावलि	३४०-४१
५	निराशा (ब० प्रेमसागरजी)	... ४४३
६-७	फूट; भारत संतान	... ३९०
८	रक्षाबंधन कथा (ब० प्रेमसागरजी)	... ३९१
९	रंग लाती है हिना बिना जानेके बाद	३९६
१०	जैनजाति व उसके नवयुवक	... ३९८
११-१२	मुक्तिथी निर्वाण; जैनोनुं कर्तव्य	... ३९९
१३-१४	खडकमां जागृति, लागणी प्रेम	३६२-६४
१५-१६	दीक्षानो उमेदवार, सुभाषितरत्न	३६६मुखपृष्ठ
१७-१८	कुदरत एन कर्म, सुकृतथी निर्वाण	मुखपृष्ठ

वर्ष २३वीं
अंक ६.

वीर सं० २४५६
आषाढ़.

दोनों उपहार प्रथम शीघ्र ही सभी ग्राहकोंको
बो० पी० से भेजे जायंगे ।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २५) विशेषांक मूल्य ॥)

सुभाषित रत्नसंदोह ।

(मनुयादक—मूलचन्द्र जैन “वत्सल” सं० “आदर्श जैन”)

हृदिर सद्विद्या प्रभासे भव्य कमल विकाशनी ।

स्याद्वाद नय किरणें प्रखर युत निखिल तत्र प्रकाशती ॥

उदित रवि सदृश तिमिर हर विमल बोध प्रसारती ।

भव्य मानव हृदयमें जयवंत हो वह भारती ॥ १ ॥

× × ×
सांसारिक सुख स्वप्न वर्णन ।

मत्त गजेन्द्र, उदंड केशरी, अथवा क्रोधित हुआ नरेश ।

उग्र गहू, हालाहल तीक्ष्ण, हो यदि कष्ट भयङ्कर केश ॥

प्रव्वलित अनल कुपित यम भी हैं एक जन्म दुःखदा होने ।

इंद्रिय विषय कितु मानवको मनन अमित दुख हैं देते ॥ २ ॥

वैभवशालि चक्रवर्ति, हरिकी होनी विषयेन्द्राणं न पूर्ण ।

किंचित विषय प्राप्त मानव कैसे हो सके हैं परिपूर्ण ॥

प्रबल सरितकी तीव्र धारमें मत्त-गज वह जाने हैं ।

शक्तिहीन अति क्षुद्रशशक क्या ? कहीं ठिकाना पाते हैं ॥ ३ ॥

कल्प काल सुख भुक्त सुखीको, देने इंद्रिय सौख्य अनृषि ।

माधारण मनुजोंको कैसे ? कब दे मत्त हैं वह ढुषि ॥

मत्त गजेन्द्रोंका जो सहसा क्षणिक मात्रमें वध करता ।

उस मृगेन्द्रके तीक्ष्ण नखोंसे, मृग क्या रक्षित रह सकता ॥४॥

सरित नीरसे तप्त हुआ यदि रत्नाकर दे सीमा तोड़ ।

काष्ठ संयमे प्रबल अबल संतोषित होकर दे यदि छोड़ ॥

हो सकता विश्वास, विषय भोगोंसे मानव होंगे तप्त ।

किंतु असंभव प्रतिक्षण द्विगुणित होगा हृदय व्यथित संकष्ट ॥ ५ ॥

चक्रवर्ति, मुर वैभवसे भी अभिलाषाणं हुई न शान्त ।

क्षणिक मनुज भवभोगोंसे तब कैसे मिटती प्रबल अशक्ति ॥

अनल उदधिके अमित वाग्निसे तृषा हुई जब शान नहीं ।

कहो ! मला क्या ? ओसर्षिदुसे होसकती उपशान्त करीं ॥ ६ ॥

घातु, पुत्र, कामिनको मोहा-मत्त मनुज अपनाता है ।

इच्छा तृप्ति हेतु संतत अतिशय अपराधि बढ़ाता है ॥

किंतु पापके फल स्वल्प जब अपय यातनाएँ सहता ।

काई साथ न देता तब दुख भार अकेला ही बढ़ता ॥ ७ ॥

द्वैगम्बर जैन

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संशोधयत्पत्रमिदं प्रवर्तनात्, द्वैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वाँ

वीर सम्बत् २४५६, आषाढ, विक्रम सम्बत् १९८६.

अङ्क ६.

शोक !

शोक !!

महाशोक !!!

संसारकी अनित्यताका प्रखर उदाहरण !

कापड़ियाजीकी सौ० धर्मपत्नीका असमयमें स्वर्गवास !

अतीव शोक व संतप्त हृदयसे लिखना पड़ता है कि माननीय श्री० सेठ मूलचंद किसनदासजी कापड़िया संपादक जैनमित्रकी सौ० धर्मपत्नी श्री० सविताबाईका मात्र २२ वर्षकी अवस्थामें ही श्रावण वदी ९ ता० २१ जुलाई सोमवारकी शामको ९। बजे कापड़िया भवनमें कमला (पीकिया)की सिर्फ दो तीन दिनकी बीमारीमें ही अकस्मात् स्वर्गवास होगया !

आप अति सरलहृदया, पतिपरायणा, चतुर, विदुषी महिला थीं। आपको अन्त समय तक समाधिभरण—मृत्युमहोत्सव, मिच्छामि दुकडें, सामायिकपाठ, भक्तामर, विषापहार, मेरी भावना, संकटहरण, दुःखहरण, वैराग्य भावना, पतिक्रमण, सामायिक, कल्याण मंदिर आदि स्तोत्र हम व कापड़ियाजी बराबर सुनाते रहे। तथा अजनकका परित्याग कराके समाधिभरण कराया। कौन जानता था कि कापड़ियाजीको द्वितीय धर्मपत्नीका इस अवस्थामें विमोग सहन करना पड़ेगा ! वास्त-

वमें यह तो एक स्वप्नसा होगया है ! इससे स्पष्ट होता है कि कल कथा होनेवाला है, इसकी किसीको भी खबर नहीं है।

आप करीब ५ वर्षका एक पुत्र बाबूभाई तथा करीब डेढ़ वर्षकी पुत्री दमयंतीको विरखनी छोड़ गई हैं। आप नित्य स्व-ध्याय करती थी और धर्ममें पूर्ण श्रद्धा रखती थीं। हिन्दी और गुजराती भाषाका अच्छा ज्ञान था। जैनसमाज और देशके समाचार पढ़नेका पुरा शौक था। विदेशी वस्त्र न लेनेकी जानन्म प्रतिज्ञा की थी। समय व समय कांग्रेसको दान भी किया करती थीं। मत-रुच यह है कि आपको धर्मप्रेमके साथ ही साथ देशभक्ति भी अपूर्व थी।

कापड़ियाजीने आपके स्वर्गवासके पश्चात् रोना कूटना (जो कि इधर एक बुरी रूढ़ि है) बिल्कुल बंद कराया और मंगलवारकी शामको सान्भना देनेके लिये आनेवाकी स्त्रियोंको समाधिभरण व मृत्युमहोत्सव पुस्तक वांटी। आप वड़े साहसके

साथ कहते थे कि यह संसार है, इसमें इष्ट वियोग और अनिष्ट संयोग होना स्वाभाविक है । इस प्रकार रौने कुटनेकी प्रथाको बंद करनेका कापड़ि-बाजीका यह विवेक प्रशंसनीय व अनुकरणीय है । कापड़ियाजीने श्रीमतीजीके स्मरणार्थ २१११) तथा आपके समुर श्री० गुलाबचंद कालचंदजी पटवा बंबईने ९०१) का दान किया है तथा दिगम्बर जैन व महिलादर्शके ग्रहकोको एक २ ग्रंथ मेंटमें बांटनेका तथा 'जैन महिलादर्श' जहाँतक चालू रहे संशिक्षाके वार्षिक २९) देते रहनेका भी कापड़िबाजीने संकल्प किया है तथा आमन्त्र्य ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया है । आपके बियोगमें मंगलवारको जैन बिनव प्रेस व जैन-मित्र, दि० जैन, जैन महिलादर्श, दि० जैन पुस्तकालय आदि सभी कार्यालय बंद रखे गये थे । स्वर्गीयकी आत्माको शान्ति व कुटुंबीयण-को धैर्य प्राप्त हो यही मेरी श्री जिनेंद्रदेवसे प्रार्थना है । परमेश्वरीदास जैन-पैनेजर ।

गांधी टोपी भी खटकी-कहते हैं कि मोरेना विद्यालयके अधिकारियोंने विद्यार्थियोंको गांधी टोपी लगानेकी मनाई की है ! बाह पं० खूब-चंदजी व पं० मस्तनकाळजी खूब करती !!!

गुरुपूणिमा-का उत्सव अषाढ़ सुद १९ को प्रे० मो० दि० जैन बोर्डिंग अमदावादमें प्रो० आधरडेके समापतित्वमें हुआ था, सुबह विद्यार्थियोंने त्रिविपूर्वक गुरुपूजा की थी ।

मंत्रसिद्धि-आष्टा (भोवाळ) में मोतीकाळ जैनने ऐसा जैन मंत्र सिद्ध किया है कि जिससे आकसे भी बंसीमें मच्छकी नहीं फंस सकती ।

सम्पादकीय-वक्तव्य

भारतवर्षमें रक्षाबंधन एक महान पर्व है । इसको असुक २ समाजें रक्षाबंधन । भिन्न-रूपसे मानती हैं । मगर हमारा जैनधर्म क्या मानता है, इस विषयसे जैन समाजका प्रायः वक्ता २ परिचित है । इसीलिये हम यहां उस कथाको क्लिप्तना तो उपयोगी नहीं समझने हैं, मगर उसपर कुछ विचार करना आवश्यक है । पाठको! रक्षाबंधन कथासे यह बात तो स्पष्ट है कि सत्ताके मद्में मत्त होकर एक अविवेकी शासक क्या नहीं कर सकता है? कारण कि अविवेकी बलि आदि मंत्रियोंने मात्र सात दिनकी राज्य सत्ता पाकर सातमी मुनियोंके होम करनेकी ठानी थी! साथ ही यह भी हम कथासे साहस होता है कि धर्म या धर्मात्माओंके संकटको दूर करनेके लिये एक निःस्पृह निःग्रन्थ मुनि भी कितना त्याग कर सकता है, फिर श्रावकोकी तो क्या बात? बकिराजाकी मांस चरबीमय वस भट्टीमें पड़े हुये मुनियोंका श्री अकम्पनाचार्य द्वारा छठ करके निकाला जाना, मखे बात्मरुद्धका परिचायक है । यदि आचार्य महाराजने अपने तप और वेषका परित्याग करके काकानुसार लकसे काम नहीं किया होता तो ७०० मुनि-बोंका बलिदान हो जाता !

इसी प्रकार रक्षाबंधन कथाकी एक २ बातमें उत्तर है, प्रत्येक वाक्यमें शिक्षा भरी हुई है । उसको कोरा वाचकर वा सुनकर हमारा कल्याण

या धर्मरक्षा नहीं हो सकती, किन्तु कथा यंत्रोंके लिखे जानेका मूक उद्देश्य लोगोंको शिक्षा देनेका है । इसलिये हमें यहाँपर यह विचारना चाहिये कि जब तपोधन श्री अकम्पनाचार्यने परम कल्याणकारी तपका परिखाग कर धर्मकी रक्षा की तब हमारे देखते हुये धर्मका अपमान कैसे हो ? जहाँ विधर्मियों या किसी शक्ति द्वारा हमारे धर्मपर आघात हो वहाँ हमें अपना तन, मन, और धन अर्पण कर देना चाहिये ।

यह जानकर अपार दुःख होता है कि धौलपुर राज्यके राजाखेड़ा ग्राममें आचार्य श्री शान्ति-सागरजीके संघपर विधर्मियों द्वारा किये गये दुष्ट आक्रमणका जैन समाज अभी तक निराकरण न करा सकी ! चाहिये तो यह था कि तब तक न्याय न मिल जाता तब तक समाज जैन न लेती, मगर सब चुप बैठ गये । फल यह हुआ कि विचारे वहाँके जैन माई ही उल्टे सतये जाते हैं । क्या यही हमारे रक्षाबंधनका आदर्श है ?

याद रहे कि रक्षाबंधन बांधकर मनुष्य हम प्रतिज्ञा मुत्रसे बद्ध हो जाता है कि मैं अपने धर्म देश और समाजकी रक्षा करूँगा, अपनी मां बहिन बेटियोंको किसी प्रकार अपमानित न होने दूँगा और साधर्मियोंसे प्रेम पूर्वक व्यवहार करूँगा । जब आप सच्चे दिलसे तो विचार कीजिये कि इन बातोंमेंसे आप किन २ कायोंमें लगे रहते हैं ? अगर हम इनमेंसे कुछ भी नहीं करते हैं तो रक्षा बंधन बांधनेका हमें अधिकार ही नहीं है । सख्तापुत्रन व विष्णुकुमार महा-मुनि पूजा इस दिन अवश्य करना चाहिये ।

* * *

रक्षाबंधन पर्वके समय बहिनों द्वारा माई माई मिठाई खाकर और वि-
मौज शौक । खाऊ धागा हाथमें बाँध कर उसके उपरक्षमें दो चार रुपया देनेसे अपना कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता, किन्तु तबमें क्या तब छिगा हुआ है इसको देखकर तदनुसार चलना ही सच्चा रक्षा-बंधन है । इस पर्वमें अधिकांश लोगोंको मौज-शौक भी सूझती है । अच्छे २ बस्त्रामुषण पहिने जाते हैं, विविध प्रकारके पकवान खाये जाते हैं और नानामकारसे मौज की जाती है, मगर सरदार बरठममाईके कथनानुसार जान-कल हम देश-संकटके समय व्यंजनोंका खाना धूक खानेके बराबर है और मौज शौक या कोई व्यवसाय करना हाराम है, वोर पाप है तथा देश द्रोह है ! इन वाक्योंका ध्यान रख कर ही हमें इस पर्वका रक्षाबंधन पर्व मनाना चाहिये । रक्षा-बंधन एक बड़ी जिम्मेदारीका पर्व है । जबकी वार योही कच्चा सूत बंधवाकर व्यर्थ ही बड़ह न खाये जावे, किन्तु रक्षाबंधन बंधवाते समय बहिनोंके समक्ष प्रतिज्ञाबद्ध होना कि हम और तुम आकरे अपने धर्म और देशकी रक्षा करेंगे, प्राण जाने जाते भी तुम्हारा अपमान न होने देंगे तथा भारत माताके सन्मानको रक्षित रखेंगे ।

* * *

यह याद रहे कि विदेशी सूत या रेखमकी बनी हुई राखी न तो विदेशी राखी । बहिनें अपने माइयोंको बांधि और न माईं ठसे बंधवावे, किन्तु वह शुद्ध स्वदेशी सूतकी बनी

हुई हो। सबसे अच्छा तो यह है कि बहिनें अपने हाथसे ही सूत कातकर स्वयं रक्षाबंधन तैयार करें। और उसे बांधती हुई अपने माह-योंसे धर्म और देशकी रक्षा करनेकी प्रतिज्ञा करावें। साथमें यह भी स्मरण रहे कि उपहार स्वरूप कोई भी खिलौना या वस्त्र विदेशो न लिया दिया जावे। जब ऐसी पवित्रता पूर्वक रक्षाबंधन पर्व मनाया जावेगा तब देशभक्ति बढ़ेगी, धार्मिक प्रेम जागृत होगा और रक्षाबंधनका सच्चा अर्थ उपस्थित होगा।

* * *

जो देश एक दिन समस्त प्रगतको अज्ञ और वस्तुओंसे परिपूर्ण करता विदेशी वस्तुओंका था, जिसकी कारीगरी प्रभाव। संसारमें सुप्रसिद्ध थी, जो ज्ञान और विवेकमें बढ़ा चढ़ा था, वही हमारा देश भारतवर्ष आज मूखा है, नग्न है, व्यवसायहीन है और थोड़ी शिक्षाको लेकर ज्ञानहीन बन गया है। विदेशी मशीनोंसे हमारी कारीगरीका नाश होगया और देशकी शिल्पकला नष्टभ्रष्ट होगई! अब हम बात बातमें विदेशके आधीन होगये। सुई और चागासे लेकर बड़ी चीजें हमें विदेशसे मंगाना पड़नी हैं। अपनी मूर्खतासे लोग बाक्योंको विदेशी खिलौने देने हैं, विदेशी पोषाक पहिनाते हैं, और विदेशी बिस्कुट आदि खिलते हैं! कब यह होता है कि उनपर प्राप्त कच्चे ही विदेशी वस्तु, विदेशी स्नानपान और विदेशी ही पहिनाव टड़ावका प्रभाव पड़ जाता है, जिससे वे आगे जाकर फैशनमें पड़कर दुखी होजाते हैं।

इसलिये इन बातोंपर हमारा पूरा ध्यान होना चाहिये। यदि बाक्योंको विदेशी वस्तुओंसे मारंम-से ही प्रेम होगा तो वह आगे चककर अमिट हो जावेगा और जो पहिलेसे ही घृणा होकर देशी वस्तुओंसे प्रेम होगा तो इससे उनका हृदय भी स्वदेशाभिमानी बन सकेगा। और हमारे देशका करोड़ों रुपया जो विदेशमें अनावश्यक विदेशी खरीदनेमें चला जाता है वह बच सकेगा।

* * *

यदि सच पृष्ठा जावे तो हमारा व्यवसाय संसारमें सबसे बड़ा चढ़ा हमारा वस्त्र था। ढाकाकी मकमक व्यवसाय। तो प्रगत प्रसिद्ध है। चीन और जापानमें भारतवर्षसे

बालों और करोड़ोंके वस्त्र जाते थे। मगर सन् १८९६ ई० से बिकायती कपड़ोंका महसूब सेकड़े १॥) घटाकर देशी कपड़ोंपर सेकड़े ३॥) नया महसूब लगाया गया। ऐसा करनेसे देशी कपड़ोंकी खरत बहुत कम होगई। इस देशमें भी बिकायती कपड़ोंकी अपेक्षा देशी कपड़े इतने महंगे होगये कि खरीदना कठिन होगया। काहें वेंटिंगके समयके अनुसंधानसे माखूम हुआ है कि भारतमें बिकायती कपड़े ३॥) महसूब देकर बेचे जाते थे, किन्तु भारतवासी अपने देशमें अपने ही व्यवहारके लिये जो कपड़े बनाते थे उन्हें फी सेकड़े १७॥) महसूब देना पड़ता था। इत्यादि कारणोंसे हमारा वस्त्र व्यवसाय एकदम घट गया और विदेशी वस्तुओंकी इतनी आवक बढ़ी कि आज ६९ करोड़ रुपया धार्मिकका वस्त्र हमारे यहां आने लगा है। मात्र वस्त्र व्यवसाय

ही नहीं, किन्तु २३९ प्रकारके अच्छे २ ठब-
साब जबरदस्त महसूक ढगानेके कारण भारत-
वर्षसे नष्टनाश होगये और हमारा देश भिल्लारी
बन गया । अस्तु !

* * *

जब हमारा देश ठबबसाबहीन बन गया
और आवश्यकताएँ उत्त-
वर्तमान आन्दोलन। रोलर बढ़ती गईं तब
विदेशी बस्तुओंका समा-
वेश होना और देशका कङ्काल होजाना स्वाभा-
विक ही था। बहुत समयतक यह सब देखते २
महात्मा गांधीजीने आन्दोलन खड़ा किया, वह
क्रमशः बढ़ता गया और आखिरकार इस दर्जे
तक आपहुँचा कि जिसकी महात्माजीको स्वयं
सम्भावना नहीं होगी ! म० गांधीजीने देशके
सामने वह सूरत सत्य एवं अहिंसक कार्यक्रम
रखा कि जिसमें सफलता मिलना अवश्य
थाबी है। साथ ही इस स्कीममें खूबसाहसे
सुसज्जित एक बकशाकी सरकारको भी कल्पित
कर दिया है। वर्तमान आन्दोलनका मात्र गत
४ मासमें ही वह कातिक अस्तर हुआ कि केंके-
खाबरकी कपड़ेकी मिलें घड़ाघड़ बंद होने लगी
और काखों आदमी बेकार घूमने लगे ।

जब हम अपने सूरत शहरको ही देखते हैं
तो आश्चर्यमें पड़ जाते हैं । तमाम विदेशी
बस्तुओंकी दुकानें बंद पड़ी हैं । जिनके घरोंमें
हजारों रुपयोंकी विदेशी साड़ियां पड़ी हैं वे
महिकार्ये आज शुद्ध स्वदेशी बस्तुओंको पहिनकर
मातःकाक हजारोंकी संख्यामें विदेशी बस्तु बहि-
ष्कारका आन्दोलन करती हुईं और राष्ट्रीय गीत

गाती हुईं निकलती हैं । बाळक, वृद्ध, युवाव
और विद्यार्थी, ठपापारी और मजदूर सभी
अपने अपने संघ निकालकर British Goods
Boycott " ब्रिटिश मालका बहिष्कार करो "
की आवाजोंसे समस्त शहरको गुंजाबमान कर
देते हैं । इसका जो अपूर्व अस्तर होरहा है वह
किसा नहीं जासकता । सच बात तो यह है
कि लोग ठोकर खानेपर ही साबधान होते हैं।
भारतवर्षको भी कम ठोकरें नहीं लगी हैं । अब
वह साबधान होगया है और विदेशी बस्तु बहि-
ष्कारकी ऐसी पुरुञ्जा नीब जमा रहा है कि उस-
पर स्वराज्यका सुखमई भव्य भवन निर्माण
होकर ही रहेगा ।

x x x

देश सेवामें यथाशक्ति भाग देना प्रत्येक
मनुष्यका कर्तव्य है। हम
हमारा कर्तव्य । अपने जैन बंधुओंसे नि-
वेदन करते हैं कि वे
स्वदेशी बस्तुओं और अन्य देशी बस्तुओंका ही
व्यवसाय करें। अपने मंदिरोंमें तमाम बस्तु शुद्ध
खादीके ही हों। किसी अहिंसक जैनके शरीर-
पर अपवित्र विदेशी बस्तु न हो। अपनी मां
बहिनें स्वदेशी बस्तु ही उपयोगमें लावे। इसीमें
शोभा है, यही देश सेवा है। इसीसे अहिंसा
धर्मके पाठनमें अच्छी सहायता मिल सकती है,
यही अपने देशके गरीबोंका पाठन कर सकता
है। इसके साथ ही साथ यह भी क्लिप्त देना
उचित है कि प्रत्येक गृहस्थके घरमें चरखा और
ठकलीका होना आवश्यक है। जहांतक हो
अपने द्वारा काते हुये सूतका ही पवित्र बस्तु

पहिना जाय । ऐसा करनेसे आपकी सादगी बढ़ेगी, बिकसिता कम होगी और बह्य शुद्धि या पवित्रताका रक्षण होगा । हर्षका विषय है कि अनेक स्थानोंपर पंचाशतियों द्वारा मंदिरमें विदेशी बस्तु न पहिरने और न उपयोग करनेका निश्चय होगया है । अनेक स्थानोंपर स्वदेशी बस्तु ही पहिरनेका नियम किया गया है । हमें आशा है कि और भी पंचाशतियाँ इसका अनुकरण करेंगी । और यदि हमें सूचित करेंगी तो हम समाचार भी प्रगट करेंगे ।



मुनियों व त्यागियोंका चातुर्मास ।

हमारे मुनियों व त्यागियोंके चातुर्मासके समाचार अभीतक इस प्रकार मिले हैं—

- १-आ० १०८ श्री छांतिसागरजी, ७ मुनिगण तथा ऐकक, झुल्लक, अजिंका चौशसी (मथुरा)
- २-मुनिश्री सूर्यसागरजी, वीरसागरजी, धर्मसागरजी व अजितसागरजी-कण्डलपुर ।
- ३-मुनिश्री मुनींद्रसागरजी, विजयसागरजी व देवेन्द्रसागरजी ३-मुनिगण-पेशापुर (गुजरात)
- ४-मुनिश्री नेमिसागरजी, मुनि पावसागरजी व मुनि आदिसागरजी तथा एक ऐकक व दो झुल्लक निमश्चिरगांव (कोल्हापुर)
- ५-ऐकक चन्द्रसागरजी भिंड (ग्वालियर)
- ६-झुल्लिका विमलवती व शांतिमती मांदाजी
- ७- ,, चन्द्रमतीमाई उदगांव (सतारा)
- ८-झुल्लिका अजितमती व अनंतमती दुषगांव
- ९-ब० सीतलपसादजी अमरोहा (मुरादाबाद)
- १०- ,, सुनीलाकजी वांसवाड़ा (डूंगरपुर)

- ११-ब० गंगापसादजी मनीपुर (आसाम)
- १२- ,, भगवानसागरजी नजीबाबाद
- १३- ,, मोतीलाकजी इन्दौर
- १४- ,, आदिसागरजी पानीपत
- १५- ,, दीपचन्द्रजी वर्णी दाहोद (पंचमहल)
- १६- ,, नेमचन्द्रजी नरखेद, मानवत (दक्षिण)
- १७- ,, गेबीलाकजी बड़वानी
- १८-म० सुरेन्द्रकीर्तिजी सोबिजा (पेटलाद)
- १९-ब० मूकचन्द्रजी फिरोजपुर छावनी
- २०- ,, प्रेमसागरजी बुहार (रीवांराजब)
- २१- ,, जयंतीपसादजी मरघना
- २२-म० जशकीर्तिजी रामगढ (डूङ्गापुर)

शेष त्यागी ब्रह्मचारियोंके चातुर्मासके समाचार आगामी अंकमें मिलनेपर प्रगट करेंगे ।

जम्बूस्वामी (मथुरा)-में मुनिसंघका चातुर्मास है इसके संबंधके लिये चातुर्मास संबंधक कमेटी नियुक्त हुई है, जिसके मंत्री बा० गुलाबचन्द्रजी टोंगा हैं । दर्शनार्थ व आहारदानार्थ जानेवालोंके लिये ठहरनेका उत्तम पबंध होचुका है । आचार्यश्रीने अष्टानिकाके ८ उपवास किये थे ।

महेश्वर-में दि० जैन पोरबाह पंचाशतकी बैठक होकर उसमें इन्दौर स्टेटके नुकानाशक बिकक समर्थन किया गया ।

अन्तर्राष्ट्रजी-में श्वेतांबरी माई मंदिरकी पूर्व अवस्था बदलनेकी अयोग्य कार्रवाई कर रहे हैं । इसपर दिगम्बरी माई कोर्टमें गये हैं व श्वेतांबरीमाई दि० को बहुत परेशान कर रहे हैं । १०००००) बिकायत स्वर्चके हमें देने पड़ेंगे, उसके लिये द्रव्यकी आवश्यकता है ।

जैनसमाचारवर्ति

मत्याग्रह संग्राममें जैनी ।

गोटगांवमें पंचायतीसे विदेशी कपड़े पहनकर मंदिर जाना बंद हुआ है। पानीपतके जैनोमें खादीका पूरा प्रचार हो गया है। दाहोदमें कचरा मूकचंद, अयंतीकाक व नगीनकाक जेठ गये हैं। चार मासतक विदेशी वस्त्रका लेनदेन बंद हुआ है। झांसीमें बाबू विश्वम्भरदास गार्गीय व रक्ष्मीचंद्रजीको १-१ सालकी कैद हुई। ललितपुरमें वैद्य मधुगोप्रसादजी ९ महिने जेठ गये। सहारनपुरमें बा० अनितप्रसादजी बकीर १॥ वर्ष व पं० झम्भनकाक जैन ६ माह जेठ गये। आगरामें सब मंदिरोंमें विदेशी वस्त्र पहनकर जाना कतई बंद हो गया। मधेन्द्रजीके मकानकी तलाशी १५० पुकीसने आकर ली, कुछ नहीं मिला। आपने दैनिक हिन्दुध्यान पत्र निकाला है। इटारसीमें जैन महिकाएं चाल चलाती हैं व प्रभात फेरी खूब करती हैं। चिरगांवमें जैनोने विदेशी कपड़े पर सील लगा दिये हैं। अजमेरकी जैनवाल सभाने विदेशी वस्त्र बंद कर दिये। देहलीके अयोध्याप्रसाद गोबलीय मोन्टगोमरी जेठमें भेज दिये गये हैं। नरेका (देहली) में श्री जैनेन्द्रकुमारजी, बा० नन्देमलजी, मदनकाकजी, वैद्यराज दामोदरजी, शंकरारामजी व मोहनकाकजी जेठ गये हैं। मुक्तानपुरमें श्री० रामदेवीबाई देहलीके पवारसे सहरका प्रचार हुआ।

५०००)का गुप्त दान, ग्राहक चाहिये— एक माईने ५०००) गुप्तदानार्थ निकाले हैं। इसलिये जिन२ संस्था व क्षेत्रोंको सहायताकी आवश्यकता हो हमसे पत्रव्यवहार करें—

के० एम० भिसीकर, गवर्नमेंट हाईस्कूल,
अमरावती (बरार)।

यरोडा जेठ—में हमने महात्मा गांधीजी व छोटाकाक गांधीको तत्त्वभावना ग्रंथ भेंट भेजे थे जो साधार स्वीकार हुये हैं।

खंडवा—में अष्टानिका पर्वमें रथवाजा निकाली गई थी। पं० मुलाकाकजी काठपतीर्थ उपदेशार्थ पधारे थे। चंद्रबाईजीने सोनाडी रक्षाबी मंदिरमें भेंट की।

झालरापाटन—में अष्टानिका पर्वमें अति रमणीक मंडप पूजनार्थ बना था। रथवाजा निकाली थी। पं० आनंदकुमार, पं० हीराकाकजी आदिके उपदेश व विद्यार्थियोंके संवाद हुए तथा तीन स्त्री सभाएं भी हुई थीं।

सरैया जैनी सूरत—जो प्रथम साबरमती जेठमें थे व अब नामिक जेठमें सकुशल हैं, उनके विषयमें राष्ट्रपति सरदार बल्लभभाईने सूरतमें गत ता० २१को कहा था कि मैंने साबरमतीकी जेठमें सबसे दुबला पहला और कमवमनी बीर सूरतके सरैया जैनीको देखा है। जब ऐसे १ आदमी जेठमें हैं तब नवयुवकोंका घरमें बैठना दराम है।

इन्दौर—में मृत भोज अथवा नुक्त बंद करनेका बिल स्टेटमें विचाराधीन है, इसके विरोधमें पं० धजाकाकजी आगे जाये हैं !! बाहरे पंडितजी !!!

ऋ० ब्र० आश्रम-चौरासी (मथुरा)के प्रचारके लिये पं० रामकाठजी व पं० मुक्तीकाठजी नियुक्त हुए हैं ।

श्वे० जैन व जैन पथ प्रदर्शक-आगराके इन दोनों श्वे० जैन साप्ताहिक पत्रोंसे सरकारने जमानत मांगी, इससे बंद कर दिये गये हैं ।

‘वीर’ का समाज अंक-१० चित्र २३ विषय व २६ पृष्ठा अतीव आकर्षक मेरठसे प्रकट होगया है । अब बा० जिनदत्तपसादजी-मेरठ प्रकाशक नियुक्त हुए हैं ।

२०००) की पुस्तकें भेंट कर दीं-बा० कृष्णाकाठ वर्मा (बंबई) ने कारंजाके महावीर ब्रह्मचर्याश्रमको १०४७॥) की पुस्तकें भेंट कर दी हैं । धन्य !

पं० हीपचंदल वृष्णिनि प्रयास-आग्ने-हमां सर्वे लाष्ठ ष्हेतोऽग्ने मंदिरमां स्वदेशी वस्त्र पहरेतीनेऽग्ने आववा इराव उर्वो. पादरांमां अद्यम, श्रीशुण वजरे यदेतुं द्रव्य वेद्ययानुं अंध उराव्युं. तथा परदेशी अग्ने देशभी वस्त्र पहरेती मंदिरमां अवातुं अंध ययुं. पादशाया इरी यालु थय. पं० लुपेन्द्रभारल जखुवे छे. पडोदरांमां शस्त्र सभा इरी शंका समाधान क्युं.

छाष्णी (मुनि शान्तिसागरलतुं जन्म स्थान) मां महावीर स्वामीतुं प्रख्यात मंदिर छे जेता छर्षेदार भाटे अत्यंत अरर होवाथी छाष्णीना नवीन लाठयोऽग्ने पठर) नी रक्षम इरी छे (जेमां १०१) सवत्सलाठ 'दत्तमयंस्ता' छे) अग्ने जे लाठयोऽग्ने हीप अराववाने पदारगाम मोक्षलवांमां आवनार छे.

पडोदरां-मां शुभानीवाल श्रीवाललतुं पोतानी पुत्रीना लज्ज प्रसजे ६००) मंदिरमां दान उर्वा हता तथा इन्धावाणा (मुरार निवासी)ऽग्ने २६०) मंदिरमां आप्पा हता. आ समयमां तो संस्थाओमां दान करवानी अरर छे.

प्रांतिज ज्योडिं'ग-ने भाटे ३०) मासिक (अग्ने मोहन प्रबंध) सुधीना जैन पंडितनी आवरकता छे. सेठ पुलचंद शीवचंद मंत्री-प्रांतिजने लभ्युं.

पेथापुर-(सादरा) मां मुनि मुनींद्रसागरल आदि ३ मुनि अग्ने त्यागीओना यातुर्भास थयो छे. मुनिश्री आवलु सुद ३ ने दिने देशयोय अरनार छे ते प्रसंगेना वाल देवा पधारवाने पेथापुरनी दि० जैन पंच्य सर्वेने आभंत्रणु करे छे. आवलु सुदी २-३-४ अग्ने त्रलु दिनेऽग्ने कुल ४ टंक जमलु डोडारी नानचंद नागरदास, अमथावाल सांकेणचंद ने जगनवाल तथा मुनीवाल सांकेणचंद तररथी थनार छे. मंत्री सेठ जगनवाल सांकेणचंद नीभाया छे.

समोशरण रचना ।

नवीन रंगीन चित्र ।

तीर्थंकरके समोशरणकी कुछ रचनाएं इसमें दर्शाई गई हैं । यह बड़ा अपूर्व नकशा अभी ही छपा है । मूल्य-आठ आने ।

श्री गोमटस्वामी (रंगीन) ।

यह चित्र भी नवीन छपा है । बड़ा, रंगीन व इन्द्रगिरि पहाड़ सहित है । मूल्य-आठ आने ।

शिवरानी, चम्पापुरी, पाषापुरी, गिरनार, सोलह स्वप्न, तीर्थंकर माता व चंद्रगुप्तके, संसार वृक्ष, षट्-लेशवा, सीताकी जग्निपरीक्षा, आहारदान, जन्म-कृष्णक, पार्श्वनाथ आदिके रंगीन चित्र तथा एक आनेवाले ३९ प्रकारके सादे चित्र भी मंगाइये ।

सम्यक्त कौमुदी ।

फिर तैयार होगई । इसमें सम्यक्तके आठ अंगोंकी आठ कथाएं सरक भाषामें हैं । मू० ॥३॥

मैनेजर, दिगम्बर जैन पुस्तकालय-सुरत ।

निराशा ।

(लेखक-श्री० ब्रह्मचारी प्रेमसागरजी)

(१)

मन्नूकी मां आंगनमें बुझरी देरही थी । उमी समय मन्नूने जोरसे रोना शुरू कर दिया । मन्नूकी मां समझती थी कि मन्नू मेरे बिना चुप नहीं हो सकता इसलिए वह बड़ी ही शीघ्र तासे आंगनको बुझारकर मन्नूके पास पहुंच गई और उसे दुग्धपान कराकर देवकीके निकट सुला दिया । क्योंकि समय सवेरेका था और घरमें लकड़ी होनेसे मांग कामकाज उसीपर ही निर्भर था । इसलिए मन्नूको सुलाकर शीघ्र वह अपना कार्य सम्पादन करने लगी ।

मन्नूकी मांने प्रथम ही अर्गटोमें आगी की और फिर जुवांरके दाने चक्कीमें पीसने लगी । कुछ देरके पीछे मन्नू फिर उठा और रोने लगा । सब तसने देवकीसे कह — “बड़ी देवकी उठो, भैयाको रमाओ प्रवचक में जुवांरके दाने पीस लेऊँ ।” मांकी बातको सुन देवकी उठी और मन्नूको गोदीमें लेकर उसे खिलाने लगी ।

चक्की पीसते पीसते मन्नूकी मांको सटमा यह गाना याद आगया—

कबतक नाथ दया धारोगे ॥ टेक ॥

नाथ हमारी डूब रही है ।

कबतक नाथ उसे तारोगे ॥ १ ॥

तन नहीं बसन अपन नहि पूरा ।

मह दुख धों कबतक टारोगे ॥२॥

प्लेग रोग, दुष्काळ सतावन ।

कबतक आप इन्हें मारोगे ॥३॥

सेवक ‘प्रेम’ यही नित भावत ।

भारत दुख कबतक टारोगे ॥३॥

मन्नूकी मांने उक्त गानेको बड़ी करुणानयन धुनमें गाया । मचमुच ही वृद्ध भारतकी नैया डगमगा रही है उसपर प्लेग जैसे प्राणघातक रोगीका अक्रम हो रहा है तथा दुष्काळका दौड़ादौड़ हो रहा है । अनावृष्टीसे भारत विपत्तियोंका घर बनता जा रहा है, उसके अचिकांश निवासी उदर भर भोजन नहीं पाते और न शरीर ठहरनेको दख ही मिलता है ।

मन्नूका पिता रामसेवक अभी विपत्तियोंपर ही लेटा सूर्यदेवका आगमन देख रहा था, क्योंकि वह जाबेके कारण टिढ़ा रटा था एवं उसका शरीर कांप रहा था । दूसरी बात यह थी कि वह ३५ वर्षका ही होकर शरीरसे कमजोर था क्योंकि उसे बाल्यचर्चोंके भरणपोषणकी तथा सद्गुरुके कर्मकी चिन्ताने बीमार बना दिया था ।

चिन्ता एक अग्नि है जो मानवके अंतरंगको जलाती और शरीरको निःशक्ति बना देती है ।

इसपर कवि कहते हैं कि—

चिन्ता उबाक शरीर बन, दावा उगि उगि जाय ।

पकट धुवां नहि देखिगे, उर अन्तर धुंघवाय ॥

उर अन्तर धुंघवाय, जले ज्यों बांच कि भट्टी ।

जल गयो लोह मांस, रही बस, हाइकी दृष्टी ॥

कहनेका मतलब यह है कि चिन्ता मनुष्यकी सारी शक्तियोंका नाश कर देती है । मन्नुका बाप चिन्ताओसे ग्रस्त था इसलिये वह जवान होकर भी वृद्धमा होरहा था ।

सूर्यदेवको दया आई और वे मन्नुके बाप रामसेवककी प्रार्थनाको स्वीकार कर अपनी किरणोंको प्रसारते हुये आकाशमंडलपर आगये । मन्नुका बाप "सि सी, हूँ हूँ" करता उठा और एक १२ थिगरावाली छड़कलीवाली मिरनाई-पहिन सिरपर एक अतिपुगना एवं नीर्ण चीथड़ा बांधकर तथा एक पुरानी मलीन चादर ओढ़ कांपता हुआ आंगनमें आया और सूर्यकिरणकी धूपको तापने लगा । देवकी भी मन्नुको लेकर पिताके पास आवैठी ।

मन्नुकी माने जुगार पौसकी और चक्री बंद कर वह भी आंगनमें आकर धूर तापने लगी ।

कर्मकी गति विचित्र है, उमने किसीकी राना किसीको रंक बनाया है तथा किसीको धनिक और किसीको निर्धन बनाया है । शीत ऋतुका समय धनिकोंको नहीं कसरता, क्योंकि वे गरम उंनी व रुईके कपड़ोसे उसे पराप्त करने हैं किन्तु निर्धनोंके लिए वह अति दुःखप्रद होता है । निर्धन तो अग्नि और सूर्यकी किरणोंको ताप कर ही तपसे बचनेका उपाय करते हैं ।

विश्रम है कि धनिक लोगोका दिव दयासे दबित नहीं होता, तभी तो रामसेवक सरीखे हजारों निर्धन भारत-भूमिपर अपनी निदगीके दिन गिन रहे हैं !

(२)

“ आसोक्री जादी तौ नहीं सहो जात है ।
सब रात दुःखमें बीतत है । मन्नुतौ तनक
देरखों नई सोऊत आय, जाड़ेमें सब रात
तइफत है ” मन्नुकी माने कहा ।

अपनी पत्नीकी दुःखभरी बातोंको सुनकर रामसेवक बोला—तो हम का करें, हमें कपड़ा क्यावें । पेट भरवेकी तौ दोदो पड़ी हैं । तुमने वेइ कहावत करी है कै—“ धरमें नईयां दाने, दुधरो चलीं भुमाने ” तुमें तौ बलू खबरई नईयां । जीबरी रामपरसादके २९९) २० देने हैं और मोदी मुलाकाकके कपड़ाके २६।।।) देने हैं । इनमें जीबरीजू तो बलू गम्भसी खाएं बैठे हैं पै मोदीजू तो नालिम करवेकी फत हैं । अब तुमई बनाओ कै में कौनके घरसे उजा कपड़ा क्याऊ ?

मन्नुकी मां—तुमने जो कई सोती सबई सांची है । मैंने एक बात सोची है और कै जीबरीजीमें ही १९) और जिआओ और गोंऊं देवी लिखा आओ ।

रामसेवक—तुम तो गेहूंकीके बरूपे नाब नचन जाउती हो, नचो हमें क्या करने । देखत नईयां बादक नई तराके होगहे हैं । आकाश गद-गडात है । रातमें तो ऐसी जगत है कि वर्षनई चाहत है ।

रामसेवक और उनकी पत्नीकी बड़ी देरतक बातोंकी कड़ाई होती रही, लेकिन अंतमें उनकी पत्नीकी ही जीत हुई । तब तो रामसेवक जुप-केसे ठठकर जीबरी रामपरसादकीके घर गये ।

चौधरीजीने रामसेवकजीको आदरके साथ बैठाया और बोले “ कहिये क्या आज्ञा है ?”

रामसेवक—आज्ञा जो है सो आपसे छिपी नहीं, मैं आपसे कहवे सकुचाता हों ।

चौधरी—नहीं नहीं, इसमें संकोच करनेकी कोई बात नहीं है, जो आज्ञा आपकी हो उसे प्रकट करें । मैं उसे सादर पाठन करूँगा ।

रामसेवक—आपको मेरी दशाकी हाल मालुम है और जो कड़व हो तो मैं सुनाऊँ—आज २० दिनासे ऐसा कर्मोने सताओ है के भ्रमपेट भोजन नहीं मिलत, और सबसे बड़ी दुःख जाड़ेकी है । सब रात शरीर टटुगत है । ईमें आप मोरी बछू और सहायता करदें तो मोरो जी दुःख बछू हलकी पड़े ।

चौधरीजी—आप सबड़ावें नहीं और न दुःखी हों । कर्मोनुसार विपत्ति समीप आती है, लेकिन मनुष्य उसे समतापूर्वक सहन नहीं करता । अगर काले तो भविष्यमें उसको सुख शान्तिका काम बिना मिले न रहे । आप ती म्याने हें, समझदार हें, सबड़ावें नहीं । मेरी बातें सुनें—४ महिनेके लिये सुझसे खानेको अनान लेजावें और कपड़ोंके लिए जितने रुपया चाहिये, लेजावें, सबड़ावें नहीं ।

रामसेवक—अच्छी बात है, अनान और १५) २०) कपड़नस्तों देदो ।

चौधरी रामप्रशादजी बड़े ही परोपकारी धर्मात्मा थे । उन्होंने समझ लिया था कि द्रव्यका मिलना पुण्यसे होता है । मैंने परमवर्मे पुण्य किया था जिसका यह फल है । इसलिए द्रव्यको

परोपकारमें ळगाना पुण्यका संचय करना है क्योंकि यह द्रव्य पुण्य क्षीण होनेपर नष्ट हो जाता है ।

दूमरे घनिकोंके समान चौधरीजी धनमत एवं कृष्ण नहीं थे । इसीसे चौधरीजीने रामसेवकपर करया आते भी उन्हें ४ महिनेके खानेको अनान और २५) देना स्वीकार कर लिया । रूया तो रामप्रशादजीके हाथ दिये और अनान लीकरोके द्वारा उनके घर पहुंचवा दिया ।

रामसेवकजी घर गये और सारा हाल पत्निसे कहा । पत्नी सुनकर सन्तोषित हुई और उन्होंने ४ महिनेको चिन्ता छोड़ दी ।

(३)

आधी रातका समय था, संसार निद्रादेवीकी गोदमें सोरहा था । स्वान समूहोंने अपनी “भू-भू” की आवाजसे आकाश गुंजा दिया था । ऐसे समयमें ही आकाश मेंसे आच्छादित होगया, और वे जोरोंसे गर्जने लगे तथा बिजली चमकने लगी और थोड़ी देरके बाद मेघोंका वर्षना शुरू होगया ।

रामसेवक पेसाबको उठा । और पानीको वर्षते देख सोचने लगा कि—“का होनहार है, का आई अवाई फमक चलीमे है ?” भगवान् रक्षा करो ! रक्षा करो !! इसप्रकार तीनबार कह मन्नुकी नांको उठया । वह उठी और बोली का भुपारो होआओ ?

रामसेवक—भुपारो ली अमे नई भप्रो पर अपनों नाश होगओ । इतना सुनकर मन्नुकी भां शीघ्रतासे उठी और पतिक पास दौड़ी

आई, बोली—कैसे नाश ? रामसेवकने कहा—
देखी नई कितनी पानी वर्ष रबी है और न-
जानें अब कबतक वर्षने है । कामसे, जाकाशमें
बादरनने अपनों डेरा जमा लभो है । तुमने तो
और कर्मा बदवा दओ और गोडु आउत नहीं
दिखात । रामसेवक और उनकी पत्नीकी
बातचीत होही रही थी कि ओरोंका सराटा
आया और उनकी पड़पड़ाहट होने लगी ।
मन्तूकी मंने किवाड़ खोकर देखा तो पानीके
साथ ओले भी वर्ष रहे हैं । अब तो और भी
रामसेवक घबड़ाने और उनकी पत्नी रोने लगी ।

रामसेवककीका घबड़ाना और उनकी पत्नी-
का रोना ठीक ही था । क्योंकि उनकी आर्थिक
अवस्था बहुत ही सोचनीय थी । कमी २ आधा
पेट भोजन भिन्नता था और कभी २ वह भी
प्राप्त नहीं होता था । वे बड़ी कठिनतासे चाल-
बच्चोंका पोषण कर रहे थे । रामसेवकने अपनी
पत्नीकी प्रेरणासे मोतीराम मालगुजार साहेबके
बहांसे ५ मन गेहूं बाढ़ी लेकर बोदिये थे ।
गेहूंओंकी बाळ निकल पड़ी थी । रामसेवकको
आशा थी कि गेहूं अच्छा पकेगा, किंतु वह न
फली । पानी और ओलोंका वर्षना ३ बजे तक
रहा । बिचारे रामसेवक कर ही क्या सकते
थे । क्योंकि “ देव (कर्म) से किसीका कुछ
नहीं बसाता । ”

पंचेग होगया लेकिन पानीने पीछा नहीं
छोड़ा । वह २॥ घंटे बंद रह फिरसे वर्षने लगा ।
रामसेवक घबड़ाकर उठा और एक अतिपुरानी,
जीर्ण कमली सिरपर टाक कांपता हुआ खेत

पर गया । खेतको देखते ही रोने लगा क्योंकि
उसमें इतना पानी भर गया था कि गेहूंओंकी
बाळ ही केवल दिखाई पड़ती थी ।

(४)

रामसेवकने खेतकी मैदको फाटदेसे शीलके
स्थानसे काट दिया किंतु उससे कुछ फायदा
नहीं हुआ, कारण और किसान भी इसी प्रकार
करने लगे । रामसेवकके खेतसे लगा हुआ
उपरको प्यारेलाक कुरमीका खेत था, इसलिए
उसका पानी रामसेवकके खेतमें आना अनिवार्य
था । रामसेवक ऐसी दशमें कर ही क्या
सकता था ? बेचारा कांपता हुआ घर लौटा ।

पानीका वर्षना बंद नहीं हुआ और वह
लगातार सात दिन तक वर्षा ! कास्तकारोंमें
हाहाकार मच गया, जिधर सुनो उधरसे ही
बही आवाज सुनाई देने लगी कि “ गेहूं सड़
गये, गेहूं सड़ गये—दुष्काळ पड़ गया । ” दर
असक गेहूं सड़ गये, आखरी बीज भी कास्त-
कारोंके घर नहीं आया ।

जो दशा तमाम कास्तकारोंकी हुई बही
रामसेवककी हुई । रामसेवक तो अत्यन्त घब-
ड़ाया और सिरपीटकर रोने लगा, उनकी स्त्री
भी रोकर देव (कर्म) को कोसने लगी । लेकिन
कोसनेसे कुछ नहीं होता । होता बही है जो
कुछ होना है । कहा भी है—“ कर्म करे सो करे
नई कोई । ”

(५)

पानीका प्रकोप अधिक हुआ, उसने गेहूं सड़ा
दिये और ओलोंने उनकी जिनमें दाना उतरना
होगया था, घराघायी बना दिया—कुचक दिया ।

सात दिनके बाद बादल नष्ट हुए । आकाश मंजूर साफ हुआ और मास्कर (सूर्यदेव) ने मानवोंको दर्शन दिये । कास्तकार लोग आठवें दिन उदात्त चित्त खेतोंको गये और फसलकी ओर दृष्टी मार करको चले आये ।

कस्या कंचन नगरकी तहसीलके तहसीलदार साहब आदि आफिसर लोग फसलको देखनेके लिए खेतोंपर गये और उसकी हालत देखकर दंग रह गये । तहसीलदार साहब दूरदर्शी थे उन्होंने फरमाया कि—गेहुओंकी फसल तो नष्ट होगई, विचारे कास्तकार स्वराज होगये, अच्छा हो यदि राज्यकी तरफसे इस वर्षकी तिहाई माफ करदी जावे ।

तहसीलदार साहबकी बातोंकी प्रशंसा सभी आफिसर लोग करने लगे और कानूनगो साहबने कहा कि इसकी शीघ्र ही रिपोर्ट राज्य दरबारमें भेजना चाहिये ।

तहसीलदार साहबने कुछ रिपोर्ट बनाकर दरबारको दी, जिसका उत्तर भी ८ वें दिन सन्तोषजनक आगया । उत्तर था—' इस बातको दरबार भी मलीभांति जानता है कि पानीके कोपसे गेहूँकी फसल नष्ट होगई और कास्तकारोंपर आपत्तिका पहाड़ टूट पड़ा, ऐसी अवस्थामें दरबार इस वर्षकी तिहाई कास्तकारोंको माफ करता है और प्रजाके लिए किसी कामको खो करनेका ह्रादा रखता है ।'

रिपोर्टका उत्तर पाकर तहसीलदार साहब दिलमें खुश हुए और कानूनगो आदि आफिसरोंको उषे सुना दिया तथा उसकी

सूचना सारी तहसीलमें प्रत्येक गांवोंके अन्दर पटबारी लोगोंके मार्फत पहुंचवा दी । दरबारकी उदारतापूर्ण सूचनाको पाकर कास्तकार लोगोंको आनंद हुआ और वे अपने महाराजको बड़े हर्षसे धन्यवाद देने लगे ।

(६)

दरबारने तिहाईकी माफी देदी । कास्तकार लोग खुश हुए लेकिन गरीबोंके पेटका सवाल साहने जा उपस्थित हुआ । पेटके सवालके देशमें त्राहि त्राहि मचादी, लोग अपने पुराने जमानेकी जमोजिम और आवश्यकीय वस्तुओंको निकाल निकाल सस्ते दामोंमें बेचने लगे । बहुतोंने सोने चांदीके जेवर बेचना शुरू किये, बहुतोंने गाय भैंसादि पालतू पशुओंको बहुत ही सस्ते दामोंमें बेच दिया । मतलब यह कि पेटके सवालने लोगोंसे सभी कुछ छिनवा दिया ।

गिरानीके दुखसे जनता बहुत दुखी हुई । यह खबर भी प्रजापालक महाराजको लग गई । तब उन्होंने उस बक्त दरबारको हुकम दिया कि— "गिरानीमें दीन एवं मूखे लोगोंकी सहायताके कोई काम खोचना अच्छा है" महाराजके हुकमको दरबारने पूरा किया अर्थात् नहर और ताकाव खोदनेका काम दरबारने जारी कर दिया, जिससे गरीबोंकी उदरपूर्ति होने लगी ।

इस गिरानीमें अनाजके व्यवसाहोंका खूब व्यापार चला । दूसरे पान्तोंसे रेल्वे द्वारा अनाज आने लगा और बड़ाधड़ विद्दने लगा । बेचने-बाकोंको मनमानी मुनाफा होने लगी लेकिन दुख और आश्चर्यके साथ खिलना पड़ता है कि

अनामके व्यवसाहयोंने अपनी ठगवायी आद-
तको तबदीक नहीं किया ।

नापने तौलनेके—वरहिया कुहा एवं सेर पंसेरी
आदिको डुरुस्त नहीं किया और तराजूका मट-
काना तथा कुड़े वरहियाका ममाना न छोड़ा ।
दीन-गरीब लोग नहिर और ताकावमें बहुसं-
ख्यामें काम करने लगे, तब तो ठग व्यापारियोंकी
खूब बन आई। उन्होंने उनको भी औनकारपौर
देना नहीं छोड़ा। लेकिन “कमी भी एकसे दिन
किसीके नहीं जाते” इस कहावतके अनुसार
व्यवसाहयोंके व्यवसायने पी पस्टा स्वाया
अर्थात् अषाढ़में अकस्मात् तीन दिन अपूर्व
अककी वर्षा हुई तब तो एकदमसे अनामका
आव मद्दा होगया। दिसावरोसे स्वरीदकी चिट्टियां
आने लगी। तब क्या हुआ, जो होना या चडी
हुआ—अनामका मद्दा आव होबानेसे व्यापारि-
योंको लेनेके देने पड़ गये अर्थात् स्वरीदे
चांबक और जुबारमें बागह आना होने लगे ।
व्यापारियोंने बहुत उपाय किया परंतु दामके
भी दाम खड़े न होनेकी आशा जान बेचारों
को बागह आना ही खड़े करने पड़े। दिसाव
लगाने पर मालूम हुआ कि किसीको २ हप्तर,
किसीको १ हप्तर और किसीको १००) तथा
किसी किसीको २ सीका घाटा रहा है ।
पाठको ! इसीको कहते हैं—

“मोटी हाव गरीबकी, कभी न निष्कल जाय ।
मुए चापकी स्वांपले, कोह ममम होजाय ॥”

(७)

राज्यकी तरफसे नहिर और ताकावका काम
चाह था । मजदूर काकी संख्यामें अमा होने

रगे । यह खबर रामसेवकको पड़ी तब
उन्होंने पत्नीसे कहा कि—“राज्यकी दयासे
गरीबोंके पाकवेखों नहिर और ताकावकी काम
खुको है, चली अरनई कामखों चकें और है
पापी पेटको पाकें” स्वामीकी ऐसी बातको
सुनकर उनकी पत्नी श्यामा, आंखोंमें आंसू
भर कातर स्वरमें बोली—“कामखों मेंई जेहों
तुमतों मन्नू और देवकीको खिळाओ, जितनी
जो कछु सेवा बन आई मैं करहों पर तुमको
ई हाकतमे घरसे बाहर न जान देहों ।”

रामसेवक अपनी पत्नीसे अपनी आपत्ति-
योंकी कथा कर ही रहे थे कि उसी समय चौ०
राममशादनी रामसेवकके दरवाजेके सामनेसे
कहीं जाते निकल पडे। उन्होंने रामसेवककी
विपत्ति कथा कुछ कुछ कर्णगोषर की । तब
चौबरीनीसे न रहा गया और रामसेवकके मख-
नके आंगनमें अकस्मात् आकर खड़े होगये ।
रामसेवकने देवकीको बुझानेके लिए दरवाजेकी
ओर मुखकर “देवकी मन्नूको ला ” आवाज
दी—(क्योंकि देवकी उसे समय मन्नूको लिए
दरवाजेके बाहर खेक रही थी) दरवाजेकी तरफ
दृष्टि डालने रामसेवकने चौ० राममशादनीको
देखा, देखते ही ठठ खड़ा हुआ । स्त्री घरके
भीतर चली गई । रामसेवकने चौबरीनीको
बैठाया और आप जमीनपर बैठ गया । रामसे-
वक चौबरीनीका स्वाटपर बैठानेके सिवाय और
क्या आदर कर सकते थे ? हमारे चौबरीनीकी
भी सज्जनता सीमापर पहुंच गई थी। वे स्वाट-
पर बैठकर तबतक खुशी नहीं हुए जबतक
उन्होंने रामसेवकको स्वाटपर नहीं बैठा दिया ।

आधुनिक जमानेके बहानी (चौबरीसेठ आदि) मुझमें चौबरी रामप्रसाद कैसी समझ और सज्जनताका किंचित अंश भी नहीं है । अगर होता तो वे अपने आश्रित गरीबोंपर चौबरीजीके समान सज्जनता प्रगट करते । खैर ! इस विषयको जाने दीजिये और चौ०जीकी तथा रामसेवककी जो बातचीत हुई उसे सुनिये ।

रामसेवक—माळिक आज आपको सो देनेके घर आवेकी कैसे कष्ट उठावू पड़े ?

चौबरीजी—मैं सेठ घर्मचन्द्रजीके घर गया था और वापसीमें तुम्हारे घर चला आया ।

रामसेवक—आपको सेठजुमों कुछ जरूरी काम काम हुएये ईसों जान हतनों कष्ट उठाओ है नई तो आप कायेसों ऐसे काम धूम घूमों बाहर जाउते ।

चौबरीजी—अब तो घाम ज्यादा नहीं है । क्योंकि इस समय ९॥ बज चुके हैं और मैं घरसे पौनेगंज बजे चला था । जिन जगह आपने बैठाला है वहां घामका जरा भी अंश नहीं है । सेठजीसे मेरा केवल यही काम था कि—सेठजीका और मेरा शिखरजी मानेका विचार है इसलिए उनसे पक्की बात पूछनेको गया था ।

रामसेवक—माळिक ! आप स्वों तो पूष मावके दिनमें शिखरजी आवेकी विचार कानूनों कायसे केउन दिनोंमें जाहौ खूब होत है, ए धूमके दिनोंमें पहाड़ कैसे चढ़ पाहो और कैसे सातासों बंदना कर पाहो । मैं सोई बदीनारायण गभो सो आड़ेके दिनोंमें गभो हती, कायेसोंके जाहोंमें पहाड़की चढ़बी जल्लत नईवां ।

चौबरीजी—तुम्हारा कहना तो ठीक है परन्तु इस समय “ एक पंथ दो काम ” वाली कहावत साम्झने है । एक तीर्थवंदना और दूसरे श्री मुनिमंषकी वन्दना । इससे इस समय अवस्था ही शिखरजी मानेका विचार है ।

रामसेवक—माळिक ! आपकी विचार बड़ो अच्छी है, सेवकपरका हुकम है सो कहीं ?

चौबरीजी—हुकम क्या है, आपकी वर्तमान दशाको देखकर मुझसे नहीं रहा जाता, सबधुचमें आपकी दशा शो बनीय है, इसलिए काम अपने दिक्के भीतरकी दुःख कशानी न कहकर केवल यही कडो कि आप क्या चाहते हो ? कौन सूतसे अपनी व अपने बालबचोंकी गुजर करना चाहते हो ?

रामसेवक—अवस्था जो है सो ऊखों लो जानई गये ही और पानी, ओलोंने गेहूंओंकी फसक नाश कई दई है । ईके अलावा आपके और मोदी मुन्नाकाके रुपैया देमें हैं सो आपके रुपयोंकी फिर तो नईवापर मोदीजी खों नहीं मानने, कामसे एक दिन वे कलेके “ हम नाकिञ्च करके रुपया बसूक करेंगे ” । माळिक एक और बड़ो झगड़ा जी है के मीतीकाक माळगुजार सावके ९ मन गेहूं बेवेखों लये थे सो नादो लगाकर वेदेने हैं । ऐसी आफतमें तो येह सूक्षत है के महाराजके नहिरके काममें मही डारन लमें ती पेट पलन लगे ।

चौबरीजी—तुम्हारी हाळत तो नहिरमें काम करने लायक नहीं है, कारण कि तुम शरीरसे बहुत कमजोर हो । मेरी समझमें नहीं आया कि

आप किस प्रकारसे मट्टी ढाककर अपना और
बाकबच्चोंका भरण पोषण करेंगे ?

रामसेबक माझिक, आपको पूछवी भीतई अच्छो
है । सुनिदे-मेरो शरीर तो भीत कमजोर है,
ईसे मैं कामपर नहीं जासकों । हां, मन्नुकी मां
जात है और जो बछू मजदूरीसे उखों पैसा
मिळैसी उनईसे काम चलै ।

चौधरीजी रामसेबककी बातोंको सुनकर एक
बारगी चुप होगये और सोचने लगे कि “हाय,
जिस पुरुषने कमी बाहर जाकर किसीकी नौकरी
नहीं की तथा जो कास्तकार होकर खुद अपने
खेतपर मट्टी ढाकने नहीं गया, उसकी जान ये
दृष्टा कि इसकी स्त्री नहिरपर काम करनेको
जावे ! धिक्कार पापी पेटको धिक्कार ! कि जिसके
लिए मनुष्य इतना हकका बन जावे। क्या
ऐसे दीनोंकी खबर भगवानको मूकजाना चाहिये ?
और क्या उनकी कृपासे तैयार हुए धनिकोंको
भी दीनोंकी खबर न लेनी चाहिये ? अवश्य
लेना चाहिये । अगर मैं अपने धनको सफक
करना चाहिता हूं तो मेरा यह पढ़िका फर्न
होगा कि “ मैं रामसेबककी सहायता करूं । ”
इतना सोचकर चौधरीजी रामसेबकसे बोले-
भाई तुम घबड़ाओ नहीं, धैर्य धारन करो ।
बह तो अशुभोदय है, सबके ऊपर जाता है
और चलाजाता है । समझ लीजिये, आपका
इस समय अशुभोदय है । समझ २ पर रुपया
पैसा या अनाजकी प्रकृत हो सो हमसे कहना।
अहांतक होगा हम आपकी सहायता करनेमें
ना नहीं कहेंगे ।

फूट ।

फूट ! फूट !! तुम परम धन्य हो धन्य तुम्हारी माया !
नष्ट नष्ट वह हुआ जहां पर गई तुम्हारी छाया !
दृष्टि तुम्हारी अहां पड़ी तक्षण मतभेद कराया !
बड़ा परस्पर भेदभाव सब गौरव मान नशाया !
विश्र्व अनोने भी हे कुटिले ! तुझसे पार न पाया !
बुद्धिपरोको भी दुर्वृत्त तूने ! खूब छकाया !
गुण जाने ही बिना तुम्हारे जिघने भी अपनाया !
उसी मूढमतिका तुरन्त ही तूने नाश कराया !
जिस सुबुद्धि पर भी कर रक्खा बुद्ध उसे बनाया !
पाठ तुम्हारा पढ़ कर उसको अपना हुआ पराया !
उसकी तो तुम परम प्रिया हो अन्त है जिसका आया !
जैन जातिने देखो तुमको है कैसा अपनाया !
किन्तु फूट आदर पाना भी खूब तुम्हे है आया !
इसी लिये हे फूट ! धन्य हो धन्य तुम्हारी माया !
तेरी कुटिलता बिन जाने ही जिघने सींग चढ़ाया !
त्याग चला कल्याण उसे बस दुर्दिन उसका आया !

भारत संतान !

पतित और परदलित हुई हैं हाय ! आज भारत संतान !
लाञ्छित मत अक्षुण्णित हुई हैं हाय आज भारत संतान !
बल बुधि वैभव हीन हुई हैं शोकर हाय परम स्वधिमाल !
कीर्ति प्रतिष्ठा नष्ट हुई सब हुई सभी हा ! अधम समान !
पराधीन परतंत्र हुवे हैं हिला न सकते किञ्चित् कान !
पड़ी विकट संकटमें हैं ये हाय आज भारत संतान !
विजय हुई है दुर अनीतिकी नष्ट हुवा हा ! सब सन्मान !
प्रक्य हुई है धर्म रीतिकी प्रष्ट हुवा हा ! सब सद्ब्रान !
चला रसातलको स्वदेश अब हुवा न हमको तो भी-
ज्ञान !
नहीं धरोगे इधर ध्यान यदि मुरि पात्रोगे कष्ट निदान !
अभी समय है बन्धु परस्पर मिलकर हरो सकत संताप !
किन्तु समय फिर टल जानेपर शेष रहेगा पश्चात्ताप !
भेदभावको दूर भगा अब सब मिलकर गावो ये गान !
दीन दृष्टा निज भक्तोंकी कक्ष कृपा करो कब हे भगवान !

कल्याणकुमार जैन, कविभूषण ।

रक्षाबंधन कथा ।

(रचयिता-डॉ० प्रेमसागरजी-बुढार)

मन बच काय सप्ताहकर, महावीरके राय ।
बन्दत हूं अति हर्षयुन, आठौं अंग नवाय ॥
विष्णुकुमार महासुनी, जिनके युग पद सार ।
विघ्न हरण मंगल करन, बन्दू वारम्भार ॥
आज बही मुनिराजदा, सुन्दर सरळ चरित्र ।
मति माफिक बरनन करूं, भाऊ भाव पवित्र ॥
रक्षाबंधनकी कथा, रची दमोदरदास ।
तिसे देख कविता करूं, मनमें धार हुलास ॥
मैं मतिहीन मदान हूं, ज्ञान गम्य नहिं मोडि ।
तम अज्ञान विनासनी, नमूं क्षारदा तोडि ॥
कर करुणा मोपर तनिक, कर तर अंतर वास ।
जिससे रक्षा बंधनी, करूं कथा परकाश ॥

रोला छन्द ।

महावीरका समवसरण, विपुलाचक्र आया ।
पकृति नाचने लगी, हर्ष नहिं अंग समाया ॥
स्वागतको फल फूल, छडौं ऋतुके छे आई ।
काया दीनी पकट, न फूली अंग समाई ॥१॥
षट्ऋतुके फल फूल, देख करके बनमाली ।
विस्मय मनमें किया, अइो ऐसी फुलवारी ॥
मैंने देखी नहीं, स्तब्ध क्या यह आया है ।
अथवा मौतम यहां, नया कोई काया है ॥२॥
किंचित पीछे मुड़ा, शब्द प्रयकार सुनाया ।
'वीर प्रभुकी जय' बही था, शब्द सुहाया ॥
दिकमें निश्चय किया, वीरके ही प्रभावसे ।
मौतम काई नया, पकृति अतिही उछाहसे ॥३॥

जाति निरोधक जीव, सभी मिलकर बैठे हैं ।
छांत चित्त हैं सभी, नही मनमें ऐंठे हैं ॥
आज पकटने भाग्य, सभी जीवोंका आया ।
कइता "जय हो नाथ" दारुतोंके दिया जाया ॥४॥
षट् ऋतुके फल फूल, तोड़ता अति हर्षिता ।
करता यही विचार, तोड़ कर धरको जाता ॥
शीघ्र तोड़कर उन्हें, मजारी प्यारी डाली ।
बला मूप दरवार, शीघ्र ही वह बनमाली ॥५॥
श्री श्रेणिक महाराज, बिराजे सिंहासनपर ।
लगा भव्य दरवार, सभी बैठे मंत्रीवर ॥
उसी समय मुष्कात, शीघ्र आया बनमाली ।
कर पणम पुन, मूर माहने रख दी डाली ॥६॥
विस्मय होकर मूर, निरखने हैं डालीको ।
हर्षित होकर शीघ्र, पूछने हैं मालीको ॥
'ये सब ऋतुके फूल, कहाँसे काया है तू ?
शंका उठनी मुझे, और हर्षिया है तू' ॥७॥
तब बनमाली बहे, सुनो महाराज सुनाऊं ।
आये वीर जिनेन्द्र, हर्षमें नहीं समाऊं ॥
विपुलाचक्रके मध्य, महा आनंद छाया है ।
देव करें जयकार, पकृति मन हर्षिया है ॥८॥
षट् ऋतुके फल फूल, भेंटमें वह लाई है ।
स्वागत करने हेतु, नया मौतम लाई है ॥
और कहूं क्या नाथ, निरोधक जीव मिले हैं ।
होष भया है दूर "प्रेम" के पुष्प खिले हैं ॥९॥

सुनकर सुख सम्बाद, मूय तजके सिंहासन ।
 आगे जाकर सप्त कदम, कीनी परोक्ष नम ॥
 वस्त्राभूषण, दान आदि मालीको देखर ।
 जिनदर्शनका भाव, हृदयमें निश्चय लेकर ॥१०॥
 सब नृप नगरी मांदि, उक्त सम्बाद पढ़ाया ।
 सह कुटुम्ब जिन, समवशरणकी ओर मिथाया ॥
 ये नगरीके लोग, साथते अति प्रसन्नचिन ।
 जब हो जय, यह शब्द उचरते जाते थे मब ॥११॥
 समवशरणमें मूय, शीघ्र ही पहुंचे जाकर ।
 बन्दे वीर जिनेश, इगी पूजा दर्शाकर ॥
 कर गणधरको नमन, मूय निज कोठे बैठे ।
 उपदेशामृत पान, करत अति मनमें इर्षे ॥१२॥
 समय पाय नृप, प्रश्न किया गौतमसे ऐसा ।
 "रक्षाबंधन कथन, सुनाओ स्वामी कैसा ॥"
 ब्राह्मण था वह कौन, छळा जिमने बहिराजा ।
 किस प्रकार यह चला पर्व, कहिये मुनिराजा ॥१३॥
 तब गणधरने कहा, इसी मारतके अन्दर ।
 कुरुपाङ्गक है देश, सभी देशोंमें सुन्दर ॥
 तहां हस्तिनापुरी, शोभती थी अति प्यारी ।
 इन्द्रपुरीसी, सुन्दरतामें नृव स्मरारी ॥१४॥
 महा पदस्नान करते शासन, न्याय नीति युत ।
 विदुषि लक्ष्मीवती, शीरु गुलसे थी भूषित ॥
 पद्मराय श्री विष्णु, पुत्र युग ये सुखकारी ।
 पाकर समय नरेश, जिनेश्वरि दीक्षा प्यारी ॥१५॥
 कषु सुत विष्णुकुमार, साथ ही मुनि व्रत नारा ।
 जेष्ट पुत्रने गानकामद्या, भार सम्भारा ॥
 यह तो क्या अनूर, यहां ही रह जाती है ।
 तथा अन्य नगरी, टज्जेनीकी जाती है ॥१६॥
 नृप श्री वर्मा राजव, न्याय संयुत करते थे ।

प्रमा नहीं थी दुखी, प्रेम सुतवत् रखते थे ॥
 नमुचि, वृद्धस्पति, बलि प्रहलाद मंत्री थे बोधक ।
 मिथ्यामति युत, जैन धर्मके प्रबल विरोधक ॥१७॥
 देर देरका संग, मूपका बना हुआ था ।
 हा! अमृतके बोन, जड़र तो घुला हुआ था ॥
 एक समय आचार्य, अकम्पन विचरण संयुत ।
 आये थे दयान मध्य, मुनिगणसे भूषित ॥१८॥
 ज्ञात हुआ पद, नृति यहांका है साधर्मी ।
 द्वित्त चारद्विन, मंत्री हैं वे महा अधर्मी ॥
 अतः गुरुने पत्र, शिष्योंको पास बुलवा ।
 निम्न भानिका उन्हें, विमल उपदेश सुनाया ॥१९॥
 "राजा, मंत्री, जगर, यहांर आवे कोई ।
 गहो मौनव्रत सुनो, न उनसे बोलो कोई ॥
 मिथ्याती है महा, मूपके मंत्री चारों ।
 अभिमानो हैं बड़े, इसीसे मौन सु बारो" ॥२०॥
 सुनकर गुरु आदेश, सभीने उसको माना ।
 आगे फिर क्या हुआ, सुनो इसको धरि ध्याना ॥
 गुरुका यह आदेश, नहीं श्रुतमुनिओ अवगत-
 हुआ गए ये, बह नगरीको चरतीके दित ॥२१॥
 पूर लोगोंने सुनी, सुनी वनमें हैं आए ।
 दर्शन करने चले, हर्ष मनमें भर जाए ॥
 जाते इन्हें बिलोक, नृति मन संशय आया ।
 मंत्रोगणने भेद सर्व, इनका बतलाया ॥२२॥
 राजन । वनमें आन, दिगम्बर मुनि आये हैं ।
 उनको बन्दन जाण, लोग ये दर्शिये हैं ॥
 यह मूर्ख हैं यहां, न इतना अनुभव करते ।
 देंवे क्या बह साधु, सदा जो जग्न विचरते ॥२३॥
 दर्शन योग्य न विन्दु, साधु ये अवर्शनीय हैं ।
 किसी शास्त्रमें नहीं, दिगम्बर बन्दनीय हैं ॥

तब नृ। बोले, नहीं पाव जगता दर्शनसे ।
 मरे न कोई केवल, दर्शन कर विषधरके ॥२४॥
 मैं अवश्य उनके, दर्शन करनेको जाऊं ।
 यदि हैं तुम्हें अटितकर, मत जाओ समझाऊं ॥
 ऐसा कहकर नृरति, चले मुनियोंको वन्दन ।
 हृदय बढ़ा उत्साह, उचारें घन्य घन्य दिन ॥२५॥
 नृपको माते देख, विचारें मंत्री पेशे ।
 अगर न आवें साथ, बुरा माने नृप, इससे ॥
 चारों ओर विवश, चले मूर्खिके पीछे ।
 महा मानके भोगे, विचारोंसे ये मूछे ॥२६॥
 नृपको माता देख, सधुओंने जब आता ।
 हुए ध्यान आरूढ़, आत्म-अनुभव रस छाना ॥
 ध्यानारूढ़ विकीक, वंदना क्रमसे कीन्ही ।
 किन्तु मूपको नहीं, सधु 'वृष वृद्धी' दीन्ही ॥२७॥
 हृदय समझ यद्य भू, सधु पर मौन लिया है ।
 इस कारणसे मुझे, न आशीर्वाद दिया है ॥
 चले नगरको लौट, भूष तब मंत्री कइने ।
 राजन् ! देखे प्राधु, न मुखसे कुछ भी कइने ॥
 ज्यों परवरका स्वभ, खड़ा ही रहता देखो ।
 त्योही ये शठ सधु ढोंग रच बैठे पेशो ॥
 मुनियोंकी यों हंसी, युक्त माते हषाने ।
 कसे साहने श्रुत, कीरति मुनि पुसे आते ॥२८॥
 जब मुनि आये निकट, इन्होंने हंसी उड़ाई ।
 तक्र पीत कर पान, आए ये देखो भई ॥
 तब मुनि बोले, तक्र पीत तुम कहां देखने ।
 पीत गायका मूत्र, जिसे तुम रोज पीबते ॥२९॥
 बाद किया मुनि साथ, द्वार चारोंने पाई ।
 हलका बदला छेए, यही मनमें ठहराई ॥

नरपति हंसकर कइ, काज अब क्योंकर जाई ।
 उत्तर दीजे सोच, यही तो हैं पंडितही ॥३०॥
 हो परास्त घर चले, नहीं कुछ उत्तर आया ।
 मुनि भी गुरुके निकट, पहुंच सब डाक सुनाया ॥
 बोले गुरु महाराज, आप अच्छा नहिं कोना ।
 जाय जगाओ ध्यान, जहां र बाद जु कोना ॥३१॥
 गुरु आज्ञा-अनुसार, बाद स्थान सिचारा ।
 निश्चय करके ध्यान, अल्प अनुभव रतगारा ॥
 निशिमैं चगे दुष्ट, जाये बदला छेनेको ।
 मुनिको कखने कइ, यही रिपु हनिए इसको ॥३२॥
 निश्चय करके एक साथ, तबवार उठाई ।
 तब बनरक्षक देव, इन्हींको कीला जाई ॥
 लड़े स्वभमे रहे, अन्तमें हुआ सवेरा ।
 राजाने सुन शीघ्र, साथ सब कौतुक हेरा ॥३३॥
 मुनिको शीघ्र नबाय, मंत्रियोंको धिक्करा ।
 सूलीकी दे सज, यही नृप हृदय विचारा ॥
 कइ सुनी महाराज, भूष शूली मत दीजे ।
 कोई दूधरा दंड उचित्र, इनको दे दीजे ॥३४॥
 मुनिने सुते, शीघ्र ब्रह्मणोंको छुड़वाया ।
 "दिशनिहाला" दंड, भूषने इन्हें दिवाया ॥
 काला मुह करवाय, गर्भोंपर बैठवाया ।
 सारे नम्र किया, डोक पीछे बनवाया ॥३५॥
 अपमानित हो महा, विदेशोंमें भरमाये ।
 करते इत उत भ्रमण, हतिभनापुरकी आये ॥
 न्यायवंत नृप पदमरायके, दिग जब पहुंचे ।
 उंचे स्वरसे दी आशीश, तब भूरति पूछे ॥
 कौन लोग हैं आप, कहांसे यहां पवारे ?-
 "हरिं नीकरी कही" बड़ी, बच तबहिं उचारे ॥
 तब नृप इनको योग्य, कर्ममें शीघ्र लगाया ।
 बलिको मंत्री किया, नहीं कुछ संशय आया ॥३६॥

फिर कुछ दिनके बाद, मूपसे बोले चारों ।
 तुम दुबले क्यों नाथ ! कृपा कर हमें उचारो ॥
 जो कुछ होगा कार्य, उसे हम कर आवेंगे ।
 संशय इसमें नहीं, करें, जो फरमावेंगे ॥३९॥
 सब नृप बोले, नृपति सिंहवर, कुंभ नगरका ।
 आज्ञा माने नहीं, यही है सोच जिगरका ॥
 सब बलि बोला मुझे, फौज थोड़ी दे दीजे ।
 काऊंगा मैं बांध, न इसमें संशय कीजे ॥४०॥
 नृपने सेना दई, चला बलि कुंभ नगरको ।
 सेना बनमें रखी, हृदयमें रखकर छत्रको ॥
 गयो मूप दरवार, खुब घनवाद सुनाया ।
 मूपति भयो प्रसन्न, पासमें ही बैठाया ॥४१॥
 नृपको जान प्रसन्न, कहे बलि इस मूपतिसे ।
 करनी है माइवेठ बात, कुछ मुझको तुमसे ॥
 कृपा करें यदि आप, पधौर डेर पर ही ।
 तो सब कहें सुनाय, वमी जो मेरे उर ही ॥४२॥
 नृपने की स्वीकार, बात बलि द्विजकी सारी ।
 डेरों पहुंचे जाय, किया छत्र बलिने भारी ॥
 मुझको दई चढ़ाय, शीघ्र राजा पर लाया ।
 गहो पद्मकी शरण, वचन ऐसा फरमाया ॥४३॥
 पद्मरायकी सिंह, सहज, सेवा स्वीकारी ।
 किया खुब सरकार, रघुने शीघ्र बिदा की ॥
 बलि पर होकर खुशी, मूर बोले मुझको ।
 मांगो जो बरदान, जमी मैं देहुं मंगलके ॥४४॥
 तब बलि बोला नाथ ! ऋत पर दे दीजे ।
 जमी जमी दरकार, निवेदन चितमें दीजे ॥
 जब कुछ दिनोंके बाद, बड़ी मुनि गन्पुर आये ।
 बलिने माहृत्य हुआ, तभी चारों वरदाये ॥४५॥
 ये तो हैं मुनि वही, विप्र जिनपर हम कीना ।
 सो आये हैं वहां, हो गया कैसे जीना ॥

इससे अच्छा यही, जमी नृपके दिग आवें ।
 लेवें मांग बरदान, तभी कुछ कार्य बनावें ॥४६॥
 पर विचार इस भांति, शीघ्र बलि नृपपर आया ।
 सात दिवसके लिये, मूपसे राज्य मंगाया ॥
 होकर मूप प्रसन्न, राज दीन्हा बलि द्विजको ।
 सोचा कुछ भी नहीं, दिया जब वर बलिद्विजको ॥
 बलि पाकरके राज, भया जति निर्भय मनमें ।
 पहुंचा ऋतरी वरां, जहां ठहरे मुनि बनमें ॥
 ठीक प्रथममें एक बड़ी, धूनी सुकगई ।
 कंटक वृक्षोंकी बारी, चौतरफ लगाई ॥४८॥
 उस धूनीका नाम, रखा नरमेघ यज्ञ था ।
 मुनि नाशनके लिए किया बलि यह कुकृत्यथा ॥
 अपने अपने हाड़, मांस, चमड़ा ढाला था ।
 कोष-प्रतिसे जका, हृदय जिमका काना था ॥४९॥
 फेंकी जति दुर्गन्ध, हुआ उपसर्ग बड़ा था ॥
 “विघ्न टले लें जसन, किया यह निषम कड़ा था ।”
 मुनियोंका श्ल कष्ट, नग्न बन जति वरदाये ।
 यह बलि राजा दुष्ट, बनत कुछ नहीं बनाया ॥५०॥
 तृणदि जलवे मेघ, खेतको बाढ़दि खावे ।
 नृति करे जन्वाय, न्याय फिर किस दिग आवे ॥
 रक्षक भक्षक बने, शरण फिर किस कीजे ।
 इस अनिष्टको हाथ ! दूर अब कैसे कीजे ॥५१॥
 फिर दृढ़ निश्चय किया, विघ्न यह रहे जभी तक ;
 स्नान पानका त्याग, हमारे रहे तभी तक ॥
 बीनी आधी रात, तभी मिथलापुर बनमें ।
 सारचन्द्र आचार्य, वहां तप करने तिनने ॥५२॥
 कल्पत श्रवण नक्षत्र, देखकर अबधि बिचारी ।
 “हा ! मुनियोंपर कष्ट पड़ा है आकर मारी”—
 पुष्पदंत मुनि कही, नाथ ! क्या कष्ट कहांपर,
 जोड़ अबधि मुनि कही, सुनो तुम ध्यान लगाकर ॥

'गजपुर बनके बीच, नीच बलि बझारंभी ।
मुनि नाछनके हेतु, किया उद्यम वह दम्भी ॥
सात शतक मुनि संघ, गुरु आचार्य अकम्पन ।
तिनपर क्रोधित हुआ, महा निर्दयी बलि ब्रह्मण ॥

पुण्यदंत मुनी कही, नाथ ! कुछ पत्न बताओ ।
कही मुनि तुम शीघ्र, धरनिभूषणगिरि आओ ॥
बहां विष्णु मुनि तिन्हे, विक्रिया ऋद्धि भई है ।
उनसे होवे कार्य, और कुछ यत्न नहीं है ॥१५॥

अम्बरगामी पुण्यदंत, मुनि गये बहां ही ।
नमस्कार कर बैठ गये, मुनिके पग-तउ ही ॥
फिर गुरु द्वारा कहा, सभी वृत्तान्त सुनाया ।
भई विक्रिया ऋद्धि, तुम्हें, यह भी बतलाया ॥१६॥

परिचय पाने हेतु, हाथको शीघ्र पसारा ।
सो समुद्र तक गया, तभी मुनि निश्चय घरा ॥
गजपुर पहुंचे शीघ्र, मृपको पास बुलाया ।
कहा, मूर्खे तू महां, कहां यह ज्ञान कमाया ॥१७॥

उज्ज्वल यह कुरुवंश, बनाया तूने काला ।
मुनि नाछनका पाप, हाथ तूने तिर बारा ॥
दानी नृप श्रेयान्स, भये थे इसी वंशमें ।
छांति कुन्ध जिन अरह, भये थे इसी वंशमें ॥१८॥

लेकिन ऐसा नहीं, किसीने पाप कमाया ।
भैसा तूने हाथ ! आज करके दिखलाया ॥
पद्मराज कर जोड़, हाक सारा समझाया ।
तब मुनि बावन, अंगुळका तन शीघ्र बनाया ॥१९॥

घर ब्राह्मणका वेश, यज्ञ मूनी पर आया ।
बलिने आदर सहित, बचन ऐसा करमाया ॥
'इच्छा क्या है विप, कहां मुझसे समझाकर ।
हाजिर करदूं अभी, कइं जो आप ठपाकर' ॥२०॥

तब मुनि बोले सुनो, तीन ढग मूमि दिवावो ।
अपनी ढगसे नाप छेड़ें, यह भी समझावो ॥
तब बलि बोला विप, और कुछ करो बाचना ।
मुनिवर करते मुझे, और कुछ नहीं चाहना ॥२१॥

'मैं उतनी पा अगह, शीघ्र ही बना-रहंगा ।
बार बार अब नहीं, आपसे बचन कहंगा ॥
बलिने मू ढग तीन, संकल्प करके दीन्ही ।
तब मुनि 'स्वस्ति' उचार, शीघ्र ही स्वीकृत कीन्ही ॥

मू पानेके हेतु, विक्रिया ऋद्धि पसारी ।
दीर्घ बनाई देह, हुआ बलि संशय मारी ॥
पहिली ढगको बढ़ा, जमाई थो सुमेरु पर ।
तथा दूपरी मानुषोत्तर पर्वत ऊपर ॥२३॥

नहीं मूम कुछ रही, तीसरी ढगके खातिर ।
तब बलि बोला नाथ ! चरो ढग मेरे ऊपर ॥
तब बलि द्विनकी पीठ, रखी ढग विष्णुकुमारा ।
सुर-आसन ढिग गये, तभी यों करी पुकारा ॥२४॥

हे करुणानिधि नाथ ! क्षमा अब बलिपर कीजो ।
चरण खेंचिये शीघ्र, रूप पत् प्रकट कीजिये ॥
यह सुन, मुनि निज रूप, प्रकट करके दिखलाया ।
चौ तरफासे घन्य, घन्य ही सखद सुनाया ॥२५॥

बलिको दीना छोड़, यज्ञका नाश कराया ।
मुनियोंका उपसर्ग, विष्णु मुनिने विषटाया ॥
सुनकर भूपति शीघ्र, विष्णु मुनिके ढिग आया ।
आठी अंग नवाय, साधुको शीघ्र नवाया ॥२६॥

श्रावक सुन यह हाल, शीघ्र वह भी चक आये ।
मुनियोंका उवचार, किया मनमें हर्षाये ॥
मृपतिने यों कहा, दंड बलिको दूं ऐसा ।
जिससे कोई करे नहीं, फिर दुष्कृत ऐसा ॥२७॥

कहें गुरु महाराज, दया चक्रपर नृप कीजे ।
 दया धर्मका मूल, इसे अब मनमें दीजे ॥
 इनने जेसा किया, पाएंगे खुद ही फलही ।
 अप्य व्यर्थ ही पाप, बांधते हैं परभक्तको ॥६८॥
 फिर मुनिने उपदेश, अहिंसापयी सुनाया ।
 द्विम चारों सुन जिसे, अधम निजको उहराया ॥
 दुष्कृत्योंपर खूब, सुश्रुताप कराया ।
 तजे सभी दुष्कर्म, अहिंसा धर्म सुहाया ॥६९॥
 मुनिको करके नमस्कार, यों बोले चारों ।
 "नाथ ! कृपाकर हमें शिष्य भव प्रकसे तरो ॥
 तब श्रावक व्रत दिये, गुरुने उन चारोंको ।
 पतित हुओंको कडो, साधुओं बिन तरेको ॥७०॥
 स्वस्थ चित्त हो साधु, नगरको किया विहारा ।
 स्त्री आदिका किया, श्रावकोंने आहारा ॥
 जन्म सफल होगया, हर्षमें नहीं सपये ।
 मई मदिज्ञा पुर्ण, अप तब भोजन पाये ॥७१॥

मुगीतिका-छन्द ।

दिन था वही श्रावण सुदी, पूनमनक्षत्रश्रावण सही ।
 इक सातसौ मुनियोंकी तब, मुनि विष्णुने रक्षा करी ॥
 तबसे पवित्र दिवस यही, माना सभी संपारने ।
 अति प्रेम पकटाया परस्पर, तब सभी संतारने ॥
 अरु बाद रत्नके किये, कर सूत्र-डोरा बांधिये ।
 यह चिह्न रक्षाका सही, इसमें न संशय मानिये ॥
 तबसे हुआ यह पर्व प्रचलित, आजतक जाता चला ।
 यह 'प्रेम' का है चिह्न, इसको धारकर पाओ मला ॥७३॥

दोहा ।

रक्षाबंधनकी कथा, जिसी स्वल्प मति धार ।
 पढ़ो पढ़ को सकल जन, मरो पुण्य भंडार ॥७४॥

रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जानेके बाद ।

(लेखक-परमेश्वरीदास जैन न्यायतीर्थ-सूरत।)

किसी कविका यह कथन बिष्कुक सत्य है
 कि "रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जानेके
 बाद" । भारत वर्ष जब तक पीसा नहीं गया
 तब तक इसे अपनी परतन्त्रताका अनुभव नहीं
 होया । और ज्यों र इसके साथ दमनवृत्तिसे
 काम किया गया त्यों र इसे भान आया ।
 महात्माजीने भी देशके सामने ऐसी कार्यकप
 रखा जिसे भारतवर्ष पर लुका दमन हो ।
 दमन होनेसे ही रंग आयेगा । अन्तमें हुआ भी
 ऐसा ही । अगर कुछ दूरकी बात याद करें तो
 मालूम होगा कि जक्यानवाले इत्याहाण्डके बाद
 देशको कुछ होश आया और यदि बिष्कुक
 पासकी बात देखें तो सबसे धरासणा, वीरमगांव
 आदिमें माथाफूट हुई तबसे भारतवर्षमें रंग
 आया है ।

अब तो दिनोदिन रंग बढ़ता ही जा रहा है ।
 कल जो हमारे देशमें जागृति थी आज कुछ
 दूसरे ही रूपमें है, और आज जो रूप है कल
 कुछ और ही होनावेगा । अबवा यों कहिये
 कि रंग पक्का पर पक्का होता जा रहा है । मैं
 नहीं कह सकता कि सरकारको या महात्माजीको
 भी इतनी आशा होगी जिसना रंग आज
 भारतवर्षपर चढ़ गया है । मैं इतना तो अवश्य
 कह सका हूँ कि अगर सरकारने ऐसी दमन-
 नीतिसे काम न किया होता तो संभवतः देशमें
 इतने जल्दी मात्र ४ माहमें ऐसा रंग नहीं आ



पाता । मगर " होनहार होतव्यता तैसी मिठे सहाय " वाली बात तो झूठ नहीं है । देश हितैषियोंने भारतवर्षकी पायपाकी दूर करनेके लिये लोगोंकी शराब पीनेसे रोकना पारंभ किया । विदेशी वस्त्र न खरीदनेका आदेश या उपदेश किया तो सरकारने इसे अपराध बनाकर द महीनेकी सजाका नया फारमान निकाल दिया । अस्त्रिकार इन्दी दो चीनोंके बहिष्कारमें नो पकड़ा और हजारों सत्याग्रही जेल गये । फल यह हुआ कि शराब और ताड़ीके पैसे तदान्त बंद होने लगे और लेकेशायरमें कपड़ेकी ४०० मिलोंके भौंपू बंद होगये । अभी तो बहिष्कारका पारंभ काज ही है, मगर भविष्यमें क्या होगा यह सर्वज्ञ जाने ।

जिम तरह सरकारने शास्त्राख्योसे दमन किया उसीप्रकार यदि उसके प्रतीकार करनेके लिये भारतवर्ष मूक करता तो वह अपना नाश कर बैठता । मगर हमारा नेता तो एक लोकोत्तम महापुरुष महात्मा है, अपने मखड ही कि उम नीचा सिर करके तमाम वारोंको झेरो और ऊँचा सिर करके मत्व और अहिंसाके मार्ग पर चलो । लोगोंने यह बात स्वीकार ली, यही कारण है कि अपना सत्याग्रह रंग ला रहा है । अगर हम सत्य और अहिंसाके अचूक चक्रको लेकर शांतिपूर्वक कार्य करते रहेंगे तो वह दिन दूर नहीं है कि जब भारतवर्ष स्वतंत्र होकर दुनियाँकी भी छांतिका मार्ग बतलावेगा ।

वर्तमान युद्धमें असुक मान्त जाति या व्यक्ति नहीं, किन्तु समस्त भारतवर्ष, तमाम जातियाँ युद्ध युवान तथा बालक बालिका भी बढ़ी जग-

नके साथ कार्य कर रहे हैं । अहरमें ५ बजे ही जब हमारोंकी संख्यामें छोटे २ भाऊक बाकि-का यह गीत गाने हुए निकलते हैं कि " माझ नरह सदेग इरगिन गुळमखाना, होगा स्वतंत्र होगा अता है वड जमाना " तब अन्तरात्मा कहता है कि इन निर्दोष कोमक हृदयोंसे निकले हुए यह व कय बिककुळ सत्य है ।

जब लोगोंको मान हुआ कि यह युद्ध किसीके व्यक्तिगत स्वार्थके लिये नहीं है, बड़ेर नेता जेलमें पड़े हुए हैं, यह सब हमारे ही लिये तो दुख सहन कर रहे हैं तब तमाम व्यापारी बगैसे लेकर मजूर तक हममें जुट गये । व्यापारके पचान हेतु जिन बंबई शहरके विषयमें महात्माजीको भी कुछ प्रशा नहीं थी वही नाम पूरे जोशमें बचक उठा है ! विदेशकी दखकी स्वरूप व्यापारापावकी छोड़कर सभी सच्चे स्वतंत्रताके व्याशामें जुट गये हैं । देशके कीनेरमें यह युद्ध एक ही रूपमें चल रहा है । बालकसे लेकर वृद्ध तक सभी यह समझते हैं कि हमारा युद्ध अहिंसक है, हम सत्यके मार्ग पर चल रहे हैं इसलिये इतरह विजय हमारी ही है । मत्व और अहिंसाके पुजारी महात्माजीसे लेकर हजारों वीरोंही तपस्या निष्कल नहीं होसकती । यही कारण हैं कि जिनके ऊपर सरकारको पूरा विश्वास था वे भी आज पुकारर कर कह रहे हैं कि महात्माजी तथा सभी सत्याग्रहियोंको छोड़कर उनकी शर्तें मंजूर करो । देखिये अभी रंग प्रम रहा है !



जैन जाति और उसके युवक ।

(लेखक-श्री० प्रभूलाल जैन-पोहरी ।)

जैन जाति वह जाति है, जिसका सिर हमेशासे ऊंचा रहा है। इसकी सम्प्रदाय प्राचीन ही नहीं, बल्कि दुनियांकी दृष्टिमें प्रतिष्ठास्पद भी है। इसकी प्रतिष्ठाका कारण अगर आंखोंमें देखा जाय, या चलना दृष्टि द्वारा उमका अनुभव किया जाय, तो पता लगेगा कि इसकी प्रतिष्ठामें सबसे बड़े हिम्मेदार इस जातिके नवयुवक ही थे। यह नवयुवकोंकी ही शक्तिका कारण था कि दुनियांमें जैन धर्मका मित्रारा धमक गया। नवयुवकोंका ही काम था, कि अपने वर्तमान सुखोंको तिरांजलि देकर भावी सुख प्राप्त करनेके लिये अपनेक बाधायें सहन कीं। नवयुवकोंका ही काम था कि वे अपने प्रबानिके खूनके जोशमें जैन धर्म जैसा धर्मका प्रचार कर गये। लेकिन आज दिन मुझे बड़े खेदके साथ कहना पड़ता है कि अब नवयुवक कहां चले गये ? क्या उनका पैदा होना हमेशाके लिये बंद होगया, नितसे जो हमारी जैन जाति दुनियांके पथपर अग्रसर थी, वह आज वे रोह-टोक अवलतिके पथपर अनुगमन करती हुई दिखलाई देती है।

हे जातिके युवक, धर्मप्रेमियों ! भगवानवीरकी सन्तान होनेका दावा रखनेवालों ! जैन धर्मके सच्चे पुजारियों ! अब फिर वह समय आगया, अब कि हमें दुनियांके सामने अपना आवर्ष

रखना पड़ेगा, अपनी खोई हुई शक्तियोंका फिर संचालन करना पड़ेगा। इसके लिये हमें अपनी आनपर बाजी लगानी पड़ेगी, और दुनियांको बतलाना पड़ेगा कि जैन जाति वही जाति है जिसकानेन विश्वव्यपी, धर्म प्राचीन और सम्प्रदाय गौरवास्पद है, ऐसा दुनियांको बतलानेके लिये हमें दो बातें करनी पड़ेगीं। (१) रूढ़ियोंका उन्मूलन। (२) अविद्यारूपी तिमिरका नाश करके घर-विद्यारूपी सूर्यका प्रकाश करना।

अगर हमारी जातिके नवयुवक इन दोनों बातोंको अपने सफलीमूल होनेका केन्द्र मानलें, और उनकी पूर्ति करता अपनी आन्तरिक तीव्र भावनाओंसे विचारलें, तो इनमेंसे मुश्किल ही तो दूसरोंको मछे ही हों, लेकिन जैनजातिके नवयुवकोंकी शक्तियों पर ऐसा कायरताका लंछन लगाना अच्छा नहीं। इस वर्तमान कालमें इन रूढ़ियोंने हमारी जातिमें बाध करलिया है। ये रूढ़ियाँ हमें न सत्यमंचपर नाव नचाया करती हैं, रूढ़ियाँ किसी भी राष्ट्र तथा जातिकी उन्नतिमें बड़ी बाधक होती हैं। यह रूढ़ियोंका ही कारण है कि आज हमारी जातिके सुदिन नहीं हैं। कहने हैं—“The makers of the nations are the breakers of the traditions.” इसकी सत्यतामें किसी प्रकारका लंछन नहीं लग सकता है।

हे जैन जातिके नेताओं तथा धर्मके प्रचारकों ! आपसे भी प्रार्थना है कि जहां आप जाकर धर्मका प्रचार करने हैं, धार्मिक शिक्षा देते हैं, वहां सबसे पहिले आप नवयुवकोंको प्रोत्साहित

करें, उनकी भावन ओमें तीव्रता भरे, उनको धर्मरूपी सुरभक्ता दिग्दर्शन करावें और नगर-र या ग्राम-र में उनके संगठन संघ बनावें। अगर ऐसा हमारी जातिके नेता, धर्मके पुनारी कर सकते हैं, तो जैन जातिके सुदिन शीघ्र ही कल्पित भविष्यमें परिणत होते हुए दिख सकते हैं।

अगर हमारी जातिके नेतागण, "जिन" शब्दके अर्थकी गूढ़ताके पथदर्शक बन सकते हैं तो उनका यह कर्तव्य कभी नहीं है कि वे चौरस मैदानमें खड़े होकर जैन जातिकी व्यवस्थितिकी बड़ाई देखें। उनका तो प्रत्येक दशामें धर्म तथा कर्म यही हो सकता है कि वे अकलंक निकलंक मगवानकी तरह शहीद होनेको हमेशा तत्पर रहें। मुझे पूर्ण आशा है कि हमारी जैन जातिके नवयुवक तथा नेतागण, और धर्मप्रचारकगण एक नवयुवककी शिक्षापर नीतिके अनुसार अनुमाण करते हुए कृतार्थ करेंगे और नवयुवकोंमें उसी तीव्र भावनाका फिरोसे संचार करेंगे जो आजसे २९०० वर्ष पूर्व थी।

सुकीतथी निर्वाणु।

(गजल)

जगत जन्मजन्ती आल, अमेवा ज्व भेरे छे, परी आत्मा तथेतरने, अहो विरवा ते छडे छे. पिता तनु मातने अगिनी, अने जे नार अपता छे, ज्वन ज्योति तथे रनेदी, पिताशे तेज देी छे. जगतमां जगिने जेशी, अधी मायाज धर्मोनी, अथाथा धर्मना भाटे, अधी धांधल धर्मोनी. धरेकां धर्मोनी शिक्षा, प्रभु दरनिश भाषे छे, छतां ज्व प्रणीओ सुवे, नवन अथापे रामे छे प्रभुना द्वारमां सरथा, अनुष्ठीनेय प्राणी छे, पुणामे त्याय यम द्वारे, पटीत शिक्षा समाप्ती छे. धरे सुकीत जे प्राणी, स्वर्ग ररते विधारे छे, पछी नरभव पाभीने, मोहन निर्वाणु पाभे छे.

भाइलसाइ भयुराहास साहू कम्पास।

जैनो अने तेमनु कर्तव्य ।

जैन शब्द अे आजकाल दुनिया पर सर्व-मान्य धर्म पड़यो छे, पक्ष वास्तविक रीते जेतां तेमां रहेलुं अउं रक्षय तो सेकडे पांय टका पक्ष जल्यता नहि होय ?

जैन शब्दने प्रयोग आजकाल धर्म-जति, संघ-शासन-शास्त्र-पंथ अने जेतां भीम रूपे साथे तथा लाग्यो छे, पक्ष यथार्थमां ते अधानुं भुण जेक्य छे. अटये के जैन नामना अगीयाती ते अधी ज्यारीओज छे.

जैन शब्दने व्युत्पत्ति पूर्वे अर्थ जेवो थाय छे के-जयति गगदि शत्रुन इति जिनः । जिनस्या इमे इति जैनः । अर्थात् राग द्वेष-क्रोध, भान-भाया-दोष, धत्यादि शत्रुअने ज्वनार जिन अने तेमने भानवावाणी ते जैन, पछी ते भानवावाणी व्यक्ति अमे ते जति, के अमे ते धर्मनी होय.

जिन शब्दनी व्याख्या जल्यता पछी, धरेकने जेम तथा सिवाय रहेतुं नथी, के जेजे रागादि शत्रुओ जता होय, ते पछी अहंता होय, के विषय होय, पीर होय के-द्वन्द्व होय, धंस प्रीरत होय के, अुद्ध होय, पक्ष ते जैन कडेवाय छे. अने तेमने भाननारा अधा जेनी कडेवाय छे.

हाल तो जैन दुगमां उत्पन्न बनार, पछी ते रागादि रहित होय, के द्वेषने सामर होय, सम्भङ्-दर्शनयुक्त होय, के-अधरने न भानतो होय, छतां तेना वंश परंपराना जैनत्वने लक्षनेज जैन कडेवाय छे. ने ते पोते पक्ष, इतरने पीणा यांदो करीनेज पोताने जैन कडेवावे छे. आकी नथी पडी तेमने जैन शास्त्री, के नथी पडी जैन धर्मना जैनत्वनी.

जेना अज्ञान मालुसोअेज हालमां जैन-त्वने छतारी पाइयुं छे. हाल तो जैन ते कडेवाय छे, के-जे तीर्थ भाटे लहालह करतो होय, पुण्य पहेलां के यावन पहेलां

તેની તકરારોમાં ઉતરતા હોય, આ તીર્થ દિગંબરી, અને આ સ્વેતાંબરી, એની હારણ કરતા હોય, બાર વર્ષની બાળકીને વૃદ્ધ વયે વરતા હોય, તેવા અજ્ઞાન નરપશુઓજ પોતાને ખરા જૈન કહેવડાવવાનો દાવો કરે છે.

જે યુવાનો તીર્થોના અવગ્રાહી રહીત રહી ધર્મ સાધન કરે છે તેમજ સામાજિક સુધારાને માટે તનતોડ મહેનત કરે છે, તેઓને ઉપર બતાવેલા કેસરીઆ જેટલો હલકી નજરે નિહાળે છે. તેમની અધી પ્રવૃત્તિઓ અટકાવવા અનુભવે કરે છે, પણ તે અગ્રાનીઓને ખબર નથી, કે-આ સમય યુવાનો દારા કાન્તિ કરવાનો છે.

જેનોનું ખર્ચે લક્ષણ એ છે, કે-રામદેવ ઓછો કરવા પ્રવૃત્તિ કરતી, પણ ન્યાં રાત્રીદીન અધડાનાં મુજ શોષાતાં હોય-ન્યાં ખીબનાં મંદિર પોતાનાં કરીલેવાની નીચ પશુવૃત્તિ પોતાની હોય-ન્યાં તીર્થ સ્થાનોમાં મારામારી અને પુના મરકી થતાં હોય-ન્યાં ગરીબની હાયતા હબરો ચિત્કાર સમાજને ચિર ચોંટતા હોય-ન્યાં મ્હે-મ્હાદિ સરકારને હબરો રૂપિયા, તીર્થસ્થાનોના નામે અપાતા હોય-ન્યાં માઇ બાઇમાં દેવથી રહેવાનું હોય-ન્યાં કેસરના આસ્વાવળાજ અન્ગોઅમ જમવામાં, કે-ન્યાં આપવા લેવામાં વટલાઇ જતા હોય-ન્યાં સેકડો બાળ વિધવાઓ કુકરો કરી બાળ દાન્યાઓ કરતી હોય-ન્યાં વૃદ્ધ ખસ્યરો બાળ બીઓની જાંઘી ખરખાદ કરતા હોય, ત્યાં જૈનત્વ રહેજ ક્યાંથી ?

પણ ન્યાં સ્વેચ્છતા ટાપમમાં ક્ષયા સ્પાની હોય-દેવતાં નો નામ પણ ન લેવાનું હોય-તીર્થસ્થાનોમાં 'પથી વનાનું' હોય ત્યાંજ જ નવ છે ત્યાંજ મહાર્ચીરના પુત્રોના નિવાસ છે

જેન ધર્મનું ખર્ચે લક્ષણ ઉતરતા છે - ઉદાત્તા કેટલે પક્ષપાતના અમાવ. અપક્ષપાતવજું તે વીરનો મહામંત્ર છે, જે ધર્મમાં પક્ષપાત હોય,

તે ધર્મ, ધર્મ નહિ પણ ધુતી ખાવાનાં ધર્મોજ છે.

ધર્મમંદિરમાં જીવ માત્રને દાખલ થવાનો અધિકાર હોવો જોઇએ, ત્યાં જીવ કે-નીચ મનુષ્ય, કે-તિર્થીય, પુરુષ, કે-ઓનો બેદ હોવો જોઇએ નહિ.

ધર્મના આ સિદ્ધાંતને અમલમાં મુકવાજ ધી મહાવીર સ્વામીએ અને તેમની પૂર્વેના તિર્થકરોએ સમોદ્યરણમાં ધર્મોપદેશ કર્યો હતો. તેમની સભામાં જીવ કે-નીચ, મનુષ્ય કે-તિર્થીયનો બેદ દનોજ નહિ. સર્વે જીવો સરખા ભાવથી સહિ-અણુતાપૂર્વક, તેમની સભામાં બેસી ધર્મોપદેશ શ્રવણ કરતા હતા.

સાંપ્રત કાળે તેજ પ્રણાલિકાને માન આપી બારતવર્ષીય દિંદુ મહાસભા તરફથી સમાજ-રત શેઠ જમનાલાલ વ્યજાજ અંત્યખેને દિંદુ મંદિરમાં દાખલ થવાની છૂટ અપાવવા લાગ્યા છે, ત્યારે આપણે જૈનો મંદિરો માટે સામસામા લડી ખરીએ છીએ ?

જૈન માત્ર ચોવીસ તિર્થકરોને માને છે. તિર્થકરોની જન્મભૂમિ-દિક્ષા સ્થાન-જ્ઞાન-ભૂમિ-અને નિર્વાણ સ્થાન પર જૈન માત્રનો દર્શન, અને પૂજન કરવાનો હક્ક છે.

પૂર્વાચાર્યોએ જ્યાં જ્યાં તપ કરી, દેદ ત્યામ કર્યો છે, ત્યાં ત્યાં જૈન માત્રને બકિત બાવે વંદના કરવાનો હક્ક છે.

એ આપણે સારી રીતે જાણીએ છીએ, છતાં દિગંબરો અને સ્વેતાંબરો નાહક માર્શ અને તાકે કરી લડી મરે છે

જે સ્થાનક દિગંબરોના ક્ષત્રમાં હોય, તે સ્થાનક પર જો સ્વેતાંબરોને દર્શન-પૂજન કરવા દેવામાં આવે, તો કાંઇ દેવ અદલાઇ જવાના નય, તેવીજ રીતે જે સ્થાનક સ્વેતાંબરોના ક્ષત્રમાં હોય તે સ્થાનક પર જો દિગંબરોને દર્શન પૂજન મના દેવામાં આવે, તો દેવ અદલાઇ જવાના નથી.

દેવ તેના તેજ રહેશે, અને રહે છે. અદલાઇ છે, માત્ર આગેવાનોના વિચાર, આપણા અંદરો

અંદરના આ ઝવડાને લઇનેજ આપણામાંથી સ્થાનકવાસી અને રાજ્યત્રંદ પંથી જુદા નીકલ્યા છે કે-જેમને તીર્થ સ્થાનો તરફ રાગ અગર દ્વેષ છેજ નહિ. જ્યાં રાગ નથી ત્યાં દ્વેષ શાયજ નહિ. અને જ્યાં દ્વેષ છે, ત્યાં કાલાંતરે રાગ થઇ શકે છે.

આપણે આપણાં તીર્થસ્થાનો પર અતિશી રામ છે, તેથીજ આપણે આપણા સહધર્મી તરફ દ્વેષ કરીએ છીએ.

જેણે કેસરીલાજી હુત્યાકાંડ જોયો હશે, અગર તેનું યથાર્થ વર્ણન વાંચ્યું હશે, તેને જરૂર તીર્થસ્થાનો પર થતા અત્યાચારોનું બાન થયું હશે.

જે આપણે જેમ તીર્થસ્થાનોના કમળ માટે લડાલડ કરીયું તે આપણને આપણી ધટવતી ગતી સંજ્ઞાનાં કાળો શોધાં. આપણા સમાજને સુધારવાનો ટાકમજ ઝડ મળે.

જે આપણે સમાજને સુધારી વરતી વધારવ. પ્રયત્ન નહિ કરીએ, તે જરૂર શવસો વર્ષમાં આપણે ખલાસ થઇ જઇશું.

જેન ધર્મ પ્રાણી માત્રનો ધર્મ છે. એ જાણવા છતાં હાથ તે વાણીઆએ જેન ધર્મ ખરીદી લીધો હોય, એમ જણાય છે. એટલે કે જેન ધર્મમાં શાખલ થવાનો કોઇને હકજ ન હોય. હાથ, કેટલી સંકુચિતતા, પણ તે સક્રી-તતા કેની છે. વાણીઆની નહિ કે ધર્મની.

ધર્મનું ક્ષેત્ર ગંભીર છે, વિશાળ છે, ઉંચાર છે. તેમાં દરેક જણ પ્રવેશ કરી શકે કે. મહાસીર-સ્વામીનો ધર્મોપદેશ વાણીઆ, એકલા માટે નહોતો.

મનુષ્ય ગમે તે ચાતિનો હોય, પણ જે તે જેન હોય, જેન ધર્મ સ્વિકાર કરે તે તેને પોતાના ધર્મ અનુસરી શકે ન સ્વિકારતો. તે મૂર્ખતાજ છે. જેન ધર્મની સંજ્ઞા ધટવતું કારણ પે નહિ તે પીછું શું હેંછ શકે ? એક જજેન જેન શાય તે શું પ્રભુ પૂજન ન કરી શકે.

એક અજ્ઞેન જેન ધર્મના તમામ

આચારો પાળે તે તેની સાથે વ્યવહારિક સંબંધ બાંધવામાં હરકત શું ?

માન માનવા પ્રમાણે તે આપણે જેવા પ્રકારના જેન હઇએ, તેવા પ્રકારના જેન, ખીજ ગમે તે જાતીમાંથી બનાવી. તેમની સાથે દરેક પ્રકારના વ્યવહારિક સંબંધ બાંધી તેમને ચુરત જેન ધર્મીનુયાયી બનાવવા જોઇએ.

શ્રાવક માત્ર એ પ્રમાણે વર્તન કરે તે, હું નથી ધારતો કે જેન ધર્મનો પ્રચાર થતાં વાર લાગે.

દુનિયાની તજરે જેન ધર્મને હુલકો પાડનાર, તીર્થ સ્થાનોના ઝવડા ઝાંછા થશે તેજ જેન ધર્મ ત્રિધ વિખ્યાત બની શકશે.

ધર્મ જ્યાં સુધી આદર્શ ન હોય, તેને પાળનાર ચારિત્રવાન ન હોય. ત્યાંસુધી તે ધર્મ, ધર્મ ગણાતોજ નથી.

આદર્શ ધર્મ ત્યારે ગણાય, કે જ્યારે સર્વે દિરકા એકત્ર થઇ જેન એ શબ્દના ઝંડા નીચે સ્વી જેન ધર્મનો પ્રસાર કરવા તત્ત-મત-ધન અર્પણ કરે !

અતરંગ માન્યતા ગમે તેવી હોય, પણ તીર્થસ્થાનો કે સામાજિક સિવાજીમાં સંપીને અકચતા પુર્વક, પોતાને વાર પ્રભુના પુત્ર ગણાવી વર્તન કરે, તેજ જેન ધર્મ જગદન્યાપી બની શકે !

આજકાલના જગત હીન શ્રાવકો સાધુઓ કરતાં જેનત્તવાળા અન્ય ધર્મી સારા, કે જે તીર્થ-સ્થાનો માટે મારપીટ કરતા નથી.

ધર્મસ્થાનમાં કોહીનું ટીકું પડે, તે આપણું મંદિર ધાવરાવનારા શ્વેઠ શ્રાવકો, કેસરીલાજી જેવા પ્રાચીન તીર્થમાં ખુબ મરકી કરાવે તે જેનત્તને લગવનાઈ કૃપ્ય નહિ. તે પીછું શું ગણાય ?

પ્રભુના તેજ ગણાય કે જે વ્યવહારમાં અધ-રિત હોય, પરદેશી તરખા કે દેશી સરકાર, જ્યાં જેનોતો જરા પણ પગ પેસારો નથી, જ્યાં જેન લો કોઇ જાણના જ નથી, જ્યાં તીર્થકર ક્યારે

જ્યા, મંદિરો ક્યારથી થયાં, કોણે બંધાવ્યાં, સ્વેતાંબર ઐટલે કોણ, દિગંબરો ઐટલે કોણ, જોઈ કોઈ જાણતા નથી, ત્યાં ત્યાંય મેળવવાની આશા રાખી હજારોનો ધુમાડો કરવો, તે મને તો બાદરવા મહિના સિવાયનું જ્ઞાન મૈથુન જેવું લાગે છે.

સ્વેતાંબર પક્ષ તેજમાં હોય, તો દિગંબરોએ સહનશીલતા રાખી શાંત થવું જોઈએ. દિગંબર પક્ષ તેજમાં હોય, તો સ્વેતાંબરોએ શાંતિ ધારણ કરવી જોઈએ.

પણ આજકાલ તેથી ઉલટું જ જોવામાં આવે છે. શાંતિ તો આવકોમાંથી રસાતળે પહોંચી ગઈ છે. પ્રાણી માત્ર પર સમભાવ ધારણ કરનારા આવકો, પોતાના ધર્મ અનુસરે રાક્ષસી વૃત્તિ રાખતાં શીખી ગયા છે. ખેદ છે, શરમ છે, તે જોનાને, કે જે હુમેશ તીર્થસ્થાનના નિમીત્તે ઝંઘડા ઉભા કરે છે.

આવક કુળમાં જન્મ ધારણ કરી, શાંતિ ગુમાવવી, તેનાથી તો શુદ્ધતા ધેર જન્મ ધારણ કરવો હજાર દરજ્જે સારો છે.

જૈન શાસ્ત્ર એમ નથી કહેતાં કે-અમુક તીર્થ સ્વેતાંબરનું છે, અમુક તીર્થ તેમજુ દિગંબરો પાસેથી લઈ લેવું જોઈએ.

જૈન શાસ્ત્રે કહે છે કે-મંદિરો પ્રાણી આત્મની મિલકત છે. તેમાંથી ધર્મ બ્રોધ લેવાનો દરેકને સરખો જ છે. પછી કોઈ મરીમ હોય કે અમીર રાજા હોય કે રંક પ્રજાના દરબારમાં સૌ સરખા છે. જે નમે તેજ પ્રજાને ગમે, જે સહન કરે છે તેજ શાશ્વત મુખને મેળવે છે.

સહન કરવાની મારી સલાહ વખતે, આપણા એકાદ પક્ષને ઠીક નહિ લાગે, પણ તેઓ અંતરંગમાં વિચાર કરી જોશે તો તેમને પણ મંદિરો બંદરના ઝડા અનર્થકારક જણાશે.

વર્તમાન કાળના સાધુ સાધ્વીઓની ફરજ આવકોને એકત્ર કરવાની છે, નહિ કે વિખુટા પાડવાની ?

મારા સાંભળવામાં આવ્યું છે કે-કેટલાક કહેવાતા સ્વેં મુનિરાજો, તીર્થસ્થાનના ઝડા ઉભા કરવા આવકને ઉરકેરે છે. તે નાણાંના કંડેરી અપીત્ર કરી નાણાં ભરાવે છે. જો તે વાત સત્ય હોય, તો મારે કહેવું પડશે કે-તે મુનિરાજ મુનિ નથી, પણ જૈનીઓનું હુરામતું ખાનાર, પાખાંડી મિથ્યાત્વી મદકો છે.

તેવાઓને મુનિ કહી છલકને શરમાવવી તેના કરતાં સંપને ઇચ્છનાર આવકોના ગુણ ગાવા લાખ દરજ્જે સારા છે.

પણ મારે સંધને એકત્ર કરી જૈન સમાજને શિરથી તીર્થસ્થાનોના નામે ચોટિલું કંઈક લુંસી નામે એજ ઇચ્છા છે. ઝંઈ શાંતિ: શાંતિ:

આવક ઢશે તે આટલેથી જ સમજી જશે. તીર્થસ્થાનોમાં સંપથી ધર્મ ધ્યાન કરવું તેજ મેલતું બાધું છે.

ત્રિકાળ સામાયક કરનાર આવકો જામશે કે ?

હી. જૈન માત્રને એકત્ર જોવાને ઉચ્ચક, મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ કાણીસાકર કમ્પાસા.

સ્વહકમાં અજ્ઞાનાંધકારનો નાશ.

(લેખક:-માસ્તર પુનમચંદ મંબળા-છાણી.)

૧-ખડકમાં દહા દુમક શાંતિમાં પહેલાં કોઈ જગ્યાએ દિગંબર જૈન પાઠશાળા ન હતી. પણ કંઈક ખડકના બાવક બાળીકાઓનું પુન્ય પ્રમટ થવાથી શ્રીયુત મુમુક્ષુ નિવાસી સ્વજ્ઞતિ ભૂપણ દાનવીર શેઠ સાહેબ શ્રી. લક્ષ્મીભાઈ લક્ષ્મીચંદ પધારી બા ખડક દેશને સુધાર્યો છે. અને અગાનરૂપી અંધ-કારનો નાશ કરી જ્ઞાનરૂપી સુર્ષ પ્રકાશાવ્યો છે.

૨-પહેલાં શ્રીયુત દાનવીર સ્વજ્ઞતિ ભૂપણ શેઠ લક્ષ્મીભાઈ લક્ષ્મીચંદ પહેલાં ઠડર નિવાસી શેઠ દેવભાડા કરનુચંદ અમલારામ તરફથી નવા-ગામમાં પાઠશાળા સ્થાપી અને પોતાના નામથી છાણી પાઠશાળા સ્થાપી અને તેના અગ્રેસર પરોપકારી વિદ્યોતેજક શતેચંદભાઈ તારાચંદ વિજ્ઞ-

મનમરવાળાને નવાગામ તેમ છાંણી પાઠશાળાના મહામંત્રીનું પદ આપી તેમને કામ સોંપ્યું ત્યાંથી મહામંત્રીજી સાહેબે પ્રયત્ન કરી ઉપદેશ આપી ખડકમાં ગામે ગામ પાઠશાળાઓનો પ્રયત્ન કરી આપ્યો છે.

૩-પહેલાં આ ખડક દેશમાં હુમોકાર મંત્ર થું છે, તેનું કોષ્ટને બાન ન હતું. પણ હાલ પાઠશાળાઓ થઇ તેના પછી એક આઠ વર્ષના છોકરાને પૂછવાથી પણ હુમોકાર મંત્ર શુદ્ધ ઉચ્ચારણથી મોલસો, પહેલાં મંદિરમાં પુલ્લ બણવી હોય તો મંધવ' લોક પેસા લઇ બણી આપતા પણ હાલ તો પાઠશાળા થઇ તેના પછી એક દશ વર્ષનો છોકરો પણ પુલ્લ બણી હોઇ છે. તે એ બધી ઉત્પત્તિ પાઠશાળાની કે શ્રીયુત શેઠ સાહેબ લક્ષુભાઇ તેમ મહામંત્રી સાહેબ ક્ષત્યેન્દ્રભાઇની છે.

૪-શ્રીયુત વિદ્યોત્તેજક પરોપકારી મહામંત્રી ક્ષત્યેન્દ્રભાઇ પરોપકારી કામ કરી રહ્યા છે. તથા તેમનાથી મોટા તેમના બાઇ છે, તે અપંગ છે, હાલી ચાલી શક્તતા નથી, અને પોતે પણ એકલા અને અપંગ બાઇની સેવા ચાકરી કરી રહ્યા છે. અને ધર્મના કામમાં ટેકા આપતા રહી તેમ પાઠશાળાઓનું નિરીક્ષણ કરતા રહી ખડકના ઉપકાર કરી રહ્યા છે, તે ખડકના બધા બાઇઓ પર તેમના મોટા આભાર છે.

૫-ખડકમાં સાત પાઠશાળા તેમ એક કન્યા-શાળા છે તેમ આસરે સાડાત્રણસો છોકરા છોકરી લાભ લઇ રહ્યા છે. અને વિદ્યોત્તેજક પરોપકારી મહામંત્રીજી સાહેબ પ્રયત્ન કરી બીજાઓને ઉપદેશ આપી છોકરાઓને પરીક્ષાતી વખતે ચે.પડીઓ તેમ રહેઠ પેન વગેરે છનામમાં આપે છે તે તેઓને ખડકની બાળીકાઓ ધન્યવાદ આપે છે કે. અને શ્રીયુતો ચીરંજીવી રહો.

૬-તેમ આ ખડક દેશમાં આચાર વિચાર વિષે, શુદ્ધ ભોજન ક્રિયા વિષે કંઈ બાન નહતું તેમ ત્રત ઉપવાસ પણ કેવી રીતે કરે તે પણ કોઈ બણવું ન હતું, પણ શ્રીમાન ૧૦૮ મુનિ શ્રી

શાન્તિસાગરજી મહારાજ (હાથી) વાળાના આગમનથી તેમ તેમના ઉપદેશથી આ ખડક સારા પાયા ઉપર આબુ' છે, પણ હાલ રૂપીએ આઠ આના પ્રમાણે સુધર્યું છે. આઠા છેક દિવસે દિવસે સુધારાના પાયા ઉપર આવશે.

૭-શ્રીયુત મહામંત્રીજી સાહેબની ખડકની બાળીકાઓ ઉપર પુરી લામણી હોવાથી આ વર્ષમાં પોતાના અર્ચાથી એક દગ્ગર આલોચના પાઠ છપાવી બહાર પાડી ખડકની બાળીકાઓને મરત આપવામાં આવ્યા છે. અને એવી આશા છે કે દરેક ધાર્મિક પુસ્તકો પોતાના નામથી પ્રમટ કરી વિના મુલ્યે ખડકના બાળીકાઓને મુક્ત આપી ઉત્તરી વધારશે.

૮-ગઈ સાલમાં એટલે સંવત ૧૯૮૫ના શ્રાવણ માસમાં ચૌદ ગામેની પંચ કમેટી બાંજુદા મુકામે થઇ હતી તેમાં સુધારાના સારા રિવાજો લડયા, તેનો લેખ મહા મંત્રીજી સાહેબે આપ્યો હતો તેમાં મુખ્ય અગ્રેસર શ્રીયુત વિદ્યો-તેજક પરોપકારી ક્ષત્યેન્દ્રભાઇ તેમ નવાગામ પાઠ-શાળાના સેક્રટરી નામજીભાઇ વીરચંદ તેમજ જવાહર નિવાસી શેઠ કપુરચંદ્રભાઇ મલ્લ મળી પંચોને સમન્વી કુરીવાળે કાઠી સારા રીવાજો જાખલ કર્યા છે. તેમ શીશુલ ન્યાતવરાના અર્ચા ઘટાડી ટુંકાણમાં આટોપાય તેવા કામદા લડયા છે. અને આ પંચ કમેટીમાં મહા મંત્રીજી સાહેબે પંચોને બહુ ઉપદેશ આપી ન્યાતવરાના અર્ચા તેમ કુરી-વાળે કઠાવ્યા છે, અને હજી પણ આશા છે કે ખડક દેશને સારા પાયા ઉપર લાવશે, એવી આશા છે.

(૯) આ ખડકદેશ એવી રીતે શ્રીયુત સ્વગ્નતિ-ભુપણ દાનવીર શેઠ ચોક્તી લક્ષુભાઇ લક્ષ્મીચંદ તેમ વિદ્યોત્તેજક પરોપકારી ક્ષત્યેન્દ્રભાઇ મહા-મંત્રીના પ્રયત્નથી આ ખડકદેશ સુધર્યો છે માટે આ ખડક પ્રાન્ત એ જાને શ્રીયુતોને વારંવાર ધન્યવાદ આપે છે કે આવા શ્રીયુતો વારંવાર ખડકમાં પધારી ઉત્તેજન આપે કે તેથી સારે રસ્તે દોરાય.



લાગણી યા પ્રેમ.

ભે:-શા. ચુનીલાલ વીરચંદ ગાંધી-મુખ્યક.

લાગણીને મર્યાદા છે, તેને હદ છે, અને નથી, તેનું સ્થાનંતર છે, તેની શાખાઓ છે, સૌમાં વ્યાપક છે, સૌના જીવનનું એ ચેતન છે, પ્રેરણા છે, જ્યાં જ્યાં જવે અધિકાર તેવોજ વેમ લાગણીનો હોય છે. અધિકાર ઉપરાંતની લાગણી એ વિકાર છે.

“પિતા, પુત્ર, સ્વામી, સેવક, ભાઈ અને પતિ, પત્નિ, દરેકની ભાવના અને પરિવર્તનને હદ છે.”

સૌ સૌને લાગણી પુજનનો અધિકાર છે. “હદ” વ્યવહારમાં અમરશાન ભોગવે છે. ત્યારે લાગણીની વિશુદ્ધતા ચંદાનારાઓને મટે સરસ્વ હોએ છે. પોતાના જાગડો, સ્ત્રી, અને કુટુંબને જુલો સેવકને સર્વસ્વ આપીને માલીક મર્મ પૂર્ણ થયો માનવો, એ લાગણી વ્યભિચાર થયો, કારણ કે લાગણીની હદનું ઉલ્લંઘન થયું કહેવાય, એકની પ્રત્યે નીર્દયતા ને બીજાની પ્રત્યે શીદાગીરી એ અન્યાય કહેવાય. લાગણી જે સમજે છે, તે કોઈને અન્યાય નજ કરે.

“એક સુવક એક કુમારીકા પ્રત્યે લાગણી પ્રગટાવે...કુમારીકા પ્રત્યેના પ્રેમને હદ નથી, કારણ કે તેમનો સહકાર પવિત્રપણે જન્મમાં ફેરવાય અને તેઓ પ્રજ્વતામાં પગલાં મુકે તો એ પાપ નથીજ. પરંતુ સુવક ન્યાય પરાવજ્ઞ હોવાને કારણે કે જેથી બીજાને જુલો ન જાય.

“ત્યાજ મુર્તિ સમી વિષમાન કોઈપણ આત્મા લાગણીથી જોઈ શકે છે. તેની સાથે સહકાર રાખી શકે છે, પરંતુ તેને હદ છે. એ હદ વીકારોને અટકાવી શકે છે અને નિર્દોષ ભાવનાને અમર રાખી શકે છે.

“વિષ્ણુ હોય કે સધવા હોય, પુરુષ હોય

કે સ્ત્રી હોય, સૌને લાગણી હોય છે, સૌને પ્રેમ મળે છે, સૌ અનુભવોથી ભરેલા છે. વીકાર જ્યાં જ્યાં પ્રગટ થાય ત્યાંની ભુમિકાને-વિકારને સમજનારા ડાહ્યા જોએ પવિત્રતાની અંજલિઓનાં સૌચન કરી પવિત્ર બનાવી લેવી જોઈએ.

“સરસ્વતીચંદ્ર ને કુમુદની ભુમિકા જેટલી સ્પષ્ટ સમજાવી શકે છે તેટલીજ તે સમજવાની ભર છે.

સરસ્વતીચંદ્રને કુમુદનો જસીમ પ્રેમ મર્યાદા-શીલ છે. લાગણીથી ભરેલો એ સહકાર માનવતાનું ભાન કરાવે છે. કુમુદ તેને ચહ્વાય છે. છતાં કુમુદ પ્રમાદલનની પત્ની બની ગઈ છે. એટલે કુમુદ લાગણીની મર્યાદા બાંધી જીવે છે. સરસ્વતીચંદ્ર તેની લાગણીને સજીવન ને પવિત્ર રાખતા સંયમ વ્હાલો મણી કહે છે—

“જહો કંદાર લાણીરે,

સતિ તું શુદ્ધ શાણીરે.

“ધુરે નાતે નીભાવી લે,

પકડું પાતું સુધારી લે.

એ આખી એ કવિતા પ્રેમની મર્યાદાનો દુર્મ છે. લાગણીનો અભેદ કોઈસે છે. કુમુદ અને સરસ્વતીચંદ્રના જેવી મર્યાદામય લાગણીના અધિકારો જીવંત છે ને તે કાયમ રહેશે એમા શક નથી. લાગણી એ પ્રકારની છે.

જ હા ને ડાહ્યાના શબ્દોથી મતલબ પુરી કરનારા, માલીકને હમનારા, નીચે વળી વળી સલામો બરનારા, દાર્શિક જનોની એ નીતિને મર્મ માલીકો લાગણી અને વાંદેક સમજી મલકાય છે...આ પણ લાગણી છે.

સેવકને મોટી મોટી વાલ્યો આપનારા મર્મ કહેશે પીટનારા માલીકો...પણ એ ઉપરથી માનવતા દરસાવે છે. આદર્શમય નેહીનેજ જીવન માનનારાં માલીકો સેવકને પુત્ર માની ન્યાય આપે છે. ત્યારે કેટલાએ મરીબેતા અમજી પૈસા ને લોહીના વરસ્યા માલીકો-નોકરી પાસેથી પશુની માદક કામ લે છે. નીર્દયી આજીવીકા આપતાં

હેમાં ખાળનારા-આજીવીકા ઉપર કાપકુપ મુકવાની તક શેષનારા માલીકાની સાકર જેવી જીભ એ પશુ બોળા માણસો લાગણી સમજે છે.

“ધર્મ” રક્ષક, અને કુટુંબીક કુળની અમરવેલ છે. એવા આજના નવયુગના નવ સર્વકો ખાળકોને ઉછેરનારા માયાપો દરજ સમજી ઉછેરે છે, બચાવે છે. ત્યારે કેટલાએ કલાક્રમો-મુકુમાર કન્યાને વીજમી સદીની શાહા જોમની હુંડી સમજે છે. ને પુત્ર રત્નોને કમાઈને લાવનારા મંત્રો સમજીને ઉછેરે છે. આ પશુ લાગણીઓ જ છે. એજની ખાવના જુદી છે...

“એક મીત્ર હમેશને માટે એક સરખો ચઢાય... સુખ દુઃખમાં સાથ આપે... અને વધારી સાચવે... તે ખરી લાગણી મા પ્રેમ કહેવાય.

કાષ્ટ સમય દર્શન નહિ થાય, રસ્તામાં સામે આવતા જોઈનેજ પંચનો સીન ટ્રાન્સફર કરી રટુચકર થતા હોય ? કામકાજને લાઈને કાષ્ટ સમય મદદ નાગીએ ત્યારે સમવડ નથી, મા કુરસદ નથી કહી પતાવે... તેવા મીત્રો..... તમારે ત્યાં સહામો ખરતા આવે, કુદરતી પ્રેમનાં આગવત વાંચતા આવે. સીનેમા નાટકના પાસો લેતા આવે. તમારી જરૂરીયાત પુછતા આવે. લાગણીનાં પુર વહેવડાવતા આવે ત્યાં તમારી સ્થાિતિનો વીચાર કરી નિષ્ક્રમ કરી લેવો કે... આજ સાહેબનો કંઈ રસ છે. પેસા ઉપર તેની ટરાપ હોય છે. કે સંસારને પુળમાં મેળવી દેવાની કપટ આજી ખેલાય છે. વીકારોની વાજનાની લંપ-ટતા હોય છે, ત્યારે સુખાંજો એમ સમજે છે કે... આનો બહાષ છે. લાગણી છે... લાગણી તે એક સરખી હોય છે. સુખ દુઃખમાં તેનાં મતી સ્થીર હોય છે, પરંતુ તે આજનો જીવ જુવી જાય છે.

જાત કમ્પત બને છે, ત્યારે કમ્પત જાત બને છે. પતિવ્રતા સ્ત્રીની લાગણી અને એક વિષયાંધ અખજાની લાગણીમાં આકાશ જખીનનું અંતર હોય છે. રાત્રિનું પરિવર્તન સાઈ સ્વચ્છ ને રનેહને

વીકસાવે છે, પ્રાણ પાથરે છે, રનેહીના એજ ખોલતાંજ ઝીલે છે. ત્યારે વાચાલથી અખજા... લાગણીની કૃતીમતાથી ઠગે છે. રનેહને બહલે વાજનાને પોષે છે. પતિને હદયથી ધીકારે છે.

સતી સેવાથી સંતોષ માને છે. ધરના મળતા શેટલાથી સ્વર્ગ સુખ માણે છે ત્યારે વાજનાની અધિષ્ઠાતા રમણી ભરખર બટકે છે. ને વીકારોને વધારે ને વધારે સતેજ કરે છે.

સતી સત્ય બોલે છે, ત્યારે દુરાચારીથી પજો પજો જુકું બોલે છે. સતી સુલ કમ્પુલી પથાતાપ કરે છે, ત્યારે પાપીણી... મુન્હો કમ્પુલ કરવામાં પાપ માને છે. એક પાપને છુપાવવા અનેક પાપ કરે છે. પતિવ્રતાનાં વ્રત લે અને તોડે. પોતાનો અમુલ્ય દેહ હીચકમાં રમદોળતાં લેજ માત્ર અનુ-કંપા ન કરે. સૌન્દર્યનું લીલામ કરવામાં આનંદ માણે... કહો સતિ ને પાપીકમાં કેટલું અંતર હોય છે. એજની લાગણીને મોટામાં મોટું અંતર છે.

લાગણીના રંગજ એવા છે કે-દંતની સાથે હંસ થવાય છે. અને ગઈબની સોખને મૂખ થવાય છે.

“લાગણી એ જ્ઞાન્તાનો સાગર છે.”

“લાગણી એ આનંદનો ખળનો છે,”

“લાગણીમાં નીરંતર અમૃત છે.”

લાગણીને સુશી શકાય નહિ એવી એ બક્ષિષ છે. “અવમણના અવિચેક, નીચ માનવનો સહકાર, જુલ ઉપર જુલ જીવી, દુર્જનને સજ્જન મણવો, અને અવિચારની અવધી, દુરાગ્રહનો હકષૌમ, ત્યાં લાગણીનો નાશ છે. અને લાગણીનો નાશ જતાં મનુષ્યનો પશુ નાશ થાય છે.”

“વચન પર પ્રાણ ન્યોજાર કરવા, પરંતુ તેવા વચનમાં નેકી હોય તેજ મિત્રની સજ્જનતા હોય, લાગણીને સમજનારો હોય, રનેહને શોભા-વનારો હોય, નીરસાર્થતાને ચમકતો સીતારો હોય, પ્રમાણીકતાનો પુખરી હોય, આહર્ષનો આશક હોય, ઈરિદી હોય, દુર્બળ હોય, અસ્થાંમત

હોય, ત્યાં ત્યાં નેક અને ટેક શોભે છે, ત્યાંજ આપણેલાં બળદાન દીપે છે.”

લાગણીને બહારાવો, તમારી બાવનાને પથે પુલકાં વેશો, તમારા સુહૃદ્યમાં-સદ્ વિચારોનું સૌમ્ય કરો, સૌને પોત પોતાના પાપે મરવા દો, તમારી લાગણી કચડાતી હોય-ત્યાં પોકાર કરો. તમારી રસજ કુબલી હોય ત્યાં વાચાળ બનો, તમારી લાગણીને અમર રાખો.

‘અમર રહો-લાગણી!’



શિક્ષાનો ઉમેદવાર રૂપચંદ.

બાપ રૂપચંદ ઠીકાનલાલ જાતે દિ. જૈન મુક્તિહપુરા ચાલિના છે અને પરતાપમઠના વતની છે. તેમના વડીલ બહેન શીમતી જેંદાબાઈ તરફથી હમ્બારા મંડળપર ૧ પત્ર તા. ૨૬-૫-૩૦ અને બીજા બીજા તા. ૨૫-૫-૩૦ એ જેમ બે પત્રો આપ્યા જેમાં લખ્યું હતું જે-મારો બાપ રૂપચંદ મુંબાઈમાં આવે સાધુ ખાસે દિક્ષા લેવાનો છે એવી અને ચોકસ અખર મલ્યા છે. મને પ્રકત તેનોજ આધાર છે તેને તમે દીક્ષા લેતાં હાલ તુરત રોકો અને પરતાપમઠ આવે તેમ કરો.

આ પત્રો ઉપરથી હમેએ, આ બાબત શ્વેતાંબર સમાજને લગતી હોઈ જૈન શ્વે. કોન્વર્સન્સ, જૈન યુવકસંઘ, અને શેઠ નગીનદાસ કમ્બલસંઘથી, શેઠ જીવલલાલ પરતાપસી ત્થા અંધેરોના શ્વે. જૈન સંઘ (જ્યાં બાપ રૂપચંદને તા. ૩૧-૫-૩૦ એ દિક્ષા આપનાર હતી) ને પત્રો લખ્યા કે આપ બાપ રૂપચંદને તેના વાલી અને દિ. જૈન સંઘની રીતસર સંમતી લીધા સિવાય કોઈપણ શ્વે. જૈન સાધુ બારવના કોઈપણ બાગમાં દીક્ષા ન આપે તેમ તુરત બ્યવસ્થા કરો અને એ રીતે દિ. જૈન સમાજને નાહક ઉકેરણીથી બચાવો. હવે બાપ રૂપચંદ અંધેરોથી તા. ૩૦-૫-૩૦ એ કહી રીતે આવ્યો તે જાણીશ.

તા. ૩૦ મા મેની સાંજ સુધીમાં જૈન શ્વે. કોન્વર્સન્સ સિવાય કોઈ તરફથી હમોને હમ્બારા પત્રોનો જવાબ ન મલ્યો અને રાત્રે ૮ વાગે હમોને અખર મલી કે કાલે (તા. ૩૧-૫-૩૦) સવારે બીજા દીક્ષા લેનાર બાપ સાથે બાપ રૂપચંદને પણ દીક્ષા આપવાની છે, આ સાંભળી મેં તુરતજ આ દીક્ષા અટકાવવા માટે મુંબાઈના શ્વે. જૈન સંઘ જેમ એક અપીલ પ્રસિદ્ધ કરવા ‘હિંદુસ્તાન’ પત્ર પર મોકલી, (જે તા. ૩૧-૫-૩૦ ના સવારના ‘હિંદુસ્તાન અને પ્રબલ મિત્ર’માં પ્રસિદ્ધ થઈ છે) અને બાપ જવેરીલાલ યુનીલાલજીને રૂપચંદને મલી ચોકસ અખર મેળવવા અંધેરી માકલ્યો. બાપ જવેરીલાલ શેઠ નગીનદાસને બંગલે જઈ રૂપચંદને મલ્યો. અને તેને દીક્ષા આપવાની છે તે સંબંધી બુલાસો પૂછ્યો તેણે બંગલામાં કહી વાત કરવાની ના પાડી અને જવેરીલાલ સાથે બહાર ગયો અને વાતચીત કરતો કરતો રટેજન નબદીક તેણે આવી પહોંચ્યા જ્યાં બાપ જમમોહનદાસ પોતાના અમત કાચસર મામમાં જતાં હતા તે તેઓને મલ્યા. જમમોહનદાસે પણ રૂપચંદને તેની દીક્ષા સંબંધી પૂછતાં તેણે જણાવ્યું કે મારી છત્તા હતી પણ મારી તે માટે યોગ્યતા નહોતી જેમ ઠહી મહકાસે એ વાત મોઝુદ રાખવામા આવી હતી પરંતુ આજે રાત્રે નગીનદાસ શ્રદને બંગલે દિ. જૈ. યુવક મંડળના શેઠ પર આવેલા પત્ર પર વિચાર કરવા અત્રેના મુખ્ય માણસો બેમા થયા હતા અને ચર્ચા દરમ્યાન એવા ઠરાવ પર આવ્યા છે જે યુવકસંઘવાળા અને આ દિ. મંડળ બધા એકજ લાગે છે તેમનાં કહેવાપર દિ. જૈન સમાજના આ બાઈને તો કાલે જરૂર દીક્ષા આપવી જોઈએ.

હું અખરના સોમન બાપ કહુ છું જે મારી દીક્ષા લેવાની હવે ખીલકુલ છત્તા નથી અને મને શેઠ છત્તા વિરૂદ્ધ દીક્ષા આપશે જેમ લાગે છે. માટે તમે અને અત્રે જે મનમમામા પાત્રે મુંબાઈ લઈ જોઓ તો સારૂ. તેમની સલાહ લઈ

દીક લાગશે તો પાછો અધિરી આરીશ નહિતો કંઈ નહિ.

માઠ એ ત્રણે જણા રોજન પર મયા જ્યાં રપચદે જણાવ્યું કે જતો આવતો શેડને કોઈ માણસ અને જોશે તો દીક નહિ થાય માટે મોટ-રમાં જઈએ તો દીક તે પરથી જવા આવવાની મોટર બાડે કરી તે વખતે ૧૦ વાગ્યા હતા બરાબર ૧૦૧૧ વાગે મુગાઇ આવ્યા. જવેરોલાલે અને ઉપરોક્ત હક્કિતથી વાકેફ કર્યો અને હું પણ તેઓ સાથે મનન મામાને ત્યાં જવા નીકળ્યો. આરાકુવા પાસે મોટર ઉભી રખાવી, તેના મામા જ્યાં રહે છે તે ડેકાણે મયા તે વખતે તેઓ ત્યાં ન હોતા, ત્યારે મેં રપચદને કહ્યું કે રજુ-હોડમાઇ અને મલવા ઇચ્છે છે મારે તારી ઇચ્છા હોય તો માઠ, ત્યાં જઈને પછી અહીં આવીએ. તેણે ના પાડવાથી હમે પ્રીનસેસ રટ્ટીટ રજુહોડ બાઇને ત્યાં ગયા. ત્યાં મેં તેને તેની જ્હેનના પરતી વાત કરી અને રજુહોડમાઇએ પણ તેને કહ્યું કે તારી મોટી જ્હેન ગેંદીયાઇને મારીકા રજુરટર ખત ચલાવ્યો છે અને તેમાં લખ્યું છે જે કે બાઇ રપચદને દીક્ષા લેતા રોડને અને પરતાપમઠ મોડલવાને માટે મારી અને સલાહ છે. તારી દિક્ષા લેવાની ઇચ્છા નથી ત્યારે હું હવે અધિરી ન ગા. અને તારી જ્હેન પરતાપમઠ મોલાવે છે માટે પરતાપમઠ જા. આઠ તે કામ ધંધો શું કરે છે એમ પૂછતાં તેણે કહ્યું કે પહેલાં કપડાની ફેરી કરતો હતો અને હાલ લગભગ ૧ માસથી ગણીવદાસ શેડને ત્યાં કું. પમાર નહીં કર્યો નથી. ત્યાંજ જમું છું અને મોટે ભાગે (એવું મુનિ) રામવિજય મહા-રાજ પાસે મારે રહેવાનું થાય છે. આટલી વાત-મીત થયા બાદ હમે ત્યાંથી ત્રણે ઉતર્યા અને મોટરમાં બેસી આરાકુવા પાસે આવ્યા જ્યાં મનન મામાને ત્યાં જવું હોય તો ત્યાં, અધિરી જવું હોયતો અધિરી, ત્યાં દીક લાગે ત્યાં જવા કહ્યું. તેણે કહ્યું કે મનન મામાને ત્યાં જઈશ અને ત્યાંજ સુધ જઈશ એમ ફરી સવારે અધિરી જવું પડે તો જવા માટે ગાડી બાડાના પૈસા

બાઇ જવેશીલાલ પાસે લઇ તે તેના મામાને ત્યાં ગયો. હમે હમારે ઘેર ગયા. આ વખતે ૧૧૧૧ વાગ્યા હતા.

આ ઉપરથી જ્નેઇ શકારો કે બાઇ રપચદની સહી કરાવી લઇ તા. ૧૦-૨-૪૦ જુલાઇ મુગાઇ સમાચારમાં જે હેવાલ બહાર પાડ્યો છે તેમાં જણાવેલ હકીકત તેને અપરજસ્તી કરવાની, લાલચ આપવાની વગેરે વાતો તદન સદરાગત બરેલી છે.

જે શ્રે. સાધુ પોતાની જૂતકાળની કાર્યવા-હીથી દીક્ષા માટે અયોગ્ય એવા બાળકને દીક્ષા આપી દેવાના કાર્ય માટે અને તેમના સમાજમાં ક્ષેત્ર ફેલાવવાને તરીકે અર્થત જાણીતા શ્રેયશા છે, જેનની ત્યાગ અને વેગાજની વાતો પ્રખ્યે હમેને માન છે છતાં તેમને હમે દમરા એક જની આવકથી વધુ હવ્યા પદધારી નથી લેખક. તેમની પાસે એક અગાવ દિ. જેન બાઇ કે જેને મુનિ ધર્મ તો શું, પ્રાચક ધર્મનું પણ પુર હાન નથી તેને હાલ દીક્ષા ન લેવાનું કહેવા માટે તેમજ એ જે સાધુને તેના વાલી અને દિગંજર જેન સંબંધી સંમતી સ્ત્રીયા સિવાય દીક્ષા ન આપે એમ મુચ્ચપયા માટે મંડળના એક મંત્રી તરીકે હું તદન બ્યાજબ્યા હતા એમ તો કોઇ મણુક કરશે. વળી બાઇ રપચદના ઉપરોક્ત નિવેદનથી, શેઠ અવલલાલ તેની દીક્ષાની વાતથી તદન અજાણ હતા એવું તેમનું કહેવું પણ અમમ બરેહું લાગે છે. છેવટે હું બાઇ રપચદને સલાહ આપું છું કે આ ઘોટી દેવ જાગમાંથી ખસી જઇ વાસ્તવીક અત્મોત્તતિ કર્યો પૂર્વાર વિરોધ રહિત આમમ ધંધેનું અવલોકન તેમજ મનન કરે અને આચરણ કરે તથા જ્યારે સાચો વેચમ ઉત્પલ થાય ત્યારે બહારથી, કુલા, એકાદ પદ અનુક્રમે ધારણ કરી જેને હાલ પોતે અસાધ્ય માને છે તેવી દિગંજરી દીક્ષા ધારણ કરી આત્મ કલ્યાણ કરે.

યુનીલાલ વીરજી માંધી.
મંત્રી, દિગંજર મુવક મંડળ-મુબંધ.



કુદરત એજ કર્મ.

હથીગીત હંદ.

કુદરત કરે તે કોઈથી, ઠેલું નવ ઠેલાય છે,
 કાલો અને પુરાણમાં, જગ તેહના મોલાય છે.
 જ્યાં હશે કુદરત કરે કરા ખરે,
 ધરા પળે પળે, જ તેજ છે કુદરત ખરે.
 રામજીનમાં મયા ને, પાડવો કુતને રમ્યા,
 કૃષ્ણજી સજ્યમાર પારી, તેમજ કપરે હયા.
 સીતા હતી સતી છતાં, રાવજી મથો પળમાં હતી,
 કુદરત તણી માયા બધીજી, જાય નવ કોથી કળી.
 કુદરત કહો કે કાળ કહો, વળી ઠક કે કાલા કહો,
 વમદાર કે નથીય કહી, સૌ ખાર કરોને ખરો.
 છે નામ સર્વે એક વસ્તુ, શાકમાં જુઓ બધે,
 રૂપિ અને મુનિ બધા છે, વજ એ કુદરત કને.
 હૃદય જ્યાં છે બાગ્યનો, સૌ સુખ ત્યાં મોલાય છે,
 જવણું હશે જ્યાં બાગ્ય ત્યાં, સૌ દુખ મય દેખાય છે.
 વિરા તમે સૌ સત્ય માની, કર્મ કર્યાં કાદરો,
 મોહન કહે જગરત બનીને, મુક્તિ નાચીને વરો.

મુકુતથી નિર્વાણ.

ગણલ.

જન્મત જન્મગળી બાણ, જન્મેલા જીવ ખેલે છે,
 ખરી આત્મ તણો રસ્તો, કહો વિરજા કો છેડે છે. ૧.
 વિતા-તતુ-... બચીની, અને જો નાર જાવતી છે,
 જીવન જ્યોતિ તણાં રેહી, વિનાશે તેજ વેરી છે. ૨.
 જન્મતમાં જાપીને જોશો, બધી માયાજ કરોની,
 ખપાયા કર્મના માટે, અધી ખાંપણ ખરોની. ૩
 કરેલાં કર્મની શિક્ષા, કુદરતમાં તેજ પામે છે,
 છતાં જન્મ કાણુઓ સર્વે, નયન વ્યંધાણો રાખે છે. ૪.
 પ્રજુના દારમાં સરખા, મનુષ્યોનેય પ્રાણી છે,
 પ્રજાએ ન્યાયવચ દારે, યદીત શિક્ષા સખાણી છે. ૫.
 કરે સુહીત જો પ્રાણી, સ્વરમ રસ્તે સિધાવે છે,
 મળે નર જવ પાશીને, મોહન નિર્વાણ પામે છે. ૬.

મોહનલાલ જીન. શાહ કાશ્મીરી-કાશ્મીરી.

મૂચના-ઇમ બંધકે સાથ દિગમ્બર જૈન પુસ્ત-કાક્ય સુરતઠા "જૈન ગ્રંથ સંગ્રહ" બાંધા ગયા છે. પાઠક ઉપે સમ્પ્રદાક જે વ સંગ્રહિત રક્ષે.

સમોશરણ પૂજનવિધાન.

જી. મગવાનનાગરની કૃત, કરી સાદ્ય, વડે ટાઈપ ૨૧ નવશે વ સપ્તિરદ. મૂ. ૧૥૫)

જૈન ગીતાવલી.

સન્તાનોસ્પત્તિ, મુદન, વિવાહ, ડ્યોનાર, સીર્ષ-વંદના અદિમે ગાને યોગ્ય ૧૦૧ ગીત. મૂ. ૫)

સમોશરણકી રચના.

મુક્ય-આઠ બાને.

શ્રી વાહુવલિ સ્વામી.

મહ ચિત્ર ૨૦૪૧૧ સમ્પ્રદાએ જાવને દેગકા નિરાકા છે. પ્રથમ હંદગિરિ પર્વતની પાકૃતિક રચના કી ગઈ છે. તમકે નીચે મિનમંદિર તથા બગલમે શ્રવણવેલગોલા સહરકી રચના છે. જી. નીચમે શ્રી. વહુવલિસ્વામી (ગોમ્પટ-સ્વામી) કા વડા ચિત્ર બનાયા ગયા છે. મૂ. ૫)

મેનેજર-દિ. જૈન પુસ્તકાક્ય-સુરત.

સ્વદેશી વ પવિત્ર

કાશ્મીરી કેશર.

મત્ર પટાકર ૧૫) તેલકા કર દિયા છે. શિકા-યતી કેશરકા ઉપયોગ મત કરિયે. ખોર યહી શુક સ્વદેશી કાશ્મીરી કેશર હી હમારે યહાંસે મંગાદયે. (જ્ઞાનધૂપ ૨૫) રતલકા અગરવલ્લી ૧) રતલકા. મેનેજર, દિગમ્બર જૈન પુસ્તકાક્ય-સુરત.

"જગવિજય" પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ, જાપરિયા તકલાસુરતમે મુદ્રિત કિલનદાલ કાપરિયાને મુદ્રિત કિયા હોર "દિગમ્બર જૈન" કોફિસ વન્દાવાદી સુરતસે ડન્દોને હી પ્રકટ કિયા.

ॐ

विज्ञानरत्न

सम्पादक—मूलचन्द्र किमनदास कापड़िया—मुरत ।

विशेषानुक्रमणिका,

क्र०	विषय.	पृष्ठ.
१	संपादकीय वक्तव्य—हमारा पर्युपणपूर्व	३७७
२	जैन समाचार संग्रह	३७२
३	हमारा बहानी और बख्त व्यवसाय	३७३
४	जैनधर्ममें क्या है (पं० मूलजारीलालजी)	३७८
५	दशलाक्षणी छल दशक (प्रेमसागरजी)	३८०
६	सुभाषित-रत्नसंदोह (मूलचन्द्र बरमल)	३८६
७	आध्यात्म (डॉ० निजमेन सुखच्यार)	३८८
८	समानकी शोचनीय दशा (विमलचन्द्र)	३९०
९	उपदेश दत्तक: आपणी विषया	३९१-९३
१०	निजानंद विनाया जावननी सफलता	३९५
११	धर्मनी आराधना	३९७
१२	साधनानी शुरुआत	३९८

क्षमावणीके कार्ड १।।) सैरुडा

क्षमावणीकी चिट्ठियां ॥) सैरुडा

मैनेजर—दि० जैन पुस्तकालय—मुरत ।

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २।) विशेषांक मूल्य ॥।)

अ० मोतीलालजी वर्णी—का सिवनीमें ता० १७ जुलाईको स्वर्गवास होगया है ।

कानपुर—में पं० स्वरूपचंद्रजी सरोजने अपने पिताके स्मरणार्थ नवीन चैत्यालय स्थापित करके उसमें बाहुबली स्वामीजी प्राचीन प्रतिमा स्थापित की है ।

पुत्र-जनमें दान—श्री० सेठ चंद्रभानजी सहायजी नि० ने बृहदावस्थामें पुत्ररत्न प्राधिक इषमें १९११)का दान जीवदया व विद्यादानकी संस्थाओंको किया है ।

बहवानी जीर्णोद्धार—का कार्य फिर चलू होगया है । मूर्ति भी ठीक कर दी गई है । मुनीम मुलाबचन्द्रजी फिर चंदेके लिये भ्रमण कर रहे हैं ।

पोहरी जागीर—(ग्वालियर) में अकलंक आश्रमकी स्थापना हुई है । निम्के द्वारा शिक्षा प्रचार, औषधि बितरण, ट्रैक्ट प्रचार व वहाँके तीर्थरक्षाका कार्य होता है । प्रमुलाक जैन बड़े उत्साहसे कार्य करते हैं ।

देवगढ़ जीर्णोद्धार—में पं० चंद्रबाईजीने १९०), रा० व० बिहड़ने २९०) दिये हैं । हम प्राचीन क्षेत्रके जीर्णोद्धारार्थ कुछ न कुछ दान अवश्य हम पर्युषण पर्वमें “ नायुगाम सिर्षा, ललितपुरके” पतेपर भेजना न भूलें ।

इन्दौरमें—नुस्ला विरोधक कानून होनेवाला है उसपर पं० यलाकाजी कामजीबाल आदि योगांधी विरोध कर रहे हैं व कहते हैं कि यह तो धार्मिक प्रथा है ! वगैरे पंडितजी व आदि के भोले भक्त ।

समवेदनापत्र पर आभार—हमारी वर्षपत्नी सी० सविताबाईके असमयमें स्वर्गवास होनेके समाचार जानकर अनेक स्नेही, संबन्धी व पाठक पाठिकाओंने हमें करीब १९०—१०० समवेदना पत्र भेजे हैं, उन सबका एक २ उत्तर न दे सकनेके कारण हम निवेदन द्वारा हम उन सब माई बहिनोंका सहृदयसे आभार मानते हैं । संवादक ।

पावापुरी केसमें हमारी सफलता ।

मिस्त्रोजेव पावापुरीके जलवेदिरमेंसे नवीन रख दी गई थीं । जैन मूर्ति हटवने आदिके लिये जि० जैनोंने जो बाबा पटनकी कोर्टमें श्वे० जैनोपर मांडा था व जो पांच माह तक लगातार चला था, उसका फेरफार तार हुआ मिला है । इससे मालूम होता है कि हम केसमें पाईली ठिकी हुई है । जो मूर्ति श्वे० जैनोंने जलवेदिरमें रख दी थीवह उनको हटाना पड़ेगी । रातमें जि० जैनोका हक रहा तथा शुरुमें वहाँ जो भंडार भरा प्रता था वह भी जि० का भावित हुआ । अर्थात् जलवेदिरका भंडार दोनोंका भागित हुआ । इन्तजाम श्वे० जैनोका रहेगा । रांठ मंदिरमें अपना एक परवानगीसे रहेगा और हरदक पार्टीको अपना १ स्वयं उठाना पड़ेगा । विशेष समाचार मिलनेपर पकट करोगे ।

त्रियोग—अमरावतीमें श्री० कन्हैयालालजी परदारका सवकपुरमें ता० १० अगस्तको स्वर्गवास होगया । जगदी बीमारीके समय ही आने १०००)का दान कर दिया था । आप परदार समाजके मुखिया व म्यु० कमिश्नर भी कई वर्ष रहे थे ।

द्विगम्बर जैन

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सन्त्योपदेशैस्सुगवेपणाभिः ।
संबोधयन्प्रमिदं प्रवर्त्तनाय, द्वैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम ॥

वर्ष २३वां

वीर सम्बत् २४५६, श्रावण, विक्रम सम्बत् १९८६.

अङ्क १०.

सम्पादकीय-वक्तव्य

गत अनेक वर्षोंकी भांति फिर भी इस वर्ष पर्युषण पर्व आगया है। हमारा पर्युषण पर्व। मानों हमें वह सत्य मार्ग पर आरूढ़ करनेके लिये बारबार हमारे सामने आ उपस्थित होता है। यह बतलाता है कि यदि हमारे अन्दर प्रमादने निवास किया हो, धर्मकी अवस्था कम होगई हो और आत्मकरमाणकी ओर यदि प्रवृत्ति न हो तो सचेत होनाओ। पर्युषण पर्व हमें "उत्तम क्षमाका" उपदेश करके अहिंसाके उच्च शिखरपर ले जाता है। कायरताका नाश कर वीरोचित भावना हमारे हृदयमें भरता है और अज्ञ एवं अविचारी प्राणियोंकी प्रवृत्तिपर कोप न करके उन्हें सन्मार्गपर लगानेका आदेश करता है।

जिनकी ऐसी वारणा है कि जैनियोंके क्षमा धर्मने देशमें कायरता फैलाई है, वे भारी भूलपर हैं। यह बात वर्तमानके अहिंसक सिद्धान्तसे स्पष्ट जाहिर हो चुकी है। भारतवर्षी आज घोर उपसर्गोंको सहन करके अपने आत्म-बलका परिचय दे रहे हैं। गाळी देनेवाले, मारने

ठोकने और नाना प्रकारके दमन करनेवालोंके सामने शान्ति धारणकर अपनी अहिंसक वृत्तिका परिचय देते हैं। यही तो जैनियोंका क्षमा धर्म सिखलाता है। क्या कोई भी विचारशील मनुष्य इस महानशीलताको कायरता कहनेका दुःसाहस कर सकता है? उत्तम क्षमाका धारण करनेवाला या पूर्ण अहिंसक व्यक्ति अपनी आत्मशक्ति द्वारा महान् क्रूर परिणामी एवं शस्त्रधारी प्राणियोंको अपने दशमें कर सकता है।

हिंदी विद्वानका कथन है कि—

क्षमाशक्तं करं तस्य दुर्जनः किं क्रियति ।

अदण्डे पतितो बलिः स्वमेवोपशाम्यति ॥

अर्थात्—जिसके हाथमें क्षमारूपी दण्डवार है उसका दुर्जन पुरुष क्या कर सकता है? जिस मृमिमें घास आदि जलनेवाला पदार्थ नहीं हो वहांपर अग्नि गिरकर स्वयं शान्त हो जाती है।

तार्थ्य यह है कि उत्तम क्षमाके अमोघ शस्त्रसे संसारपर विजय प्राप्त की जा सकती है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि क्रोधीके सामने दूपरे क्रोधीका क्रोध द्विगुणित हो जाता है, जब कि क्षमावानके सामने क्रोधा उपशान्त होनाना स्वाभाविक है। इसलिये उत्तम क्षमाका धारण करना प्रत्येक जैनका कर्तव्य है।

पर्युषण पर्वसे हमें दूसरी शिक्षा “ उत्तम मार्दव ” प्राप्त करनेकी मिलती है । जिसका सामान्य अर्थ मानका न करना है । जहां मान या अहम्न्यताका टोंग नहीं है वही सच्चा धर्म है । लेकिन जहां खोटे बड़प्पनका रूपांक रहता है, थोथी महत्ताका अभिमान रहता है वहीं अकार्षिकताका निदान होता है । जैनधर्म तो प्रारंभसे ही वैश्यवृद्धका विरोधी है । बड़ मनुष्यकी तो बात क्या, प्राणी मात्रसे प्रेमपूर्ण व्यवहार करनेका उपदेश करता है । दुनियाका कोई भी मनुष्य इस शासनमें प्रवेश कर सकता है ।

हमारा धर्म धन बल विद्या और ज्ञानिमद आदिका पूर्ण विपक्षी है । जिसके पास जितना मद् या अभिमान है वह धर्मसे उतना ही दूर है । यहां न तो व्यक्तिगत अभिमानको स्थान है और न जातिगत मद्को अवकाश है ।

श्री रविषेणार्चय कहते हैं कि—

न जातिर्गहिता काविका गुणः कल्याणकारण ।
वतस्यमपि चाण्डाले त देवः ब्राह्मणं विदुः ॥ अश्वमेधे ॥

अर्थात्—कोई भी जाति निच नहीं है, किन्तु उच्चता तो गुणोंपर निर्भर है । काण कि ब्रह्मचारी चाण्डालको भी श्री जिनेंद्र भगवानने ब्राह्मणके समान वतकाया है ।

जब विचार करिये कि यहांपर निरभिमानी होनेका कैसा दिव्य उपदेश दिया गया है । हमारी समाज और धर्मके नाशका कारण एक खोटा अभिमान ही है । कमसेकम जैनधर्मियोंमें तो समान व्यवहार होना चाहिये था । मगर सखेद लिखना पड़ता है कि जैन जातिमें भी वैवाहिक संस्कार आदिमें छोटे बड़ेका रूपांक

है ! इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि अभिमान एवं पक्षपातको छोड़कर अपनी समाजमें अन्तर्जातीय विवाहकी प्रवृत्ति होजाती तो कमसे कम सामाजिक प्रेम बढ़कर कुछ अंशमें तो निरभिमानता आनी ।

और आपको मार्दवधर्मसे प्रेम है तो ज्ञातीयमद् तथा अन्य विघातक अभिमानोंका परित्याग करने पड़े जैन नरें, वास्तविक धर्मात्मा बने । इन्होंने कल्याण होगा । अन्यथा मार्दव धर्मकी भंगना करनेपर तो आज अनेक वर्ष व्यतीत हो चुके हैं । विवेकी बड़ी है जो आचार्योंके उपदेशको जमलमें लाता है ।

* * *

पर्युषणपर्वसे तीसरा उपदेश “ आर्जव ” धर्मका मिलता है । जिसका अर्थ है माया अथवा झूठ कपटका न होना तथा वाह्य और अन्तर्प्रवृत्तियोंका सरल रहना । जहां सरलता है वहीं धर्म है जबकि कपट घोर पाप है । संस्कृतशब्दा सदा सुखी रहता है, जब कि कुटिल विचारकाक निरंतर आकुलित रहता है । कपटी पुरुष निर्दयी शत्रुसे भी कहीं अधिक हानिकारक होता है । कारण कि शत्रुसे तो मनुष्य सदा मावसान रह सकता है, मगर मित्रवत् आचरण करनेवाले व्यक्तिके कपटकारमें मनुष्य फंफकर सर्वेश लुटा बैठता है । किसी कविने इसी भावको लेकर कहा है कि—

एक दुश्मन यह है जिसके हाथमें तलवार है ।
एककी भीटी हंसी है जो लुगीकी धार है ॥
खोचिये दो दुश्मनोंमें किसमें डरना चाहिये ?
उस हंसीके धारसे परहेज करना चाहिये ॥

जब आप समझ सकते हैं कि कपटी पुरुषको कितना भयानक बतकाया गया है। जैन सिद्धान्तानुसार पुण्यपापकी व्यवस्था सरल और कपटी परिणामोंपर ही की गई है। इसलिये प्रत्येक आत्महितेषीका कर्तव्य है कि वह सरलतासे काम ले। सर्वदा निष्कपट होकर वर्तन करे। कपटी पुरुष अपने छद्मसे कुछ व्यक्तियोंको एक बार ही फंसाकर स्वार्थसिद्धि कर सकता है, जब कि सरल परिणामी जगतको दशोमृत करके स्वयंको सुखी बना सकता है। अतः प्रति मनुष्य अपने परिणामोंमें सरलता रखना चाहिये।

आचार्योंने चौथा " सत्य " धर्मका उपदेश दिया है। संसारके या पारलौकिक समान उत्तम कार्य सत्यपर ही निर्भर हैं। सत्यकी व्यवस्था विशाल है। मनुष्य यदि स्वार्थका परिचय न करदे तो सत्यका पालन स्वभावतः होने लगे। सत्यके मागने संसारको नष्ट मस्तक होना पड़ता है। जो बात जैसी ही उसे दिना किसी समय या संकीर्णके वैसी ही कह देना यही सत्यकी सामान्य व्याख्या है। जहां सत्य है वहीं निर्भीकता है, और निर्भीकता ही निराकुञ्जताकी प्रधान कारण है। सत्य और अमत्यसे आभास उठानेके अनेक प्रमाण पाये जाते हैं। हम बाँधते हैं सुनते हैं और नित्य अपनी आँखोंसे देखते हैं।

यदि सब पुछा जावे तो सत्यके आधारपर ही सारे संसारका व्यवहार टिका हुआ है। सत्यका जैन धर्ममें बड़ी स्थान है जो कि अहिंसाका। बिना सत्यके अहिंसाका

पालन नहीं होसकता। हमें अपने व्यावहारिक कार्योंमें, धार्मिक विचारोंमें और शास्त्रीय भाषाओंमें निर्भीकतासे प्रवृत्ति करना चाहिये। बल, सत्यका स्वतः पालन होता रहेगा। जहाँ स्वार्थ या कायरता आई कि सत्यका विनाश हुआ। इसलिये निष्काक्ष होकर सदा सत्यका सहारा लेना चाहिये; यही जैनधर्मका उपदेश है और यही मनुष्यकी मनुष्यताका परिचय है।

* * *

पाँचवां " शौच धर्म " बतकाया गया है। लोभका परित्याग करना ही शौच है। दाका कि बाह्य शुद्धिको भी शौच कहा गया है, मगर ऊपरसे साफ सुथरा होकर भी लोभसे परिपूर्ण मंदा वृत्ति रखनेवाला पुरुष पतित है, अशुचि है, और धर्मसे कोसों दूर है। जैनधर्ममें वास्तविक पवित्रताके सिवाय न तो दोगको ही स्थान है और न ऊपरी बनावट ही चर सकता है। यहां तो बाह्य पवित्रताके साथ ही साथ अन्तर्गत शुद्धिकी सुखर आवश्यकता है। " लोभ पापका बार बखाना " इन काव्यको ध्यानमें रखकर विचारना चाहिये कि लोभ कितना भयानक होता है। लोभी पुरुषकी आँखोंमें वृद्धिगत होती जाती है। इसी लिये यह पराधीन होकर पापमें रत होजाता है। कहा गया है कि—

आशाया ये दासस्ते दासा भवन्ति सर्वलोकस्य ।
आशा येप दासी सः स्वामी सर्वलोकस्य ॥

अर्थात्—जो आशाके दास होते हैं वे सर्व जगतके दास होजाते हैं। किन्तु जो आँसुकी अपनी दासी बना लेते हैं वे समस्त संसारके

स्वामी होनाते हैं । जब कि आशापर विजय प्राप्त करनेकी इतनी महत्ता बतलाई गई है तब क्यों न लोभवृत्तिको घटाया जावे ? इसमें कोई संदेह नहीं है कि आशा और लोभको टुकराकर मनुष्य विना सुकुटका सम्राट् होसकता है । लोभी पुरुषकी बातरमें दीनता टपकती है, वह अपने संपत्तिका स्वयं भोग नहीं कर पाता, किन्तु वह दूसरेके ही काममें आती है । लोभी तो मात्र संचय कर करके पापको इकट्ठा किया करता है । इसलिये लोभवृत्तिका परित्याग कर संतोषपूर्वक अपना जीवन बिताना चाहिये, यही शीघ्र धर्म है ।

पर्युषणपूर्वमें छट्ठा दिन "संयम" का माना गया है । इंद्रिय और मनपर कबू रखते हुए प्रमाद रहित प्रवृत्तिका करना संयम है । उसको इन्द्रिय संयम और प्राणि संयम दो प्रकारसे कहा गया है । बाह्य इन्द्रियोंको विषय सेवनसे रोक लेना तथा परिणामोंसे भी विषयाकांक्षा पर विजय प्राप्त करना इंद्रिय संयम है । और समस्त प्राणियोंपर दया रखकर ऐसी प्रवृत्ति करना ताकि किसी जीवका न विघात हो और न उसे अपने निमित्तसे दुःख ही होने पावे, यही प्राणी संयम है । इसीको स्पष्ट करने हुये कहा गया है कि—

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रो मन वश करो ।
सयम रतन सम्हाल विषय चोर बहु फिरत है ॥

मनुष्य विषय वासनाओं और मौनशीलकी चक्रमकमें अंधा होकर अपने मार्गको मूक जाता है । यहाँतक कि मनुष्यत्वको खो बैठता है ।

संयमी पुरुषकी पतिष्ठा घन बल विद्या और रूप-सम्पन्न पुरुषोंसे भी कहीं अधिक होती है ।

खेद है कि वर्तमान जमानेमें संयमकी ओर बहुत कम लक्ष्य दिया जाता है ! ज्यों ज्यों लोग संयमसे दूर होने जाते हैं त्यों त्यों विषय-लोलुपता और आत्मपतनके पास आते जाते हैं । हमारा धर्म हमें संयमसे रहनेका जिस खुशीके साथ उपदेश करता है, संभव है उसने उच्च दर्जेके कहीं भी कथन नहीं मिछेगा । मगर दुःख है कि जैन समाजके बहुमंरूपक लोग संयमके बहुत पीछे हैं !

भारतमें ऐसे जबरदस्त आंदोलनके चलते हुये भी जब हमारी समाजसे विदेशी एवं अशुद्ध रेशमी वस्त्र और मस्त्रमकसे मोह नहीं छूटा है तब दूसरे संयमके विषयमें तो क्या कहा जाय ? अगर आप सच्चे जैन हैं और संयम धर्मके उपासक हैं तब तो आपके शरीरपर विदेशी वस्त्रोंका टुकड़ा भी न रहना चाहिये । पवित्र जिनालयोंमें रेशमी और मग्वमकी वस्त्र आज ही निकालकर विशुद्ध खादी होजाना चाहिये । यही तो बाह्य संयममें पूरा निमित्त कारण है । क्या हम आशा करें कि संयम धर्मको माननेवाली जैन समाज इस पर अमक करेगी ? याद रहे कि बाह्य संयम अन्तरंग संयमके लिये जबरदस्त कारण है । तब ही आत्मकरमाण होसकेगा ।

* * *

इसके पश्चात् सातवें "नप धर्म" पर विचार करना चाहिये । "इच्छानिरोधस्तपः" अर्थात् इच्छाओंको रोकना तप है । यह भी आभ्यंतर

और बाह्य तपके भेदसे दो प्रकारका है । तथा मुनि और श्रावकके भेदसे भी दो तरहका बत-काया गया है । मुनिराश्रीका तप तो समस्त आरम्भ परिग्रहका परित्याग कर निरंतर आत्म-स्वरूपमें मग्न रहकर अतिदुर्बल हुआ करता है । परन्तु श्रावकका तप सहज-साध्य होता है ।

एकासन, उपवास आदि व्रत करना, सामायिक करना इंद्रियोंको खोटी प्रवृत्तियोंसे रोक लेना यह भी तप ही है । वास्तवमें तो मनको रोक रखना ही तपमें प्रबल कारण है । मनकी माफिक न चक्कर आत्म और विवेकके अनु-सार चरनेवाला ही सच्चा तपस्वी है । यथा—

मनके मते न चालिये, मनका मता अनेक ।
जो मनपर असवार है ते प्रभु कोइ एक ॥

बहापर मनको वशमें करनेका महत्त्व बतलाया गया है । इसारा कर्तव्य है कि अपनी आकांक्षाओंको कम करके मन और इंद्रियोंके विषयको संयत बना लेवें । और यथासाध्य आत्मसाधन करें, यही तप है ।

जाठवां व्रत "त्याग" कहा गया है । इसका सामान्य अर्थ विषयकषायोंको छोड़ना और दान देना किया जाता है । मनुष्यकी महत्ता त्यागमें ही है । बड़े-सम्राट और चक्रवर्ती तबतक महान नहीं कहलाये जबतक उनमें त्याग नहीं किया था । दूरकी बात जाने दीजिये, महात्मा गांधीजी जबतक बेरिष्टरी करते रहे, और स्वार्थके लिये ही धंषा करते रहते रहे उन्हें तबतक कोई नहीं जानता था । जबसे उनमें त्यागकी ओर अपना पग रखा और ज्योत्स्यों जाने बढ़े

त्योत्स्यों लोगोंकी श्रद्धा उनके प्रति बढ़ती गई । और आज त्यागके माहात्म्यसे ही वे भारतमान्य ही नहीं, किन्तु प्रगत उन्हें श्रद्धाकी दृष्टिसे देखता है । त्यागकी अद्भुत सामर्थ्य है । मनुष्य जैसे-२ त्याग करता है वैसे-१ ही वह उच्च होता जाता है । तराजूके जिस पकड़े परसे ज्योत्स्य द्रव्य निकलता जाता है वही पकड़ा त्योत्स्य उंचा होता चला जाता है ।

मनुष्य यदि अपनी संपत्तिका सजुपयोग करना चाहे और अपनी कमाईको सफल बनाना चाहे तो इसका एक सरल उपाय त्याग ही है । लेकिन त्याग परिस्थितिको देखकर पात्रके अनु-सार करना चाहिये । आज बड़ी भारी जाव-शक्त ज्ञान दानकी है । उसके निमित्त जितना भी त्याग होसके करना चाहिये । जो पाठशाळा, अनाथालय और विद्यालय तथा श्राविकाश्रम अपनी समाजमें चल रहे हैं, वे पायः समाजके दानी श्रीमानोंके सहारेपर ही चलते हैं । उनके निमित्त यथासाध्य त्याग करना चाहिये ।

दूसरा काम—जैनधर्मके प्रचारका है । उसके लिये उत्साही दानियोंका कर्तव्य है कि वे अपनी कठिन कमाईसे प्राप्त किये हुये द्रव्यसे जैन ग्रन्थोंको या नवीन ट्रेक्टोंको छपाकर अपनी ओरसे मुफ्त वितरण करावें । मात्र जैन समा-जमें ही नहीं, किन्तु मनुष्य मात्रके हाथोंमें जैन ग्रंथ पहुंचकर उनके जीवनको सुधार दें, ऐसा प्रयत्न करना चाहिये । इसके लिये बाखों और करोड़ोंकी संख्यामें ट्रेक्ट वितरण करनेकी आवश्यकता है । इसके साथ ही साथ चारों दानमें यथोचित त्याग करना चाहिये ।

नवमां वर्ष " आर्किचन्य " है । समस्त परिग्रहका परित्याग करके मोहपाशसे मुक्त होजाना यही उत्तम आर्किचन्य है । मगर हमें परिग्रहका प्रमाण करके आकांक्षाओंको सीमित करना चाहिये ।

* * *

इसके पश्चात् दशमा वर्ष " ब्रह्मचर्य " बतलाया गया है । इसकी महिमा अपरंपार है । फिर भी वह स्त्री मात्रका परित्याग या स्वदार संतोषके भेदसे दो प्रकारका बड़ा गया है । प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है कि वह कमसे कम १८ वर्ष (लड़की १४ वर्ष) तक अस्पृष्ट ब्रह्मचारी रहे । पश्चात् विवाह किया जावे । गृहस्थावस्थामें रहता हुआ वह अपनी स्त्रीको छोड़कर बाकीके साथ मां बहिन और बेटोंका साथ रखे । स्त्रियां भी पिता भाई और पुत्रकी कल्पना करके यथोचित् वर्तव करें । यह भारतवर्ष इस पवित्र धर्मके लिये प्रसिद्ध है । यदि मनुष्य पुछा जावे तो आत्मशान्ति, ज्ञानवृद्धि और सुखमय जीवनके लिये प्रधान कारण ब्रह्मचर्य ही है ।

इस प्रकार दश वर्षोंका उपदेश हमारे जैन-चार्योंने दिया है । यह पर्युषण पर्व हमें उनका पाठन करानेके लिये पुनः १ याद दिलाता है । आत्मशुद्धिका यह परम अवसर है । यदि ऐसे समय भी न चेत सके तो पर्युषणपर्वका मनाना ही ठगर्थ समझना चाहिये ।

तत्त्वभावना ।

सामाजिक व ध्यानका सर्वोत्तम शास्त्र नवीन व सचित्र-तेवार है । मूख्य १(III)

मैनेजर, वि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।

जैनसमाचारवलि

सत्याग्रहसंग्राममें जैनियोंका भाग ।

गोंदिया—में जंगल सत्याग्रहमें केशरीमठ दि० जैनको ४ मास व लक्ष्मीचंद परवार दि० जैनको ४ मासकी सख्त सजा हुई है तथा १४ जैनोंने अपनी विदेशी कपड़ोंकी टुकड़ोंमें बंद कर दीं । खंडवामें-शमचंद श्रे० जैनको ९ मासकी सजा हुई है । उटारसीमें कातूरीबाई जैन व दुलीचंद जैनके नेत्रवारे प्रभातफेरी निकरती हैं । मंदिरमें विदेशी वस्त्र पहनकर कोई नहीं आते । जवलपुर—में विदेशी वस्त्र बहिष्कारका आंदोलन जैनोंने जोरपर है परन्तु सि० गरीब-दासजी म० इममें रोड़ा बटकाने हैं । यह ठीक नहीं है । नजीबाबादमें विदेशी वस्त्र पहनपर मंदिर जाना बन्द हुआ । आगरा—में बाबू कपूरचंद जैनका महावीर प्रेम जमानन मांगी जानेपर बंद कर दिया गया है । रीठीमें ब्र० प्रेमसागरजी वस्त्रों काठनेका व स्वादीका खूब प्रचार करवा रहे हैं । अंकलेश्वर—में जेल निवामी देवभक्त सेठ छोटानाथ गांधीकी मी० पत्नी माणिकगौरीने जिला स्कूल बोर्डकी मेम्बरोंसे स्वीका दे दिया है । देवबन्द—में बा० ज्योतिषसादनीका जैनपदीप जिस प्रेममें छाता था उसने तथा अन्य प्रेमोंने छापना मना कर दिया है । इससे जैन पदीप अभी बन्द पड़ा है । हाथरस—में बरमदासजी जैन जेल गये । बेतुल—में दीपचंदनी जैन जमीनदारको जंगल

कानून तोड़नेके कारण १ वर्षकी सख्त सजा हुई। आगरा—में जैन सेवा मंडलने सत्याग्रह करके जैन मंदिरोंमें विदेशी वस्त्र पहनकर जाना बंद करवा दिया। खेकड़ा—नेमीचंदजी जैन जेल गये। सभी माई बहिन मंदिरमें स्वदेशी वस्त्र ही पहिनकर आते हैं। मूरत—के दि० जैन मंदिरोंमें स्वदेशी वस्त्र पहिनकर ही लोग आते हैं। मैनपुरी—में सेव राम जैन व वसंतलाल जैन जेल गये। कटनी—में ४० जैन, जेल जाचुके हैं। सि० पन्नालाल जैन गंधेकीय खूब काम कर रहे हैं। अमरावती—में सेठ मंगलचंद परिवारको वरतनलाल जैन अथवा पकड़े १-१ वर्ष सख्त कैदकी सजा हुई है। रोहतक—में रामकिशोरदाम जैन व अमर सुखदेवसिंह जैन १-१ वर्ष जेल गये हैं। मैनपुरी—के मंदिरोंमें देशी वस्त्र पहनकर ही जाना निश्चित हुआ है। गुजरानवाला—में तिलोकचन्द जैनको दो वर्षकी सख्त सजा हुई। रोहतक—में रामशरण जैनको ३ वर्षकी सजा हुई थी वह अभीक हीनेपर ३ मासको हो गई। अमरावती—में वरतनलाल काले १ वर्ष जेल गये। दाहोद में अश्वरीशंकर जैन दाहोद पिकेटिंग करने पकड़े गये। रावलपींडी—में मध्य पिकेटिंगके कारण मुशीलाल जैन ३ मास जेल गये। लखनऊ—में स्वदेशी वस्त्र पहनकर मंदिर जाना निश्चित हो चुका है। मूरत—परैया जैनीके भतीजे साकेरचंद जैन जो सिर्फ १९ वर्षका है उसपर पुलिसने दो कैस चला रखे हैं। मैनपुरी—में संतलाल जैन जेल गये हैं।

चेरिस्टर चम्पतरायजी साहब—कंडन (बिला-

यत) में सकुशल हैं। आपका पत्र है कि हमें शीघ्र ही यहांसे लौटने वाले हैं अर्थात् हम ठीक ता० १४ नवम्बरको बम्बई आ पहुंचेंगे।

वांसवाडा—में ब्र० चुन्नीलालजी द्वारा खूब धर्मलाभ हो रहा है। आपने एक माह तक जेलमें सिर्फ चावल ही लेनेका नियम दिया है।

मूरतके—इस्तेलावर जनोंमें पर्युषणपर्वमें आगे व पीछे जीमन न करनेका एक पक्ष प्रयत्न कर रहा है। उसमें दूसरे पक्ष (रामविजय पक्ष) ने रोड़ा अटकाया और वे जीमन कर रहे हैं। बड़े दुःखकी बात है कि ऐसे एक जुलूममें उन्होंने पत्थर फेंके पुलिस बुराई व चांचल किया।

“वीर”—का सचित्र पर्युषण अंक दशकाक्षणी पर्वमें प्रकट होगा।

सि० पन्नालालजी परिवार पकड़े गये। अमरावतीके सुप्रसिद्ध नेता व परिवार समाजके मुखिया, प्रा० धारामभाके सभासद तथा भारत० दि० जैन परिषदके सभापति सि० पन्नालालजी परिवारके घर पांच ता० दिन हुए आकर, पुलिस तलवार बंदूकका काइमन्त जप्त करके तलवार बंदूकें ले गई। फिर गत ता० १९को फिर पुलिस सब इन्स्पेक्टर आपके पास आया व कहा कि आपको अभी पुलिस सुपि० आदि बुलाते हैं, बलिये। सेठजीने कहा कि ठहरिये, हम भोजन करके आते हैं। तो उसने कहा कि नहीं, पहिले चलिये, जरासा काम है। इससे सेठजी तुरंत ही साथ हो लिये। कोतवालीमें पुलिस सुपि०ने आपसे कहा कि आप अपने बगीचेमेंसे क्रोमेटके स्वयं सेवकीकी छावनी उठा दीजिये। सेठजीने कहा कि हमारी धर्म-

झाका सबके लिये है । हम किसीको ठहरनेकी मनाई नहीं कर सकते हैं, चाहे तो आप उन्हें वहां न ठहरने दें । इसपर पुलिस इफ्तदम आप पर १४७ दफा कगकर गिरफ्तार करके आपको ले गई, जिससे सारे जमरावतीमें सनसनी फैल रही है ।

तीर्थरक्षा फंड—हमारी भारत० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीका चालू खर्च निषानेके लिये प्रतिवर्ष प्रति दि० जैन गृहसे १) तीर्थरक्षा फंडके नामसे लिया जाता है, उसमें गत वर्ष १९६०॥=॥ कमेटीको प्राप्त हुए थे । इस साठ भी तीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्री सेठ जुलीकाक हेमचंद जरीबाका हीराबाग, बंबई समा दि० जैन भाइयोंसे निवेदन करते हैं कि आगामी पर्युषण पर्वमें भी मंदिरोंमें इकट्ठे होते समय सब भाई अपने गृह पीछे एक एक रु० तीर्थरक्षा फण्डका इश्टा करके बंबई भेज दें । एक वर्षके बाद घर पीछे एक एक रु० तीर्थरक्षाके लिये देना कोई बड़ी बात नहीं है ।

ही० गु० जैन बोर्डिंग बम्बई—से हजारों रुपये प्रति वर्ष सैकड़ों विद्यार्थियोंको स्कूलर-क्षीप दी जाती है । तथा विद्यार्थीके साधन सम्पन्न होनेपर वापिस ली जाती है जो द्रव्य दूसरे विद्यार्थियोंके सहायताके काममें जाता है । जमी ही (सोलापुर) माटाके बकीक शिवकाक हीराचन्द गुजरने अपनी स्कूलरक्षीपके ४००) वापिस भेज दिये हैं । इस प्रकार अन्य विद्यार्थी जो बड़ी१ नोफरी या पेक्षा कर रहे हैं वे भी अपनी स्कूलरक्षीपके रुपये वापिस करें । ऐसी

इसके मंत्री सेठ ठाकोरदास भगवानदासजीकी ओरसे सूचना की जाती है ।

चौरासी मथुरा—में आचार्य श्री छातिसागरजी सिंहनिष्क्रीडित व्रत, मुनि नेमिसागरजी वसंत रुद्रोदर व्रत व मुनि नमिसागरजी कपु निष्क्रीडित व्रतके कई उपवास कर रहे हैं । तथा क्षुल्लक ज्ञानसागरजी भी आंतरेसे पंचकल्याणक व्रतके १२ उपवास कर रहे हैं । वहां दर्शनार्थ व आहारार्थ अनेक जैन भाई आते रहते हैं । चौरासीमें करीब २५ चौके जगे रहते हैं ।

न्यायतीर्थ हुए—अबके साठ त्रिनरान इन्दौर बंशीधर बनारस, काकबहादुर व बर्द्धमान पार्श्वनाथ मोरेना विद्यालयसे “न्यायतीर्थ” की परीक्षामें पास हुए हैं । बधाई ।

सौ० चिन्नम्मादेवी—कलकत्ताके “काठक मध्यमा” में पास हुए हैं । बधाई ।

वेष्टन आदि भेट देंगे—दि० जैन मंदिरोंमें भेट देनेके लिये हमने स्वादीके वेष्टन व पचापरे तैयार कराये हैं । अतः वहां चाहिये हों हमसे सुफ्त मगा लें । चौ० वसंतकाक जैन फर्म—कमलापति पुत्तूकाक जैन हटावा ।

अयोध्याजी जीर्णोद्धार फण्ड—में जमी ३००)की सहायता मिली है । वहां जमितनाथ टोंकके जीर्णोद्धारका कार्य प्रारम्भ हुआ है । विशेष सहायताकी आवश्यकता है । दक्षकाक्षणी पर्वमें दान करते समय इस तीर्थको भी न मूठें ।

इन्दौर छावनी—में दि० जैन ज्ञान प्र० समा इसी वाचनालयकी स्थापना आ० ब० ८ को होगई है ।

हमारा जहाजी और वस्त्र व्यवसाय ।

[७०-१० परमेष्ठीवास जैन, ग्यायतीर्थ-सूरत]

आजसे कुछ सताब्दियोंके पहिलेका यदि सच्चा इतिहास मिले तो मालूम होगा कि हमारे भारतवर्षके तमाम व्यवसाय इतने बढ़ेचढ़े थे कि संसारमें कोई भी देश उसकी प्रतिद्वंदितामें उत्तीर्ण नहीं होसकता था । मछे ही हमारे देशकी वस्तुमान परिस्थिति इतनी दीनहीन होगई हो कि छोटीसे छोटी चीजोंके लिये हमें विदेशका मुंह ठाकना पड़ता है, परन्तु एक दिन वह भी था कि भारतवर्षमें आश्चर्यचकित कर देनेवाली उत्तमोत्तम वस्तुयें तैयार की जाती थी । यहांपर पहिले जहाज या नौका व्यवसायके विषयमें कुछ विवेचन ग्रन्थान्तरोंके आधार पर किया जाता है ।

हमारे प्राचीन जैन शास्त्रोंमें तो अनेक स्थलों पर जहाजोंका वर्णन आता ही है, इसके साथ ही ऋग्वेदमें, महावंशोनामक बौद्ध इतिहासग्रंथमें तथा कालिदासके मृगुवंशमें भी नौका और जहाजोंका वर्णन है । एक इतिहासज्ञ लिखते हैं कि बंगालमें जहाज बनानेकी विद्याने अब अपूर्व उत्कृति की थी तब बंबईके बने हुये जहाज भी बिल्गावही जहाजोंकी अपेक्षा कई गुने अधिक अच्छे समझे जाते थे । महाराष्ट्रमें सबसे पहिले महाराजा शिवाजीने जहाज बनानेकी कारीगरोंको उत्साहित कर उत्पन्न किया था । मुगल लोगोंके पबन्ससे भी हम देशकी जहाजी विद्या बहुत

बढ़ गई थी । विजयदुर्ग, कुलीवा, सिन्धुवा, रतनागिरि, अजानवेल आदि बंदरोंमें महाराष्ट्रके जंगी जहाज बनानेके 'हाउ' चलाने थे ।

जबतक हमारे देशमें यह नौका या जहाज व्यवसाय रहा तबतक भारतवर्ष पूर्ण सुखी था । हमारे यहांके जहाज ऐसे बेसे मामूली जहाज नहीं बनते थे किन्तु बड़े जंगी, मजबूत और किराएतसे बनते थे । महाराष्ट्रके बलसेनापति आंग्रेजी देखरेखमें बने हुये एक जहाजमें ११९०० मन माक भरा जाता था । और इसमें १६से लेकर ७४ तक बड़ी तोपें सजाई जाती थीं । इसी प्रकार आनंदराव धुलये सेनापतिके हाथमें ९० जहाज थे । उनमें हमेशा ३०० तोपें रहा करती थीं । और प्रत्येक जहाजमें तीनसौ चारसौ वीर बैठकर युद्ध किया करते थे । उस समय अंगरेज और पोर्तगालियोंके जहाज बहुत निकृष्ट समझे जाते थे ।

भारतीय जहाजोंकी मजबूतीको अब आप देखेंगे तब मालूम होगा कि बिलासती जहाज १२ वर्ष बाद बेकाम समझे जाते थे परन्तु बम्बईके सागौनकी लकड़ीके बने हुये जहाज ९० वर्ष तक ज्योंके त्यों रहते थे । यूरोपके बने हुये जहाज ६ बार आगते इंग्लैण्ड आने जानेमें बेकार होजाते थे किन्तु देशी जहाज ८ बार आने जानेपर भी ज्योंके त्यों बने रहते थे । और फिर वे इंग्लैण्डकी जंगी बलसेना द्वारा खरीद लिये जाते थे । देशी जहाज इतने मजबूत होनेपर भी कम खर्चमें बनते थे । बिलासतमें यदि एक हजार रुपया खर्चें तो हींदु-

स्मानमें ७१०) में ही उससे कईगुना अच्छा जहाज बन जाता था ।

ईष्टइंडिया कंपनी अपने रोजगारके लिये इस देशमें व्यापारी जहाज तैयार कराती थी । सन् १७७० ईस्वीमें बंगालमें इसी कारणसे यह कारीगरी बहुत बढ़ गई थी । जब यहां बड़े २ जंगी जहाज बनने लगे तब कन्दन और क्लिवरपुरके जहाज बनाने वालोंकी छाती जलने लगी और सन् १८१२ ईस्वीमें एक अंगरेज डेप्युटी सरकारसे प्रश्न किये कि—“ क्या यह दुःखकी बात नहीं है कि ईष्टइंडिया कंपनी जहाज बनानेके काममें हिन्दुस्थानी कारीगरोंको नियुक्त कर इंग्लैण्डकी मजानक डानि और यथासं अनिष्ट साधन कर रही है ? यदि वह इंग्लैण्डसे हिन्दुस्थानमें पंजी लेनाकर इसतरह स्वचं करेगी तो वहां जहाजकी कारीगरी बढ़ जायगी, इससे अंगरेजोंकी मजानक अवनती होगी !” फल यह हुआ कि यहांसे काखों मन सागीन विकायत जाने लगा और वहीं जहाज बनने लगे । तथा वहांकी जहाजी विद्या नष्ट होने लगी ।

इसप्रकार मात्र जहाज बनानेकी ही विद्या भारतवर्षसे विद्या नहीं हुई किन्तु छोटी २ नावें बनानेकी कारीगरी भी लुप्त होगई । पुरानी रिपोर्टोंसे पता चला है कि हिन्दुस्थानमें इस प्रकार जहाज थे—

सन्	जहाजोंकी संख्या
१८१७	३४२८६
१८९९	२३०२
१९००	१६७६
१९०१	१०४९

इसप्रकार जहाजी विद्या और उनकी संख्या घटनेसे काखों आदिमियोंकी रोजी मारी गई । एक नहीं बनेकों व्यवसाय इसी प्रकार हमारे यहांसे मिट गये और बेकारी फैल गई ।

वस्त्र व्यवसाय ।

जिस प्रकार हमारा जहाजी व्यवसाय मिटा और भारतवर्षमें काखों आदिमी बेकार होगये, उसी प्रकार इस देशका वस्त्रव्यवसाय भी नष्ट होजानेसे हिन्दुस्थान और भी भिलासी बन गया । बंगालकी वस्त्र कारीगरी सन् १७२९ ई०से ईष्टइंडिया कंपनीके कारण गिरने लगी । फिर भी बंगालके कारीगर जो कपड़े बनाकर विकायत भेजते थे वे विकायती मालकी अपेक्षा १०—६० रुपया कम मूल्यमें विक्रमपर भी काफी काम प्राप्त करते थे । पान्तु धीरे २ विकायतमें जानेवाले हिन्दुस्थानी कपड़ोंपर सेकड़े पीछे ७०) से ८०) तक महसूक लगाना गया और हिन्दुस्थानमें विकायती कपड़ा बिना महसूक दिखे ही फैलने लगा । इस प्रकार हमारा वस्त्र व्यवसाय क्षयः क्षयः नष्ट होने लगा ।

मऊवार पान्तसे क्यालिको नामक छीड़का कपड़ा विकायतमें बहुत आता था । मगर सन् १७००में विकायती जुवाहोंके दरखास्त करनेपर क्यालियामेण्टने कानून बनाया कि हिन्दुस्थानकी क्यालिको बिना रोकटोक विकायतमें न आने पावे । उसके प्रतिगम पीछे डेढ़ आना टैक्स जारी किया गया । इतना ही नहीं, किन्तु सन् १७२० में यह कानून हुआ कि “ जो विकायती लोग हिन्दुस्थानी क्यालिको बेचेंगे उनपर २००) और जो खरीदेंगे उनपर ५०)

जुर्माना होगा । * " इस प्रकार हिन्दुस्थानका कपड़ा विकायतमें जाना तो बंद हो ही गया, मगर एक और उल्टा कुफल यह हुआ कि सन् १७९४ ईस्वीमें भारतमें जब १५६ पीण्ड कपड़ा आया था तो १८०९ में १८४४०० पीण्डसे भी अधिक विकायती कपड़ा यहां धुन गया और धीरे धीरे ६५ करोड़ रुपया बख्त आने लग गया ! इस प्रकार भारतीय बख्त व्यवसाय नष्ट हुआ और करोड़ों रुपयाका विदेशी कपड़ा आने लगा ।

भारतवर्षका बख्त इतना उत्तम बनता था कि सारा जालिम उसका उपयोग करता था । सन् १९०१ में अमेरिकामें १३६३१ गांठे, सन् १८००में डेनमार्कमें १४९० गांठे, सन् १७९९ ई०में पुर्तगालमें ९७१४ गांठे, तथा सन् १८२०में अरब और ईरानकी खाड़ीके तटवाले देशोंमें ७००० गांठे कपड़ेकी यहासे गई थी । मुहम्मद रजाखानके समय बंगाली जुन्नोहे ६ करोड़ बंगालियोंको बख्त पुरा करके १५ करोड़ रुपयाके कपड़े विदेशोंमें भेजते थे । मगर इतने थोड़े समयमें ही आज हमारे देशकी कैसी दशा होगई है ? इधर तो हमारे तमाम व्यवसाय नष्ट हो चले और उधर देशमें विलासिता और आब-श्याकाएँ बढ़ती गईं ! आखिरकार फल यह हुआ कि देश दरदरका भिखारी बन गया ।

बख्तोंका उपयोग ।

३० वर्ष पहिले हिन्दुस्थानमें कपड़ेकी खपत ३०० करोड़ गजकी थी, परन्तु तब इसी हिन्दु-

स्थानमें ३८० करोड़ गज कपड़ा तैयार भी होता था । वर्तमानमें अपन ५५० करोड़ गज कपड़ा उपयोगमें लाते हैं । अगर हम कुछ किरायेतले कपड़ोंका खर्च करके ३५० करोड़ गजमें ही काम चकाने लग जायें तो १०० करोड़ गज परदेशी बख्तका खर्चमेव बहिष्कार होजाये । परदेशी बख्त भारतवर्षमें ६० से ७० करोड़ रुपया तकका जाता है । किन्तु उन १०० करोड़ गजमें १६० करोड़ गज कपड़ा तो मात्र ब्रिटेनका ही जाता है ! इसलिये यदि देश-रक्षाकी कुछ आकांक्षा हो तो कपड़ेका उपयोग कम कर देना चाहिये । यदि अपन ३ गजके बदले २ गज कपड़ेसे ही काम चकाने लग जायें तो तिहाई हिस्साकी बचत होने लगी । इससे एक तो कपड़ेकी कीमत बचेगी, दूसरों को सरकारी महसूल बख्त पर देना पड़ता है उसमें ५ से १० करोड़ रुपया तककी बचत भारत-वर्षको हो जावेगी ।

याद रहे कि जब भारतवर्षकी रक्षा स्वदेशी बख्तोंके द्वारा ही होसकती है । इसलिये १-अर-देशी बख्तका बहिष्कार करो, २-चर्खा या तक-लीपर नित्य सूत कातो, ३-रुई धुनकरना, पौनी बनाना आदि कार्य सीखो, ४-शुद्ध खादीका ही उपयोग करो, ५-खादी बुनना सीखो और स्थान-पर चर्खा ज्ञान स्थापित कराओ । वही भारतकी मुक्तिका सरक और मन्था उपाय है । अगर आप देशहितैषी हैं तो इन कार्योंमें आजसे ही लग जाइये । ऐसा करनेसे ही देशका कल्याण होगा ।

* Useful Arts and Manufactures of Great Britain PP. 363.



जैनधर्ममें क्या है ?

(के०—पं० गुरुजारीदास जैन चौवरी—उदयपुर)

(१)

। चतुर्थकालमें इस जैन धर्मका बहुत ज्यादा फैलाव था। उसके माननेवाले सम्पूर्ण भारतवर्षमें थे। वहीं आज संकुचित क्षेत्रमें हो रहा है। इसका कारण जैनियोंकी ही भूल है। वे अपने धर्मकी छावामें अन्य जीवोंको नहीं आने देना चाहते हैं। यह हमारे बुजुर्गोंका धर्म है व हमी मन सकते हैं, अन्य नहीं ! उन आचार्योंसे कहीं बड़े बड़े हमारे निरक्षराचार्य पूर्वज थे, जिन्होंने हमको यह धर्म सौंपा है। उन्होंने कहा था—बेटा ! उन आचार्योंके निखेर स्याक मत करेगा, हमारा ही कहना मानना, उनको क्या है वे तौ त्यागी हैं। धर्मकी रक्षा तो हम पर है। इससे अन्य धर्मावरुंबीको इसकी छावामें पेर मत बढाये देना।

इसपर हम अपनी डींग हांक रहे हैं। हमारे धर्ममें कुछ पढ़े लिखे लोग भी हैं जो कि पैसेके बलसे ही हमारी ताब ठोका करते हैं। अगर हम लोग दिनको रात भी कहें तो वे "हाँ" अवश्य मर देंगे। उँट फेसी नकी पहना दी है। दूसरे पक्षवाले कहते हैं कि अब लकीरकी फकीरी नहीं चलने देंगे। और हैं भी सच बात। अकबर बादशाहके प्रमानेमें ३ करोड़ जैन थे। आजकल ११॥ लाख ही हैं। उसीमें श्वेताम्बर, दिगम्बर उन्हींके अंतर्गत कई

संप्रदाय हैं। फूटका तो खासा साम्राज्य है। थोड़ेसे भी महापर जैन हैं वहां भी फूट है। और एक दूसरेको काले पांतीसे देखते हैं। यह दशा है। बड़े आदमी तो छोटोंकी जरा भी सहायता नहीं करते हैं। उल्टी नइ ही काटा करते हैं। और जात्युन्नति चाहते हैं। खेद !

जिसके धर्मके मानने वाले हैं उनका भी जरा स्याक कीजिये। उनको "जिन" या "जिनेन्द्र" कहके पुकारते हैं। अभी महावीर स्वामीका शासन चल रहा है। उन्होंने अपनी परासी अयुने कितना काम किया है वह अवक्तव्य है। उनका कहना इय प्रकार है "सत्त्वेषु मैत्री" सम्पूर्ण संसारके एकेन्द्रियसे पंचेंद्रिय तक सबसे मित्रता रखना। किसीको भी जरा भी तकलीफ नहीं देना। चण्डाल भी जैनधर्मका उपासक हुआ है। और पंडित आशाधरजीने इसकी पुष्टि की है।

शुद्धोद्युपस्कराचार्यपुः शुभाऽस्तु तादृशः ।

जात्या हीनोऽपि कालादिलम्बो स्यात्साऽस्ति धर्मेभाक् ॥

इय श्लोकसे साफ जाहिर होता है कि शुद्ध शरीर आपनादिसे शुद्ध होनेपर कारुण्यसे जातिसे हीन होनेपर भी श्रावक धर्मका आराधक होता है। फिर क्यों हमारे बिगाड़क लोग धर्ममें धर्मकी झूठी डींग मारा करते हैं ?

प्रत्येक समाजमें उन्नतिकी इच्छा है, न कि अवनतिकी। आज ईसाई अपने धर्मकी जिस तरहसे भी होती है उन्नति व संख्या बढ़ा रहे हैं। मुसलमान भी प्रत्येक जातिको अपने धर्ममें लीन करते हैं। किसी भी समाजका हो पर वह अपनी इच्छाके अनुसार धर्मशासन कर सकता

हैं। मैंने ईसाई धर्मका प्रचार देखा है। मुफ्तमें ही गाना, बजाना, खेल दिखलाना इससे लोगोंको मोहित करते हैं। उपदेश भी अच्छा देते हैं, इसीसे लोग इसको पसंद करते हैं।

हमारी समाजके प्रचारक पहिले चंदाका सवाल कमा देते हैं। चाहे उपदेश न हो पर चंदा जरूर मिलना चाहिये। इसीसे कुछ प्रचार नहीं होता है। उरुटी बदनामी होती है। प्रचार करेंगे तो भी सिर्फ जैनियोंमें। जैनी तो जैनधर्मको पहिलेसे ही मान रहे हैं फिर उनको उतनी जरूरत नहीं है, जितनी कि अजैनोंको। सभी संरुपा भी बढ़ेगी। स्वामीजीने भी धर्म रक्षण सम्पूर्ण जीवोंको संसारके दुःखोंसे छुड़ाकर सुखमें धरे उसको धर्म कहा है। यह कहीं भी नहीं कहा है कि इस धर्मको सिर्फ जैन ही पाळन करे। अगर इस धर्मको प्रत्येक प्राणी धारण करनेवाले न होते तो फिर क्यों क्षत्रियोंने धारण करके मोक्ष प्राप्त किया ? इत्यादि प्रमाणोंसे विरुक्त स्पष्ट है कि शूद्रसे लेकर ब्राह्मण तक इसको बड़ी खुशीसे धारण कर सकते हैं। निर्याचोंने भी जैनधर्म धारण करके सुगति धारण की। प्रत्येक प्राणी इसको पाळकर आत्मसुधार कर सकता है।

२-मद्य, मांस, मधु, पंच उदंबर फल जैनी बननेवालेके लिये नहीं खाना चाहिये। क्योंकि इसमें त्रस-स्यावर कायके अनंत जीवोंकी हिंसा होती है। इसके सिवाय आदमी अपनी स्मरणताको भी खोदेता है। हिताहितका जरा भी रुबाळ नहीं रहता है। इसीके कारण आज भारतकी यह दशा नजर आरही है। इसीको दूर

करनेके लिये गांधीजीने सराबकी दुकानोंपर धरना जारी करा दिया है।

१-वैद्यक शास्त्रकी दृष्टिसे भी पानी छानकर पीना चाहिये। न माखूप पानीमें कौनसा जीव हो जिससे कि कोई बीमारी पैदा होनाय। इस लिहाजसे भी पानी छानकर पीना चाहिये। यही जैन धर्म आज्ञा देता है कि वार्षिक व लौकिक दोनोंको देखो।

४-अधिक हिन्दुस्थानवासी रात्रिमें भोजन करते हैं। जिससे बहुत आदमियोंको कई तरहके रोग होगये हैं। वर्षातमें तो बहुत ही कम आदमी रात्रि भोजन करते हैं। हिन्दू शास्त्रमें " अस्तंगते दिवानाथे " इत्यादि श्लोकसे भी रात्रि भोजनका निषेध किया है। ये ही मोटी१ बातें छोड़नेसे प्रत्येक प्राणी जैन धर्मका धारी होसकता है।

जैनधर्मकी उन्नतिमें प्रत्येक मानवको द्वेषभाव छोड़कर सम्मिलित होना चाहिये। जभी इसकी उन्नति होसकती है। इस जैनधर्मका धारी प्रत्येक प्राणी होसकता है, यही जैन धर्ममें है। (अपूर्ण)

नवीन पुस्तकें-

नव-रत्न ।

इसमें अरिष्टनेमि, स्तारवेक, चामुंडराय, मार-सिंह, गंगराम, हुक, सावित्र्यत्वे व सती रानी ये नव मनोहर कथाएं वा० कामताप्रसादजी रचित अभी ही छपी हैं। पृ० ८० व मू० छह आने। तत्त्वभावना-अनेक चित्रों सहित १॥॥) सम्यक्त कौमुदी-(आठ कथाएं) ॥॥) मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत।

दशलाक्षणी व्रत दशक ।

(ले०-कधिरस्न राजवैद्य नाथूराम जैन-ललितपुर)

दोहा-श्री जिनवरको प्रणमि कर, जिनवाणी उर धार ।

दशलक्षण पद वर्णकं, निज बुद्धी अनुसार ॥ १ ॥

उत्तम क्षमा ।

धारो उत्तम क्षमा महान् ॥ टेक ॥

केवल क्षमा विना तप संयम शील अकारथ जान ।

जिमि प्रत्यक्ष जानत सब ही जन अन्न नौन विन खान ॥ धा० ॥

पूर्वोपाजित कर्म बीज ही मुख दुख फलकी खान ।

पाते सहनशीलता धरकर दुखमें सप्तता ढान ॥ धा० ॥ २ ॥

सर्वं क्रोध विषदा जीतनको क्षमा एक संग्राम ।

यदि अनिष्ट आपद आजावे क्रोध न कीजे आन ॥ धा० ॥ ३ ॥

मुख चाहत हैं जीव सभी विध दुखसे उरत महान् ।

क्रोध महा दुखदाइ जगतमें त्यागो हो बुधिमान् ॥ धा० ॥ ४ ॥

याकों कहें केवली जिनवर दाता पद निर्वाण ।

नाथूराम समझ दिल धारो उत्तम क्षमा महान् ॥ धा० ॥ ५ ॥

उत्तम मार्दव ।

धारो मार्दव वृष सुखकार ॥ टेक ॥

माक-बन्धेमें भूल अपनको मानत उच्च अपार ।

अपने हाथों कटि वोकर भटकत क्यों संसार ॥ धा० ॥ १ ॥

पुण्य उदयसे जाति रूप कुल धन योवन श्रंगार ।

पुण्य क्षीण है नश हैं क्षणमें रहे न मान लगार ॥ धा० ॥ २ ॥

चक्रीश्वर धनवान गुणीजन हुए असंख्य निहार ।

आयु पूर्ण भये चाले निज पथ, कृत कर्म अनुसार ॥ धा० ॥ ३ ॥

देखो त्रिखंडी रावणने भी कीना मान असार ।

बहु दुख सहकर लोक निघ हो पहुंचा नर्क मझार ॥ धा० ॥ ४ ॥

जब पशु आदिक नर्क गतीमें नीच हुए बहुवार ।
 तब वह मान कहाँ था चेतन मनमें लेहु विचार ॥ धा० ॥ ५ ॥
 सब अनर्थका मूल मान है घातक वज्र महार ।
 मान छांड सार्धव गुण धारो नायु चित्तमें धार ॥ धा० ॥ ६ ॥

उत्तम आर्जव ।

धारो उत्तम आर्जव सार ॥ टेक ॥

सागो सर्व कपट भावोंको सरल भाव चित्त धार ।
 माया रहित सर्व जीवोंको मिलन मुक्तिपद सार ॥ धा० ॥ १ ॥
 जिम विचार मन माहीं आवे तैमे बचन उचार ।
 वैसे काब काबसे कीजे येही आर्जव सार ॥ धा० ॥ २ ॥
 आतम बुद्धि रहित ये प्राणी करत कपट अपार ।
 बहुला सम सीधा बन करके बंचित सब संसार ॥ धा० ॥ ३ ॥
 मायाचारीके घट भीतर सत्य न शान्ति लगार ।
 चिन्तावान निरन्तर रहकर परका अहित विचार ॥ धा० ॥ ४ ॥
 मायाचारी तिर्यच योनिमें भ्रमत अनन्ते वार ।
 यातें कुभावको साग सियाने अविनाशी पद धार ॥ धा० ॥ ५ ॥
 धर्म स्वपर हितकारी जगमें सर्व सौख्य दातार ।
 नाथूराम मायाको तजकर आर्जव धारो सार ॥ धा० ॥ ६ ॥

उत्तम सत्य ।

धारो उत्तम सत्य महान् ॥

ज्योंका त्यों वचनोंका कहना सौ है सत्य प्रमाण ।
 राग द्वेषके नष्ट करनको सत्य स्वभाव निदान ॥ धा० ॥ १ ॥
 जो असत्य भाषण करते हैं निश्च वृषित वे जान ।
 सब व्यवहार कर्म रूक जाते शरण न कौई आन ॥ धा० ॥ २ ॥
 मिथ्याभाषी सांचहु बोले होय प्रति जन आन ।
 द्रव्योपार्जन आदि समयमें कही न झूठ सुजान ॥ धा० ॥ ३ ॥

देखो राजा हरिश्चन्द्रने धारा सत्य महान ।
 सर्व दुःख विपत्ति सहनकर पाया स्वर्ग विमान ॥ धा० ॥ ४ ॥
 मिथ्या भाषीको राजासे मिलत दण्ड अधिकान ।
 जिब्हा छेदन ताड़न मारन सहत नर्कमें आन ॥ धा० ॥ ५ ॥
 यातें आत्मस्वरूप सत्यको गहो शीघ्र मतिमान ।
 नाथूराम असत्य त्यागकर धारो सत्य महान ॥ धा० ॥ ६ ॥

उत्तम शौच ।

गहो नर उत्तम शौच महान् ॥ टेक ॥

शुद्ध भावकर लोभ त्याग दो है जो दुखकी खान ।
 अपवित्र देहसे ममता तजना येही शौच प्रधान ॥ गहो० ॥ १ ॥
 अस्थिमांस मज्जासे पृरित तौभी थिर नहि जान ।
 ऐसी नश्वर देहके कारण लोभ न करो मुजान ॥ गहो० ॥ २ ॥
 इसी देह पालन पोषणमें करते पाप महान् ।
 सर्व दुखोंका कारण चेतन देह समान न आन ॥ गहो० ॥ ३ ॥
 करो अनेकों लेपन उबटन और बहुत स्नान ।
 तौभी रंचक शुद्ध न होवे विन जप तपके जान ॥ गहो० ॥ ४ ॥
 तीन लोक सम्पत्ति मिल जावे नृपणा घटे न आन ।
 कितनहु नृपणा कीजे प्राणी मिलहै उदय प्रमान ॥ गहो० ॥ ५ ॥
 जबतक लोभ न हियमें छूटे शौच न नाम निशान ।
 शौच विना सब धर्म असारा जप तप व्रत अरु ज्ञान ॥ गहो० ॥ ६ ॥
 शौच महा निर्दोष जगतमें कारण है निर्वाण ।
 नाथूराम संतोष हिये धर धारो शौच महान ॥ गहो० ॥ ७ ॥

उत्तम संयम ।

धारो संयम धर्म महान ॥ टेक ॥

जिसके धारंसे भरतादिक कीना मोक्ष प्रदान ।
 सो दुर्लभ है इस जग भीतर संयम रत्न महान ॥ धारो० ॥ १ ॥

पंच अक्ष मनके विषयादिक दुःखित दुर्गति धाम ।
 निष्कषाय हूं सबको जीते सो संयम अपमान ॥धारो०॥ २ ॥
 परम्परा इस जन्म मरणकी काल अनन्त प्रमाण ।
 संयम बिन क्योंकर मेंटेंगे किमि पावें निर्वाण ॥धारो०॥ ३ ॥
 इन्द्रियजनित त्रिषय क्षणभंगुर इस भव ही सुखदान ।
 पाक रूप होकर परभवमें डाले नर्क महान ॥धारो०॥ ४ ॥
 दया क्षमा संतोष शीलता कायोत्सर्ग विधान ।
 स्वाध्याय पूजन संयम अंग धरो निजातम ज्ञान ॥धारो०॥ ५ ॥
 संयम हितु कुल जैन धर्ममें पाकर उत्तम ज्ञान ।
 दौलत सुत नाथशक्ती सम संयम धारो जान ॥धारो०॥ ६ ॥

उत्तम तप ।

धारो उत्तम तप मतिमान ॥ टेक ॥

षट् षट् आभ्यन्तर षाड्विज तप द्वादस भेद बखान ।
 पाकर ज्ञान करो तप उत्तम निज शक्ती अनुमान ॥धारो०॥ १ ॥
 इन्द्रिय मन व्यापार रोक कर ममत्व परिग्रह हान ।
 निज मनमें वैराग्य भाव धर तप निरवांछित ठान ॥धारो०॥ २ ॥
 राग द्वेष परिणति बश होकर भ्रमत वर्ष कोटान ।
 तिन सबहीके भेटन कारण तप समान नहि आन ॥धारो०॥ ३ ॥
 कर्म शिखिर योधा जीतनको तप है बज्र समान ।
 नर्क पशु चहुंगतिका टारक स्वर्ग मोक्षका धान ॥धारो०॥ ४ ॥
 मोह अन्ध होकर क्यों चेतन भटवल दुःख विधान
 दौलत सुत नाथ शिव मग तप, कीजे शक्ति प्रमान ॥धारो०॥ ५ ॥

उत्तम त्याग ।

धारो त्याग धर्म सुखदान ॥ टेक ॥

त्याग कहे या दान दीजिये हेतु स्वपर कल्याण ।
 समय समय प्रति चार संप्रको दीजे उत्तम दान ॥धारो०॥ १ ॥

औषधि शास्त्र अभय आहारा, श्री जिनधर्म बखान ।
 पात्रापात्र विचार भावसों देहु सुपात्रहिं दान ॥धारो०॥ २ ॥
 चंचल चपला सप यह लक्ष्मी धिर नहिं अथिर महान ।
 मृत्यु भये नहि संग चलेगी नश जैहें नादान ॥धारो०॥ ३ ॥
 औषधि दे, तन होय निरोगी शास्त्र देय विद्वान ।
 अभय देय निर्भय पद पावे, दे भोजन धनवान ॥धारो०॥ ४ ॥
 इस भवमें सब सुःख भोगकर होवे जगमें नाम ।
 स्वर्ग संपदा पाकर दानी अन्त लहे निवाण ॥धारो०॥ ५ ॥
 जिमि बट बीज भूमिमें जाकर होवे वृक्ष महान ।
 तैसेही लघु बीज दान यह देवे शर्म निधान ॥धारो०॥ ६ ॥
 द्रव्य अदत्त साथ नहिं जावे देत कुगतिका दान ।
 पुण्योदयसे पाय द्रव्यको करले कलुषक दान ॥धारो०॥ ७ ॥
 सम्यग्दर्शन आदि धर्मका मूल अंग शुभ दान ।
 दौलत सुत नाथु भव नाशक दीजे उत्तम दान ॥धारो०॥ ८ ॥

उत्तम आकिंचन्य ।

धारो आकिंचन्य व्रत सार ॥ टंक ॥

परिग्रह चौबिस भेद कहे हैं तिनमे ममत्व निवार ।
 तृष्णा रहित नियम कर लेवें सो आकिंचन्य सार ॥धारो०॥ १ ॥
 ज्ञान स्वरूपी परम अतिन्द्रिय निर उपमा निर्धार ।
 इमि आतममें लीन होयकर जो शुभ ज्ञेयाकार ॥धारो०॥ २ ॥
 फिर इस आतमके संग संभव, होय परिग्रह पार ।
 मिथ्या मोह राग भावोंसे, व्यर्थ फंसा संसार ॥धारो०॥ ३ ॥
 अल्प परिग्रहकी तृष्णा ह, डाले नर्क मंझार ।
 याते रोक प्रवृत्ती मनकी संतोषामृत धार ॥धारो०॥ ४ ॥
 फिरा पाप मय जगके भीतर जीव अनन्ते वार ।
 तिन सबका आधार परिग्रह और न वस्तु लगार ॥धारो०॥ ५ ॥
 परिग्रह त्यागीको मब मुखमय खुला मुक्ति दरवार ।
 दौलत सुत नाथु ममता ह तजो परिग्रह भार ॥धारो०॥ ६ ॥

उत्तम ब्रह्मचर्य ।

धरो नर ब्रह्मचर्य व्रत ठान ॥ टेक ॥

चिद्रूपी शुचि आत्ममें ही रमण करें नित ध्यान ।
 घृणित निन्द स्त्री स्पर्शन तज सो ब्रह्मचर्य महान ॥धरो०॥ १ ॥
 अस्थि मांस मज्जा मल पूरित देह अपावन जान ।
 दुखित पापमय जगत चक्रमें भ्रमण कारिणी खान ॥धरो०॥ २ ॥
 देह विनाशी है दुख राशी चंतन भिन्न पिछान ।
 याते शील संतोष धारकर रमहु आत्माराम ॥धरो०॥ ३ ॥
 ज्येष्ठाको माता समान गिन लक्ष्मी पुत्री मान ।
 समवयस्क नारी भगिनी गिन त्यागो गग मुजान ॥धरो०॥ ४ ॥
 ब्रह्मचर्यसे बल प्रभुता अरु होय रूप कुलवान ।
 देव इन्द्र नरसे पूजित है वरे मुक्ति पद थान ॥धरो०॥ ५ ॥
 सीता अश्रिकुंड जल इवा सर्प सुमाल्य समान ।
 वस्त्र वृद्धि द्रौपदीकी कीर्ती शील धर्म पहिचान ॥धरो०॥ ६ ॥
 ब्रह्मचर्य महिमा बहुतेरी काटन कष्ट महान ।
 रत्नवय शुभ हेतु होयकर करे प्राप्त मुजान ॥धरो०॥ ७ ॥
 दुखनाशक द्रव्य भव सुखदायक शिवमग है आसान ।
 दौलत सुत नाथ शुभ धारो ब्रह्मचर्य व्रत ठान ॥धरो०॥ ८ ॥

समुच्चय दशलाक्षणी पद ।

सेवहु दशलाक्षण व्रत सार ॥ टेक ॥

क्रोध कषाय छोड़कर चेतन क्षमा लेव मन धार ।
 मान सर्व विध दूर करो जन मार्दव लहो सम्हार ॥
 मन वच काय सरल वृत्ती कर धर्म आर्जवहु सार ।
 दुःखित वचन असत्य त्यागकर सत्य धर्म निशार ॥सेवहु०॥ १ ॥
 लोभ त्याग अंतरंग शुद्धिसे धारो शीघ्र अपार ।
 पंचेन्द्रिय मन प्रवृत्त रोककर संयम ले हित धार ॥सेवहु०॥ २ ॥

निजमनमें वैराग्य भावकर तपका करो प्रचार ।
 दीजे दान यथाविधि पात्रहि त्यागधर्म चित धार ॥सेवहु०॥ ३ ॥
 त्याग परिग्रह तृष्णाको हर आकिंचन पद धार ।
 छोड़ तिया संग चेतनमें रम ब्रह्मचर्य है सार ॥सेवहु०॥ ४ ॥
 दशलाक्षण व्रत जो नर पाले काटे कष्ट अपार ।
 भव भवके अघ नष्ट जु करके स्नेह मुक्ति पद सार ॥सेवहु०॥ ५ ॥
 निज स्वभावमय धर्म यही है सर्व सुःख करतार ।
 किया होलिकाने व्रत विधिसे पाया शिवमुख सार ॥सेवहु०॥ ६ ॥
 यह उत्तम नरभव कुल जैनी पाय समय मुख सार ।
 नाथुराम जग भ्रम नाशनको दशलाक्षण व्रत धार ॥सेवहु०॥ ७ ॥

सुभाषित रत्नसंदोह ।

(अनुवादक-पं० मूलचन्द्र जैन "वत्सल" सं० "आदर्श जैन")

(गतांशुसे अगे)

पापाचरणों द्वारा संचित द्रव्य, स्वार्थ प्रिय बन्धु अनेक ।
 करते हैं उपभोग सौख्य युत, किंतु पापफल चखता एक ॥
 अहो खेद! आश्चर्य !! न मानव आत्मशुद्धिपर देता ध्यान ।
 किंतु अहर्निश पाप भार मस्तक पर रख बनता अज्ञान ॥ ८ ॥
 वर्तमान पर्याय त्याग मानव द्वितीय भव रखते जब ।
 मृत, बनिता, धन-धान्य, मित्रगण साथ न कोई चलते तब ॥
 किंतु विवेक शून्य मानव, करते प्रतिदिन उनसे अनुराग ।
 सत्य सहायक धर्म मित्रको देने हैं सहसा परित्याग ॥ ९ ॥
 आत्मज्ञान संलग्न विषय वासना विहीन प्रवीण मुजन ।
 अनुपमेय, अविचल, सुख, समता, शांति लाभ करते प्रतिदिन ॥
 वह अचिन्त्य सुख शांति, इन्द्र चक्राधिपको दुष्प्राप्य अलभ्य ।
 अतः अमित दुखदा इन्द्रिय सुख त्याग भजो सुधर्म दुर्लभ्य ॥ १० ॥

विषय सौख्य संलग्न हुए ही नष्ट हुआ यदि मानव तन ।

उदधि मध्य मणि पतन सदृश है पुनः प्राप्ति असंत कठिन ॥

अतः आत्म सुख वंचक विषय-वासनाओंका दमन करो ।

भव संतति विनष्ट हित सत्वर मुक्ति प्राप्तिका यत्न करो ॥ ११ ॥

हालाहल विष सदृश प्राण हर, इन्द्र धनुषवत् क्षण नश्वर ।

कल्प काल पर्यंत भवार्णव मध्य दिलाते हैं चक्रर ॥

सतत अमित आपत्ति प्रदायक-विषय सौख्य दें मानव त्याग ।

असहनीय सांसारिक दुख भी दें उनको सहसा परित्याग ॥ १२ ॥

श्वान शुष्करस रहित कठिन हड्डी चर्चण करता मतिमंद ।

उसके संघर्षणमें निकला-स्वतनु रक्त चखता, सानंद ॥

हो सखेद यों स्वतनु वीर्य व्ययमें होता है शक्ति विहीन ।

किन्तु ज्ञान हव मानव उसमें सौख्य मान रहता तल्लीन ॥ १३ ॥

इन्द्रि सुखकी प्रबल वासना है अति दुखकर दुर्गति द्वार ।

विषय विरक्त वृत्ति है अनुपम सौख्य शान्तिकी निर्मल धार ॥

अस्तु, काम क्रोधादि कषाएं, कामिन रति इच्छा न्यज कर ।

निर्मल ज्ञान चरित रत रहते पुण्य पुरुष जगके हितकर ॥ १४ ॥

अनुपम आत्मशक्तिके घातक, परिग्रहका करके परित्याग ।

काय, वचन, मन सहित महाव्रत समिति पालते रख अनुराग ॥

प्रबल मोह मद मर्दन करके करले कोप कषाय दमन ।

धर्मवीर, ऋषि धन्य धन्य हैं मेरा भव दुख करो शमन ॥ १५ ॥

वनिता विषय प्रलोभन गढ़में डाल कराती है अपमान ।

वित्त नष्ट होनेपर होता हृदय विदारक कष्ट निदान ॥

बंधुवर्ग स्वार्थान्ध, सख समता सुखके संतत बाधक ।

किन्तु मोह गृह ग्रसित मनुज धिक ! इन्हें मानता सुख साधक ॥ १६ ॥

वनिता, वित्त और गृह सजकर साधु हुआ वैराग्य लिया ।

वेष दिग्ंबर बना परिग्रह जाल सकल परित्याग किया ॥

किन्तु दुरित क्रोधादि कषाएं विषय वासना हटी नहीं ।

हुआ न हृदय विरक्त वास्तविक, इच्छाएं कुल घटी नहीं ॥ १७ ॥

❧ अष्टाध्याय ❧

(ले० डॉ० मित्रसेन जैन मुख्याचार्य-मुजफ्फरनगर)

मज्जतो ! यह शास्त्र अध्ययन अग्र्यंतर तपका पाँचवा भेद और उत्कृष्ट तपका मुख्य करण है । इससे ज्ञानकी वृद्धि होती है, ज्ञानकी वृद्धि होनेसे चित्तमें उत्कृष्ट वैराग्य उत्पन्न होता है । वैराग्य होनेसे परिग्रहका त्याग होता है । परिग्रहके त्यागसे चित्त अपने वाममें रहता है । चित्तके वशीभूत होनेसे ध्यान होता है । ध्यानके होनेसे आत्माकी उरकठिब होती है । आत्माकी उपकठिब होनेसे ज्ञानावर्णादि अष्ट कर्मोंका नाश होता है । और कर्मोंका नाश ही मोक्ष कहा जाता है और यही अव्याप्तन है । अर्थात् इस समयमें ध्यार्थ स्वरूपका ज्ञान करनेका कारण स्वाध्याय है । अतएव जैनी मात्रको स्वाध्याय करना परमावश्यक है ।

मित्रो ! बिना श्री शास्त्रोंके अध्ययनके हम या आप इस निकृष्ट कालमें अपना उपकार नहीं कर सकते, चूँकि यह अब भलीभाँति जानते हैं कि जिनको हम माझात अग्रंत सदश जानकर पून रहे हैं वे तो मुंहसे कुछ बोलते नहीं, और गुरू जैसे होने चाहिये वैसे दृष्टि-गोचर नहीं होते, जिनके वचनमृतका पानकर हम अपनी आत्माका करवाण कर सकें । अतएव श्रीजिन कवित शास्त्रोंहीका अध्ययन करना हमारे लिये हम भद्र और परभवमें सुख प्राप्ति और आत्माकी उन्नति करानेवाला है ।

प्रिय सुखाभिलाषी मज्जतो ! यह हम आपको पूर्व बतला चुके हैं कि जैन शास्त्रोंका अध्ययन

करना ही परम्पराय मोक्षका कारण है, फिर यदि हम स्वाध्याय करनेमें विकम्ब करें तो कितने आश्चर्यकी बात है ? प्रायः देखा जावे तो हमारे माइयोंमेंसे ऐसे बहुत कम भाई निकलेंगे कि-जो नित्यप्रति नियमानुकरू यथाविधि शास्त्रस्वाध्याय करते हों । चूँकि प्रथम तो हमारे भाई स्वाध्यायका नियम लेनेहीमें इतनी असमर्थता दिखलाते हैं जिसका कि उल्लेख करना लेखन शक्तिके बाह्य है । यदि दवाबके देनेसे किसीने प्रतिज्ञा ले भी ली तो उसका पालन करना, अति कठिन होजाता है ।

क्या हुआ जब दर्शन करनेको जाये और किसी भाईको स्वाध्याय करते हुये देखा तो आपने भी वहाँ बैठकर एक पत्र पठा लिया और एक-दो लकीर पढ़कर पत्र पटक चले गये ? अस्तु, इस प्रकार इनके क्रमको देखकर किमी मज्जानने कड़ भी दिया कि, मित्र ! ऐसा तो तुमको योग्य नहीं है, यथाविधि जाद्योपान्त ग्रन्थकी स्वाध्याय करनी चाहिये । तो इतना सुनकर हमारे उक्त महोदय झट ही उत्तर दे देते हैं कि भाई ! तुम तो निकम्मे हो जो अपना समय पूरा करने दो । मैं तुम्हारे जैसा निकम्मा नहीं हूँ, जो विशेष समय अपना मैं इसके लिये व्यय करूँ । मुझे वैरागी थोड़े ही बनना है, तुमको तो वैरागी बनना है, तुम बैठो, स्वाध्याय करो, चाहे मन्नन करो, मुझे इतना अवकाश कहां है ? अहा हा ! कैसा अच्छा उत्तर दिया ! व्यर्थको गप्पाष्टकोंमें तो घंटों व्यतीत करदें किंतु कर्मोर्गजनन शास्त्र अध्ययन करनेके लिये एक मिनटकी भी फुर्सत नहीं है ।

सज्जनों ! बता सकते हो कि इन महोदयोंकी ऐसी बुद्धि क्यों हुई ? मेरे विचारमें तो यह जाता है कि यह स्वाध्याय न करनेका ही महात्म्य है । यदि उन्होंने एक ग्रन्थकी भी स्वाध्याय आद्योपांत कर मनन किया होता तो इन प्रकारकी निर्लज्जताका उत्तर कदापि नहीं देते । अस्तु, इनके अतिरिक्त बहुतसे हमारे भाई ऐसे भी हैं जिन्होंने आद्योपांत बहुतसे ग्रन्थोंकी स्वाध्यायकी है, किंतु जब उनसे पूछा जाय कि भाई साहिब ! अमुक शास्त्र अमुक विषयमें क्या कहता है ? तो उत्तरमें शून्य इति ।

प्रिय मित्रो ! ग्रन्थको आद्योपांत पढ़नेसे भी काम नहीं चढता । पढ़ करके उपका मगन करना आवश्यक है । हमारे महर्षियोंने स्वाध्यायके पांच भेद कहे हैं, जैसे वाचनीय, पृच्छनीय, अस्रयै, अनुभेक्षा और धर्मोपदेश । अतः इन पांच भेदों पर ही ज्ञानकी वृद्धिके कारण सुखाभिजायी पुरुषोंका ध्येय है । आपको स्वीकार करना होगा कि पूर्वकारमें जिनने सिद्ध हुये हैं, आपकी होगी, तथा वर्तमानमें हैं वे सब स्वध्यायसे ही हुये हैं, होते हैं, तथा होनेवाले हैं । इसलिये गृहस्थोंको एकान्त स्थानमें बैठकर मन बचन कायकी शुद्धतापूर्वक नित्यपति नियमपूर्वक आद्योपांत शास्त्रकी स्वाध्याय करना और उसके उपर मनन करना यही अष्टयात्म है ।

अब देखना यह है कि मेरे निम्नलिखित शब्दोंमें कहांतक सच ई है । "श्रीजिन कथित शास्त्रोंका ही अध्ययन करना अध्यात्म है" । सज्जनों ! दुनियामें जितने मत प्रचलित हैं वह सब किसी न किसी शास्त्रोंके आधारपर हैं ।

विना शास्त्रोंके कोई मत आपने नहीं सुना होगा । और शास्त्र जो हैं सो किसीके द्वारा निर्मापित किये गये होंगे, विना किसीके कहे हुये बचनोंके शास्त्र बन नहीं सकते । इसीसे यह जगत विख्यात है कि अमुक शास्त्रके रचयिता अमुक महापुरुष हैं । लेकिन विना पुरुषके प्रमाण किये हुये उसके बचनोंकी प्रमाणना नहीं होसकती, अतएव हमें भी उचित है कि उसके बचनोंकी खोज करें जिसके कि बचन हमें माननीय हों । देखना चाहिये कि कहनेवाला पुरुष सदीष है या निर्दोष ? यदि कहनेवाला ही सदीष होगा या दूसरोंको किम तरह निर्दोष कर सकेगा ? प्रमाणमें प्रायः कितने ही मतवाले अपने अपने शास्त्रोंको ईश्वर (देव) कृत मानने हैं । और जिन मत श्री अरहंत परमात्माके बचनानुसार अनेक महर्षियों द्वारा अपने शास्त्रोंकी रचना मानता है । विचारना यह है कि देव कौनसा निर्दोष है ।

देव वही है जिमने राग, द्वेष, मोहादि शत्रुओंका नाश किया हो, सर्वज्ञ हो, हितोपदेशी हो । अर्थात् संसार-समुद्रमें गिरे हुये प्राणियोंको अपने बचनमृगरूपी नाव द्वारा उद्धार करनेवाला हो तथा क्षुधा, तृषा, जन्म, जरा, रोग, मरण, मय, विषय, अरति, दुःख शोक, चिंता, मोह, मद, भ्रम, निद्रा, राग और द्वेष इन अष्टादश दोषों करके रहित हो, वही निर्दोष देव कहा जासकता है । और यह निर्दोषता केवल श्री जिनेन्द्रदेवके अन्य किसीमें नहीं पाई जाती । अतएव उन्हींके कहे हुये शास्त्रोंका अध्ययन करना अध्यात्म है ।

समाजकी शोचनीय दशा ।

(डेबक-विमलचन्द्र जैन, हार्लेस्कूल-बडौत)

आधुनिक अवस्थामें संसार तरक्कीके मैदानमें आरहा है । जो जातियां किसी दिन वेखबरीकी नींवमें बेहोश थीं वे आज जगत्त अवस्थामें दिस रही हैं तथा अपने कर्तव्य मार्गपर बढ़ी तेजीके साथ दौड़ लगा रही हैं, किन्तु हमारी जैनसमाज अभीतक चादरताने सोरही है, उमने अभीतक अपना एक करवट भी नहीं बदला । उसकी ऐसी हाकतको देखकर विश्वास नहीं होता कि वह किसी वक्त अपनेको तरक्कीके छिन्नपर चढ़ा सकेगी ।

जैन समाजकी हाकत अत्यन्त शोचनीय है और ऐसी हाकतमें भी उसे चौतफमे कुरीति-बोने केर रखा है । किन्तु उसे इसकी मरा भी फिकर नहीं । कुरीतियां एक रोग है जिससे समाज सरुत बीमार है । समाजके रोगकी दशा बहुत बरसेसे बड़े २ बेघों द्वारा होती आरही है, लेकिनरोग अभीतक हटा नहीं और न उसके हटनेकी कोई उम्मेद ही दिखनी है, बरिक्त उन्को २ दवा की जाती है त्यों २ रोग बढ़ता ही नजर आता है ! इस लिहासे कहना फइता है कि “ बही रफ्तार बेदंगी जो पड़डे बी लो अब भी है । ”

जैन समाजकी हाकत क्यों बिगड़ रही है, उसका रोग क्यों नहीं रफा होता, बेघोंकी दवाएं क्यों असर नहीं करती आदि सब बातोंका उत्तर सिर्फ बही होसकता है कि हमारी समा-जमें पंचायती संगठन नहीं है । अगर पंचायती

संगठन होता तो आज यह दशा देखनेमें नहीं आती ।

कहना होगा कि पंचायती संगठनके न होनेसे ही समाजके रोगकी चिकित्सा नहीं होसकी एवं यह रोगसे मुक्ति नहीं पासकी । इसकिये पंचायती संगठनका होना निहायत जरूरी है और यह आपाके बैर विरोध बरबाद किये नहीं होसकता ।

पंचायती संगठनके बिना हमारी समाजकी हर तरटसे तरक्की रुकी हुई है और ऐसी अवस्थामें ही कुरीतियों (चाकविवाह, वृद्ध-विवाह एवं कन्याविक्री) ने समाजको गहांतक कबजेमें किया है कि उसके जीवन मरणका पक्ष सामने आरहा है परन्तु तौभी हम नहीं चेतने और न उसके पक्षको हक करनेका उपाय ही करते हैं !

कुरीतियोंके द्वारा समाजकी जो बर्बादी हुई है वह समाज संरक्षकोंमें छिपी नहीं है । छोटे २ बच्चोंकी आदियां होजानेके कारण नवयुवकोंकी दशा अत्यन्त शोचनीय होरही है अर्थात् उनके कच्चे वीर्यका पतन होजानेसे घातुक्षीण, तपेदिक, सुजाक एवं प्रमेह आदि हजारों मयंक रोग उजरर अकण्ण कर लेने हैं । जिसमें कि उनका शरीर निर्बल होठा हुआ बहुत जरूरी मृत्युका शिकार बन जाता है ।

इसके अलावा इस कुरीतिके जरिये सन्तानो-त्पत्ति मारी जाती है । छोटी अवस्थाकी शादीसे सन्तानोत्पत्तिकी आज्ञा करना आज्ञाशक फूट तोड़ना है । इसकिये यह कुरीति समाजकी संरक्षा-

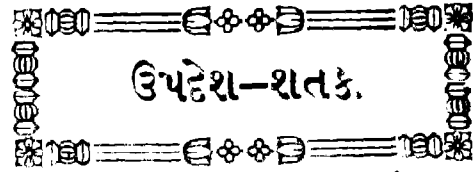
वृद्धिमें अत्यन्त बाधक होरही है । वर्तमानमें जो प्रतिदिन समाजके २१ मनुष्योंकी कमी होती है उसमें अधिक कारण इस कुरीतिका है ।

दुसरा वृद्धविवाह-इसके जरिये समाजकी जनबोध बालिह्वण वैषम्य आस्थामें पड़ी अपने जीवनको समाप्त कर गयी हैं जिनकी संख्या कई हजारोंमें गिनी जा रही है । इसी तरह कन्याविक्री भी बालविवाहोंके पैदा करनेमें पूरी सहायक है । इन दोनों कुरीतियोंके द्वारा भी सन्तानोत्पत्ति मारी जाती है तथा एक और महरीबा (व्यभिचार) जनवर पैदा होजाता है जिससे कि समाजकी जीवन जड़ कटती जाती है ।

वृद्धविवाह और कन्याविक्रीके जरिये ही समाजके गरीब घरानेके नवयुवक अविवशित रह जाते हैं ; जिन युवकोंके द्वारा योग्य सन्तान पैदा हो सकती है तथा जो शारीरिक संगठनमें अपनेको पास कर चुके हैं और जो ह्युंशिक्षण एवं सदाचारी हैं उनके लिये समाज पुत्रियां देना जाना अपमान समझती है । और बुढ़ोंके गले 'ऊटके गले बिल्ली बांभना में उन्ने बांभती है ।

गरीब घरानेके योग्य युवकोंका अविवशित रहना, बालविवाहोंकी वृद्ध होना और समाजकी संख्याका घटना ये सब उक्त कुरीतियोंके जरिये ही होरहा है । इनलिये उनको समाजसे निकालना बहुत जरूरी है ।

पंचायती संगठनके जरिये कुरीतियां दूर हो सकती हैं । यदि पंचायतियोंका संगठन होतुं तो हमारे नवयुवक मंडलकी चाहिये कि वह इसके लिये शीघ्र ही अपनी कमरकस तैयार हो ।



उपदेश-शतक.

१-भोलुनवाल मथुरादास शाह-कंपाना.

- १-अपराधीता पक्ष करवो नदि.
- २-आपणुं जे वातमां जेवुं सव जन्तुता डोषको ते छोडी जुकुं भोखणुं नदि.
- ३-अन्नते साध करीतेज काममां सेवुं.
- ४-अग्नि विषे भगमुत्र नांजवां नदि. तेमळ थुंउवुं नदि.
- ५-अन्नतपणुं न राणुं.
- ६-अपणुं करतां पर्यां ओषुं राणुं.
- ७-कष्टमय वपते पणुं अष्ट आयरणुं न आयरवां.
- ८-डोष छवतां धात करवो नदि.
- ९-डोष पणुं छवतां तिनकर न करवो.
- १०-दुग्धते क्षय करतार जेव गमन छे.
- ११-कन्यापिकयतुं धन भांस परापर छे.
- १२-कन्यापिकयतां करीआरमां जाग सेवो ते अष्ट धरानी निशानी से.
- १३-डोषमां देव करवो नदि.
- १४-डोषणुं शीव जाग करणुं नदि. तेमळ पोते पणुं शीवते संजाण पूरुं तासवणुं.
- १५-डोष पणुं करी अजर पुत्रव न जन जेवा हम्हा करवी नदि.
- १६-डोष पणुं प्राणुंते दुमवणुं नदि.
- १७-डोषणुं मन दुमाय सेवुं न भोखणुं.
- १८-डोषते शिर मिय्या अपवाद मुक्वो नदि.
- १९-दुष्टुंअतो नाश भरणुंते पणुं न करवो.
- २०-डोष न्याय संगवया पंच तरिके नांमे तो अन्याय करवो नदि.
- २१-खोटां आयरणुं अयरवां नदि.
- २२-गमे तेवी दानि थाय तोपणुं मितद्रोह न करवो.
- २३-गमे तेवा आपराधणमां पणुं आत्मधान करवो नदि.
- २४-चण्डाल कर्मथी निर्वास करवो नदि.

- ૨૫-ચુનાની બહુનો વ્યવસાય કરવો નહિ.
- ૨૬-છેતરી કે દગલખાજ કરી ખીજને ક્યાની તેનું ધન કુંટરી લેવું નહિ.
- ૨૭-જે શ્લમાં જીવની ઉત્પત્તિ થાય અને મરે તે શ્લનો માંસ સમજી ત્યાગ કરવો.
- ૨૮-જળને ગાળીનેજ વાપરવું.
- ૨૯-બુદ્ધી સાક્ષી ન પુરવી.
- ૩૦-જે આ સાથે લગ્ન થયું હોય તેનો ત્યાગ કરવો નહિ.
- ૩૧-જળ કે દેવસ્થાનમાં મળમુત્ર કે બળખા નાખવા નહિ.
- ૩૨-તુલ્યથી મેરૂ પર્માત્મી ચીજને ચોરવી નહિ.
- ૩૩-તિર્થસ્થાનમાં કરેલા પાપનું પ્રાયશ્ચિત્તજ નથી.
- ૩૪-જ્ઞાન રહિત રહેવું નહિ.
- ૩૫-દાન નિરાશ્રયીનેજ આપવું.
- ૩૬-દેવની નિંદા કે બ્રહ્મ ઉપાસના ન કરવી.
- ૩૭-દાન કરવું તે દુરજ સમજી કરવું પણ શ્યાની આશ્ચ્યે ન કરવું.
- ૩૮-ધર્મ-આચારનું ઉલ્લંઘન કરવું નહિ.
- ૩૯-ધર્મબ્રહ્મ કે કુચારને દાન આપવું નહિ.
- ૪૦-ધન છતાં પરમાર્થ નહિ કરનારાને કૃત્ય સમજી તેનો ત્યાગ કરવો.
- ૪૧-ધર્મ છે તેજ વિશ્વનું રક્ષણ કરનાર છે.
- ૪૨-ધન અધર્મ કરી મેળવવું નહિ.
- ૪૩-જાગ્ર સ્નાન કરવું નહિ.
- ૪૪-આયનું ઉલ્લંઘન ન કરવું.
- ૪૫-વશુ અગર તેના સંકલ્પ પૂર્વક કોઈ ચીજને હોમી યજ કરવો નહિ.
- ૪૬-પશુ યજના પ્રસાદને લેવો નહિ.
- ૪૭-પરબો ગમન કરવું નહિ.
- ૪૮-પર ધન હરણ કરવું નહિ.
- ૪૯-પોતાનું ભણું કરવા ખીજનું બુરું ન કરવું.
- ૫૦-પોતાનાં વખાણ પોતાને મુખે ન કરવાં.
- ૫૧-પુત્ર વધુ સાથે દારૂમાં ઉતરવું નહિ.
- ૫૨-પોતાનું કામ બમડનું હોય તોપણ લોકોપવાદ લેવો નહિ.
- ૫૩-પારકાની નિંદા કરવી એ નર્કમાં જવાની નિસાણી છે.
- ૫૪-પવત્ર માણસને બળાત્કારે બ્રહ્મ કરવો નહિ.
- ૫૫-પારકાનું ધન કે જમીન દયાવવાની ઇચ્છા ન કરવી.
- ૫૬-પારકાના ગુણને પ્રલથ કરવા તેજ સાહુ-તાની નિશાની છે.
- ૫૭-પશુગમન ન કરવું.
- ૫૮-પોતાના ગોત્રમાં જન્મેલી કન્યા સાથે લગ્ન ન કરવું.
- ૫૯-પડતીના ટાઢમે બળવાનથી બાણ ન બીડવી.
- ૬૦-પોતાનું કાર્ય બગાડીને પણ પરમાર્થ કરવું.
- ૬૧-પરમાર્થના કામમાં આગસ નાખવું નહિ.
- ૬૨-પન્દ્રવ્યને છીનવી કે લુંટી લેવું નહિ.
- ૬૩-પક્ષી યાળી તેને પાજરામાં પુરવું નહિ.
- ૬૪-જીમને બ્રહ્મ કરવાની ઇચ્છા ન કરવી.
- ૬૫-માતા પિતાએ છોકરાને ઉછેરવામાં કાળજી રાખવી.
- ૬૬-મરેલાનાં વસ્ત્ર લેવાં નહિ.
- ૬૭-મરણ ક્રિયાનું જાત જમતું નહિ.
- ૬૮-મનુષ્ય જન્મ બમાડનાર ઇન્દ્રો છે, માટે તેને વશ કરવી.
- ૬૯-માન્યતા માની દેવને છેતરવા નહિ.
- ૭૦-મૂર્ખની મિત્રાચારી ન કરવી.
- ૭૧-યોગી જનોનો તિરસ્કાર ન કરવો.
- ૭૨-જાતી બેજાનનો ત્યાગ કરવો.
- ૭૩-આજીથી રંક પર્માત્મ કોઈનો તિરસ્કાર ન કરવો.
- ૭૪-હ્યાંય લેવી નહિ.
- ૭૫-વિના અધરાધે કોઈને દુઃખી ન કરવાં.
- ૭૬-શૂદ્ધને મુત્ર સહ કાપવું નહિ.
- ૭૭-વાર, કુરા, તળાવ કે કોઈપણ જળાશયનું ખાંડન ન કરવું.
- ૭૮-વિશ્વાસમાંજ પ્રભુનો અંશ છે.
- ૭૯-વિશ્વાસુને દગો કરવો નહિ.
- ૮૦-વ્રત કરનારાને વ્રતભંગ કરવા સલાહ ન આપવી.
- ૮૧-વ્યસન માત્રનો વદાલ સમજી ત્યાગ કરો.
- ૮૨-વ્યભિચાર એ મહાન દુર્ગુણ છે.

- ૮૩-વિષા વિક્રમ કરવો નહિ.
 ૮૪-શાસ્ત્રોમાં નિંદાએલી ક્રિયાઓ ન કરવી.
 ૮૫-શાસ્ત્રમાં નિંદાએલી યોગ ખાવી નહિ.
 ૮૬-સાધારણ કાર્યમાં પણ ક્રોધ ન કરવો.
 ૮૭-સ્ત્રીઓની ભુલિ પ્રમાણે વર્તવું નહિ.
 ૮૮-શત્રુને પણ દગાથી ન મારવો.
 ૮૯-સ્ત્રીઓએ પતિને પરમેશ્વર સમજી માન આપવું.
 ૯૦-સલાહ લેવા આવનારને સાખી સલાહ આપવી.
 ૯૧-શરીર નહિત શત્રુ, પણ ધર્મ નહિત ન શત્રુ.
 ૯૨-શરીરને ક્રોધવું આવઃણુ થાય તો તેને શાંત કરવો.
 ૯૩-રવરને પણ ગૌહત્યા, યાગહત્યા, સ્ત્રીહત્યા, પરક્રોહ, વિશ્વાસઘાત કાવાની પ્રવ્રજા ન કરવી.
 ૯૪-શત્રુનો ધા કરી કોપનો અંત આણવો નહિ.
 ૯૫-શત્રુ હોય છતાં સાચો અને ઉદાર હોય તો તેની સેવા કરવી.
 ૯૬-સાધુ સથે વેર ન કરવું.
 ૯૭-હાંસી કે નરહરીમાં પણ ધીમ્મને કપટ ન આપવું.
 ૯૮-હાંજીતની રમત કે જીગર રમવો નહિ.
 ૯૯-જ્ઞાનજ અંધાપો દૂર કરે છે માટે સ્વપ્રજ્ઞાન હરંકે લેવું.

૧૦૦-જ્ઞાન થયા પછીજ એ જ્ઞાનો રસનો દ્રષ્ટિગોચર થાય છે.

પ્રિય પાઠકો ! ઉપરના ઉપદેશ-શતકથી આપને કંઈપણ જ્ઞાન મળશે, તો હું મને કૃતકૃત્ય સમજીશ. ઉપદેશો અનેક છે, જ્ઞાન અગાધ છે પણ તેને ગૌહરનારનીજ ચાલુ જમાનામાં જરૂર છે. આ ઉપદેશ-શતક મારા સિદ્ધાંતો નથી, પણ આપણા પૂર્વાચાર્યોએ આપણને ધર્મમાં સ્થિર થયા બતાવેલા નીતિ-મત્રો છે. તે સર્વે સમાજ, સર્વે જ્ઞાતિવાળાને સરખાજી ઉપયોગી છે.

આ ઉપદેશ શતકના એક એક સુત્રો ગૃહસ્થના ધરની દેવાલપર કે સાવજનીક ધર્મશલા, મંદિરના સભા મંડપોમાં મોટા અક્ષરે ચોટાડાય તો હું ધારું છું કે જરૂર અસર-કર્તા નિવડે !

ૐ શાંતઃ શાંતઃ

આપણી વિધવા.

(લે.-ચંદુલાલ પીતાંબરદાસ શાહ-મુંબઈ)

[' આપણી વિધવા ' નો અર્થ વાયક સંકુચિત નહો પણ વ્યાપક રૂપમાં કરે, કારણકે નહો આ વિષય ફક્ત જૈન વિધવા નહો પરંતુ સારાંજી હિન્દુ સમાજની વિધવાના સંબંધમાં વ્યાપક રૂપે ચર્ચામાં આવ્યો છે. છતાંય વાયક સમજી લે કે આ લેખ લખવાનો મુખ્ય ઉદ્દેશ જૈન વિધવા માટે હોવાથી કેટલેક રચને દિ. જૈન સમાજને સંબંધવામાં આવ્યો છે.]

રસમય સૌભાગ્ય-જીવનમાંથી સમાજ યા કીસ્મતના એકાદ કુર નખરાથી વેકાકા શુક અને નાંકથી પણ અધીક દુઃખમય અને કરપીણ જીવન જીવનાર, આપણા હિન્દુ સમાજની ધર્મ, તપશ્રયા, શાંતિ અને ગંભીરતાની દીગ્ય મૂર્તિ સમોત્કી વાંકનીય વ્યક્તિ-જેને આપણે હૃદયથી કહીએ છીએ-તેજ ' આપણી વિધવા ' ; અને એ અવસ્થાવું જીવન એજ વેધવ્ય કે રંડાપો.

' વેધવ્ય ! રંડાપો ! ' વાયક એ શબ્દોચ્ચાર કર જે વાર ? જ્યારે એ શબ્દ માત્રના ઉચ્ચારથી તહાર હૃદય હચમચાઇ જાય છે, અને વહિબર એ જીવનાવસ્થાવું કલ્પિત ચિત્ર તહારા માનસ સંધે દોરાતાં તહને એ રાક્ષસી જીવનનો દુઃખદ ભાસ ચક્ષુતટે વરતો દરયમાન થાય છે; જ્યારે એ શબ્દ માત્રની પાછગ આટણું બહુ દુઃખદ વાતાવરણ વ્યુહ રચી રહ્યું છે, ત્યારે એ જીવનનો સાક્ષાત અનુભવ થતાં મનુષ્યની કેમી કણ્ણ સ્થિતિ જતી હશે ?

એક તો અયગા જાત, પછી ' સૌભાગ્યપદ ' ધીનવાય એટલે હૈયાતનમાં હોળી સળગે અને ' ગંગારરૂક ' અને; (સમાજ ગંગાસ્વરૂપના ઇલાલ અર્થે, પણ ગંગાસ્વરૂપ ગણે નહો, એ પણ એક હિન્દુસમાજ (અસ્થિતિય વિશ્વવિદ્યા !) અને એ હોળી સળગેલા અષ્ટદશમાને પૂર્ણ પણે પ્રજ્ઞ-

ળવા, સમાજના સિતમોના એક સામટા પ્રયોગોનાં પાપી પગરાણ મંડાય, એ સિતમો, એ નાદીર-શાહી-શીરાઝી બૃહ્મો, એ દુઃખ, એ ઠાપ, જરી-બડી રંકસમી હિન્દુવિધવાની અવશેષ શારીરિક, માનસિક, અને નૈતિક શક્તિને બસ્ત્રિભૂત કરી, લેતા જીવનને નિર્માલ્ય અને ઓજસહીન બનાવી, લેતાં રહ્યાં સહ્યાં જીવનતત્વોને વેડરી નાખી, લેતા આખાય બવને નરકાગાર સમો બનાવી દે છે. આથી વધુ જાલિમ જીવન, દુઃખોની પરતાલ સાંખી ધીર અને વીરતાંની મૂર્તિ સમી બની, કોણ જીવવાને શક્તિમાન છે ? ધન્ય હિન્દુવિધવા ! કલાપિ ઠીકજ ગાઠ ગયો છે કે : ' છે વેધવ્યમાં વધુ વિમલતા જહેની સામાજ્યથી કાંમ...'

સ્ત્રી વિધવા અને એટલે આપડીનું આવી બન્યું. હિન્દુ ધર્મની બેધારી-તાતી તલવાર લેના જીવનને રેસી નાખવા સદાય લેના માઠા ઉપર છટકી રહે છે. પતિ સ્વર્ભારોહણ કરી ગયા તેની જવાબદાર જણે પતિજ ન હોય તેમ સામરીયાં તેની પાસેથી " વેરની વસુલાત " લે છે. પુરતું ખાવાનું ન મળે. ધાસ લેવાની નવરાશ ન હોય, ડગલે અને પગલે હડધત થતી હોય, અને દુઃખથી આત્મા સંતપ્ત તો થયોજ હોય તેમાં અભિરૂઢિ તરીકે "અપશુકનિબાળ" અને 'નદારો પગલાંની' નાં વણુખાનાં પ્રમાણપત્રો મળે. દિલાસો તો કોષ જાનુંજ આપે ? શું નસીબ થોએ વેધવ્યને પ્રાપ્ત થવાથી સ્ત્રીમાંથી સ્ત્રીપણું, લેની રસીકતા, કળા અને કૌશલ્ય નષ્ટ થતાં હશે ? લેને પ્રાણુ નહીં હોય ? લેતું જીવન જીવવા થોગ્ય નહીં રહ્યું હોય ? નહીં ! એ સમાજ ! નહીં, એ હિન્દુ સમાજ ! ત્હારા સિવાય અન્ય કયો સમાજ વિધવાઓ પ્રયે આટલો બધો નિષ્કુર છે ? બતાવીશ ? જ્યારે અમુક દશા પ્રાપ્ત થવી એ કુદરતનાંજ હસ્તકે છે, ત્યારે પૃથ્વીય કે એ સમાજ ! જ્ઞાને બિચારી રંક વિધવા ઉપર પરનાળ પાડે છે ? લેને ત્હારી વેડશાહ જતી સ્ત્રી શક્તિની જરીપણુ કિંમત નથી ? સમાજ ! ત્હારે કબૂલ કરવું પડશે, નહીં કરે તો ત્હાને પાપી બંધનેતે તોડી નાખવા,

ત્હારા ઉપર શેશાઈ અને માલીકીનો દોરદમામ રાખનાર એ જૂની પ્રણુલિકાવજ, ગોક્ળગાયથી પણુ ધીમી ગતિવાળા સમાજનું નખખોદ કાઢવા સર્જએલ ઓલયા બિરાદરોને આધુનિક યુવકદળ કાન પકડીને સીધા કરો કબૂલાવશે કે, એ વેડ-શાહ જતી શક્તિનો દુરપયોગ ન કરતાં, તેમને થોગ્ય સાધનોથી કેગવવામાં આવે તો એ શક્તિ સમાજને એવી તો ઉપયોગો થાય, અને લેના (સમાજના) આત્માને એવો તો પવિત્ર અને તેજોજ્વળ બનાવે કે જે પવિત્રતા અને તેજ યુગોના યુગો વહી જાય છતાંય અન્યકો શક્તિથી મળી ન શકે.

વિધવાઓના મૂખ્ય બે વિભાગ પાડી શકાય- એક બાળવિધવા, બીજી વૃદ્ધવિધવા.

(૧) બાળવિધવા:-જન સુખનો જેણે અંશ પચ દહાવો લીધો નથી, અથવા તો જે બાળવિધવા હોય છે, તેઓમાંથી ધણીક પોતાના શીય-જનધર્મને બ્રૂટ કરી નાખે છે. મૂળ તો અજ્ઞાન અને બાળક, એટલે યુવાવસ્થાનાં જંકુરો ફૂટતાં અને અનુકૂળ સંજોગો મળી જતાં, કોષ હેવાનને દાથે શીકાર થાય, હેવાતન લૂંટાય, અને સંઘમ નિયમના શિક્ષણને અભાવે ઉજ્જલ, સાદું, અને પરોપકારી જીવન ન જીવતાં પિશચ્યો જંદગી માળે, બ્રૂટ જીવન જીવે, અને વિધવાને અડધૂત કરનાર હિન્દુ સમાજને શાપની વર્ષાથી બીંજવી દે, યદિ એકાદ વખત ચીસો ચૂકવી સ્ત્રી શરીયા ધર્મજીવન ગાળવા તપર હોય, છતાંય, જે સમાજ તેનો અસ્વિકાર કરે તો કાંતો તે અર્નતિને રસ્તે દોરવાય યા તો જેમ અનેકવાર અને છે તેમ મળે શંસો ખાય, કૂવા, હવાડા પૂરે, કે ગ્યાસલેટ જાંટી બળી મરે, ને જે સમાજ સ્વિકારે તો કરેલાં દુઃખુચને પરિતાપવા માટે આદર્શ જીવન જીવે, અને સમાજમાં આવતી અન્ય વિધવાઓને આત્મ દુષ્ટાંત દ્વારા અન્ય પથે વાળે, અને લેમની શક્તિ વેડવાતી બચે.

વાંચક ! બાળવિધવાના જીવનની, લેની પરિસ્થિતિ અને તેથી સાંપડતાં પરિણામોની આહી

રૂપરેખા દોરી આપણે એકાદ બે સંતાનની માતા થઈ ચૂકી હોય એવી વિધવાની હવે વાત કરીએ. આ અવસ્થામાં મૂકાએલ ખહેનોની સ્થિતિ આજવિ-ધવાથી રહેજ પશુ ઉતરે તેમ નથી. જે વયોવૃદ્ધ હોય તે તો શક્તિઓને દાખી દે છે, અને આદર્શ જીવન જીવે છે, પરંતુ જે પૌઠા હોય, જેના ઉપર સંતાન ભરણપોષણનો બોજો પડ્યો હોય છે તેને માટે અવગે પંચે પડવાનાં અનેક કારણો હોય છે. એવી વિધવાઓ ધણે બાગે દલણ્યાં દળીને જીવન નિર્વાહ કરે છે, કારણ કે હિંદુ વિધવાનો પોતાના પતિની વડીલોપાર્જીત તેમ સ્વેાપાર્જીત મિલકતપર બહુજ ઝોહો દક્ક હોય છે. યદિ પતિનું કુટુંબ અવિભક્ત હોય અને એ દરમિયાન પતિ મરી ગય તો તેની વિધવાને માત્ર ભરણપોષણ મળે છે. પતિ તરશ્થી કાંઈજ રોકક મિલકત ન મળી હોય અને પાછળ છોકરાં હોય, અને દલણ્યાં દળે પુરૂં ન થાય, તો છાનાં જીવનાં વાસણુ-કુસણુો વેચો, રાચરચીલું છિન્નચિન્ન કરે, અવેજ વેચે, પસલુ હોય તો તે પશુ વેડશી દે, અને તેથીય પુરૂં ન થાય તો પૂછીશ કે એ હિંદુ સમાજ ! એ આપડીનો શો આશરો ? પોતે શું ખાય, તે ટળવળતાં બાળ-કને શું ખવાડે ? નથી વિધવા શંક કે નથી વિધવા આશ્રમ. છે તો ગણ્યા ગાંઠ્યા વિધવાઈ માટે છાત્રાલયો હોય, શિષ્ય શક્તિઓ ઓંઠ્યાય; વિધ-વાઓ માટે એક ફૂરી યદામ પશુ છે ? તેમને માટે સમાજે શું વ્યવસ્થા કીધી છે ? (સારીય દિગંચરી આલમમાં હું જાણું છું ત્યાં સુધી સુખાષ, સોજાત્રા, ઈંદોર, આરા, દિલી વગેરે ચાર પાંચ શ્રાવિકા આ-શ્રમ છે) ત્હેમના જીવનને ઉપયોગી બનાવવા કેટલા સમાજ હિતેન્મુજો પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે ? ત્હેમને માટે કેટલા આશ્રમો છે ? વિધવાઈ માટે કેટલાં વિધવાઈ-ગૃહો છે ? શાને વસે કોહના દિલમાં ખિચારી વિધવાઓ જ્યાં કેવળ તેમની પ્રલે આંખમીયામણ્યાં હોય ત્યાં ? કીક, ગરગથુ કે 'ગૃહકલોગ' આપણા સમાજમાં કેટલા છે ? ત્યારે એ ઉકરડે ઉછેટાતા કચરાની માલક વેડશી દેવાની વિધવાઓનો 'ઉપર આજ અને નીચે ધરતી' સિવાય અન્ય શો વિસામો

રહો ? આવી દશામાં તે પાપ પચે વળે, તેમાં શી નવાષ ?

વાચક વિધવાઓની હાડમારીના હવે ત્હેને ખ્યાલ આવ્યો હશે. હિંદુ સમાજને વિધવાઓની કેટલી પડી છે તે પશુ જાણ્યું હશે. શું ત્હારું હૃદય એમ નથી માનતું કે આ સમાજનો દોષ છે ?

આ પ્રમાણે વિધવાની વર્તમાન પરિસ્થિતિ નિહાળી, ત્હેના જીવનની કરપીણ પરિસ્થિતિ નિહાળી, ત્હેના જીવનની કરપીણ કથા જાણી; એટલે આપણે એજ વિચારવાનું રહ્યું કે વિધ-વાઓ શું કરીએ તો શુદ્ધ, કર્તવ્યપરાયણ, અને સમાજ સેવિકા બની જ્વાળવલ્લયવાન અને આદર્શ જીવન જીવતાં શીખે. મ્હેને નીચેના ઉપાયો ત્હેને માટે સુજે છે:-

૧-વિધવા આશ્રમો ન હોય એવે સ્થાને સગવડ પડતાં અન્ય વિધવાગૃહો સ્થપાય. (એટલે કે તેમની સંખ્યામાં અભિવૃદ્ધિ થાય. અમદાવાદ જેવું સ્થાન સગવડખુ િતરડે.)

૨-વિધવાઓ માટે ગૃહકલોગનો પ્રતિબંધ થાય; સાધનો સમાજ એક યા બીજી રીતે પૂરાં પાડે.

૩-ધાર્મિક શિક્ષણની અવમ વ્યવસ્થા થાય.

૪-પતિની સંપત્તિનો સંપૂર્ણ હીસ્સો મળે. (પુત્રો હોય તો અર્ધી મીલકત મળે.)

નોંધ:-દક્ક વિધવાશ્રમ ખોલાય તો છેલ્લાં ત્રણ તેનાં ખાસ આવશ્યક અંગો હોવાં જોઈએ. સમાજમાં રહી, સાસરીયામાં કે એકલી રહી જીવન જીવતી વિધવાઓ માટે છેલ્લાં ત્રણ આવ-શ્યક અંગોનો જે સમાજ તરશ્થી પ્રતિબંધ થાય તો મ્હારું માનવું છે કે વિધવાનું જીવન સુધરે, અને ધર બેઠાં બેઠાં, આશ્રમમાં બાલબચ્યાં હોવાથી ન જવાતું હોય તોપણ આત્મનિર્વાહ કરી શકે.

દિગંચર જૈન સમાજ આટલી વિચ્છિન્ન ધ્યાનમાં લેશે કે ? અને વિધવા જીવનના પ્રખર અવ્યાસી આ લેખ ઉપર પ્રકાશ પાડશે કે ? ખહેનોને પુરૂષો કરતાં આ જીવનનું વધુ માન હોય એ સ્પષ્ટ છે; કોઈ ખહેન આ વિષયને વધુ ચર્ચશે તો મહાન ઉપકાર !

નિજનંદ વિનાના જીવનની નિષ્ફલતા.

(લેન્-ત્રલુવન રાયચંદ શાહ-ભાવનગર)

સંસારી રનેહનું સ્વરૂપ અચળ અને નાશ-વંત છે. માત, તાત, માઇ, ખેન, પુત્ર, મિત્ર, મિત્રવંદાલા-એ સંહુનો વિયોગ છેવટનો સર્ગચે-જાળ છે. આત્માના એ કોઇ સદા માટે સાથી નથી. આત્માના પરિણામો અને સારાં નરસાં કર્મો સંદા માટે માત્ર સાથી છે. સૌ સૌનો આત્મા દેહ અને દુનિયાને છોડી મરણ પછી કર્માનુસાર માર્ગે ચાલ્યો જાય છે. સંસારી રનેહના આનંદ અને લાભો જ્યાં સુધી દેહ છે ત્યાં સુધીજ રહી શકે છે અથવા રાખી પણ શકાય છે. સંસારીઓ એવા રનેહના વિયોગથી ઉદ્ભવતા દુઃખો અને પરિતાપો બોમને છે. એવાં દુઃખો અને પરિતાપોની અગ્નિ બુદ્ધિવવાનો સરલ માર્ગ એ છે કે આ-ત્માનો આનંદ જે અજર-અમર છે તે અનુભવતાં શીખવું. દુઃખો અને પરિતાપોમાંથી છૂટવું હોય તો સંસારમાં નિર્મમત્વ બુદ્ધિ રાખ્યેજ છૂટકે. જ્યાં સુધી અને જેટલા સંસારી રનેહનાં સુખ કે આનંદ નિર્માયા હોય ત્યાં સુધી અને તેટલાંજ તે જોમવી શકાય. તેથી સંસારી સુખથી પુલાવું ન જોઇએ, તેમ દુઃખમાં ગમરાવું ન જોઇએ. દુઃખમાં ગમરાયાથી કે પરિતાપ કરવાથી કંઈ દુખ બોધું વંતું નથી પણ ઉદ્ધું તેથી તે આત્મધ્યાન થાય છે અને અશુભ કર્મનો બંધ થાય છે. સંસારનો મોહ સંસારીઓને આત્માના આનંદનું બાન બુલાવી દે છે પણ સંસારમાં એવા પણ સમયો આવે જાય છે કે જે વખતે આપણે સંસારનાં સ્નેહ અને સુખ વિના સુના હોઇએ છીએ અને તે વખતે આપણને જે પરિતાપો અને ગ્સાનિઓ થાય છે તે મિટાવવા માટે આત્માના આનંદના-નિજનંદના અનુભવના સિવાય બીજો કોઇ સમય ઉપાયજ નથી રહેતો. મુઠ અનિષ્ટની ભાવના

આપણે છોડ્યા વિના ઉપાયજ નથી. આત્માના શુદ્ધ પરિણામોજ દુઃખને દૂર કરવામાં મદદગાર થશે. અને તેથીજ ભાવિ ઉજ્જવલ થશે.

સંસાર એટલે એક પ્રકારના નાટકનો ખેત્ર, તેમાં આપણે વેષ ભજવતા હોઇએ તેમ આપણે સંસારની દરેક ડરને બળવવી જોઇએ એટલે સંસારનાં સુખ દુઃખોની અસર નાટકના વેષ ભજવવાના જેવી હોવી જોઇએ. નાટકના પાત્રના જેમ સુખ દુઃખ અમુક સમય સુધીનાં હોય છે તેમ આપણે પણ સંસારનાં સુખ દુઃખ નાશવંત હોવાથી આપણને તેની અસર આપણા આત્મા પર થતી અટકવી જોઇએ. આત્માનંદ અથવા રવાનુ જીવિ અને ધર્મ સાધન માટે સત્સંગ થાય તેવું વાતાવરણ ઉભું કરવું અથવા પસંદ કરવું. એટલે તમેને તેના પ્રભાવે અવનવી દુનિયા અને અવ-નવો રનેહ દેખાશે. સંસારની ડરને તો સંસાર ત્યાગની દશામાંજ છોડી શકાય કેમકે તેવીજ દશામાં તો આખી દુનિયાજ પોતાની થાય છે અને આખી દુનિયાનું કલ્યાણ અને પોતાનું કલ્યાણ કરવાની ડરનેમાં સંસારની ડરનેનો અવકાશ રહેતો નથી. સંસારની ડરને બળવવામાં પણ આત્માનંદના અનુભવ વિનાનું જીવન સાર્થક નથી. સંસારના વ્યવહાર સાચવતાં પણ કમલ કીચડમાં અલિપ્ત રહે તેમ અલિપ્ત રહેવાય એટલે સંસારના દર્પ-શોકથી અલિપ્ત રહેવાય. સંસારમાં રહ્યા છતાં તેમાં ધમતા ન રહે તો તે સમય આત્માનંદ અનુભવી શકાય અને આત્માની-જીવ-નની ઉત્તિ થઇ શકે. સંસારમાં શુદ્ધ નિસ્વાર્થ રનેહની દહાણો કે તેવા રનેહના વ્યવહારો અને સ્વપર કલ્યાણ એ જીવનની સાર્થકતાના-આત્માની ઉત્તિના ઉપાયો-માર્ગો છે અને તેવા માર્ગોમાં

જેટલું ચલાય તેટલી સાર્થકતા. તે વિનાની તો મનુષ્ય પર્યાય અને પશુ પર્યાય સરખીજ છે. શારીરિક બળથી કે બુદ્ધિબળથી માત્ર પેટ ભરવું અને બહુ તો દુનિયાની નાશવંત કહેવાતી મજાઓ લૂંટી નાશ પામવું અથવા સુખ દુઃખો ભોગવવી પાછા બીજી પર્યાયમાં સુખ દુઃખો ભોગવવા બનું અને એ પ્રમાણે પર્યાયોમાં અથકામણીઓ કર્યો જવી કે જેનો કંઈ અંતજ નથી. એવી અથકામણીઓમાંથી છૂટવાનો ઉપાય મનુષ્ય પર્યાય છે અને તે પર્યાય જો નિરર્થક ગુમાવી તો ફરીવાર તે મળશે કે નહિ તે તો શકાજ રહે કેમકે સત્કર્મોજ મનુષ્ય પર્યાય પમાડી શકે અને તે ન થયા તો મનુષ્ય પર્યાય દુરજ છે. અને તે મનુષ્ય પર્યાયમાં નિજનંદજ અક્ષય સુખને પમાડનારો છે. આત્માની અગાધ શક્તિ ઉંચ મજબુત શ્રદ્ધા રહેશે તોજ હર્ષ-શોકના અને આતંધ્યાનનાં પ્રમંગો નહીં આવે. આત્માનો સ્વાભાવિક યુજ-નિજનંદ પ્રક્ટી નીકળશે. અને સુખ દુઃખો-દર્ષ શોકો દુનિયામાં જે વળે છે તે અસર નહીં કરી શકે. સંસારીઓ એવી નિજનંદ દશામાં ખરો વખત તો રહી શકવા મુશ્કેલ ગણાય તેમ છતાં સંસારની સારી નરતો પણ વિચોગને માટે સરજાએલી અર્ધી વસ્તુઓ સાથેના વ્યવહારમાં નિજનંદને એક સદાનો ખરો સાથી છે તેને જેમ અને તેમ બુલવો ન જોઈએ અને તે જો નહિં બુલાય તો જીવન રસમય અને સાર્થક થશે-વિપત્તિઓ અસર નહીં કરે-સંસારના મોહવું દુઃખ નહીં થાય અને શાશ્વત સુખની અથવા શુભ કર્મોની પ્રાપ્તિ થવાનો સંદેહ દુર થશે. શુભ કર્મોની પ્રાપ્તિથી સંસારમાં શોકને બહોલે હર્ષ અને દુઃખને બદલે સુખ પણ પાસે આવશે. સંસારી કરજો બળવવામાં પણ નિજનંદ જીવન અડચણુ રૂપ નહીં થાય પણ તેથી તો બહુ સરસતાથી તે શરજો બળવાથી કેમકે નિજનંદથી સંસારી શરજો નિષ્કામપણાથી બળવાથી. કર્મવ્યેવાધિકારસ્તે મા ફલેષુ કદાચન । તેવી રીતે કરજો ખરા દિલથી બળવવાથી તેવું પરિણામ સારું કે નરસું જીવનની સાર્થકતામાં અંતરાયરૂપ

નહીં થાય, અને તેવી શરજો બુધાચેત્ય રીતે બળવવામાં ઉલ્ટી સરલતા થશે. એવા નિજનંદમય અને સ્વપર હિત સાધક જીવનથી સર્વ પ્રાણીઓને અપનાવી શકાશે અને સર્વ પ્રાણીઓની સહાય અણુધારી મળવાના સંજોગો ઉભા રહેશે- અને અશુભ કર્મો દુર રહેવાથી તેવા જીવન માટે સુખ સરજવા વિના નહીં રહે. સૌ જનોજ એક જીવન ગાળી મનુષ્ય જીવનની સાર્થકતાને પામે એજ અભ્યર્થના. કવચં ઐ શાંતિ ! શાંતિ !



ધર્મની આરાધના.

એક સરખા દિવસ સુખના, કાષ્ટના ભતા નહીં-એક સમ
 એક સરખા દિવસ સુખના,
 ધર્મના મળતા નહીં.
 તેથીજ શાણા શાહુબીથી,
 તે દીનો ખોતા નહીં-એક
 નરદેહ આ છે નાશવંત,
 ફરીજ મળશે કે નહિ.
 તેથીજ શાણા સફલ કરતા,
 જન્મ નિજરૂપ, ધ્યાનથી-એક
 લક્ષ્મી મળેા યા ના મળેા,
 તેની તેને પરવા નથી.
 કીર્તિ મળેા યા ના મળેા,
 નિજ ધર્મને ભૂલતા નથી-એક
 ધન ધાન્ય પુત્ર ને સ્ત્રી સખા,
 નિજ માત તાત સહુ મુકી.
 જીવું અકેલા નીજ વાટે,
 ધર્મ એક સાથે સહી-એક
 સાર ત્રિભુવન સમજ લ્યો એ,
 કહે પ્રેમથી વીનવી.
 સતસંગ જિન ગુરૂ શાસ્ત્રીનો,
 વ્યર્થ તુમ ખોતા નહીં-એક
 ત્રિભુવન રાયવંદશાહ-ભાવનમરૂ

સાધનાની શરૂઆત.

મન સુધારવાથી વચન અને શરીર સુધરે છે, મન બગડવાથી સર્વસ્વ બગડે છે, શરૂઆતમાં બધા દુઃખો મનમાં જ ઉત્પન્ન થાય છે પછી વચન અને શરીરમાં હૃદયની દુષ્ટ ભાવનાઓ કાર્યરૂપે પ્રગટ થાય છે. મનને કેળવવા પ્રથમ આજ્ઞા સને દુર કરવું અવશ્ય જરૂરી છે. આ પ્રથમ પગથી છે તેના ઉપર પગ મૂક્યા પિવાય માળ ચઢી શકાય નહીં, આજ્ઞા પ્રભુના આગ્રહને કાંતો રસ્તો રોકે છે બધવા રસ્તો લુહાવે છે, જરૂરી-યાતથી નિર્દા વધારે ન લેતી, શરીર આજ્ઞા અને તેટલી વધારે વિશ્રાંતિ શરીરને ન આપવી, કામકાજથી કંટાળવું નહીં, ધીમે ધીમે કામ કરી કોઈ કામમાં વધારે વખત વિતાવવો નહીં. જમ્યા પહેલાં કે પછી સવાર સાંજ નકામાં ગરખાં મારવામાં વખત ન કાઢવો, નિરંતર વહેલા ઉદવાની ટેવ પાડવી, શરીરને જરૂર જેટલો વિકાસ આપવો, પેટ ભરીને મળા સુધી ખાવાની ટેવ ન રાખવી, આ બધું કર્તવ્ય એ હૃદય જીવનનું ખીણું પગથીયું છે. નિરંતર અસુખ પ્રમાણમાં જીવે ખાવી, તેની ગણતરી કરી રાખવી અને ઓછી વસ્તુઓ ખાવી, સ્વચ્છ અને સાદા ખોરાક લેવો, બોજનને વખત નક્કી કરી રાખવો, ઇચ્છામાં આવે ત્યારે ન ખાવું પણ કંઈને લુખ લાગે ત્યારે ખાવું, રાત્રીએ બોજન ન કરવું કેમકે તેથી નિદ્રા વિશેષ આવે છે, સ્વાદ માટે કે મનને રાજી રાખવા ખાતર ન ખાવું, હૃદયની ઇચ્છા એ સ્વચ્છ વૃત્તિ છે તેથી હૃદયને સ્વતંત્ર બનાવી પવિત્ર કરવું. શારીરિક સંયમની રક્ષા કરતી શક્તિ પૂર્વક કામ કરવું. વાણીના દોષો દુર થાય છે ત્યારે સત્યતા, વિશ્વાસ, સત્કાર, હયાજીવા અને આત્મ સંયમ વિગેરે ગુણોને પોષણ મળે છે, તે માનસીક સ્થિરતા અને દ્રઢ પ્રતિજ્ઞા ધાળવાનું પણ પ્રાપ્ત કરે છે, કર્તવ્યનું ધરાધર પ્રાપ્ત કર્યા વિના હૃદય સદુચ્છોની પ્રાપ્તિ અને

સત્યનું જ્ઞાન થવું નથી, સ્વાર્થની દ્રષ્ટિ રાખ્યા વિના પ્રમાણિકતાથી કર્તવ્યનું પાલન કરવું જોઈએ. ખોટા વશ કે લાલની આશાથી હલને ઉપયોગ ન કરવો, મન વચન અને કર્તવ્યમાં પ્રમાણિક થવું, અન્યાય અને પક્ષપાત રહીત વ્યવહાર કરવો. સ્વપ્નમાં પણ તે વિચારો ન આવે ત્યારે હૃદય શુદ્ધ અને ઉદાર બને છે, ક્ષમાની ભાવનાનો વિકાસ કરવાથી દેવ, વેર, ઇર્ષ્યા વિગેરે દુર થાય છે, ક્ષમા અને દાનની પ્રવૃત્તિથી જીવનને વિકાસ થાય છે, વેર આદિની ભાવવાને દુર કરવાથી તેનીમાંથી કોઈ શત્રુ રહેતો નથી, સ્વાર્થ ત્યાગમાંથી દાન અને ઉદારતા પ્રગટે છે, આ પ્રમાણે અંતઃકરણનું પરાવર્તન કરવાથી આત્માની અધિક ઉન્નતિ થાય છે. જે કોઈ પોતાના શરીર વચન અને મનને દ્રઢતાથી શીખામણ આપે છે, પોતાને વશ રાખે છે તે દુઃખો અને કુવાસનાઓ ઉપર વિજય મેળવે છે. સંસારના સર્વ પાપો કેવળ અજ્ઞાનતાથી પ્રગટે છે. જ્યાંસુધી અજ્ઞાનતાના પાપનું દમન કરવામાં નહીં આવે ત્યાંસુધી આતંદની પ્રાપ્તિ કોઈપણ વખતે નહીં જ થાય. સર્વ જાતનાં દુઃખ મનની દુષ્ટ ભાવનામાંથી જ પ્રગટે છે અને સર્વ જાતનાં સુખ મનની સારી ભાવનામાંથી ઉત્પન્ન થાય છે. સુખ એ મનનો વ્યવસ્થાપૂર્વક વ્યય છે. દુઃખ એ અવ્યવસ્થાપૂર્વક અનુચિત મનનો કરેલો ઉપયોગ છે. જ્યાંસુધી મનનો અનુચિત ભાવનામાં અનુચ્ચ પ્રવેશ કર્યા કરશે ત્યાંસુધી જીવન અનુચિતપણે પસાર થશે. જીલ કરવી એ શોકનું કારણ છે. જ્ઞાનમાંથી જ આતંદની ઉત્પત્તિ છે. અજ્ઞાન અને મોહને નાશ કરવામાં મુક્તિ રહેલી છે. જ્યાં મનની અનુચિત ભાવના અને પ્રવૃત્તિ છે ત્યાં બંધન છે અને જ્યાં ઉચીત ભાવના છે ત્યાં સ્વતંત્રતા અને શાંતિ છે.

હૃદયોવનદાસ નેમચંદ વખારીયા-મુંબઇ.

चातुर्मास किया ।

मुनि, त्यागियोंके चातुर्मासके विशेष समाचार इस प्रकार मिळे हैं—

मुनिश्री शान्तिसागरजी (छानी)	इन्दौर
ब्र० विश्वरीकाकजी	भिड
ब्र० कंकुबाईजी	बम्बई
ब्र० बोधीचंद्रजी	कुन्धलगिरि
ब्र० प्रेमसागरजी	रंठी
ब्र० महावीरपमादजी	शिरडशहापुर
ब्र० कन्नैयाकाकजी	कलड
ब्र० पार्श्वसागरजी	कुन्धकांगिरि
म० विशालकीर्तिजी	साहगांव (परमणी)
ब्र० बिताणणीसागरजी	आक्रोट
ब्र० वीरसागरजी	पिंपरी
ब्र० लेमिसागरजी	भायवत
मुनि धर्मसागरजी	बागणी (कोल्हापुर)
ब्र० फतेहसागरजी	ठाकडुंडा
म० जयकीर्तिजी	रामगढ़ (डुंगरपुर)
प्रे० प्रेमसागर व चंद्रसागरजी	फिरोजाबाद
बदासीन जयजीवसागरजी	साधना
मुनि ज्ञानसागरजी	पिंपरी (नाळव)
ब्र० धूमसिंहजी	कैरावा (मुम्बईनगर)
ब्र० रंगीलाक व किशोरीकाक	बागोदींग
ब्र० केशरीमलजी	इन्दौर छावनी
ब्र० गोरेकाक व ब्र० स्वप्नसिंह आदि	कुंडलपुर

तीर्थरसा फंडके लिये—तीर्थक्षेत्र कमेटीकी ओरसे रायचंद जैन मुनीम तथा जैनसुख जैन भ्रमणार्थ भेजे गये हैं ।

अलवा—ना दि. जैन मंदिर श्रद्धांवार माटे दीप करवा कापुराभ अथवाक अने छोटासाक तलकचंद गुजरातमां भ्रमण करी रखा छे,

उज्जैनिया—मां रक्षा अर्धन परं सारी रीते उज्जवाये हते। पाठशाणा सारी रीते आवे छे. १५ विवाधीं लखे छे.

सोशत्रा आविकाश्रम—ने ५०) समस्त अरेन असुखअना स्मरणार्थी भज्या छे तथा ५) मासिकनी सदायता जुभेली आम छरट इंड मुभासथी भज्या छे. अत्रे म्हा अर्धन परं समथे अ. सुरेद्रसीर्तिछमे वज्जाने यद्यो पवित संस्कार कराय्यो हतेने धामधुमधी सवृता पूजन क्युं हतुं.

आननगरमां—मां २०) शै. रायचंद श्रीमोवनसतनी पत्नी बुद्धदेवसाधना नामना २०००) ना हानथी दिगंबर जैन भद्रिका शिवशुशाणा हभल्यां शै. सुनीयाक मुधासयंदना प्रमुअपश्या नीचे स्थपन कइ छे ते वपते ७५) मज्जसाक शै. ५२) प्रमुअे तथा १२८) ना सीपवाने सथी भेट भज्ये छे.

पडेहरा—ना भाई जमनासाक ताराचंद म. गांधीछ परडया त्पारथी कभ छोडी छ भाव दूध हण पर रहे छे. हभल्यां सगत मांदा पडेखा पक्ष पोताने नियम पक्ष रीते सायथ्यो हते।


जैन व्रतकथासंग्रह—

जिसमें रविवार, रत्नचक्र, दशलक्षण, सोलहकारण, श्रुतस्कंध, त्रिलोक तीज, मुकुट सप्तमी, फलदशमी, अवणद्वादशी, ऐश्विणीव्रत, आकाशपंचमी, कोकिलापंचमी, चंदनपछी, त्रिशोपसप्तमी, निःशल्य अष्टमी, सुर्गपदशमी, जिनरात्रि, मेघमाला, लण्घिविधान, मौन एकादशी, गहडपंचमी, द्वादशी, अनंतव्रत, अष्टानिका, पुष्पांजलि, बारहसौ चोतीस आदि अनेक व्रतोंकी कथाएं विधि सहित हैं। शास्त्राकार ३० १२० मू० १)

मैनेजर, वि० जैन पुस्तकालय—सूरत ।

नवीन पुस्तकें-

नव-रत्न ।

इसमें  स्वारवेक, चामुंडराय, मार-
सिंह, आविषाण्वे व सती रानी ये
ना० कामताप्रसादजी रचित
जमी ही छपी हैं । प्र० ८० व मू० छह आने ।

बुधजन सतसई (फिर तैशार है) ॥३॥

सम्यक्त कौमुदी-(आठ अध्याएँ) ॥३॥

गोमट्टस्वामी (नवीन रंगीन चित्र) ॥३॥

हिन्दी जैन विवाहविधि ।

पं० मूलचन्द्र जैन वरमक कृत जैन विवाहविधि
सरक हिन्दी भाषामें सिद्धयंत्रादि तीन नकशे
सहित । इससे विना पंडितके जैन विवाह संपन्न
करा सकेंगे । बीडकुल नवीन । मूल्य-पाँच आने ।

प्रश्नोत्तर श्रावकाचार-

नवीन शास्त्र १॥)

सूर्यप्रकाश (नवीन शास्त्र) २)

सिद्धक्षेत्रपूजासंग्रह ।

कभी सिद्धक्षेत्र व आतिशयक्षेत्रकी पूजाएँ मू. १॥)

जैन गीतावली-(१०९ गीतोंका संग्रह) ॥३॥

तत्त्वभावना (नवीन शास्त्र) सचित्र व

सामायिक पाठ सहित

॥३॥

पवित्र केशर--१॥) की तोडा

दशांग धूप--२॥) की रतक

अगरबत्ती--१॥) की रतक

जैन गीतावली ।

सन्तानोत्पत्ति, मुंडन, विवाह, ज्यौनार, तीर्थ-
बंदना आदिमें गाने योग्य १०९गीत । मू० ॥)

सतीचरित्र और शीलमहिमा ।

इसमें सतियोंके चरित्र हैं । पृष्ठ ६० मूल्य १-

समोशरण पूजनविधान ।

ब्र० अगवानसागरजी कृत, बड़ी साइझ, बड़े
टाईप, २९ नकशे व सन्निरुद । मू० १॥३॥

निश्चयधर्मका मनन १॥)

→ॐ प्रबोधसार । ॐ←

महापंडित यशकीर्ति विरचित मूल श्लोक व पं० आठ-
रायजी शास्त्रीकृत हिन्दी अर्थ व भाषाएँ सहित । मू० १॥)

तीर्थकर चित्रावलि ।

२४ तीर्थकरोंके रंगबेरंगी २४ अलग बड़े २ चित्र
कांचमें जडवाकर मंदिरोंमें रखने योग्य यह चित्रावलि
अवश्य मगाइये । मूल्य ३)

दो नये रंगीन चित्र ।

समवसरणकी रचना (साइड सभाएं सहित) ॥३॥

श्री गोम्मटस्वामी (विष्णुवागिरि पहाड़ सहित) ॥३॥

तीर्थकर चित्रावलि (२४ मित्र २ रंगीन चित्र) १)

और भी बड़े २ रंगीन चित्र-शिकारजी ॥), आ०

कांतिसायजी ॥), चम्पापुरी ॥), पावापुरी ॥),

शिरनार ॥), सोलह स्वप्न ॥), चन्द्रगुप्तके स्वप्न ॥)

संधारवृक्ष ॥), बट्टेदेव्या स्वल्प ॥), सीताजीकी

अग्नि परीक्षा ॥), जन्मकर्मणक ॥), आहारान, ॥)

अ० पार्श्वनाथ ॥) ये चित्र तथा तीर्थ व स्वामियोंके १५

प्रकारके एक आनेवाले चित्र भी अवश्य २ मगाइये ।

जैनरत्न, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया बकलासुरतमें मूलचन्द्र किशनदास कापड़ियाने मुद्रित किया
और दिगम्बर जैन" ऑफिस चन्दावाड़ी सुरतसे उन्होंने ही प्रकट किया ।



सम्पादकः—मूलचन्द्र किसनदास कापड़िया—मुरवा।

विषयानुक्रमणिका.

नं०	विषय.	पृष्.
१-२	संपादकीय वक्तव्य, जयसमाचार ३२९-३०३	
३	ध्यानका मूषक (वि. महेंद्रकुमार) ४०७	
४	सामाजिक हृदियां व जैनधर्म ४०९	
५	उपन्यंत ज्वाला (पं० मूलचंद्र जैन) ४१२	
६	शरीरको निरोगी रखनेके नियम ४१४	
७-८	घरको न चाटकी, विनिद्वेषोन मद्रा. ४१५-१६	
९-१०	पतन, सुभाषित-गन्तसंदोह, ४१७-१८	
११-१२	त्यागधर्मकी महिमा, परीक्षित प्रयोग ४२०-२२	
१३	धर्माजीनतिनो मखल उपाय ४२३	
१४-१६	निर्वाण उत्तम० संपाद, तुलशी गुण ४२७-२८	

वर्ष २३वां
अंक ११.

मार्ग सं० २४/१६
भाद्रपद.

लेखकोंको आमंत्रण ।

आगामी वर्षान्त तकके प्रारम्भमें भी "दिगम्बर जैन" का सचिव विशेषांक प्रकट होगा उसके लिये विद्वान लेखक व कविगण हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी व संस्कृत भाषाके लेख व कविताएं पत्र माहके मातृ २ तैयार करके भेजनेकी कृपा करें। (सं. २३)

उपहारके पोरटेज सहित वार्षिक मूल्य २। विशेषांक मूल्य ३।।

सुरतमां साडेरब्यंद सरैयाने सभ्त
 हेडः—अत्रेना जैनेमां अग्रगण्य अने राष्ट्रीय
 कार्यकर्ता भाष छगनबाब छतमब्यंद सरैया तो
 नासिकनी जेसमां ११ वर्षानी जेस लोगी रखा
 छे जे दरम्यानमां जेमना १५ वर्षानी अनीज
 भाष साडेरब्यंद अगनबाब सरैया तथा जेमना
 जे नोडरे इस्तु ब्यंद श्वे. जैन अने छगन भाषीने
 आधीछती ११ शरतेने प्रिटिश्च राज्य जेवा
 जे पैसावाण इटो पेतानी दुकाने वेयवा भाटे
 सरकार तरईयो जे भाषयो पासि जे ४ वर्षानी
 सारी आसनी जभातनीरी भांगवाभां आवी ते
 तेजेजे स्वमान सायववा न आपी तेथी सरकारे
 जे त्छेने १-१ वर्षा सादी हेदनी सज कती छे
 तथा भाष साडेरब्यंदने पणी पेतानी दुकानपर
 राष्ट्रीय समाचारो लपनीने सुकाटुं पाटीडं लटका-
 ववा भाटे हेस मेघावी १५०) हंड इरवाभां
 आव्यो जे पक्ष न अरवाथी र भास सभ्त
 हेदनी सज थक छे. आ प्रमाणे वीर अणक
 साडेरब्यंद सरैया बाब तो १४ भास भाटे सरकार-
 रना भडेमान अन्या छे ने जेमने सापरमती
 जेसमां लक्ष जेवामां आव्यो छे. भाष साडेरब्यंद
 वजेने अभिनंदन आपवा भाटे सुरतमां लडेर
 सभा बड हती तथा दिग्भ्यं जेतोनी जेक सभा
 पक्ष नवाण कुनगडीयो झा. अभिनवात्र तलस्यंद
 सुभडियाना प्रसुभपणु नीये जणा हती जेमां
 झा. अजतल ल सुतगीया, भाषडियाछ अने पं. पर-
 मेष्टायासछना विवेचनपूर्वक साडेरब्यंद वजेने
 अभिनंदन आपवानो हराव पास क्यो हने जेमां
 सरकारनी आवी जेदुनी हभननीतिने जवाभ
 आपवा जैनेने राष्ट्रीय कार्यमां विशेष हाणे
 आपवानी सुयना अपाठ हती. पणी धारासभा
 पीडतीम वपने सुरतना जैन युवक ने पाण
 जेनिशेजे लक्ष्मीने भार के पठहावानी थक छोडी
 इध सकिया हाणे आपेयो तेभने पक्ष अभिनंदन
 अपायुं हवुं.

दो नये रंगीन चित्र ।

समवसरणकी रचना (शाह समाएं सहित) ॥
 श्री गोम्मटस्वामी (विष्वागिरि पहाड सहित) ॥
 तीर्थंकर चित्रावलि (२४ भिन्न रंगीन चित्र) १

और मो बडेर रंगीन चित्र-शिवरजी ॥, आ०
 शातिसागरजी ॥, चम्गापुरी (=), पावापुरी (=),
 गिगना (=), सोलह स्वप्न ॥), चन्द्रयुपके स्वप्न ॥)
 संसारवृक्ष (=), षट्छेद्या स्वरूप (=), सीताजीकी
 अग्नि परीक्षा ॥), जन्मकल्याणक ॥), आहारदान, १)
 म० पाशनाथ (=) ये चित्र तथा तीर्थ व त्वाणियोंके १५
 प्रकारके एक आनेवाले चित्र भी अवश्य मगाइये ।

भगवान पार्वनाथ सचित्र ।

हम अपूर्व पुस्तकमें भगवान पार्वनाथका
 चरित्र सरक हिन्दी भाषामें लिखा गया है ।
 पाठमें बहुत ही मनोहर पार्वनाथ स्वामीका
 चित्र है । हमे देखकर मन शान्त होन वेगा ।
 यह पुस्तक सर्वव्यापारणमें बितरण करने लायक
 भी है । मूल्य मात्र ३=)॥

जैन व्रतकथामं पह-

जितमें रविवार, रत्नत्रय, दशलक्षण, सोलहकारण,
 श्रुतसंक्षेप, विलाक तीज, मुकुट सप्तमी, फलदशमी,
 श्रवणद्वादशी, रोहिणीव्रत, आकाशपंचमी, कोकिलार-
 चमी, चंदनपञ्चमी, निर्दोषसप्तमी, निःशस्य अष्टमी, सुग-
 षदशमी, जिनरात्रि, मेषमाला, लखिविधान, मौन
 एकादशी, गरुडपंचमी, द्वादशी, अनंतव्रत, अष्टानिका,
 पुष्पांजलि, वारहमी चौतीस आदि अनेक व्रतोंकी
 कथाएं विधि सहित हैं । शास्त्राकार पृ० १२० मू० १)
 दीवालीके कार्ड व चिट्ठियां ॥) १॥) सें०
 दशांग धूप--२॥) की रत्नक
 अगारवत्ती--१॥) की रत्नक

मैनेजर-दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।

दिगम्बर जैन



बालवीर—माकरचंद्र मगनलाल मैथ्या—सूरत,

(उस नमिहपुरा जैन बालकको राष्ट्रीय सयाग्रहसंग्राममें १ वर्षकी सादी
व २ माहकी सभ्त कैद हुई है।)

। इस पत्र के इसी अंकका थोड़ा पत्र ।

दिवाली का त्यौहार कैसे मनावें ।

हमारे जीवन में, हमारे व्यापार में, हमारी कलाओं में ज्योति (प्रकाश) करके ही दीवाली मना सकते हैं ।

दूर की सफाई के साथ हमारी दुसरी बुराइयाँ, कमजोरियाँ (फुट, विदेशी वस्तुओं का उपयोग, सामाजिक व धार्मिक कुरहियाँ) दूर करके भारत को स्वर्ण भूमि बनावें ।

फटाकों से नुकसान ।

- [१] शारीरिक हानि—अनेक बालक व स्त्री पुरुष जल जाने हैं, गन्दी हवा से रोग होते हैं ।
- [२] धन की हानि—लाखों रुपये विदेश में जाने से देश गरीब होता है तथा लाखों का वारस देश में बनाकर धन शक्ति व समय नष्ट किया जाता है ।
- [३] धर्म की हानि—असंख्य छोटे मोटे निर्दोष जन्तुओं की हिंसा होती है तथा जो त्यौहार जीवन में ज्योति लाने का था व अन्धकार-बुराइयाँ फैलाने का कारण बनाया उसी कर्तव्य भ्रष्टता का महापाप है ।

जिस देश में विश्वप्रिय महात्मा गांधीजी और चालीस हजार भारत-वीर कदमे हैं, जो प्रजा अपने दुःख प्रकट करे तो सजा पानी है उसे कोई फिजूल स्वर्च करना, मौज उड़ाना या अज्ञान पूर्ण पुगने रिवाजों का पालन करना कितना अयोग्य है । यह स्वयं विचारें और कृपया फटाके, फूलझुंडी, तूली व वारस में एक कौड़ी स्वर्च न करें और दीवाली के दिनों में बही सम्मान करके अपनी दुर्दशा कैसे सुधरे यह सब समझावें ।

विदेशी वस्त्र, विदेशी म्ब-बाने, फटाके, फेंसी चीजें आदि छोड़ कर भारत माता को विपत्ति में थोड़ी शान्ति दें अन्यथा माता के साथ बच्चों का भी अस्मिन्ना नहीं रहेगा ।

फटाके के व्यापारी व खरीददार अपना कर्तव्य विचारें, थोड़ा दिये हों तो रह करें । बालक फटाके बहिष्कार की प्रभात फेरी व जुलूस निकालें, स्कूलों के सेचालक व अध्यापक व्याख्यान देकर मनाई आत्रा निकालें ।

नोटः—यदि इस प्रार्थना का पालन न होगा तो समिति को अन्तिम मार्ग धरने का (पिकेटिंग का) ग्रहण करना होगा ।

इस इच्छितहार को पुट्टे पर लगाकर हर एक ग्राम में लगाने की कृपा करें ।

प्रार्थी—

मंत्रा-फटाका निषेधक समिति

श्री महालक्ष्मी लुपाम्बाना व्यावर ।

व्यावर ।

दिगम्बर जैन

नाना कलाभिविधैश्च तत्रैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।
संबोधयत्पत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३वाँ

वीर सम्बत् २४५६, भाद्रपद, विक्रम सम्बत् १९८६.

अङ्क ११.

सम्पादकीय-वक्तव्य

परम पावन द्यूषण एवं समाप्त होचुंरा है ।

आपने यथासाध्य त्रयोप-
क्षमा याचना । वास आदि किये होंगे ।

वर्म-शास्त्रोंका स्वाध्याय

और श्रवण करके आत्मभावोंको निर्मूलक दिया होगा । तथा "स्वप्नामि सव्वनीवणे"का पाठ पढ़कर पणी मात्रको क्षमा प्रदान की होगी । तब हम भी दि० जैनके पाठकों तथा सम्पूर्ण जैनसमाजसे यह आशा रखते हैं कि हमारी मूर्खोंको भी आप मूलक गये होंगे । मनुष्य अज्ञ है, उससे गलतियाँ होती हैं । फिर भी पत्र सम्पादन करनेका कार्य तो ऐसा है कि सत्यका पक्ष लेकर न्यायपूर्ण बात लिखना रहती है संभव है कि वह किसीको अरुचिकर भी हो । अतः पत्र द्वारा ऐसे अनेक प्रसंग आसकते हैं कि किसीके मनको क्षोभ हो । इत्यादि कारणोंसे हम अपनेको क्षमापात्र सम्झकर इस पत्र द्वारा उन आश्योंसे क्षमा याचना करनेके लिये उपस्थित हुये हैं जिनका मन हमारे द्वारा कृत, कारित या अनुमोदनासे क्षुब्ध हुआ हो ।

निःशक्य होना ही सुख शान्तिका एक परम उपाय है । और वह निःशक्यता परस्पर प्रेम या क्षमाभाव होनेपर ही होसकती है । इसलिये उदारभावसे परस्पर क्षमा प्रदानकर प्रेमपूर्वक वर्म देश और समानकी सेवा करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिये । क्षमाशील व्यक्ति सर्वत्र सर्वदा सुखी रहता है । वह अपनी क्षमा शक्तिके द्वारा जगतको बलीभुन कर सकता है । क्षमावानका संसार सेवक होनाता है । हम आज क्षमावतार महात्मा गांधीजीको देखकर यह बात निःसंकोच कह सकते हैं कि क्षमामें अतुल्य बल है ।

दिगम्बर जैन २३ वर्षसे जैन समाजकी अपूर्व सेवा कर रहा है । इसका जन्म उस समय हुआ था जब अपना समाज बहुत अंधकारमें था । इसके विशेषार्थोंने तथा विद्वत्तापूर्ण लेखोंने समाजको निजका भान कराया और जागृत किया । इसका भाव निरंतर सेवामय रहा है । फिर भी अगर किसीको इसकी चार्मिक एवं न्यायपूर्ण नीतिसे कुछ क्लेश हुआ हो तो वे क्षमा प्रदान करेंगे, ऐसी हमारी आशा है ।

अब दशहराका त्यौहार आगया है, लोग इस समय मजामौज करते हैं। दशहरा । अनेक राजा महाराजाओंकी इस दिन बड़े ठाटबाटसे सवारियां निकलती हैं और नागरिक आनन्वित होकर नाना प्रकारसे इस त्यौहारको मनाते हैं। आप इन बातको जानते हैं कि मनुष्य जाति पशुओंकी अपेक्षा अधिक स्वार्थी है । वह अपने मीनशौकके खातिर दूसरोंको दुख दे सकती है, मूक-पशुओंको सता सकती है और निर्दयतापूर्वक उनके प्राण हरण कर सकती है । इस दशहरामें यह समाप्त बातें देख-लैकी मिलेंगी । बड़े २ राजा महाराजा अपने मनोविनोदके लिये भैंसों और साँड़ोंको बड़ते हैं, मेढ़ों और हाथियोंकी कुश्ती कराने हैं तथा उनको खूनाखून देखकर खुश होते हैं । अपनी विकासिताकी पुष्टिके लिये अज्ञान जानधरोंको इस प्रकार दुखी करना, क्या यह कम स्वार्थ है ? इतना ही नहीं, किन्तु इस समयपर तो लोग अनेक प्राणियोंके प्राण हरणकर बलिदानके बहाने और अपने जिह्वा स्व.दके हेतुसे घोर पाप करते हैं। कहिये ऐसे स्वार्थी मनुष्योंको क्या कहा जावे ?

आज तो देशमें हाहाकार मचा हुआ है, हिंसा और अहिंसाका अपूर्व जंग जमा है, लाखों वीर भारतकी स्वतंत्रताके लिये मैदानमें कूद पड़े हैं और अमृतपूर्व युद्ध जारी है। ऐसे समयमें भारतीयप्रजाका क्या कर्तव्य है ? क्या वह अब पशुओंकी कुश्ती कराके मना मीन कर सकती है ? क्या अब पशुओंकी गर्दनपर लुरी चकाकर धर्मके

ढोंग करनेका समय है ? नहीं, अब तो अपनी व अपने देशकी लाज बचाने तथा अहिंसाधर्मके रक्षणका समय है । अपनी स्वार्थसिद्धिके लिये दूसरोंको दुःखी करना मनुष्यता नडी है। अगर कोई अपने पशुबन्धुके किसीकी दुःखी करता है तो समझना चाहिये कि वह मनुष्यत्वसे दूर है ।

इस समय प्रत्येक जैन व जैन समाजोंका कर्तव्य है कि दशहरेके निमित्तसे होनेवाली घोर हिंसाको रोके और सुख शान्तिमय अहिंसाका प्रचार करे । व्यर्थ व्ययको रोककर और कीटिकी थोथी आवांझाका परित्याग कर अपने दृढको, अपनी बुद्धिको और अपने आत्मबलको ऐसे पुण्य कार्यमें लगाना चाहिये ।

* * *

प्रति वर्षकी भांति फिर भी दीवाली पर्व आ रहा है। मगर पहिलेसे दिवाली कैसे अबकी बार कुछ विशेष-मनावेंगे ? ता होगी। भारतीय जनता बहुत समय पूर्व इस पर्वमें आनन्दोत्सव मनाती थी, दीपकोठे नगरको जगमग करके इन्द्रपुरीका सुखानुभव किया करती थी और गान बाजित्रकी ध्वनिके साथ दशों दिशायें नाचने लगती थीं। मगर अब ? अब तो देशकी बसा दूसरी ही होगी है। भारतवर्षमें चहुं ओर प्राहि २ मची है ! साथ करोरसे भी अधिक देशीय बंधु मूर्खों मरते हैं, और काम ढंङनेके लिये कपड़ेका चिथड़ा नहीं मिलता ! करीब ३० हजारसे भी अधिक भारतीय सरकारी जेलोंमें पड़े हैं, और लाखों भाई नाना प्रकारसे दुःखी हो रहे हैं। क्या ऐसे

संकटके समय आप गान तानके साथ दिवाली मनावेंगे ? क्या चढ़कीले भड़कीले चरबीमय विदेशी बत्नोंको पहिनकर अपनेको सुखी समझेंगे ? क्या बनाबटी रोशनीसे मकानोंको झकमका कर शोभा मानेंगे ? नहीं, कभी नहीं । इस समय एक सच्चा देशभक्त भारतीय ऐसे ऐसी मौन शौकके कार्योंको कभी नहीं कर सकता ।

तब फिर आप “दिवाली कैसे मनावेंगे ?”

सीधे सादे देशी बत्नोंको पहिनकर मंदिरमें जावें, भगवान महावीरस्वामीकी पूजा करें और उनका जीवनचरित्र सुनें—सुनावें । उससे शिक्षा ग्रहण करें कि हम किसके उपामक हैं ? जिसने संसारसे स्वतंत्र होकर मुक्तपद प्राप्त किया है, हम उस वीरकी पूजा करते हैं । तब क्या उन्हें पराधीन रहना चाहिये ? उस स्वतन्त्रताकी मूर्तिकी पूजा करते हुये हम परतंत्र रह सके हैं ? इत्यादि बानोंपर पूर्ण विचार करनेसे आपकी स्वातन्त्र्य प्राप्तिकी इच्छा होगी । और उसके सम्बन्ध उपार्योंमें ळग जावेंगे । श्रीमान् ओम दिवालीके समय अपनी आय व्ययका हिसाब लगाते हैं, तब हमें इस बातका हिसाब करना चाहिये कि हमने देशकी आज्ञादीके लिये कितना किया ? देशकी कितनी सेवा की ? धर्म और समाज रक्षणमें कितना भाग लिया ? अब हमारा क्या कर्तव्य है ? हम किन२ उपायोंसे देशसेवा कर सकते हैं ? इत्यादि ।

दिवाली आती है अंधकार दूर करके स्वच्छता फैलानेके लिये । हमें इन सुअवसरका सदुपयोग कर लेना चाहिये । विदेशी बस्तुओंसे हमारी भारतीय भावनाएँ नष्ट होगई हैं । इसलिये अब

इनसे मोह छोड़कर अपने शरीरको स्वच्छ खादीसे सज्जित करना चाहिये और अपने मकानमेंसे विदेशी कचरा निकालकर स्वदेशी बस्तुओंका उपयोग करना चाहिये । विदेशी बस्तुओंको रखते हुए आपके यहां वास्तविक शुद्धि नहीं हो सकती । कमसे कम दीपावलीके प्रकाशमें आखें खोलकर इन तमाम बातोंको ध्यानपूर्वक देखना चाहिये ।

देशकी दशा जर्जरित होगई है । आप स्वोहारोंको विविध व्यंजन खाकर नहीं मना सकते । किन्तु साधारण भोजन करके अपनी बचतके पैसे उन गरीबोंके पेटमें पहुंचाना होंगे जो आज मूखे तड़प रहे हैं । नित्य चर्खा कातकर सूत तैयार करिये और अपने कपड़ोंकी स्वयं पूर्ति कीजिये । फिर उन विलासी (विदेशी) बत्नोंके न पहिरनेसे जो पैसे बचें उनसे अपने गरीब भाइयोंके तनकी काज ढकिये । अपनी बाहियात आवश्यकताओंको कम करके बचे हुए द्रव्यसे उन भाइयोंकी आवश्यकताओंको पूर्ण करिये जो दिन रात परिश्रम करनेपर भी हाथपर हाथ रखे बैठे रहते हैं ।

अगर आप इस नूतन वर्षसे इन बातोंको अमलमें लाना प्रारम्भ करदेंगे तो आपका दीपावली मनाना सफल होनावेगा । समथानुसार प्रवृत्ति करना बुद्धिमानोंका काम है । सीधासादा खाना पीना और साधारण वस्त्राभरणोंका पहिरना कोई शर्म या पापकी बात नहीं है । बड़े२ श्रीमान् और धीमान् पं० मोतीबालनी नेहरू जैसे भारत वर तथा महारमा गांधी जैसे महापुरुष चर्खा कातते हैं, थोड़ेसे बत्नोंसे गुलती

करते हैं और साधारण खानपानमें संतुष्ट रहते हैं । श्रीमती सरोजनी नायडू जैसी भारतीय महिलायें विकासिताका परित्याग कर जेलोंमें रहकर सामान्य खानपान और रहनसहनसे देश सेवामें लगी हुई हैं । तब क्या चर्खा काटना, खादी पहिरना और मामूली रहन सहन रखना हमारे लिये बजनाकी बात होसकती है ?

* * *

दीपावलीके बाद नूतनवर्ष प्रारम्भ होता है ।

अब अपने जीवनमें भी

फटाका । कुछ नूतनता आना

चाहिये । दीपावलीके

समय आप अपने बड़कोंको फटाके खरीद कर देते हैं और पैसे देकर जुमा आदि दुर्गसनोंमें फंसाते हैं, क्या यह एक स्वस्थ समाजके लिये बज्जाकी बात नहीं है ? एक एक घरसे अगर २-४ आने ही फटाकोंके लिये निकलते हैं तो समाज कीजिये कि समस्त भारतमें एक ही रातमें लाखों रुपयोंका धुँआ कर दिशा जाता है । अनेकोंके तो जल मरनेके भी समाचार आते हैं । क्या अब आप इस पाप कार्यको पसंद करेंगे ?

इस वर्षसे तो फटाकेकी प्रवृत्ति बिल्कुल बन्द करना चाहिये । अच्छा तो यह हो कि ठयापारी स्वयं ही फटाके न मंगवें । अगर लोभ और लालचके बशीमूत होकर कोई मंगवे भी तो समाज उनको खरीद न करे । यदि बेचने-बले वेनें, तथा खरीदनेवले अपनी मूर्खतासे खरीदें तो विवेकशाली युवकोंका फर्ज है कि वे शान्तिपूर्वक उनको इन पाप कार्योंसे रोके । जब देशमें मातमसा छाया हो, तब फटाकोंका फोड़ना

शोभा नहीं देसकता । न तो यह वास्तवमें कोई अनंदकी वस्तु है और न यह सम्पत्ताकी ही निशानी है । किन्तु अज्ञ लोग स्वयं ही लाखों रुपयोंकी बरबारी फटाके देशको दुना दुखा बनाते हैं । इन खोटी प्रवृत्तियोंको छोड़कर सज्जनतापूर्वक पर्वोका मनाना यही भारतीय सम्पत्ता है ।

सत्याग्रह-संग्राममें जैनियोंका भाग ।

दमोह-में गुरुरामदा भैनको ६ माह सख्त सजा हुई । वर्षों-में सेठ चिरंजीवाकानो बंद जात्या व हीगसा जिनदास चबरे जेठ गये । खंडवा-में हुधमचंद जैन जंगल कानून सत्याग्रहमें बहुत कष्ट पा रहे हैं । चौहई-में सि० दुकीचंदनी जैन पकड़े गये । मूरत-में रतनचंद गुलाबचन्द कापड़िया (मेवाड़ा दि० जैन) ने ८०० की देशी साड़ियां स्वयंसेविकाओंको बांटी । बनारसमें-जैन छत्र संघको मंदिरपर विदेशी बख्तर पिंटेडिंग करनेपर ४ दिनमें सफरता मिली । अपरोहा-सत्याग्रहमें बांकेकाक जैन व चांदविहारोकाक जैन ४ ४ माह जेठ गये । रायपुरमें-हुकासचंद जैन व सहारनपुरमें नन्धूमक जैन पकड़े गये हैं । पेंडरामें-जी० बुडुकाक जैनके प्रयत्नसे विदेशी शक्कर मंगाना बंद होगया व सराबकी बंदी हो रही है । कटंगी-में चेतारामजी जैन पकड़े गये । बांद्रामें-नन्हेंकाक जैन शंदा सत्याग्रहमें ३ माह जेठ गये । कालकारमें-तिचोचचन्द जैन जेठ गये । खण्डवा-वांग्रै-रामेटीके मन्त्री वा० अमोलकचन्दजी दि० जैन खुब काम कर रहे हैं ।

पर्यूषण पर्व ।

कारंजा—ब्र० आश्रममें पं० देवकीनंदनी दो दफे शास्त्र वांचते थे व रात्रिको एक १ घण्टापर व्याख्यान करते थे । गांरके तीनों मंदिरोंमें भी पंडितजीके व्याख्यान होते थे । चतुर्दशीको सब विद्यार्थियोंने उपवास एकाशन किये थे । पारणा बाळचन्दनी सोलापुरने कराई थी । रावजी मणोरुचन्द आळंदने एक दिन मिष्टान्न-भोजन भी दिया था ।

रोहतक—बा० उग्रसेन वकील, पं० रबींद्रनाथ न्यायतीर्थ आदिके प्रयत्नसे कुल १७००) चंदा हुआ, जिसमेंसे १४००) स्थानीय संस्थाओंको और ३००) जीवदया समा आगराको दिये गये । जळयात्रा भी शानसे निकळी थी ।

अजमेर—में पं० कस्तूरचंदनी उपदेशक खास बुलाये गये थे । जैपबाळ जैन समाके उद्योगसे शास्त्र व व्याख्यान समाका अपूर्व आनंद रहा । मंडप सजाने, शास्त्र वेष्टन आदिमें स्वादीका उपयोग हुआ । सारी जनता खहर पहनकर ही जाती थी ।

कालका—में शास्त्र समा व्याख्यान समा जळयात्रा नगरकीर्तन सब हुए थे । बहिनोंने २१) चंदा करके संस्थाओंको भेजा ।

अमरोहा—ब्र० सीतरुमसादनीका चातुर्मास होनेसे विशेष आनंद रहा । आप अस्वस्थ होगये थे तौ भी शास्त्र वांचते थे । पूजन प्रतिक्रमण, समा आदिका अच्छा आनंद रहा । कई नियम लिखाये गये । चार दानमें स्त्रियों और पुरुषोंने (३॥=)का चंदा करके संस्थाओंको भेजा ।

सुदी १९को रथयात्रा निकळी थी तब पानीपतसे पं० अरहदासजी पवारे थे । आपके भजन व उपदेशसे सारे नगरमें जैनवर्षकी अच्छी प्रभावना हुई । हिन्दू सुसलमान सबने आपके उपदेशकी तारीफ की । बड़ी १को हमने भी कुछ उपदेश दिया था फिर झमामवणी हुई थी ।

देहली—पं० तुळसीरामजी कव्यतीर्थके पचारनेसे शास्त्र समाका अपूर्व आनंद रहा । कन्या-शिक्षालयके १२वें अधिवेशनमें भी आपका स्त्रीशिक्षा पर उत्तम व्याख्यान हुआ था ।

लाहौर—४९) दानमें इकट्ठे हुए । बसाना रथोत्सवके लिये तार किया गया था ।

उस्मानाबाद—पं० केंद्रकुमारजी तथा पं० वंशीधरजी शास्त्रीके पचारनेसे शास्त्र व्याख्यान समा व शंका समाधानका अपूर्व आनंद रहा । कुंथळगिरी आश्रमको ७३) मिळे ।

रीठी—ब्र० प्रेमसागरजीका असाकारक उपदेश होता था । आम समा भी की गई, गरीबोंको अन्न वस्त्र बांटा गया । पूजन प्रभावनाका अच्छा आनंद रहा ।

पानीपत—ब्र० आदिसागरजीके कारण ठीक आनंद रहा । पंचमीकी वेदी प्रतिष्ठा हुई । पं० अरहदास व पं० रूपचंदनी द्वारा भजन व उपदेश होता था । बाळ समा भी नित्य होती थी । १०००) दान हुआ । यहां निर्मल्य द्रव्य जळया जाता है या जळमें सिराया जाता है । नोट—जळमें डालना ठीक नहीं है ।

किरतपुर—में काळमनशास वेण्णवको जैन दीक्षा दी गई । जळयात्रा भी निकळी गई थी ।



जैनसमाचारवर्ति

रा० व० सुलतानसिंहजी-के स्मरणमें १०८) विद्यादानमें व कुछ मंदिरोंमें भेजे जा चुके हैं ।

जैन ग्रेजुएट चाहिये-बड़ोदा सरकार उच्च संस्कृत शिक्षा पानेके लिये दो जैन ग्रेजुएटोंको अपने स्वर्षसे यूरोप भेजना चाहती है । इस विषयमें पत्रव्यवहार मोतीचन्द गिरधर कापड़िया महावीर विद्यालय, गोवाळिया टेंक बंरूसे करें ।

फरखनगर-के मंदिरमेंसे चांदीके छत्र चौकी भांगडक आदि चोरी चले गये हैं ।

सावधान-हर्षकीतिवाकी बही ठगी चतुरमती आर्थिका आनकक दांता (जयपुर)में ठहरी है । वहांके माई नदिन इससे सावधान रहें !

महावीर ब्र० आश्रम कारंजा-की ओरसे एक डेप्युटेसन उममानानाद गया था, वहां सेठ नैमचंदजी वकीबने आश्रमको १००१) दिये व सेठ हीराचंद अमोचंदने १००१) देना स्वीकार किये तथा फुटकक मिलकर कुल ४१५०) सहायता मिली थी । इस आश्रमका कार्य अतीव सहायतासे चल रहा है ।

बामनौली-(मेरठ)में मंदिर बन रहा है उसके लिये सहायताकी आवश्यकता है ।

मथुरामें धर्म प्रभावना-बौरामो (मथुरा)में आचार्य १०८ श्री शांतिसागरजी आदि ७ मुनि व एक कुडुकोका चातुर्वीस होनेसे दशलाक्षणी वर्षमें अपूर्व धर्मप्रभावना हुई थी । अभी संघ-

पति सेठ घासीलाक्षणी, सेठ रामचंद घनजी, सेठ फतेहचन्दनी परवार, पं० कालारामजी शास्त्री आदि पवारे ये तब "शंकासमाधान" व गंभीरतासे चर्चा होती थी । आचार्यश्री शंका-ओका बराबर समाधान अतीव शांतिपूर्वक करते थे । वदी २ को मुनि नमिसागरजीने व वदी ४को मुनि चंद्रसागरजीने केशलौच किया था तब दूर २के भाई इकट्ठे हुए थे । वदी ३ को रमयात्रा उरनव बड़ी शानसे हुआ था तब कामावले तुळमीरामजीने अच्छा नृत्य किया था ।

ब्र० सीतलप्रसादजी-दशलाक्षणी पूर्वमें अमरोहामें ज्वरसे मरुन बीमार होगये थे, जिससे तार आनेपर हमें अमरोहा जाना पड़ा था । महाराजका ज्वर उतर कर एकदम शरीर होगई थी व अत्यंत अशक्ति होगई थी, परन्तु बयोवृद्ध वैद्य बाबूलाळकी परिचर्यासे फिर आराम होने लगा था । अब स्वास्थ्य सुवर रहा है व चिंताकी कोई बात नहीं है । अतीव बीमारोंमें भी ब्रह्मचारीजो अपने सभी निषमोंमें बराबर टढ़ रहे थे । सामयिक तीन दफे छेटे २ भी करते थे व पर्येषणमें नित्य एक दफे ही दबा पानी आदि लेते थे, फिर पुनमसे तीन दफे दबा पानी लेने लगे थे । आप अमरोहामें पांच घण्टे नीन्दके सिवाय रातदिन परिश्रम करते रहते हैं । जिसमें गोम्पटवार कर्मकांडका अंगरेजी ढरणा, स्वयंमू स्तोत्र ही टोका व पं० विश्वी-लाळणीके अर्जुन जैन स्रद्धाश्रोवणो मिलनेके कार्य मुख्य हैं । अमरोहामें १०-१५ गृह संख्या होनेपर भी वहांके माई अतीव धर्मप्रेमी

हैं। इन्होंने रातदिन जगकर ब्रह्मचारीजीकी सेवा की थी। ब्र०जी चिन्तयु हो।

थांदला—की नूतन पाठशालाके लिये व्यय-व्ययकी आवश्यकता है। वेतन ३०) तक।

लिखो—सूरजमठ जेवन्द गांधी—दोहोद।

ला० गिरधारीलाल प्यारेलाल स्कोलरशीप फंडसे इस साल देहली कालेजके १२ विद्यार्थियोंको १५५) मासिक स्कोलरशीप देना मंजूर हुआ है।

पावापुरी केस—का चुकादा शीघ्र ही छप कर प्रगट होगा। वहाँके जल मंदिरमेंसे ३०० बैनोंको चुकावेसे तीन माहमें भीतर २ अपनी मूर्ति उठानी पड़ेगी।

जैन मुकूत मण्डार फण्ड—जो सुमारीमें सेठ रोडमठ मेवरानजीके यहां १००००)के स्याई दानसे चक रहा है, उसके गत वर्षका ३००) सुद इस प्रकार दिया गया है—१५०) औषधा-लय सुमारी, १५०) आश्रम बड़गानी व ३००) करीब १५ संस्थाओंको बांटकर भेजे गये। तथा मंदिर गोलकुछे १६॥३) निकले वे भी संस्थाओंको भेजे गये हैं।

भ० जिनसेन—करवीरमठ (कोरहापुर)के लिये शिष्य नियुक्त करनेको सांगली जैन बोर्डिंगमें ता० २७ २-३०को समग्र चतुर्थ जेनोंकी समा होनेवाली है।

गुलबर्गमें मलखेड संस्थान—व मंदिरके शास्त्रभंडारके जीर्णोद्धारके दक्षिणके दि० जेनोंकी समा सेठ जीवराज गौड़मचं० दोशीके समा पतित्वमें आ० सुदी १३ को हुई थी जिसमें प्रस्ताव हुए कि (१) संस्थान व जीर्णोद्धारके

लिये कमेटीकी नियुक्ति (२) कमेटी २००)का चंदा करे व पिछका लेना बसूक करे। उसी समय ६६०)का चंदा होगया था। फिर कमेटी उसी दिन वहांमें मलखेड गई थी। वहां जाकर शास्त्रभंडार खोला व उसकी ग्रंथ सूची भी की थी इसी कार्यमें कारंजासे ब्र० देवचंदजी तथा पं० देवकीनन्दनजी सास्त्री खास पबारे थे।

जिनसेन मठ—(कोरहापुर)की व्यवस्था सर-कारके इस्तक लेनेको हुई। जेनोंने कोरहापुर राज्यमें अपने की थी जिसपरसे सरकारने मठकी सब मिलकत जप्त करली फिर संबंधार्थ एक कमेटी नियुक्त की है, परन्तु इसका विरोध जोर-शोरमें हो रहा है। विरोधके लिये ३००० चतुर्थ जेनोंकी समा कुंडलतीर्थ पर ता० १८-८-३०की भुष्याक अर्घ्या आष्टाके समा-पतित्वमें हुई थी जिसमें प्रस्ताव हुआ कि आज तक किसी भी जैन मठकी व्यवस्था सरकारके हाथमें नहीं गई है, इससे चतुर्थ समासका अपमान हुआ है व व्यवस्था हमें दी जावे।

ब्र० आश्रम कुन्धलगिरि—का १७ वीं वार्षिकोत्सव ब्रह्मचारी बोधीचंदके समापतित्वमें श्रावण सुदी १३ से १५ तक हुआ था जिसमें छात्रोंके मरदानगीके खेल व डूमे भी हुए थे। कुल १५५) सहायता मिली। तथा ५१) ठो पं० केन्द्रकुमार शास्त्री मैनेजरने प्रदान किये।

जैन पेण्टर—जैन मंदिरोंमें वेदी आदिपर सोने आदिका रङ्ग व चित्रकारी हम परमार्थ बना देंगे जो खर्च नहीं कर सकने, मात्र रङ्गना व सफरखर्च देना होगा। समर्थ जेनोंसे उचित चार्ज लेंगे। हुंडीवाल जैनचित्रकार—दूण्डला (आगरा)।

करहल-में दानवीर का० फुलकारीकाकनी जैन रईसका भावों सुदी १३ को ७१ वर्षकी आयुमें स्वर्गवास होगया । अन्त समय ५७१) दान निकाला गया था ।

इन्दौर-में ११० रा० व० सेठ कातूरचंदकी धर्मपत्नीका तथा अविश्राममें गंगाबाई छात्राका स्वर्गवास होगया । गंगाबाई अपने ५००)का दान संस्थाओंको कर गई है ।

ललितपुर-में स्वदेशी वस्त्रका मंदिरोंमें खूब प्रचार होरहा है ।

बयानामें फिर उपद्रव-बयानामें जैन रथबात्रा निकालनेकी मंजूरी मिली थी व गत जनवरीमें जैन रथबात्रा निकली भी थी । उसके बाद हिन्दुओंने फिर वाइमरोषको अर्ज की है कि राजा नाबालिग है वहांतक रथबात्राकी मंजूरी न दी जावे व दी जावे तो नंगी मूर्ति न निकली जावे ! इसपर स्थान २ से जैनोंका विरोध हो रहा है व पहिली आञ्जा चख रत्नके तार भेजे जा रहे हैं ।

रावराजा आदि हुए-इन्दौर महाराजाकी ३२वीं वर्षगांठकी खुशीमें सर सेठ हुकमचंदजी को 'रावराजा', रा० व० हीराकाकनीको राज्यभूषण व काका नौदरीफलकी मित्तलको मुन्तजिम बहादुरकी पद्मी मिली है । बधाई !

हीराबाग धर्मशाला-बम्बईका जुलाई मासमें ८८२ व अगस्तमें ८०७ जैन अजैन यात्रियोंने काम किया था तथा पत्रालयकी औषधालयका जुलाईमें ६८६७ व अगस्तमें ६८६१ रोगियोंने काम किया था ।

जीवदया सभा आगरा-के प्रयत्नसे पेंडत, दिवली, लोया व आगरापरके मेले अहितक रूपसे समाप्त हुए हैं !

वियोग-इन्दौरकी सर सेठ हुकमचंद बोडिंगमें दाहोद नि० सोभागमठ नामक २१ वर्षके अतीव होनहार विद्यार्थी जो कॉलेजमें पढ़ता था उनका गत ता० १२को विमारीके कारण वियोग होगया । शोक !

सेठ रावजीभाईको मानपत्र-मथुराकी दि० जैत पचानकी ओरसे श्री० सेठ रावजी सलाराम दोशी सोलापुरको गत ता० १३-२-३० को मानपत्र दिया गया था जिसमें आपकी आतिसेवा, धर्मसेवा, धर्मप्रेम, मुनि मक्ति, वास्तव्यगुण, परोपकार, परीक्षाकयका उत्तम कार्य आदिकी अतीव प्रशंसा की गई है ।

छुट्या-श्रीधर नि० यंदुवाल जयनादास वभारिया ने हीराबाग परशोतभदास वीसापुर जेल-भाथी तथा सोमचंद डाबाबाग यरीदा जेलभाथी सज्ज पुरी करी छुट्टीने मुंभाष आया छे तेभने अजितदहन आपवाती सभा दि० जैन युवक भंडेण तरश्या थप इती. आ आभयोमे अंतमां आभार भाती करी प्रसंग आवे जेल जवानी तैयारी पतारी इती तथा जेलने अनुभव करी संभ-णाव्यो इते.

आभोद-मां लभ डाडारवालने दार पीडे-टीने भाटे १ भदितानी सज्ज थप छे. आ आभ नागपुर अंडा सत्याग्रहने भीडावा सत्याग्रहमां पञ्च जेल जल आवेसा छे.

सतीचरित्र और शीलमहिमा ।

इसमें सतियोंके चरित्र हैं । पृष्ठ ६० मूल्य १-

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-वृरत ।

स्वप्नका मूषक ।

(ले०- 'विद्यार्थी' महेन्द्रकुमार जैन, विज्नौर)

(१)

उरग-ताडित मूषक एक था,
भवन पे हमरे अति दौडता ।
उरग (सांप) भी उसका बन पृष्ठग,
चकित मूषकको सु खदेडता ॥

(२)

उरग था चहत्ता हर तौरसे,
उदरमें मम मूषक आ समा ।
पर नहीं जगमें कहीं भी तरु,
फलत-फूलत केवल चाहसे ॥

(३)

निकट ही करमें पहिने हुवे,
हथकड़ी, पगमें पगबेडियां ।
न कुछ ज्ञात कि-क्या अपराधमें,
इस तरा हम थे सु पड़े हुए ॥

(४)

खर खराहट मैं उनकी सुन,
उभय-वृत्त लगा सब देखने ।
बज पड़ी हमरीं पगबेडियां,
स्वनखनाहट मूषकको मिली ॥

(५)

अतिथयातुर मूषक देखता,
टकटकी सु लगाय कभी कभी ।
“यदि बचा सकते तब लो बचा”
यह मुझे वह था कह सा रहा ॥

(६)

पर नहीं मुख फेर सका पुनः ।
जब लखीं हमरीं पगबेडियां ।
पर भरी अति दीरघ सांस थी,
हृदयमें कुछ बात विचारके ॥

(७)

करुण-वृत्त लखा निज आंगसे,
पर न मैं कुछ भी कर ही सका ।
पर लगा कहने परतंत्रते,
धिक तुम्हें! धिक है!! धिक है तुम्हें!!!

(८)

पुन कहा उस मूषक यारसे,
अति भले हमसे तुम सौगुने ।
यदि चहो, सुखसे मर तो सको,
पर न मैं, धिक है! धिक है!! मुझे ॥

(९)

सबल है यह घातक क्रूर है,
नहिं दया कुछ है इसके हिये ।
किस तरा इससे निज-गोपना,
कर सको, भिय यार विचार तो ॥

(१०)

“इसलिये जलदी चल साम्हने,
निज शरीर उसे हम सौंपदें ।
यह विचार महाशय! क्या? तब”
इस तरा जब मूषकने कहा ॥

(११)

झट कहा हमने उससे मम,
‘उरग-हाथ पड़ो’ नहिं भाव है ।
न कुछ भी पुन मैं कह ही सका,
झट उठा वह बोल सुनो सखे! ॥

(१२)

इस तरा यदि यार ! विचारते,
तब हजार दफा चुकते मर ।
उदरमें पड़के सड़ते अथ,
उरग, कूकर काग, बिलावके ॥

(१३)

अवहिती बनके मुन, हे सखे !
पुन सलाह हमें निज दीजिये ।
इस सभै हमरा मन तो सखे,
कहत है हमसे अरु बुद्धि भी ॥

(१४)

यदपि मूषक दौड़ प्रसिद्ध है,
जगतमें मंगरे तक ही तब ।
तदपि वे अजभाय उसे सखे !
करत मानस व्यर्थ निराश क्यों ? ॥

(१५)

वह रहा कहता, अरि सर्प भी,
सन सनाहट पूर्वक आगया ।
पुन लिया उसको झट घेर ही,
मरण निश्चय मूषकका हुआ ॥

(१६)

अमित है घटना जग-वासकी,
अटपटीं अथवा बहुरूपकीं ।
लख उन्हें कहिं निश्चय एक सा,
नहिं हुवा, नहिं होय सकै कभी ॥

(१७)

उरग-ऊपर भी सु कभी कभी,
यहँ वहां वह मूषक कूदके ।
निकलके झट चंपत हो गया,
उरग भी उस पै बढ़ता गया ॥

(१८)

पर कहीं परसे उड़ता हुआ,
बन-मयूर वहांपर आपड़ा ।
उरगको गहके निज चोंचमें,
निकट बैठ गया तरु-शाख पै ॥

(१९)

त्वरित मूषक आ कहने लगा,
मुसकराहटको मुंह पै विछा ।
जगतमें वह कार्य नहीं कहीं,
बुध परिश्रमसे नहिं होय जो ॥

(२०)

पर 'नहीं कुछ भी तकदीर है'
कह नहीं सकते बुध मूर्ख भी ।
नहिं यहां वह जो मम जागती,
उरग ले बढ़ता वह मोर क्यों ?

(२१)

मरणके मुख भी यदि आ पड़ो,
पर प्रयत्न तजो न बचावका ।
तब कहा हमने कहिये सखे !
उरग क्या करके सकता बच ॥

(२२)

इस तरा हम थे कह ही रहे,
पर अचानक ही उरगेश भी ।
सटकके उसकी झट चोंचसे,
बढ़न पै हमरे वह आपड़ा ॥

(२३)

हड़बड़ाहटसे अति भीत हो,
जग उठे हम भी जलदी वहां ।
उरग था नहिं मूषक मोर भी,
न तरु था, पर था मन कांपता ॥
॥ इति ॥

सामाजिक रूढ़ियाँ और जैनधर्म ।

(ले०-पं० गुडनारीकाठजी चौधरी-उदयपुर)

जैनधर्म—सार्वभौम धर्म प्रत्येक जीवको धारण करनेकी आज्ञा देता है। चारों (ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) वर्णवाले धारण कर सकते हैं और करते थे। जैनधर्ममें विजाति विवाहकी खुलासा आज्ञा है।

जीवंबर कुमारने वैश्यकी लड़की ठषाही थी, और न वहाँपर जाति पूछी, न पाई प्रीति मिलाई थी। आज परदार जातिमें जाठ साँके चली रही हैं, उनका पता पृष्ठनेपर कुछ भी जबाब नहीं मिलता है। पर उनकी मान्यता बड़ी है, उनके न मिलनेपर विवाह हो ही नहीं सकता है, दूसरी जन्म कुण्डली यह भी सची नहीं है। लोग बहस करते हैं कि इनके मिठा-नेसे अन्निष्ठ नहीं होता है; मैंने खुद अपनी जालोसे देखा है कि जिनकी साँके व कुण्डली सर्वश्रेष्ठ मिलती हैं पर वे विषवा, विधुर देखे जाते हैं। जैनधर्मके विरुद्ध आचरण करना, मानों अहंतकी घोका देना है।

धर्मकी अपेक्षा आज रूढ़ियोंका उबावः महत्त्व है। धर्म छूटनेपर रूढ़ि कभी नहीं छूट सकती है। आत्म केवल बोक देने व सरस्वती मन्त्रकी शोभा बढ़ानेकी ही हैं। इनमें विजाति विवाह कूटर कर भरा है वह समाजके उपयोगी है। पर कुछ लोगोंने "धर्मविरुद्ध" का शस्त्र छेरखा है। कोई भी अच्छा बुरा आन्दोलन उठा कि

बड़ी शस्त्र आकर अड़ता है। मेरी समझमें नहीं जाता कि लोग इस प्रकारका प्रपंच उक्तमि मार्गमें क्यों रचते हैं।

शारदाचिन्ह—यह भी जैनधर्मके विरुद्ध नहीं है। बलिष्ठ धर्मका एक खासा अंग है। यह बिल ब्रह्मचर्यके पाठनेमें सहायक है। धर्म आज्ञा देता है कि जितनी वीर्यशक्ति की जावे उतना ही पुण्य होता है जयावः अवस्था होनेसे संतान व शरीर भी पुष्ट रहता है। जिनको मेरे क्लि-नेपर विश्वास न होवे, "अत्म-कथा"में महत्त्वा गंवीनीके खुदके अनुभवको पढ़कर विश्वास करें। अधिक मृत्युका कारण बालविवाह है। दुबले, पतले, सूखा, चेहरा, जालें घुपी हुई रोगी शरीर इत्यादि सब बालविवाहके ही कुफल हैं।

इसके अलावा स्त्रीकी भी बड़ी बुरी दुर्वसा है। वह विचारी बच्चाके पैदा होते जबवा बादको मृत्युका आस होती हैं। जैनधर्म सदा इसके विरुद्ध ही आज्ञा देता है। जब वर-कन्या विवाहका मतकब ही नहीं जानते हैं फिर उनके गुण-दोष पर जायगे ही क्या? इससे धार्मिक विरोधका नाम लेना समाजको घोका देना, व समाज देशकी दशा बिगाड़ना है।

जिस समय विवाह होता है उस समय भी धार्मिक क्रियाओंको छोड़कर मिथ्यात्व रूढ़ियों पर ध्यान देती हैं। जैनधर्मकी विवाह विधि

कुछ भी रूपांक नहीं रखते हैं। बुदेकल्लहमें बरके ऊपरसे मूसर—पकानी व कई दिनकी बासी रोटी फेंकते हैं। एक दस्तूर गुड़ी का है वह भी बड़ा विचित्र है इसको देखकर बड़ी हंसी छूटती है। इस प्रकारसे मारवाड़ियोंमें ओके अनेक अवधानुकूल प्रथाएं हैं। धार्मिक क्रियाओंको न करना और धर्मको चोट लगाना खतरनाक है। ये सब बंद करके थोड़ेमें शादी करनेकी आज्ञा धर्म देता है। हजारों रुपया खर्च मत करो। दश रूपया ही करो पर भाव डोक रखो। बचा हुआ पैसा समाजोन्नतिमें खर्च करो। समाजका व धर्मका अनिष्ट संबन्ध है। समाजपर ही धर्म स्थिर है, दिवालोमें नहीं है। जितनी उपादः संरूपा होगी उतनी ही धर्मकी उपादः मान्यता होगी। इन सबके विरुद्ध जैन धर्म है। कम खर्च करो, पाप मत करो, परमेश्वर कार्यको धार्मिकरूप दो। वही धर्मकी आज्ञा है। विवाहमें उपादः नटखट करनेकी जरूरत नहीं है, विवाह कोई धार्मिक कार्य नहीं है। पर धर्मके पाकनेमें गुड़िणी सहायक है। इससे यह धर्म साधनका निमित्त कारण प्रकर है। अनेक आरम्भ परिग्रहका वासा करना पड़ता है। एक मासकी जिसकी जितनी आमदनी हो उसीमें विवाह करलो, यह हमारे धर्मका मंतव्य है।

जैनधर्ममें व्रत दो प्रकारके हैं, १ गृहस्थ, २ मुनि। आजकल गृहस्थोंने अपने धर्मको छोड़कर मुनि धर्म धारण किया है। पर हमारे ज. लोप तो यतियोंको भी मात कर रहे हैं। किसी ने तो अपनी नाम बड़ाईके लिये अधिष्ठातापन ही स्वीकार कर लिया है। धर्मप्रचारके नाम

रुखा इष्टा करना ही इस पदका कार्य मान लिया है। खुद तो जैनियोंको एक मार्ग नहीं सुझा सकते हैं, फिर अनेकोंको तो जैन कैसे बना सनेगे? जैनियोंकी संख्या बढ़ाना तो ये पाप संकलते हैं। प्रथमानुयोगका स्वभाव तो बड़ी दिक्कतसे करते हैं किन्तु माननेको जमेट होमते हैं। आजकल गेरुया वस्त्र पहिरनेका रिवाज बक गया है, वह भी ठीक नहीं है। एक गेरुया वस्त्र पहिरना ही श्रेयस्कर है।

जैन धर्मका मूल मन्तव्य अहिंसा है। बिना प्रयोजन किसी भी जीवको न मरनाओ। अपने पाणोंकी तरह उनकी भी रक्षा करो। वही अहिंसा है। यह कायर बनानेवाली नहीं है। म० गांधी इसीके प्रथम स्वरूप लेनेका निश्चय कर चुके हैं। और अहिंसाका ही उभ-देख जगतको देना चाहते हैं।

१—सर्वथा संकल्पसे प्रसक्तवकी व बिना प्रयोजन स्थावर कावकी हिंसाका त्याग करना अहिंसाव्रत है।

२—अथुक्त मृत व अप्रिय वचन व बोझा स्तंभव्रत है।

३—गिरी, पडो, रखी चीनका न लेना, न देना, अर्चयव्रत है।

४—स्वस्त्रीमें संतोष, अन्धको माता, पहिल, बेटीकी तरह मानना, अपने पतिमें ही संतोष, अन्धको पिता भाई व पुत्रके तरह मानना ब्रह्मचर्यव्रत है।

५—परिग्रहका प्रमाण करना नपरिग्रहव्रत है। इनको एक देख सर्वदेख पाकनेसे गृहस्थ व वति दोनों ही धर्म बनते हैं।

जैनधर्म पारण करनेवाले छोटे बड़े मूढगुण पारण करके स्वर्गके साथ देवदर्शन पुनर्नादिक करना चाहिये ।

१. मद्य—यह पदार्थ कई पदार्थोंको सङ्काकर बनाया जाता है । जिससे कि असंख्य जीवोंकी उत्पत्ति होजाती है और ज्ञान विनाशक शक्ति भी आजाती है । इससे भारत मिस्तारी होगया है । इसीको देखकर देशमें इमका बंद करना जरूरी है । आज थोड़ीसी मजूर करेवाला मजूर भी शामको नशेमें चूर रहता है । परपर स्त्री पुत्रादि मूल्यसे मारते हैं, पर वह नशा करता है । मत्स्यक नशीली चीज जैसे भांग, अफीम, गांजा, तमाखू इत्यादि चीजोंसे भी परहेज रखना योग्य है । धार्मिक व कौकिक दोनों तरहसे यह बुरी चीज है । करोड़ों रुपया विदेशमें जाता है और यह देश कंगाल होता है ।

२. मांस—यह भी जीवोंको मारकर उत्पन्न होता है । देखनेमें बिन पैदा करता है । हिंदुस्तानके अन्दर यह व्यवसाय अब खूब होने लगा है । लोग विचारे दीन पशुओंको मारकर खाते हैं और खुदको बाँटा लगने पर दुःख अनुभव होने लगोगा । देवीपर चढ़ानेवाले अपने बच्चेको चढ़ाकर क्यों नहीं उभावः पुण्योत्सर्जन करते हैं ?

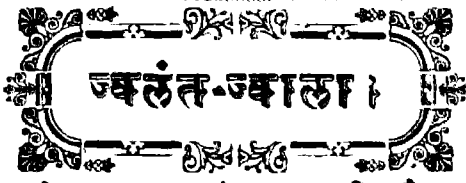
धारे भाइयो ! सोचोतो सही कि जब हमारा कड़का अपनी मृत्युसे ही मरता है तो हमको कितना बड़ा दुःख होता है । फिर दूसरोंके बच्चे बलिदान करने पर क्या उनके माता पिता व खुदके किये दुःख न होता होगा ? मैं तो तस्य जब मानूँ जब कि दाहिने हाथका दर्द बाये हाथमें आनाने पर यह कभी भी नहीं होसकता

हैं । इसी प्रकार दूसरे प्राणियोंको बच करने पर न पुण्य होगा, न देवी पश्यन ही होगी । इससे अपनी जिज्ञा इन्द्रिय पर दमन करके मान खानेका त्याग मत्स्यक भारतवासीको करना आजमी है । हमारे शरीरकी पुष्टि दूध, दही, घीसे होती है पर उनकी देनेवाली गौओंका भी बच भारतधर्ममें होरडा है । यह भी नास्तिकता चिन्ह है । इससे हमको इस तरफ भी ध्यान देना आवश्यक है ।

मधु—कै हुरै बन्धुओ खानेकी कोई भी इच्छा नहीं करता है न किपीकी सूँठ ही कोई खाता है । हां जो नीच होते हैं वे ही खाते हैं । सम्म नहीं ।

शहद मधुमक्खिलियोंका वपन है । वह महा अशुद्ध है, शास्त्रकारोंने इसकी घोर निन्दा की है । एक बृंर शहद खानेसे सात गाम अन्नाने बराबर पाप लगता है ।

हिंसादि पाँचों पापोंपर तामीरात द्विद आदि चक रहे हैं । कैसी पापः इन्हीं कुसूरोंसे सजा पाते हैं । जो इनको नहीं करता है वह कभी भी दण्डका भागी नहीं होसकता है । आज महारमा गांधीजी इसी अहिंसासे देशको स्वतंत्र बनानेकी कोशिश कररहे हैं । मत्स्यक पाणोंको जैन धर्मके उमूक पाकना चाहिये । आठ मूढगुण, यज्ञि मोचन, नक छानने, देवदर्शनसे ही मत्स्यक पाणी जैनधर्मका आराधक बन सकता है । पर अफसोस कि कुछ लोग इसका प्रचार ही नहीं करते हैं और अपने घरका धर्म मानकर बैठ गये हैं । इसीसे आज जैन संख्या एकदम घट रही है । जैनी बनाना हमारा प्रधान कर्तव्य होना चाहिये ।



(से०-पं० मूलचन्द जैन पत्थल-बिजनीर)

(१)

वह तपस्वी था ! अपने जीवनके २५ वर्ष उसने तीव्र तपस्याकी सकलतामें समाप्त कर दिये थे ।

दीर्घ समयके अनाहार व्रत द्वारा उसने अपनी दुर्जैव इंद्रियोंको स्वाधीन बना लिया था, मत्तकी वासनाएं होम दी थी ।

द्वारिकाके रम्य उद्यानमें वह निष्काम साधनामें निमग्न था । यह क्या ?

उनके नेत्रोंसे अश्रिकी ज्वालामें निकलने लगी, मस्तिष्क विकृत होगए, वह विकसित होगए केवल अल्पमान मात्रसे उनकी यह दुर्रशा कैसे होगई ! ओह ! वह जल नहीं था—तीव्र मदिरा थी । बेचारे यादव कुमारीको इसका क्या पता था । उनके मुंहसे अर्गल शब्दवाणोंकी वर्षा होने लगी, वह विचार शून्य होगए । मदोन्मत्त विचरते हुए उन्होंने देखा ।

(२)

अरे वह कौन ? बड़ी दुष्ट तपस्वी, मायावी ! ध्वंसक । इसीके द्वारा द्वारावती ध्वंस होगी । पकड़ो इसे—मारो इसे—मारो—छोड़ो मत । यह दुष्ट है पापी है !

क्रोधसे उनका शरीर उन्नत होने लगा, वह अपना अस्तित्व खो चुके थे, उन्हें अपने इस अविवेकका पता नहीं था । द्वारावानसे चेतना शक्ति आप्त कैसे रह सकती ?

समीप ही पाषण राक्षी थी, छोटे बड़े पत्थर अरोह गतिसे ऋषिरामका शरीर आच्छादित करने लगे । कितने पत्थरोंकी वर्षा हुई, गणना नहीं की जासकती । मुनिराम अबतक शांत थे, मौन थे, अविचलित थे, कषायकी चिनगा-रियां छिपी हुई थीं । मस्मसे आच्छादित थीं ।

(३)

पत्थरोंकी प्रचण्ड वर्षा रुधी नहीं, गाळियोंका आवत भी शांत नहीं हुआ । तप शक्तिकी अंतिम परीक्षा थी, बरदान प्राप्तिका समय था, साधना सिद्धिमें एक क्षण मात्रका बिठेव था, मोक्ष सुन्दरी बरमाळा लिए मुनिकी प्रतिष्ठा कर रही थी ।

मुनिका आरमच्चित्र परिवर्तित होने लगा, वह अर शांत न रह सके, क्षमाक्रोध शून्य होगया, क्रोधकी कराल ज्वाला पिचाशुकी सदृश नेत्रोंपर नृत्य करने लगी । वह अपनेको न संभाल सके, क्षमा चारा उनके हृदयके मंचंड ज्वालाको रोक न सकी । वह उन्मत्त होगए । प्रतिहिंसा पञ्च-लित हो उठी ।

(४)

यह मस्म होजाएँ !

मेरे तपमें इतना प्रभाव है । हां, वह अभी जलकर मस्म होजाएँ, समस्त द्वारावती मस्म होजाए । मैं तपस्वी ऋद्धिधारी ! मेरी रक्षाकी हिंचित्त अपेक्षा नहीं की ! इतनी अवहेलना, इनना अपमान, ऐसा भीषण अत्याचार ! आज मेरी शक्तिका प्रभाव देखे । मेरी अनिवर्य क्रोध ज्वालामें लगे । मुनिका कंठ अबरुद्ध होगया । निर्बल आत्मा मुनि तपकी प्रबल

शक्तिको अपने अंतरंगमें नहीं रख सका, क्रोधने उसे भड़का दिया । विचार मात्रका विलंब था, अग्निकी ज्वलंतज्वाला जल ठठी ।

उन्हें ज्ञात हुआ । अबोध यादवकुमारोंने भयंकर कुत्तर्य कर डाला है । अब द्वारिकाकी कुशल नहीं है । राजसिंहासन त्याग वह उमी समय दौड़े जाये, एक क्षणमें नारायण और ब्रह्मदेवके युगल मस्तक मुनिराजके चरणोंपर पड़ गये । उनके हृदयमें करुणाकी प्रार्थना थी और बाणीमें क्षमा याचना ।

(६)

सब व्यर्थ । अति विलम्ब हो चुका था, मुनिकी भृकुटिपर तनिक भी बल न पड़ा, क्रोध पारेका आताप किंचित् कम नहीं हुआ । धनुषके ऊपर चढ़ाया हुआ बाण छूट चुका था, उनके करुण क्रन्दन श्रवण करनेका अब समय नहीं था ।

(७)

अग्निका अर्धांड तण्डव होने लगा, पक्षी तंत्र बहरोसे उबरकर अग्नि ज्वालामें पड़ने लगे, अकते हुए मानवों-पशुओंके कोलाहल नादसे परस्पर पिघलने लगा । समुद्र उमड़ने लगा, मयानक अग्निमें समुद्रका जल भी मैल सट्टश प्रलने लगा ।

(८)

भीषण अग्नि जल रही थी । वह उसके मध्यमें खड़ा हुआ अग्निके घूट पीरहा था । देखते १ सर्व ध्वंस हो गया । सुन्दर राजमंडप, अनंत राजधरक्ष्मी, असंख्य प्राणी-समूह जलकर भस्म होगये ।

ज्वाला सब भक्षण कर चुकी थी, किंतु उसे तृप्ति नहीं हुई । अन्तमें उसने अपने विशाक उदरमें मुनिके शुष्क शरीरको ढाल लिया, वह उसे भी भस्म कर गई । देखते १ उसका शरीर क्षार होगया ।

उसने अग्नि सुरगाई थी अन्यके लिये, तो उनसे जलाया और स्वयं भस्म हुआ, वह भी जला उसकी आजीवन उपस्था, तप, त्याग जलकर भस्म हो गया ।

(९)

वह कोपानल थी-हां, कोपानल, आह ! क्रोधकी ज्वलंत ज्वालामें सर्व भस्म होगया । हाय द्विपान ! अपनी क्रोध ज्वालामें सर्वस्व भस्म कर डाला । तपस्वी होकर भी क्षमाकी मर्यादाका उल्लंघन कर दिया ।

(१०)

क्या क्रोधकी भीषणताका अनुमान किया जा सकता है ? हाय ! क्रोध-क्रोध तेरा सर्वनाश हो ! तूने स्वर्गपुरी द्वारिकानगरीको विशाक भस्मका शिखर बना दिया, तूसे अतसः विकार है ।

स्वदेशी व पवित्र

काश्मीरी केशर ।

मात्र घटाका १॥) तोला कर दिया है । विलायती केशरका उपयोग मत करिये । और यही शुद्ध स्वदेशी काश्मीरी केशर ही हमारे यहांसे मंगाइये ।
 बशांगधूप २॥) रतल । अगरबत्ती १॥) रतल ।
 मैनेजर, दिगम्बर जैन पुस्तकालय-सुरत ।

शरीरको स्वच्छ और निरोगी रखनेके नियम

(ले०-मास्टर पूतमचंद्र मंगलजी-छाणी)

प्राणियोंके जीवनके लिये तीन चीजोंकी आवश्यकता है—१ अन्न, २ पानी, ३ हवा, इनमें सबसे मुख्य हवा है क्योंकि अन्न और पानीके बिना प्राणी थोड़े समय तक जीवी सकता है परन्तु हवाके बिना तो क्षणभर भी जीना कठिन है । हवा एक ऐसा पदार्थ है कि वह किसीको भी दृष्टिमें नहीं आती परन्तु संसारमें कोई भी स्थान ऐसा नहीं है कि जहाँ हवा नहीं है । मनुष्यसे लेकर चीउंटी तक सब प्राणियोंको हवाकी आवश्यकता रहती है । किसी वर्तनमें एक जीवधारी रखकर जब हम उसकी हवा वायुनिष्कासन यंत्रके द्वारा निकाल डालते हैं तब वह जीवधारी उसी समय तड़फकर मर जाता है, इसीसे सिद्ध होता है कि हवा प्राणियोंका जीवन-मूल है ।

इसी तरह कि जिस प्रकार भोजन और हवाके बिना मनुष्य जी नहीं सकता उसी प्रकार पानी भी एक पदार्थ है जिसके बिना मनुष्यका जीवन नहीं होसकता और इसीलिये पानीको संस्कृतमें जीवन रहते हैं । अरोग्य रहनेके साधनोंमें निर्मल पानी भी एक साधन बताया गया है इसीलिये स्वच्छ अन्न, स्वच्छ हवाकी प्राप्तिके लिये निम्नलिखित बातोंपर ध्यान देना चाहिये ।

(१) एक कमरेमें एक या दोसे अधिक

मनुष्य एक साथ न सोवें क्योंकि मनुष्योंकी श्वाससे हिंसक वायुका संचय बहुत होजाता है।

(२) सबेरे चार बजे कमरेकी सब खिडकियां खोल दी जावें क्योंकि प्रातः शुद्ध वायुका सम्मिलन अधिक होता है और वह वायु स्वास्थ्यके लिये अधिक लाभकारी होती है ।

(३) मकान समय-पर-पर गोबर और चूनेसे लीपा पोता जावें । क्योंकि इन दोनों पदार्थोंमें हवाके विषैले कीटोंके नष्ट करनेकी शक्ति है ।

(४) मकानके आसपास नीम, तुलसी, निम्ब आदिके वृक्ष तथा गुणवातिक फूलोंके पौधे जहाँ-तक हो रखना चाहिये । क्योंकि इनसे हिंसक वायु बहून शुद्ध होती है ।

(५) मकानके आसपास किसी प्रकारका कुड़ा कचरा जमा न होने पड़े ।

(६) सबेरे और शामको नियमसे शहरके बाहिर क्षेत्रों और मैदानोंमें घूमनेके लिये जाना चाहिये । क्योंकि जैसा स्वच्छ हवा बाहिर मिलती है वैसा शहरमें मिलना दुर्लभ है ।

(७) सोनेके पहिले हाथ मुँह धोकर शरीरको गाढ़े कपड़ेसे ढँककर सोना चाहिये और सुस्त ढँकके सोना ठीक नहीं है । क्योंकि इसीसे स्वच्छ वायुके आनेमें रुकावट होकर बुरी हवा पेटमें जाती है ।

(८) सोनेके स्थानमें वायु और धूप जाली

रहे देता बंदोबस्त होना चाहिये और यदि अधिक छोट न हो तो सिगनेकी खिडकीको छोड़ बाकी सब खिडकियां खुली रखकर सोना चाहिये जिससे हवाका संचार भलीभांति होता रहे । एक ही कमरेमें कई मनुष्य न सोवें ।

(९) जिसनी तृषा हो उसना पानी पीवे । अधिक पीनेसे जलोदर और कम पीनेसे जर्नीर्ण रोग होता है ।

(१०) पानी सदा बैठके पीना चाहिये ।

(११) कहींसे थके हुए जाकर तुरन्त पानी नहीं पीना चाहिये, किन्तु थोड़ी देर स्वस्थ बैठ कर गर्मी छांत होनेपर पानी पीना चाहिए, परंतु भोजनके अन्तमें नहीं ।

(१२) भोजनकी पचावटके समय पानी औ-
षधिका और पातःकाक सोतेसे उठकर पीनेसे
अमृतका गुण करता है ।

(१३) पीनेके सिवाय स्नानादि कार्योंमें भी
स्वच्छ पानीका उपयोग करना चाहिये ।

(१४) पानीको शुद्ध करनेकी दूसरी रीत—
एक बड़ा बाधी रेत जाघे जलसे भरकर तिराई
पर रखलो और उसके ऊपर एक पानी भर
बड़ा जिसकी तलीमेंसे पानी टपकता हो रखलो,
अब पानी टपक टपकके रेत और कोयलेमेंसे
होकर नीचे जो एक बड़ा रखला है उसमें
गिरने लगेगा, कारण इसकी तलीमें भी एक छेद
है । सबसे नीचेके बडेमें गिरा हुआ पानी शुद्ध
और निर्मल होता है । इसे पीनेसे किसी प्रकारकी
हानि नहीं होसकती ।

(१५) इसी रीतिसे शुद्ध किया हुआ पानी
बदि न मिळ सके तो बरससे छानके तो अवश्य
ही पीना चाहिये । नहरवा रोग जो एक प्रकार-
के जलके कीड़ेसे होता है जैनियोंके बहुत ही
कम होता है । क्योंकि जैन सदा पानी छानके
पीते हैं, परन्तु अन्य लोग पानीको कभी छानके
नहीं पीते, उन्हें नहरवा अधिकतासे होता है ।
स्वास्थ्यके लिये पानी पीनेमें शुद्धताका और
स्वच्छ हवा लेनेका तथा ऊपर किसी वातोंपर
भी अवश्य ध्यान रखना चाहिये ।



घरको न घाटको ।

कवित्त

भारतमें जन्म लैकें,

देसकूं लजाय रह्यौ,

खोलि क्यों न देखें 'प्रिय'

हियके कपाटको ॥

त्यागिके सुतंत्र पद,

पीजरामें बंद भयो ।

आपौ हू भुलाय दाख्यौ,

प्रेष धाख्यौ भाटको ॥

चेति रे अज्ञानी जीव !

अपनी दशा सुधारि ।

पालि करतव्य निज,

चूल्हे अरि खाटको ॥

दुनियामें आय कें, न-

सुयश कमायौ कछु ।

धोबीको सो कुत्ता भयो,

घरको न घाटको ॥

“ प्रिय ”

जिनेन्द्र दर्शन माहात्म्य ।

(ले०-हजारीकाठ जैन अध्यापक जालंधर जाट-सागर)

प्राचीनकाळसे ही समस्त जैनी एवं जैनधर्म श्रद्धालुजन जिनेन्द्र दर्शन करना अपना कर्तव्य समझते हैं । अन्य जातियोंमें ऐसी बहुत कम स्त्रियां होंगी, जो अपने इष्टदेवका दर्शन प्रति दिवस किया करती हों या जिन्होंने प्रति दिन दर्शन करनेकी प्रतिज्ञा की है । परन्तु हमारी जैन जातिमें अत्यधिक स्त्रियां ऐसी मिलेंगी जिन्होंने आभन्म जिनदर्शनकी प्रतिज्ञा कर ली है । शायद ही कोई ऐसी जन्माग्नी स्त्री होगी जो प्रति दिवस कमसे कम एकवार दर्शन करने न जाती हो । यह सब देख सुनकर हमें अत्यंत आनंद होता है । तथा साथ ही साथ हमें अपनी जाति पर गौरव करनेका अवसर हाथ आ जाता है ।

परन्तु यह बात कहने हमें बच्चा जाती है कि अधिकांश पुरुष व स्त्रियां जिन दर्शनके उद्देश्यको नहीं जानते । पूछनेपर उत्तर मिलता है कि हमारे बाप दण्डे सदैव ऐसा करते आये हैं उसी प्रकार हम भी करते हैं । हमारे छेल क्लिनेका मुख्य उद्देश्य यही है कि मैं ऐसे मनुष्य व स्त्रियोंको भ्रमात्मक मार्गसे हटाकर उन्हें असखी रास्तेका दिग्दर्शन कराऊं ।

प्रिय वाचक वृन्द ! यह जीव जनादि काळसे चौरासी काळ योनियोंमें भटकता फिरा है तथा सदैव हरएक योजिमें जन्म मरण सम्बंधी तथा और भी अनेक दुखोंको सहा है । परन्तु जब महान् पुण्योदयसे हमें

नर पर्भाव और उत्तम श्रावक कुल मिला है । कहनेका तात्पर्य यह है कि हमें सुमार्गका पथ तो मिल गया है, अब उसपर गमन करना और न करना वह हमारे ऊपर निर्भर है । वस, उसी सुमार्गपर चलनेका श्री जिनेन्द्र दर्शन एक मुख्य और आवश्यक उपाय है । बोड़े शब्दोंमें हम उसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि श्री जिनेन्द्र दर्शनसे हमारे जन्म जन्मांतरोंके पापक नाश होते हैं और हमारी आगामी गति सुधरती है । इसमें जाति विशेषसे कोई सम्बंध नहीं है । क्योंकि कहा भी है:—

जाति पांत पूछै नहिं कोई ।

हरिको भजे मुक्ति गति होई ॥

श्रावककी तो बात ही क्या, हमारे धर्म ग्रन्थोंमें इस बातके अनेक उदाहरण हैं कि तिर्यंच पशुओंने भी ईश्वरभक्तिसे कृतार्थ होकर स्वर्गमें देवपद ग्रहण कर साक्षात् पन्थक्ष दर्शन वे धर्मका माहात्म्य सुनाया । यहां मैं एक ऐसे ही मंडक वृत्तित लिखता हूँ जिमने ईश भक्तिकी केवल श्रद्ध से ही देवपद ग्रहण किया ।

“राजगृही नगरीमें एक सेठ रहते थे, जो धनके अति परिणामसे मृत्युको प्राप्त हो अपने ही घरकी बगड़ी (कुए)में मंडक हुए ।

जब उनकी विधवा पत्नी बावरीपर कपड़ा धोने या पानी मरने जाती तभी वह मेण्डक पूर्वके स्नेहके बशीमृत हो उछलकर सेठानीके ऊपर आता था । सेठानी भयभीत हो उसे दूर फेंककर भाग जाती थी ।

निदान वैवयोगसे एक दिन जबविज्ञानी मुनि महाराज सेठानीके गृह आहार निमित्त पधारि ।

बाहर करानेके पश्चात् सेठानीने मुनि महाराजसे पूछा-हे महाराज ! कृपाकर ज्ञान इस बावरीके मेण्डकका सम्बन्ध बताइये । इसका और हमारा कैसा सम्बन्ध है कि जब मैं कार्यवश बावरीके पास जाती हूं तब वह उछलकर मेरे ऊपर आता है । सेठानीकी बात सुन मुनि महाराज बोले कि-तुम्हारा भरतार ही अति परिणामसे मरकर मेण्डक हुआ है । सो वह तुम्हारे पूर्वके स्नेहसे उछलकर तुम्हारे ऊपर आता है । सेठानीको जब मुनि महाराज द्वारा यह बात विदित हुई तब उस मेण्डकको अपने घर ले आई और उसे कुण्डमें पानी भरकर छोड़ दिया ।

एक दिन भगवान महावीरस्वामीका समवशरण विपुलाचल पर्वतपर आया । राजाने नगरीमें घोषणा करवा दी कि सब लोग बन्दनाको चलो । राजा श्रेणिक स्वयं हाथीपर सवार हो विपुलाचल पर्वतकी ओर प्रस्थान करने लगे । उस समय कुण्डमें कित्तीलें करते हुए मेण्डककी भी बन्दना करनेकी इच्छा हुई और कुण्डसे उछल कर लड़के फूँककी पंखुरी मुखमें ले उछलता हुआ चला पड़ा । अचानक वह राजा श्रेणिकके हाथीके पांव तले दबकर मर गया । भगवानकी भक्तिके भाव एवं श्रद्धासे उसने देवपद पाया और तत्काल अपने मुकुटमें मेण्डकका चिन्ह लगाकर भगवानके समवशरणमें साक्षात् उपस्थित हुआ । जब राजा श्रेणिकने उसका ऐसा निराका ठाट देखा तब वीर प्रभुने उसके विषयमें पूछा । तब भगवानने उसकी समस्त कथा आद्योद्यन्त कह सुनाई जिसे सुनकर

सब ही बड़े प्रसन्न हो ईश्वर भक्तिकी महत्ता करने लगे ।”

महानुभावो ! ध्यान रखिये ईश्वरभक्तिकी श्रद्धा होनेपर ही उसका यथेष्ट फल मिल जाता है । चाहे वह विघ्न बाधाओंको आत्मसे भक्तिकी उक्त सीढ़ीपरून चढ़ सके । परन्तु परिणामों का भावोंके प्रभावसे जीव तरलतरल हो जाता है ।

जिन दर्शन महात्म्यका वर्णन करते समय हमारी निव्दयापर दर्शन कथामें कवित सुन्दरीका नाम सहसा आजाता है । सुन्दरीने कितने कष्टों सहनेपर भी अपने प्रणसे मुँह बंदी बन्द । इसका उच्च आदर्श हमें दर्शन कथामें मिल सकता है ।



(तर्ज राधेश्याम्)

जो स्वयम् वीर ये वीरके वे कायर आज कहाते हैं !
ये सभी दलोंमें जो आगे उनको अन् पीछे पाते हैं !
जिनके पित्रोंने दिनकर सम जिनधर्म सदा प्रगटाया है !
उनके पुत्रोंने नश्वर वन वह सब सतकर्म नशाया है !
जिनके पूर्वज देशोन्नतिमें तन मन धन अर्पण करते थे !
अरुदेश जति रहित हर्ष स्वहितकी आत्म समर्पण करते थे !
संढा अन्नधर्म अहितका मूजकलपर अहराया था !
अरु घिरी हुई घनघोर घटामें ज्ञान भातु चमकाया था !
सन्तान उन्हीकी आज बही प्रतिदिन दुःखय कमाती है !
अवनी अवनति गतिका जगको वह ताण्डवतृष्य दिखाती है !
लेकिन नवयुवकी ! यदि रखो यह नीति न अब चला पावेगी !
इसके द्वारा तो बची हुई निज जाति रसातल जावेगी !
यदि ध्यान दिया नहि अवनतिपर तो ध्यान रहे दुख पाओगे !
‘कल्याण’का यह शुभ अवसर है इसको खोकर पछताओगे !

रहा परस्पर यदि यही होता मेद विकाश !

धर्म रसातल जायगा होकर शीघ्र विनाश !

कल्याणकुमार जैन “कवि भूषण” ।

सुभाषित रत्नसंदोह ।

(अनुवादक-पं० मूलचन्द्र जैन "वत्सल" सं० "आदर्श जैन")

(गताङ्गसे आगे)

सांसारिक प्रलोभनाश्रोंसे, हृदय न तनिक विरक्त हुआ ।

आत्मध्यानमें हुआ न तन्मय, मायामें अनुरक्त हुआ ॥

है तब सर्व निरर्थक, निष्फल, अतिशय आपतिधाम हुआ ।

हुआ न आत्मोद्धार तनिक भी योग हुआ नहीं काम हुआ ॥१८॥

यथा वारि चलनी द्रागोंसे होता क्षणभंग मध्य विनष्ट ।

उसी प्रकार मानवोंका सामर्थ्य, आयु, बल होता नष्ट ॥

कामिन, पुत्र, वंधु गृह वैभव नाशयुक्त अतिशय निःसार ।

किंतु हुआ इनमें विमुग्ध मन मनुज न करता आत्मोद्धार ॥१९॥

बन्धु ! युवति कामिनी जनित मुख समझो क्षण नश्वर दुखदा ।

विष फलवन् परिपाक समय इंद्रिय मुख समझो कटु फलदा ॥

अतः प्रबल संकल्प शक्तिसे विषयेच्छाएं त्याग करो ।

अविचल मुखदा सम्यक् श्रद्धा, ज्ञान चरित अनुराग धरो ॥२०॥

जड़ता ध्वंसक, निर्मल ज्ञान विवेक प्रदीप प्रकाशित कर ।

विषय सौख्यसे हटा हृदयको न्याय मार्गपर स्थित कर ।

इतने योग्य साधनोंपर भी मन न धर्म पथ स्थित हो ।

समझ दैव प्राबल्य पुनः तू कर प्रयत्न सुमती रत हो ॥ २१ ॥

श्री जिनेन्द्र पद कंज भक्ति हो आत्म तत्व भावना भजू ।

विषय विहित इंद्रिय दम, संयम यम श्रुति शमका साज सजू ॥

दोष कथनके लिए मूक हो प्राणि मात्रका मित्र बन्तू ।

जब तक मुक्ति न प्राप्त भावना यही पवित्र चरित्र बन्तू ॥ २२ ॥

जिसका हृदय कोपाग्निसे दग्धित व्यथित हो तापमय ।

संसर्गसे जिसके मुग्धी होते अग्नि आतापमय ॥

वह मनुज यदि शतशः गुणोंका हो अनुल भण्डारसा ।

माणयुक्त विषधर सदृश है वह त्यक्त दुःखागारसा ॥२३॥

है भस्म कर देती अनल ज्यों अमित ईंधन व्यूहको ।
 सों व्रत नियम, उपवास, यम, तप जंनित पुण्य समूहको ॥
 कोपाग्नि भी क्षण मात्रमें कर दग्ध दुख देती अमित ।
 अतएव सहृदय साधुजन न्यज क्रोध होने शान्ति चित ॥२४॥
 नरपति, फणेश, प्रचण्ड अरि, केहरि करीन्द्रादिक कभी ।
 यदि हों कुपित तो एक भवमें प्राण नाशक हैं सभी ॥
 हा ! किन्तु क्रोधानल, सकल सुख मूल शान्ति स्वधर्मको ।
 कर भस्म दुख देता सतत, हत विमल गुण सत्कर्मको ॥२५॥
 रहता निरंतर शान्त कारण वश कुपित होता कभी ।
 वह व्यक्ति कारण नष्ट होने, शीघ्र होता शान्त भी ॥
 है किंतु जो मानव अकारण ही कुपित रहता अहो !
 उसकी हृदय कोपाग्नि कैसे शान्त हो सकती कहो ? ॥२६॥
 ग्रह, काम मदिरा मद सदृश यह क्रोध दानव, व्यक्तिका ।
 कर धैर्य विचलित बुद्धि हत विध्वंस करता शक्तिका ॥
 सतधर्म शीघ्र विनाश, कटुक कुवाच्य कहता ज्ञान हत ।
 अतएव सहृदय मनुज देने त्याग, हो सदबुद्धि रत ॥ २७ ॥
 मद मत्त, मदिरा मद सदृश आकृति बनाता क्रोध है ।
 आरक्त होते नेत्र, कंपित गात्र, भृष्टि बोध है ॥
 उत्तम विचारोंका दमन औ नष्ट करता ज्ञान धन ।
 सम्पूर्ण दुःखप्रदा कुपधमें है फंसाता क्रूर बन ॥ २८ ॥
 है ज्वलित अनल समूहसे पारा पिघलता शीघ्र ज्यों ।
 वम क्रोध अरि द्राग अहो सतधर्म कर्म सशीघ्र त्यों ॥
 मैत्री, दया, यश, व्रत, नियम, इन्द्रिय विनय तप आदि भी ॥
 सौभाग्य, भाग्य, विवेक प्रतिमा नष्ट होते हैं सभी ॥२९॥
 कोई मनुज मासोपवास सहित निरंतर तप वहे ।
 हो सत्य भार्षा, संयमी, त्रिसमय सुध्यान निरत रहे ॥
 परित्याग गृह वनमें वसे, दृढ़ पालता हो ब्रह्मव्रत ।
 वह किन्तु यदि है कोप वश तो व्यर्थ है सब पुण्य कृत ॥३०॥

त्याग धर्मकी महिमा

(ले०—परमेश्वरदास जैन, न्यायतीर्थ—सूरत)

त्याग एक सामान्य विषय है। इसके संबंधमें जाबाबद्वृद्ध किसी न किसी रूपमें जानकारी रखते हैं। अगर इसके अन्तस्तकको टटोका जावे तो इसकी महिमा उतनी ही है जितनी कि खोर तप व संयम करनेकी। त्यागके बिना ज तो इस लोकमें कीर्ति होसकती है और न स्वर्ग मोक्षकी प्राप्ति होसकती है। मुनि व तीर्थंकर जबतक त्याग नहीं करते तबतक जगत मान्य नहीं होते। दूरकी बात जाने दीजिये, वर्तमानमें आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे कि जिनको कल कोई जानता भी नहीं था आज इनको सारा देश श्रद्धाकी दृष्टिसे देखता है।

अगतमान्य महात्मा गांधीजी त्यागके कारण ही इतना महत्त्व प्राप्त करसके हैं। अन्यथा जब वे बेरिष्टरी करने थे, हजारों रुपया कमाते थे, और बड़े २ अंगरेजोंके साथ उठते बैठते थे तब उन्हें भारत वर्षमें कौन जानता था? मगर जबसे उन्होंने आफ्रिकाके जेलोंमें कष्ट सहन किये, हिंसाका त्याग किया और लोगोंको अहिंसाका पाठ पढ़ाया, झूठ और दगाबाजीसे घृणा की, ब्रह्मचर्यव्रत धारण किया, परिग्रहसे ममत्व छोड़ा और देशकी सेवार्थ अपने जीवनको अर्पण कर दिया तबसे भारतवर्ष ही नहीं किन्तु सारा आळम आपके सामने नतमस्तक होगया है। यह सब त्यागकी ही तो महिमा है।

अपने देशके सैकड़ों-हजारों नेता ऐसे हैं जिनको ४-५ माउ पूर्व कुछ व्यक्ति ही जानते होंगे, मगर जबसे वे घर परिवारका परित्याग करके देश सेवाके लिये आत्मसमर्पण कर चुके तबसे वे भारतके बख्शेर की जवान पर रहते हैं। हमारे जैनधर्ममें त्यागका भारी महत्त्व है। त्यागीकी देव भी सेवा करते हैं। त्यागसे मनुष्य घरबार छोड़कर वैरागी होजानेका ही नहीं है, किन्तु "अकितस्त्याग" का उपदेश किया गया है।

त्यागको जैसे तो कई विभागोंमें विभक्त कर सकते हैं, किन्तु मूलमें "भीषधि शास्त्र अभय आहारा" का विधान किया गया है। इन्हीं चार भेदोंमें जगतके तमम त्यागोंका समावेश होजाता है। इनमेंसे जो जिसके लिये अनुकूल पड़े वह उतना त्याग कर सकता है। त्याग तो एक ऐसा सरल और सीधा कार्य है कि उसे गरीब अमीर, मूर्ख विद्वान और नीच ऊंच सभी कर सकते हैं।

अगर आप श्रीमान हैं तो धर्मके प्रचारके लिये अपनी सम्पत्तिका त्यागकर द्रव्यको सफल बनाइये। ज्ञान विद्यदानकी सबसे अधिक आवश्यकता है। अगर आपने अपनी आर्थिक सहायतासे एक ही अच्छा विद्वान तैयार कर दिया तो कहना होगा कि बड़ा भारी कार्य कर दिया है। सामाजिक संस्थायें, विद्यालय, अनाथालय, श्राविद्याश्रम आदि सब श्रीमानोंके सहारेपर ही चलते हैं। इनकी सहायता करना मानो धर्म देश और समाजकी सेवा करना है। अपना धर्म यह नहीं कहता कि सर्वस्व समर्पण

करके सभीको वापस होनाना चाहिये । हां वह ऐसा त्याग करनेवालोंको सर्वोच्च अवश्य समझता है ।

अपसे यदि इतना न होसके तो जितनी सामर्थ्य हो उसको न छिपाया जावे । अपनी शक्तिका छिपाना एक प्रकारका छल है । इस लिये धर्म प्रचारके लिये यथाशक्ति द्रव्य समर्पण करना आपका परम कर्तव्य है । क्या ही अच्छा हो यदि आप अपने द्रव्यसे धार्मिक ट्रेडर छपवाकर बाजारोंकी संख्यामें बटवावें ? प्रत्येक मनुष्यके पास जैन धर्मका संदेश पहुंचानेका यह सबसे सरल तरीका है ।

यदि जीवदयाकी दृष्टिमें दानका विभाग किया जावे तो मुफ्त औषधि वितरण करना, गरीबोंको महामता पहुंचाना, अपने मौनशौकको कम करके देशी व्यापार और देशी चीनोंके कारखाने खोलकर बेकार लोगोंको काममें लगवा देना, परम उपकारका कार्य है ।

चूंकि आज राष्ट्रीय वातावरण है । इसके लिये चारों ओरसे त्यागकी पुकार आरही है । देशको त्यागकी भारी आवश्यकता है । इसके लिये भी प्रत्येक स्त्री पुरुष, युवान, बालक और बालिका त्याग कर सकते हैं । यदि आप अधिक कुछ त्याग न कर सकते हों तो कमसेकम धार्मिक, मानसिक और वाचनिक सहायता तो कर ही सकते हैं । देशकी स्वातंत्र्य प्राप्तिके लिये जस्ता एक सबसे बड़ा अमोघ शस्त्र है । आप अपने द्रव्यसे इसकी छत्रसे खुलवाइये । बेकारोंको मजूरी देकर सूत कतवाइये और कपड़ा तैयार कराइये । लोगोंको देशी वस्त्र

उपयोग करनेके लिये समझाइये और अपने गांवके नासमझ लोगोंको व्यवस्थासे निकालकर सन्मार्ग पर लगाइये । यह सेवा राष्ट्रीय सेवा है और धार्मिक भी कही जा सकती है । कारण कि शुद्ध स्वदेशी वस्त्रोंका प्रचार होनेसे हिंसाकी कमी होगी । लोगोंको वदीसे बचानेके कारण उनका उद्धार होगा । गरीबोंको काममें लगा देनेसे उनका पोषण होगा । क्या यह धार्मिक कार्य नहीं है ? ऐसे उत्तम कार्योंमें त्यागकी आवश्यकता है । इसमें आपको पैसेका त्याग करना होगा, समयका त्याग करना होगा और स्वार्थको तिरांकलि देना होगा ।

भारतोद्धारकी धुनमें यस्त होकर जब इंसारों वीर हथेलीपर पाण लिये फिरते हैं तब कदा अपन देश और धर्मके लिये इतना सीबा सादा काम भी नहीं कर सकेंगे ? यदि ध्ये कि त्यागकी योग्यता प्रत्येक व्यक्तिमें है । अगर कदा उस योग्यताको अमलमें लाता है तो सश्रमता चाहिये कि अपनी मनुष्यताका उपयोग करके है और यदि अपनी शक्ति या योग्यताको छिपाता है तो कहना होगा कि कर्तव्यकृत्य होकर मानधर्मका विवात करता है ।

आप इस बातको भलीभांति जानते हैं कि त्यागी कभी न तो दुःखी हुआ है और न अपयशी हुआ है, जब कि संघर्ष करनेवाले अधिकांश वधाकुल और दुःखी देखे जाते हैं । इस विषय पर विशेष कहनेसे क्या लाभ ? इतना उत्तम पर्यंत्रण पूर्व निकल गया, इस समय आपने त्याग धर्मका व्याख्यान सुना होगा, मनन किया होगा और दान दिया होगा । अगर कुछ त्याग न

किया हो तो इसका समय ज्ञान भी है। कारण कि स्वागका दिन कोई निश्चित नहीं होता है। मनुष्य हर समय जाना प्रकारका स्वाग कर सकते हैं। क्या आपसे आशा की जावे कि आप विद्यादान, धर्मप्रचार या देशके किये कुछ स्वाग करेंगे ?

द्रव्य संचय करते तो जब जिन्दगी समाप्त होनेवाली है। संचयसे संतोष कभी भी नहीं होसकता है, कारण कि—

न तृप्ता नैव तृपन्ति लोभाग्वा हि महाधनैः ।
स्फारैरपि न पृथ्वी नदीपुरैः पयोधराः ॥

जर्वात्—संचय करनेवाले कोभी पुरुष महान सम्पत्ति प्राप्त करनेपर भी न तृप्त हुये हैं और न तृप्त होसकते हैं। जैसे समुद्र नदीके पुरोंसे तृप्त नहीं होता।

हां, स्वागी पुरुष सदा संतोषी रहता है, तृप्त रहता है और सुखानुभव करता है। दानी पुरुषका मन ही सकल है और उसकी ही वास्तवमें कीमत है। कोभी पुरुषका द्रव्य तो मिट्टीके डेढेके समान समझना चाहिये। समुद्र चूँकि संचयी है इसलिये उसके जतुक मलका कोई महत्त्व नहीं है, जब कि दानी बादरकी एक बुँदकी कीमत स्वातिनक्षत्रमें प्रदान करनेसे हजारों रुपयोंकी हो जाती है।

इससे अपनेको शिक्षा लेना चाहिये कि द्रव्य खेज, काज, भावकी आवश्यकतानुसार स्वाग किया जावे। वह बाद रहे कि स्वागमें नाम बढ़ाई और महत्वाकांक्षाका मोह न रखे। अपनी समाजमें कुछ ऐसे श्रीमान हैं जो गुप्तरीत्या विद्यादान और नाना प्रकारकी सेवाओंके लिये स्वाग किया करते हैं। समाजमें ऐसे स्वागि-

योंकी आवश्यकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि स्वाग करनेवालेका जीवन उच्च है, धार्मिक है, उदार है और सुखी है, जब कि संचयशील पुरुषकी परिस्थिति इससे विपरीत ही होती है। इसलिये जो मार्ग आपको जमील हो उसको अवश्य गृहण करना चाहिये।

परीक्षित प्रयोग ।

धातुपुष्ट पर चूर्ण—गोसूतक बड़े, काठे तिक, बबूलकी फली, और बड़े अंकुर यह सब १-१ छटांक, रूपरस (चांदी मरम) ६ माशा, मिश्री १ पाव, सबका बारीक चूर्ण बनाकर १ तोलेकी मात्रासे दूधके साथ सेवन करनेसे धातु पुष्ट होकर अनेक बीर्य विकार नष्ट होते हैं।

पन्द्रह मिनटमें ज्वर उतारनेका लेप—कुबड़े ६ माशे, सौंड ६ माशे, काका जीरा ६ माशे और अदिकेन ३ माशे। सबको बकरीके १ पाव दूधमें पीसकर मंद अग्निसे कुछ गरम कर सिरसे पांव तक मालिश करनेसे उसी वक्त उबर उतर जाता है।

मंदाग्नि पर चूर्ण—शुद्ध मुहागा १ तोला, नीलावर २ तोला, सोरा ककमी २ तोला, सौंवर २ तोला, काजीमिरच २ तोला। सबका बारीक चूर्ण कर ३ माशेकी मात्रासे खानेसे मंदाग्नि दूर होकर पेटके समस्त विकार दूर होते हैं तथा पेशाबको शुद्ध करता है।

सापत्तिष्ठी पर—इल्ली मुनी १० तोला, कि-टकिरी फूला १० तोला, इन्द्रावनकी जड़ १० तोला, मिश्री १० तोला। सबका चूर्ण बनाकर ६ माशेकी मात्रासे गरम जलके साथ सेवन करनेसे तिष्ठी दूर होती है। "वेद्य"

સમાજોત્તરિનો સરળ ઉપાય

(લેખક—દોશી કુલચંદ સુરચંદ ઇડર.)

અંધુઓ ! આજકાલ દરેક સમાજે પોતાની ઉન્નતી કેમ થાય, પોતાનો ધર્મ ઉન્નત કેમ અને તેજ પ્રચલત કરી રહેલા છે. પ્રાચિન સમયમાં આપણો જૈન ધર્મ સમસ્ત સૃષ્ટિમાં અગ્રસ્થાને લેખાતો હતો. તે ધર્મની મહત્તા ઐટલી અધી વિરતત પ્રમાણમાં જગવ્યાપિ અને ગમ્મ હતી, કે અન્ય મતાવલમ્બી મહાન રાજ્ય મહારાજ્યો. રૂપિ મહર્ષિઓ પશુ તેની સામા શીર જુમાવતા હતા. પરંતુ અત્યારે તેજ ધર્મ અને આજ તાજ દષ્ટિ કરીએ તો દરેક ધર્મો કરતા તેજુ સ્થાન છેલ્લું આવે છે. વિચારતાં-વેતાં આંખમાંથી અશ્રુ પાણીગત થઇ જાય છે. આટલી અધી ધર્મની હીનતા થવાનું મૂળ કારણ શું ? શોધતાં જણાઇ આવે છે કે આપણો સીધી લાયક અને બીજાં કુસંપ ગિપની મિત્રતા.

કુસંપે મહાન રાજ્યોને નમીનદોસ્ત બનાવી દીધાં છે. કુસંપે અનેક એકાંપથી રહેતાં કુટુંબોમાં હલહલ ગિપનો સંચાર કરી પાવમાલ બનાવી દીધાં છે. કુસંપના ચેત્તેજ મહાન યાદવ-રથાળીની સ્થાપના થઇ હતી જે ત્રિગુણને અચાર સુધી કોઇ બુધી સમ્યું નથી. અરે આગળ ક્યાં જઇએ આપણા ભારત વર્ષમાંજ કુસંપના ઝેરી બડકાઓ લાગવાથી તેની શી દશા આવી પડી છે ? કુસંપેજ આર્થધર્મ વિન્હેદક પરનેરિ દેશમાં આવવા નીમત્રણ કયું હતું. હાય ! જે ભૂમિના સંતાનો શાંતિ સુખ અને ઐશ્વર્યમાં મહાક્ષતા તેજ ભુમિના સંતાં । કુસંપ દાવા-નગમાં કેવા સ્વર્ણી રહેલાં છે કે જે વિચારતાં ખરેખર કંપારી છુટે છે. કુસંપ ધર્મ, કર્મ, ધન, વૈભવ, યશ સુખ શાંતિ દરેકનો નાશ કરે છે. કુસંપ પ્રેમઝરને લાસ્મિભુત બનાવે છે. પ્રેમના નાશ ત્યાં દયાનો નાશ, દયનો નાશ ત્યાં ધર્મના પશુ નાશ થાય. એ સ્વાભાવિક છે, કોઇપણ

ધર્મનો પાયો દયા, અર્ધિતા વિના રચાયો નથી. પરંતુ તેના સંચલકો દયા શબ્દને તિલાંબધી આપી તેથી વિરુદ્ધ વર્તન કરતા હોઇ આપણે તે તરફ કેવી દ્રષ્ટિથી જોઇએ છીએ. ખરેખર આપણને આપણી કુસંપી અને ઇર્ષાળુ વર્તણૂકને માટે શા માટે તિરસ્કાર ન થવો જોઇએ. પરંતુ આવા ઝેરીલા ચેપીલા હુશુણો આગળ કંઈપણ જોઇ શકાતું નથી.

કુસંપથી અનેક પ્રકારના વેરકાયદા થાય છે. તેનાથી અનેક પ્રકારની હાનીઓ ભોગવવી પડે છે. તેનાથી કોઇએ કંઈપણ લાભ મેળવ્યો નથી તો આવા કુસંપને ક્યો હીનભાગી હશે કે તેનું અસ્તિત્વ આપણા ત્યાં જોવા ઇચ્છુક હોય. કોઇ એમ નહી કહી શકે કે કુસંપ હાનીકારક નથી. દરેક એવજ કહેશે કે આપણે કુસંપ ન જોઇએ. તો શા માટે આપણે કુસંપ દાવાનળની હોળીમાં અંપલાવવું જોઇએ ? એશક નહીજ તેને તો દેશવટો આપ્યેજ છુટકો હોય.

ધર્મ અંધુઓ ? આપણે શાંતિના ઉપાસક મહાવીરના બકનો કે જે મહાવીરે જન્મતમાં અહી-હાનર વર્ષ પૂર્વે અહીંતા ધર્મનો જય જયકાર કરાવ્યો હતો કે જે તા પ્રમાણે વનવસી હીસક પશુઓ પશુ પોતાનો કુદરતી વૈરી સ્વમાવ ત્વજ ઇષ શાંતિ રસનું પાન કરતાં હતાં ગદા ? શો તે સમય ! પરંતુ ફક્ત અહી હાનર વર્ષમાં તેજ ધર્મની અને સમાજની શી પાવમાલ દશા જ્યાં ભાઇ ભાઇમાં સંપ નહી ત્યાં બીજાં શું કહેવું.

સુહરો ! આપણે મદતીરતા પુત્રો ! આપણને કુસંપ ગિપના બકનો થવું ન પાલવે. આપણે માટે અંદર અંદરના ભેદ ખાવો અને ધાર્મિક જગડાઓ કરવા શોભારખદ નથી. આપણ માટે તો એક સંી અને વિશ ગ હૃદય હોવા જોઇએ. આપણે જૈન સિદ્ધાંતના વિશાળ અને શુદ્ધ નીકલકંક તત્વો માટે અભિમાન ધારીએ છીએ ત્યારે આપણાં રીત રીવાજો, ગિવેક, વિવય પ હનશીલતા, નોડરતા બાહોશીના શામ્ભાવ, સંપ અને હૃદયની

વિશ્વાળતા માટે શા માટે સંકુચીત મન રાખવું જોઈએ. યાદ રાખજો આ દુનીયામાં અહંભાવ, ઇર્ષ્યા અને હઠાચ્છેદી સુખતીલા સ્વભાવજ કુતંપવું મુળ છે કુસંપને વધાવવો હોય તોજ માન, કપાલ અને હઠાચ્છેદને માન આપને. આ હઠાચ્છેદી સ્વભાવેજ આપણી પાયમ લી કરી નાંખી છે.

બંધુઓ ! ઉપરના અહંભાવ ઇર્ષ્યા અને હઠાચ્છેદ કુતંપના એ પરમ સહાયક છે. જ્યાં એ ત્રણ દુર્ગુણો નથી ત્યાં કુસંપનો અભાવ છે. એ દુર્ગુણો ખરેખર જીવને મહાન ધોર નરકમાં નાંખે છે. સંસાર અંધનને વધારે અને વધારે દ્રઢ બનાવે છે. આ કારણને લઇને પૂજ્ય મહાત્માઓ તેનો હાથો પશુ લેવો મહાન પાપ મમજ છે. અહંભાવી મનુષ્યને વધારે અપમાન સહેવું પડે છે. અહંભાવી કોષવું બહુ કરી શકતો નથી. ભરે ! પોતાવું બહુ કરી ન શકે તો ખીજવું ક્યાંથી કરી શકે ? તાડવું ગાડ પોતાની ઉચ્ચામને માટે બલે મસ્ત અને પરંતુ તે પવનના એકજ સપાટે ધરાશાયી બની જશે અને તેના અસ્તીત્વને ગુમાવી બેસશે. પરંતુ આમજીવને ઉપાડવાને પવનને ઘણી મહેનત પડશે અને પડશે તો તે ઉપકાર વૃત્તિથી પડશે.

આવેજ પ્રકાર આપણા જૈન સમાજમાં આલી રહ્યો છે. એક ઠહેરો હું વડો તો ખીજે ઠહેરો હું વડો. આમ વડાઇ અને વિદ્વાતાના અહંકારમાં તેઓમાં ઇર્ષ્યા અગ્નિ એટલો વ્યાપી રહ્યો છે કે ક્યારે તેના ઝેરી બડકા આપણને હતા ન હતા કરી નાંખશે તે જાણવું પણ મુશ્કેલ છે. આવી રીતે વડાઇના પ્રવાહમાં તજાઇ કોષએ પણ સાર ઠાઠો નથી તો આપણે શી ગણતરીમાં.

વડાઇના અભિમાનમાં મસ્ત રહેનાર કૃષ્ણવું અભિમાન ભગવાન તેમનાજ આગળ કેટલું ટકવું હતું. છ ખંડને જીતનાર ચક્રવર્તીને ધારણ કરનાર મહાન ચક્રવર્તી ભરત મહાન યુદ્ધશાળી હોવા છતાં બાહુબલીના બલવું માપ કહી શક્યા નહોતા. આત્માની શક્તિ અમાપ છે.

પૃથ્વીક રીતે મહાન પ્રભાવશાળી માણસ કરતાં એક નાના ગાખડામાં રહેનાર માણસ વધુ સંજીન કામ કરી શકે છે. રત્નો પાકવાવું સ્થાન એક હોવું નથી.

આજના જૈન પેપરોનાં પાનાં ટીકા ટીપ્પણી અને નીંદાઓ બરેલાં હોય છે. કોષમાં ફલાણો આમ છે, ફલાણાની વર્તણુક આમ છે, ફલાણો ધર્મ વિચ્છેદક છે, ફલાણાવું જીવ એકંદિ જીવ છે. તેને સ્વેચ્છમાં હરાવી શકીએ છીએ ફલાણો ફલાણાની પાસે કામ કરતો દનો હમણાંજ ચઢી ગયો છે. ફલાણો હમણાંજ નરીન પાક્યો છે. તેનાથી શું બહુ થશે. આમ ટીકા ટીપ્પણી અને નીંદા કુચલીનાં ખીલાડાં ચીતરી પેપરોનાં પાનાં બગાડી જાહેર જનતાનાં મન ઉચ્કરી ચૂકે છે. બંધુઓ ! આપણા શાસ્ત્રમાં નીંદા કરવી શું પાપ નથી ? શું નીંદા કરનાર માણસ પાપી ! હી શકતો નથી ? નીંદા કરનાર શું નરકમાં નથી જતો ? યાદ રાખજો “ દુર્જનઃ પગ્ન દોષાન્ પશ્યતિ ” તેનાથી ખીજવું બહુ થવું જોઇ શકાવું નથી. તો હે સમાજના પંડિતો ! આપુઓ ! તમે આમ એક ખીજની નીંદા અને ઇર્ષ્યાના પ્રવાહમાં તજાઇ શા માટે શુભ કર્મને હડસેલી મૂકો છો. તમારાં આવાં કર્તવ્યોપી કોષ પણ દીવસ સમાજવું તેમ ધર્મવું બહુ ઘણ શકવાવું નથી. સમાજવું બહુ તેજ માણસ કરી શકે છે કે જોનામાં ઇર્ષ્યા, મોટપ, મમતા અને અસહિષ્ણુતાનો અભાવ હોય એ અને વિશ્વાસ હલવનો હોય છે. યાદ રાખજો તમારાં આવા આચરણોથી તમે સમાજનો વિશ્વાસ દમ્બેશને મટે ગુમાવી બેસશો તમારે માટે સમાજ શંકાની દૃષ્ટિની જોશે. બલે તમે પોતાને મોટા માનતા હો. આ સમાજ દિવેપિ ધારતા હો. પરંતુ જ્યાં સુધી તમે માન અને કીર્તિનો લોભ ત્યજ દેહ એક સમાજ હીતના ખેમથીજ કામ કરતાં નહી શીખો ત્યાં સુધી તમારો પરિશ્રમ નીર્ભક ઘણ હાંસીને પાત્ર થશે.

બહારની સમાજને તમારી તરફ ઢાંસી કરી નહીં છે. તમારી ઢાંસી તેજ સમાજ અને ધર્મની ઢાંસી છે તે માટે સાચું માનવું, આ લેખકનો બહીષ્ણક તમને નોંધવાનો યા ઉતારી પાડવાનો નથી. પરંતુ તમે સ્વાર્થને ત્યજી વિશુદ્ધ મનથી કામ કરો અને તેનાં મીઠાં રજા સમાજ ચાખે એજ છે.

આ દુનિયામાં દરેક માણસો સદંતર નીચલાંક હોઇ શકતા નથી. કોઇમાં કોઇ અને કોઇમાં કોઇ દોષ હોય હોય હોય અને હોયજ. દરેક પ્રકારના ગુણી તો બગવાન સર્વજન હોઇ શકે છે. માટે દરેકે દુષ્ટ પાણીના મીઠાણમાં દુધને શ્રદ્ધ કરનાર હાંસની માશક ગુણુગ્રાહી બનવું જોઈએ. કોઇ પણ માણુમ હકબુત કરવાથી યા ઉતારી પાડવાથી સમજી શકતો નથી. પરંતુ ખાનગી સમજુતીથીજ સમજી શકે છે. એનાં હજારો બલકે લાખો પ્રાણી શાસ્ત્રોમાં વાચીએ છીએ. શું આગળના વખતમાં કોઇ મુતી શ્રાવક યા સંજન પાપમય કચેરો વચ નહીં થતો હોય ? પરંતુ પહેલાં ઉપચુદન જાંગના ધારક શ્રાવકો સમાજથી તેમજ ધર્મની ઢાંસી શ્યામ તેવો સમય આવે તે પહેલાજ તેજો હુપાય કરી લેતા હતા. તેઓ વિવેક સંતોષી ન હતા પરંતુ શ્રુત બલિષ્ઠનો વિચાર કરનારા હતા. પરંતુ હાય ! અસોસ કે આપણે તેજ મહાન પુરુષોના પુત્રો હોવા છતાં આપણાં મન કેવળ છર્ષા, અદેખાઇ અને સ્વાર્થમય બની મથેલા હોઇ કંઈ પણ બલિષ્ઠનો વિચાર કરી શકતા નથી.

મહાનુભાવો ! હાલની સમાજની પ્રરિચીતિ વીચારી એકસંપી બનો અને જનાવવાનો વિચાર કરો. યાદ રાખજો “કુપાળ કુટે પાટો બાંધી શકાશે પરંતુ ઘર કુટે પાટો બાંધી નહી શકાય.” મહાન રાજ્યો વીજેરેનો નાશ તેમના ઘર અંદરના કુસંપનેજ આભારી છે. ભાવતવર્ષમાં થવેનાં આગમન ઘર કુસંપનેજ આભારી છે. તે શું આપણે અંદર અંદરનો કુસંપ સમાજ ધર્મને નુકશાનકર્તા નહીં નીવડે ? અજ્ઞાત અણુ-

જાગરું શતું હોય તો ખાનગી મસલતથી સામાજાની રૂપમાં કાર્ય કરી અટકાવો, પરંતુ પબ્લીક રીતે બહાર પેપરમાં ચર્ચવાથી છાંદમે બહલે અનાપ્ટ પરિણામ આવે છે. વીચારો, જુઓ કે તમારા જાના કાર્યક્રમથી તમેએ કેટલો લાભ આપ્યો ? એથી શું ગ્રાત-પક્ષીના વિચારો દાખવાને સમર્થ નીવડયા ? આ દુનિયામાં શીરજોરી અને મારતેમીયાંથી કામ ન બની શકે. કાર્ય સાધના તો બુદ્ધિમતા અને શાંત વ્યવસાયથીજ બની શકે.

દાખલા તરીકે ગારડોલી પ્રકરણમાં બીટીક રાજ્ય સત્તાને નમતું આપવું પડ્યું તે શાથી ? અહિં સાતમક અસહકારથીજ. વૃણા કરવાથી અને તીરકારથી સમે પક્ષ વધારે હકાશી અને દંડ બને; અને નમતું આપવાને બદલે વધારે અને વધારે ઉત્તેજત બને છે. છેવટે તે પોતાના ધર્મને પણ તીલાંજલી આપી દે છે આવી રીતે આપણે કૃષ્ણી સંખ્યામાં આપણા ધર્મનુબુએતિ ધર્મથી વ્યુત કરી બેદ છીએ. જે આપણાં સંકુચીત વિચારોનુંજ પરિણામ છે. આ વખતે અને યાદ આવે છે કે એક જૈન અંધુએ લાલાજનપતરાખને પુછ્યું કે લાલાજ આપે જૈન ધર્મમાં શું ખામી દેખી કે જૈનકુળમાં ઉત્પન્ન થવા છતાં આપ ધર્મને અંગીકાર કર્યો. લાલાજએ કહ્યું કે જૈનધર્મના તત્વો માટે અને પુણ્ય નાન છે જૈન ધર્મમાં કોઇપણ પ્રકારની ખામી નથી. પરંતુ તેના સંચાલકો અને નેતાઓનાં મન સંકુચિત વિચારનો છે. કે જને લીધે મારે આર્થધર્મને સ્વીકારવો પડ્યો. અંધુએ આપણા કેટલાક ખટપટી હલવાના એને લીધે આવા સમર્થ નિદાનોને સમાજથી દુર થતા જોઈએ છીએ. તે શું તેઓનો તિરસ્કાર કર્યાથી પોતાના વિચારોમાં ફેરફાર કરે ? મદાન સ્વતંત્ર હલવાના વિદ્વાન મનુષ્યો એમ હકબુત કર્યાથી પોતાના વિચારો ફેરવી શકતા નથી. પરંતુ શાંતિથી તેના દુચુણી ખાનગીમાં સમજાવ્યાથીજ તેઓ ખરાબ બજાતા વિચારોને છોડી શકે. અધાઓમાં સહિષ્ણુતા હોતી નથી પરંતુ

કેટલાક માનના ભુખ્યા પણ હોય છે તેઓને માન આપીને પણ ધર્મમાં રથીત કરવા જોઈએ. આમ કર્મથી રથીતકરણ અંગતું પાલન પણ થઈ શકે છે કે જે મહાન પુણ્યદાયી છે.

અંધુઓ, આપણા આવા ઇર્ષ્યા મુંઘતીલા, અહંભાવી, અને કુસંપી સ્ત્રીચ્છનીય વિચારોને લેખને જૈન-સમાજ તેજસ્વ ધર્મને કેટલું ખમતું પાયું છે તેનો પણ વિચાર કરવો જરૂરનો છે.

૧—અખીલ ભારતવર્ષિય દિગંબર જૈન મહાસભા કે જેના ઉપર સમસ્ત દિગંબરોના ઉત્કર્ષનો આધાર હતો તે પડી આંગી અને નહીં જેવી થઈ પડી.

૨—આપણા ધર્મરચાનાના જમડાઓ દીન પ્રતિદીન વધારે અને વધારે પ્રમાણમાં ઉપરચોત થવા હોય આપણા કુસંપે તેમાં શ્વેદમંદી મેળવી શકતા નથી. અને ધાર્યું કામ પાર પાડી શકતા નથી.

૩—વિધર્મીઓથી થતા હુમલા સામે જોઈએ તેવી રીતે સામા થઈ શકતા નથી. અને ધર્મને કલંકીત થતો જોવો પડે છે.

૪—સમાજમાં જુના વખતના ધર કની રહેલા કુરીવાર્ગને દાખવાને મા જડમૂળથી કાઢવાને સમર્થ થતા નથી.

૫—એક એકની ઇર્ષ્યાથી કુસંપ વધવાથી અંદર અંદર કલહ કરાંએ છીએ અને છેવટે આપણાજ સામાજી ભાઈઓ પોતાના ધર્મનીજ નીચેદણી કરવા પ્રેરાય છે તેના માટે ખરેખર જવાબદાર હોય તેો સમાજ નેતાનો દબરો લેનારાજ છે.

ઉપર કહ્યા તે નિવાય અનેક પ્રકારનાં નુકસાને સમાજને ડમગાની ન્યાં છે તેથી હે સમાજનેતાઓ ! જરા સમજો અને વિચારો. આમ ઇર્ષ્યાવાદી અને કુસંપથી કોઈપણ દિવસ કેટલું બહુ નુકું નથી. નાહકના પાપના આરા પાવવા પડે છે તે અસીતજ જાણુએ. કુસંપના અજાને આર્ષ સમાજરો, સ્વેતાંવરો વીરે પોતાના ધર્મને

કેટલે ખધે ફેલાવો કરી રહેલા છે તે અનુકરણીય છે. છેવટે જે તમારે સમાજને ઉત્તમ દશામાં લાવવી હોય તેો ભગવાન અક્ષકંક નહીં પરંતુ નીકલંક જેવા ઉદાર ખો. ઔષ તંપ્રદાયના ભવથી કારાગરમાંથી નારતા અને બાઈઓ અક્ષકંક અને નીકલંક પોતાના અનેમાં અક્ષકંક સમર્થ વિદ્વાન હોય તેમનાથી જૈન ધર્મનો ઉદાર થશે. એમ જાણી અક્ષકંકને ખ્યાવવા ખાતર મહાત્મા નીકલંક પોતાના યશની તેમજ શરીરની દરકાર કર્યા વિના આત્મમોગ આપો હતો. આડેકાણે મારો કહેવાનો આશય તેમ નથી કે અક્ષકંક દેવ કરતાં નીકલંક વધારે પૂજ્ય છે. મેશ્ર અક્ષકંક દેવ તે સમયના ધર્મ રચાયક હતા પરંતુ નીકલંક દેવનું વર્તન આપણને અત્યારે ઘડો લેવા જેવું છે. તે વખતે નીકલંક આપણી માધકના પ્રવાદમાં તણ્યા નહતા પરંતુ તાપકપટતાથી અને નીકરતાથી પોતાના બાઈના હરોજ ધર્મને ઉદાર થવાની ઇચ્છા રાખી હતી.

મહાનુભાવો ! આપણા સમાજને હાલમાં તેવા અક્ષકંક અને નીકલંકોની જરૂર છે. નીકલંક જેટલે કોઈપણ પ્રકારની ઇચ્છા વીના ધર્મને માટે મરવાનું પતંદ કરનારા અને અક્ષકંક જેટલે ધર્મચાયક એ અને પ્રકારના મહાનુજ્ઞોની જરૂરીયાત છે. હાલતા સમયમા આપણા સમાજમાં ધારે તેો સમાજ નેતાઓ અક્ષકંક અને નીકલંક ખની શકે તેમ છે. પરંતુ જાણુએતો સમાજનેતાનો ખ્યેય એકજ હોવા છતાં તેમની પ્રજ્ઞાલીકાએ જુદુંજ પરિણામ નીપજવી કાઢ્યું છે. એક ખાણુ પાંડવ પાર્થીએ ધર્મલેખમાં દાવાનળ સળમાળ્યો છે. ત્યારે બીજી તરફથી ખાણુ પાર્થી અને હાયે તેવું કાણુ ખેચી લેવા પ્રયત્ન કરી રહી છે. આમાં કોઈથી બહુ થઈ શકે નહીં. જેનો અર્થવાન અર્થજો. તેવું કુદૃષ્ય કુરામાં ” એ ન્યાયે ન્યાં અનેમાં સંપ નહીં ત્યાં શી રીતે સમાજનું બહું થાય.

હે સમાજ નેતાઓ ! આપણે કયા ધર્મનેજ

ધર્મ માનનારા કોઇનું દીલ દુભવવું તેમાં પાપ માનનારા શ્રાવકના ઉચ્ચ કુલમાં ઉત્પન્ન થયેલા તેમને આવા ધર્મને માટે અંદર અંદરના કલહનાં દીમાણાં થા શોભે ? આપણે માટે તે પાટીં એ શબ્દજ ન જોઇએ. જો તમારે ખરા અંતઃકરણથી સમાજ તેમજ ધર્મની ઉચ્ચતીજ કરવી હોય તો પાટીં શબ્દને દેશવટો આપો. કોઇનામાં એ ભાવ ન હોવો જોઇએ કે અમુક કામ હુંજ કરું. પરંતુ એજ ધ્યેય રાખવો જોઇએ કે અમુક કામ કરવું છે. તેને શુભેચ્છાથી કરવાનું અંગીકાર કરે તો તેના શુભ પરિણામથી આનંદ માનવો યા અશુભ પરિણામથી બીજી વખત પ્રયત્નશીલ થવું. પરંતુ કોઇના કાર્યથી અસંતુષ્ટ થવું જોઇએ નહીં એવા ભાવનાશાળી મારે એક નહીં તે બીજાં અનેક વિશાળ કાર્યક્ષેત્ર હંમેશાં તૈયાર રહે છે

છેવટે એકસંપથી કાર્ય કરી શકો તેમ ન હોવ તો સમાજ હીવની ખાતર મારે કહેવું પડે છે કે નાહનું જોડી રીતે હાથે કરી તુલ્ક-શાન કરતાં સમાજને ભાગ્યના ભરસે છોડી દો. સમાજને કસંપી-કાર્યકર્મની જરૂરીયાત નથી કુસંપી વાતાવરણમાં તમારી સેવા સમાજ હર-ગીજ નહીં મળે. હાલના સમયમાં એક નહીં તે અનેક રીતે સમાજ પોતાનું ભણું કરી શકશે કુસંપના દાવાનળમાં કંઈ પણ કાર્ય થઇ શકેજ નહીં માટેનું મકાન વર્ધાર્થનું ચણી શકાય નહીં તે ખચીતજ માનજો.

મ્રીય પાઈકો મારા લખવાથી કોઇપણ પ્રકારનું માહું લગાડશો નહીં પરંતુ ખરેખર જ્યારે સમા-જની પરિસ્થિતિ જોઈ કું ત્યારે કલમ પણ અટકાવી શકાતી નથી. અંતે દરેક સમાજ હિત-પીએ એક સંપીથી કામ કરી સમાજને ઉચ્ચતમ સ્થિતિમાં લાવે અને સમાજ ઉન્નતિના શિખરે પહોંચે એજ જોવા ઇચ્છતો વિરહું કું.



નિર્વાણોત્સવ નિમિત્ત મિત્રોનો સંવાદ.

પદ્મકુમાર—કેમ ભાઈ વીરેન્દ્ર ! અને પણ તમે બીલકુલ નવરા દેખાતા નથી ! અત્યારે ક્યાં દોડધામ કરી રહ્યા છો ?

વીરેન્દ્ર—ભાઈ ! શું આ નવરા એસી રહેવાનો દિવસ છે ?

પ.—ત્યારે ખીલું શું ? આજનો સારો પોપાક પહેરીને મોજશોખથી દિવસ વ્યતીત કરવો.

વી.—આજ શુભ દિવસોએ પણ દરરોજની મારક મોજમજલ કડાવવી અને આપણી જીંદગીનો અમુલ્ય સમય ગુમાવવો ?

પ.—આ દિવસો મોજમજલમાં ન ગળવા ત્યારે શું કરવું કામ કરાવવું તો બીજા દિવસો માટે સરભયલુજ છે.

વી.—તમારું કહેવું ખરોખર છે ભાઈ ! અપણે આ અવની ઉપર જન્મ્યા છીએ તે કાંઈ પણ કાર્ય કરવાને માટેજ. અંગ્રેજી સૂત્ર—Time is Money—ના અનુસાર આપણી અમૂલ્ય જીંદગીનો થોડો પણ વખત એવો ન જવો જોઇએ કે આપણે તે વખતમાં કાંઈ પણ કરવા લાયક કાર્ય ન કર્યું હોવું જોઇએ.

પ.—તમને તો ભાઈ ખધો વખત કામ કરવાતુંજ મળે છે, તમે કંટાળતા નથી ? મને તો જેમ વધુ શરવા હરવાનું ત્યાં માનંદમાં સમય વ્યતીત કરવાનું મળે તેજ સાઈં લાગે છે.

વી.—તમે ખરાખર કહો છો ભાઈ પદ્મકુમાર ! આ દિવાળીના દિવસોમાં આનંદથી રહેવું જોઇએ અને સાથે કાંઈ શુભ કાર્ય પણ કરવું જોઇએ.

પ.—ભાઈ ! મને કહેસો કે આ દિવસો આપણે કેવી રીતે વ્યતીત કરવા ?

વી.—સાંભળો—આ તે દિવાળીનો દિવસ છે. કે જે દિવસે આપણા અંતીમ તીર્થંકર મહાવીર સ્વામિ આ ક્ષણ અંબુર સંસારમાંથી છુટીને ઉચ્ચ જે મોક્ષપદ તેને પામ્યા હતા. તે દિવસને આજે

આરાજી સહી હાથર વર્ષો થઈ જ્યાં છે તેમની યાદગીરીને માટે અને તેમના જેવા ઉચ્ચગુણો મેળવવાની અવગત અધ્યવસાય માટે આ દિવાળીનો તહેવાર આપણા સમાજમાં પ્રાચીન સમયથી પ્રચલિત છે. આજે આપણે તેમના ગુણોની પૂજા કરીને, આપણને તેમના જેવા ગુણો પ્રાપ્ત થાય તે માટે પ્રાર્થના કરવી જોઈએ.

(ત્રીજો સ્નેહિ ચન્દ્રકાન્ત આવી મળે છે.)

ચન્દ્રકાન્ત—મિત્રો! રસ્તા વચ્ચે આ શું સાંભાષણ ચલાવી રહ્યા છો?

શ્રી.—પદ્મકુમાર બાલને આજના દિવસ વિશે કંઈક સમજાવી રહ્યા છું.

પ.—મહેને પણ તમારી મધુરી વાણી સાંભળવા દો. આગળ બેલા બાઇ. વીરેદ્ર!

શ્રી.—આજે આપણે પ્રાતઃકાળમાં વહેણા ઉઠી મંદીરમાં જઈ વીર ભગવાનનું પૂજન કરી તેમના સ્મૃતિનું કીર્તન કરવું જોઈએ. દિવસે સર્વંધી પ્રભાં ધાયે આનંદમાં દિવસ અતીત કરવો જોઈએ. સાંજના સર્વેએ બેગા મળી કોઈ વિદ્યાન બાઇએ પીળાઓને દિરાળીનું મહાત્મ્ય સમજાવવું જોઈએ અને વીર પ્રભુને પ્રમલે વ્યાજવાને સર્વેને શોધ આપવો જોઈએ.

પ.—ત્યારે બાઇ વીરેન્દ્ર! આપણા કોડો તો રાત્રે દારખાનું ફેડીને આનંદ આનંદ છે તેવું શું?

શ્રી.—અરે! દારખાનું કે જેનાથી અવંખ્યાત છેવેનો માત વાત છે તે અહિં સા તરવને મનનારા જેનોથી તે કેવી રીતે ફેડી શકાય? જ્યાં દારખાનાથી ધણીજ ખિટિ પેસો બેઠા રસ્તે વખરાય છે તેટલીજ ઉચ્ચેજ નો સમાજના હિતાયે થતો હોય તો કેટલો લાભ થાય? માટે તેનો આપણા સમાજમાંથી જાતપૂલથી નાંધ કરવો જોઈએ?

પ.—આ શિશુય પીળા કયા દુષ્ટ રિવાળે છે કે જેને આપણે હાંકી શકી જોઈએ?

શ્રી.—પીળા ધણાય કુરિવાળે આપણા સમાજમાં મૂળ ધારી બેઠેલા છે કે જે આપણે દૂર કરવા જોઈએ. યાજ્ઞકર્મોને અટકાવવા માટે આપણી સભાઓ ધણા ધણા કાચરાઓ ધરે છે,

છતાં તે રિવાજ હણુ દૂર થયો નહો. વળી શુદ્ધ લગ્ન, કન્યા વિક્રય, મરણ પાછળના જખણો, શ્રીમંતનાં મિષ્ટાન્ન, લગ્નના લાંબા પરચો—વગેરે રિવાજો આપણે ક્રોધ કરવા જેવા છે. આ સર્વ કરવાને માટે આપણે બેગા મલી દરેક જાંધુને તથા વડીલોને સમજાવવા જોઈએ અને તે પ્રમાણે આજવા સર્વેને વિનંતિ કરવી જોઈએ.

પ.—અરામર છે મિત્ર! દિવાળીનો દિવસ તો ત્યારે ગણાય કે જ્યારે આપણે કંઈ શુભ અને ચિત્તમરણીય કાર્ય કરી જતાવીએ. આપણા સમાજની તથા ધર્મની ઉન્નતિ કરવાનો આજ સ્હેલો ઉપાય છે. તે માટે દરેક યુવકે કટિપથ્ય થવું જોઈએ. આજથી તે માટે મહારાષી બનવો પ્રયત્ન કરવાની હું પ્રતિજ્ઞા લઉં છું.

પ.—વીરેન્દ્રબાઇ! તમારા શુદ્ધેએ મહારા અંતરમાં નચીત્ર ચેતન આણું છે હું પણ તે દુષ્ટ રિવાળેને દૂર કરવાને માટે પ્રયત્ન કરવાની પ્રતિજ્ઞા લઉં છું.

શ્રી.—અરામર છે પદ્મકુમાર! તમને હું તે માટે અભિનંદન આપું છું અને દરેક યુવક તમારા જેવી પ્રતિજ્ઞા બેશે એમ ઇચ્છું છું. ચાલો હવે સમય ધણીજ વીટી ગયો છે. જમ બોલો “વીર પ્રભુની.”

શ્રી. જૈન જાતિ સેવક,

સ્તિલાલ કેશવજીભાઈ શાહ વડોદરા.

“દેશી વનસ્પતિ.”

“તુલશીચીના અપૂર્ણ ચમત્કાર.”

લે.—શા. કેશવલાલ એન. લાકરોઠાવાલા ટાકાકુંકે,

તુલશીની ઉત્પત્તિ—પાખા હું દુરતાનમાં દરેક પામ પ્રગીયામાં તથા ધર આગળ વાચ છે. આને હોડ હાથ દોડ હાથમર ડાંચો ધાય છે. તેનાં પાન વાવવાના પાન જેવાં છાંચાં હોય છે તેનાં પી કાળાં વડના પી જેવાં ઝીણાં હોય છે. તુલશીનું પંચાગ દવાના કામમાં આવે છે. આ

તુલશીમાં એ ભવત છે કાળી અને કહેક તુલશી
લીનુ લોકેયે પવિત્ર આનવાથી દરેક જગ્યાએ મલી
આવે છે. આનો શુભ અપાર છે.

તુલશીના શુભ.

દિકાકાસવિશ્વાસપાર્શ્વશૂરવિનાસન ।

પિત્તકૃતકફવાત્ત્રસુખમઃ પુનિ મન્વનુત ॥

‘નરક’

તુલશીનાં પાન ખાંસી, વિષવિકાર શ્વાસ તથા
પાર્શ્વશુળનો નાશ કરે છે. વળી તે પિત્તકારક,
કફ અને વાયુનો નાશ કરનાર તથા દુર્મધનાશક છે.

કફાનિકવિનિઃશ્વાસકાશીદૌર્ગંધચ રાશનઃ ।

પિત્તકૃતપાર્શ્વશૂલક્રમ્પાશ્વઃ સમુદ્ હૃતઃ ॥ ‘શુશ્રુત’

તુલશી કફ, વાયુ, વિષ, શ્વાસ ખાંસી અને
દુર્મધનો નાશ કરનાર છે. તે પિત્તકારક છે અને
પડખાના શુળનો નાશ કરનાર છે.

શ્વેતા ચ કૃષ્ણા તુલશી કટુળો દૃઢવતે
દાહપીતકરી હૃત્કમુલસહ યામ્નીદીપિકા ।
કઢવી વામકફવાસકાસદિક ક્રમ પ્રયેચ ।
વાન્તિ દૌર્ગંધકુષ્ટાનિ પાર્શ્વશૂલ ક્વાપદા ।
મૂલદંઢકરકરોષ મૂતરાશા ચ નાસયેત ।
શૂલકઢવરે ચઢિક્કાં ચ નાશયેદિતિ કિન્નિતા ॥

‘શાશ પકશ’

અર્થ:—સકેદ અને કાળી તુલશી તીખી,
કડવી, ગરમ, તીક્ષ્ણ દાહજનક પિત્તકારક હૃદયને
હિતકારી અમ્નીદીપક હૃલ્હી તથા વાત કફ શ્વાસ
ખાંસી, હિકા, કૃમી, ઉલટી, દુર્મધી, કાષ, પાર્શ્વ-
શુલ તથા વિષનો નાશ કરનાર છે. અને મુત્ર-
કન્ઢ રક્તદોષ, છુત્યાપા શુળ, જ્વર અને હેડકી
દુર કરનાર છે.

વૈત્તિવચ્ચ કીકારશ્ચ, તનુવચ્ચ ચ મ્લચિ ।
દુસ્માકૃતશ્ચ દ્રહ્મણ, ક્લ્લશ્ચ સમનીનસત્ ॥

દર્શના સ્વરૂપકરણો, પુષિકક્રા અત્યલ્લુ ।

શ્વલ્લુ પસાવશ પુનરુવીતા આકલ્લવમ મ

॥ જર્જર પુતળી ॥

આમડી, હાડકાં, માંસમાં જે મદાન રોમ
પહેચી અષ્ટે હોય તેનો અષ્ટ ધોળી તુલશીથી નાશ
થાય છે. કાળી તુલશી રૂપનાન કરવાવાળી છે.
અને તેના સેવનથી શરીર ઉપરથી ધોળા ડામ
તથા ચામડીના અન્ય રોમ નાશ થાય છે. એમ
પુરાણોમાં લખ્યું છે.

તુલશીદાનનં વેચ ગૃહે રશ્વાલિવલ્લે ।

તદગૃહે તીર્થવત્ત્વ નાગન્નિઃ ધર્મીલ્લકરા ॥

તુલ્લમીગન્લમાદાય શ્વત્ત ગલ્લલ્લે મારુત્ત ।

દિસોદલ્લ્ય પુનતલ્લ્ય મૂનપ્રામાલ્લવતુલ્લિલાઃ ॥

॥ પવોષ્ણા પુાજ ॥

જે મકાનમાં તુલશીનો છાંદ તે તીર્થ પ્રમાણ
છે ત્યાં મનુદુતો આવતા નથી. તુલશીની મુલ્લે
આપવાવાળો વાયુ જ્યાં જ્યાં આવે છે ત્યાં ત્યાં
દશે દીશાઓ અને આરે પ્રકારના શુભકામને
તત્કાળ શુદ્ધ કરે છે. કેમકે તુલશી વેદ લેખિકા
જીવન રૂપ છે. અને દરેક દર્દી ઉપર અનુપાસીથી
આપવાથી એક વખત વર્ષ પચાસી પેલ્લા
મનુષ્યને જીવન આપી તત્કાળ સાચે કરી દેશે
એવો અમત્કાર તુલશીમાં છે.

‘ તુલશીના અનુભવેલા અવોષો ’

ખાંસી જીર્ણજ્વર અને છાતીના દર્દ તુલશીના
પાનનો રસ કાળો મરી અને સાકર એકત્ર કરી
સાત દીવસ પીવાથી તત્કાળ નાશ પામે છે.

વાયુ કે કફથી શ્વેલો ઉન્નાદ:—તુલશીનાં
પાન યુંગાડાં ચોપડવાથી તથા ખાવાથી અલ્લ
લાજ થાય છે.

મુત્રરોગમાં—તુલશીના પાનના રસ સાથે
લોણનો રસ મીઠાવી તેનું સેવન કરવાથી શાયકો
શુભ છે.

જીભ હોઠનાં આંદાં—તુલશીનાં પાન ચાવવાથી મટી જાય છે. મોઠાની બદબહો જતી રહે છે. આપણાં ને દાંત મજબુત થાય છે. દાંતના દરદો નાપુદ થઈ કંઠ શુદ્ધ થાય છે.

પાચન શક્તિ—તેના પાન વટી પાવાથી વધે છે. વાયુ શુદ્ધ થાય છે તેમજ ઓઠકાર શુદ્ધ આવે છે અને ભુખ લાગે છે.

વક્રત પ્લીહા હરસમાં—તુલશીનાં પાન પાવાથી અને લગાડવાથી અત્યંત દાયદો થાય છે. તુલશીનાં પાન કૃમિદન છે, તેનો લેપ કરવાથી મચ્છર કરડા નથી તેના પાનનું ચુષ્કું જાબરાવવાથી ધામાં પડેલા કીડા મટે છે.

કેલેરામાં—તેના પાનની સાથે કાળાં મીની જોળી બનાવી આપવાથી ઉલટી અને ઝાડો બંધ થઈ જાય છે.

સાપ કરડે ત્યારે—તરતજ દસ પંદર તુલશીનાં પાન તથા કાળાં મરી સાથે છુટી પાવાં જોડાયે અને તેનાં પાન તથા મુજ વાટી સાપ કરડયો હોય તે જગ્યાએ ચોપડવાં જોડાયે.

વિષ્ટી કરડયો હોય ત્યારે તુલશીનાં પાન ચાવી કાનમાં કુકો મારવી અને મુગ તથા પાન વાટી કરડેલી જગ્યાએ લેપ કરવો.

સજેખમ, ખાંસી, છાતીના દર્દો—કાળી તુલશી અત્યંત યુક્ષકારી છે.

ધોમમાં—તુલશીનાં પાન ને કાળાં મરી સાકર સાથે ખવડાવાથી અને તેના પાનને સરેર પર લગાડવાથી બહુ લાભ થાય છે. સરીરના કોષ બુ બામને સોજે હોય તો—તેનાં પાન વાટીને ચોપડવાથી સાજો થાય છે.

તુલશીનું નિત્ય સેવન કરવાથી શુદ્ધ લોહી પેદા થાય છે, અને મનુષ્ય દરેક પ્રકારના રોગથી બચી જાય છે.

કોઠમાં—તેનાં પાન ખાવા ને ચોપડવા દિવકારી છે.

તુલશી ચેપી રોગનો નાશ કરે છે કૃમિદન અને મલ્લેનીવાના તાવનો નાશ કરવામાં યુક્ષકારી છે.

“સર્વ પ્રકારના તાવ મટે.”

કાળાંમરીને તુલશીના પાનના રસની સાત બાવના આપી તેને ખારીક વાટી ચણા જેવડી જોળી કરી શીશીમાં ભરી લેવી, જેને તાવ આવતો હોય તેને ત્રણ કલાક અઝાઉ દર કલાકે એક એક જોળી મરમ પાણી સાથે આપવાથી સર્વ પ્રકારના તાવનો તુરંતજ નાશ કરે.

“બાળકના પેટની પીડા મટે.”

તુલશીના પાનનો રસ ને આદાનો રસ ખરાબર લઈ મરમ કરી બાળકને પાવાથી સર્વ પ્રકારની પેટની પીડા મટે છે આવી રોતે નીત્ય સેવન કરવાથી બાળકના પેટમાં કોષ જાવનું દર્દ થતું નથી.

“બાળકનું પેટ કુલે તે ઉપર.”

બાળકને દસ્ત સાથે ન આવતો હોય અને પેટ કુલતુ હોયતો એક તોલો તુલશીનો રસ મરમ કરી ટશોકો ટશોકો પાવાથી દસ્ત સાથે થઈ પેટ કુલતુ મટી જાય છે. આ જીપાય જમારો ખાસ અનુભવેલો છે.

માથાની પીડા મટે.

તુલશીનાં પાન છાંયે સુકવી માથું દુખે ત્યારે તેનો નાશ લેવાથી આરામ જરૂર થાય છે.

“ધાતુદ્દીપ્તતા મટે.”

કોષ પુરવને પેલામ પહેલા અથવા પછી ધાતુ જતી હોય તો તુલશીનાં પાન છ માસા તથા દુધનો રસ છ માસા સાત દીરસ પર્યંત પીવાથી જરૂર આરામ થાય છે. આ પ્રયોગ મારા મીત્ર માટે ખાસ અનુભવેલો છે.

“ટાઠીયા તાવનો ઊંચાય.”

શુંકને તુલશીના રસમાં ધણી કપાળે ચોપડવી માંથે ઝોડો સુધ જવું જેથી પરસેવો વળી તાવ ઉતરી જાય છે.

“વિષમજ્વરનો ઊંચાય.”

એક દોઢા બર તુલશીના પાનનો રસ દોઢા બર મધ સાથે મરીની છુટી નાખી પીવાથી વિષમજ્વર નાશ થાય છે.

દુહીનો તથા તુલશીનો દવાષ કરી પીવડી શક્યો તાવ ઉતરે છે.

“રતાંધળાપણની દવા”

ઠાળાં મરીની ઉપલી છાલ કાઢી નાંખી તુલશીના પાંદડાંનો રસ મેળવી રતી બાર ઝોળી બનાવવી, તેને મધમાં વસી સાંજે અંજન કરે તો બે દીવસમાં રતાંધળાપણ જતું રહે છે.

“આગકના ઠાઠીયા તાવ ઉપર”

ઠાળી તુલશીનાં ચાર પાન, બાવળનાં ચાર પાન અને અન્નનો એક મસો, બધાને ઉકાળો કરી ઠંડું થયે તાવ ચડતાં પહેલાં પીવડી આગની તાવ ભય છે.

પ્રિય અધ્યયો, તુલશી એક વનસ્પતી હોવા છતાં એક દેવી જેવો ચમત્કાર હોવાથી તેને તુલશી દેવીની ઉપમા આપવામાં આવી છે જેથી હમે દેવે ભારતીય ધર્મનું જીવંત પ્રાર્થના કરીએ છીએ કે તમે હોર નિરાતો ત્યાગ કરી પ્યાન કુર્વક આ મહાન સંસ્કૃત અને પવિત્ર તુલશીને પ્રચાર પ્રચેક ધરમાં ફાવરાવો પ્રયત્ન કરો અને તેના શુભેર્થ તુલ્ય ઉપસંશોષન કરો. તુલશીના અર્ચન શુભોન્નિષ્ઠા આપણા પુર્વજોએ તેને ઉત્તમ દાન આપ્યું છે તેમકે તે શરીરને આરોગ્યથી રાખે છે અને આરોગ્યથી સર્વ પ્રકારના ધર્મનું પાલન કરે છે.

શુભેર્થ—શ્રાવિત્ર પ્રમત્તે પ્રાવકાષ્ટો નિત્ય પુજન પદા, સામાનિક વર્ગો કાતી હતી. પં. દરખાલીલાક્ષણી વિદ્યાના પુર્વ ઉપદેશ કરે છે તેના બે બહેને તથા પદ્મ ઉપવાસ કરેલા પરાવતે દિગ્ગ. કકુલોને સર્વેને જનમ્ આર્કુ દત્ત.

તીર્થકર ચિત્રાવલિ ।

૨૪ તીર્થકરોંકે રંગવેરંગી ૨૪ અલગ બહે ૨ ચિત્ર કાંચમે જઠવાકર મંદિરોંમે રલને યોગ્ય વદ ચિત્રાવલિ અવશ્ય મમારુએ । મૂલ્ય ૨)

મૈનેજર, દિ. જૈન પુસ્તકાલય-સુરત :

પર્યુપણ પર્વ.

સોશ્યા—મા બ. સુરેશ્વરીજીએ સ્વાસ્થ્ય ક્ષાભતી પુથીનાં (૩૫૦) ખરચી ક્ષાંતિનાથને દેહેરે દરવાજો બનાવી આપ્યો છે. અનેના શ્રાવિકાષમનો પાંચમો વાર્ષિક મેલાવડો બાદરવા સુદ ૧૧ ને દિને હાલલાલ કદવાજુદાસના પ્રમુખપણ્યા નીચે થયો હતો જેમાં પ્રથમ શ્રવિકાષોના સરસ્વતી પૂજન ને મંગલાચરણ પછી મંત્રો ત્રીભોવનદાસ મોતીલાલે ગન પર્વનો રિપોર્ટ પછી સંબળાવ્યો હતો જેથી જણાય છે કે આશ્રમ પ્રગતિ પર આવતું જાય છે. રસોડે જનતાની સંખ્યા ૧૪ સૂધી ઘટી હતી મેલાવડેનત જનપુથી ૧૨૦૦) ૨૬૬ મળી તથા સ્નાત્યવન વગેરેનાં બીજી આશરે ૪૦૦) ની ૨૬૬ મળી હતી । નાની પુજન વગર પગારે કિતમ સેવા આપી રહ્યા છે ને ૧૦૧) એક પણ્ય આપ્યા છે. મેલાવડેનના જનપુથી શુભરાતની કોઓમાં અનેક સુધારા થયા છે. રિપોર્ટ પછી વર્ષાક વનલાલ મગતલાલ, આશાલાલ, કાંકરલાલ, સૈદ અમવાવદાસ ગવરાવ તથા પ્રમુખના આશ્રયની પ્રગતિ સંબંધી લખેચ્છના થયાં હતાં. છેવટે અધ્યવિદ્ય પ્રલાયતી પુજેને પીતાના પગારમાંથી માસિક મદદ આપવા ઇચ્છા દર્શાવી જે સાભાર સ્વીકાર્ય હતી અને પ્રમુખ તરફથી ગદ મતી પ્રમાવન વધ મેલાવડો વિસ્તર્જન થયો હતો.

વડોદરા—બંને મંદિરોમાં લાચ સલા થતી તેમ ૧-૨, બંને મંદિરોના વરવેળા નિઠાવ્યા હતા. સર્વે સ્વદેશી વસ્ત્ર પહેરતા હતા ને વરવેળામાં દેશી બેનકીયીક મામ ચલાવ્યું હતું. બે બહેનોએ પ-૫ ઉપવાસ કરેલા ને તથે ૩-૩ ઉપવાસ કર્યા હતા તમાનાકાઠ માટે તાર કરવામાં આવી.

ધાંદલા—બંને પં. હીવચંદણ વણીના પદા-સ્વાથી રાત્રે ઠાંડીના રમવાણું ને મંધકુટી કઠવાણું બંધ સુધું. તથા ધણ્યા બાક બહેનોએ રાખ્યામ વગેરેના નિયમ લીધે.

सोलात्रा—श्राविकत्रयमां आ वर्षे प्रतिमा सावी नित्य पूजन जलन आरु सभा मान-तानथी यता. सर्वे श्राविकाम्यो सवारे पांचथी रात्रे १० सुधी धर्म ध्यानमांज समय वितावती होती. अ. सुत्रेद्रुशित्ति सस्वति सुवनमां आरु पांचता हता. बांयणपुडेने ७ ने मधुपुडेने ९ अपवास करेला तथा जे काले प-प विवास कर्वा हता. जे तळ उषापन पण थयां हतां. जलयात्रा पणु नीकणी होती. नागी पुडेने तळु उषवास करी आश्रममां जमळु आयुं ने भाटी वेची होती.

विजयनगर—रक्षापंचन पर्वमां (१३) प्रताम हंडमां मठया. उरमयंडनाक्षणे ज्योतीश्वरिन पूज करवी पं०) दान क्युं. अभिषेक रविवार मत उषापन करी २०) दान क्युं. नित्य आरु सभा होती. जलयात्रा पणु नीकणी होती.

पाटणा—सांभासिक प्रतिक्रमणु पं. सुपेद्रुमार करवता हता ने श्रुत पणु पांचता हता. तणु जहरे सभा थप होती. ज्येमां मधुपुडेने, मोहन-सास, सोमयंड, अमनसास, नगीनसास वगैरेजे धार्मिक विवेचने कर्वां हतां. पाठशाळातुं धर्म अभ्य वेतनमां पं. सुपेद्रुमार सारी रीते करे जे ते भाटे तेमगे जालार मनथि हने.

सायनगर—पूज मत विधान श्रुत वगैरे सारी रीते थयां हतां.

तलेइ—नित्य पूजन ने शास्त्रतथा हतां. ७ जाळयेजे दशवसुथ मत करेलुं. धर्म प्रका-वना सारी थप होती.

लोहरोडा—अनेक मत थया जलयात्रा पणु निकणी होती.

जोराणु—६०-७० काले मने करेलां. कुस-पने वीथि जलयात्रा मंथ रवी होती.

भाटनाभुवाडा—गंधी मोतीयंडना पनीजे १० उपवास कर्वां हता ने आरु डाकेराजे १०-१० उपवास करेला. उषापन वेध देखावलसे कराव्युं हतुं. जलयात्रामां २००० नी मेदनी होती. मंदि-

रमां ४००) उपजु कथ. विवास करतार पाठये १५) प्रातिक जोडिंगेने तथा ३६) सरथाज्जोने दान क्युं.

ठलोस—युक्त मंडण ने सेवइगती स्थापना थप ज्येमणु विदेशी पांड ने कपडां न वेवाने ने होटखनी या काशी न पीवाने नियम वीधे. मंड-गता ७० सभासह जे. सर्वेजे जलयात्रामां भाटीज पडेरुली तथा विदेशी जेज पणु नदी लावेला. आगण राष्ट्रीय वावरो सभ यासता हता. पूज पडी राष्ट्रीय गीते पणु भवाता. विहायती अष्ट पांडना पतासां न वेची श्रीइगती प्रभावना थप होती.

पासीना—जे जाळये १०-१० ने तळु प-प विवास कर्वां हता. जेक हरणुने पणु पांच विवास करेला. पूजन ने शस्त्र सभा नित्य थतां. अत्रे निर्वाण्य प्रव्य वेचीने ते पैता मदिगना काममां जे जे जे अयोग्य जे. सुंगा पूजरीने न गणवेजे जेकथे पणु दायिधीज वाराशरती प्रकास करती जेकथे.

उजेरिया—अनेक मत विवास कर्वां हता. पू. पंचवस्थापुके विधान थयुं हतुं. पाठशाळात विद्यार्थीजोना आकर्षक भजन थतां हता.

हाडोड—१. दीपयंडणु वसुंनि होवाथी धर्म सानते अनेजे अरतर प्राप्त थयो हता. जंने तडना जाळयेजे विना विरोध थया कर्वां सामेल थया. सर्वे रवेरुशी वणुज पडेरुता तथा डेटला पणु वीधे.

पूजन प्रभावना ज्योतीने थयां हतां. पं. परमेष्ठीदासणु जे जलयात्रां हता. सर्वे रवेरुशी वणु पडेरुता आवटे. पूज-पडी थतां जमणो राष्ट्रीय विधाने जेकथे राष्ट्यां ने जोपडना हता. वेळवियर इतने जेडे सभ्य करी तार क्यो. आरु तीर्थरक्षा हंडमां आशरे १५०) कराया.



"जनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, खपाटिया चकला-सुरतमें मूलचन्द्र किसनदास आपदिशाने मुद्रित किया और 'दिगम्बर जैन' ऑफिस चन्दावाकी सुरतसे उन्होंने ही प्रकट किया।



सम्पादक:-मूलचन्द्र किसनदास कापड़िया-मुरत ।

विषयानुक्रमणिका.

न०	विषय.	पृ.
१-२	दीप जला मन्ती करना, संपादकीय	४३१-३२
३-४	जैन समाचारवर्ति, महावीरम्बामे	४३६-३९
५-६	दीपावली, अष्टम्याम्	४४५-४४
७-८	वीरनिर्वाण, सुभाषिन रत्नसरोह	४४६-४४
९-१०	त्रियोपयोगी, जैन समाजकी स्थिति	४४९-५१
११	कुड़चीनो भीषण जत्याचार	४५२
१२	सुजयनरा रिषीनो	४६०

पृ० २३५
रु० १२

प्रीत सं० २०५६
राश्विन.

मुजराती-
जैनप्रत कथा संग्रह.

मुजराती अक्षरे अने मुजराती भाषाको रक्ष
प्रतौनी असाओ, पृथक आरती अने यह अदित
पुस्तकाक्षर मिलहुद तैयार छे. उत्तम उपाछं, पापी
भाषणी पृ. १२८ अने कि. मात्र बार आता.

मनेकर, दि० जैन पुस्तकालय-मुरत.

उपहारके पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य २। विशेषांक मूल्य ३।।



आवश्यकता—वाक्यशुद्धि (महीना) की दि. जैन पाठशाळा आटे अध्यापक नेत्रमे छे. पमार 30) भासिक सुधी. भंत्रीने सरतामे लपो.

६. रत्नकीर्तिना वीक्ष संश्रद्धी-जेक भाष लपो छे के पांच वर्ष पर भ. रत्नकीर्ति-लता असवान समये वीक्षभां १०००) प्रवचनसार ने पत्रभात्मा प्रकाश अथ छपावने शुक्ररातमां नेट वेयवानी वान अहार आवी हती तो हनु ओ कार्य हेम थतुं नथी ? ओ विलना ओक दूरी धरुं करी शैड तारायं नवलस्यं जवेशी हता तो आप ओ आपत पर अलासे करी के !

आश्रम अंक आटे—शुक्ररातमां के के भाषओ कविताओ, लेपो नगेरे मोक्षवना समलता होप ते ८ दिासमां अवरय मोक्षी आवे. तथा शुक्ररातमांथां राष्ट्रीय युद्धमां नेल जनारा भाषयिता शैरा अने परिचय पक्ष प्राप्त करी मोक्षवना विनति छे.

साधना—मां ओक वर्ष थमां पाठशाळा स्थापन कइ छे. हालमां वार्षिक परीक्षा डे. भाषलास कपुरयं शडे लीधी हती. परिष्कार संतोषकार छे. १३ विद्यार्थी छात्र ले छे.

दिवाली पर्वके लिये—

दिवालीके कार्टे ॥१॥ सै०, चिट्टियां ॥१॥ सै०

महावीर चरित्र (संक्षिप्त, पढ़ने योग्य) =>

दीपमालिका विधान (दिवाली पूजन) -> ॥

निर्वाणकांड गाथा—भाषा ->

बृहत् निर्वाण विधान और त्रैलोक्य—

जिनाक्यविचन (दिवाली पर्वकी बड़ी पूजा) ॥३॥

भगवान महावीर (महान ग्रन्थ) ॥१॥, १)

महावीरचरित्र १॥), महावीर व बुद्ध १॥)

निश्चयधर्मका मनन १॥)

समवसरणका रंगीन चित्र ॥)

गोमटस्वामी (जनीन रंगीन चित्र) ॥)

सतीचरित्र और शीलमाहिमा ।

इसमें सतियोंके चरित्र हैं । पृष्ठ ६० मूल्य १-)

पवित्र काश्मिरी केश--१॥) की लोका

अगरवती--१॥) की लोका धूप १॥) रत्न ।

स्वाध्यायार्थ व मंदिरोंके लिये

—आपको किसी भी छंटे बड़े, नये या पुराने जैन ग्रन्थकी आवश्यकता हो तो दिगम्बर जैन पुस्तकालय—सुरतमें ही मगईये क्योंकि इस पुस्तकालयमें सब जगहके सभी प्रकारके दि० जैन ग्रंथ मिळ सकने हैं व कमीशन भी देने हैं । तथा अनेक प्रकारके छोटे बड़े सादे व रंगीन जैन चित्र भी यहांमे मिळ सकेंगे । ९०० ग्रन्थोंका हमारा नया सूचपत्र एक शडे डिस्कर अवश्य मगाइये ।

मैनेजर—दि० जैन पुस्तकालय—सुरत ।

सिद्धक्षेत्रपूजासंग्रह ।

सभी सिद्धक्षेत्र व अतिशयक्षेत्रकी पूजाएं मू. १॥)

जैन तीर्थयात्रा दर्शक—१९ दिनेमें पछट

होगा । नकशा सहित मूल्य १॥)

नवीन पुस्तक—

—ॐ नक्षत्र । ॐ—

इसमें अरिष्टनेमि, सारवेर, कामुदगाय, मार-सिंह, गंगाराम, हुज, मावियन्वे व सती रामोंके नव मनोहर कथाएं वा० कामतापमदनी रचित सभी ही छपी हैं । पृ० ८० व मू० छह आने ।

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय—सुरत ।

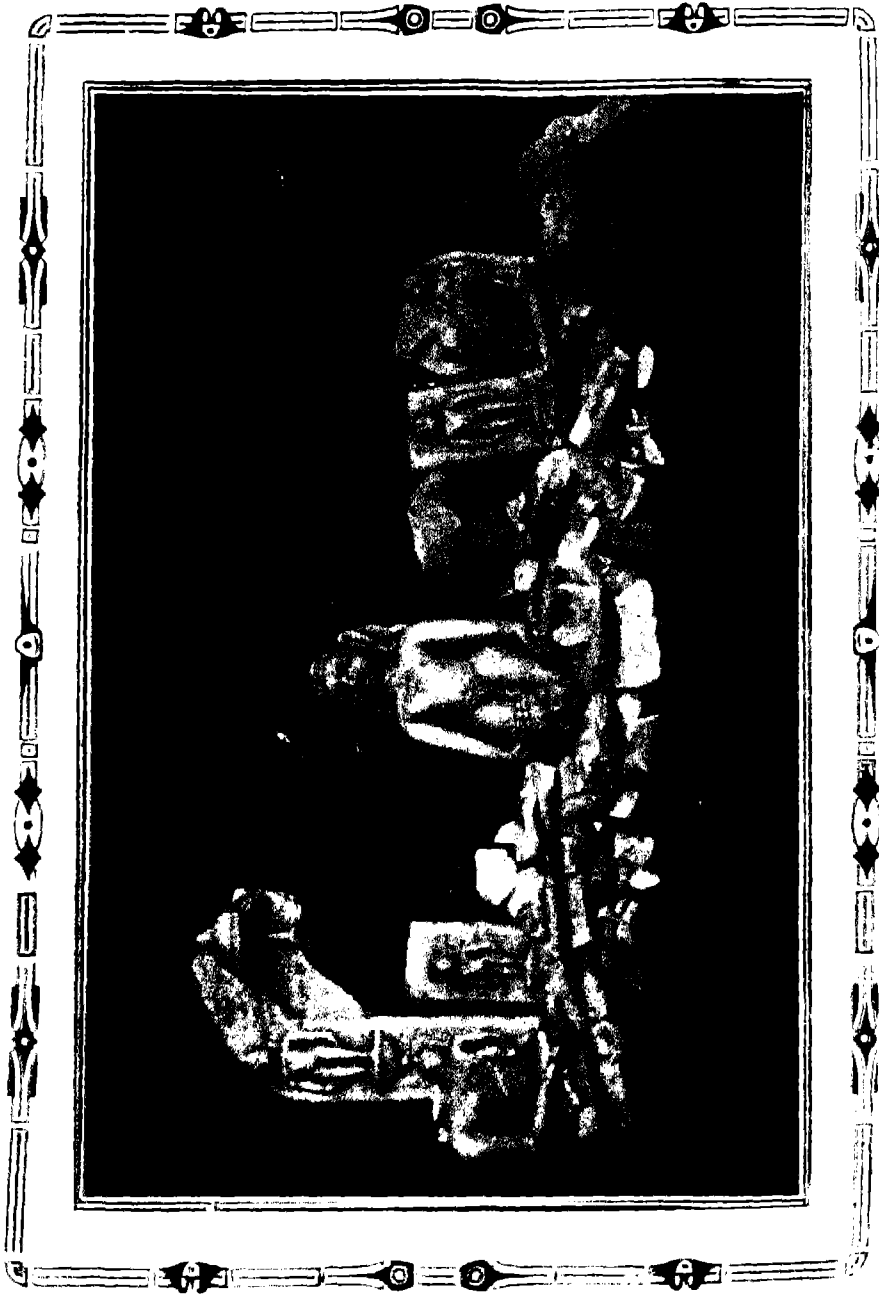
“दिगंबर जैन”



कुड़चीका भीषण अत्याचार (ता० १० जून १९२९—देखो पृ० १०२)

[अस्य चारके बाद अतुल्य दि० जैन मंदिरकी स्थितिका दृश्य]

“दिगंबर जैन”



कृष्णिका भीषण हत्याकरि (ता. ५७ अम २२)
महिषासुर मर्दि सुविशेषा इत्यभिप्रेयकं गुण

॥ श्रीबीतपरागायनमः ।

द्विगम्बर जैन

माना कलाभिविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्मृगवेवणाभिः ।
संबोधयत्प्रभिमिदं प्रवर्त्तताम, द्वैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष २३३१

वीर सम्बत् २४५६, आश्विन, विक्रम सम्बत् १९८६.

अङ्क १२.

→ ❁ दीप जला भक्ती करना । ❁ ←

सुन्दर घृतमय दीपक लेकर पावन दिवस मनानेको ।
आई है अति प्रेमपूर्णसे नूतन वर्ष बतानेको ॥
मोक्ष दिवस है वीर प्रभूका इसकी याद दिखानेको ।
धर्म अहिंसामय सब पालो जैनधर्म दिखलानेको ॥
पवनप्रवाहोंसे क्यों बुझती मन्दज्योति क्यों दिखती है ?
इसका कारण यही विज्ञवर पापकर्मसे डरती है ॥
पूज्य पर्वमें जुवा खेलना कैसे संभव होता है ।
तांबे चांदी आदि पूजना जैन धर्म क्या कहता है ॥
रजत आदिके अर्चनसे भोः, क्या होगा कल्याण भला ।
उल्टा नर्कमार्ग होवैगा इससे छोड़ो सभी बला ॥
महावीर अति वीर धीरकी पूजा सब चितसे करना ।
जिससे हो कल्याण समीका धर्म अहिंसामें रहना ॥
संवत् चौबिससै छप्पन तज सत्तावन होगा आरंभ ।
वीर प्रभूकी महां कृपासे सबको होवै सुख औशंभ ॥
कार्तिक कृष्ण अमावस्याको महावीरका शिववरना ।
नहि हैं घर प्राणिकय परन्तु दीप जला भक्ती करना ॥

दयाचन्द्र जैन वि० विद्यालय-प्रागर ।

सम्पादकीय-वक्तव्य

तमाम भरतीय पर्वमें दीपावली पर्व बड़े महत्त्वका है। और स्वाम दीपावली पर्व । हर जैनियोंका तो यह परमपावन पर्व है, कारण कि हम दिन अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी मोक्ष पचारे थे। ऐसे पवित्र पर्वको पवित्रतापूर्वक ही मनना अपना कर्तव्य है। हमे-स्वामीके अनुसार प्रातःकालमें निर्वाणकांड पढ़कर निर्वाणकांड चढ़ाना, भगवान महावीर स्वामीकी पूजा करना, लोगोंको महावीरचरित्र सुनाना, धर्मभावना करना, दीपकोटा प्रकाश करना इत्यादि कार्य तो लोग करेंगे ही, मगर देशका-लकी परिस्थितिका विचार करके जो पवृत्ति कता है वही बुद्धिमान है। हमलिये धार्मिक क्रियायें जो थीं वह करना चाहिये, लेकिन जानधी हातको देखकर बह्य डंभमें अवश्य कमी करना पड़ेगी। धार्मिक क्रियाओंमें भी अपनी समझने कुछ मिथ्यात्वको स्थान देना है। अब अन्ध श्रद्धाका जमाना नहीं है। हमलिये तमाम मिथ्या क्रियाओंका परित्यग करना चाहिये।

हम जो कुछ करते हैं, उसके उद्देश्यको समझना चाहिये, निरुद्देश्य कार्यको आस बंद करके करते चले जाना अविवेक और मूर्खता है। समाजके शिक्षित होजने पर भी बहमी (रूपायसा) पूजन करना, पुस्तक पुस्तकियोंको पूतना जुआ आदि मह व्यवसायोंमें सम्मिलित होना आदि कार्य जैन समाजके लिये कलहाकी बात है। इन तमाम

खोटी पवृत्तियोंको छोड़कर यह पर्व बड़ी ही पवित्रताके साथ मनाना चाहिये। जैन धर्ममें मूर्खताको विंचित मंत्र भी स्थान नहीं है, अगर कोई कुरुदिको पकड़े हुये अविवेकसे काम करता है तो वह जैनत्वका खोटा अभिमान करता है, ऐसा सम्झना चाहिये। हमलिये अपने तमाम आचरविचार सचे, आदर्श, विवेकपूर्ण और सम्प्रतामय होने चाहिये। किसी भी समाजका अन्तर्ग बह्य वर्णोंसे ही देखा जासकता है। हमलिये आर हम दीपावली जैसे पावन पर्वमें किसी प्रकारकी मूर्ख पवृत्तियोंका प्रदर्शन न करें।

* * *

दीपावली पर्वमें अनेक प्रकारसे इतना अव्यय किया जाता है कि अपव्यय। जो देशके लिये अव्यय है। वहां खूब धन संरक्षित

हो, देश और समाज सुखी हो, अनेक भयोंकी अवस्था सुखमय हो, बहावर अगर आनन्द विनोदके नामपर सम्भनापूर्वक व्यय किया जावे तो किसी प्रकार ठोक भी है मगर जब अपना देश दुखी है, पर्वत्र प्राडि प्राडि मची है, देशके हजारों बाल और सेकड़ों वीरगंगनाएँ कारावासमें पड़ी हैं, करोड़ों देशबंधु अश्वपेट रहकर दिन गुजारते हैं तब यदि कोई स्वार्थी हृदयहीन धनिक धनके मदमें मत्त होकर गुलछोरे उदावे तो यह कितनी कलहाकी बात है ?

जैनसिद्धान्त तो “सत्त्वेषु मैत्री” का पठ पढ़ता है। हमलिये प्रणोमात्र अपना मित्र है। उसमें भी मनुष्य और फिर भी भारतीय तो और भी धनिष्ठ मित्र कहलाये।

तर हम उनके दुःख सुखकी चिन्ता न करके उनके ले मजा उड़ावें, यह कैसी मित्रता है ? जिसमें तनिक भी विचारशक्ति है वह अपने मित्रको कभी भी दुखी नहीं देख सकता है । इसलिये हमारा कर्तव्य है कि अब पर्व और त्यौहारोंके नामपर व्यर्थव्यय न करके बचे हुये द्रव्यसे अपने देशबंधुओंकी सहायता करें ।

दिवालीके समय झरमझर झरमझरें हजारों रुपया खर्च किये जाते हैं, करोड़ों रुपयाके फटाकोसे भाग लगाकर व्यर्थका धुंआ उड़ाया जाता है, नाचगान और मौनमजामें द्रव्य बड़ाया जाता है और जुमारी मदकची व्यसनी लोगोंको रुपया पैसा देकर सहकारी बतलाई जाती है, यह सब कार्य अनुचित हैं । ऐसे अव्ययसे पापका उपासन तो होता ही है मगर देशकी छानेपर ताण्डवनृत्य करके उसे और भी कठिन बंधनोंमें बांधा जाता है । इसलिये हम जैन समाजके श्रीमानोंसे अपील करते हैं कि अब अब इन समाज खराब खर्चोंकी निकालकर पवित्रत-पूर्वक पर्व मनानेका निश्चय कर लें ।

यदि सब पुछा जावे तो देशमें गमी या मातमके समय खुशियां नहीं मनाई जाती हैं । आज देशमें मातम अबवा गमी आपकी क्या नजर नहीं जाती है ? हजारों नवयुवक काठियोंके पहारसे घायल होकर काग्रेस होस्पिटल और दवाखानोंमें पड़े हुये हैं, कितनेही तो प्राण विमर्जन कर देशके लिये बलिदान हो गये हैं और अनेकों भई नाना प्रकार से दुखी हो रहे हैं । ऐसी विपत्त

परिस्थितिमें त्यौहार नहीं मनाये जा सकते, दीपक और बिजलीके प्रकाशमें जानन्दोत्सव नहीं किये जा सकते । तथा विविध व्यञ्जन खाकर मौन नहीं उड़ा सकते । हम समय तो मात्र धार्मिक क्रियाओंको पुरा करके देशके लिये कुछ त्याग करिये, भारतके बंधन तोड़नेमें सहायता करिये और अपने देशबंधुओंकी हरपकारसे मदद करिये । यही दिवेद और बुद्धि का फल है । “क्षेत्रं सर्वरजानां” की भव्य भावनाको मानेवाली जैन समाज हम समय मौन शीकसे मुंड मोड़कर देश सेवामें हाथ बटावेगी, ऐसी हमें आशा है ।

* * *

हम देखते हैं कि भारतवर्षमें अनेक संवत् प्रचलित हैं । ईश्वरी सन् वीर संवत् न भूलिये । लिखा जाता है, शक और विक्रम संवत्का प्रचार है, पागामी और मुपक्रमान अपने २ संवत् लिखते हैं, यहां तक कि अर्थसमाजी भी द्वापानंद संवत् लिखने लगे हैं । यह सब देखते हुये भी जैनसमाज अपना सबसे प्राचीन वीर संवत् न लिखे यह खेद की बात है । हम अनेक वर्षोंसे जैन समाजका ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं । मगर जितनी सफळता होना चाहिये उतनी नहीं हो सकी है । हम तो करते हैं कि प्रत्येक जैन अपने खतेवड़ी, चिट्ठी पत्रों और हरप्रगह वीर संवत् लिखना प्रारंभ कर दे । वीर संवत् के बिना कोई भी खता वड़ी, हिसाब किताब या पत्रव्यवहार होना ही नहीं चाहिये ।

दीपावलीके पश्चात् नूतनवर्षका प्रारम्भ होता है। इसी शुभ दिनको अपने अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी मोक्ष पधारे थे। भगवानको मोक्ष गये २४५६ वर्ष समाप्त होगये हैं। इस दीपावलीके बाद अब वीर संवत् २४५७ प्रारंभ होगा। यह संवत् सबको लिखना प्रारम्भ कर देना चाहिये। वीर संवत् लिखनेमें अनेक काम हैं। प्रथम तो यह कि बड़ी खाता या पत्रादि लिखनेके प्रारम्भमें मंगलाचरण रूप "वीर" का शुभ नाम लिखा जावेगा। दूसरे-भगवान महावीर स्वामीका यह एक स्मारक स्वरूप रहेगा। इससे जैन जैन और बालक वृद्ध सभीको मालूम हो सकेगा कि वीर भगवानको मोक्ष पधारे इतने वर्ष होगये हैं। इत्यादि अनेक काम हैं।

इसलिये प्रत्येक जैनका कर्तव्य है कि चाहे आप जैनसे व्यवहार करें या अजैनसे, मगर वीर संवत् अवश्य लिखें। विचारणीय बात तो यह है कि जब आपन ईस्वीसन् और विक्रम संवत् लिखते हैं तब वीर संवत् क्यों नहीं लिखना चाहिये? ऐतिहासिक दृष्टिसे संवत्का लिखा जाना बड़े महत्त्वका कार्य है। प्रचलित संवत्तोंमें वीर संवत् ही सबसे प्राचीन है। इसका बराबर प्रचार होना आवश्यक है। अगर आप दूसरोंको पत्रादि लिखते समय वीर संवत् लिखेंगे तो दूसरे भी आपको लिखने लग जावेंगे। क्या हम आज्ञा करें कि आप इस दीपावलीके नये खातेबहियोंसे ही वीर संवत् लिखना प्रारम्भ कर देंगे?

* * *

इस वर्षका यह अंतिम अंक है अर्थात् "दिगम्बर जैन" का यह अन्तिम निवेदन। २३ वें वर्षका १२ वां (अन्तिम) अंक है। इस वर्षमें 'दिगम्बर जैन' ने सचित्र विशेषांक, तप-हारी नवीन ग्रन्थ तथा उपयोगी लेखों द्वारा जैनसमाजकी कैसी सेवा की है यह पाठकोंसे छिपा नहीं है। चन्द्र वर्षमें हिन्दुस्तानपरमें नवीन चेतन आगया है और जैनवर्षके अहिंसा सिद्धान्तके बढपर महात्मा गांधीजीने राष्ट्रीय सत्याग्रह संग्राम चल कर दिया है, जो सर्वव्यापी होकर सारी दुनियांकी दृष्टि हिन्दुस्तान पर आकर्षित कर रहा है। क्योंकिऐसा निःशस्त्र युद्ध दुनियांमें प्रथम ही है जिसमें हमारा अहिंसाका सिद्धान्त जिसकी कई लोग हंसी करते थे वही काम आरहा है। हर्ष है कि जैन वीर भी इसमें पीछे नहीं रहे हैं। अर्थात् दिगम्बर जैनसमाजमेंसे भी अनेक भाई जेत जा चुके हैं व अनेक भाई राष्ट्रीय संग्राममें अग्र भाग उठ रहे हैं। आज्ञा है कि इस प्रकार दिगम्बर जैनसमाज देखसेवाके कार्यमें अग्रगण्य रहेगी। तथा हमारे पाठकोंसे यह भी निवेदन करेंगे कि आप नवीन वर्षके लिये एक नया व्याहक बनावें जिससे हम भी दिगम्बर जैनद्वारा आषकी विशेष सेवाकर सकें।

* * *

गत १८ वर्षोंकी भांति आगामी नूतनवर्षके प्रारम्भमें ही हमने "दि- विशेषांक। गंवर जैन" का सचित्र विशेषांक निकालनेका निश्चय किया है। इसलिये विद्वान् लेखकोंसे

प्रेरणा करेंगे कि आप हिन्दी, गुजराती, संस्कृत व अंग्रेजी भाषाके उपयोगी लेख व कविताएँ आगामी विशेषांकके लिये ८ दिनोंके भीतर अवश्य भेजिये । इस बार राष्ट्रीय ऐसे लेख जिसका संबंध जैनधर्मसे घटाया गया हो वे भी लिये जायेंगे तथा वर्तमान राष्ट्रीय युद्धमें जेठ जानेवाले दिगंबर जैन भाइयोंके चित्र व परिचय भी प्रकट करनेका हमारा इरादा है । इसलिये हरएक स्थानके भाई अपने यहांसे जेठ जानेवाले दि० जैन भाइयों व बहिनोंके चित्र व संक्षिप्त परिचय प्राप्त करके हमें अवश्य भेजें ।

* *

इस वर्षमें नव-रत्न व हिन्दी जैन विवाह विधि दो छोटे २ ग्रन्थ उपहार ग्रन्थ । उपहारमें दिये गये थे परन्तु आगामी २४ वें वर्षमें आध्यात्मिक सोपान और ऐतिहासिक जैन स्त्रियाँ ऐसे दो बड़े २ ग्रन्थ उपहारमें दिये जानेका प्रबंध हो रहा है । उन दो ग्रन्थोंसे ही वार्षिक मूल्य बसूक हो जायेगा जबतक वर्षके १२ अंक मुफ्तमें ही निकल जायेंगे । इसलिये नवीन ग्राहक होनेवाले क्षीणता करें । नूतन वर्षसे ही ग्राहक बनानेवाले हैं ।

* *

आगामी विशेषांक प्रकट होनेमें कुछ दिवस अवश्य होगा और यदि तिथिदर्पण । उसके साथ हम तिथिदर्पण गति तो सबको तिथि देखनेमें बाधा पड़े, इसलिये इस अंकके साथ ही वीर सं० १४५७का जैन तिथिदर्पण नांदा

गया है । वह हरएक पाठक सम्झा लें व गतेपर कृपाकर संग्रहीत रखें । जबकी बार इसमें स्फूर्ति व जैन महिम्नारत्न श्रीमती मगनबहिन (सुपुत्री स्वर्ग० दानवीर जैनकुलमूर्धन्य सेठ नाणिकचन्दजी) जे० पी०का चित्र रखा गया है । आपका इसी वर्षमें असह वियोग होगया है और आप जैसी महान विदुषी व परोपकारी बहिनके स्त्री समाजसेवाके अपूर्व कार्य आपका चित्र देखकर हमारे पाठकोंको नित्य स्मरणमें रहें इसलिये तिथिदर्पणमें यह चित्र उपयुक्त ही होगा ।

सहारनपुरमें—सी० भगवतीदेवीने सुगंध-दक्षिणीके तथापनमें २०२) का दान मंदिर व संस्थानोंको किया था ।

कानपुरमें—श्री० जयदशरथमठ जैनका ८० वर्षकी आयुमें स्वर्गवास हो गया । २९१) दान किया गया । आप बड़े बर्मात्मा थे ।

अल्प मूल्यमें अनेकांत—अनेकांत पत्र देहलीकी १९४) की सहायता प्रकाशसर्ध मिला है इसलिये ६२ नवे ग्राहकोंको २) वार्षिक मूल्यमें दिया जाता है । मगानेवाले करोड़बाग देहलीके श्रीम ही पत्र लिखकर मगाने ।

बम्बईमें—शे० जैन शेट वीरचंद पानाचंद शाह संग्राम समितिके सेनापति नियुक्त हुए थे । आपने ८ दिनोंमें खूब काम किया व खूब सत्कार प्राप्त किया । इतनेमें आपको सरकारने प्रकट लिये व ४ मासकी सरत केव की है ।

करहलमें—दानवीर बबोबुद्ध का० फूडमारी-काकनी जैन रहस्यका स्वर्गवास होगया । ९७१) अवसमय दान किया गया था ।

जैनसमाजगतिसि

नासिक जेलसे सरैयाजीके पत्र—हमारे परममित्र व राष्ट्रीय महान कार्यकर्ता श्री० छगनलाल सरैया जैनीके दो पत्र हमें नासिक जेलसे मिले हैं, जिनमें आप लिखते हैं कि मेरा भतीजा साकेरचंद १९ वर्षकी आयुमें ही जेलका महिप्रान बना है इसलिये मुझे परमदर्षि हुआ है। देश अब सत्यकी कमीटीपर चढ़ा है। जैनधर्म भी तो यही कहता है कि ज्योंर अत्याचार और उपसर्ग सहे जाते हैं त्योंर कर्मबंधन टूटते जाते हैं। इसी तरह अब देशके बंधन टूटनेकी भी यह तैयारियां हैं। आपकी भगवान महावीर व महात्मा बुद्ध नामक पुस्तक खूब बांची व बंचई है। इससे आश्रमवाले केशवलाल व अन्य विद्वानोंने स्वीकार किया है कि दि० जैन धर्म पुरातन है। हम खूब स्वाध्याय करते हैं व दृष्टिको भी सुनाते हैं। आपकी भेनी हुई पुस्तकें मिल गईं। असहमत संगम, भगवान महावीर, भ० महावीर व बुद्ध इन ग्रन्थोंका गुजराती अनुवाद होना आवश्यक है। दि० जैन धर्मकी प्राचीनता और उसके महत्वके विषयमें यहां ४-९ विद्वानोंमें श्रद्धापूर्वक भावना उत्पन्न हुई है। महात्मानोंके १३ वर्षके साथी मञ्जुवाकाने आजकी दृक्चक्रको जैन दर्शनकी अट्ट छाया-रूप वर्णन किया है। भगवान महावीरकी तीर्थ-कर प्रवृत्तिका परिज्ञान कर आपने खूब प्रशंसा की है। इन ग्रंथोंके पठनमें मेरे साथियोंका अच्छा मन लगता है। मैं सकुशल हूँ, आदि।

फोटो व परिचयकी आवश्यकता।

राष्ट्रीय सत्याग्रह संग्राममें आज तक जेल-बासी करीब ७० दि० जैन भाइयोंके नाम मिले हैं, वे इस प्रकार हैं—

शामलाल बक्रीक, रामशरण व लक्ष्मणदासजी रोहतक, छोटालाल गांधी अंजलेश्वर, शिवलाल महेवा सोलपुर, छगनलाल सरैया सूरत, अयोध्याप्रसाद देहली, रतनलाल बक्रीक विमनौर, माणिकचंद शाह सोबापुर, सौम्यचंद देहली, सोमचंद व गिरवरशाल नृ० बम्बई, नेमीशरण बक्रीक विमनौर, म० भगवानदीन जबलपुर, चंदुलाल बखारिया बम्बई, जगदीशराम डिसार, रामचंद्र सिंहल रोहतक, पदमराज रानीवाले कलकत्ता, हरप्रसिद्धजी व सुखदेवसिंहजी रोहतक, ईन्दुरती पुत्री पदमराज रानीवाल, पं० मधुगणपसादजी बलितपुर, हुकमचंदजी व कुंदनलाल कटनी, जैनेंद्रकुमार, नन्दमल, मदनलाल, वैद्य दामोदरदास, दौडतराम व मोहनलाल देहली; विश्वधरदास, बक्षीचंदजी क्षांती, कच-राभाइ दाडोद, अनितमसाह पं० झूमनलालजी सहारनपुर, रतनलाल अमरावती, सुशीलाल रावसिंहो, जवेरीलाल व कात्तुचंद्र दाडोद, संतलाल मैनपुरी, भंगलजी अमरावती, तनसुख-राम, रामकिशनदास व भगतसुख रोहतक, दीपचंदजी बेतूर, नेमीचंदजी खेडडा, केशरीलाल व लक्ष्मीचंद गोंदिया, चेताराम कटंगी, नन्दलाल बांदा, तिलोकचंद कालका, साकेरचंद सरैया सूरत, रघुश्रीप्रसाद इमोह, दुर्गीचन्दजी चौहान, बुद्धसेन व चांदवि-

हारीबाल अमरोहा, हुकासचन्द रायपुर, नाथूरक सहारनपुर, रामशरणदास व सुखदेवसिंह रोहतक, सिवई पलाकाळजी अमरावती, सुप्रतिपसाद, मित्रसेन, उग्रसेन व वावुगाम मुजफ्फरनगर, सुप्रतिपसाद व सुयेरचन्द जगावरी, कामतापसाद बहीत व गांवबैलाळजी कायमगंज, जूमनऊरजी सहारनपुरके पुत्र, तुलसीराम रोहतक, जीवन-काळ नवापुरा गजिम ।

इन्के अतिरिक्त और भी कई दिगम्बर जैन इस राष्ट्रीयग्राममें जेठ गये हैं, उन सबके फोटो व परिचय दिगम्बर जैनके आगामी मासिक विशेषांकमें प्रकट करनेका हमारा इरादा है । इसलिये अहोरात्रके भई जेठ गये हैं वहाँके माई उन जेठवासी बंधु व बहिनोके फोटो व परिचय दूढेकर हमारे पास भिजवानेका अवसर प्रकट ठावे। आशा है कि दिगम्बर जैनके पाठक इतना प्रकट तो अवश्य ठावेगे ।

हिन्दुस्थानी सेवादल-के राष्ट्रीय मंत्री अभी जयभ पासोबा जैन बाले नियुक्त हुए हैं ।

पौत्रजन्ममें बृ० दान-सेठ गेंदाबका सुन-मल जैन इन्दौरने पौत्रजन्मकी खुशीमें ६९६) का अनुष्णणीय वृद्धत दान मंदिरों, जैन संस्थाओं व औषधालयों आदिको दिया है ।

अयोध्याजी जीर्णोद्धार फंड-में लीलाधर प्रचारक मरफत ४६६॥) इरीके पास हुए हैं ।

जैन एसोशियेशन म्हेसूर-का ९वां अधिवेशन ता० ३ अक्टूबरको होगया ।

बयाना जैन रथयात्रा-का झण्डा फिर बाहर है । फैसलेकी तारीख २७ अक्टूबर है ।

जयपुर-में अश्विन सुदी १० को जैन रथ-यात्रा हुई थी ।

कुशलगढ़-में अनैक्य मिटकर आपसी मेक होगया ।

मल्लीनाथ विशालय-शिरड शहापुरमें विनयादशमीको मर्दानी खेल हुए थे । यहाँकी मननमंडली सफाखर्चपर कही भी जाती है ।

शिमला-में अनंतचतुर्वेदीकी विशाल आम सभा जगतप्रसादजी एम० ए० एकाउण्टेन्ट जनरल पोस्ट व टेलीग्रफके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें भगवान महावीर व वीरताके विषयमें कई व्याख्यान दिये गये थे व जैन सभाकी वार्षिक रिपोर्ट भी सुनाई गई थी । सेठ प्रद्युम्नकुमारजी सहारनपुर भी उपस्थित थे । यहाँ जैन धर्मशालाकी आवश्यकता है । नीव रस्ती अच्छी है ।

कारंजाके-महावीर ब्रह्मचर्य आश्रममें विजयादशमीको शेट बालचंद शाह सोबापुरकी अध्यक्षतामें मर्दानगीके आश्रमरत्नके खेल हुए थे । सि० शास्त्री ए० देवकीनंदनजीने प्रभावक भाषण दिया था ।

श्वे० जैन कान्फरन्स-की ओरसे बनारस हिंदु युनीवर्सिटीमें जैन चैयर स्थापन करनेकी २२०००) के प्रोसीसरी नोट अर्पण किये गये हैं । क्या दि० जैन माह भी कुछ करेंगे ? ।

परिषदकी परीक्षा-ईस वार फरवरीमें होगी ।

ब्र० कुंवर दिग्विजयसिंहजी-जुबिळीबाग ट्राट फंडकी उपदेशकी कार्यसे बरी किये गये हैं अर्थात् अब आप इस फंडके उपदेशक नहीं हैं ।

रुपम ब्र० आश्रम—मथुराको जगद्वि मासमें १७१॥) की सहायता मिली थी ।

परतावगढ़में—राज्यकी ओरसे दक्षहरा पर होनेवाला बलिदान हमेशके लिये बंध होगया । बचाई ।

इन्दौरमें—अभी ख० रा० ब० शेठ कादूर-चंदजीकी धर्मपत्नीका २९ वर्षकी आयुमें स्वर्गवास हो गया था उनका नुकता करनेको लोगोंने बहुत जाग्रह किया था तौ भी सर शेठ रुपमचंदजी साहब अपने ४० वर्षके परताव पर डट रहे व नुकता नहीं किया गया था ।

तारणसम्राजी—माईबोंका सेमरखोडोमें जा-गाभी माघ मासमें सेठ खुशालचन्दजी चौराईकी ओरसे मारी मेका मरेगा ।

वैद्यक सीखनेको लिये—विद्यार्थियोंकी आव-श्वकता है । मकान व पुस्तकें मुफ्त दी जायगी । वाकफिसन जैन वैद्य—जागरा ।

दान करके न देना घोर अन्याय है—बल-बादीनमें रामकालकी माकगुजाने ११७००)का दान छठ जगहको दिया था उसको न देनेके लिये अदाकत तककी शरण ली । पंचोंको भी ५००) स्वचं करने पड़े जिसमें ११०००) काठशाकके तो आपसे मिक सके हैं । शेष रकम अभीतक नहीं दी है ।

चौरासी (मथुरा)—में श्री प्रभुम्हामीका वार्षिक मेला ता० ९ से १६ अक्टूबर तक धूमधामसे होगा । आचार्य संघ भी वहाँ विरा-जमान हैं । प्रथम ब्रह्मचर्याश्रमका अधिवेशन भी होगा । तथा ता० १० व १७को दो जैन

रथयात्रा सारे मथुरा सहरमें घूमेगी । मथुरा सहरमें आम जैन रथयात्रा निकलनेका यह प्रथम अवसर है ।

भोपालमें—सेठ हीरालाल मन्डूकाकी ओरसे त्रिलोकसार विधान हुआ था तब १९९) दान भी किया गया था ।

कंचनबाई श्राविकाश्रम—में गंगाबाई कात्राका देहावसान होगया । आपके देवरके पास आपके ५००) ये वे संस्थाओंको दान कर गई हैं ।

श्री पावापुरीजीका मेला ।

हमारे अंतीम तीर्थंकर श्री महावीरस्वामीके निर्वाण स्थान श्री पावापुरीकी मिच्छक्षेत्रमें महावीर निर्वाण दिन अर्थात् कार्तिक वदी ०)) ता० २१ अक्टूबरको महावीर निर्वाण उत्सव बड़ी मारी तैयारीके साथ होगा तथा रथयात्रा भी निकलेगी । इसलिये सब माई इस मीकेपर श्री पावापुरीजीकी यात्राको सकुटुम्ब अवश्य २ पधारे । पश्चिम तथा दक्षिणके माई E. I. R. रेल्वेके बरतारपुर स्टेशनसे व पूर्वके माई तथावा स्टेशनसे गुणावाजीके दर्शन करते हुए आवे । लक्ष्मीनारायण, मैनेजर, पावापुरी ।

स्वदेशी व पवित्र

काश्मीरी केशर ।

आप घटाकर १॥) खोला कर दिया है । खिला-यती अशुभ केशर मठ लीजिये । और यही शुभ स्वदेशी काश्मीरी केशर ही हमारे यहांसे मंगाइये । (वर्षानुसूच २॥) रतल । अगस्त १॥) रतल । मैनेजर, दिगम्बर जैन-पुस्तकालय—सुरत ।

महावीरस्वामी ।

ले०-पं० पाताम्बरदास परिवार-बांसा पथरिया

जय महावीर जिनेश जय आभार मानें आपका,
 गौरव धरें वर्णन करें करते प्रकाश प्रतापका ।
 जगको बनाया था अभय तुमने मिटाया पाप था,
 फैले अहिंसा लोकमें तुमने किया आच्छाप था ॥ १ ॥
 जग जीव स्वागत कर चुके उपकारका आभार था,
 आदर्श अनुपम देखकर सबने किया स्वीकार था ।
 करते विशारद हैं मगट वह वीरका दरबार था,
 सीखा सदाको पाठ जब न्याया दुराग्रह वार था ॥ २ ॥
 थी शक्ति अनुपम आपकी था पाठ सत्याग्रह लिया,
 हिंसक मिटे हिंसा मिटी सुख शान्तिको प्रचलित किया ।
 उपदेश करके आपने जगको बनाया वीर था,
 विचरे जगतके जन अभय करमें न कोई तीर था ॥ ३ ॥
 जगके मनुज करने विजय उत्तम क्षमा ही शस्त्र था,
 मनमें ग्रहण करते सभी समदर्शिता ही अस्र था ।
 कृतकार्य होते वीर वर वे वीर हिंसा पर करें,
 लेने न शस्त्र कभी अहो सम्बोध कर धीरज धरें ॥ ४ ॥
 जय महावीर अभय धरें जगको सदा निर्भय करें,
 मनपर किया करते विजय नरके पशुके दुख हरें ।
 निकली मधुर ध्वनि थी सुनी आघात करना पाप है,
 करते विनाश न दुख लखो कैसा कड़ा सन्ताप है ॥ ५ ॥
 थे आप समदर्शी प्रभो ! जगको सिखाया आपने,
 फैली तभी समदर्शिता थी लोकमतके सामने ।
 सीखे सभी ये वीर बनना वीर बादी बन चुके,
 करते पराजय शान्तिसे तुम विश्वपर जय पाचुके ॥ ६ ॥
 प्रतिवाह जग बनने किया उनने बनाया लोकमत,

बोले सभी स्वर एकमे हैं वीरके उपदेश सत ।
 लिखने लगे साहित्य वे महँवीर पथदर्शक बनें,
 स्वाधीनतासे कर सके बल्याण जगके जन घने ॥ ७ ॥
 संकल्प करना पाप है मानव न कर सकते कभी,
 लिखने विशारद वेदमें संकल्पको तज दें सभी ।
 पालन कराया आपने जगको अहिमाधर्मका,
 स्वीकार भारतने किया निर्भय अहिमा कर्मका ॥ ८ ॥
 अतिशय विराग धरे मनुज करते न वे संकल्पको,
 अनुराग पूर्वक त्यागमें आदेश था अल्पज्ञको ।
 विचरें परस्पर प्रेमसे नर पशु फिर भूपर अभय,
 उपकार करते वे सदा क्योंकर करो उनको समय ॥ ९ ॥
 भारत जननिके पूज्य शिशु थे वीर भारतवर्षमें,
 जय महावीर जिनेश थे आभारके आदर्शमें ।
 भूले जगत जन थे प्रभो हा, हा रंगे थे मृनमें,
 हा हा गला घोटें मिले तुमको भरतकी भूममें ॥ १० ॥
 निर्भय विमल मनसे प्रभो परिचय कराया आपने,
 मनकी मलिनता त्यागकर बैठे सभी थे सामने ।
 धी तत्त्वमें गंभीरता बनने न वीर अशक्त जन,
 लेते न शस्त्र सशक्त थे करने लगे मनका दमन ॥ ११ ॥
 अपने वचनवचने अहो पलटे निवृत्त मन आपने,
 हिलता न मेरु शिखर कभी होवे प्रलयके सामने ।
 हिमा अमत्य कुशीलको तज दे जगतके जन सभी,
 चोरी तजें संयम सजें थे वीरके दृढ़ व्रत सभी ॥ १२ ॥
 था वीरका व्रत विश्वको निष्पाप करनेका सही,
 उनने विरोध नहीं किया उनकी कृणी भारत मही ।
 कहने लगे भारत अहो हमको बनाया वीरने,
 निष्पाप विचरें विश्वमें था व्रत सिखाया धीने ॥ १३ ॥
 उपकारके उपलक्षमें देने न दुःख सधर जन,
 करते विरोध न वे कभी जो साम्यवाद करें मनन ।

श्रृंगी नखी पशु प्रेमसे उपदेशको सुनने लगे,
 निर्भय बने बैठे व प्रायश्चित्त कर कहने लगे ॥ १४ ॥
 उपकारके बदले हमें क्या कष्ट देना धमे है,
 वर्षे सुधारस वीरके भूले मनुज मत्कर्म हैं ।
 त्यों वीर समझाने लगे प्यारे अहिंसाधर्मको,
 पालन करें जगके मनुज समझें धरमके धर्मको ॥ १५ ॥
 होते अर्थात् न वीर थे आघात जग जनने तजे,
 वात्सल्य परिचित प्रेमसे परिचय करानेको सजे ।
 ज्यों मेघ गर्ज विश्वमें भृश वरपानेको लगे,
 संताप जग जनके भिटे नर पशु न जाने थे दगे ॥ १६ ॥
 थे महावीर सटय अहो निर्भय जगत कराने लगे,
 अतिशय अप्रमथ शक्तिसे आदर्श दशाने लगे ।
 आत्मावलम्बनमें उन्हें परकी जरूरत थी नहीं,
 धरणेन्द्रभू पर आ वसे कहने लगे में दृ मही ॥ १७ ॥
 आज्ञा मिले मुझको प्रभो सेवा करूं मैं आपकी,
 प्रभुका सहायक बन सकूं शंका भिटे आघातकी ।
 उत्तर दिया था आपने स्वाधीन सेवा राष्ट्रकी,
 शंका तजी थी वीरने जगके सभी अनुगागकी ॥ १८ ॥
 स्वाधीनताके ध्येयमें क्योंकर सहायक बन सको,
 निज आत्मबलकी शक्ति ही तो तुम महाव्रत धर सको ।
 लेते न वीर वसुन्धरा परका सहारा भो तजें,
 जीतें प्रकृति तजें विकृति कराने सुतप समता सजें ॥ १९ ॥
 जगके निवासी हैं निबल उनको सहारा दीजिये,
 असमर्थको सार्थ करनेकी प्रतिज्ञा कीजिये ।
 पलटो न भू भूकम्पसे कगदो मनुजके मन सुपन,
 निश्चित करो धरणेन्द्र तुम पर्ये महाव्रत वीर जन ॥ २० ॥
 अनुपम विरागी मार्ग था जो वीरने धारण किया,
 सुखशान्तिके आदर्शसे जगने उसे अपना लिया ।
 यदि वीरके उपदेश हमको भूमिपर मिलने नहीं,
 होता प्रलय निश्चित अहो नभ दूटता फटनी मही ॥ २१ ॥

दीपावलि ।

(पं० परमानन्द जैन सांघेलीय-लाकरोडा)

बंधुओ ! यों तो "दीपावलि पर्व" सारे हिंदु-स्थानमें मनाया जाता है, लेकिन जैसा मनाना चाहिए वैसा नहीं मनाया जाता है । किन्तु अज्ञानतावश रूढान्तरमें मनाया जाता है । इस पर्वकी उत्पत्ति या इस पर्वके मनानेका यह कारण है कि इस कार्त्तिक वदी अमावस्याको श्री महावीरस्वामीने अविनाशी शिवधाम प्राप्त किया था । तथा उसी समय गौतम नामक गणधरको कैवल्य (केवलज्ञान) की प्राप्ति हुई थी । इस कारण इन दोनों महाउत्सवोंको करनेके लिए सुरलोकसे देवगण आये थे । उन्होंने भगवानका मांसमकी शरीर बनाकर उसकी अंत्येष्ट क्रिया की । तत्पश्चात् देवोंने श्री वीर निर्वाण महोत्सव और कैवल्यज्ञानोत्पत्ति उत्सवको भक्तिभावसे किया । उस समय कुछ अंधकार था इस कारण देवगणोंने स्नमयी सुन्दर दीपक जलाये थे । तथा उस समय मगधदेशवसी सब श्रावक लोगोंने भी भक्तिभावसे उत्सव मनाया था एवं अत उपवासादि किए थे । उसी समयसे यह पर्व दीपावलि नामसे प्रचलित हुआ । आजकल भी उन्हीं पद्म पुरुष देव विदेव श्री भगवान महावीरस्वामीके निर्वाणादि उत्सवोंके स्मरणार्थ समस्त दिगम्बर जैन भाई पूजन स्तवन कर भक्तिभावसे निर्वाण काडू चढ़ते हैं । इसके निवाच आजकल हमारे भाई धर्मकर्मसे सर्वथा

हाथ धोकर अर्घ्य अर्पनी होकर जैनस्वपनेको रजते हैं । मिथ्यात्वके वश होकर अपनी रुपया पैसादि सम्पत्ति हो बचानेके अभिप्रायसे "ब्रह्मणः" की पूजा तथा बटियोंकी पूजा एवं मापने (नीलामे) के वांट तराजू और मसीपात्र (खवात) खत-या कलम आदिकी पूजा करते हैं और सैंकड़ों रुपयेके फदाका फोड़ते हैं, जिससे हजारों जीवोंकी हिंसा होती है । तथा भारतवर्षके अन्दर लाखों करोड़ों रुपयेका जुआ खेला जाता है । जिससे हमारे कई भाइयोंको घाके नर्तन बगैरह तक गिरवी रखना पड़ते हैं और हजारों रुपया हार जाते हैं । फिर अपनी नाक कटायेसे रह जाते हैं ।

बंधुओ ! विचारिये कि क्या महावीरस्वामीने यही आदेश दिया था ? कभी नही दिया, किंतु लोग आजकल अज्ञानी होकर धर्मकी ओटमें शिकार करते हैं, जिससे उनके जैनत्व (जैनीपने) में बाधा आती है । लेकिन विषयोंकी गृह्यतासे हेयोपादेयका अंग भी विचार नहीं करते हैं । वास्तवमें आजकल नाममात्रके जैनी हैं; किन्तु धार्मिक क्रियाओंसे कोसों दूर भागे जरहे हैं । मिथ्यात्त्व रूप प्रवृत्ति करनेसे अंग भी धाम नहीं आते । दूपोंकी निन्दा करना, गाकी देना, आपसमें द्वेषभाव रखना या परस्परमें कड़ाई लगादे कर मुद्रहमेवाजी करना वही आजकल मुद्र स्वार्थी लोगोंने अपना कर्तव्य मान रखला है ।

यदि कोई सुधाकर धर्मकी उत्पत्ति का सच मार्ग बतलाता है अथवा अहिंसा परिपूर्ण एतत्ताका उपदेश देता है तो उसको यह स्वार्थी लोग अपना शत्रु समझकर उसके द्वेषभाव करते

हैं। लेकिन उस समय जग भी विवेकमे नहीं विचारते हैं।

अथ जैनियो ! जरा विचारो और विवेक बुद्धिमे काम लो। भगवान महःवीरस्वामीने जिस तरह गंभीर अहिंसा पामो धर्मः का एवं जीवादि सप्त तत्त्वोंका स्वरूप दर्शाया था। इपकिर हमारा और आपका यह फर्क है कि जिस प्रकार हो सके जिन शासनकी प्रभावना करना अथवा दूषणकी निन्दा नहीं करना, गाजी नहीं देना, मात्सर्पभाव नहीं रखना, पाश्चर्यमे प्रेमका संचार रहे, सब एक सूत्रमे बंधे रहे तथा जो अपनेसे विदुडे हुए भाई हैं उनको भी अपने गले लगावें, अपनेवें। जब इस तरहकी भावना हम लोगोमे हो जावेगी तब आशय यह पतित जैनसमान उन्नत अवस्थामे पहुँच जावेगा। जब आपकी क्रियाएँ मिथ्यास्व रहित निर्दोष हो जावेंगी तभी आपका दीपावलि पर्व मनाना सफल होगा।

बन्धुओ ! यदि आप सब अन्तर्हितैषी एवं जैनस्वका कुछ भी गौरव रखते हैं तो आजसे सब एक हो जाइये और पवित्र अहिंसा धर्मकी पताका फहराइये।

वास्तवमे इस गुणरात मान्दमे बिबाका कुछ भी प्रचार नहीं है। लोग धर्मका स्वरूप तक नहीं जानते। यहाँतक कि उनसे शुद्ध जमोकार मंत्रका भी उच्चारण नहीं होता है। इसलिये ज्ञानकी उन्नतिके साधन जुटाना चाहिये। स्थान पर पाठशाळाएँ खोलना चाहिये। तब अपनी दीपावलि सफल होगी।

अध्यात्म ।

(ले० धर्मरत्न पं० दोपचन्द्रजी वर्णी)

नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकाशते ।
चित्तस्वभावाय भावाय सर्व भावांतरच्छिदे ॥

पदार्थ—अनंत धर्मात्मक होता है, उन अनंत धर्मोंके वाचक शब्द भी अनंत होते हैं, वे अनंत धर्म पदार्थमें हर समय साथ ही साथ रहते हैं परन्तु उनका कथन एक साथ नहीं हो सक्ता, यह क्रम क्रमसे होता है अर्थात् एक गुण कहे देनेपर ही दूसरा गुण कहा जासक्ता है। इस प्रकार क्रमसे कथन कानेको अनेकांतवाद, नयवाद, स्याद्वाद या कथंचित्तवाद, या सापेक्ष कथन कहाता है। जिस समय जो गुण वक्ताके कथनमे आरहा है वह प्रधान और शेष गुण अप्रधान या गौण कहे जाते हैं, और इस तरह सभी गुण कथन और अकथनकी अपेक्षासे मुख्य तथा गौण होसक्ते हैं। परन्तु इनसे यह न जान लेना चाहिये कि वे गुण पदार्थोंमें मुख्य या गौण होजाते हैं। नहीं, पदार्थोंमें तो वे अपनी सत्ता (वदगुणो हानि वृद्धि) को किये हुए सदैव ही अपने स्वरूपमें रहते हैं।

वास्तवमे न तो उनमें कोई मुख्य है और न कोई गौण है, अथवा योंकहिये कि सभी मुख्य है या गौण हैं। जैसे कि परमाणुओंमें सभी परमाणु आकार मिश्रणकी अपेक्षासे समान हैं न उनमें कोई छोटा है न बड़ा है। क्योंकि परमाणु सब समान ही होते हैं और यदि वे

समान नहीं हैं, तो परमाणु ही नहीं है किन्तु परमाणुओंके समुदाय स्वरूप संभव हैं। तत्पार्य-पदार्थमें जैसे एक गुण अती सत्ता रखता है वैसे ही अनंत गुण अविरोध पूर्वक अपनी सत्ता रखते हैं, उनमें मुख्यता या गौणता कथन मात्र है। वक्त अपनी इच्छा और प्रयोजनसे किसीको मुख्य और किसीको गौण करके कथन करता है। और वह भी इसलिये कि वह शब्दोंमें एक साथ उन गुणोंको जानता हुआ भी कह नहीं सकता। इसलिये जीव दर्शन स्वरूप भी है, ज्ञान स्वरूप भी है, आनन्द स्वरूप भी है इत्यादि रूपसे कहता है। इस प्रकार कहनेका आशय यही कि ऐसा भी है और अन्य स्वरूप भी हैं। यह भी शब्द या व्याप्त कथंचित् अपेक्षासे इत्यादि शब्द इसी बातके द्योतक हैं कि पदार्थका स्वरूप इनना मात्र नहीं है। किन्तु आगे कुछ और भी कथन शेष हैं। इस प्रकारके सापेक्ष कथनसे ही पदार्थके यथार्थ स्वरूपका बोध होसक्ता है अन्यथा नहीं।

ये नय (उन अनंत धर्मोंसे प्रत्येक धर्मको कहनेवाले वाचक शब्द) अपने-अपने धर्मोंको बतते हैं। अपने सिवाय अन्य धर्मोंका कथन नहीं करते। और न उनका निषेध ही करते हैं क्योंकि वे यदि अपने सिवाय अन्य धर्मोंका भी कथन करने लग जाय तो वे अपने धर्मके निश्चयक नहीं रहे जायके और यदि विरोध करने लगे तो पदार्थ एक धर्म मात्र ही ठहर जावे। जैसा कि वह नहीं है। बस इन्हीं नयोंके द्वारा पदार्थके अनंत धर्मोंको जान लेना सो प्रमाणका

विषय है जो कहा नहीं जा सकता। इसीलिये प्रमाणको अंश अर्थात् महत्त्व ही और नयको अंश अर्थात् देशमही कहा गया है।

जबतक प्रमाण और नयके स्वरूपको नहीं समझा जाता तब तक पदार्थका स्वरूप समझ ही नहीं सकता। इसलिये पदार्थको ठीकर जाननेके लिये इनका जानना पहिले ही आवश्यक है।

बहुन लोगोंका कहना है कि स्पष्टद वचनाक है, किसी भी बातका निश्चयक नहीं है, इत्यादि। परन्तु ऐसा उनका कहना, केवल उनके मोक्ष-पनका सूचक है। वास्तवमें उन्होंने इसे समझा ही नहीं है। उनका कहना, केवल उनके ज्ञान पदपर प्राप्त अर्थात् "ही" का चरना चढ़ रहा है, इसलिये वे सब पदार्थोंको ही रूपसे ही देखते हैं। उनके विरुद्ध कथन उनको वैसा ही कटु लगता है जैसे पित्त रोगीको दूध। हम ऐसे लोगोंसे केवल यही कहना चाहते हैं कि आप लोग, पक्षपातको छोड़कर एक बार आपश्य ही इस नयवदको समझनेका कष्ट रटइये, और पश्चात् अपना मन स्थिर कीजिये, ताकि पदार्थका असली मात्र समझमें आवे और उससे आप अपने आत्माका हित कर सकें। क्योंकि यह जाननेका प्रयोजन मात्र स्वात्मकल्याण करना है।

अब यह विचार करना है कि आत्मा क्या वस्तु है? और उसका कल्याण किस प्रकार होसक्ता है? अथवा मैं कौन हूँ? कहाँसे आया हूँ? कहाँ जानेकी तैयारी कर रहा हूँ? मेरा असली मुहाम कौन है? और वहां मैं किस

पकार पहुंच सकता हूं ? यहां मेरा कौन है ? और मैं किमका हूं ? ये सब क्रियाएं जो मैं कर रहा हूं क्यों और किमके लिये ? इनका फल क्या होगा ? इत्यादि बातोंपर विचार करनेके लिये सबसे प्रथम हमको मैं इन शब्दके वाचक पदार्थका विचार करना चाहिये । कि मैं किमका बोध कराता हूँ ? मैं कौन हूँ ? यह मैं की आवाज कहासे आती है ? इत्यादि । हम विषयमें पंडित ध्यानतरायजीने एक पद्यमें बहुत सरकतासे सम्झाया है कि तू आत्मा है तू उसे जान । वह कहाँ है और कैसे जाना पहिचाना जाता है उसके लिये कहते हैं कि—

भैया सोई आत्म जानोरे ॥१॥

आके बसते बस रहे जी पांचोइन्द्रि गाम ।
 आसविना छिन एकमें जी गाम न ठाम न नाम ॥१॥
 आर चहै अरु ले चले जी पाँके बहु मन भार ।
 जास विना गज ना चलेजी तन खंचे संभार ॥२॥
 जाको जरे मारने जी जरे मरे नहीं कोय ।
 जो जाने सब जगतको जी ताहि न जाने कोय ॥३॥
 घटघट व्यापी है रघो जी गजकुंथा सम ह्य ।
 जाने माने अनुभवे जी दानत सो चिद्रूप ॥४॥

अर्थात्—जिमके रहते हुए पांचोइन्द्रियों सर्वात्मना घ्रण चक्षु और श्रोत्र अपना अपना व्यापार करती रहती हैं, जिमके इस शरीरमें इन्द्रिय रूपी ग्रामकी आबादी होरही है । और जिमके निकल जानेपर समयभरमें न ग्राम रहता है न स्थान रहता है और न नाम ही रहता है सो ही आत्मा है । अथवा जरा बड़ चकता है सो करने साथतेजम कार्मिक शरीरोंके साथर लौकिक (मयूक) अथवा बिक्रमक शरीरके अणको भी ले चकता है । उसके सिवाय

अन्यान्य वस्त्रादि वस्तुओंको भी ले जाता है । और जिमके निकलजाने पर इस शरीरको अन्यान्य संपारी जीव बसिठते फिरते हैं, सो ही आत्मा है । अथवा जिमको जमाने मारनेसे चकता मरता नहीं है, और जो सबको जानता है परन्तु उसे कोई नहीं जानता है सो आत्मा है । अथवा जो कुशु आदि सूहन जीवोंसे लेकर हाथी जैसे शरीरोंमें व्याप्त होरहा है, जो जानता मानता अनुभव करता है, वही चिद्रूप आत्मा है, उसे जानो ।

इसी बातको अन्य एक महारामने अपने शिष्यका आहोनेपर उसे कहा, हे बन्धु ! इस दर्पणमें देख, तूझे आत्मा दिखेगा । शिष्यने कहा, महाराज इसमें तो मुझे मेरी ही परछाईं दिखी, आत्मा तो नहीं दिखी । तब गुरु बोले—अच्छा स्नान पूजन करके आओ । तब उसने ऐसा ही क्रिया और आके दर्पणको देखा । गुरुने पूछा क्यों बन्धु, दिखी ? उसने नहीं महाराज, तिकक मुद्रादि लगाये हुए मेरी ही परछाईं दिखी है । गुरु—अच्छा वस्त्र दि पहिरकर आओ और देखो ! उसने ऐसा ही किया । तब गुरुने पूछा, क्यों बन्धु अब तो दिखी ? शिष्य—महाराज वस्त्रालंकारों पहिन मेरी ही परछाईं दिख रही है । गुरु—बहुत ठीक, ये तीन तरहके तेरे रूप किमने देखे ? शिष्य—जी, मैंने देखे हैं । गुरु—अच्छा भूजना मत, तूमने देखे हैं ना ? शिष्य—जी, गुरु—तेरो देखे ? शिष्य—दर्पणमें । गुरु—ठीक तब तू सम्झ—आत्मा देख । शिष्य—नहीं, गुरु—अरे, अभी तो कहता था, मैंने रूप देखे

दर्शनमें देखे, सो तू देखनेवाला स्वयं आत्मा है। यदि तू न होता तो ये रूप कौन देखता ? इसलिये पहिचान के बही आत्मा है। इस प्रकार शिष्यको आत्माकी पहिचान गुरुने करा दी।

इस प्रकारसे प्रथम मैं कौन हूँ ? इस पश्चात् उत्तर "कि मैं सच्चिदानंद स्वरूप अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंत सुख, अनंत धीर्बुद्धि अनंत गुणोंका धारी एक शुद्ध बुद्ध चैतन्य आत्मा हूँ" पाकर उक्त प्रकारसे उसकी पहिचान करना चाहिये। पश्चात् यह विचरना चाहिये कि

जब मैं इस प्रकार शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूप आत्मा हूँ। तो मेरी यह वर्तमान अस्तिविधि क्यों ऐसी हो रही है कि जिससे मैं अपने उन शुद्ध अनंतगुणोंको प्राप्त नहीं करके पराधीन हो रहा हूँ ? ऐसा पश्चात् आत्मामें उठनेपर यह उत्तर तर्काल निकलता है कि उन अनंत शुद्ध शक्तियोंके अपकट होनेमें निमित्त कारण अन्य कोई वस्तु है जिसे कर्म कहते हैं और वह जीव (आत्मा) की शक्तियां प्रकट होनेमें उसी प्रकार बाधक है, जिस प्रकार सूर्यके प्रकाशमें मेघ पटक बाधक है। यद्यपि मेघ पटकके रहते हुए भी सूर्य का नी पश्चात् सहित अपने स्वरूप रूप ही रहता है, वह प्रमादीन बही होनाता, तथापि मेघ पटकके कारण उसकी प्रकाशका प्रकाश सर्वत्र अपकट रहता है। परन्तु इसमें अंतर इतना ही रहता है कि बादलोंसे आच्छादित होने पर भी सूर्यकी प्रकाश बाधे अन्यत्र प्रकट प्रकाशित न होने, परन्तु बादलोंके अंदर प्रकट प्रकाशित है। इस प्रकारसे आत्मा

ज्ञानादि अनंत गुणोंका पुंज होते हुए भी कर्म पटकके अंदर ज्ञानादिकी प्रकाश सहित प्रकट प्रकाशित नहीं है, किंतु वह ज्ञानादिकी शक्ति सहित है अर्थात् कर्म पटक उस चैतन्य प्रभु आत्मामें शक्तियोंके व्यक्तित्वमें बाधक होता है और ज्यों ही यह कर्म पटक कारणान्तरसे प्रकट या प्रकट हो जाता है, त्यों ही आत्मामें वे अनंत शक्तियां प्रकट हो जाती हैं, तभी यह प्रभु कहलाता है। (अपूर्ण)



वीर निर्वाण संदेश ।

मूक पशुओंका ज्ञान, किया विश्वकल्याण,
भारतके धर्म प्राण, योगी कर्म वीरका ।
राष्ट्र धर्म नायक, आत्मशक्ति परिचायक,
शांति प्रदायक, अथ क्षायक धर्म धीरका ।
निर्वाण दिवस आज, आया ले नवीन साज,
सत्यकर्म साम्राज, फैलाओ प्रणवीरका ।
धर्मध्वजा फहराओ, दिव्य भावना जगाओ,
सफल बनाओ, निर्वाण महावीरका ।
महावीरका मनाओ, निर्वाण बंधु ! ज्ञानरत्नचमकाओ,
दिखलाओ प्रणवीरता ।
प्रणवीरता दिखाओ, दृढ़ साहस जगाओ,
सत्य स्रोत सरसाओ, सज लाओ कर्मवीरता ।
कर्म वीरता सजाओ, आत्मशक्ति प्रकटाओ,
शीघ्रतः भगाओ, विघटाओ भारी भीरता ।
भीरता भगाओ, दिव्य तेज चमकाओ,
बंधु ! विश्वको दिखाओ, आओ आज महावीरता

" वीरसक "

सुभाषित-रत्नसंदोह ।

(गतांसे आगे)

कोपाग्निसे संतप्त मानव, त्याग स्वाभाविक क्षमा ।
 निज आत्मशक्ति विनष्ट कर, हिंसादिमें रहता रमा ॥
 हां घात कर पर प्राणका, होता निरंतर अधनिरत ।
 बनता निरादर पात्र, हा ! क्या र न करता क्रोध रत ॥३१॥
 दोष वश हमसे किसीका बन गया अपराध अति ।
 इसी ही लिए कोई कहे कटु शब्द कुवचन क्रोध युत ॥
 “ अपराध हमसे होगया यह क्रोध करता युक्त है । ”
 इस भांति हृदय विचार, रखना क्षमा ही उपयुक्त है ॥३२॥
 अपराध दोषादिक विना, यदि कोई मानव व्यर्थ ही ।
 कटु वाक्य, गाली दे करे, उत्पात और अनर्थ ही ॥
 “ यह अज्ञ है अविवेक रत कुल भी न इसको ज्ञान है ।
 यह है क्षमाका पात्र ” रखना यह क्षमा सुख खान है ॥३३॥
 होकर कुपित कोई मनुज यदि मार दे अज्ञानसे ।
 करना सहन उसको सतत मुविवेक एवं ज्ञानसे ॥
 “ निज पूर्व कर्मोंके कुफलका फल हमें है मिल रहा ” ।
 इस भांति विमल विचार कीजे रख हृदय क्षमता महा ॥३४॥
 सज्जन विमल ज्ञानी मनुज अविचल क्षमाकी धारसे ।
 अपराध मल धोने सभीका शून्य क्रोध विकारसे ॥
 करते विचार “ स्वधर्म रत मैं ” पूर्व क्रूर कुकर्मसे ।
 यह कष्ट दे मुझको, स्वयं है शून्य होता धर्मसे ॥३५॥
 कोई मनुज अपशब्द कह, करदे शरीर निपात भी ।
 पूर्व कृत दुष्कर्मसे, कर दे कभी प्राणांत भी ॥
 “ क्रोधसे होता कुकर्माश्रव ” विवेक विचार मन ।
 करना क्षमा संयुत सहन रखना सुरक्षित धर्म धन ॥३६॥
 एकत्र धान्य समूहको जैमे अनलका तुच्छ कण ।
 करता सशीघ्र विनष्ट है लगता न उसको एक क्षण ॥
 उपवास, व्रत, यम, नियम प्रभृति, अनेक संचित कर्म शुभ ।

कोपाग्नि किंचित भस्म कर, भरती विचार घृणित अशुभ ॥३७॥
 कोपवश हो अन्य नरका यात इच्छुक अज्ञजन ।
 करता स्वयं आघात अपना हो वहिर्मुख विषम मन ॥
 ज्यों अज्ञ अष्टापद श्रवण कर मेघ गर्जन क्रोध कर ।
 नभमें उल्लस होता विफल जर्जर स्वयं पड भूमिपर ॥३८॥
 किंचित विरुद्ध विचार सुन होता कुपित कुविचार युत ।
 उपकार लोप स्वबंधुका अपकारमें रहता निरत ॥
 शुभ मित्र, भगिनी, पितृका भी है बना रहता अभिय ।
 अत्यन्त क्षीण शरीर, डष्ट विनष्ट, होता कष्ट मय ॥३९॥
 जो मनुज सर्वत्र, नित्य विशिष्ट क्षमता युक्त है ।
 वह अति अलभ्य पवित्र पावन पुण्यसे संयुक्त है ॥
 तप, तीर्थयात्रा, ध्यान, दान, विज्ञान संयमवान है ।
 करुणा दया, उत्कर्षमें उसके न अन्य समान है ॥४०॥
 कोपवश हो वक्र भ्रुकुटी और मुखपंडल विकृत ।
 रौद्र मूर्ति महा भयानक नेत्र प्रज्वलित अनलवत ॥
 देत कट कट, सर्व तन होता विकंपित औ ज्वलित ।
 क्रोधी मनुज वन निघ्न राक्षस रूप दुख पाता अमित ॥४१॥
 अन्य जनके दाहका इच्छा सहित अल्पज्ञ नर ।
 प्रज्वलित अनलकण फेक हा सहसा जलाता है स्वकर ॥
 क्रोधित मनुज परघात अविचार्य कुनित कार्यमे ।
 संतप्त होता है स्वयं ही नित्य दुख अविचार्यसे ॥४२॥
 देह धारी शत्रु केवल प्राण करता नष्ट है ।
 किन्तु करता क्रोध रिपु मैत्री दयादि विनष्ट है ॥
 अविवेक द्रोह विवृद्धि कर जड़ता प्रदाता है विषम ।
 हा विश्वमें बलवान अरि नरका न कोई कोप सम ॥४३॥
 दिव्य कान्ति विनष्ट कर दुर्भाग्य लाता है निकट ।
 सौभाग्य हन, उच्छुष्ट अनुपम फोड़ देता कीर्ति घट ॥
 अतएव विज्ञ, गणस्त दुखदा क्रूर क्रोध विकार हन ।
 करते विजित हैं विश्वको बलदा क्षमा आगार वन ॥४४॥
 वत्सल] इति क्रोधप्रकरण । (कमशः)

स्त्रियोपयोगी शिक्षाएं ।

(ले०-मास्टर पूनसुन्द मंगलजी, छानी)

(१) ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिये जिससे कि दूसरे जीवोंको मानसिक वा शारीरिक पीड़ा हो क्योंकि ऐसे कार्य करनेवाली स्त्रीको सब कोई द्विभक्तनी और पापिनी कहते हैं ।

(२) ऐसे वचन कभी नहीं बोलना चाहिये जिससे कि अपनी व परकी इज्जत हो क्योंकि ऐसे वचन कहने वाली स्त्रीको असत्यवादिनी (झूठी) और मायाचारिणी कहते हैं ।

(३) रक्खी हुई गिरी हुई मूली हुई अनामत रक्खी हुई पराई वस्तु कदापि ग्रहण नहीं करना चाहिये क्योंकि परवास्तुको ग्रहण करनेवाली स्त्रिये चोरटी और ठगनी कहलाती हैं ।

(४) किसीकी सम्पत्ति और गहन देखकर लोभ (काकच) कदापि नहीं करना चाहिये क्योंकि लोभ करनेवाली स्त्रियोंको पाप करनेमें मग्न नहीं रहता और लोभ करनेवाली स्त्रिये हमेशह दुःखिनी ही रहती हैं इन कारण अनेक कारणसे जो कुछ प्रसन्न हुआ है उसीमें संतोष धारण करना चाहिये ।

(५) उठते बैठते चलते किरते सोने अथवा तम्र समय जीवोंका भला चिन्तवना चाहिये । अपनी सामर्थ्यानुसार तन मन धनसे परका दत्त करना चाहिये । इस प्रकार दिन चाइनेवाली स्त्रियोंको हितैषिणी, परेषकारिणी व धर्मपरायणा आदि कहते हैं ।

(६) जो स्त्रिये पति समय परका अकल्याण चाहती रहती हैं और दूसरेके अशुभ दुःखनीयनी हैं उनको दुष्टिनी पापिनी और बदमाश आदि कहते हैं ऐसी स्त्रियोंकी संगतिमें कदापि नहीं बैठना चाहिये ।

(७) जो स्त्रिये द्विदकारी मिय वचन बोलती हैं उनको सब कोई प्रियवादिनी, मिष्टभाषिणी आदि कहते हैं ऐसी स्त्रियोंका कोई भी दुःखन नहीं होना ।

(८) क्रोध कदापि नहीं करना चाहिये क्योंकि क्रोध करनेवाली स्त्रियोंकी अनेक स्त्रिये दुःखन होमती हैं और वे हरसमय अनेक प्रकारके दुःख देने व झूठा कलंक लगानेमें तत्पर रहती हैं अतएव कोई गाली दे या कुपनन कहे तो क्षमा धारण कर चुन रहना चाहिये क्योंकि क्षमरूपी ढाल और शीशरूपी ढाक जिसमें अंठ ली हैं उनको दुःखमनके वचनरूपी बाण कदापि नहीं लग सकते । जैसे बिना घस फूफके परस्पर पही हुई अग्नि अग्नि आप शांत हो-जाती हैं । इस कारण क्षमरूपी और शीशरूपी ढालको अद्विक्रम क्रोधके वशीभूत कदापि नहीं होना चाहिये ।

(९) समयका एक निमेष मात्र भी वृथा नहीं खोना चाहिये । क्योंकि गया हुआ समय फिर करोड़ बरन करनेपर भी हाथ नहीं आता । इस

कारण पढ़नेका अमूल्य समय जो बालकपन है उसका एक पल भी वृथा नहीं खोना । अहो-रात्र पति समय विद्या पढ़नेमें ही ध्यान लगाना चाहिये । क्योंकि विद्या ही सर्वोत्तम पदार्थ है । विद्यासे ही इस लोकमें सुख यश और परलोकमें अनुपम सुखकी प्राप्ति होती है । विद्या ही माताके समान अपनी ब अपने पतिव्रता धर्मकी रक्षा करती है । विद्या ही पिताके समान हितमें लगी होती है, विद्या ही शक्तिके समान चित्तको संजन कर समस्त दुःखोंका दूर करती है, विद्या ही दक्षों विशामें सीता, द्रौपदी, अनन्तमती, अंजना आदिके यशकी तरह अतुरूप यशको प्रकाश करती है । विद्या ही करपकताकी समान मनवांछित सुख देती है । विद्या ही अपूर्व गहना है जिसको धारण करनेवाली स्त्रियें अनि-शय शोभाको प्राप्त होती हैं । विद्या ही अनुपम आभूषण है जो कि मांगी हुई दान करनेपर भी बढ़ती रहती है । विद्या ही अति उत्कृष्ट अलंकार (आभूषण) है कि जिसको चोर चुरा नहीं सकता । सात और निठाणियें बढ़ा नहीं सकती । विद्या ही सर्वोत्कृष्ट धन है, जिसको रामा व दस्युगण (डंकेत) जबरदस्ती नहीं छीन सकते । विद्या ही हितकारिणी सखी है जो विपत्तिमें हर समय सहाय करती है इत्यादि अनेक गुणोंको देनेवाली विद्या है । इस कारण विद्याके पढ़ने पढ़ानेमें समस्त कार्य छोड़कर तन, मन, धन और समयसे तत्पर रहना चाहिये । दुष्ट लोग और खराब स्त्रियें चाहें जो कुछ कदें, परन्तु तुम एककी भी नहीं सुनना, कमसे कम स्त्री शिक्षाकी ४ पुस्तकें तो अवश्य पढ़ लेना चाहिये ।

(१०) कर्कश वचन कदापि नहीं बोलना चाहिये ।

(११) शराब और रसोंका संसर्ग कदापि नहीं रखना ।

(१२) पढ़ते समय अन्य चर्चा नहीं करना चाहिये ।

(१३) धनाढ्य ही औरतें धनके मदसे मूर्छित होजाती हैं । उनको धनके मदसे मूर्छित न होना चाहिये, अवश्य विद्या पढ़नी चाहिये ।

(१४) परके दोष देखनेवाले दुर्जन होते हैं ।

(१५) दुर्जनका भरोसा करना मृत्युको बुझानेके बरोबर है ।

(१६) जैन मतमें जीव अजीब आसव बंध संवर निर्जरा मोक्ष पुण्य और पाप ये नौ पदार्थ माने हैं ।

(१७) अजीर्णता पर भोजन करना विषके तुरूप है ।

(१८) आर्तध्यान ही दुःखका कारण है ।

(१९) अपना प्रयोजन साधे बिना परका उपकार करना ही यथार्थ उपकार है ।

(२०) निर्दय लोग सदा दुःखी ही रहते हैं ।

(२१) जो लोग देवताके सामने बड़े बड़े काटकर अर्पण करते हैं तथा अग्निमें पशुहोमको बर्न बताते हैं वे बड़े निर्दयी पापी हैं ।

(२२) ऐसा कोई भी काम नहीं करना जिससे अपना दुर्नाम होजाय ।

(२३) कुपत्रको दान देना सर्पको दुष पिका-नेके बरोबर है ।

(२४) निर्बल जीवोंको तन मन वचन और

बनसे सहायता करके निर्भय करो, इसीको हमारे आचार्योंने अमयदान कहा है ।

(१९) रूप बन आदिका गर्व कदापि नहीं करना चाहिये । अतिशय गर्व करनेसे रावणका नाश हुआ था ।

(२०) बर्म कर्म प्रेमके साथ सदैव ही करने चाहिये ।

(२१) विपत्तिमें वैयं गुण ही यथार्थ मित्र होता है ।

(२२) मनुष्य पर्याय और आर्यकुल (उत्तम कुल) पाना तथा विद्या पढनेकी सामग्री मिलना अतिशय दुर्लभ है व पूर्वभबके पुण्यसे मिलता है इसलिये इस भवमें भी पुण्य काने रहना चाहिये ।

(२३) सुबह और शामको एकेक घंटा गह्रित कार्य छोड़कर हर्षित मन होकर नित्यप्रति अर्हत भगवानका दर्शन पूजन किया करो जिससे हृदय पवित्र होकर पूर्व भबके किये हुए पापोंका नाश और शुभ कर्मोंका आश्रय (आगमन) हो ।

(२४) देव पक्षेन किये बिना भोजन कदापि नहीं करना ।

(२५) क्रोध, मान, माया, लोभ ये चार कषाय बड़े दुःखदायक हैं, इस कारण इनके त्यागनेका क्रमसे उपाय करती रहो ।

(२६) भले कामको करनेमें सरसे अग्रगामिनी बनना चाहिये ।

(२७) भले काम शीघ्रताके साथ करना चाहिये ।

(२८) पात्र सुपात्र कुपात्रकी परीक्षा करके योग्य पात्र देखकर दान देना चाहिये ।

(२९) दिनमें निद्रा छेना रोग और दरिद्रताका मूल कारण है ।

(३०) कड़ाई मूल हास्य (हंसी) करना है ।

(३१) प्रथम बचसे (उमरसे) ही सदाचारिणी पढ़ी हुई औरतोंकी संगति करना मारंभ करो ।

(३२) भ्राता और भ्रातृ ज्ञानसे कदापि विगाह नहीं करना ।

(३३) सास और जितानीके निकट नग्रीभृत होकर रहना चाहिये ।

(३४) हिंसा, चोरी, झूठ, कुशीक और परिग्रह इन पांचों पापोंको मन, वचन, कायसे त्याग देना सो तो पांच महाव्रत हैं ।

(३५) मूल्य औरतें ही ध्रुवको त्याग, अश्रुकी आशा करती है ।

(३६) पतिव्रता सहस्रोंमें एक ही होती है ।

(३७) बुरा काम करनेसे अकृषाति (निंदा) होती है ।

(३८) न्यायसे विचार किया जाय तो पृथ्वीमें परोपकारीका ही जीवन सम्भव है ।

(३९) शाठ्य (दुर्नता), जाड्य (मूर्खता) छोड़ गुण सीखकर गुणाढ्य बनो ।

(४०) अठारह दोष रहित वीतराग (अहंन्त) देव हीकी पूजा करो ।

(४१) पुण्यसे ही हिरण्यमय आमूषण मिलते हैं ।

(४२) जो कन्या नित्य सत्य वचन बोलती हैं वही जैन कन्या हैं ।

(४३) विद्याभ्यसनमें हर समय ध्यान रखनेसे असाध्य विषा भी साध्य होजाती है ।

(५१) गुणवती कन्या सबको प्यारी लगती है ।

(५२) अश्लील गान्तिये गानेसे ही औरतें बिगड़ जाती हैं ।

(५३) नीच औरतें ही साम श्वसुरको नाना प्रकार बलेश देकर दुःखित करती हैं ।

(५४) तुम कदापि अपने मुखसे गाली बगै-
रह अश्लील वचन नहीं बोलना ।

(५५) पतिकी सेवा करनेसे पतिव्रताओंको बड़ा आरहाद होता है ।

(५६) कुतूहको गुरु, कुदेवको देव, व कुपर्मको धर्म मानना सो मिथ्यास्व है ।

(५७) बदमाश औरतोंका संग नहीं करना ।
उनकी संगति करना मृत्युका द्वार है ।

(५८) दुराचारी औरतोंकी सीठी २ बातोंपर पतिव्रता स्त्रीको कदापि विश्वास नहीं करना ।

(५९) घरपर आये हुवे दिन दुखियोंको दया करके अन्न दान देना चाहिये ।

(६०) छोटे भाई भगिनीके प्रति अतिव्यय स्नेह रखना चाहिये ।

(६१) नीचोंकी रक्षा करना ।

(६२) पानी छानकर पीना ।

(६३) रात्रिको भोजन नहीं करना, रात्रिमें भोजन मांस बराबर और पानी लोहू बराबर गिना जाता है । इसलिये रात्रि भोजन अवरुध स्थाप करना चाहिये ।

(६४) विद्याहीन नारीका जन्म वृषा (फोगट) है ।

(६५) जो औरतें पढ़नेमें आकम्प करती हैं वे सब जगह विकार वाली हैं ।

(६६) मता पिता और सासु श्वसुरकी सेवा-
भक्ति तन मनसे करनी चाहिये ।

(६७) पहरनेके कपड़े व रङ्गनेका धर सदैव स्वच्छ रखना चाहिये ।

(६८) औरतोंका प्रवान गहना (दागीना) शीक और लज्जा है ।

(६९) औरतोंका अट्टहास करना (जोरसे हंसना) बहुत बुरा कुलक्षण है ।

(७०) जो औरतें अच्छे अच्छे व्यञ्जन बनाना जानती हैं वे ही सुषड हैं ।

(७१) मूर्ख माता पिताओंकी संतान भी मूर्ख रहती हैं ।

(७२) लोक विद्वके भयसे विद्या पढनेका पारंभ नहीं करनेवाली औरतें मूर्ख होती हैं ।

(७३) पतिव्रता स्त्रियोंको ईन्द्र भी नमस्कार करते हैं ।

(७४) बेवकुफ औरतें शोकमें विह्वल हो जाती हैं ।

(७५) विद्या पढनेके लिये बरुप काउकी तुरन्त अन्य कोई अमुरुप समय नहीं है ।

लोपाई ।

ककेश वचन कहै ओ नारी ।

ओ अति मूर्ख महा दुखियारी ॥

पतिव्रता तिय स्वर्ग ही जावे ।

दीर्घ काल लो अती सुख पावे ॥ १ ॥

खोटी चर्चा कबहु न करना ।

धन प्रदादिमें मूर्च्छा हरना ॥

दुर्जनता चितसे तुम छारहु ।

निर्णय कर शुभ व्रत धर पारहु ॥ २ ॥

आर्त्तध्यान करै ओ नारी ।

सो यथार्थ दुःख पावे भारी ॥

निर्दयता चितमें मत छाषी ।

निर्धन पतिका धैर्य बढावो ॥ ३ ॥

विज तनका जो दर्प करे हे ।
 सो गर्वित तिय दुःख भरे हे ॥
 सब जीवनको निर्भय करना ॥
 धर्म कार्य पर नित चित धरना ॥ ४ ॥
 दुर्लभ मनुज जनम यह रहता ।
 प्रति दर्शन कर हर्षित रहता ॥
 गह्रित कर्म करे जो नरी ।
 सो पतिकी कषहु न हो प्यारी ॥ ५ ॥

ग्रिय माठा और बहिनो ! सुनो, जैसा ध्यान
 आपका मूर्खता चक्रमेमे है, वैसा ध्यान अपने
 स्वाम कर्तव्यकी ओर नहीं है। आपका स्वाम
 कर्तव्य यह है कि व्यंजन (भोजन) बनाना विद्या
 पढ़ना और जिनेन्द्रदेवकी पुष्पा स्तुतिमें प्रीति
 लगाना। आपको मूर्खताकी धूनमें न तो भोज-
 नकी शुद्धतापर विचार है और न विद्याकी परवा
 है। तथा न जिनेन्द्र दर्शन व शस्त्र सुननेकी
 भी फुरसत है। क्या मैं आपसे पूछ सका हूं
 कि क्या केवल मूर्खता ही आपकी आत्माको
 दमय सुलकी प्राप्ति करावेगी ? नहीं माताओ !
 नहीं। मूर्खता दुष्टारी आत्मकरमण करनेवाली
 रही है। पान्तु धर्म तो समाधि सुख देगा।
 परन्तु अपने कर्तव्यका यथाशक्ति पालन भी
 करो ऐसी मेरी भावना है। अशा है नार मेरे
 इस तुच्छ निवेदनपर आशय प्रथम देगो।

देवा—जो अबला इस लेखको,

नित्य पढ़े मन लाय ।

सो भोगही सुख संगदा,

दुःख कभी नहीं पाय ॥ १ ॥

अगरबत्ती--(१) की लत्की धूर २॥ रत्तक।
 पत्रिका काश्मीरी केशर--(१॥) की लोका
 मैनेजर—दि० जैन पुस्तकालय—मुरत।

जैन समाजकी स्थितिपर मेरे विचार ।

सज्जन वृद्ध ! जैन समाजकी वर्तमान परि-
 स्थितिपर विचार कर यह पक्ष उठता है कि
 जैन समाजकी रक्षा कैसे की जाय ? मरती हुई
 जैन समाजको कायम रखनेके लिये किन २
 उपायोंका अन्वेषण किया जाय जसमें
 विचारतन्त्रो उठती हैं। समाजके शुभचिन्तक
 चहे वो मंगलाके जाननेवाले हों किंवा अंग्रेजी
 शिक्षाके ज्ञान विद्वान होवे अपने विचलेको
 अवश्य इस प्रश्नको हल करनेके लिये जुटाते हैं
 और अपने निश्चित विचार जैन समाजके समक्ष
 व्यक्त करते हैं। और उद्देश्य विभिन्नता न
 होनेपर भी विचार-विभिन्नता एक दूसरेमें होना
 अनिवार्य है। इन्ही विचार-विभिन्नताको दूर
 करनेके लो साधन होना चाहिये उभये विररीत
 आचरण जैन समाजके वर्तमान नेतापण धर रहे
 हैं और जैनत्वकी रक्षा करना चाहते हैं यह
 आश्चर्य है। वर्तमानमें जो अनोक्त विचार-
 विभिन्नताको दूर करनेके लिये किये जा रहे हैं
 वह दूरता वैमनस्यका केन्द्र स्थक बन गया है।
 इस समय जैन समाजकी शक्ति ब्रह्मपाठी और
 पंडितपाठीमें बित्तर रही है और खंडनमंडनकी
 इतनी फुत्तार जम गई है कि एक दूसरेके प्रति
 मनमाने कठोर अश्लील शब्दोंका प्रयोग कर
 अपने विषय कषायोंको पुष्ट करते हैं यहांतक
 कि समाजके हितके लिये सत्यानाशी बालविवा-
 हकी वृथा रक्त मानेको लक्ष्य कर बनीर मि०

आरदाका बालविवाह निषेधक कानून पास हुआ है) उसके विरुद्ध भी स्थिति पालक दकने करम चलाई है। मुझे हार्दिक दुःख होता है कि ऐसे लोग जो दि० जैन समाजके कर्तोहर्ती नेता बननेकी ईच्छा करते हैं इन करमा बहादुरोंको इसप्रकार विषेक-शून्य लेखनी चलाते दि० जैन समाजपर दया नहीं आती? जबकि संसारका प्रत्येक बच्चा बालविवाहका निषेध कर रहा है ऐसी हालतमें दि० जैन समाजके स्थितिपालक दकके मुखिया अपनी राग अलग ही आलाप रहे हैं और बाल विवाहके रोके जानेसे विधवा-विवाहके होनेकी आशंका समझ रहे हैं! इस समय विजातिविवाह और विधवाविवाहकी आड़ लेकर समाजमें हदसे ज्यादा कलह बढ़ाई प्रारंभ की है। यदि यही शक्ति खंडनमंडनमें न वित्त जैन साहित्यके प्रसारमें, जैननोंको जैन बनानेमें लगाई जाय तो बहुत कुछ उत्कर्षका दृश्य दिखाई देने लगे। यह समाज बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्या क्रयादि, वैश्यानुस्य, विकासिताकी ओर पैसोंकी पानीकी तरह बहानेमें अग्रसर बन रही है जिसका परिणाम जैन समाजकी संरक्षाकी कभी तैबीसे होरही है। यदि इसप्रकार संरक्षा हासके साबनोंको न निकालनेका प्रयत्न किया जायगा तो लेखकको निश्चय है कि इस बरातकपर जैन नाम मात्रको भी सुनाई न देंगे। अस्तु! सबको मिलकर प्रबलित कुपथाओंको निकास सुपथाओंके प्रसारमें योग देना चाहिये। विजातिविवाह शास्त्र सम्मत है और योग्य शिक्षित बरकन्याकी प्राप्तिका विस्तृत क्षेत्र है। उपजातिविवाहकी इतनी संकीर्णता उपलब्ध होरही

है कि जहां बर है तो उसमें गुण नहीं, शिक्षा नहीं। यदि लड़का पढ़ा लिखा है तो कन्या मूर्ख मिलती है। जिससे गृहस्थाश्रम शांतिके बजाय कलहका स्थान बन जाता है। जो लोग यह युक्ति देकर विजातिविवाहका खण्डन करते हैं कि हमसे अच्छाई बढ़ जायगी, विधवाविवाहादि मनमाना अत्याचारका प्रादुर्भाव होजायगा। बगैरह लिखना बहुत कुछ भ्रमपूर्ण है। हमारे रूपाणसे संगठन शिक्षितताके स्थानमें हद होज सगा। यदि कोई धर्मविरुद्ध कार्य नहीं करेगा तो अभी उसकी जातिवाले ही उसके लिये विचार कर सकते हैं। फिर सारी समाज एक स्वरसे उसके लिये विचार करेगी।

दमननीति-का आतंक भी छारहा है। इसके बलसे हमारे नेतागण अपने उद्देश्यमें सफलता प्राप्त करना चाहते हैं सो अविचारितमय्य है। बहिष्कारकी सीमा होती है। किसी जीवकी प्रकृति पुरुषार्थ ऐव देखकर हम शस्त्रका प्रयोग करना चाहिये। बात पर किसीको जातिच्युत, समाजसे बहिष्कृत कर देना नितना महज है उतना ही किसीको जैनधर्ममें दीक्षित बनाना देना है। दि० जैन समाजमें जैसे ही कार्यपटु प्रखर सिद्धांतोंकी कमी है। यदि कुछ लोग उनके छिद्रोंको दूढ़कर समाजके समक्ष पेश करें और उनके विपरीत भदकावे तो इससे बढ़कर कृतघ्नता क्या होगी। संसारी जीवोंमें कोई न कोई दोष अवश्य होते हैं उनके दोषोंका निकास नितना नम्रता व्यवहारसे होना संभव है उतना बहिष्कारसे नहीं।

રીપોર્ટ એક જવલંત ઉદાહરણ છે. સરકારની આવી નીતિએ કારોબારનો એવો તો પગ પેસાગ કરી દાધો કે એક મુસ્લીમ પટ્ટાવાળો પોતે મંબીર રીતે દોષિત હોય છતાં પણ પોતાની નોકરી માટે તે સહી સલામત રહી શકે છે. આવી સ્થિતિમાં સરકારથી કાયદો ને વ્યવસ્થા તથા ન્યાયનું મથાર્થ પાલન થઈ શકે ?

અમે મુસ્લીમ તપાસ ઉપરથી બહુ યુગ્મ છે કે મુસ્લીમો પોતાને હિંદુઓ કરતાં ચઢીયાતા ગણે છે. તેમની ઉપર સત્તાવાળાઓનું કંઈ ચાલતું નથી. ધર્માનુષ્ઠાનમાં તેઓ ખીજી જાતિએ ઉપર અનેક વિધિ બાધ નામે છે. આમ ઘણા વર્ષો થયાં ચાલતું આવે છે. સરકાર ને સત્તાવાળાઓની ઉપેક્ષાને લઈને મુસ્લીમોની અન્યાયી વૃત્તિએ વધારે બચકર સ્વરૂપ લીધા ક્યું. આની પરિણામ રૂપે મુસ્લીમોને હાથે જૈનો ઉપર અસહ્ય ને અમાનુષિ અત્યાચાર થયો.

અમને લાગે છે કે જો સરકાર હાલની નીતિ ચાલુ રાખશે તો કોમી વિદોષનું વિષ વધુ ફેલાશે ને સરકારને કાયદો જાળવવાનું મુશ્કેલ થઈ પડશે. કુડચીના હિંદુઓ મુસ્લીમોની દયા ઉપર જીવે એ સ્થિતિ ઘણું હોઈ શકે નહિ. ઇનામદારની ઇચ્છા અનુસાર જ હિંદુઓને જમીન મળે, તેમનું ખાવું પીવું ને અધી હીલચાલ મુસ્લીમોને આધીન રહીને જ થતી હોય તુકામાં હિંદુઓ જાણે નિર્હીન જેવા હોય એ સ્થિતિ અસહ્ય છે. સરકારની હાલની મનોદશા જોતાં હિંદુઓની મનોદશામાં પણટાની જરૂર છે. હિંદુઓએ પોતાના ને પોતાના ધર્મના વંદન માટે કટિબદ્ધ થવાની આવશ્યકતા છે. હિંદુઓની દરેક ન્યાત જાને આ મહત્તાની વાત લક્ષમાં રાખવી જોઈએ.

કુડચી.

કુડચી ગામ બેલગામ જીલ્લામાં આવેલું છે. તેની વસ્તી આશરે ૭ હજાર માણસની છે. આટલો વર્ષ ઉપર એક જૈન રાજાએ ત્યાં શ્રીનેમનાથનું મંદિર બંધાવ્યું હતું. ખીજાપુરના રાજા

આદીલશાહે કુડચી ગામ પોતાની પુત્રીને પહેરાઈ મણીમાં આપ્યું હતું અને મરહુમી નામની પોતાની બેગમ ત્યાં જુઝરી જતાં તેના નામનો રાજાને બંધાવ્યો હતો. આ પ્રમાણે આ ગામ એક શાહજાદીનું ઇનામી ગામ થવાથી ને ત્યાં બેગમનો રાજાને બંધાવવાથી તે મુસ્લીમોને માટે મહત્વનું થઈ પડ્યું. આદીલશાહની સત્તા ઘટી ત્યારે જ મુસ્લીમોને માટે એ ગામનું મહત્વ ઓછું થઈ પડ્યું. મરાઠાઓની સત્તાનું પ્રાબલ્ય થતાં હિંદુઓ રુત્તામાં આવ્યા ને તેઓ નિરામાય રીતે રહી શકતા દતા. બ્યારથી ક્ષિતિજ રાજ્યની સ્થાપના થઈ ત્યારથી મુસ્લીમોનું પ્રાબલ્ય પાછું થયું. તેમણે કેટલાક હિંદુઓને મુસલમાન પણ બનાવ્યા. તેમની સાંખ્યા વધી. તેઓ ઇનામદાર ન હોવા છતાં ઇનામદાર પણ બની ગયા. ગામ મુસ્લીમોનું નથી પછી મુસ્લીમોનું ઇનામદાર શાનું ?

૭ હજારની વસ્તીમાં હિંદુઓની વસ્તી માત્ર હજારેક માણસની છે. આદીની વસ્તી મુસ્લીમોની છે. હિંદુઓમાં જૈન, લીંગાયત ને ખીજા હિંદુઓનો સમાવેશ થાય છે, આમાં મરાઠા ભરવાડો ને લીંગાયતોને પોતાની મૂર્તિ નથી, એ ખાસ લક્ષમાં લેવા જોઈએ. જૈનોના એ મંદિર છે ને તેમાં તેઓ પુજા કરે છે જે વાત મુસ્લીમોને ખીલકુલ પસંદ નથી. ખીજા હિંદુઓ મૂર્તિ પૂજા કરવાનું ઇચ્છે છે, પણ મુસ્લીમો તેમની ઇચ્છા બર લાવવા દેવા નથી એટલે તેમનાથી મૂર્તિપૂજા થઈ શકતી નથી.

મુસ્લીમો હિંદુઓ આગળ પીરની પૂજા પણ કરાવે છે. શિવનું એક મંદિર છે, પણ તેનું લીંગ નથી. હિંદુઓ મૂર્તિ લાવે તો મુસ્લીમો તે લઈ જાય છે કે બાંગી નાંખે છે. આથી હિંદુઓને ખીપણાના ઝાડની પૂજા કે એવીજ કોઈ પૂજા કરીને ચલાવી લેવું પડે છે.

જૈનોનો ઇતિહાસ.

બાર વર્ષ ઉપર બ્યારે ચતુર્થોનું મંદિર કરી બંધાવા માંડ્યું ત્યારે સરભરના ટેકાથી મુસ્લીમોએ

तेमने अंतराय नापवा मांडी. तेमणे मंदिराचो थोडाक भाग पाडी पणु नाप्यो. सत्तावाणांजोन थीरवाच्या पणु भरा. आथी पोलीसे जेतेने मंदिरांतुं काम आगण असावतां अटकाव्वां. ते पक्षी मुखीमेनुं आकमणु वधतुंज गथुं. तेमणे जेतेने तेमना घरमां पणु सतामण्णी करवा मांडी. छ वर्ष उपर मुखीमेणे पंचम मंदिर पर हल्लो क्यो ने मूर्तिजो लांगी नांभी. जे मूर्ति चोरी पणु गया. जे वर्ष उपर मुखीमेणे अक गृहस्थने मंदिरमां पूज करतां घण्टीज अंतरायी करी हती. आम सरकारी सत्तावाणांजोनी उपेक्षा-वृत्तने लंघे मुखीमेणे अने जेतेने वच्येता विद्वेप वधतोज गयो.

सन १६२८ नेो अत्याचार.

पीरनी पुज करवानी जेतेने ना पाडयाथी मुखीमेणे जेतेने उपर जे विद्वेप वृत्त थळ तेथी मुखीमेणेनी जेतेने उपर कश दृष्टि वधी. केटलांक धार्मिक इश्टीमां नाखुं भवानी जेतेने ना पाडी अटके मुखीमेणेना कोपानल वधी पडयो अने परिणामे मुखीमेणे ता. १७ मी जुने अटके (कतलनी रात्रि)जे मंदिर उपर हुमलो क्यो ने मूर्तिजो लांगी नांभी. हुमलो करनाराजोनी संप्या २०-२५ जेठलो हतो. तेजो पक्षा मुस-लीम हता ने तेमना हाथमां लाडीजेो हती. मुगनायक श्री पार्श्वनाथनी मूर्ति पणु लांगी नांप्-वामां आवी हती. मूर्तिजोना केटलांक कडडा मुखीम हुल्लडपोरीजे नदीमां नांणी दीमा हता. जे उपरंत तेमणे केटलीक चोरी पणु करी हती.

आ अत्याचार संनधी पंच इश्टी पणु आ हेवावमां आपवामां आव्या छे जेनी वीगनीये मुण्ण छे:—

(१) मुसलमानांजे जे जग्या पर यतुर्थ जेतेने मंदिर आंधवामां अटकाव करेजे ते जग्या.

(२) छ वर्ष उपर मुसलमानांजे मूर्तिजो अडित करी हती ते पंचम जैन मंदिरनी जग्या.

(३) ता. १७ जुने १६२८ दिने मूर्तिजो अडित करवा पक्षीना यतुर्थ जैन मंदिरनी स्थिती.

(४) अडित करेली मूर्तिजोना थूण.

(५) मुग नायक श्री पार्श्वनाथनी अडित करेली मूर्तिना कडडाजो जाडवाया पक्षीनुं मूर्तिनुं दस्य.

आटलाथी न घरातां तेमणे जेतेने उराववा मांडया. ता. १८ मी जुने मंदिर सायेनुं महांन जे मंदिरनी मोलकत हती नेनी उपर हुमलो करी तेने नाथ क्यो. ता. २० मीजे सभा भरी तेमणे जेतेने पणवचाने उराव क्यो. 'दीन दीन' नी पांग पोकारी जेतेनी मास मोलकत रना करानी तेमणे प्रतिज्ञा करी. जमभंडीकरना मड उपर हल्लो करवाने तेमणे निघार क्यो हतो पणु पोलीस डेजणार वच्ये पडयाथी तेजो दानी थक्या न हता. आ उपरंत तेमणे जेतेनुं वास चोरी लोडुं अटकुंज नदि पणु जेतेने नदीमांथी पांणु लाववा के भेतरमांथी वासचारे लावता अटकाव्या हता. जेतेने उपर हुमलो करी तेमने मार मायेो हतो. नदीमां थूगडां घातां पणु अटकाववामां आव्या हता.

आ उपरंत हजम, घोषी, सुधार वगेरे जेतेनुं कंठ कामकाज न करे ते माटे मुखीमेणे आपस काण्ण राप्पी हती. जेन गलीजोमां 'दीन दीन' नेो पोकार करता रयां हता. केटलांक मुखीमेणे अक जेतेनी हुकानमांथी केटलांक लूगडां पणु लक्ष गया हता.

जेक साक्षीना उडेया मुज्जम अक गृहस्थने त्यां त्रणु मुखीम साधजो गया हता ने पोतानी साये लीधेल भरेलुं पाडुं तेना घरमां नाप्युं हतुं, पोतानी जेसने साये लीधेल हती, ते जेसने घरवाजांनी जेसे मारी छे जेम उली इ. सो. नुकशानीना मांगी नुकशानी न आपे तो मार मारवानी ने मोढामां हाडनां नापवानी धमकी आपी हती. जेके हाडकुं लक्ष हुमलो क्यो हतो.

છેવટે ૩૫ રૂપીઆ આપ્યા ત્યારેજ ધરવાળાનો છુટકારો થયો હતો. તા. ૨૦મીની રાત્રે મુસ્લીમોએ એક ખેડુતને પાંચ કલાક સુધી ગોંધી રાખ્યો હતો.

તા. ૨૨ મીએ મુસ્લીમોએ એક જૈનનું ઘર તોડી પાડ્યું હતું. તેનું ગાડું તળાવમાં ફેંકી દેખ પાણીના વાસણમાં મરેલો કાગડો નાખ્યો હતો. ધર ઉપર પથરો ફેંકવા ઉપરાંત ધરમાં માંસ પણ નાખ્યું હતું. એક ખીજા જૈનના ધર ઉપર ભાંગેલી મૂર્તિના કકડા ને હાડકાં લટકાવ્યા હતા !

કેટલાક મુસ્લીમોએ ખેતરમાંથી હળ વગેરે ચોરવાનું ને મંદિરમાં શાસ્ત્ર શ્રવણ વખતે ધણી ચીજો નાખવાનું કામ પણ કર્યું હતું.

સત્તાવાળાઓની ઉપેક્ષા.

મુસ્લીમોના અત્યાચારોના સંબંધમાં સત્તાવાળાઓની ઉપેક્ષા વૃત્તિ અક્ષતંત્ર્યજ કહી શકાય. તેમણે અત્યાચારોના સંબંધમાં તપાસ કરી નહિ. જૈનોને ઇન્સાફ આપવાની પરવા પણ કરી નહિ. જે રાત્રે મૂર્તિ ભાંગવાનો અત્યાચાર થયો હતો તે રાત્રે ફોજદાર મી. પઠાણુ કુડચીમાંજ હતા. તેમને અત્યાચાર વિષે ખબર આપાઈ તો ખીજે દિવસે એક મુસ્લીમ કારકુનને પંચનામું કરવા મોકલ્યો. કારકુને ગુન્હેગારોને કબજામાં લીધા નહિ, કોઈ તપાસ પણ કરી ન હતી. મામલતદારને આ બીજા વાત કાંડના સંબંધમાં અરજી થઈ તો તેઓ અધણીયાં તા. ૨૬ મી સુધી આવ્યાજ નહિ. સમાધાની કરાવવાનું બહાનું કાઢી તેમણે તા. ૨૭ મીએ જૈનોનું કોઈ લેખિત નિવેદન લેવાની પણ ના પાડી હતી. વળી કુડચી એ ધનામી ગામ હોવાનું કહી મુસ્લીમોના પીરની પૂજા કરવાનું પણ તેમણે કહ્યું હતું !!!

મામલતદારે વધુમતી સાથે ચૈર ન કરવાનું જણાવી લઘુમતીની રક્ષા કરવાની તત્પરતા દાખવી ન હતી. આવી વૃત્તિથી વિરોધનો દાવાનલ વધી પડ્યો. મામલતદારે પીરની પૂજા કરવાનું કહી જૈનોને પીરની દરગાહ આગળ આવવાનું પણ કહ્યું હતું. આ વાત ધણી જૈનોએ માન્ય રાખી ન

હતી એક થોડાક જૈનો જેઓ ગયા હતા તેમના કાર્યને મામલતદાર મી. કુરકણી ને મુસ્લીમોએ ખૂબ વખાણ્યું હતું !

મામલતદાર હિંદુ હોવા છતાં તેણે દરગાહને નમન પણ કર્યું હતું.

આઠેક દિવસ પછી બેલગામના કલેક્ટર તપાસ માટે આવતાં મુસ્લીમોએ ખીજા જગ્યાએ મંદિર બાંધી આપવાની ખુશી બતાવી હતી પણ જૈનોએ એક મંદિરમાંથી મૂર્તિ ખસેડવાની ના-ખુશી જણાવતાં મુસ્લીમોએ ગામ બહાર મંદિર બાંધી આપવાની જીદ પકડી હતી.

છેવટે મૂર્તિ ખસેડવાની શરતે જૈનોની તર-ફેણમાં નિર્ણય કરાવી આપવાનું મામલતદારે વચન આપ્યું હતું. નવું મંદિર બંધાતા સુધી જૂના મંદિરમાં પૂજા કરવા કલેક્ટરે જૈનોને સમજાવ્યા હતા, પણ થોડા વખત બાદ મુસ્લીમોએ ફરી જઈ મંદિર માટે કંઈપણ સામાન પુરો પાડવાની ના પાડી હતી. આથી કલેક્ટર ને મામલતદારને ઘટતી અરજીઓ થઈ. મામલતદારે એ એક મહીને અરજીઓ પાછી મોકલાવી, ફોજદારને અરજ કરવા જૈનોને જણાવ્યું. ફોજદારને અરજી યતાં તેણે અરજનો સ્વીકાર કરવાની પણ ના પાડી. તા. ૧૬ મી અક્ટોબરે મામલતદાર પાછા આવતાં તેણે બંને પક્ષના નિવેદન લીધાં. છેવટે શ્રી. આપા સાહેબ કાકુના ધરમાં મૂર્તિઓ લઈ જવાની ને નહિતર મંદિર બંધ કરવાની મામલતદારે ધમકી આપી એટલે જૈનોને મૂર્તિઓ ખસેડવાનું ખરાણે સ્વીકારવું પડ્યું.

ફોજદાર અરજી લે નહિ, તપાસ કરે નહિ, અરજીમાં ગુન્હેગારોના નામ લખવા પણ દે નહિ. પોલીસ પટેલ પણ મુસ્લીમ હોવાથી તેણે મુસ્લીમોની અત્યાચારો વૃત્તિ અક્રમમાં મુકવાને કંઈ પણ કર્યું નહિ. આણું ઘણું બન્યું.

સરકારની બેદરકારી.

તા. ૧૭ મી જુને અત્યાચાર થયો. અત્યાચારના સંબંધમાં ખીજેજ દિવસે મામલતદાર,

કલેક્ટર વગેરેને અરજી થઇ, તા. ૨૩ મીએ ઇચ્છ કરજીમાં સભા ભરાઇ, કલેક્ટર, કમીશનર ને ગવર્નરને ઘટવું કરવા અરજી થઇ. તા. ૭ મી જુલાઇએ મુ'અઇમાં સભા ભરાઇ ને તેજ અમલદારોને વચ્ચે પડવા વિનંતિ થઇ. હિંદના જૂદા જૂદા ભાગોમાંથી પણ સત્તાવાળાઓને સંખ્યાબંધ અરજી થઇ. તા. ૨૨ મી જુલાઇએ દક્ષિણ વિલામના કમીશનરને ૩૨૫ બંધનોએ અરજ કરી. જુલાઇ માસમાં હિંદના જૂદાં જૂદાં ૧૪ મહકોમાં જે સભાઓ ભરાઇ હતી તે સભાઓના ડરાનોની નકલો ને ઘટતી અરજી કલેક્ટર, કમીશનર ને ગવર્નરને મોકલવામાં આવી હતી. આ બધાનું પરિણામ માત્ર એ આવ્યું કે ગવર્નરે અરજી હોમ ડીપાર્ટમેન્ટને મોકલાવી આપી. કલેક્ટરે કંઇ ન કાતાં અરજીઓથી ને એવી બીજી હીલચાલથી મામલો વધુ બગડશે એમ જણાવ્યું. ગવર્નરે કેટલાક દિવસ સુધી સંખ્યાબંધ તારોના જવાબ પણ ન આપ્યા. આ બધા ઉપરથી એમજ કહી શકાય કે સરકાર ને સત્તાવાળાઓની બેદરકારીને લીધેજ બંધનોને ઘણું ખમવું પડ્યું છે.

બેલગમના કલેક્ટરે તા. ૧૨ મી ડીસેમ્બરે શ્રી. ભારતવર્ષીય દિગમ્બર જૈન મહાસભાના સામાન્ય મંત્રી ઉપર તેમની અરજીને જે જવાબ લખ્યો છે તે ઉપરથી સરકારની બેદરકારીને સરસ ખ્યાલ આવી શકે છે. તેમણે અરજીના જવાબમાં જણાવ્યું હતું કે ગુન્હેમાર દેખીતી રીતે જૈન હતો! સમાધાની થઇ ગઇ છે. તેથીજ ગુન્હેમાર સામેના કેસ ખેંચી લેવામાં આવ્યો છે.

છેવટના નિર્ણયો અને બલામણો.

રીપોર્ટમાં જણાવેલી વિગતો ઉપરથી જણાશે કે હિંદુઓ અને ખાસ રીતે જૈનોની કુડચીમાં લઘુમતી છે. તેમનાથી સામાજિક કે ધાર્મિક હિત બળવવાનું સુરકેલ છે. મુસ્લીમોની ગામમાં સત્તા હોવાથી તેઓ તથા તેમની બધી માલ મીલકત મુસ્લીમોની હયા ઉપરજ ટકી શકે છે.

મુસ્લીમોએ જૈનોની લામણી દુખવવાના અનેક કરપીણ કામો કર્યાં છતાં સત્તાવાળાઓ તે વિષે ઉપેક્ષાવંતજ રહ્યા. મુસ્લીમો જૈનોને ન મતાવે એવી રીતના સત્તાવાળાઓએ કંઇપણ પગલાં લીધાંજ નહીં. બલિષ્ઠમાં બીપણ્ય અત્યાચારો ન થાય તે માટે સરકારે કંઇપણ પમલાં લીધાં નથી કે તે વિષે કંઇપણ નિર્દેશ સરકાર તરફથી થયો નથી. મુસ્લીમો સંખ્યામાં બળવાન હોવાથી તેઓ બંધનો ને બીજા હિંદુઓને દયામલાજ રાખે છે.

સરકારે વસ્તુ સ્થિતિનો વિચાર કરી ન્યાયનું પાલન કરવું જોઇએ. આ રીપોર્ટ સરકાર ને જૈન જાતિના હિત માટે તૈયાર થયો છે. સરકાર એક જાતિ ઉપર મહેરબાની દેખાડે છે ને બીજી ઉપર ઉલટી વૃત્તિ રાખે એ ઠીક નથી. જૈનોના હક્કનું સરકારે રક્ષણ કરવુંજ જોઇએ.

પોતાનીજ જમીન ઉપર મંદિરો બાંધવાના જૈનોના હક્કનો સરકારે સ્વીકાર કરવો જોઇએ એમ અહેવાલ ઉપરથી સ્પષ્ટ થાય છે. તેમના ધર્માનુષ્ઠાનમાં મુસ્લીમો તરફથી કોઇ પણ પ્રકારનો બાધ ન નડવો જોઇએ. મુસ્લીમો બંધનોના હક્ક ઉપર આક્રમણ કરે એ સરકારે સાંખી લેવું નજ જોઇએ.

સરકારના સત્તાવાળાઓ અત્યાચારના સંબંધમાં સુસ્વ અને બેદરકાર જણાયા છે. ન્યાયને અહીં તેમણે મહેરબાની દેખાડવાની વૃત્તિ રાખી છે. મામલતદાર કે ફાજલારને ન્યાયી કે બીન પક્ષપાતી વૃત્તિનો ખ્યાલ નથી. તેઓ નિર્દોષ માણસોની સવામણી થાય છતાં ઉપેક્ષાવંત રહ્યા છે, ગુન્હા ઉપર ઠાંક પીછોડો પણ કરેલ છે.

જૈનોને કોઇ પણ પ્રકારનો અહીં મળતો નથી તેમ કુલ્લડખેરો તરફથી સભામતીની ખાત્રી તેમને મળતી નથી, એ વાત સૌથી નવાઇ પમાડે તેવી છે. નાના અમલદારોની બેદરકારી પણ આછી નવાઇ પમાડે તેવી નથી.

જે જે બનાવે બન્યા છે તે ઉપરથી જાણ્ય છે કે કુડચીમાં ન્યાય મળવાનું આશક્ય છે. જૈનોને થયેલ ભયંકર અન્યાયનું નિવારણ થયું નથી. સરકાર કોઇ પણ મુસ્લીમને પકડતી નથી એ પણ ઝોછા આશ્ચર્યની વાત નથી. સરકાર તરફથી કંઈ તપાસ થતી નથી તે જ્યારે અરજીઓ થઈ ત્યારે ન્યાયયુક્ત સમાધાનીને બદલે સરકાર કંઈ વધુ તપાસ ચલાવતીજ નથી.

જૈનોને પોતાની જમીન ઉપર મંદિર બાંધવાનો હક જોઈએ છે. તેમનાથી એક જગ્યાએથી બીજી જગ્યાએ મૂર્તિ ખસેડી શકાય નહિ કારણ કે આવું કૃત્ય ધર્મથી વિરુદ્ધ છે, આથી મંદિર માટે કોઈ બીજી જગ્યા નકામી ને અગવડ રૂપ છે, આ ઉપરાંત સરકારે જૈનોને મુસ્લીમો તરફથી હવે પળવણી નહિ થાય તેની પૂરે પૂરી સંતોષ કારક ખાત્રી આપવી જોઈએ. સરકારે ગુન્હેમારોને શોધી કાઢી તેઓને સજા કરવી જોઈએ. મામલતદાર, ફાજલદર ને પટેલ જેઓ પોતાની શરજ બજાવવામાં બેદરકાર રહ્યા તેમને પણ સજા થવી જોઈએ.

જૈનોએ પોતાના પ્રથમથી પોતાના હિતનું રક્ષણ કરવા પગલાં લેવા જોઈએ. તેમણે કોઈ પણ આક્રમણ સામે થવા તૈયાર થવું જોઈએ.

સરકારે ગામમાં થોડાક વખત સુધી વધુ પોલીસ મુકવી જોઈએ. આનો ખર્ચ મુસ્લીમ સહૈરીઓ પાસેથી લેવાવો જોઈએ. વળી જે જગ્યાએ મંદિર હવું ત્યાંજ મંદિર બાંધવાની જૈનોને પરવાનગી આપવી જોઈએ.

સરકારે અત્યાચાર ને માલ મીલકતના નુકશાનથી જૈનોને થયેલ નુકશાનનો બદલો તેમને મળે તે માટે ધટ્ટું કરવું જોઈએ. વળી આવો બીપણ-કાંડ શરી ન અને તે માટે પણ ધટ્ટાં સખન પગલાં લેવાવા જોઈએ.

અંગ્રેજ ઉપરથી ગુજરાતી અનુવાદક—

ગીરધરલાલ ડુંગરશી શેઠ-સુરત.

નોટ.—આ તપાસ કમીટીએ મોડો મોડો પણ આ રિપોર્ટ બહાર પાડી આ અત્યાચાર પર

ધણું અજવાળું પાડ્યું છે. એથી જાણીએ આવે છે કે કુડચીમાં જૈનો ઉપર કેવો ખસલ જીલમ અને અત્યાચાર મુસલમાનો તરફથી થયો હતો અને હજી પણ કુડચીના જૈનો નિરાંતે બેસી શકતા નથી—અર્થાત્ અનેક તરેહની સત્તામણી થવાજ કરે છે. દિ. જૈન યુવક મંડળે મુખ્યાલ્યે આ કાર્યમાં ઉત્તમ કાળો આપ્યો છે તે માટે આખી જૈન સમાજ તેનો આભારી છે અને આ મંડળે આટલેથી બેસી ન શકેતાં આ રિપોર્ટની નકલો બેલગામ કલેક્ટર, મુખ્ય મંત્રી, ગવર્નર વગેરે પર મોકલી ધટ્ટા દાદ મેળવવા માટે હેઠ સુધી બરાબર પ્રયત્ન કરી રાખવો જોઈએ, ત્યારેજ કુડચીના જૈનોને કંઈ વાહત મળશે અને આપણા હકોની રક્ષા થઈ શકશે.



ગુજરાતના દિગંબર જૈનો

અને

સ્વદેશ પ્રેમ.

મારા એક મિત્રે કંપાલા સાર્વજનિક લાય-બ્રેરીમાં અને પુછ્યું કે—મોહનલાલ ? તમારા દિગંબર જૈનો ગુજરાત વિભાગમાં સ્વદેશ પ્રેમ શું છે. તે સંમજતા નથી કેમ ? મેં પુછ્યું. આજે તમારે એ પુછવાની કાંઈ જરૂર. મારા તે મિત્રે કહ્યું અને લાગે છે કે—ગુજરાતના સ્વદેશ પ્રેમ જૈનો કરતાં તમારા દિગંબર જૈનો સ્વ-દેશ પ્રેમમાં પાછળ છો ? હું નિસ્તેજ થયો, શું જવાબ આપવો તેના વિચારમાં, અંતે મન દ્રઢ કરી કહ્યું. બાઈ, હું હિંદુસ્તાનથી ધણેજ દૂર છું. જેથી મને ત્યાંની હકીકતની પુર્ણ માહિતી નથી. મારા તે મિત્ર મારો જવાબ સાંભળી જીરસામાં આવી ગયો. તે ટકોર તરીકે-નાનો બાળક હઈશ, શું હું નથી જાણતો કે-તું તારા

સમાજનાં દિગંબર જૈન અને બીજાં જૈન પેપરો મંગાવતો હોય કાંઈક લખાણુ પણ લખી શકે છે ?

મેં : હાથ મારી કહ્યું. બાહ, તે બધો શ્રી સ્વસ્વતી દેવીની મહેરબાનીનો પ્રસાદ છે. પણ ત્યાં કેમ હશે ? તેનું યથોચિત વર્ણન હું ક્યાંથી જાણું ? મારો તે મિત્ર છેકાંઈ ગયો. અને બોલ્યો—મોહન મોહન ? વિચાર કરી પછીજ જવાબ આપ, શું તુંજ નહોતો કહેતો કે—જૈન સમાજના મારા બાગ્યે સ્વરાજ્યના રજુ થયેલાં નોકરશાહી દારા જેલના મહેમાન બનવાનું પ્રથમ માન અંકલેશ્વર નિવાસી લાઈ ઓટાલાલ બેનાલાઈ ગાંધી દિગંબર જૈનનેજ પ્રાપ્ત થયેલ છે. શું તું નહોતો કહેતો કે—લામાશાના વંશજ હમે જૈનો સ્વરાજ્યના રજુ થયેલાં પાછળ નહિજ રહીએ, શું તું નહોતો કહેતો કે—ક્યાયો ઉપર જય મેળવનાર હમે જૈનો અસહકારનો અર્થ બેટલી ઝડપથી સમજી શકીએ, એટલી ઝડપથી બાગ્યેજ બીજા સમજી શકતા હશે. વળી તું એમ નહોતો કહેતો કે—હમારો દિગંબર જૈન સમાજ મહાત્મા ગાંધીના ફરમાન માત્રને માનવા એક પગે તૈયાર છે ?

મારા અગાઉ બોલેલા શબ્દોના વાદ્યાણુથી હું સંજ્ઞાલય થઈ ગયો. મારાથી એક પણ જવાબ આપી શકાયો નહિ, કેમકે મેં જેજે વખતે દિગંબર જૈન સમાજનું અભિમાન રાખી તેવી સાથે વાત કરેલી તે, બધી વાતને આમ તેજે રટકા લગાવવામાં સ્પષ્ટ કરીદીધી. છેવટે નિમગ્ન હૃદયે મેં કહ્યું—બાહ કહે, તારે કહેવનો વખત છે તે મારે સંમળવનો વખત છે. પણ મહેરબાની કરી જરા સ્પષ્ટ તો કહે કે—આજે તું મારા ગુજરાતી દિ. જૈન સમાજ પછળ ‘કટક્ત કન્વા કેમ નિકળી પડ્યો છે.’

મારો તે મિત્ર ધણીજ ઉશ્કેરાય ગયો. તે કહેવા લાગ્યો કે—જરા આંખ ફાડી જો કે તારા દિગંબર જૈનોની કષ્ટ વ્યક્તિએ ગુજરાતમાંથી

પૂજ્ય. ઓટાલાલ ગાંધી અને લાઈ સરૈયા તથા બીજા પ-૭ લાઈઓ સિવાય સ્વકેશ સેવામાં ભાગ લીધો ? કઈ જ્ઞાતિએ જમણુ-વારો બંધ કર્યાં, કઈ જ્ઞાતિમાંથી સ્વયંસેવક તૈયાર થઈ સંગ્રામે ચડ્યા, કઈ જ્ઞાતિના યુવકોએ સરેશી વ્રત લઈ પરદેશી કાપડ પહેરનાર માટે મંદિર પર પીકેટીંગ કર્યું ? શું તું અને બાળકજ સમજતો હઈશ. વિચાર કર, હું હમેશ વર્તમાનપત્રોમાં નજર નાંખું છું. તારેજ ત્યાં આવતાં જૈનમિત્ર, દિગંબર જૈન, નવ ગુજરાત, સનાતન જૈન, મુંબઈ જૈન યુવક સંઘ પત્રિકા, બાળજીવન, આત્માવંદ આદિ પત્રો હમેશ મનન પૂર્વક વાંચું છું. તારાજ પ્રતાપે કાંઈક જૈન તત્ત્વજ્ઞાન તન્ન પ્રતિવાણો થયો છું. છતાં તું અને ઉલટો સવાલ કરે છે ! ખેદ છે મોહન, તારી ક્ષુદ્ધિ પર નહિ, અરે તારી માન્યતા પર, તું આંખ ખોલીને જો, હિંદુસ્થાન આખું અચારે આઝાદીને પથે ગમન કરે છે. મહાત્મા ગાંધી, રાષ્ટ્રપતિ જવાહીરલાલ, પંડિત નેહરુ, સરદાર વલ્લભભાઈ જેવા વીર પુરૂષો જેલ મહેલના મહેમાન બની એક શેર આટામાં સ્થીર તૃપ્તિ કરી હિંદ દેવી પ્રલેની શરજ અગતી રહ્યા છે. તે

સમયે તમે દિગંબર જૈનો જાત જાતના મિષ્ટાનનનાં જમણુવાર, પછી તે લગ્નનાં કે મહેરબાણુનાં પણ જમતાં વિચારો સરખો કરતાં નથી. તમારાજ અંધુઓ જમતો અને વાણીબાગ્યોને પછી જમતાં શરમાતા નથી. શું તમારા હૃદયમાંથી દેશ દાઝ માત્ર નાશ પામી છે, કે—તમારી જીલવા ઈન્દ્રિય છોડતી નથી, કે—જા તમેને જમવાને હડકવા વળીએ છે. થયું છે શું ? વિચાર કરો, લાડ-ખડાખતા-શ્રીમાળી, શ્વેતાંબર જમન, સ્થાનકવાસી જમન વિગેરેએ જમણુવાર બંધ કર્યાં છે. મુંબઈના શ્વેતાંબર સમાજના દરેક પુરૂષે સામાજિક કાર્ય કરી જમણુવાર (નોકારસી સુદ્ધાંત) બંધ કર્યાં છે, સ્થાનકવાસી અંધુઓએ પણ તેમાં સાથ લીધો છે.

તે વખતે તમે દિગંબરો ક્યાં કારણથી ઉધે છે, તે મને તો સમજવું નથી. ખોલ, મોહનલાલ ! ખોલ, જવાબ આપે છે ? એમ નીચું ન જો ? તું પણ એક દિગંબર જન્મન અને તે પણ સમાજની ઉંડી લાગણીવાળો છે. તારી પણ આ દેશ યજ્ઞમાં ભાગ આપવાની ફરજ છે. એમ મૌન રાખે વળવાતું નથી, નહિ તો મારે તને મૂર્ખ માનીનેજ સતોષ માનવો પડશે. કેમકે મહાત્મા ભત્રાંજીએ કહ્યું છે. કે-વિધાતાએ મૂર્ખને માટેજ મૌનની યોજના કરેલી છે. પણ ના તું મૂર્ખ નથી તું ચક્રાર છે. મારે તારે હાથે હજી જન્મન સિદ્ધાંતના ઉંડા રહસ્યોને સમજવાં છે. તારા સમાજને પણ તારા દ્વારા કેટલાંક ઘટાણા ખચવાની જરૂર છે. માટેજ હું તને ખાસ દખાણું કરી કહું છું કે-તારા સમાજવાળાને લખી કાંઈક દરાવ કરાવ. તારી શાંતિવાળાને લખી વર્તમાન કાળે જમણવારો બંધ કરવા દરાવ કરાવ આમ બેસી શું રહે છે. કાંઈક તો પ્રયત્ન કર.

મારા મિત્રના શબ્દો મને શલ્ય જેમ છાતીમાં કોરવા લાગ્યા, હું આંસુ ખાળી શક્યો નહિ ને મારાથી રડી જવાયું. મારાં નેત્રમાં આંસુ જોઈને પણ મારો તે મિત્ર શાંત ન થયો. વળી તેણે ચલાવ્યું કે-

બાપ, તારા સમાજમાં પણ હવે તો યુવક મંડળો યુવક સંઘો સ્થપાયા છે તેઓ પણ સુષ્ટ મર્મા હોય તેમ જણાય છે. મુંબઈનાજ વાતાવરણમાં ઉચરતા યુવકો પૈકી શ્વેતાંબર સમાજના યુવકોની પ્રવૃત્તિ જોઈને પણ દિગંબર સમાજના યુવકો કાંઈ કરતા નથી, આમ તમારા સમાજને થયું છે શું ? શું તેઓ પોતાને હિંદી કહેતાં શરમાય છે. કે-પછી વિદ્યાસલાતી અમીચંદની પેઠે સ્વરાજ્ય યજ્ઞમાં વિદ્યાસલાત કરવા હાર્યો છે.

અતિ હૃદય કહેણું કરી હું બોલ્યો-લાખ, હું તો જન્મન માત્રને એકજ સમાજ ગણી, મને પોતાને જન્મનજ કહેવરાવવા છાણું છું છતાં દિગંબર જન્મન સમાજ તરફ મને જે લાગણી

છે, તેથીજ હું તારાં આ વાક્યાણો સંભળી રહ્યો છું. બાપ, હમારા સમાજમાં સ્વર્ગીય જૈન-કુલ ભૂપણ દાનવીર શેઠ માણેકચંદણના ગુજરી ગયા પછી કોઈ આગિવાનજ નથી. હમારા સમાજની એકજ સંસ્થા મુંબઈ દિગંબર પ્રાંતિક સભા હાલ કુલકરણની નિંદ્રામાં પડી છે. હમારા યુવકો વૃધ્ધિથી ઠરે છે-સેલીસીટરો-વકીલો-ગ્રેજ્યુએટોને ધંધાની પડી છે. હવે હમારો સમાજ આમ નાયક વિનાનો થઈ એકલા વિનાના સો મોડાં જેવો નકામો થઈ પડ્યો છે. મધ્યસ્થ વર્મના જે પુરુષો કાંઈક દેશહાજરી ધગશ્ચરાળા છે, તેમને પણ આગળ આવેલાના આંખો આડા કાન જોઈ પાછા હઠવું પડે છે. નહિતો તેઓ જરૂર કાંઈક કરી શકે છે, તોપણ મુંબઈમાં દિગંબર જન્મન યુવક મંડળ દ્વારા કેટલાક દિ. જૈન યુવકો સારું કાર્ય કરી રહેલા છે.

બાપ, તું શાંત થા, મારી મેવાડા કોમે દરાવ કરીને નહિ, પણ શરમાઈને ચાલુ સાથે સોણના મુકામના લગ્ન માળામાં એક પણ પૂઠત જમણવાર ક્યું નથી. શાખાથી આપતા પહેલાં મારે સ્પષ્ટ કરવું પડશે કે-હા, શ્રીમંતને ખાર-માની અચોચ નાતો તો કેટલાક કરેજ જાય છે, પ્રણુ તેમને સન્મતિ આપી તેપણ બંધ કરાવે.

હું પાંચ હજાર માઇલ દૂર છું. ત્યાં હજીતો પણ એક હાથે શું કરી શકવાનો હતો ?

વળી મારો મિત્ર છેલ્લો, મોહન, વાહરે, વાહ, શું ગાંધીજી એકલા આખી જિંદગી સદતનતને ધ્રુબવતા નથી, શું વહલભ-ભાઈ એકલા સયમ ગુજરાતને દોરતા નથી, ચારિત્રવાન માણસ નિખાલસ હીલે જે રસ્તે જમન કરે, જે રસ્તે જવાનો યોધ આપે તે રસ્તે દુનિઆને-સમાજને જવુંજ પડે છે. એ શું તું બૂધી મયો ! તારા સમાજને ચેતાવવા તારાથી કાંઈએ ન બને તો બહોઈ

તારા સમાજનાં જાહેર પત્રોમાં લખાયું લખ, સગાં-સ્નેહી મિત્રોને લખી તેમને તારા જેવા વિચારવાળા બનાવી-તેમના દ્વારા તારી ઘાતિ સમાજનાં પંચ-મંડળોમાં જમણવાર બંધ કરવાના, પરદેશી કાપડ પહેરી મંદિરમાં આવે તેના પર પીકેટીંગ કરવાના કરાવો પાસ કરાવી તેમના દ્વારા તેનું સખત આદેશન કરાવ, પછી જો જમણવાર બંધ થાય છે કે નહિ, સ્વદેશી કાપડ પહેરાય છે કે-નહિ ।

જ્યારે હિંદુ માતાની મુક્તિના રક્ષણ-ગમાં યુવાન, સ્ત્રી, પુરૂષો તોફારાલીઓ લાઠીના લોગ થતા હોય, મહાત્મા ગાંધીજી અને નહેરૂ જેવા જેલની દિવાલોમાં સખ-કતા હોય, ત્યારે આપણે મિષ્ટાન્ન જમવા, પર-દેશી કાપડ પહેરવું તે શું વારતનિક છે? બાઇ, તું જરા પણ માનું સગાડમા સિવાય તારા સમા-જને સુધારવા પ્રયત્ન કર. તારી કડક કલમથી હું માહીતમાર છું. શું તું બુધી ગયો કે-તારા જોક્ષ વૃદ્ધ લગ્ન નિષેધ લેખથી તારી જાપી ઘાતિમાંથી વૃદ્ધ લગ્ન બંધ થયાં. શું તું બુકો ગયો કે-તારા જોક્ષ કટાક્ષથી પારણે જડપાતા પોળીમાના વિવાહ (નમણ) બટની પડયા. એ તો એજ ખરું છે, કે-ચાહોમ કરીને પડો ફતેહ છે આગે, આજ મીંચી હૃદયને ઠીક લાગે, સર-સ્વતી પ્રેરણા કરે તે સમાજ સુધારવા લખવાજ કરવું. ઘણા ગડગડાટ પછી વરસાદને વર-સતું પડે છે. તેમ તારા સમાજને તારા જેવાના કલમ પ્રહારોથી સુધર્યા સિવાય છુટકો નથી, તમારા દિગંબર જેનોગાં એટલું ઠીક છે કે-સાબુ વગર સામાજિક કાર્યોમાં માથું મારતો નથી. જેતાંબર જેનોમાં તો કેટલાક કહેવાતા મુનિરાજો સંસારિક વ્યવહારમાં માથું મારી કાગળું પીંછ વેતરી મારે છે. તમારો સમાજ શ્રદ્ધાળુ છે જેથી હું ધરું છું કે જરૂર આદેશન કરે જમ-ણવારો બંધ થશે, સાથે પરદેશી કાપડને પણ ત્યાગ થશે. તેમજ યુવાન સ્ત્રી પુરૂષો દેશમગમાં

આકૃતિ આપવા આમળ આવશે બોલ, તારું હૃદય શું કહે છે ?

બાઇ, બધું ખરું છે. તારા શબ્દ માત્ર સાચા છે-સમજણથી બરેલા છે. હું તારો ઉપકાર માનું છું કે-તેંમને સમાજના સિરેથી આણેપ ઉતારવાનો રસ્તો મુખ્યો. હું આજેજ તે મટે માથા સમા-જના મુખ્ય પત્ર દિગંબર જૈનમાં લેખ લખીશ. પણ તે પહેલાં આજનો આપણો સંવાદ તો જરૂર લખી મોકલીશ. મારા યુજરાતના દિ-નેનો મારી મેવાડા કોમના યુવરથી એવા કાથુ હૃદયના તો નથી કે જે મારી વાત નહિ સાંભળે. તેઓ પણ જન ધર્મી છે, અર મતના ધારી છે, મહાવીર પિતાના પુત્રો છે, સમાજને શિર કલક થોંટે તેથી ખીએ તેવા છે, માટે જરૂર મારી વાત માની સ્વરાજ્ય મળતા સુધી કે-મહા-ત્મા ગાંધીજી છુટતા સુધી જમણવારો બંધ કરશે, તે ઉપરાંત સંપૂર્ણ સ્વદેશી બની દેશની સ્વતંત્રતાના યુધ્ધમાં સૈનિક બની સમા-જનું નાક સાચવશે. મારા ઉત્તર હિંદુસ્તાન અને દક્ષિણ હિંદુસ્તાનના દિ-નેનોની દેશ સેવાનો પડશે જરૂર મારા યુજરાતના બંધુઓને પડશે. ને તેઓ જરૂર આમળ આવશે. બાઇ, તે મને ધણાજ ઉપકારના બાર નીચે દાખી દીધો અરસર મલ્યે રાત્રે આવજો, હું હવે રજા લખશ. એમ કહી હું મારા તે મિત્રને લાખજેરીમાંજ મુગી ચાલી નિકળ્યો.

સુગ પાઠક, હું દિગંબર જૈન છું. તેથીજ મારા મિત્રને આટલી ટકોને કરવી પડી. આપ દિગંબર જૈન હો તો હું માનું છું કે-જરૂર તમે તમારા હૃદયમાં સ્વદેશ પ્રેમને સ્થાન આપશો. નહિતો પછી કહેવું પડશે કે-

નથી દેશની હાજ જેને લગારે,
પડયો માતના પેટ પથર બારે.

તમે તમારા જમણવારો જરૂર બંધ કરશો. સ્વદેશી વસ્ત્ર પહેરવા પ્રતિજ્ઞા વંત કરશો. અને તમારામાંના બેદબાવને દૂર કરશો, અને તે વધારે નહિતો મહાત્મા ગાંધીજી છુટતા સુધી બંધ કરી

દુનિયાને ખતાવી આપશે કે-દિગંબર જેનો પશુ હિંદ આતાના પુત્રો છે, તે પશુ સ્વદેશ સેવા કરી જશે છે.

તમોએ કરેલા ઠગવો કરેલા સુધારા લીધેલી પ્રતિજ્ઞાઓની હકીકત જાહેર પેપરોમા જરૂર છપાવશે. કે-જેથી તમારા નામરૂ સ્વરાજ્ય યજમા પાછળ નથી, એમ સ્પષ્ટ થાય. પ્રજા આપને સહ-બુદ્ધિ સુઝાડે એમ ઇચ્છા છે. ઠૂં કાલિ:

લખનાર: આપને સ્વદેશ સંભાળમા ચડેલા જોવાને કલ્પ:

મોહનલાલ મથુરાદાસ શાહ કાણ્ણીસાહર.

સુ કમ્પાસા. (પુમા-ડા, આરિફા)

નોટ-એકે આ લેખમાં ગુજરાતના દિગંબરોની જે પ્રકરણી સ્થિતિ વર્ણવી છે તેવી છેક સ્થિતિ આજે નથી. ગુજરાતના દિગંબરોમાંથી પશુ ઘણા બાહ જ્યેલ મયા છે ઘણાગણ દેશસેવામા જાણો આપીશું ત્યા છે તથા ઘણાખરા સ્વદેશી વચ્ચે પહેરે છે તે વિદેશી ઝીંઝોનો યજ્ઞક્રિયા ત્યામ કરી ગયા છે, વળી જાવા કટોકટીના પ્રસંગે પશુ ઘણા લમજમ બધે સ્થળે જમજુવારો બંધ રખાઇ જાતી તેમજ કેટલેક સ્થળે ગમે તેવે પ્રસંગે પશુ ન્યાતિ જમજુ હાલ બંધ રખવાના ઠગવો થઇ ચુક્યા છે. જે કે ગુજરાતના દિ. જેન બાહ્યોએ આ દિશામા હમુ નિશેષ કર્મ કરવાનું છેલ્લ છતા પશુ ગુજરાતના દિગંબરોની સુદ્ધિ સ્થિતિ એક ઉતારી પડવા જોવા તે સંપાદક

|| -મંબર જેન હિતવર્ધક સેવાઓ મનેજમ કમીરી આસો સુદ ર ને દિને પડાણોમા મળી હતી જેમા કુવિવાળે બદ રવા સખથી ૧૦ ઠગવો થયા હતા. આ સમયે કાઠાનું પંચ પશુ ત્યા પધાર્યું હતું. પડાણોમા શરીયા કળક અઠાવવાને વિચાર થયા હતા તથા આવતી મીઠોમ પાલ ઠાનરસ વખતે યોલાવવા વિચાર આલે છે.

અલવા-ના છોટાલાલ તમાચંદ જે કલ્પરામ જમવાલ સાથે ટીપ કરવા મયા હતા તે જમુતરથી કંઈ જુમ થયા છે. કોઇને ખબર મળે તેો અલવા પંચને જણાવે.

પાદરામાં યુવક સંઘના ઠગવો-પાદરામા વીસા મેવાડા દિ. જેન યુવક સંઘની કાર્યાલયક કમેટીની બીજી બેઠક તા. ૨૦-૨૧ સપ્ટેમ્બરે સ્તીલાલ જમજુવદાપ શાલના પ્રમુખપણા નીચે મળી હતી જેમા હીનાલલ વડીલે સ્વાગત કર્યા પછી મોહનલાલ મથુરાદાસ કાણ્ણીસાહર ને મોહનલાલ સ્વરાજાતના આવેલા સંદેશાઓ વંચાયા હતા. જે પછી નીચેના ઠગવો પાલ થયા હતા. (૧) વીસા મેવાડાનું વરતી પત્રક તૈયાર કરવું. આ કામ પ્રેમચંદ શીવલ નભાઈ કરે (૨) ૧૯૩૧ની વલની ગબ્જીવખને આપણા દરેક માઇ પોતાને દિગંબરોન સખાવે (૩) વીસા મેવાડાશાંતિનો પ્રાચીન ઇતિહાસ ગોધી કાઢવો એ કાર્ય પશુ બાહ પ્રેમચંદ શીવલાલ કરે. (૪) સંસ્કૃત સહતરો અંત ત આવે ત્યા સુધી કોઇએ ન્યાતવરા જમવા નહિ (૫) દરેક સખે સીમંતન. જમજુના ત્યામ કરવો. (૬) દેક સખે અને તેટસા સમય સુતર કાતવુ (૭) દેક મામે સખની શાખા રખાપતી તથા કોઇ સજી સંમન. હાવોની વિરહ કાર્ય થય તેો તેનો ત્યાની શાખાએ વિરોધ કરવ તે જરૂર પડે બીજી શાખાઓની સહય પશુ લેવો (૮) નીચે મુજબની પ્રતિજ્ઞા દેક સખ્ય પાલ સંવદરી-હૂં ડાલ પર્વની ઉમ- સુધીમ મુધુ જમજુ જમીશ નાંદ તેમ પીરસણુ છા ત નહિ, પદેશી કાપડ ખની તા નહિ. કાગળુ કરવા રાવા નહિ જમજુ સખથી નહવા પૂર્ણ પ્રવલ્ય કરીશ, સીમંતનું જમાજ નહ કે પીરસણુ લખથ નહિ યુવક સંઘને આર્થ્ય બનાવવા બનવુ કરોક, સંસ્કૃત સહતરો અંત સુધી કોઇપણ ન્યાત જમજુ જમાજ નહિ, અને તેટસો સમય રેંટીયા ચલાવીશ, (છ) આવતી બેઠક આવતા મે માસમા સોજામાં મોલાવવો.

હીરાલાલ અંબઈદાસ વડીલ, મંત્રી.

"જેનવિજય" પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ, અપાટિયા ચકલા-સુરતને મૂલચંદ કલ્પનદામ કાપકિયાને મુદ્રિત કિયા બીજી દિગંબર જેન" બીકિસ થમ્બાણી સુરતસે જન્મોને હી પ્રકર કિયા.

